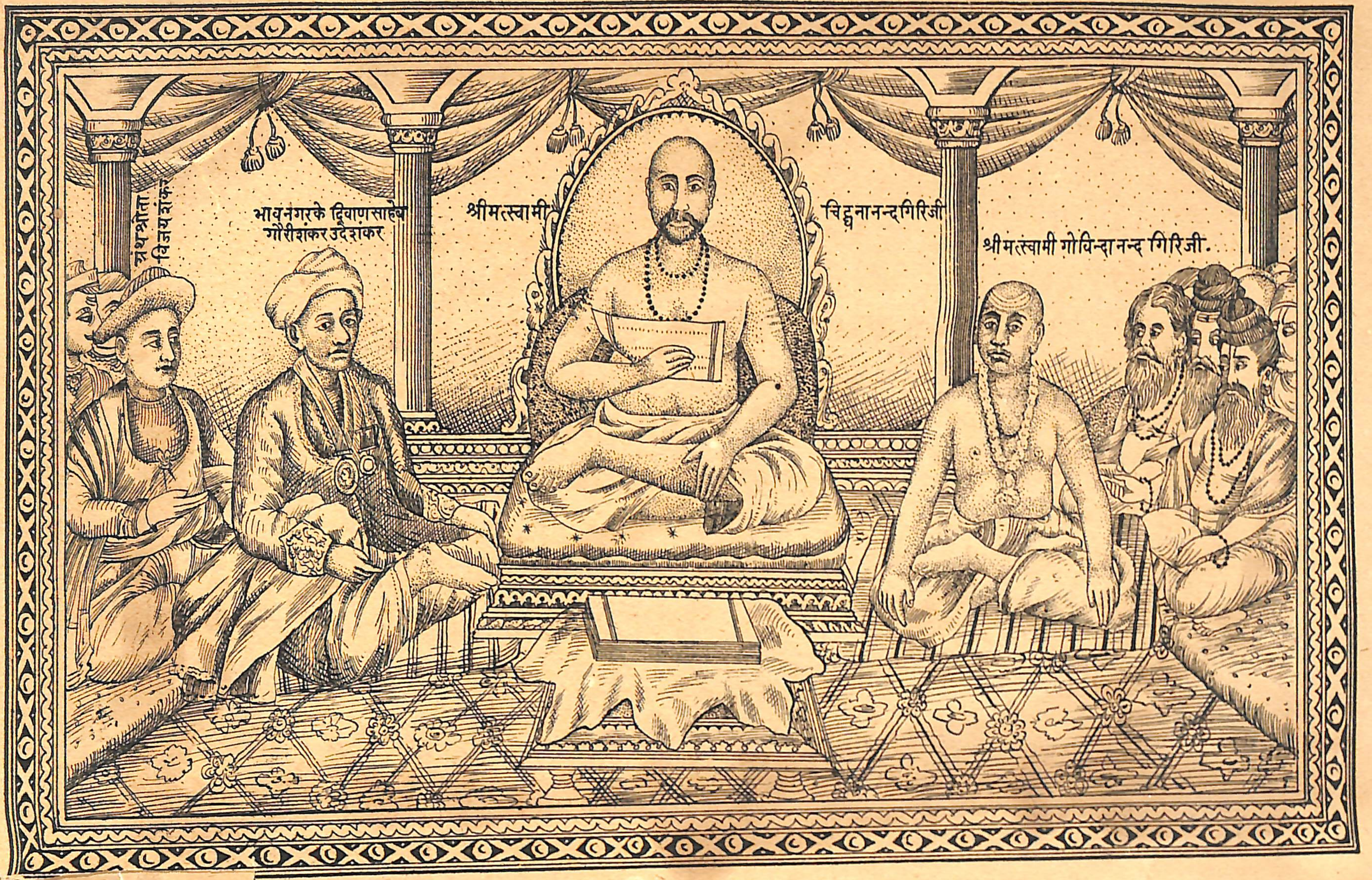
अथ श्रीस्वामिचिद्घनानन्दगिरिकृतं तत्त्वानुसन्धानं प्रारभ्यते ।


ग्रंथश्रोता विजयशंकर
भावनगरके दिवाणसाहेब गौरीशंकर उदेशंकर
श्रीमत्स्वामी चिद्घनानन्दगिरिजी
श्रीमत्स्वामी गोविन्दानन्द गिरिजी.

हार्दिक धन्यवाद।

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य आत्मज्ञानी ब्रह्मनिष्ठ श्रीस्वामी चिद्धनानंद सरस्वतीजीको हम कोटिशः हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने लोकोपकारार्थ और प्राकृत भाषा प्रेमियोंके हितार्थ श्रुति स्मृतियोंका सुंदर सार ले "तत्त्वानुसंधान" नामक सुभग ग्रंथ रचकर अतिदुस्तर दुर्बोध मोक्षका मार्ग खोल दिया. केवल आत्मज्ञानसेही मोक्षकी प्राप्ति होती है वही आत्मज्ञान मुमुक्षुओंके लाभार्थ पूर्णरूपसे इसमें पूर्ण करदिया. संस्कृतवेदांत ग्रंथोंमें जोजो पदार्थ आत्मज्ञानके उपयोगी निरूपण किये हैं वही सर्व पदार्थ इस भाषा ग्रंथमें उक्त श्रीस्वामीजीने निरूपण कियेहैं इससे अधिकारी पुरुषोंको इस पुस्तकके श्रवण मननसे आत्मज्ञान अवश्यमेव प्राप्त होगा इसमें क्या विलक्षणता है. प्रथम यह ग्रंथ अन्यत्र छपाथा परन्तु अबकीवार उक्त श्रीबडे स्वामीजीके स्थानापन्न गोविन्दानन्दजी महाराज जीने हमपर बडा अनुग्रह करके शुद्धकर इसके छापनेका सम्पूर्ण अधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालय बंबईको प्रदान कर दिया.जो छपकर आप मोक्षार्थियोंके दृष्टिगोचर है।

आपका कृपापात्र—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष, खेतवाडी-बंबई.

प्रस्तावना.

श्रीगणेशाय नमः ॥ इससंसारविषे मोक्षतैंपरे दूसराकोईपदार्थ अधिकनहीं है ॥ किंतु मोक्षही सर्वतैं अधिकहै ॥ काहेतैं मोक्षकूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष पुनःजन्ममरणादिरूपसंसारकूं प्राप्तहोतानहीं॥ यहवार्त्ता लोकविषे प्रसिद्धहै ॥ तथा 'नसपुनरावर्तते । यद्गत्वानानिवर्त्तते । अनावृत्तिःशब्दात्' इत्यादिक श्रुति स्मृति सूत्र करिकैभी सिद्धहै ॥ यातैं इनअधिकारीपुरुषोंनैं ता मोक्षकूंही संपादन कर्‍या चाहिये ॥ जिसकरिकै पुनः जन्ममरणादिरूपसंसारकीप्राप्ति नहींहोवै॥ तहां इसजीवात्माकी जा अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक आपणेसच्चिदानंदब्रह्मरूपतैंस्थितिहै ताकानाम मोक्षहै ॥ ब्रह्मलोकादिकोंकीप्राप्ति मोक्षरूपनहींहै ॥ जिसकारणतैं 'तद्यथेहकर्मचितोलोकःक्षीयते । एवमेवामुत्रपुण्यचितोलोकःक्षीयते' ॥ इसश्रुतिनैं इसलोककीन्यांई तेब्रह्मलोकादिकभी नाशवान्कह्येहैं ॥ और 'आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्त्तिनोऽर्जुन' ॥ इसगीतावचनकरिकै श्रीभगवान्ननेंभी तेब्रह्मलोकादिकलोक पुनरावृत्तिवाले कह्येहैं ॥ यातैं तिनलोकोंकीप्राप्ति मोक्षरूपनहीं है ॥ सोउक्तमोक्ष इनअधिकारीपुरुषोंकूं एकआत्मज्ञानकरिकैही प्राप्तहोवैहै ॥ अन्याकिसीकर्मउपासनादिकउपायकरिकै प्राप्तहोतानहीं ॥ काहेतैं 'ज्ञानादेवतुकैवल्यम् । तमेवविदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय' इत्यादिकश्रुतियोंनैं केवलआत्मज्ञानतैंही मोक्षकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और 'नास्त्यकृतः कृतेन । नकर्मणा नप्रजया नधनेन त्यागेनैकेअमृतत्वमानशुः' इत्यादिकश्रुतियोंनैं कर्मउपासनादिकोंतैंमोक्षकीप्राप्तिका निषेधकर्‍याहै ॥ यातैं एकआत्मज्ञानही

तामोक्षकेप्राप्तिका साधनहै ॥ तहां ब्रह्मतैंअभिन्नरूपकरिकै जो आपणेआत्माका अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाज्ञानहै ताकानाम आत्मज्ञानहै ॥ इसप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकैही सोउक्तमोक्ष प्राप्तहोवैहै ॥ जीवब्रह्मकेभेदज्ञानतैं सोमोक्ष प्राप्तहोतानहीं ॥ काहेतैं 'उदरमंतरंकुरुतेऽथतस्यभयंभवाति । द्वितियाद्वैभयंभवति' इत्यादिकश्रुतियोंनैं भेददर्शीपुरुषकूं भयकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तथा 'मृत्योःसमृत्युमाप्नोति यइहनानेवपश्यति' इत्यादिकश्रुतियोंनैं ताभेददर्शीपुरुषकूं पुनःपुनः जन्ममरणकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और 'अथयोऽन्यांदेवतामुपास्तेऽन्योसावन्योऽहमस्मीतिनसवेदयथापशुः' इत्यादिकश्रुतियोंनैं ताभेददर्शीपुरुषकूं पशु कह्याहै ॥ यातैं ताभेदज्ञानकूं मोक्षकीसाधनता संभवतीनहीं ॥ उलटा इनउक्तश्रुतियोंतैं जन्ममरणरूपसंसारकीहीसाधनता सिद्धहोवैहै ॥ और 'प्रज्ञानंब्रह्म । अहंब्रह्मास्मि ॥ तत्त्वमसि॥ अयमात्माब्रह्म' इत्यादिकश्रुतियोंनैं तथा 'क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धि' इत्यादिकस्मृतिवचनोंनैं ताजीवब्रह्मका अभेदही कथनकर्‍याहै ॥ यातैं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका जीवब्रह्मकाअभेदज्ञानही तामोक्षका साधन सिद्धहोवैहै ॥ सोमोक्षकासाधनरूपआत्मज्ञान इनअधिकारीपुरुषोंकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रके श्रवण मनन निदिध्यासन करिकैंही प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तामोक्षकीइच्छावालेअधिकारीपुरुषोंनैं श्रवणादिकसाधनोंकरिकै सोआत्मज्ञान अवश्यसंपादनकर्‍याचाहिये॥ और जेपुरुष प्रमादकरिकै ताआत्मज्ञानकूं नहींसंपादन करेहैं तिनपुरुषोंकूं 'नचेदिहावेदिर्महतीविनष्टिः' ॥ इसश्रुतिनैं जन्ममरणादिरूपमहान्‌हानिकीप्राप्ति कथनकरीहै॥ तथा 'योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वास्माल्लोकात्प्रैतिसकृपणः' इसश्रुतिनैं आत्मज्ञानतैंरहितपुरुषकूं कृपण कह्याहै ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्धकृपणपुरुष प्राप्तहुएधनके उपभोगतैंरहितहोवैहै॥तैसे अज्ञानीपुरुषभी नित्यप्राप्तब्रह्मानंदरूपधनके साक्षात्काररूपउपभो

गतैंरहितहोणेतैं कृपणही है ॥ और जोअधिकारीपुरुष श्रवणादिकसाधनोंकरिकै ताआत्मज्ञानकूं संपादनकरेहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूं 'अथयएतदक्षरंगार्गिविदित्वास्माल्लोकात्प्रैतिसब्राह्मणः' इसश्रुतिनैं ब्राह्मण कह्याहै ॥ तथा गीताविषे श्रीभगवाननैंभी 'ज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्' इसवचनकरिकै ताज्ञानवानूपुरुषकूं आपणाआत्माही कह्याहै ॥ यातैं इनअधिकारीपुरुषोंनैं मोक्षकीप्राप्तिवासतै सोआत्मज्ञान श्रवणादिकोंकरिकै अवश्य संपादनकरणेयोग्यहै ॥ याकारणतैंही वेदविषे 'आत्मावाअरेद्रष्टव्यः' इस श्रुतितैं आत्मज्ञानकी अवश्यकर्त्तव्यताकूंकहिकै ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै 'श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासितव्यः' इसश्रुतिनैं श्रवण मनन निदिध्यासन यहतीनसाधन विधानकऱ्येहैं ॥ यातैं सर्ववेदोंका साक्षात् वा परंपरातैं ताआत्मज्ञानविषेही तात्पर्यहै ॥ तहां वेदकेकर्मकांडकातौ अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ताआत्मज्ञानविषे तात्पर्य है ॥ और उपासनाकांडका चित्तकीएकाग्रताद्वारा तात्पर्यहै ॥ और उपनिषद्रूपज्ञानकांडकातौ साक्षात्ही ताआत्मज्ञानविषे तात्पर्य है ॥ इसप्रकार मनुभगवान् याज्ञवल्क्य पराशर आदिकऋषियोंनैं जे धर्मशास्त्ररूपस्मृतियां करीहैं ॥ तथा श्रीव्यासभगवाननैं जे ब्रह्मसूत्र तथाइतिहास पुराण कऱ्येहैं ॥ तिनसर्वोंकाभी ताब्रह्मात्मएकत्वज्ञानविषेही तात्पर्यहै ॥ तथा वाल्मीकऋषिनैंभी वासिष्ठरामायणविषे अनेकइतिहासोंकरिकै इसआत्मज्ञानकाही निरूपणकऱ्याहै ॥ ऐसे अनादिश्रुतिस्मृतिआदिकोंकरिकैसिद्ध आत्मज्ञानकूंही श्रीभगवान्शंकराचार्यनैं उपनिषद्भाष्यविषे तथासूत्रभाष्यविषे तथागीताभाष्यविषे अतिस्पष्टकरिकै निरूपणकऱ्याहै ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवाननैं शिवपुराणविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'व्याकुर्वन्व्याससूत्रार्थं श्रुतेरर्थंयथोचिवान्॥श्रुतेर्न्या

य्यः सएवार्थः शंकरः सवितानन:' अर्थयह॥ वेदोंकेअन्यथाअर्थकूंनिश्चयकारिकै अनर्थकूंप्राप्तहुएलोकोंकूं देखिकै सर्वदेवतावोंकारिकैप्रार्थनाकऱ्याहुआ श्रीभगवान्शंकर पृथिवीविषे श्रीशंकराचार्यरूपअवतार कूंधारणकारिकै श्रीव्यासभगवान्कृतब्रह्मसूत्रोंकाव्याख्यानकरतेहुए जिसप्रकारका श्रुतियोंकाअर्थ करतेभयेहैं ॥ सोईही श्रुतियोंकाअर्थ समीचीनहै ॥ तिसतैंअन्यप्रकारकाअर्थ समीचीननहीं है इति ॥ और ताभगवान्शंकराचार्यकी शिष्यपरंपराविषे अनेकविद्वान्संन्यासी तथाअनेकविद्वान्ब्राह्मण हुए हैं तिनोंनैं तिनसूत्रभाष्यादिकोंऊपरि टीकाग्रंथ कऱ्येहैं ॥ तथा स्मृति इतिहास पुराण आदिकोंऊपरि टीकाग्रंथकऱ्येहैं ॥ तथा स्वतंत्र अनेकप्रकरणग्रंथ कऱ्येहैं ॥ तेग्रंथ इदानींकालविषेभी सर्वत्रप्रसिद्धहैं ॥ तिनग्रंथोंविषेभी सोजीवब्रह्मकाअभेदज्ञानही सिद्धकऱ्याहै ॥ तहां कैएकग्रंथतौ इतरमतोंकेखंडनपूर्वक स्वमतकेस्थापनकरणेहारे रचेहैं ॥ जैसे चित्सुखी, अद्वैतसिद्धि, संक्षेपशारीरक, स्वाराज्यसिद्धि, वेदांतपरिभाषा, सिद्धांतलेश, अद्वैतकौस्तुभ, भेदधिक्कार इत्यादिकग्रंथहैं ॥ और कैएकग्रंथतौ केवलस्वमतकेस्थापनकरणेहारेही रचेहैं ॥ जैसे पंचदशी, वेदांतसार, अपरोक्षानुभूति, वाक्यवृत्ति, वाक्यसुधा जीवन्मुक्ति, विवेकचूडामणि, आत्मबोध, तत्त्वबोध इत्यादिकग्रंथहैं ॥ इसप्रकार अधिकारीपुरुषोंकेबुद्धिकी तारतम्यताकेअनुसार विद्वान्पुरुषोंनैं अत्यंतविस्तारवाले तथाथोडेविस्तारवाले तथाअत्यंतकठिन तथा अत्यंतसुगम ऐसेअनेक वेदांतग्रंथ कऱ्येहैं ॥ तिनसर्वग्रंथकर्त्तापुरुषोंका इनअधिकारीपुरुषोंके आत्मज्ञानकरावणेविषेही तात्पर्यहै अर्थात् कोईप्रकारकरिकैभी इनअधिकारीपुरुषोंकूं आत्माकासाक्षात्कार होवैहै ॥ जिसकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहोवै और जे अधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिनग्रंथोंका विचारक

रेहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ परंतु तेसर्वग्रंथसंस्कृतवाणीविषेहैं ॥ यातैं सर्वअधिकारीपुरुषोंकी तिनग्रंथोंकेविचारविषे प्रवृत्ति होइसकेनहीं ॥ किंतुव्याकरण काव्य कोश आदिकसाधनग्रंथोंकेअभ्यासवालेपुरुषोंकीही तिनसंस्कृतग्रंथोंकेविचारविषे प्रवृत्ति होवैहै ॥ और जेअधिकारीपुरुष शरीरकी अतिअवस्थातैं अथवा कोईव्याधिआदिकनिमित्ततैं तिन व्याकरणादिकोंकेसंपादनकरणेविषे समर्थ नहीं हैं ॥ और आत्मज्ञानकी उत्कटइच्छाहै॥ तिनमुमुक्षुजनोंकेबोधवासतै महात्माजनोंनैं तिसतिसदेशकीभाषाविषे वेदांतकेग्रंथ कऱ्येहैं ॥ तिनभाषाग्रंथोंकेविचारकरणेतैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूं सोआत्मसाक्षात्कार अवश्यहोवैहै ॥ काहेतैं संस्कृतवेदांतग्रंथोंविषे आत्मज्ञानकेउपयोगी जेजेपदार्थ निरूपणकऱ्ये हैं॥तेसर्वपदार्थ तिनभाषाग्रंथोंविषेभी निरूपणकऱ्येहैं ॥ तिनपदार्थोंविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणता नहीं है॥ यातैं तिनभाषाग्रंथोंकेविचारतैं अधिकारीपुरुषोंकूं सोआत्मज्ञान अवश्यहोवैहै ॥किंवा तिसतिसदेशविषे संस्कृतग्रंथोंकेअध्यापकपुरुष जभी श्रोतापुरुषोंकेप्रति तिससंस्कृतवाक्यकाउच्चारणकरिकै तावाक्यका स्वदेशकीभाषाविषेअर्थ कहेहैं ॥ तभीही ताश्रोतापुरुषकूं तावाक्यकेअर्थकाबोध होवैहै ॥ केवल संस्कृतवाक्यकेपाठमात्रतैं ताश्रोताकूं बोधहोता नहीं ॥ याप्रकारकी पठनपाठनकीरीति इदानींकालविषे सर्वत्रप्रसिद्धहै ॥ यातैं सो विद्वान्पुरुषकृत संस्कृतवाक्योंकादेशभाषाविषेव्याख्यान जैसे श्रोतापुरुषोंकेबोधकाहेतु होवैहै ॥ तैसे विद्वानपुरुषकृत संस्कृतवाक्योंकेव्याख्यानरूप तेभाषाग्रंथभी अधिकारीपुरुषोंकेबोधकाहेतु अवश्यहोवैंगे ॥ किंवा भाषाग्रंथोंकेविचारकूं आत्मज्ञानकीहेतुता केवल उक्तयुक्तिकरिकैही सिद्धनहीं है॥किंतु प्रत्यक्षअनुभवक

रिकैभी सिद्धहै ॥ जो हृषीकेशादिकस्थानोंविषे कितनेकमहात्मालोक केवल भाषाग्रंथोंकाही विचा
रकरेहैं ॥ परंतु तिनमहात्मालोकोंविषे ज्ञाननिष्ठा तथादैवीसंपदाकेगुण तथावेदांतशास्त्रकेपदपदार्थका
ज्ञान परिपूर्ण देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं जैसे संस्कृतवेदांतकेग्रंथ अधिकारीपुरुषोंके आत्मज्ञानकेहेतुहैं
तैसे भाषावेदांतग्रंथभी अधिकारीपुरुषोंके आत्मज्ञानकेही हेतुहैं ॥ इसप्रकारकेअभिप्रायकरिकैही
महात्मापुरुषोंनैं तिसतिसेदेशविषेस्थितअधिकारीपुरुषोंकेबोधवासतै तिसतिसदेशकीभाषाविषे वेदांतके
ग्रंथ कऱ्येहैं ॥ यातैं अधिकारीपुरुषोंकेबोधकाहेतुहोणेतैं तिनभाषाग्रंथोंकीरचनाभी सफलहै ॥ इसप्र
कारकाविचारकरिकै श्रीभावनगरराजधानीकेमुख्यप्रधान श्रीब्रह्मनिष्ठ गौरीशंकरनें गुर्जरदेशकीभाषा
विषे एकस्वरूपानुसंधाननामाग्रंथ रच्याहै ॥ तथा छपाइकैप्रसिद्धकऱ्याहै ॥ तिसग्रंथाविषे श्रुतिस्मृति
आचार्योंकेवाक्य प्रमाणदेकै पंचकोशादिक सर्ववेदांतकीप्राक्रिया लिखी हैं ॥ तथा उपनिषद्भाष्यसूत्र
भाष्य गीताभाष्य आदिकोंका संक्षेपतैं तात्पर्यार्थ निरूपणकऱ्याहै ॥ यातैं सोस्वरूपानुसंधानग्रंथभी
मुमुक्षुजनोंकूं विचारविषे बहुतउपयोगीहै ॥ और पूर्व श्रीस्वामीचिद्घनानंदगिरिनैं सर्वमुमुक्षुजनोंकेहि
तवासतै भगवद्गीताकी गूढार्थदीपिकानामा भाषाटीका करीथी॥तिसकूंभी इन्होंनेंही छपाइकैप्रसिद्धक
ऱ्याथा॥और अबीश्रीस्वामीसच्चिदानंदसरस्वतीनामयुक्त संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकैस्थित तिनोंनैंही
सर्वमुमुक्षुजनोंकेहितवासतै यहतत्त्वानुसंधानग्रंथ छपाइकैप्रसिद्धकऱ्याहै॥तथा अन्यभीकई संस्कृतभा
षाग्रंथ छपाइकैप्रसिद्धकऱ्येहैं ऐसेस्वधर्मविषेस्थित तथाब्रह्मविद्याकेप्रवर्त्तकपुरुष जगद्विषेदुर्लभहैं इति ॥

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशङ्कराचार्येभ्योनमः ॥
अथ तत्त्वानुसंधानग्रंथारंभः ॥ श्लोक ॥ श्रीगुरुचरणद्वंद्वं नुमोव्यासमुखान्मुनीन् ॥ विघ्नहर्तॄन्गणेशादी
न्पंडितांश्चविमत्सरान् ॥१॥ नत्वाथशङ्कराचार्यमुख्यान्सर्वान्गरीयसः ॥ तत्त्वानुसंधानग्रंथंवर्णयामि
यथामति ॥ २ ॥ अर्थ यह ॥ श्रीगुरुवोंकेदोनोंचरणोंकूं तथा श्रीव्यासभगवानतैंआदिलैकेवसिष्ठसनका
दिकसर्वमुनियोंकूं तथाविघ्नोंकेनष्टकरणेहारे श्रीगणेशतैं आदिलैके श्रीमहादेव, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य, देवी
इत्यादिकसर्वदेवतावोंकूं तथा मत्सरादिकसर्वदोषोंतैंरहित पंडितजनोंकूं मैं नमस्कारकरूंहूं ॥१॥ किंवा
श्रीमहादेवकाअवताररूप जो श्रीशंकाराचार्यहै तिसतैंआदिलैके जितने कितिनोंके शिष्यप्रशिष्यादि
कसंप्रदायाविषेस्थित श्रीसुरेश्वराचार्य श्रीपद्मपादाचार्य श्रीतोटकाचार्य श्रीहस्तामलकाचार्य श्रीसर्वज्ञ
महामुनि श्रीचित्सुखाचार्य इत्यादिकवृद्धमहात्माहैं। तिनसर्वोंकूं नमस्कारकरिकै मैं इसप्राकृततत्त्वानु
संधाननामाग्रंथकूं यथामति वर्णनकरूंहूं इति ॥२॥ अब संस्कृततत्त्वानुसंधानग्रंथकेकर्त्ता श्रीमहादेव
सरस्वतीनैं ताग्रंथकीनिर्विघ्नसमाप्तिवासतै जो मंगलकर्‍याहै ताकूं ईहांलिखेहैं ॥ श्लोक ॥'ब्रह्माहंयत्प्रसा
देन मायिविश्वंप्रकल्पितम्॥श्रीमत्स्वयंप्रकाशाख्यं प्रणौमिजगतांगुरुम्॥१॥देहोनाहंश्रोत्रवागादिकानि
नाहंबुद्धिर्नाहमध्यासमूलम्॥नाहंसत्यानंदरूपश्चिदात्मा मायासाक्षीकृष्णएवाहमस्मि' ॥२॥ अब इनदो
श्लोकोंविषे प्रथम श्लोकका अर्थ निरूपणकरेहैं ॥ जिसगुरुकेप्रसादकरिकै मैं ब्रह्मरूपहूं॥तथा यह सर्व
विश्व मेरेविषेकल्पितहै ॥ ऐसा जो श्रीमत्स्वयंप्रकाशसरस्वतीनामा हमारागुरुहै ॥ तथा अधिकारीजन
रूपसर्वजगत्‌कागुरुहै ॥ तिसद्गुरुकूं मैं नमस्कार करूंहूं इति॥अब इसीश्लोकका विस्तारतैं अर्थ निरू

पणकरेहैं ॥ तहां उक्तश्लोकाविषे ब्रह्माहं इसवचनविषेस्थित ब्रह्मशब्दकरिकै मायातैं रहित अखंडचैतन्य का ग्रहणकरणा ॥ और अहंशब्दकरिकै स्थूल सूक्ष्म कारण इनतीनशरीरोंतैंरहित प्रत्यक्चैतन्यका ग्रहणकरणा ॥ और ब्रह्म अहं इनदोनोंपदोंका सामानाधिकरण्यहै ॥ सो पदोका सामानाधिकरण्य अर्थकेअभेदस्थलविषेहीहोवै हैं ॥ यातैं ब्रह्माहं इसवचनकरिकै ग्रंथकारनें तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिक महावाक्योंका अर्थरूप ब्रह्मआत्माकाअभेद इसतत्त्वानुसंधानप्रकरणका विषय सूचनकऱ्या ॥ और तिसब्रह्मात्माकेअभेदज्ञानतैं अज्ञानकीनिवृत्तिद्वारा जापरमानंदकीप्राप्तिहै ॥ सो इसग्रंथका प्रयोजन सूचनकऱ्या ॥ और तापरमानंदकेप्राप्तिकीइच्छावाला जोविवेकादिक चतुष्टय साधनसंपन्नपुरुषहै ॥सो इसग्रंथका अधिकारी सूचनकऱ्या ॥ और विषयग्रंथादिकोंका परस्पर प्रतिपाद्यप्रतिपादकभावादिरूपसंबंधभी सूचनकऱ्या॥ सोदिखावेहैं ॥ तहां ब्रह्मात्मएकत्वरूपविषयका तथा ग्रंथका परस्पर प्रतिपाद्यप्रतिपादकभाव संबंधहै ॥ तहां यहवेदांतग्रंथतौ प्रतिपादकहै ॥ और सोउक्तविषय प्रतिपाद्यहै ॥ तहां जो प्रतिपादनकरणेवालाहोवैहै सो प्रतिपादक कह्याजावैहै ॥ और जो प्रतिपादनकरणेकूं योग्यहोवैहै सो प्रतिपाद्य कह्याजावैहै ॥ और फलका तथा अधिकारीका परस्पर प्राप्यप्रापकभाव संबंधहै ॥ तहां अज्ञानकीनिवृत्ति उपलक्षित परमानंदकी प्राप्तिरूपफलतौ प्राप्यहै और उक्तअधिकारी प्रापकहै ॥ तहां जो वस्तु प्राप्तहोणेकूं योग्यहोवैहै ॥ सोवस्तु प्राप्यकह्याजावैहै और जिस पुरुषकूं सोवस्तु प्राप्तहोवैहै ॥ सोपुरुष प्रापक कह्याजावैहै ॥ और अधिकारीका तथा विचारका परस्पर कर्तृकर्तव्यभाव संबंधहै ॥ तहां उक्तअधिकारीतौ कर्ता है ॥ और विचार कर्तव्यहै ॥ तहां कर

णेवालेकूं कर्ता कहेहैं ॥ और करणेयोग्यअर्थकूं कर्तव्यकहेहैं ॥ और ज्ञानका तथा ग्रंथका परस्पर जन्यजनकभाव संबंधहै ॥ तहां विचारद्वारा ग्रंथज्ञानकाजनकहोवैहै ॥ और सो ज्ञान जन्यहोवैहै ॥ तहां उत्पत्तिकरणेवालेकानाम जनकहै ॥ और उत्पन्नहोणेहारेकार्यकानाम जन्यहै ॥ इसतैं आदिलैके औरभी संबंध जानिलेणे ॥ तहां विषय १ प्रयोजन २ अधिकारी ३ संबंध ४ यहचारिअनुबंध विवेकीपुरुषोंकीग्रंथविषयकप्रवृत्तिकेहेतु होवैहैं ॥ अर्थात् इनचारिअनुबंधोंकूंजानिकेही बुद्धिमान् पुरुष ग्रंथविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं ग्रंथकारनें ब्रह्माहं इसवचनकरिकै सूचनकरेहुए ते अनुबंध ईहां स्पष्ट करिकैनिरूपणकऱ्येहैं ॥ और ताग्रंथकारनें ब्रह्माहं इसवचनकरिकै साक्षात्तौ ग्रंथकीनिर्विघ्नसमाप्तिवास तैं तत्त्वानुसंधानरूपमंगलही कथनकऱ्याहै ॥ ईहां ब्रह्म आत्माकाजोएकत्वहै सोईहीतत्त्वहै ॥ तातत्त्वकाजोस्मरण है ताकानाम तत्त्वानुसंधानहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तातत्त्वानुसंधानकीमंगलरूपताविषे कौनप्रमाणहै? ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ व्यासादिकमुनियोंने स्मृतिवचनोंविषे तापरत्माकेस्मरणकूं मंगलरूपता कथनकरीहै ॥ तहांस्मृति ॥ 'स्मृतेसकलकल्याणभाजनंयत्रजायते॥पुरुषस्तमजंनित्यंव्रजामिशरणंहरिम्, ॥ १ ॥ अर्थ यह ॥ यहपुरुष जिसहरिकेस्मरणकियेहुए सर्वकल्याणोंकाभाजनहोवैहै ॥ तिसजन्मतैंरहितनित्यहरिकेशरणकूं मैं अधिकारीजन प्राप्तहूं इति ॥ १ ॥ अन्यस्मृति ॥ 'सर्वदासर्वकार्येषु नास्तितेपाममंगलम् ॥ येषांहृदिस्थो भगवान्मंगलायतनोहरिः'॥ २ ॥ अर्थ यह ॥ जिनपुरुषोंकेहृदयाविषे सर्वमंगलोंकाआश्रयभूत भगवान्हरि स्थितहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं सर्वकालविषे सर्वकार्योंविषे अमंगल नहीं है किन्तु सर्वदा सर्वकार्योंविषे मंगलही है इति ॥ २ ॥ अन्यस्मृति ॥ 'अशुभानिनिरा

चष्टे तनोतिशुभसंततिम्॥स्मृतिमात्रेणयत्पुंसां ब्रह्मतन्मंगलंविदुः' ॥३॥ अर्थयह ॥ जोब्रह्म आपणे स्मरणमात्रकरिके इन अधिकारीपुरुषोंके सर्व अशुभोंकूं निवृत्तकरेहै॥तथासर्वशुभोंकूंविस्तारकरेहै॥तिस ब्रह्मकूं वेदवेत्तापुरुष मंगलरूपजानेहैं इति ॥३॥ अन्यस्मृति ॥ 'हरिर्हरतिपापानिदुष्टचित्तैरापिस्मृतः ॥ अनिच्छयापिसंस्पृष्टो दहत्येवहिपावकः' ॥ ४ ॥ अर्थयह ॥ जैसे विनाइच्छातें स्पर्शकऱ्याहुआभी अग्नि दाहहीकरेहै ॥ तैसे दुष्टचित्तवालेपुरुषोंनेभी स्मरणकऱ्याहुआ हरि तिनपुरुषोंकेपापोंकूं नाशही करेहै इति ॥ ४ ॥ इत्यादिकस्मृतिवचनोंने तापरमात्माकेस्मणरूप तत्त्वानुसंधानविषे मंगलरूपताही कथनकरी है॥ यातें ब्रह्माहं इसतत्त्वानुसंधानविषे मंगलरूपता संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्माहं इसवचनकरिकै कथनकऱ्याजो ब्रह्मआत्माकाएकत्व सोसंभवतानहीं॥ काहेतें सोब्रह्म तथा जीवात्मा दोनों परस्परविरुद्धधर्मोंकरिकै युक्तहैं ॥ और जेपदार्थ परस्पर विरुद्धधर्मवालेहोवेहैं तिनपदार्थोंकी एकताहोतीनहीं ॥ जैसे उष्णस्पर्शवालेअग्निका तथा शीतस्पर्शवालेबर्फका एकत्वहोतानहीं ॥ तैसे ताजीवब्रह्मकाभी एकत्वसंभवतानहीं ॥ तहां 'यःसर्वज्ञःसर्ववित्' इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनों करिकै सोब्रह्मतो, जगत्कल्पनाकाअधिष्ठानरूप तथा सर्वज्ञरूप जान्याजावैहै ॥ और 'अनीशयाशोचतिमुह्यमानः' इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंकरिकै सोजीवात्मा ताब्रह्मतैंविपरीत अल्पज्ञत्वादिकधर्मवाला जान्याजावैहै ॥ और मैंब्रह्मनहींहूं याप्रकारका प्रत्यक्षअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवेहै ॥ सो अनुभवभी जीवब्रह्मकेभेदकूंही सिद्धकरेहै ॥ यातैं ब्रह्माहं इसवचनकरिकैकथनकरी जीवब्रह्मकी एकता संभवतीनहीं ॥ ऐसीवादीकीशंकाकेलिये कहेहैं ॥ 'मयिविश्वंप्रकल्पितम्' इति । मैं अंतःकरणउपल

क्षितसाक्षीआत्माविषे यहगिरिनदीआदिकभेदकरिकैभिन्न ब्रह्मांडपर्यंत सर्वविश्व कल्पित कहिये अध्यस्तहै ॥ इहां यहतात्पर्य है ॥ अहंशब्दकावाच्यअर्थ जोजीवहै ॥ ताजीवकीब्रह्मशब्दकेवाच्यअर्थसे विलक्षणताकेहुएभी ॥ ताअहंशब्दकालक्ष्यअर्थ जोअंतःकरणादिकोंकासाक्षी प्रत्यक्आत्मा है॥ ताप्रत्यक्आत्माका मायाउपलक्षितब्रह्मकेसाथि नाममात्रतैंहीभेदहै ॥ वास्तवतैं तिनदोनोंलक्ष्यअर्थोंका अभेदहीहै ॥ यातैं जैसे ब्रह्मविषे जगत्कल्पनाकाअधिष्ठानपणाहै॥ तैसे प्रत्यक्आत्माविषेभी जगत्कल्पनाकाअधिष्ठानपणा संभवैहै ॥यातैं ताउक्तविरोधकेअभावतैं तिनदोनोंलक्ष्यअर्थोंकीएकता संभवैहै ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति॥ 'मय्येवसकलंजातं मयिसर्वंप्रतिष्ठितम् । मयिसर्वंलयंयाति तद्ब्रह्माद्वयमस्म्यहम्' ॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् मैंप्रत्यक्आत्माविषेही उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा मेरेविषेही यहसर्वजगत् स्थितहै ॥ तथा मेरेविषेही यहसर्वजगत् लयभावकूंप्राप्तहोवैहै॥यातैं ब्रह्मकीन्यांई सर्वजगत्कल्पनाकाअधिष्ठानहोणेतैं मैंप्रत्यक्आत्मा अद्वितीयब्रह्मरूपहीहूं इति ॥ यहश्रुति अंतःकरणउपलक्षितप्रत्यक्साक्षीआत्माविषे सर्वजगत्कीकल्पनाकूंदिखाइकै ताप्रत्यक्आत्माका ब्रह्मकेसाथिअभेदकूंहीं बोधनकरैहै ॥ यातैं ब्रह्माहं इसवचनकरिकै जोग्रंथकारनें जीवात्माब्रह्मकाअभेद कथनकर्‍याहै ॥ सो सर्वप्रकारतैं अविरुद्धहै ॥ किंवा 'मयिविश्वं प्रकल्पितम्' इसवचनकरिकै ग्रंथकारने प्रपंचविषे मिथ्यापणाभी सूचनकर्‍याहै॥ सोप्रपंचकामिथ्यापणा अनेकश्रुतियोंकरिकै सिद्ध है ॥ तथा अनुमानप्रमाणकरिकैभीसिद्धहै ॥ ताअनुमानका यहआकारहै ॥ 'व्यावहारिकःप्रपंचः मिथ्या दृश्यत्वात् शुक्तिरूप्यवत्' अर्थयह ॥ यहव्यावहारिकप्रपंच मिथ्याहोणेकूंयोग्यहै दृश्यरूपहो

तत्त्वा० णेतैं ॥ जोजोपदार्थ दृश्यहोवैहै सोसोपदार्थ मिथ्याहीहोवैहै ॥ जैसे शुक्तिविषेप्रतीतहुआरूप्य दृ परि०
॥ ३ ॥ श्यहोणेतैं मिथ्याहीहै इति ॥ किंवा पूर्वभेदवादीनें मैंब्रह्मनहींहूं यहजो जीवब्रह्मकेभेदकाग्राहक प्रत्य १
क्षकह्याथा ॥ तावादीसेयहपूँछांचाहिये ॥ सोतुमाराप्रत्यक्ष अंतःकरणादिविशिष्टआत्माविषे ब्रह्मकेभेद
कूंग्रहणकरेहै ॥ अथवा शुद्धआत्माविषे ब्रह्मकेभेदकूंग्रहणकरेहै ॥ तहां सोवादी जो प्रथमपक्ष अंगी
कारकरै सो हमारेकूंभीइष्टहै ॥ अर्थात् ताविशिष्टआत्माका ब्रह्मकेसाथिअभेदहमभी अंगीकारक
रतेनहीं ॥ और सोवादी जोदूसरापक्ष अंगीकारकरै ॥ सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं सोशुद्धआत्मा अ
तिइंद्रियहै ॥ अर्थात् इंद्रियजन्यज्ञानकाविषयनहींहै ॥ ऐसेशुद्धआत्माकेग्रहणकरणेवास्ते चक्षुआदिक
इंद्रियोंकीप्रवृत्ति कदाचितभी नहींहोवैगी ॥ जबी ताभेदकाधर्मीरूपशुद्धआत्मा इंद्रियोंकरिकैग्रहणनहीं
हुआ ॥ तबी ताशुद्धआत्माकेआश्रित सोब्रह्मकाभेद इंद्रियोंकरिकै कैसेग्रहणहोवैगा ॥ किंतु नहींग्रह
णहोवैगा ॥ जिसकारणतैं धर्मीके तथा प्रतियोगीके ज्ञानतैंविना ताभेदकाज्ञान होतानहीं ॥ किंतु
धर्मीप्रतियोगीकेज्ञानहुएही ताभेदकाज्ञानहोवैहै ॥ जैसे 'घटःपटोन' इसप्रतीतितैं घटविषेप्रतीतभया
जोपटकाभेदहै ॥ ताभेदका सोघटतौ धर्मीहोवैहै ॥ और सोपट प्रतियोगीहोवैहै ॥ ताघटरूपधर्मीके
तथापटरूपप्रतियोगीके ज्ञानहूएही ताघटविषे पटकेभेदकाज्ञानहोवैहै॥तैसे तुमनें शुद्धआत्माविषे अंगी
कारकऱ्याजो ब्रह्मकाभेदहै ॥ ताभेदकाभी सोशुद्धआत्मातौ धर्मीहोवैगा॥ और सोब्रह्म प्रतियोगी ॥ ३ ॥
होवैगा ॥ ताधर्मीप्रतियोगीकेज्ञानतैंविना ताभेदकाज्ञानहोवैगानहीं ॥ और ताभेदका सोशुद्धआत्मा
रूपधर्मी तथा ब्रह्मरूपप्रतियोगी दोनों अतिइंद्रियहैं ॥ यातैं ताधर्मीप्रतियोगीकेप्रत्यक्षतैंविना ताभेदका

प्रत्यक्ष कैसेहोवैगा ॥ किंतु नहींहोवैगा ॥ यातैं जीवब्रह्मकेभेदकाग्राहक प्रत्यक्षप्रमाणहै यहवादीका कहणा केवल मनोरथमात्रहै इति ॥ किंवा विचारकरिकैदेखियेतौ किसीभीभेदकी कहांस्थिति संभव तीनहीं ॥ काहेतैं जोवादी ताभेदकूंअंगीकारकरैहै ॥ तावादीसैं यहपूँछाचाहिये ॥ सोभेद अभिन्नध र्मीविषेरहैहै ॥ अथवा भिन्नधर्मीविषेरहैहै ॥ इहां भेदतैंरहितकानाम अभिन्नहै ॥ और भेदवालेकानाम भिन्नहै ॥ तहां सोवादी जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरै ॥ तौ एकतौ व्याघातदोषकीप्राप्तिहोवैहै काहेतैं परस्परविरुद्धधर्मोंका जोएकअधिकरणविषे समुच्चयहै ताकानाम व्याघातहै ॥ जैसे प्रसंगविषेभेदतैंर हितपणा तथा भेदयह दोनों परस्परविरुद्धहैं ॥ अर्थात् जहां भेदरहैहै तहां भेदरहितपणा नहींरहैहै ॥ और जहां भेदरहितपणा रहैहै तहां भेदनहींरहैहै ॥ ऐसे विरुद्धधर्मोंका एकअधिकरणविषे समुच्च यमाननेमें सोव्याघातदोष स्पष्टहीप्रतीतहोवैहै ॥ और दूसरा भेदरहितधर्मीविषे भेदकूंग्रहणकरणेहारे प्रत्यक्षज्ञानविषे भ्रमरूपताकीप्राप्ति होवैगी ॥ यातैं अभिन्नधर्मीविषेभेदकावर्तणा संभवतानहीं ॥ और सोवादी ताउक्तदोनोंदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोभेद भिन्नधर्मीविषेरहैहै॥ यहद्वितीयपक्ष जो अंगीकार करै तावादीसे यहपूँछाचाहिये ॥ सोभेद आपणेकरिकैभिन्नकऱ्येहुएधर्मीविषे आपरहैहै ॥ अथवा कि सीदूसरेभेदकरिकैभिन्नकऱ्येहुएधर्मीविषे सो भेद रहैहै ॥ तहां सोवादी जो प्रथमपक्ष अंगीकारकरैं ॥ तो आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतैं आपणीउत्पत्तिविषे जोआपणीअपेक्षाहै अथवा आपणीस्थि तिविषे जोआपणीअपेक्षाहै अथवा आपणेज्ञानाविषे जोआपणीअपेक्षाहै ताकानाम आत्माश्रयहै ॥ जैसे इहांप्रसंगविषे तिसभेदविशिष्टधर्मीविषे तिसभेदकीस्थितिमाननेविषे सोआपणीस्थितिविषे आप

णीअपेक्षारूपआत्माश्रयदोष स्पष्टहीप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं तिसभेदविशिष्टधर्मीविषे तिसभेदकावर्तणा संभवैनहीं ॥ और ताआत्माश्रयदोषकोनिवृत्तकरणेवासतै सोवादी किसीदूसरेभेदकरिकैभिन्न कन्येहुए धर्मीविषे सोभेदरहेहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरै ॥ तावादीसे यहपूँछाचाहिये ॥ सोदूसारभी अभिन्नधर्मीविषेरहेहै ॥ अथवा भिन्नधर्मीविषेरहेहै ॥ तहां सोवादी जो प्रथमपक्ष अंगीकारकरै ॥ तौ पूर्वकीन्यांई पुनः व्याघातदोषकीप्राप्ति होवैगी ॥ ताव्याघातदोषकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोवादी जो द्वितीयपक्ष अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यहपूँछाचाहिये ॥ सोदूसराभेदभी आपणेकारिकेभिन्नकन्येहुए धर्मीविषे आपरहेहै ॥ अथवा ताप्रथमभेदकारिकैभिन्नकन्येहुएधर्मीविषे सोदूसराभेद रहैहै ॥ अथवा किसीतीसरेभेदकरिकैभिन्नकन्येहुएधर्मीविषे सोदूसराभेद रहे ॥ तहां प्रथमपक्षविषेतौ पूर्वकीन्यांई पुनः आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और दूसरेपक्षविषे अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतैं दोपदार्थोंकूं आपणीउत्पत्तिविषे अथवा आपणीस्थितिविषे अथवा आपणेज्ञानाविषे जोपरस्पर अपेक्षाहै ताका नाम अन्योन्याश्रयहै ॥ जैसे यहांप्रसंगाविषे प्रथमभेदकूं आपणीस्थितिवासतै दूसरे भेदकीअपेक्षाहोवैहै ॥ और तादूसरेभेदकूं आपणीस्थितिवासतै प्रथमभेदकीअपेक्षाहोवैहै ॥ यातैं प्रथमभेदविशिष्टधर्मीविषे तादूसरेभेदकीस्थितिमानणेविषे सोअन्योन्याश्रयदोषस्पष्टहीप्रतीतहोवैहै ॥ और ताअन्योन्याश्रयदोषकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोवादी जोतीसरापक्ष अंगीकारकरै ॥ अर्थात ॥ ४ ॥
किसीतीसरेभेदकरिकैभिन्नकन्येहुएधर्मीविषे सोदूसराभेद रहैहै ॥ यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै तावादीसैं यहपूँछाचाहिये ॥ सोतीसराभेदभी अभिन्नधर्मीविषेरहैहै ॥ अथवा भिन्नधर्मीविषेरहैहै ॥ तहां

प्रथमपक्षविषेतौ पूर्वकीन्यांई पुनः व्याघातदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तादोषकीनिवृत्तिवासतै सो वादी जोद्वितीयभिन्नपक्ष अंगीकारकरै ॥ तावादीसैं यह पूँछाचाहिये ॥ सोतीसरा भेदभी आपणेकारिकैभिन्नकऱ्येहुए धर्मीविषे आपरहेहै ॥ अथवा ॥ तादूसरेभेदकारिकैभिन्नकऱ्येहुएधर्मीविषे सोतीसराभेद रहेहै ॥ अथवाताप्रथमभेदकारिकैभिन्नकऱ्येहुएधर्मीविषे सोतीसराभेद रहेहै ॥ अथवा किसीचतुर्थभेदकारिकैभिन्नकऱ्येहुएधर्मीविषे सोतीसराभेद रहेहै ॥ तहां प्रथमपक्षविषेतौ पूर्वकीन्यांई पुनः आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और द्वितीयपक्ष विषेभी पूर्वकीन्यांई पुनः अन्योन्याश्रयदोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ और तृतीयपक्ष विषे चक्रिकादोषप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतैं प्रथमकूं अपेक्षितजो द्वितीयहै ताद्वितीयकूंअपेक्षितजो तृतीय है तिनतृतीयादिकोंकूं जोपुनः ताप्रथमकी अपेक्षाहै ताकानाम चक्रिकाहै ॥ जैसे इहांप्रसंगविषे ताप्रथमभेदकूं आपणीस्थितिविषे दूसरेभेदकीअपेक्षाहै॥ और तादूसरेभेदकूं आपणीस्थितिविषे तीसरेभेदकी अपेक्षाहै ॥ और तातीसरेभेदकूं आपणीस्थितिविषे पुनःताप्रथमभेदकीअपेक्षाहै॥इसरीतिसे चतुर्थपंचमादिकोंविषेभी पुनःप्रथमकीअपेक्षातैं चक्रिकादोषकीप्राप्ति जानिलेणी॥और ताचक्रिकादोषकीनिवृत्तिवासतै सोवादी जोचतुर्थपक्ष अंगीकारकरै अर्थात् सोतीसराभेद किसीचतुर्थभेदकारिकैभिन्नकऱ्येहुएधर्मीविषेरहेहै यहचतुर्थपक्ष अंगीकारकरै तौ अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी॥काहेतैं सोचतुर्थभेदभी पूर्वउक्तव्याघात आत्माश्रय अन्योन्याश्रयचक्रिकाआदिकदोषोंकी प्राप्तिकेभयतैं अभिन्नधर्मीविषेवास्वविशिष्टधर्मीविषे वातृतीयभेदविशिष्टधर्मीविषेवाप्रथमभेदविशिष्टधर्मीविषे रहैगानहीं,किन्तुकिसीपंचमभेदविशिष्टधर्मीविषेहीरहैगा॥आगेतैं सोपंचमभेदभी किसीषष्ठभेदविशिष्टधर्मीविषेहींरहैगा॥इसप्रकारआगे

आगेभेदोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहां परिअवसानतैं रहित जोपूर्वपूर्वकूंउत्त रउत्तरकी अपेक्षाहै ताकानाम अनवस्थाहै ॥ तहां व्याघात आत्माश्रय अन्योन्याश्रय चक्रिका अनव स्था इनदोषोंकीसंस्कृतलक्षणन्यायप्रकाशकेषष्ठपारिच्छेदविषे तर्कनिरूपणविषे हमनेविस्तारतैंकथनक र्येहैं॥जिससेजिज्ञासाहोवै तिसनें तहांजानिलेणे ॥ इसप्रकारतैं जीवब्रह्मकेभेदकेअसंभवहुएब्रह्माहं इस वचनकरिकै सोतत्त्वानुसंधानरूपमंगल संभवैहै इति ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्माहं इसतत्त्वानुसंधानरूपमंग लकरिकैही ग्रंथकीनिर्विघ्नपरिसमाप्ति संभवहोइसकेहै ॥ यातैं ग्रंथकारने 'गुरुंप्रणौमि' इसवचनकरिकै पुनःगुरुकोनमस्कार किसवास्तैकर्‍याहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इसपुरुषकूं सोतत्त्वानुसंधान ब्रह्मवेत्ता गुरुकीभक्तितैंविना प्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु गुरुकीभक्तिकरिकैहीं सोतत्त्वानुसंधान प्राप्तहोवैहै ॥ यहवा र्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥तहां श्रुति ॥'यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ । तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्र काशंतेमहात्मनः' ॥अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे परमभक्तिहोवैहै ॥ और जैसीप रमात्मादेवविषेपरमभक्तिहोवैहै ॥ तैसीही जभी ब्रह्मवेत्तागुरुविषे परमभक्तिहोवैहै तभीही तिसमहा त्माअधिकारी पुरुषकूं यहवेदांतप्रतिपादित जीवब्रह्मकाएकत्वादिरूपअर्थ बुद्धिविषेप्रकाशमानहोवैहै ॥ तागुरुभक्तितैंरहितपुरुषकूं तेवेदांतप्रतिपादितअर्थ कदाचित्भी प्रकाशमानहोतेनहीं इति ॥ इसश्रुतिनैं तागुरुभक्तिकूं तातत्त्वानुसंधानकेप्रति अंतरंगसाधनता कथनकरीहै याकारणतैंहीं ग्रंथकारनैं सागु रुकानमस्काररूपभक्ति यहांकरीहै ॥ इतिप्रथमश्लोकव्याख्या ॥ १ ॥ अथ द्वितीयश्लोकव्याख्या ॥ तहां प्रथमश्लोकविषे ब्रह्माहं इसवचनकरिकै अनुसंधानकर्‍याजो ब्रह्मात्मतत्त्व ॥ तिसब्रह्मात्मतत्त्वकूंही

इसद्वितीयश्लोकविषे अहंशब्दार्थकेविवेचनपूर्वक इष्टदेवतावाचककृष्णशब्दतैं कथनकरिकै पुनः अनुसंधानकरेहैं 'देहोनाहमिति' स्वप्नविषे यहस्थूलदेह प्रतीतहोतानहीं ॥ और मैंतौ तास्वप्नविषेभी साक्षीरूपकरिकैप्रकाशमानहूँ ॥ यातैं मैं स्थूलदेहनहींहूं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ 'स्थूलोऽहं कृशोऽहं मनुष्योऽहं, याप्रकारकाअनुभव सर्वप्राणियोंकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवतैं यहस्थूलदेहही आत्मासिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं सर्वशास्त्रवालोंकेमतविषे अहंशब्दकाअर्थ तथा अहंप्रतीतिकाविषय आत्माहीहोवैहै ॥ और उक्तरीतिसैं साअहंप्रतीतिकीविषयता स्थूलत्व कृशत्व मनुष्यत्व आदिकधर्मविशिष्ट स्थूलदेहाविषेही प्रतीतहोवैहै ॥ और तास्थूलदेहतैंभिन्न कोईआत्मा प्रतीतभीहोतानहीं ॥ और स्वप्नविषेभी स्थूलोऽहं याप्रकारकाअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ यातैं यहस्थूलदेहही आत्माहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इसस्थूलशरीरकी उत्पत्ति तथा विनाश सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै और जोवस्तु उत्पत्तिविनाशवालीहोवैहै सोवस्तु अनात्माहीहोवैहै ॥ जैसे घटादिकवस्तु उत्पत्तिविनाशवालेहोणेतैं अनात्माहीहै ॥ तैसे यहस्थूलशरीरभी उत्पत्तिविनाशवालाहोणेतैं अनात्माहीहोवैगा ॥ किंवा इसस्थूलशरीरकूंही जोआत्मामानियै तौ कृतनाश अकृताभ्यागम इनदोनोंदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहांकऱ्येहुएपुण्यपापकर्मका जोसुखदुःखरूपफलकेभोगतैं विनाही नाशहै ताकानाम कृतनाशहै ॥ और नहींकऱ्येहुएपुण्यपापकर्मके सुखदुःखरूपफलकीजाप्राप्तिहै ताकानाम अकृताभ्यागमहै ॥ तहां इसस्थूलदेहकूंही जोआत्मामानियै तौ इसदेहरूपआत्माकेनाशहुए तादेहतैंभिन्नभोक्ताआत्माकेअभावतैंतादेहकृतपुण्यपापकर्मकाफलके भोगतैंविनाही नाशहोवैगा और अभी नवीनउत्पन्नभयाजोदेहरूपआत्माहै तिसने पूर्व कोई पुण्य

पापकर्म कर्‍यानहीं॥और तिसकूंभी जन्मकालतैंलैकेही सुखदुःखरूपफलकीप्राप्तितौ होवैहै ॥ साफल कीप्राप्ति तापुण्यपापकर्मतैंविनाही माननणीहोवैगी ॥ सोकर्‍येहुएकर्मका फलकेभोगतैं विनाहीनाशमान णा तथा कर्‍येहुएकर्मकेफलकीप्राप्तिमाननणी सर्वशास्त्रतैंविरुद्धहै ॥ यद्यपि प्रायश्चित्तादिकोंकरिकै तथा तत्त्वज्ञानकरिकै तापुण्यपापकर्मका फलभोगतैंविनाहीनाश शास्त्रोंविषेकह्याहै ॥ तथापि तिनशास्त्रउ क्तप्रायश्चित्तादिकउपायोंतैं विनाही जोफलभोगतैंविना कर्मोंकानाशहै ताकानाम कृतनाशहै ॥ यातैं यहस्थूलदेह आत्मानहींहै किंवा तादेहात्मवादीनैं यास्थूलदेहकीआत्मताविषे जो 'स्थूलोऽहं कृशो ऽहं' इत्यादिकप्रत्यक्षअनुभव कह्याथा ॥ सोअनुभवतौ 'लोहितःस्फटिकः' इसअनुभवकीन्यांईभ्रमरू पहै॥ अर्थात् जैसे 'लोहितःस्फटिकः' यहअनुभव लोहितपणेतैंरहित शुक्लस्फटिकविषे तालोहितपणेकूं विषयकरता हुआ भ्रमरूप है ॥ तैसे सोउक्तअनुभवभी स्थूलकृशादिभावतैंरहित आत्माविषेस्थूलकृशा दिभावकूंविषयकरताहुआभ्रमरूपही है ॥ यातैंसोउक्तअनुभव तास्थूलदेहकीआत्मताकूं सिद्धकरिसकैन हीं जिसकारणतैं यथार्थअनुभवही अर्थकासाधकहोवैहै ॥ किंवा तादेहात्मवादीने जोयहकह्याथा ॥ इसस्थूलदेहतैंभिन्न कोईआत्मा प्रतीतहोतानहीं ॥ सोयहकहणाभीअसंगतहै ॥ काहेतैं मेरादेह रोगीहै मेरादेह निरोगहै याप्रकारकाअनुभव सर्वलोगोंकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवतैं देहकाद्रष्टासाक्षीआत्मा तादेहतैं भिन्नहींसिद्धहोवैहै ॥ और श्रुति स्मृति इतिहास पुराण युक्ति विद्वान् पुरुषोंका अनुभव इनसर्वप्रमाणोंकरि कैभी यास्थूलदेहतैंभिन्नहीआत्मासिद्धहोवैहै ॥ ऐसेअनेकप्रमाणसिद्धआत्माका निषेधसंभवतानहीं ॥ किंवा तादेहात्मवादीने जोस्वप्नविषेभी स्थूलोऽहं इसअनुभवतैं स्थूलदेहकीसिद्धिकरीथी ॥ सोभी अ

संगतहै ॥ काहेतैं 'स्थूलोऽहं' यहजोस्वप्नविषे अनुभवहोवैहै ॥ सोअनुभव जाग्रत्अवस्थाके 'स्थूलोऽहं' इसप्रकारकेअनुभवजन्यसंस्कारोंकरिकैजन्यहोवैहै ॥ यातैं सोस्वप्नकाअनुभव ताजाग्रत्केस्थूलदेहकूंविषयकरतानहीं, किंतु सोअनुभव स्वप्नकेवासनामयशरीरकूंही विषयकरेहै ॥ जोकदाचित् सोस्वप्नकाअनुभव जाग्रत्केस्थूलदेहकूंही विषयकरताहोवै तौ काशीविषेसोयाहुआपुरुष स्वप्नविषे रामकृतसेतुविषे रामनाथकूंअनुभवकरताहुआ जभी जाग्रत्कूंप्राप्तहोवै तभी सोपुरुष तिसरामसेतुविषेही स्थितहोणाचाहिये ॥ काशीविषेस्थित नहींहोणाचाहिये ॥ सोऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं स्वप्नविषे इसस्थूलशरीरकाअभावहीहोवैहै॥और आत्मातौ तास्वप्नविषेभी तिनस्वप्नपदार्थोंका द्रष्टासाक्षीरूपकरिकै अनुभवहोवैहै ॥ यातैं मैं स्थूलदेहनहींहूं यहउक्तअर्थ संभवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तदोषोंतैंस्थूलदेहकूं आत्मरूपता मतहोवो ॥ तथापि चक्षुआदिकइंद्रियही आत्माहै काहेतैं 'काणोऽहं मूकोऽहं' इसप्रकारकाअनुभव लोकविषे देखणेमेंआवैहै ताअनुभवतैं काणत्वमूकत्वादिकधर्मविशिष्टचक्षुआदिकइंद्रियोंविषेही आत्मरूपतासिद्धहोवैहै और वेदविषेभी प्राणका तथा इंद्रियोंका आपणीआपणी श्रेष्ठताविषै परस्परसंवाद कथनकर्‍याहै ॥ सोपरस्परसंवाद चेतनोंकाहीहोवैहै ॥ जडपदार्थोंका होतानहीं ॥ और चेतन आत्माहीहोवैहै ॥ यातैं ता प्रमाणसंवादश्रुतितैंभी चक्षुआदिकइंद्रियही आत्मासिद्धहोवैहै ॥ यातैं तेइंद्रियही आत्माहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे स्थूलदेह आत्मानहीं है ॥ तैसेतेचक्षुआदिकइंद्रियभी आत्मानहीं है ॥ काहेतैं चक्षुइंद्रियकरिकै मैं रूपकूंदेखताहूं और श्रोत्रइंद्रियकरिकै मैं शब्दकूंश्रवणकरताहूं याप्रकारकाअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवतैं तिनचक्षुआदिइंद्रियोंकूं दर्शनादिकक्रिया

केप्रति करणरूपताहीसिद्धहोवैहै ॥ और जोजोपदार्थ क्रियाकेप्रति करणहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ अनात्माहीहोवैहै ॥ जैसे छेदनक्रियाकेप्रति करणरूपहोणेतैं कुठारादिक अनात्माही हैं ॥ तैसे दर्शनादिकक्रियाकेप्रति करणरूपहोणेतैं तेचक्षुआदिकइंद्रियभी अनात्माहीहोवैंगे ॥ इतनेकरिकै यहअनुमान बोधनकऱ्या 'इंद्रियाणि अनात्मा करणत्वात् कुठारवत्' किंवा जैसे छेदनादिकक्रियाका पुरुष कर्त्ताहोवैहै ॥ तैसे ताइंद्रियआत्मवादीनें सोइंद्रियरूपआत्माही तिनदर्शनादिकक्रियाओंकाकर्त्ता माननाहोवैगा॥सोअत्यंतविरुद्धहै॥काहेतैं लोकविषे जोपदार्थ जिसक्रियाकेप्रति करणहोवैहै॥सोपदार्थ तिसक्रियाकेप्रति कर्त्ताहोतानहीं॥और जोपदार्थ जिसक्रियाकेप्रति कर्त्ताहोवैहै॥सोपदार्थ तिसक्रियाकेप्रति करणहोतानहीं ॥ किंतु सोकरण तथाकर्त्ता भिन्नभिन्नहीहोवैहैं॥जैसे छेदनरूपक्रियाकेप्रति करणरूपकुठारकूं कर्त्तारूपता नहींहै॥औरताछेदनरूपक्रियाकेप्रति कर्त्तारूपपुरुषकूंकरणरूपतानहीं है॥किंतु सोकुठाररूपकरणतथा पुरुषरूपकर्त्ता भिन्नभिन्नही हैं ॥ और तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकूं दर्शनादिकक्रियाकेप्रति करणरूपतातौ पूर्वउक्त अनुभवकरिकैसिद्धही है ॥ यातैं एकहीचक्षुआदिकइंद्रियकूं एकहीदर्शनादिरूपक्रियाकेप्रति करणपणा तथाकर्त्तापणा मानणा प्रत्यक्षप्रमाणतैंविरुद्धहै ॥ याकारणतैंभी तेइंद्रिय आत्मानहीं हैं॥किंवा जोवादी इंद्रियोंकूंही आत्मामानेहैं ॥ तावादीकेमतविषे एकहीशरीरविषे अक्षुःश्रोत्रादिरूप अनेकआत्मा सिद्धहोवैंगे ॥ और तेचक्षुश्रोत्रादिकसर्वइंद्रिय एकहीपदार्थकूं ग्रहणकरतेनहीं ॥ किंतु रूपशब्दादिकभिन्नभिन्नअर्थोंकूंही ग्रहणकरेहैं॥यातैं पूर्वदिशाविषेस्थितरूपकेदर्शनवासतै चक्षु इंद्रिय इसशरीरकूं तापूर्वदिशाविषे आकर्षणकरैगा॥और पश्चिमदिशाविषेस्थितशब्दकेश्रवणकरणेवासतै श्रोत्रइंद्रिय इस

शरीरकूं तापश्चिमदिशाविषे आकर्षणकरैगा॥ इसप्रकार दूसरेत्वगादिकइंद्रियभी तिसातिसदक्षिणादिक दिशाविषेस्थित स्पर्शादिकोंकेग्रहणकरणेवासतै इसशरीरकूं तिसतिसदक्षिणादिकदिशाविषेआकर्षणक रैंगे ॥ यातैं जैसे अनेकगजोंकरिकै आकर्षणकऱ्याहुआ कदलीवृक्ष शीघ्रही नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे परस्परविरुद्धअभिप्रायवालेचक्षुआदिकइंद्रियोंनेतिसतिसदिशाविषेआकर्षणकऱ्याहुआ यहशरीरभी नाशकूंप्राप्तहोवैगा ॥ याकारणतैंभी तेइंद्रिय आत्मानहीं है॥ किंवा एकहीशरीरविषे जोइंद्रियरूपबहुतआत्मामानिये॥ तोजोमैं पूर्व रूपकूं देखताभया सोईमैंअभी स्पर्शकूं ग्रहणकरताहूं॥इसअनुभवकाभी बाध होवैगा ॥ काहेतैं यहउक्तअनुभव रूपद्रष्टाआत्माके तथा स्पर्शकर्त्ताआत्माके एकताकूंहीविषयकरेहै॥ और तुम्हारेमतविषे ताचक्षुइंद्रियरूपआत्माकी तथात्वकइंद्रियरूपआत्माको एकताहैनहीं॥यातैंतुम्हारे मतविषे ताउक्तअनुभवका मिथ्यात्वरूपबाधहोवैगा॥ किंवा ताइंद्रियआत्मवादीनें इंद्रियोंकीचेतनरूपताविषे जोप्राणसंवाद प्रमाणकह्याथा ॥ सोसंवादतौ तिनइंद्रियोंके अभिमानीदेवताविषयकहै ॥ इंद्रिय विषयकनहीं है ॥ यातैं तासंवादतैंभी इंद्रियोंकीआत्मतासिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा स्थूलदेहकीन्यांई चक्षु आदिकइंद्रियोंका भी उत्पत्तिविनाशहोवै है ॥ ऐसेउत्पत्तिविनाशवानइंद्रियोंकूं आत्मामानणेविषे पूर्वउक्तस्थूलदेहकीन्यांई इहांभी कृतनाश अकृताभ्यागम यहदोनोंदोष प्राप्तहोवै है ॥ याकारणतैंभी यहइंद्रिय आत्मानहीं हैं॥और'काणोऽहं मूकोऽहं' यहउक्तअनुभवतौ'लोहितः स्फटिकः'इसअनुभवकीन्यांई भ्रमरूपहै ॥ यातैं ताअनुभवतैंभी तिनइंद्रियोंकीआत्मरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ और मेराचक्षु मंददृष्टि वालाहै इत्यादिकअनुभवतैं तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकाद्रष्टाआत्मा तिनचक्षुआदिक इंद्रियोंतें भिन्नहीप्र

तीतहोवैहै ॥ और श्रुति स्मृति इतिहास पुराण इत्यादिकोंनेभी तिनइंद्रियोंतैंभिन्नहीआत्मा कथनकऱ्याहै ॥ यातैं ते चक्षुआदिकइंद्रिय आत्मानहीं हैं इति ॥ ॥शंका ॥ ॥ उक्तदोषोंतैं इंद्रियोंकूं आत्मरूपता मतहोवो ॥ तथापि प्राणही आत्माहै ॥ काहेतैं । क्षुत्पिपासावान्अहम् । याप्रकारका लोकोंकाअनुभव क्षुधापिपासाधर्मविशिष्टप्राणकीही आत्मरूपता सिद्धकरैहै॥और'अन्योऽतरात्माप्राणमयः' यहश्रुतिभी प्राणकूंही आत्माकहैहै ॥ और स्वप्नसुषुप्तिविषे तिनइंद्रियोंकेलयहुएभी सो प्राण विद्यमानहै ॥ यातैं सोप्राणही आत्माहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ वायुकाविकारहोणेतैं सोप्राणभी बाह्यवायुकीन्यांई आत्मानहीं है॥और । क्षुत्पिपासावान् अहम् । यहउक्तअनुभवतौ 'लोहितःस्फटिकः' इस अनुभवकीन्यांई भ्रमरूपहै ॥ यातैं ताअनुभवतैंभी प्राणकीआत्मरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ और प्राणकी आत्मताविषे जोतुमने श्रुतिकही थी ॥ ताश्रुतिका प्राणकीआत्मताबोधनविषे तात्पर्यनहीं है ॥ किंतु मुमुक्षुजनोंकेप्रति सोपानक्रमकरिकै शुद्धआत्माकेजनावणेविषेही तात्पर्य है ॥ जोकदाचित् ताश्रुतिका प्राणकीआत्मताविषेही तात्पर्यहोवै ॥ तौ 'अन्योऽतरात्मामनामयः' यहश्रुति ताप्राणतैंभीअंतर दूसरे मनोमयकी आत्मरूपताकूंकथनकरणेहारी असंगतहोवैगी ॥ जिसप्रकारतैं इनश्रुतियोंका शुद्धआत्माकेजनावणेविषे तात्पर्य है ॥ सोप्रकार आत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे मैंने विस्तारतैं निरूपणकऱ्या है ॥ सो तहांसेजानिलेणा ॥ यातैं सोप्राणभी आत्मानहीं है ॥ इसउक्तसर्वअभिप्रायकूंमनविषेराखिकै
ग्रंथकार कहैहै ॥ 'श्रोत्रवागादिकानिनाहंइति' अर्थयह श्रोत्रवागादिकभी मैंनहीं हूं ॥ इहां श्रोत्रइंद्रिय करिकै चक्षुआदिकसर्वज्ञानइंद्रियोंका ग्रहणकरणा ॥ और वागिंद्रियकरिकै हस्तपादादिकसर्वकर्मइंद्रि

योंका ग्रहणकरना ॥ और आदिशब्दकरिकै वायुरूपमुख्यप्राणका ग्रहणकरणा ॥ यातैं यहअर्थसिद्ध भया ॥ मैं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियरूपभीनहींहूं तथा वाकादिकपंचकर्मइंद्रियरूपभीनहींहूं तथा पंच प्राणरूपभीनहींहूं ॥ जिसकारणतैं स्वप्नसुषुप्तिअवस्थाविषे तिनइंद्रियप्राणोंका लयहोइजावै है और मैं आत्मातौ तास्वप्नसुषुप्तिविषेभी द्रष्टासाक्षीरूपकरिकै विद्यमानहूं ॥ यद्यपि स्वप्नसुषुप्तिविषे अन्यपुरु षोंकीदृष्टिकरिक सोप्राण प्रतीतहोवैहै॥तथापि तासोयेहुएपुरुषकीदृष्टिकरिकै सोप्राण तहां प्रतीतहोता नहीं ॥ यातैं स्वप्नसुषुप्तिविषे ताप्राणका लय कथनकरयाहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ उक्तदोषोंतैं तिनइं द्रियोंकूं तथाप्राणकूं आत्मरूपता मतहोवो ॥ तथापि विज्ञानही आत्माहै ॥ काहेतैं अहंकर्त्ता अहंभो क्ता यहलोकोंकाअनुभव कर्तृत्वभोक्तृत्वधर्मविशिष्टविज्ञानकीही आत्मरूपताकूं सिद्धकरेहै ॥ और 'अ न्योऽतरात्माज्ञानमयः' यहश्रुतिभी ताविज्ञानकूंही आत्माकहे है ॥ यातैं सोविज्ञानही आत्माहै ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए कहेहैं ॥ 'बुद्धिर्नाहंइति' अर्थयह मैंबुद्धीभीनहींहूं ॥ इहांबुद्धिशब्दकरिकै अंतःकरणकीवृत्तिकाग्रहणकरणा ॥ साबुद्धि अंतःकरणकाभीउपलक्षणजानणी ॥ यातैं यहअर्थसिद्ध भया ॥ मैं अंतःकरण तथा अंतःकरणकीवृत्ति दोनों नहींहूं ॥ काहेतैं श्रुतिविषे आकाशादिकभूतों केसत्त्वअंशतैं अंतःकरणकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ यातैं भूतोंकाविकारहोणेतैं सोअंतःकरणघटादिकों कीन्यांई जडही है ॥ और सुषुप्तिविषे ताअंतःकरणका लयहीदेख्याहै ॥ जोलयवालाहोवैहै ॥ सो आ त्माहोवैनहींहै ॥ यातैं सोअंतःकरण आत्मानहीं है॥और अहंकर्त्ता अहंभोक्ता यहउक्तअनुभवतौ 'लो हितःस्फटिकः' इसअनुभवकीन्यांई भ्रमरूपहै ॥ यातैं ताअनुभवतैंभी अंतःकरणकीआत्मरूपता सिद्ध

होवैनहीं ॥ और 'अन्योंऽतरात्माविज्ञानमयः' इसश्रुतिकाभी ताविज्ञानमयकीआत्मताविषे तात्पर्यन हीं है ॥ जिसकारणतैं 'अन्योंऽतरात्माऽऽनंदमयः' यहश्रुति ताविज्ञानमयतैंभीअंतर दूसरेआनंदमयकूं ही आत्माकहेहैं ॥ यातैं ता श्रुतितैंभी ताविज्ञानमयकी आत्मरूपतासिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं अंतःकरणत था अंतःकरणकीवृत्ति आत्मानहींहै ॥ इसकहणेकरिकै मनोमयकोशकाभी आत्मपणाखंडनकऱ्या॥जि सकारणतैं बुद्धिकीन्यांई सोमनभी ताअंतःकरणकीवृत्तिहीहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ उक्तदोषोंतैं ता विज्ञानमयकूं आत्मरूपताकेअभावहुएभी॥ सर्वअध्यासकाकारण तथा आनंदमयशब्दकावाच्यअर्थजो अज्ञानहै ॥ सोअज्ञानहीं आत्माहै ॥ काहेतैं 'अज्ञोऽहं' यह अनुभव ताअज्ञानकीहीआत्मताकूंसिद्धकरे है ॥ और 'अन्योंऽतरात्माऽऽनंदमयः' यहश्रुतिभी ताआनंदमयकूंही आत्माकहेहै ॥ ऐसीशंकाकेप्रा प्तहुए कहेहैं 'अध्यासमूलंनाहंइति' अर्थयह मैं अध्यासकामूलभीनहींहूं ॥ ईहां तिसधर्मतैंरहितपदार्थ विषे जा तत्धर्मवेत्ताबुद्धिरूप विपर्य है जिसविपर्ययकूं मिथ्याज्ञानकहेहैंताकानाम अध्यासहै ॥ जैसे आ त्मत्वधर्मतैंरहितदेहइंद्रियादिकोंविषे जाआत्मत्वबुद्धिहै तथा रजतत्वधर्मतैंरहितशुक्तिविषे जारजतत्त्वबु द्धिहै ताकानाम अध्यासहै॥यह अध्यास द्वितीयपरिच्छेदविषे विस्तारकरिकैंनिरूपणकरैंगे॥तिसअध्या सका मूल कहिये कारण जो अज्ञानहै सो अज्ञानभी मैं नहींहूं ॥ काहेतैं सो अज्ञान महावाक्यजन्य ज्ञानकरिकै निवृत्तहोइजावैहै ॥ तथा सोअज्ञाम देहादिकोंकीन्यांई जडही है॥और समाधिअवस्थावि षे तत्त्ववेत्तापुरुषोंकूं सोअज्ञान प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं सोअज्ञानभी आत्मानहीं है ॥ और अज्ञोऽहं य हउक्तअनुभवतौ 'लोहितःस्फटिकः' इसअनुभवकीन्यांई भ्रमरूपहै ॥ यातैं ताअनुभवतैंभी अज्ञानकीआ ॥ ९ ॥

त्मरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ और 'ब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठा' यहश्रुतिताआनंदमयकोशतैंभिन्न ताआनंदमयको शकेअधिष्ठानरूप तथा साक्षीरूपआत्माकूं प्रतिपादनकरेहै ॥ यातैं 'अन्योऽतरात्माऽऽनंदमयः' इसउ क्तश्रुतिका ताआनंदमयकीआत्मताविषे तात्पर्यनहीं है यातैं ताश्रुतितैंभी ताआनंदमयकीआत्मता सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं सोअज्ञानभी आत्मानहीं है इति ॥ तहां शरीर इंद्रिय प्राण मन बुद्धि इनोंकूं य थाक्रमतैंआत्मामानणेहारेवादियोंकेमतोंका विस्तारतैंप्रतिपादन तथा खंडन न्यायप्रकाशकेद्वितीयपरि च्छेदविषे आत्मनिरूपणविषे हमनैं निरूपणकर्‍याहै ॥ यातैं ते मत इहां संक्षेपते निरूपणकरेहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जबी पूर्वउक्तरीतिसे देहइंद्रियादिकोंकीआत्मरूपता तुमारेकूं अंगीकारनहीं है ॥ तबी तुमारेमतविषे कौनआत्माहै ॥ जिसआत्माका 'अहंब्रह्मास्मि' इसप्रकारते ब्रह्मरूपत्व तुम अनुभवकरोहो ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए कहेहैं ॥ 'सत्येति' अज्ञानका तथा ताअज्ञानकेकार्यका जो साक्षीहै सोईही हमारे मतविषे आत्माहै ॥ और सोसाक्षीआत्माही अहंइसप्रकारतैं अनुभवहोवैहै ॥ तिससाक्षीआत्माकाही 'अहंब्रह्मास्मि' इसप्रकारतैं ब्रह्मरूपत्व हम अनुभवकरेहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तासाक्षीआत्माविषे जिस ब्रह्मरूपताकूं तुम अनुभवकरतेहो ॥ सोब्रह्म कौनहै ऐसी शंकाकेप्राप्तहुए कहेहैं ॥ 'कृष्णएवाहम स्मिइति' अर्थयह कृष्णही परब्रह्महै ॥ तहांस्मृति 'कृषिर्भूवाचकःशब्दो णश्चनिर्वृत्तिवाचकः । तयोरै क्यंपरब्रह्म कृष्णइत्यभिधीयते' ॥ अर्थयह ॥ कृष् यहशब्द सत्ताकावाचकहोवैहै ॥ और ण यहशब्द आ नंदकावाचकहोवैहै ॥ तासत्ताआनंददोनोंका जोएकत्वहै सोपरब्रह्महै ॥ सोपरब्रह्मही कृष्ण इसनाम करिकै कह्याजावैहै इति ॥ यहस्मृति परब्रह्मकूंही कृष्णनामकरिकैकथनकरेहैं ॥ यातैं 'कृष्णएवाहम

स्मि' इसवचनका ब्रह्महीमैंहूं यहअर्थसिद्धभया ॥ ईहांयहअभिप्रायहै ॥ 'तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशत् ॥
अनेनजीवेनात्मनाऽनुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणि । सएषइहप्रविष्टआनखाग्रेभ्यः' अर्थयह ॥ सोपरमा
त्मादेव इसजगत्कूंरचिकै आपही तिसजगत्विषे प्रवेशकरताभया ॥ और इसआपणेजीवरूपतैं जगत्
विषेप्रवेशकरिकै मैं परमात्मा नामरूपकूंप्रगटकरौं ॥ और सोपरमात्माही इनसंघातोंविषे नखोंकेअग्रभा
गपर्यंत प्रवेशकरताभया इति ॥ इत्यादिकश्रुतियां इसअर्थकूं कथनकरेहैं ॥ वास्तवतैंजन्ममरणादिकस
र्वविकारोंतैंरहित तथा नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव ऐसा जो आत्माहै ॥ सो आत्मा अनादिअनिर्वचनी
यमायाशक्तिकरिकै आकाशतैंआदिलेकै स्थूलशरीरपर्यंत सर्वजगत्कूं उत्पन्नकरिकै पुनः तिसजगत्वि
षेप्रवेशकरिकै तिसजगतकासाक्षीहुआभी अविवेकतैं तिसजगत्केधर्मोंकूं आपणेविषेआरोपणकरिकै
मैंकर्ताहूं मैंभोक्ताहूं मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इसप्रकारकेसंसारकूंअनुभवकरेहै ॥ सोईहीआत्मा जबी कोई
पूर्वकेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं साधनसंपन्नहोइकै श्रुतिआचार्यकेप्रसादतैं विवेककूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी ताविवे
कतैं तिसकर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूपसंसारकूंपरित्यागकरिकै तथाआपणेस्वरूपकेसाक्षात्कारतैं तामायाकूंना
शकरिकै आपणेपरमानंदस्वरूपकूं अनुभवकरेहै ॥ यातैं इससाक्षीआत्माकीब्रह्मरूपताविषे कोईभीविरो
धनहीं है ॥ इसअर्थकूं आगेभी स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैंगे ॥ अब आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारक
रणेयोग्यब्रह्मके स्वरूपलक्षणकूं तथातटस्थलक्षणकं निरूपणकरेहैं । 'सत्यानंदरूपश्चिदात्मामायासाक्षी' ॥ १० ॥
इति । अर्थयह ॥ सोपरब्रह्म सत्यरूपहै तथाआनंदरूपहै तथाचिदात्मारूपहै तथामायाकासाक्षी है ॥इहां
मायासाक्षी इसपदकरिकै ताब्रह्मका तटस्थलक्षण कथनकर्‍या । तहां जगत्केउपादानकारणभूतमाया

कूं जोसाक्षात्प्रकाशकरेहै सो मयासाक्षी कह्याजावैहै ॥ इसमायाकास्वरूप आगेकथनकरेंगे ॥ और सत्यादिकपदोंकरिकै ताब्रह्मका स्वरूपलक्षण कथनकऱ्याहै ॥ तहां तीनकालविषे जाकाबाधनहींहोवैहै सो सत्यकह्याजावैहै ॥ और जो निरतिशयसुखरूपहोवैहै सो आनंदकह्याजावैहै ॥ और जो ज्ञानस्वरूपहोवैहै सोचिदात्माकह्याजावैहै ॥ इसप्रकारका सत्य आनंद चिदात्मा सोब्रह्महीहै ॥ ईहां ब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्त जोमिथ्यावस्तुकातादात्म्यहै ताकी सत्यइसविशेषणकरिकै निवृत्तिकरी ॥ और ब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्त जोदुःखका तथातादुःखकेसाधनोंका तादात्म्यहै ताकी आनंदइसविशेषणकरिकै निवृत्तिकरी ॥ और ब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्राप्त जोजडकातादात्म्यहै ताकी चिदात्मइसविशेषणकरिकै निवृत्तिकरी ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ सत्यरूपहोणेतैं सोब्रह्म मिथ्यावस्तुरूपनहीं ॥ और आनंदरूपहोणेतैं सोब्रह्म दुःखतत्साधनरूपनहीं ॥ और चिदात्मारूपहोणेतैं सोब्रह्म जडरूपनहीं ऐसासत्‌चित्‌आनंदस्वरूप सर्वकासाक्षीपरमात्मा मैंहूं ॥ जिसकारणतैं 'तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि' इत्यादिकश्रुतिवचनइस जीवात्माकूं ब्रह्मरूपहीकहेहैं ॥ इतिद्वितीयश्लोकव्याख्या ॥ २ ॥ ॥ शंका ॥ पूर्वदोश्लोकोंकरिकै ब्रह्माहं याप्रकारका तत्त्वानुसंधानरूपमंगलकऱ्या ॥ सोग्रंथकेआरंभविषे मंगलकरणा योग्यनहीं है ॥ काहेतैं जिसकेकरणेविषे कोईप्रमाणहोवैहै ॥ तथा जिसकेकरणेका कोईप्रयोजनहोवैहै ॥ सोईही करणे योग्यहोवैहै ॥ और मंगलकेकरणेविषे कोईप्रमाणन्हीं है ॥ तथा कोईप्रयोजनभीनहीं है॥ सोदिखावैहैं॥ तहां तामंगलाचरणविषे प्रत्यक्षप्रमाणतौ संभवतानहीं ॥ काहेतैं सोमंगलाचरणकीकर्तव्यता धर्माधर्मकी न्यांई अतिइंद्रियहै ॥ ताअतिइंद्रियअर्थविषे इंद्रियरूपप्रत्यक्षप्रमाण संभवतानहीं ॥ किंवा कोईकनास्तिका

दिकोंकेग्रंथकी मंगलाचरणतैंविनाही समाप्तिदेखणेविषेआवेहै ॥ और कोईकग्रंथकीतौ तामंगलकेकिये हुएभी समाप्तिदेखणेविषेआवतीनहीं॥यहव्यतिरेकव्यभिचारज्ञान तथाअन्वयव्यभिचारज्ञान तामंगलविषे ग्रंथसमाप्तिकेकारण ताज्ञानकाप्रतिबंधकहै॥यातैं तामंगलविषे ग्रंथसमाप्तिकीकारणता ताप्रत्यक्षप्रमाण करिकै जानणेकूंहीअशक्यहै ॥ और तामंगलाचरणविषे अनुमानप्रमाणभी संभवतानहीं॥काहेतैं जो हेतु जिससाध्यकी व्याप्तिवालाहोवैहै ॥ सोहेतुही तिससाध्यकीसिद्धिकरैहै ॥ जैसे वह्निरूपसाध्यकीव्याप्तिवालाहोणेतैं धूमरूपहेतु तावह्निरूपसाध्यकीसिद्धकरैहै ॥ तैसे तामंगलकीकर्त्तव्यतारूपसाध्याकेव्याप्तिवाला कोईहेतुरूपलिंगहैनहीं॥ताहेतुरूपलिंगतैंविना अनुमानहोवेनहीं॥ और तामंगलाचरणविषेवेदरूपशब्दभी प्रमाणनहींहै॥काहेतैं तामंगलाचरणकीकर्त्तव्यताकाबोधककोई वेदवाक्यइसकालविषेप्रत्यक्षदेखणेविषेआवतानहीं ॥ और तामंगलाचरणविषे अर्थापत्तिप्रमाणभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् तामंगलाचरणतैंविना ग्रंथकीसमाप्ति नहींहोती॥तौसाग्रंथकीसमाप्ति तामंगलचरणतैंविना अनुपपन्नहुई तामंगलाचरणकीकल्पना करावती ॥ जैसे दिनविषेनहींभोजनकरणेहारेपुरुषकापीनत्व रात्रिभोजनतेविनाअनुपपन्नहुआ तारात्रिभोजनकीकल्पनाकरावैहै॥ परंतु साग्रंथकीसमाप्तितौ तामंगलतेविनाही देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं तामंगलाचरणविषे अर्थापत्तिप्रमाणभी संभवतानहीं॥किंवा जैसेतामंगलाचरणविषे कोईप्रमाणनहींहै तैसे तामंगलाचरणका कोईप्रयोजनभी देखणेविषेआवतानहीं ॥ तहां ग्रंथकीसमाप्तितौ तामंगलाचरणतैंविनाभी देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं साग्रंथकीसमाप्तिभी तामंगलाचरणकाप्रयोजन नहींहै॥ जो जिसतैंविना कदाचित्भी नहींहोवैहै ॥ सोईही तिसकाप्रयोजनहोवै है और जिसपुरु

षविषे स्वतःसिद्ध विघ्नोंकाअत्यंताभावहै॥तिसपुरुषविषे कन्याहुआभीसोमंगलाचरण विघ्नध्वंसकाजन
कहोतानहीं ॥ याते सोविघ्नोंकाध्वंसभी तामंगलाचरणका प्रयोजननहीं है ॥ जिसकेहुए जोअवश्यहो
वैहै सोईही तिसकाप्रयोजनहोवैहै ॥ और ग्रंथकीसमाप्ति विघ्नोंकाध्वंस इनदोनोंतैंभिन्न दूसराकोई
मंगलाचरणकाप्रयोजन शास्त्रकारोंनैं मान्यानहीं ॥ यातैं प्रमाण प्रयोजन दोनोंकेअभावतैं सोमंगला
चरण करणेकूंयोग्यनहींहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ग्रंथकेआरंभविषे सोमंगलाचरण अवश्यकरणेयोग्य
है ॥ तहां तामंगलाचरणविषे वादीनैं जोप्रमाणकाअभाव कह्याथा ॥सोभी असंगतहै ॥ जिसकारण
तैं ' निर्विघ्नसमाप्तिकामोमंगलमाचरेत् ' यहश्रुतिही तामंगलाचरणविषे प्रमाणहै ॥ यद्यपि इदानींका
लविषे किसीभी वेदकीशाखाविषे यहश्रुति प्रत्यक्षदेखणेविषे आवतनहीं ॥ तथापि शिष्टाचारत्वरूपहेतु
तैं ताश्रुतिकाअनुमानहोवैहै ॥ ताश्रुतिघटित कोईकवेदकीशाखा उच्छिन्नहोइगईहै ॥ यातैं इदानींका
लविषे साश्रुति प्रत्यक्षदेखणेविषेआवतीनहीं ॥ ऐसीकल्पनाहोवैहै ॥ ताअनुमानका यहआकारहै ॥
' मंगलं वेदबोधिताभीष्टोपायताकं अलौकिकाविगीतशिष्टाचारत्वात् दर्शादिवत् ' ॥ अर्थयह ॥ वेदने
बोधनकरीहै निर्विघ्नसमाप्तिरूपइष्टकीउपायता जिसविषे ताकानाम वेदबोधित अभीष्टउपायताकहै ॥
ऐसावेदबोधितअभीष्टकाउपाय मंगलहै ॥ अलौकिक तथा अविगीत ऐसाजो शिष्टपुरुषांकाआचारहै
ताआचाररूपहोणेतैं ॥ जोजो अलौकिकअविगीतशिष्टाचारहोवैहै ॥ सोसो वेदबोधितइष्टकाउपायही
होवैहै जैसे दर्शपूर्णमासकर्म अलौकिकअविगीतशिष्टाचाररूपहै ॥ यातैं ' दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गका
मोयजेत ' इसवेदवाक्यकरिकैबोधित स्वर्गरूपइष्टकाउपायभीहै ॥तैसे यहमंगलभीअलौकिकअविगी

ताशिष्टाचाररूपहै ॥ यातैं वेदबोधित निर्विघ्नसमाप्तिरूपइष्टकाउपायभी अवश्यहोवैगा ॥ इहांमंगल पक्ष है॥और वेदबोधितइष्टअर्थकीउपायता साध्यहै ॥ और अलौकिकअविगीतशिष्टाचारत्व हेतुहै ॥ और दर्शपूर्णमासादिरूपकर्म दृष्टांतहै ॥ यहअनुमानकीरीति आगेभीजानिलेणी ॥ तहां प्रत्यक्षादिकप्रमाणों के तथा अनुमानकेअंगभूत पक्षदृष्टांतादिकोंके लक्षण द्वितीयपरिच्छेदविषे कथनकरैंगे ॥ इहांहेतुविषे स्थित अलौकिक अविगीत शिष्ट इनतीनोंपदोंका यहअर्थ है ॥ शास्त्रकीआज्ञातैंविनाही केवलरागकरिकेप्राप्त जेआहारादिकहैं तिनोंकानाम लौकिकहै ॥ तिनलौकिकव्यवहारोंतैं जोभिन्नहोवे सो अलौकिक कह्याजावैहै ॥ और जोआचार नरकादिरूपबलवानअनिष्टका अजनकहुआ स्वर्गादिरूपइष्टका साधनहोवैहै ॥ सोआचार अविगीत कह्याजावैहै ॥ और जोपुरुष वेदोंकीप्रमाणताकूं अंगीकारकरैहै ॥ सोपुरुष शिष्ट कह्याजावैहै इति ॥ इसप्रकारकेअनुमानकरिकैसिद्ध जाउक्तश्रुतिहै ॥ ताश्रुतिप्रमाणतैंही तामंगलकूं निर्विघ्नग्रंथसमाप्तिकीकारणता निश्चयहोवैहै॥यातैं जिननास्तिकादिकोंकेग्रंथकी मंगलाचरणतैंविनाही समाप्तिदेखणेविषेआवैहै॥तिननास्तिकादिकोंविषेभी ताग्रंथसमाप्तिरूपकार्यतैंजन्मांतरकेमंगलाचरणका अनुमानकर्‍याजावैहै ॥ सोजन्मांतरकामंगलाचरणही ताग्रंथसमाप्तिका कारणहै॥ यातैं सोपूर्वउक्तव्यतिरेकव्यभिचार संभवतानहीं ॥ और जहां मंगलकेकियेहुएभी ग्रंथकीसमाप्तिनहींभई ॥ तहां तिसग्रंथकर्तापुरुषविषे विघ्नोंकीबाहुल्यताजाननी ॥ अथवा कोई अतिबलवान्विघ्न जानणा॥ तिनबहुतविघ्नोंकीनिवृत्ति तथाताअतिबलवान्विघ्नकीनिवृत्तिबहुतमंगलोंकरिकै तथाअतिबलवान्मंगलकरिकेही होवैहै सोइसप्रकारका विघ्ननिवर्तकमंगल तिसग्रंथोंविषेहैनहीं॥ यातैं सोपूर्वउक्त अन्वयव्य

भिचारभी इहां प्राप्तहोवेनहीं ॥ इसप्रकार तामंगलाचरणविषे उक्तश्रुतिप्रमाणकेसंभवहुए तथा निर्विघ्नग्रंथसमाप्तिरूपप्रयोजनकेसंभवहुए ग्रंथकेआरंभाविषे सोमंगलाचरण अवश्यकरणेयोग्यहै ॥ और केईकग्रंथकारतौ ग्रंथसमाप्तिकेप्रतिबंधकविघ्नोंकाध्वंसही तामंगलाचरणकाप्रयोजनमानेहैं ॥ इसमंगलवादका विस्तारतैंनिरूपणतौ न्यायप्रकाशकेप्रथमपरिच्छेदविषे हमने कऱ्याहै ॥ यातैं ईहां संक्षेपतैंनिरूपणकऱ्याहै॥जिसकूं अधिकजानणेकीइच्छाहोवै तिसनैं तहांसै जानिलेणा इति ॥ ॥ अथग्रन्थारंभः ॥ ॥ तहां श्रीमत्शंकराचार्यकृतभाष्यसहित जोश्रीव्यासभगवान्कृत सूत्रोंकासमूहरूप शारीरकमीमांसाशास्त्रहै ॥ ताकेविषे 'अथातोब्रह्मजिज्ञासा' इसप्रथमसूत्रकरिकै विवेकादिकचतुष्टयसाधनसंपत्तितैंअनंतर अधिकारीपुरुषोंकेप्रतिब्रह्मज्ञानकीइच्छाविधानकरीहैं । तहांविचारकऱ्येहुएतत्त्वमसिआदिकवाक्यकरिकैजन्य तथा जीवब्रह्मके एकत्वकूंविषयकरणेहारा जोअहंब्रह्मास्मियाप्रकारका फलरूपज्ञानहै सो ज्ञानहीताइच्छाकाकर्महै॥और सोमोक्षकाहेतुफलरूपज्ञानतत्त्वं पदार्थकेज्ञानकेअधीनहै॥जिसकारणतैंपदार्थज्ञानतैंरहितपुरुषकूंवाक्यार्थज्ञानहोतानहीं॥किंतुपदार्थज्ञानवालेपुरुषकूंहीसोवाक्यार्थज्ञानहोवैहैऔर सोवाक्यार्थज्ञानकाहेतुभूत पदार्थज्ञानभी तातत्त्वंपदार्थकेविचारअधीनहै ॥ तातत्त्वंपदार्थकेविचारतैंविना सोपदार्थज्ञानहोतानहीं ॥ यातैं ताउक्तसूत्रनैं अर्थतैं ताविचारकीकर्तव्यताहीविधानकरीहै ॥ अर्थात् साधनचतुष्टयसंपत्तितैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषनैं ब्रह्मकाविचारकरणा॥यह तासूत्रकाअर्थसिद्धहोवैहै ॥ तहां सोविचारभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ प्रधानविचारहोवैहै ॥ और दूसरा सहकारीविचारहोवै है ॥ तहां अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेवाक्यार्थज्ञानकरिकै प्राप्तहोणेकूं अतिवांछितहोणेतैंब्रह्मप्रधानहै ॥

ऐसेप्रधानब्रह्मका जोविचारहै सोविचार प्रधानाविचार कह्याजावैहै ॥ और सोब्रह्मकाविचार समन्व
यआदिकोंकेविचारतैंविनासंभवतानहीं॥यातैंसमन्वयअविरोधसाधनफलइनच्यारोंकेजेविचारहैंतेविचार
सहकारीविचार कहाजावैहै ॥ तहां उपनिषदरूपवेदांतोंविषेस्थित जोवाक्यहैं, तिनवाक्योंका ब्रह्मआ
त्माकेअभेदकीप्रतिपाकतारूपकरिकै जोतात्पर्य है ताकानाम समन्वयहै ॥ तासमन्वयकाविचार ता
शारीरकमीमांसाशास्त्रके प्रथमअध्यायविषे कऱ्याहै ॥ और श्रुतिकेविरोधहुए स्मृतिआदिकोंकूं तथा प्र
त्यक्षादिकप्रमाणोंकूं आभासरूपताहोणेतैं तावेदांतसमन्वयका तिनस्मृतिप्रत्यक्षादिकप्रमाणांतरोंकेसा
थि जोविरोधकाअभावहै ताकानाम अविरोधहै ॥ सोअविरोधकाविचारभी ताशारीरकमीमांसाशास्त्रके
द्वितियअध्यायविषे कऱ्याहै ॥और ज्ञानकीप्राप्तिकेजेउपायहैं तिनोंकानाम साधनहै ॥ तेसाधनभी अं
तरंग बाहिरंग इसभेदकरिकै दोप्रकारकेहोवैहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेसाधनोंकाविचार ताशारीरकमीमां
साशास्त्रके तृतीयअध्यायविषे कऱ्याहै ॥ और तिनसाधनोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यजोअर्थ है ताकानाम
फलहै ॥ सोफलभी पर अपर इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तिसदोप्रकारकेफलकाविचार ताशारी
रकमीमांसाशास्त्रके चतुर्थअध्यायविषे कऱ्या है ॥ इसप्रकारकेसमन्वयादिकचारोंकेविचारकूं सहकारी
विचार कहेहैं ॥ तहां तिनसाधनोंकेमध्यविषे जोतत्त्वमसिआदिकमहावाक्योंके अर्थकाविचारहै ॥ तिस
विचारकूं ब्रह्मज्ञानकेप्रति अंतरंगसाधनता है ॥ और तिसवाक्यार्थविचारका तत्त्वंपदार्थकाविचारसह
कारी है ॥ यातैं तिसतत्त्वंपदार्थकेविचारकूंभी ताब्रह्मज्ञानकेप्रति अंतरंगसाधनताहीहै ॥ याकारणतैं इ
सग्रंथकेआदिविषे प्रथम तातत्त्वंपदार्थकेविचारकूंही निरूपणकरे हैं ॥ तात्पर्ययह ॥ चतुष्टयसाधनसंपन्न

अधिकारीपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्ति तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यकेअर्थज्ञानतेंही होवैहै ॥ और तावाक्यार्थज्ञानकीप्राप्ति तत्त्वंपदार्थकेज्ञानतेंही होवैहै ॥ और तापदार्थज्ञानकीप्राप्ति तत्त्वंपदार्थकेविचारतेंही होवैहै ॥ यातें सोतत्त्वंपदार्थकाविचार मुमुक्षुजनकूं अवश्यकऱ्याचाहिये ॥ ॥ शंका ॥ ॥ लोकविषे तथाशास्त्रविषे सुखकीप्राप्तिकूं तथादुःखकीनिवृत्तिकूंही पुरुषार्थरूपता देखीहै ॥ सोपुरुषार्थही संपादनकरणेयोग्यहोवैहै ॥ और सोतत्त्वंपदार्थकाज्ञानतौ सुखकीप्राप्तिरूपभीनहींहै ॥ तथा दुःखकीनिवृत्तिरूपभीनहींहै यातें अपुरुषार्थरूपहोणेतें सोपदार्थज्ञान संपादनकरणेयोग्यनहीं है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि तापदार्थज्ञानकूं स्वरूपतेंपुरुषार्थरूपता नहींहै ॥ तथापि तापुरुषार्थका साधन जो महावाक्यार्थज्ञानहै ॥ तावाक्यार्थज्ञानकेप्रति तापदार्थज्ञानकूं हेतुताहै ॥ यातें तावाक्यार्थज्ञानद्वारा तापुरुषार्थकासाधनहोणेतें सोपदार्थज्ञान अवश्यसंपादनकरणेयोग्यहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसमोक्षवास्ते तुम तत्त्वंपदार्थकानिरूपणकरतेहो सोमोक्ष क्यावस्तुहै ॥ तहां अज्ञानकीनिवृत्तिकानाम मोक्षहै ॥ अथवा ब्रह्मभावकानाम मोक्षहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जो अंगीकारकरो सोसंभवतानहीं ॥ काहेतें सोअज्ञानकीनिवृत्तिरूपमोक्ष ब्रह्मकेस्वरूपतेभिन्नहीहोवेगा ॥ ताकरिकै ' एकमेवाद्वितीयंब्रह्म ' इसश्रुतिकाविरोधहोवेगा ॥ यद्यपि ताब्रह्मतैंभिन्न दूसराकोईभावपदार्थ नहींहै ॥ साअज्ञानकीनिवृत्ति अभावरूपहै ॥ यातें ताकेविद्यमानहुएभी ब्रह्मकीअद्वितीयरूपता निवृत्तहोवैनहीं ॥ इसरीतिसे भावाऽद्वैतपरताकरिकै ताश्रुतिकाविरोधहोतानहीं ॥ तथापि ब्रह्मतैंभिन्न भावअभावरूपसर्वप्रपंचकानिषेधकरणेहारेअद्वैतपदका संकोचकरिकै केवल भावपदार्थोंकेनिषेधपरत्वमानणेविषे कोईप्रमाणहैनहीं ॥ किंवा तुमारेमतविषे ब्रह्मते

भिन्नसर्वपदार्थोंकूं कल्पितपणाही अंगीकारकर्‍याहै ॥ यातैं ब्रह्मतैं भिन्नहोणेतैं साअविद्याकीनिवृत्ति
भी कल्पितहीहोवैगी ॥ और जोजोपदार्थ कल्पितहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ शुक्तिरजतकीन्यांई मिथ्याही
होवैहै ॥ यातैं ताअविद्याकीनिवृत्तिरूपमोक्षकूंभी कल्पितपणेकरिकै अनित्यपणाही प्राप्तहोवैगा ॥ किंवा
तुमारेमतविषे साअविद्याभी कल्पितही मानीहै ॥ और कल्पितवस्तुकाअभावभी कल्पितहीहोवै है ॥
यातैं ताकल्पितअविद्याकीनिवृत्तिभी कल्पितहीहोवेगी ॥ और कल्पितवस्तुकूं सत्यरूपतासंभवतीनहीं
याकारणतैंभी ताअविद्याकीनिवृत्तिरूपमोक्षकूं अनित्यपणाही प्राप्तहोवैगा ॥ और तामोक्षकाअनित्यप
णा तुमारेकूंभी इष्टनहींहै ॥ जिसकारणतैं सर्वमोक्षवादियोंने मोक्षकानित्यपणाही अंगीकारकरीताहै ।
कोईभीमोक्षवादी मोक्षकूं अनित्यमानतानहीं ॥ जोकदाचित् मोक्षभीअनित्यहोताहोवै तो मुक्तपुरु
षोंकीभी पुनःउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ और 'नसपुनरावर्त्तते' 'यद्गत्वाननिवर्त्ततेतद्धामपरमंमम' इत्यादिक
श्रुतिस्मृतियोंने तामुक्तपुरुषकेपुनःउत्पत्तिकानिषेधकर्‍याहै ॥ यातैं अविद्याकीनिवृत्तिकूंमोक्षरूपतासं
भवैनहीं ॥ और ब्रह्मभावकानाम मोक्षहै यह द्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरो सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं
सोब्रह्मभाव अनादिहोणेतैं नित्यसिद्धहै ॥ जोपदार्थ नित्यसिद्ध होवैहै ॥ सोपदार्थ किसीसाधनकरिकैसा
ध्यहोवैनहीं ॥ अनित्यपदार्थही साधनकरिकै साध्यहोवैहै ॥ यातैं ताब्रह्मभावरूपमोक्षकूं आत्मज्ञानकरि
कै साध्यपणा नहींहोवैगा ॥ और तुमोंनैं मोक्षकूं आत्मज्ञानकरिकैसाध्य मान्याहै ॥ यातैं ताब्रह्मभावकूं
भी मोक्षरूपतासंभवैनहीं ॥ इसप्रकार मोक्षके अनिरूपणहुए तामोक्षकीसाधनतारूपकरिकै महावाक्यार्थ
ज्ञानकीप्रयोजनवत्ताभी निरूपणकरणेकूंअशक्यहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ हमारेमतविषे अविद्याकीनि

वृत्तिही मोक्षहै साअविद्याकीनिवृत्ति ब्रह्मतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु अधिष्ठानब्रह्मरूपहीहै ॥ काहेतें क
ल्पितवस्तुकाअभाव अधिष्ठानतैंभिन्नहोतानहीं ॥ जैसे कल्पितसर्परजतादिकोंकाअभाव रज्जुशुक्तिआ
दिकअधिष्ठानतें भिन्नहोतानहीं किंतु अधिष्ठानरूपहीहोवैहै ॥ तैसे ताकल्पितअविद्याकीनिवृत्ति
भी अधिष्ठानब्रह्मरूपहीहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताअविद्यानिवृत्तिरूपमोक्षकूं जोब्रह्मरूपमानोगे तौ ता
ब्रह्मरूपमोक्षकूं ज्ञानकरिकैसाध्यपणा नहींहोवेगा ॥ और तुमोनैं मोक्षकूं ज्ञानकरिकैसाध्यमान्याहै ॥
॥ समाधान ॥ ॥ ज्ञानकरिकैमोक्षसाध्यहै ईहां साध्यशब्दकरिकै हमारेकूं जन्यपणा विवक्षितनहीं है ॥
अर्थात् ज्ञानकरिकै मोक्षजन्यहोवैहै ऐसाहमारेकूं विवक्षितनहींहै ॥ जिसकारणतैं अनादिसिद्धहोणतैं
ताब्रह्मभावकीउत्पत्तिही संभवतीनहीं ॥ किंतु तासाध्यशब्दकरिकै हमारेकूं अभिव्यक्तिमात्र विवक्षित
है ॥ अर्थात् ज्ञानकरिकै तामोक्षकीअभिव्यक्तिमात्रहोवैहै यहहमारेकूं विवक्षितहै ॥ तहां अहंब्रह्मास्मि
याप्रकारकेज्ञानकरिकै जोद्वैतभ्रमकीनिवृत्तिहै तथा अखंडएकरसआनंदकीस्फूर्त्तिहै॥यहही तामोक्षकी
अभिव्यक्तिहै ॥ यातैं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेवाक्यार्थज्ञानकूं तामोक्षकासाधनपणा संभवैहै ॥ ऐसा
वाक्यार्थज्ञान तत्त्वंपदार्थकेज्ञानकरिकैहीहोवैहै ॥ और सोपदार्थज्ञान तातत्त्वंपदार्थकेनिरूपणकरिकैही
होवैहै॥यातैं प्रथम तत्पदार्थकानिरूपणकरे है॥तहां असाधारणधर्मरूपजोलक्षणहै तथाप्रत्यक्षादिरूप
जोप्रमाणहै तिनदोनोंकरिकैही वस्तुकीसिद्धिहोवैहै ॥तालक्षणप्रमाणतैंविना वस्तुकीसिद्धिहोतीनहीं ॥
इस प्रकारकेन्यायकूंअंगीकारकरिकै प्रथम तातत्पदार्थकालक्षणकहेहैं॥तहां तिसब्रह्मरूपतत्पदार्थका
लक्षण दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ तटस्थलक्षणहोवैहै ॥ और दूसरा स्वरूपलक्षणहोवैहै ॥ तहां कादा

चित्कत्वेसतिव्यावर्त्तकं तटस्थलक्षणं' ॥ अर्थयह जोलक्षण आपणेलक्ष्यविषे कदाचित्वर्त्तताहुआ ता
आपणेलक्ष्यकूं अन्यपदार्थोंतैंभिन्नकरेहै ॥ सोलक्षण तटस्थलक्षण कह्याजावैहै ॥जैसे पृथिवीका गंधव
त्त्व लक्षण तटस्थलक्षणहै ॥ तहां महाप्रलयविषे सर्वकार्यकानाशहोवैहै ॥ यातैं नैयायिकोंकेमतविषे सो
गंधगुणतामहाप्रलयविषे परमाणुरूपपृथिवीविषेरहतानहीं ॥ और नैयायिकोंकेमतविषे जिसक्षणविषे
द्रव्यउत्पन्नहोवैहै ॥तिसक्षणविषे ताद्रव्यविषेरूपादिकगुण उत्पन्नहोतेनहीं॥किंतु द्वितीयक्षणविषे तेरूपा
दिकगुण उत्पन्नहोवैहैं ताप्रथमक्षणविषे सोद्रव्य निर्गुणहीउत्पन्नहोवैहै ॥ इस अर्थविषेयुक्तितौ न्यायप्र
काशकेद्वितीयपरिच्छेदकेआदिविषे विस्तारतैंकथनकरीहै ॥ सो तहाँसैंजानिलेणी ॥ यातैं पृथिवीकेउत्प
त्तिक्षणविषेभी सोगंधगुण तापृथिवीविषेरहतानहीं ॥ किंतु मध्यकालविषेहीं सोगंधगुण तापृथिवीविषे
रहेहै ॥ यातैं सोगंधगुण कादाचित्कहै ॥ और सोगंधगुण आपणेआश्रयभूतपृथिवीकूं दूसरेजलादिक
पदार्थोंतैंभिन्नभीकरावैहै ॥ यातैं कादाचित्कहोणेतैं तथाव्यावर्त्तकहोणेतैं सोगंधवत्त्व तापृथिवीका तट
स्थलक्षणहीं है ॥ इसप्रकार तत्पदार्थरूपब्रह्मकाभी 'सृष्टिस्थितिलयकारणत्व' यह तटस्थलक्षणहै ॥
ईहां सृष्टिशब्दकरिकै जगत्केउत्पत्तिका ग्रहणकरणा ॥ और स्थितिशब्दकरिकै जगत्केपालनका ग्र
हण करणा॥और लयशब्दकरिकै जगत्केप्रलयका ग्रहणकरणा॥सोजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकाका
रणत्वब्रह्मविषे सर्वदारहता नहीं ॥ किंतु मायाकीअधिष्ठानताकालविषेहीरहेहै ॥ यातैं सोसृष्टिस्थितिल
यकाकारणत्व कादाचित्क है ॥ और सांख्यनैयायिकादिकोंने जगत्काकारणरूपकरिकै कल्पनाकरे
जे प्रधानपरमाणुआदिकहैं॥तिनांतैं तालक्ष्यरूपब्रह्मकूं भिन्नभीकरावैहै॥यातैं व्यावर्तकभीहै ॥ इस

प्रकार कदाचित्कहोणेतैं तथाव्यावर्त्तकहोणेतैं सोसृष्टिस्थितिलयकाकारणत्व ब्रह्मका तटस्थलक्षण कह्याजावैहै ॥अब तालक्षणविषेस्थितपदोंका प्रयोजनकहेहैं ॥ तहां लयकारणत्व इतनामात्रही जोताब्रह्मका तटस्थलक्षणकरते तौ ब्रह्मकूं केवल जगत्‌काउपादानकारणपणाही सिद्धहोता ॥ काहेतैं जो कार्य जिसकारणविषे लयहोवैहै ॥ तिसकार्यकेप्रति तिसकारणकूं केवल उपादानकारणपणाहीं देख्याहै ॥ जैसे घटकेलयकाकारणमृत्तिकाताघटका केवल उपादानकारणहोवैहै ॥ निमित्तकारण होवैनहीं ॥ तैसे ता ब्रह्मतैंभिन्नहीकोई जगत्‌कानिमित्तकारण अंगीकारकरणाहोवैगा ॥ ताकरिकै 'एकमेवाद्वितीयंब्रह्म' इसश्रुतिका विरोधहोवैगा ॥ तादोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणाविषे स्थितिकारणत्व कह्याहै ॥ किंवा स्थितिलयकारणत्व इतनामात्रही जोब्रह्मका तटस्थलक्षणकरते तौ जैसे घटकीउत्पत्तिकेदंडादिकनिमित्तकारण होवैहैं ॥ तैसे ता ब्रह्मतैभिन्नहीकोई जगत्‌कानिमित्तकारण होवैगा ॥ ताकरिकै पुनः ताअद्वैतश्रुतिकाविरोधहोवैगा ॥ तादोषकीनिवृत्ति करणेवास्ते तालक्षणविषे सृष्टिकारणत्व कह्याहै ॥ किंवा सृष्टिस्थितिकारणत्व इतना मात्रही जोब्रह्मका तटस्थलक्षणकरते ॥ तो जैसे कुलालकूं घटकेप्रति निमित्तकारणताहै ॥ तैसे ताब्रह्मकूंभी केवल जगत्‌कानिमित्तकारणपणाही होवैगा ॥ उपादानकारण कोईअन्यहीहोवैगा ॥ ताकरिकै वेदांतसिद्धांतकाविरोधहोवैगा ॥ तादोषके निवृत्तकरणेवासते तालक्षणविषे लयकारणत्व कह्याहै ॥ इसप्रकार सृष्टि स्थिति लय इनतीनोंकाकारणत्वरूप तटस्थलक्षणकेकहणेकरिकै ब्रह्मकूं जगत्‌का अभिन्ननिमित्त उपादानपणा सिद्धहोवैहै ॥ अर्थात एकहीब्रह्म जगत्‌का उपादानकारण तथा निमित्तकारणहै ॥ याकहणेतैं ब्रह्मका यहतटस्थलक्षण सिद्धभ

या ॥ 'जगत्कर्तृत्वेसतिजगदुपादानत्वं' अर्थ यह ॥ जगत्केकर्तृत्वविशिष्ट जोजगत्काउपादानपणा
है यहही ब्रह्मका तटस्थलक्षणहै ॥ तहां जगतउपादानत्व इतना मात्रही जोब्रह्मका तटस्थलक्षणकरते॥
तौ मायाविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ काहेतै शुद्धब्रह्मकूंतौ जगत्कीउपादानता हैनहीं ॥ किंतु
मायाविशिष्टब्रह्मकूंही जगत्कीउपादानताहै ॥ और विशिष्टविषेवर्तणेहाराधर्म विशेषणविषेभी अवश्य
रहेहै ॥ यातैं ताब्रह्मकाविशेषणरूपमायाकूंभी सोजगत्का उपादानकारणपणा अवश्य होवैगा ॥ और
'मायांतुप्रकृतिंविद्यात्' यहश्रुतिभी तामायाकूं जगत्काउपादानकारणपणा कहेहै ॥ ताअतिव्याप्ति
दोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे जगतकर्त्तृत्व यहपद कथनकऱ्याहै ॥ तहां कार्यकेउपादानका
जोअपरोक्षज्ञानहै ॥ तथा ताकार्यकेकरणेकीजोइच्छाहै ॥ तथा ताइच्छा जन्य जाप्रयत्नरूपकृतिहै ॥
यहतानों जिसविषेरहेहैं ॥ सोईही कर्त्ताकह्याजावैहै ॥ जैसे कुलालादिक ताज्ञानइच्छाप्रयत्नवालेहो
णेतैं घटादिककार्यौंकेकर्त्ता कहेजावैहैं ॥ इसप्रकारकाकर्त्तापणा चेतनविषेही संभवेहै ॥ जडमायावि
षे संभवतानहीं ॥ यातैं जगत्कर्तृत्व पदकेकहणेतैं तामायाविषे ताउक्तलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥
किंवा जगत्कर्तृत्व इतनामात्रही जोब्रह्मका तटस्थलक्षणकरते ॥ तौनैयायिकोंनें जगत्का केवल
कर्त्तारूपकरिकैमान्याजोईश्वरहै ॥ ताकेविषे ताउक्तलक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनि
वृत्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे जगत्उपादानत्व यहपद कथनकऱ्याहै ॥ तहां तेनैयायिक परमाणुवों
कूंतौ जगत्काउपादानकारण मानेहैं ॥ और ईश्वरकूं जगत्काकर्त्ता मानेहैं ॥ इसप्रकार नैयायिकोंने
जगत्के उपादानका तथा कर्त्ताका भेदही अंगीकारकऱ्याहै ॥ और हमसिद्धांतियोंनेंतौ ब्रह्मकूं जगत्

का अभिन्ननिमित्तउपादानकारण मान्याहै ॥ यातैं जगतउपादानत्व इसपदकेकहणेतैं तानैयायिक अभिमतईश्वरविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सोअतिव्याप्तिवालालक्षणभी आपणेलक्ष्यकीसिद्धि क्यूंनहींकरता ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ लक्षणके अतिव्याप्ति १ अव्याप्ति २ असंभव ३ यहतीनदोषहोवैहैं ॥ तिनतीनोंदोषोंविषे एकभीदोष जिसलक्षणविषेरहेहै, सोलक्षण दुष्टकह्याजावैहै ॥ तादुष्टलक्षणतैं तालक्ष्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ और तिनतीनोंदोषोंतैं जोलक्षण रहितहोवैहै, सोलक्षण अदुष्टकह्याजावैहै ॥ तादुष्टलक्षणतैंही तालक्ष्यकीसिद्धिहोवैहै ॥ यातैं तालक्षणविषे पदोंका निवेशकरिकै ताअतिव्याप्तिआदिकदोषकी निवृत्ति अवश्यकरीचाहिये ॥ तहांजोलक्षण आपणेलक्ष्यविषेवर्त्तताहुआ अलक्ष्यविषेभी वर्त्तै है ॥ सोलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहोवैहै ॥ जैसे गौका शृंगित्वलक्षण तागौरूपलक्ष्यविषेवर्त्तताहुआ महिषअजादिरूपअलक्ष्यविषेभी वर्त्तै हैं यातैं सोगौका शृंगित्वलक्षण अतिव्याप्तिदोषवालाहै ॥ और जोलक्षण आपणेलक्ष्यके एकदेशविषेवर्त्तैहै ॥ सोलक्षण अव्याप्तिदोषवालाहोवै है ॥ जैसे गौकाकपिलत्वलक्षण कोईगौवोंविषेरहेहै सर्वगौवोंविषेरहतानहीं ॥ यातैं सोकपिलत्वलक्षण अव्याप्तिदोषवालाहै ॥ और जोलक्षण आपणेलक्ष्यमात्र विषेही नहींरहेहै ॥ सोलक्षण असंभवदोषवाला होवैहै ॥ जैसे गौका एकशफत्वलक्षण कोईभीगौविषेरहतानहीं ॥ यातैं असंभवदोषवालाहै ॥ शफनाम खुरकाहै ॥ और जिसपदार्थका जोलक्षणकरिये तिसलक्षणका सोपदार्थलक्ष्यकह्याजावैहै ॥ यातैं अतिव्याप्तिआदिकसर्वदोषोंतैरहितहोणेतैं सोउक्तब्रह्मकातटस्थलक्षण समीचीनहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ एकहीब्रह्मकूं जगतका उपादानपणा तथा कर्त्तापणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं

लोकविषे ऐसादेखणेमेंआवतानहीं ॥ जैसे घटकाकर्त्ताजोकुलालहै सो ताघटकाउपादानकारणहोता नहा ॥ और ताघटकाउपादानकारणजोमृत्पिंडहै सो ताघटका कर्त्ताहोतानहीं ॥ किंतु सोमृत्पिंड तौ ताघटका उपादानकारणहीहोवैहै ॥ और सोकुलाल ताघटका कर्त्ताहीहोवैहै ॥ इसप्रकार घटादिककार्योंविषे उपादानकारणका तथाकर्त्ताका भेदहीं देखणेविषेआवैहै ॥ और दृष्टअर्थकेअनुसारहीं अदृष्टअर्थकीकल्पनाहोवैहै॥दृष्टअर्थतैंविरुद्ध अदृष्टअर्थकीकल्पना होवनहीं ॥ और एकहीब्रह्मकूं जगत्का उपादान तथाकर्त्ता मानणा यहभी अदृष्टअर्थकीकल्पनाहै ॥ सो दृष्टअर्थतैंविना कैसेसंभवैगी किंतु नहींसंभवैगी ॥ यातैं दृष्टविरोधतैं एकहीब्रह्मकूं जगत्का उपादान तथा कर्त्ता मानणा असंगत है ॥ किंतु ईश्वरकूंतौ जगतका कर्त्तामान्याचाहिये ॥ और ताईश्वरतैंभिन्न परमाणुआदिकोंकूं ताजगत्का उपादानकारण मान्याचाहिये ॥ इसअर्थविषे सोदृष्टविरोधहोवैनहीं ॥ किंतु घटादिकार्योंविषे सोउपदानकर्त्ताकाभेद सर्वलोकोंकूं प्रसिद्धहीहै ॥ याकहणेतैं यहअनुमानसिद्धभया ॥ 'इदंजगत् भिन्ननिमित्तोपादानकं कार्यत्वात् घटादिवत्' अर्थयह ॥ यहजगत् उपादानकारणके तथाकर्त्तारूपनिमित्तकारणके भेदवाला है कार्यहोणेतैं ॥ घटादिककार्योंकीन्यांई इति ॥ किंवा जो तुम यहकहो ब्रह्मकूं जगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानपणा हम नहींकल्पनाकरते ॥ किन्तु 'तदैक्षतबहुस्यांप्रजायेय' यहश्रुतिहीं ताअर्थकूं बोधनकरेहै ॥ सोयहतुमाराकहणा भी संभवतानहीं ॥ काहेतैं पूर्वउक्तरीतिसैं दृष्टअर्थकेविरोधहुए ताश्रुतिका सोउक्तअर्थ संभवतानहीं ॥ किन्तु अन्यहीअर्थ संभवैहै ॥ यातैं ब्रह्मकूं जगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानपणा संभवैनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ 'तदैक्षतबहुस्यां सो

ऽकामयतबहुस्यांप्रजायेय ' अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेव मैंबहुतरूपहोवों याप्रकारका संकल्पकरताभया ॥ और सोपरमात्मादेव मैंबहुतरूपहोइकैउत्पन्नहोवों याप्रकारकीकामनाकरताभया इति॥ इसश्रुतिनें एकही ब्रह्मकूं बहुतरूपहोणेकीकामना कथनकरीहै ॥ साकामना चेतनकाहीधर्महोवैहै ॥ जडकाधर्महोवैनहीं यातैं ताश्रुतिकेबलतैं चेतनब्रह्मकूंही जगत्का उपादानपणा तथाकर्तापणा निश्चयहोवैहै ॥ और तात्पर्यकेंनिश्चायक जेउपक्रमउपसंहारादिकषट्लिंगहैं ॥ तिनलिंगोंकरिकैसर्ववेदांतवाक्योंका अद्वितीयब्रह्मविषेही तात्पर्यनिर्णयकऱ्याहै ॥ यातैं ताउक्तअनुमानकरिकै ताश्रुतिअर्थका बाधहोइसकैनहीं ॥उलटा श्रुतिकेविरोधहुए तेप्रत्यक्षअनुमानादिकप्रमाणही आभासरूपताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ उपक्रमादिकषट्लिंगोंकास्वरूप आगेद्वितीयपरिच्छेदविषेकहग ॥ किंवा तावादीन जोपूर्वयहकह्याथा लोकविषे किसीभीकारणकूं कार्यकाअभिन्न निमित्तउपादानपणा देखीतानहीं ॥ यातैं जगत्के उपादानकारणका तथानिमित्तकारणका भेदहीअंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ सोयहवादीकाकहणाभी असंगतहै ॥ काहेतैं लोकविषेभी ऊर्णनाभीआदिकजंतुविषेकूं स्वरचिततंतुरूपकार्यकेप्रति अभिन्ननिमित्तउपादानकारणपणाहींदेखणेविषेआवैहै॥ अर्थात् सोऊर्णनाभिजंतु तातंतुरूपकार्यकेप्रति आपही उपादानकारणहोवैहै तथाआपही कर्त्तारूपनिमित्तकारणहोवैहै ॥ किंवा जैसे नैयायिकोंकेमतविषे घट ईश्वरदोनोंका जोसंयोगसंबंधहै सोसंयोग समवायसंबंधकरिकै ताघटईश्वरदोनोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं ताईश्वरकूं तासंयोगकेप्रति उपादानकारणपणाभीहै ॥ और सोईश्वर कार्यमात्रकेप्रति निमित्तकारणहोवैहै ॥ यातैं तासंयोगरूपकार्यकेप्रति सोईश्वर निमित्तकारणभीहै ॥ इसप्रकारतैं नैयायिकान जैसे

तासंयोगरूपकार्यकेप्रति ईश्वरकूं अभिन्ननिमित्तउपादानकारणता अंगीकारकरीहै ॥ तैसे हमासिद्धांती भी ब्रह्मकूं जगत्कीअभिन्ननिमित्तउपादानकारणता अंगीकारकरेहैं ॥ यातैं सोपूर्वउक्तदृष्टविरोधभीप्राप्त होवैनहीं॥यातैं सोजगत्काअभिन्ननिमित्तउपादानकारणत्व ब्रह्मकातटस्थलक्षण संभवैहै यहसिद्धभया इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ यहउक्तब्रह्मकातटस्थलक्षण तभीसंभवै ॥ जभी कोईप्रमाणकरिकै ताब्रह्मविषे जगत्कीकारणता सिद्धहोवै ॥ ताकारणताकीसिद्धितैंविना सोउक्तलक्षण संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताब्रह्मकूं जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकीकारणता साक्षात्श्रुतिप्रमाणकरिकैहीसिद्धहै ॥ तथा व्यासभगवान्केसूत्रकरिकैभीसिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'यतोवाइमानिभूतानिजायंते येनजातानिजीवंति यत्प्रयंत्यभिसंविशंति' अर्थयह ॥ जिसब्रह्मतैं यहसर्वभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ और उत्पन्नहुएयहसर्वभूत जिसब्रह्मकरिकै जीवनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मृत्युकूंप्रातहुएयहसर्वभूत जिसब्रह्मविषे लयभावकूंप्रातहोवै हैं इति ॥ तहांसूत्र ॥ 'जन्माद्यस्ययतः' अर्थयह ॥ जिससर्वज्ञसर्वशक्तिमान्कारणतैं इसआकाशादिक प्रपंचके जन्म स्थिति लय होवैहै ॥ सोईहीं ब्रह्महै इति ॥ तहां इतनेंपर्यंत ब्रह्मका तटस्थलक्षण निरूपणकऱ्या ॥ और ताटस्थलक्षणकेज्ञानहुएभी जबपर्यंत ताब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकाज्ञान नहींहोवैहै ॥ तब पर्यंत सोब्रह्म यथावत्स्वरूपकरिकै जान्याजावैनहीं ॥ यातैं तातत्पदार्थरूपब्रह्मका अब स्वरूपलक्षण कहेहै ॥ तहां 'स्वरूपंसतव्यावर्त्तकं स्वरूपलक्षणं' ॥ अर्थयह ॥ जोलक्षण आपणेलक्ष्यकास्वरूपभूतहुआ ताआपणेलक्ष्यकूं अन्यपदार्थोंसें भिन्नकरावैहै ॥ सोलक्षण स्वरूपलक्षण कह्याजावैहै ॥ जैसे पृथिवीका पृथिवीत्व स्वरूपलक्षणहै ॥ तहां जाति व्यक्ति दोनोंका सिद्धांतविषे तादात्म्यही अंगीकारकऱ्या

है ॥ यातैं तापृथिवीत्वजातिकाभी तापृथिवीव्यक्तिकेसाथि तादात्म्यही है ॥ यातैं सापृथिवीत्वजाति तापृथिवीकास्वरूपभूतहुई तापृथवींकूं जलादिकइतरपदार्थोंतैंभिन्नकरावैहै ॥ यातैं सापृथिवीत्वजाति तापृथिवीका स्वरूपलक्षणहै ॥ तैसे सत्य ज्ञान आनंद यह तीनों ब्रह्मकेस्वरूपलक्षणहै ॥ तहां तेसत्या दिकतीनों ताब्रह्मकास्वरूपभूतहुए ताब्रह्मकूं असत्जडदुःखरूपजगत्तैंभिन्नकरावैहैं ॥ यातैं तिनसत्या दिकोंविषे ब्रह्मकास्वरूपलक्षणपणा संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सत्यादिकोंकूं जोब्रह्मकास्वरूप मानो गे तौ तिनसत्यादिकोंविषे ब्रह्मकालक्षणपणा नहींहोवैगा ॥ तथा ताब्रह्मविषे तासत्यादिकलक्षणका लक्ष्यपणा नहींहोवैगा ॥ जिसकारणतैं सोलक्ष्यलक्षण भाव भेदकेअधीनहीहोवैहै ॥ अभेदविषे सोलक्ष्य लक्षणभाव होतानहीं ॥ जोकदाचित् अभेदविषेभी सोलक्ष्यलक्षणभाव होताहोवै ॥ तौ पृथिवीभी पृ थिवीका लक्षणहोणा चाहिये ॥ तथा ब्रह्मभी ब्रह्मकालक्षण होणा चाहीये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तेस त्यादिक यद्यपि वास्तवतैं ब्रह्मकास्वरूपहीहैं ॥ तथापि तिनसत्यादिकोंविषे ब्रह्मकाकल्पितभेद हम अंगी कारकरेहैं ॥ ताकल्पितभेदकूंअंगीकारकरिकेही ताब्रह्मका तथासत्यादिकोंका लक्ष्यलक्षणभाव संभवै है ॥ यहवार्त्ता वृद्धपुरुषोंनेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'आनंदोविषयानुभवोनित्यत्वंचेतिसंतिधर्माः ब्रह्म णोऽपृथक्त्वेपिपृथीगवावभासंतइति' अर्थयह ॥ आनंद ज्ञान नित्यता यहतीनोंधर्म ब्रह्मकेहैं ॥ तेतीनों धर्म वास्तवतैं ब्रह्मतैं अपृथक्हुएभी पृथक्हुएकीन्यांई प्रतीतहोवैहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तेसत्यादि कधर्म जोवास्तवतैं ब्रह्मतैंअपृथक्हीहोवैं ॥ तौ तिनसत्यादिकोंकी ब्रह्मतैंपृथक्होइकेप्रतीति किसकारण तैंहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अंतःकरण तथा ताअंतःकरणकेधर्मरूपउपाधिकेवशतैं तिनसत्यादिकों

की ताब्रह्मतैंपृथक्रूप्रतीति बनिसकैहै ॥ सोदिखावैहैं ॥ तहां बाधाऽभावविशिष्टचैतन्य सत्यपदका वाच्य अर्थहै ॥ और वृत्तिअवच्छिन्नचैतन्य ज्ञानपदका वाच्यअर्थहै ॥ और प्रीतिआदिकवृत्तिअवच्छिन्नचैतन्य आनंदपदका वाच्यअर्थहै ॥ यातैं तिनसत्यादिकोंका तथाब्रह्मका वास्तवतैंभेदकेअभावहुएभी उपाधिकृतभेदकेविद्यमानहुए सोलक्ष्यलक्षणभाव संभवैहै ॥ और तेसत्यादिकपद भागत्यागलक्षणाकरिकै अखंडब्रह्मकूंही बोधनकरैहैं ॥ यातैं तालक्षणवाक्यतैं सत्यादिकोंका तथाब्रह्मका गुणगुणीभाव सिद्धहोवै नहीं ? और तिनसत्यादिकपदोंकेवाच्यअर्थकाभेद पूर्वकथनकऱ्याहै ॥ यातैं तिनसत्यादिकपदोंविषे पर्यायताभीहोवैनहीं ॥ अब तालक्षणवाक्यविषेस्थितसत्यादिकपदोंकेप्रयोजनकानिरूपणकरैहैं ॥ तहां सत्यंब्रह्म । इतनामात्रही जोताब्रह्मकास्वरूपलक्षणकरते ॥ तौ नैयायिकोंने अंगीकारकरी जासत्ताजातिहै तिसविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ तथा तालक्ष्यब्रह्मकूं जडपणेकीप्राप्तिहोती ॥ तादोषकेनिवृत्तकरणेवासते तालक्षणविषे ज्ञान यहपद कथनकऱ्याहै ॥ तहां तासत्ताजातिविषे ज्ञानरूपताहैनहीं ॥ यातैं तासत्ताविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तथा ब्रह्मविषेभी जडपणाहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ ज्ञानंब्रह्म ॥ इतनामात्रही जोब्रह्मकालक्षणकरते ॥ तौ नैयायिकोंने अंगीकारकऱ्याजो आत्माकाज्ञानगुणहै ताकेविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ तथा तालक्ष्यब्रह्मकूं अनित्यपणा तथाअपुरुषार्थपणा प्राप्तहोता ॥ तादोषकेनिवृत्तकरणेवासते तालक्षणविषे आनंद यहपद कथनकऱ्याहै ॥ तहां ताज्ञानगुणविषे आनंदरूपताहैनहीं ॥ यातैं ताज्ञानगुणविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तथा तालक्ष्यब्रह्मकूं अपुरुषार्थरूपताभी होवैनहीं ॥ किंवा । आनंदोब्रह्म । इतनामात्रही जो ताब्रह्मकालक्षणकरते ॥

तौ विषयजन्यसुखविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ और ता लक्ष्यब्रह्मकं जडपणाभीप्राप्तहोता ॥ तादोषकेनिवृत्तिकरणेवासते तालक्षणविषे ज्ञान यह पद कथनकर्‍याहै॥ताविषयसुखविषेज्ञानरूपताहै नहीं ॥ याते ताकेविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तथा तालक्ष्यब्रह्मकूं जडपणाभीहोवैनहीं ॥ और ताल क्ष्यब्रह्मकेअनित्यपणेकेनिवृत्तकरणेवासते सत्य यहपद कथनकर्‍याहै॥इसप्रकारकेप्रयोजनवालेहोणेतैं तेसत्यादिकतीनोंपद सार्थकहैं ॥यातैं सत्य ज्ञान आनंद यहतीनोंधर्म मिलिके ब्रह्मकास्वरूपलक्षणहोवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तिनसत्यादिकोंकूं ब्रह्मकास्वरूपलक्षणपणा तभीसिद्धहोवै ॥ जभी ताब्रह्मकी सत्यादिरूपता किसीप्रमाणकरकेंसिद्धहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताब्रह्मकासच्चिदानंदरूपताविषे सा क्षात्श्रुतिभगवतीही प्रमाणहै॥तथा व्यासभगवान्‌कासूत्रभी प्रमाणहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्म आनंदोब्रह्म' अर्थयह॥ब्रह्म सत्यरूपहै तथाज्ञानरूपहै तथाअनंतरूपहै तथाआनंदरूपहै इति॥ इहां अंतनाम परिच्छेदकाहै ॥ सो जिसविषे नहींविद्यमानहोवै ताकानाम अनंतहै ॥ अर्थात् देशपरिच्छेद कालपरिच्छेद वस्तुपरिच्छेद इनतीनपरिच्छेदरूपअंततैं जोरहितहोवै ताकानाम अनंतहै ॥ ऐसी अनंतरू पता ब्रह्मविषेहीहै ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'नव्यापित्वाद्देशतोऽतोनि त्यत्वान्नापिकालतः नवस्तुतोपिसार्वात्म्यादानंत्यंब्रह्मणित्रिधा' अर्थयह ॥ ब्रह्म सर्वदेशविषेव्यापकहै॥ यातैं ताब्रह्मका देशतैंभीअंत नहींहै ॥ और सोब्रह्म नित्यहै ॥ यातैं ताब्रह्मका कालतैंभीअंतनहींहै ॥ और सोब्रह्म सर्वकाआत्मारूपहै ॥ यातैं ताब्रह्मका वस्तुतैंभीअंतनहींहै ॥ इसरीतिसे ताब्रह्मविषे तीन प्रकारकाअनंतपणाहै ॥ इति ॥ तहां व्याससूत्र ॥ 'आनंदादयःप्रधानस्य' अर्थयह॥आनंद सत्य ज्ञान

इत्यादिकगुण ब्रह्मकेस्वरूपभूतहुए ताब्रह्मकेलखावणेहारेहैं ॥ यातैं निर्गुणब्रह्मकेध्यानवासते तिनआनं
दादिकगुणोंका वेदकीसर्वशाखाओंविषे उपसंहार करणेयोग्यहै इति ॥ इसउक्तश्रुतिसूत्रकारिके ताब्रह्म
कीसत्यज्ञानादिरूपतासिद्धहै॥यातैं तिनसत्यज्ञानादिकोंविषे ब्रह्मकास्वरूपलक्षणपणा संभवैहै इति ॥

॥शंका॥ ॥इसस्वरूपलक्षणकेसंभवहुएभी पूर्वकथनकऱ्याजो जगत्के उत्पत्ति स्थिति लयका कार
णत्वरूप ब्रह्मकातटस्थलक्षण सोसंभवतानहीं॥काहेतैं ब्रह्मकूं तुमोंने जगत्का उपादानकारण तथानि
मित्तकारण मान्याहै ॥ ताकेविषे प्रथम उपादानकारणपणाही ब्रह्मकूं संभवतानहीं ॥काहेतैं सोउपादा
नकारण आरंभ १ परिणामी २ विवर्त्ताऽधिष्ठान ३ इनभेदकरके तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तिनतीनों
विषे ब्रह्मकूं कौनउपादानकारण तुम मानतेहो ॥ तहां तुम्हारेमतविषें सोब्रह्म एकअद्वितीयरूपहै ॥ यातैं
ताब्रह्मकूं जगत्काआरंभकपणा संभवतानहीं ॥ परस्परयुक्तअनेकद्रव्योंकूंही आरंभकपणाहोवैहै ॥
जैसे नैयायिकोंकेमतविषे परस्परसंयुक्तअनेकपरमाणुओंकूं जगत्काआरंभकपणहै ॥ और 'साक्षीचे
ताःकेवलोनिर्गुणश्च' 'निष्कलंनिष्क्रियंशांतं अविकार्योयमुच्यते' इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंने ताब्रह्मकूं नि
र्गुण निष्क्रिय निरवयव कह्याहै ॥ यातैं ताब्रह्मकूं परिणामी उपादानपणाभी संभवतानहीं ॥ जिसका
रणतैं गुणक्रियावाले सावयवदुग्धादिकही दधिआदिकपरिणामकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तीसरा विवर्त्ताऽधि
ष्ठानत्वरूप उपादानपणाभी ब्रह्मकूं संभवतानहीं ॥काहेतैं घटःसन् पटःसन् इसप्रकार घटपटादिकप्रपं
चका सत्यरूपकरकेही लोकोंकूंअनुभवहोवैहै ॥ ऐसेसत्यप्रपंचकूं ब्रह्मकीविवर्त्तरूपताकरके मिथ्याप
णाकल्पनाकरणेविषे कोईभीप्रमाणनहींहै॥और ताप्रपंचकेमिथ्यापणेतैंबिना ताब्रह्मकूं विवर्त्ताऽधिष्ठा

नपणा संभवतानहीं ॥ यातैं उक्त तीनप्रकारके उपादानपणेविषे कोईप्रकारकाभी उपादानपणा ताब्रह्मकूं संभवतानहीं ॥ किंवा ता ब्रह्मकूं जगत्काकर्त्तापणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं कार्यकीउत्पत्तिकेअनुकूल ज्ञान इच्छा प्रयत्न यहतीन जिसविषेरहैहैं सो कर्त्ताहोवैहै ॥ यह पूर्व कहआयेहैं ॥ तहां तेब्रह्मके ज्ञानइच्छाप्रयत्नतीनों नित्यहैं अथवा अनित्यहैं ॥ जो कहोनित्यहैं ॥ तौ सर्वकालविषे जगत्कीउत्पत्तिहीहोणीचाहिये ॥ कोईभीकालविषे जगतकाप्रलयनहींहोणाचाहिये ॥ ताकरके प्रलयकेप्रतिपादनकरणेहारेशास्त्रकाविरोधहोवेगा ॥ और जोकहो तेज्ञानादिकअनित्यहैं ॥ तौ जगत्कीन्याई तेज्ञानइच्छादिकभी कार्यरूपहीहोवैंगे ॥ यातैं तिनज्ञानादिकोंकूं ब्रह्मकाआश्रितपणा नहींहोवैगा ॥ जिसकारणतैं ब्रह्मकूं पूर्व अपरिणामीपणाही कथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकार ताब्रह्मविषे उपादानपणेके तथाकर्त्तापणेके असंभवहुए अभिन्ननिमित्तउपादानकारणताभी संभवैनहीं ॥ यातैं पूर्वकथनकऱ्या जगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकोकारणतारूप ब्रह्मकातटस्थलक्षण असंगतहै॥ और कारणतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं इसजगत्रूपकार्यकाभी ताब्रह्मतैंभिन्न कोईकारण मान्याचाहिये ॥ सोऐसाकारण सत्व रज तम यहतीनगुणरूप प्रधानहै ॥ ताप्रधानतैंही महत्तत्वादिकक्रमकरके यहजगत्उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसप्रधानकूं परिणामीरूपहोणेतैं जगत्केजन्मादिकोंकीकारणता संभवैहै॥ और आत्मारूपपुरुषतौ असंगहै तथा निर्विकारहै॥ यातैं तापुरुषविषे जगत्कीकारणतासंभवतीनहीं ॥ इसप्रकारकीशंकाकरणेहारेसांख्ययोंकेखंडनकरणेवासते ताउक्ततत्पदार्थका विभागकरेहैं ॥ सोतत्पदकाअर्थ दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ वाच्यअर्थहोवैहै ॥ और दूसरा लक्ष्यअर्थहोवैहै ॥ तहां जो अर्थ जिसपदकीशक्तिवृत्तिकरकेजान्याजावैहै ॥

सोअर्थ तिसपदका वाच्यअर्थ कह्याजावैहै॥ औरजोअर्थ जिसपदकीलक्षणावृत्तिकरकै जान्याजावैहै॥
सोअर्थ तिसपदका लक्ष्यअर्थ कह्याजावैहै॥ ताशक्तिलक्षणाकास्वरूप आगेद्वितीयपरिच्छेदविषेकहेंगे
तहां मायाउपहितचैतन्यतौ तत्पदका वाच्यअर्थहै॥और मायातैंरहितशुद्धचैतन्य तत्पदका लक्ष्यअर्थहै
इहां यहतात्पर्यहै॥ यद्यपिमायातैंरहितनिर्विकारशुद्धब्रह्मकूं जगत्‌काउपादानपणा संभवतानहीं॥ तथा
पि मायाउपहितब्रह्मकूं सोउपदानपणा संभवैहै॥सोउपादानपणाभी आरंभकतारूप वा परिणामितारूप
नहींहै॥ किंतु विवर्त्ताऽधिष्ठानत्वरूपहै॥ तहां आधिष्ठानवस्तुका जोअवास्तवतैं अन्यथाभावहै ताकानाम
विवर्तहै॥ जैसे रज्जुशुक्तिआदिकआधिष्ठानका अवास्तवतैं सर्परजतादिरूपअन्यथाभावहै॥ तैसे ता
ब्रह्मकाभी यहजगत् अवास्तवतैं अन्यथाभावहै॥ ऐसेजगत्‌रूपविवर्त्तका अधिष्ठानपणा तामायाउप
हितब्रह्मकूं संभवैहै॥ किंवा घटःसन् पटःसन् इत्यादिकअनुभवतैं जगत्‌कासत्यपणाही सिद्धहोवैहै॥
यातैं ताजगत्‌विषे ब्रह्मकेविवर्त्तपणेकरके मिथ्यापणासंभवतानहीं॥ यह जो पूर्ववादीनैं कथनकन्या
था सोभी असंगतहै॥ काहेतैं सोउक्तअनुभवतौ तिनघटपटादिकोंविषे अधिष्ठानचैतन्यकेसत्यपणे
कूंही विषयकरैहै॥ कोईघटादिकोंकेसत्यपणेकूं विषयकरतानहीं॥ यातैं सोअनुभव ताप्रपंचकेमिथ्या
पणेका बाधकनहींहै॥ और 'नेहनानास्तिकिंचन' यहश्रुति ब्रह्मतैंभिन्नसर्वप्रपंचका निषेधकरैहै॥
यातैं ताप्रपंचकी स्वतःसत्ता संभवतीनहीं॥ और 'तावादीने जोजगत्‌केमिथ्यापणेविषे प्रमाणकाअ
भाव कह्याथा॥ सोभीसंगतहै॥ जिसकारणतैं 'वाचारंभणं विकारोनामधेयं' यह श्रुतिही साक्षात
जगत्‌केमिथ्यापणेकूं कथनकरैहै॥ किंवा ताब्रह्मकूं जगत्‌उपादानपणा अवश्यमान्याचाहिये॥ का

हेतैं 'यत्प्रयंत्यभिसंविशंति' यहश्रुतितिसब्रह्मविषेही जगत्केलयकूंकथनकरैहै ॥ और जिसकार्यका जिसकारणविषे लयहोवैहै ॥ तिसकार्यका सोकारण उपादानहींहोवैहै ॥ जैसे घटादिककार्यका मृत्तिकादिककारणविषेही लयहोवैहै ॥ यातैं ताघटादिककार्यका सोमृत्तिकादिककारण उपादानही देखणेविषेआवैहै ॥ तैसे श्रुतिप्रतिपादित जगत्केलयकाआधारहोणेतैं ताब्रह्मकूं जगत्काउपादानपणा अवश्यमान्याचाहिये ॥ किंवा 'बहुस्यांप्रजायेय' इसश्रुतिने ब्रह्मकाहीबहुतहोणा कथनकऱ्या है ॥ और लोकविषे मृत्तिकादिकउपादानकारणोंकाही घटशरावादिरूपतैंबहुतहोणा देखणेविषेआवै है ॥ याकारणतैं भी ताब्रह्मकूं जगत्काउपादानपणा संभवै है ॥ किंवा सांख्यवादीने जो प्रधानकूंजगत्काउपादान मान्याथा ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं सोप्रधान जगत्काउपादानकारण है इसअर्थ विषे कोईभीप्रमाणनहीं है ॥अर्थात् कोईभीश्रुतिविषे त्रिगुणात्मकप्रधानकूं जगत्काउपादानपणा कह्यानहीं ॥ किंतु 'आत्मनःआकाशःसंभूतः' इत्यादिकसर्व श्रुतियोंविषे चेतनब्रह्मकूँही जगत्काउपादानपणा कथनकऱ्या है ॥ यद्यपि इसउक्तश्रुतितैं आत्माकूंही उपादानता प्रतीतहोवैहै ॥ ब्रह्मकूं उपादानता प्रतीतहोतीनहीं ॥ तथापि 'तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशत्' इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मकाही जीवभावकरिके जगत्विषेप्रवेश कथनकऱ्याहै ॥ यातैं यहआत्मा ब्रह्मतैंभिन्नही है ॥ किन्तु सोब्रह्मही आत्मारूप है यातैं यहआत्मा जगत्काउपादानकारणहै इसकहणेतैं भी ताब्रह्मकूंही उपादानतासिद्धहोवै है ॥किंवा 'तदैक्षत सोऽकामयत बहुस्यां प्रजायेय' इत्यादिकश्रुतियोंविषे बहुतरूपहोणेहारेकारणनिष्ठ ईक्षणकाकर्त्तापणा तथाकामनाकाकर्त्तापणा कथनकऱ्या है ॥ तिसतैं भी ब्रह्मकूंही उपादानतासि

द्धहोवैहै ॥ ताप्रधानकूं उपादानतासिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं सो ईक्षणकामनाकाकर्त्तापणा चेतनकाही धर्महोवैहै॥ जड़काधर्म होतानहीं ॥ और सोतुम्हाराप्रधान भी जड़ है ॥ यातैंताप्रधानाविषे सो ईक्षणकामनाकाकर्त्तापणा संभवता नहीं ॥ तातैं ताब्रह्मकूंही जगत्‌काउपादानपणा है ताप्रधानकूंनहीं है यह सिद्धभया॥किंवा जैसे तामायाउपहितब्रह्मकूं जगत्‌काउपादानपणा संभवैहै ॥ तैसे जगत्‌काकर्त्ता पणाभी तामायाउपहितब्रह्मकूंही संभवैहै ॥ सोपूर्व कथनकरिआयेहैं ॥ और तामायाउपहितईश्वरके ज्ञान इच्छा प्रयत्न यहतीनों जन्यहोवैं हैं तथाअनित्यहोवैहैं ॥ ऐसेज्ञानइच्छाप्रयत्नकाआश्रयपणा यद्यपि निर्विकारशुद्धब्रह्मकूं संभवतानहीं ॥ तथापि तामायाउपहितब्रह्मकूं तिनोंका आश्रयपणा संभवै है ॥ जिसकारणतैं तामायाउपहितब्रह्मकूंही सर्वविवर्त्तजगत्‌का अधिष्ठानपणाहै ॥ यातैं सोपूर्वउक्तदोष प्राप्तहोवैनहीं॥ यातैं सो पूर्वउक्त अभिन्ननिमित्तउपादानकारणत्व ब्रह्मकातटस्थलक्षण संभवै है यहसिद्धभयो इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसमायाकरकेउपहितहुआब्रह्म जगत्‌काकारणहोवै है ॥ सोमाया क्यावस्तु है अर्थात् तामायाका स्वरूप तथालक्षण तथाप्रमाण तीनों निरूपणहोइसकतेनहीं ॥ यातैं सो माया कोईवस्तुनहीं है॥अब तामायाके स्वरूप लक्षण प्रमाण इनतीनोंके असंभवकूं यथाक्रमतैं निरूपण करैं हैं ॥ तहाँ सो माया सत्य है अथवा मिथ्या है॥ तहां प्रथमसत्यपक्षविषे भी सोमाया ब्रह्मतैं भिन्न है अथवा अभिन्न है ॥ तहां प्रथम भिन्नपक्षजोअंगीकारकरोगे ॥ तौ 'एकमेवाद्धितीयंब्रह्म' इसश्रुतिकाविरोधहोवेगा काहेतैं यहश्रुति ब्रह्मकूं अद्वितीयकहै है ॥ सोब्रह्मकीअद्वितीयरूपता ब्रह्मतैंभिन्नसत्यमायाकेविद्यमानहुए संभवतीनहीं ॥ किंवा 'असंगोनहिसज्जते' इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मकूं असंगकह्या

है ॥ ऐसेअसंगब्रह्मका कोईकेसाथभी संबंधसंभवतानहीं ॥ तासंबंधतैं विना ब्रह्मविषे मायाउपहितप णाही संभवतानहीं ॥ किंवा ताब्रह्मका मायाकेसाथ कौनसंबंधहै ॥ संयोगसंबंधहै ॥ अथवासमवाय संबंधहै अथवा तादात्म्यसंबंधहै ॥ अथवा भेदाऽभेदसंबंधहै ॥ तहां प्रथम संयोगपक्षतौ संभवतान हीं ॥ काहेतैं सोसंयोग अव्याप्यवृत्तिहोणेतैं सावयवद्रव्योंकाहीधर्महोवैहै जैसे पक्षीका जोवृक्षकेसा थ संयोगहै सोसंयोग सर्ववृक्षविषेरहतानहीं ॥ किंतु तावृक्षके कोईकशाखारूपदेशविषेही सोसंयोग रहैहै ॥ मूलादिकदेशविषेरहतानहीं ॥ यातैं सोसंयोग अव्याप्यवृत्तिहै ॥ याकारणतैंही सोसंयोग ताप क्षीवृक्षरूपसावयवद्रव्यकाही धर्म है ॥ और ब्रह्मतौ निरवयवहै ॥ यातैं ताब्रह्मका मायाकेसाथ संयोग संबंध संभवतानहीं॥और दूसरा समवायपक्षभी संभवतानहीं॥जिस कारणतैं सोसमवायसंबंध तुम्हा रेमतविषे अंगीकारहीनहींहै ॥ और गुणगुणी क्रिया क्रियावान् जातिव्यक्ति अवयवअवयवी इन्होंका ही समवायसंबंधहोवैहै ॥ तेगुणगुणीभावादिक ब्रह्ममायाविषेहैं नहीं ॥यातैं ताब्रह्मका मायाकेसाथ सो समवायसंबंध संभवताहीनहीं ॥ और तीसरा तादात्म्यपक्षभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं भेदतैंरहितपदा र्थोंकाही सोतादात्म्यहोवैहै ॥ और ब्रह्म माया दोनों परस्परभेदवालेहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका परस्पर तादात्म्य संभवतानहीं ॥ और चतुर्थ भेदाऽभेदपक्षभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं तेभेदअभेददोनों परस्पर विरुद्धहोणेतैं एक अधिकरणविषे रहतेनहीं ॥ इसप्रकार ब्रह्मका मायाकेसाथ संबंधकेअनिरूपणहुएता ब्रह्मविषे मायाउपहितपणा संभवतानहीं ॥ और सोमाया ब्रह्मतैंअभिन्नहै यहद्वितीयपक्ष जो अंगीकार करो ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं ब्रह्मतौ चेतनहै और माया जडहै ताजडचेतनका अभेद सं

भवतानहीं ॥ और सोमाया मिथ्याहै यहआद्यद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरो ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतै तामायाकेमिथ्याहुए तामायाविशिष्टईश्वरकूंभी मिथ्यापणा प्राप्तहोवैगा ॥ और ताईश्वरकूंभी जोमिथ्यामानोंगे ॥ तौ ता ईश्वरकेज्ञानतैं मोक्षकीप्राप्तिकूंकथनकरणेहारा मोक्षशास्त्रही अप्रमाणहोवैगा जिसकारणतैं मिथ्यावस्तुकेज्ञानकरिकै मोक्षकीप्राप्तिसंभवतीनहीं॥ इसउक्तप्रकारतैं तामायाकास्वरूप दुर्निरूप्यहै ॥ और तामायाकेदुर्निरूप्यहुए तामायाकालक्षणभी दुर्निरूप्यही है॥ काहेतैं धर्मीकेविद्यमानहुएही ताके धर्मोंकाविचारहोवैहै ॥ जभीसोधर्मीही दुर्निरूप्यहोवैहै ॥ तभी ताधर्मीकाअसाधारणधर्मरूपलक्षणतौ अत्यंत दुर्निरूप्यहोवैहै और तामायाकेदुर्निरूप्यहुए तामायाकाप्रमाणभी दुर्निरूप्यही है ॥ जिसकारणतैं विषयतैंविना कोईभीप्रमाणकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ इसप्रकार स्वरूप लक्षण प्रमाण इनतीनोंकरिकै मायाकूंदुर्निरूप्यहुए तामायाउपहितचैतन्यकूं तत्पदकावाच्यार्थपणा संभवतानहीं ॥ ऐसी शंकाकेप्राप्तहुए॥ अब स्वरूप लक्षण प्रमाण इनतीनोंसहितमायाकेनिरूपणकरणेवास्ते प्रथमता केउपोद्घातकरिकै दृष्टांतसहित परमात्माविषे सामान्यतैं अध्यासकूं निरूपणकरैं हैं॥ तहां आगेप्रतिपादनकरणेयोग्यअर्थकूं बुद्धिविषेराखिकै तिसअर्थकीसिद्धिवासतैं जोपूर्व अन्यअर्थकाकथनहै ताकानाम उपोद्घातहै ॥ तहां जैसे शुक्तिरज्जुआदिकोंविषे रजतसर्पादिक कल्पितहोवैंहैं ॥ तैसे चेतनविषे अचेतन कल्पितहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ चेतनविषे अचेतन कल्पितहै इसअर्थविषे कौनप्रमाणहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इसअर्थविषे श्रुतार्थापत्तिही प्रमाणहै ॥ तहां श्रवणकरेहुएवाक्यार्थकी अनुपपत्तिकरिकै जोअर्थांतरकीकल्पनाहै ताकानाम श्रुतार्थापत्तिहै ॥ सोप्रकार दिखावैंहैं ॥ तहां 'इदंसर्वंयदय

मात्मा।आत्मैवेदंसर्वं।ब्रह्मैवेदंसर्वं।पुरुषएवेदंविश्वं। सर्वंखल्विदंब्रह्म। वासुदेवःसर्वं । नारायणःसर्वमिदंपुराणः' इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतिवाक्योंविषे चेतनतैंभिन्नकरिकै अचेतनकाअभावही प्रतिपादनकर्‌याहै ॥ तहां इनउक्तश्रुतिवचनोंविषे। इदंसर्वं। इसवचनकरिकैतौ प्रत्यक्षादिकप्रमाणकरिकैसिद्ध यहआकाशादिकजडजगत् कथनकर्‌याहै॥और आत्मा ब्रह्म पुरुष वासुदेव नारायण इनशब्दोंकरिकै अद्वितीय तथासर्वकासाक्षी तथाप्रत्यक्रूप ऐसापरमात्मा कथनकर्‌याहै॥ तहां प्रथमश्रुतिविषे प्रपंचकावाचक जो इदंसर्वं यहशब्दहै॥ तथा परमात्माकावाचक जो आत्मा यहशब्दहै॥तिनदोनोंशब्दोंका सामानाधिकरण्य प्रतीतहोवैहै॥तहां जडजगत्का तथा चेतनआत्माका वास्तवतैं एकपणा संभवतानहीं॥यातैं चेतन अचेतनका अभेदप्रतिपादकत्वरूप मुख्यसामानाधिकरण्यतौ तहां संभवतानहीं॥किंतु जैसे 'योऽयंचोरःसस्थाणुः' इसवचनविषे चोर स्थाणु इनदोनोंशब्दोंका बाधसामानाधिकरण्यहै ॥ तैसे ताउक्तश्रुतिविषे आत्मा सर्व इनदोनोंपदोंकाभी बाधसामानाधिकरण्यही है॥अर्थात् जैसे दृष्टांतवाक्यविषे चोर स्थाणु इनदोनोंपदोंकेसामानाधिकरण्यतैं स्थाणुतैंभिन्नकरिकै चोरकाअभाव प्रतीतहोवै है ॥ तैसे दार्ष्टांतिकश्रुतिवाक्यविषेभी आत्मा सर्व इनदोनोंपदोंकेसामानाधिकरण्यतैं आत्मातैंभिन्नकरिकै सर्वजडजगत्काअभाव ही प्रतीतहोवैहै ॥ अर्थात् प्रपंचाभाववान्‌आत्मा याप्रकारकाबोध ताश्रुतिवाक्यतैंहोवैहै ॥ तहां सोजड प्रपंचकारणभाव तभीसंभवै॥ जभी ताजडप्रपंचकूं ब्रह्मविषे कल्पितमानिये ॥ ताप्रपंचकेकल्पितपणेतैं विना सोप्रपंचकाअभावसंभवतानहीं ॥ यातैं सोश्रुतिउक्त जडप्रपंचकाअभाव आपणेप्रतियोगीभूतजडप्रपंचकेकल्पितपणेतैंविना अनुपपन्नहुआ ताजडप्रपंचकेकल्पितपणेकूं कल्पनाकरावैहै ॥ इसप्रकारकी

श्रुतार्थापत्तिकरकेही चेतनविषे अचेतनकाकल्पितपणा निश्चयहोवैहै ॥ इसप्रकारकाअर्थ पूर्वउक्तदू सरेश्रुतिस्मृतिवचनोंकाभी जानिलेणा इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व चेतनविषे अचेतनकूं कल्पितक ह्या ॥ तहां चेतन कौनवस्तुहै तथाअचेतन कौनवस्तुहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ नित्य शुद्ध बुद्ध मु क्त सत्य परमानंद अद्वय ऐसाजोब्रह्महै सोचेतन कह्याजावैहै ॥ और अज्ञानतैंआदिलेकेजितनाक जडसमूहहै सोअचेतन कह्याजावैहै ॥ अब ताब्रह्मके नित्यादिकसतविशेषणोंकाफल तथातिनोंविषेश्रु तिप्रमाण कथनकरैहैं ॥ तहां ब्रह्मविषे वास्तवतैं कोईभीअनात्मवस्तुकातादात्म्य नहींहै ॥ तथापि भ्रां तिकरके ताब्रह्मविषे अनात्मवस्तुकातादात्म्य प्रतीतहोवैहै ॥ ताभ्रांतिसिद्धतादात्म्यकूं तेनित्यादिकवि शेषण निवृत्तकरेहैं ॥ ताकेविषेभी कार्यप्रपंचकेतादात्म्यकूं नित्य यहविशेषण निवृत्तकरैहै ॥ सोब्रह्मका नित्यपणा ‘ आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः ’ इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरकेहीसिद्धहै ॥ और ताकार्यप्रपंचके धर्मोंकेतादात्म्यकूं शुद्ध यहविशेषण निवृत्तकरैहै ॥ सोब्रह्मकाशुद्धपणा ‘ अकायमव्रणमस्नाविरंशुद्धमपापविद्धं ’ इ त्यादिकश्रुतिप्रमाणकरकेहीसिद्धहै ॥ तहां रागद्वेषादिकविकारोंतैंजोरहितपणाहै यहही ताब्रह्मविषेशु द्धपणाहै ॥ और कारणभूतअज्ञानकेतादात्म्यकूं बुद्ध यहविशेषण निवृत्तकरेहै ॥ तहां सर्वदा एकरस ज्ञानरूपताकानाम बुद्धपणाहै ॥ सोब्रह्मकाबुद्धपणा ‘ प्रज्ञानघनः ’ इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरकेहीसिद्धहै और अज्ञानकृतआवरणादिकोंकेतादात्म्यकूं मुक्त यहविशेषण निवृत्तकरैहै ॥ तहां बंधतैंरहितपणेकाना म मुक्तपणाहै ॥ सोब्रह्मकामुक्तपणा ‘ विमुक्तश्चविमुच्यते ’ इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरकेहीसिद्धहै ॥ और मिथ्यापणेकूं सत्य यहविशेषण निवृत्तकरैहै ॥ तहां तीनकालविषे जाकाबाधनहींहोवै सो सत्यक

ह्याजावैहै ॥ सोब्रह्मकासत्यपणा ' सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म । सदेवसोम्येदमग्रआसीत्' इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरकेहीसिद्धहै ॥ और आनंद यह विशेषण ताब्रह्मकेपुरुषार्थपणेकूं कथनकरैहै॥सोब्रह्मकीआनंदरूपता ' आनंदोब्रह्मेतिव्यजानात्, विज्ञानमानंदंब्रह्म ' इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरकेहीसिद्धहै ॥ और अद्वय यहविशेषण ताब्रह्मकी अखंडएकरसताकूं कथनकरैहै ॥ तहां नहींविद्यमानहैद्वैत जिसविषे ताका नाम अद्वयहै॥ अर्थात् भेदवादियोंने कल्पनाकरेजेपंचभेदहैं तिनोंतैंरहितकानाम अद्वयहै ॥ तेपंच भेद ये हैं ॥ जीवोंका परस्परभेद १ जीव ईश्वर दोनोंका परस्परभेद २ घटादिकजडपदार्थोंका परस्परभेद ३ ईश्वरका तथा जडजगत्का परस्परभेद ४ जीवका तथा जडजगत्का परस्परभेद ५ इसप्रकार जीवईश्वरादिरूपप्रतियोगियोंकेभेदकरके तेभेद पंचप्रकारकेहोवैहैं ॥ ते सर्वभेद कल्पितहैं ॥ यातैं तिनपंचभेदोंतैंजोरहितपणा ब्रह्मविषेसंभवैहै॥ अथवा सजातीयभेद १ विजातीयभेद २ स्वगतभेद ३ इनतीनभेदोंतैंजोरहितहोवै ताकानाम अद्वयहै ॥ सोब्रह्मकीअद्वयरूपता ' एकमेवाद्वितीयं ' इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरकैहीसिद्धहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व अज्ञानादिकजड समूहकूं अचेतनकह्या तहां ताअज्ञानका स्वरूपक्याहै तथालक्षणक्याहै तथाप्रमाणक्याहै ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ अब यथाक्रमतैं ताअज्ञानके स्वरूपकूं तथालक्षणकूं तथाप्रमाणकूं निरूपणकरैहै ॥ तहां सोअज्ञान त्रिगुणात्मकहै ॥ अर्थात् सत्व रज तम ये तीनगुणहैं आत्मा कहिये स्वरूप जिसके ऐसात्रिगुणात्मक अज्ञानहै॥तहां अज्ञानकेकार्यभूतजगतविषे सुख दुःख मोह रूपता प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ और तेसुखादिकतीनों यथाक्रमतैं सत्त्वादिकतीनगुणोंकेहीपरिणामहोवैं हैं ॥ और कारणकेसमा

नस्वभाववालाहीकार्यहोवैहै॥यातैं जगत्‌रूपकार्यविषे त्रिगुणरूपताकूंदेखिकै कारणभूतअज्ञानविषेभी सोत्रिगुणरूपता कल्पनाकरीजावैहै और 'अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां' यहश्रुतिभी ताअज्ञानकूं त्रिगुणरूपकहैहै ॥ इनतैंकरिकै अज्ञानकास्वरूपकह्या अब ताअज्ञानका लक्षणकहैहैं ॥ 'सदसद्विलक्षणम्अज्ञानम्' अर्थयह॥सत्यपदार्थतैं तथाअसत्यपदार्थतैं जो विलक्षणहोवैसोअज्ञानकह्याजावैहै ॥ अर्थात् जिसका सत्यरूपकरिकै तथाअसत्यरूपकरिकै निरूपणनहींहोइसकै सो अज्ञानकह्याजावैहै ॥ तहां अज्ञानकूं जोसत्यमानिये॥तौ जोसत्यब्रह्मकीन्यांई ॥ ताअज्ञानका नाशनहींहोणाचाहिये और ब्रह्मज्ञानकरिकै ताअज्ञानका नाशहोजावैहै ॥ यातैं सोअज्ञान सत्यरूपकरिकैभी निरूपणकर्‍याजावै नहीं ॥ और ताअज्ञानकूं जो असत्यमानिये ॥ तौ असत्यवंध्यापुत्रकीन्यांई ताअज्ञानका प्रत्यक्षनहीं होणाचाहिये ॥ और सोअज्ञानतौ मैंब्रह्मकूंनहींजानताहूं याप्रकारके प्रत्यक्षअनुभवका विषयहुआही प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोअज्ञान असत्यरूपकरिकैभी निरूपणकर्‍याजावैनहीं ॥ याकारणतैं ताअज्ञान कूं अनिर्वचनीयकहैहैं ॥ तहां 'असद्विलक्षणम् अज्ञानम्' इतनामात्रही॥जोताअज्ञानकालक्षणकरते तौ वंध्यापुत्रादिकअसत्यपदार्थतैंविलक्षण जोसत्यब्रह्महै ताकेविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे । सद्विलक्षण । यहपद कथनकर्‍याहै ब्रह्म सततैंविलक्षणनहींहै ॥ यातैं ताकेविषेअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ और 'सद्विलक्षणम् अज्ञानम्' इतनामात्रही जो ताअज्ञानकालक्षणकरते॥तौ सत्यब्रह्मतैंविलक्षणजेवंध्यापुत्रादिकअसत्यपदार्थहैं तिनोंविषे तालक्षणकी अतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकीनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे असद्विलक्षण। यहपद कथन

कन्याहै ॥ तेवंध्यापुत्रादिक असततैंविलक्षणनहीं हैं ॥ यातैं तिनोंविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखियेतौ । सद्विलक्षणम् अज्ञानम् । इतनामात्रही ताअज्ञानकालक्षण संभवैहै॥असत् यहपद व्यर्थहीहै ॥ काहेतैं जोकोईअसतवस्तुहोवै ॥ तौ ताका असत्पणा नहींसंभवैगा ॥ और जोकोईअसतवस्तुहैहीनहीं ॥ तौ किसाविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैगी ॥ यातैं ताअज्ञानकेलक्षणविषे । असद्विलक्षण । यहजोपद ग्रंथकारोंनेदियाहै ॥ सोकेवल शिष्योंकेबुद्धिकीवृद्धिवासतैंदियाहै ॥

॥ शंका ॥ ॥ जैसे अज्ञान सत्तैंविलक्षणहै ॥ तैसे यहकार्यप्रपंचभी तासत्तैंविलक्षणहीहै ॥ यातैं कार्यप्रपंचविषे ताअज्ञानकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताउक्तलणविषे अनादि इसपदकेकहणेकरिकै सोअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ अर्थात् 'सद्विलक्षणमनादि अज्ञानं' यहअज्ञानकालक्षणहै ॥ ताकार्यप्रपंचविषे अनादिपणाहैनहीं ॥ यातैं ताप्रपंचाविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसउक्तलक्षणकीभी जीवईश्वरविषे अतिव्याप्तिहीहोवैहै ॥ काहेतैं सोजीवईश्वर कल्पितहोणेतैं सत्तैंविलक्षणभीहै तथाअनादिभीहै ॥ तहां 'जीवेशावाभासेनकरोति' इसश्रुतिवचनकरिकै तथा 'मायाभासेनजीवेशौकरोतीतिश्रुतत्वतः । कल्पितावेवजीवेशौताभ्यांसर्वंप्रकल्पितम्' इस विद्यारण्यस्वामीकेवचनकरिकै ताजीवईश्वरविषे कल्पितपणाहीसिद्धिहोवैहै और 'जीवेशौ च विशुद्धा चिद्विभागस्तुतयोर्द्वयोः । अविद्यातच्चितोर्योगःषडस्माकमनादयः' अर्थयह ॥ जीव १ ईश्वर २ शुद्धचैतन्य ३ तिनोंकापरस्परभेद ४ अविद्या ५ ताअविद्याकाचेतनकेसाथसंबंध ६ येषट्पदार्थ हमारेमतविषे अनादिहैं इति ॥ इस सांप्रदायिकवचनतैं ताजीवईश्वरविषे अनादिपणा सिद्धहोवैहै ॥ यातैं ताजी

वईश्वरविषे ताउक्तलक्षणकीअतिव्याप्ति वज्रलेपहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्त करणेवासते तालक्षणविषे 'ज्ञाननिवर्त्त्यं' यहपदभी हम कथनकरैहैं ॥ तहां 'यतोज्ञानमज्ञानस्यैवनिवर्त्तकम्' इसवचनकरिके श्रीपंचपादिकाचार्यनैं ज्ञानकरिकै केवलअज्ञानमात्रकीहीनिवृत्ति कथनकरीहै ॥ अन्यकीनिवृत्तिकथनकरीनहीं॥और जीव ईश्वरादिभावकी निवृत्तितौताअज्ञानकीनिवृत्तिकरिकैहीहोवैहै ॥ यातैं ताजीवईश्वरविषे ज्ञानकरिकैनिवृत्तपणाहैनहीं ॥ यातैं ताजीवईश्वरविषे ताउक्तलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं॥यातैं ताअज्ञानका 'सद्विलक्षणमनादिज्ञाननिवर्त्त्यम् अज्ञानम्' यहलक्षणसिद्धभया ॥ अथवा 'अनाद्युपादानंज्ञाननिवर्त्यम् अज्ञानम्' यहद्वितीय अज्ञानकालक्षण करणा ॥ तहां इसलक्षणविषे अनादिप्रागभावविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासते उपादान यहपद कथनकऱ्याहै ॥ और घटादिककार्योंकेउपादानकारणभूतमृत्तिकादिकोंविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासते अनादियहपद कथनकऱ्याहै ॥ और अनादि तथाविवर्त्तउपादानरूप ब्रह्मविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासते ज्ञाननिवर्त्त्य यहपद कथन कऱ्याहै ॥ इहां अज्ञानविषे परिणामउपादानताग्रहणकरणी॥ और कैएक वादी ज्ञानके अभावकूंही अज्ञानकहैहैं तिन्होंकेखंडनकरणेवासते सिद्धांतविषे ताअज्ञानकूं भावरूपमान्याहै इति ॥ अबताअज्ञानविषे प्रमाणकूंकहैहैं ॥ तहां 'अहंब्रह्मनजानामि' अर्थात् मैंब्रह्मकूंनहींजानताहूं याप्रकारका अज्ञानविषयिकप्रत्यक्षअनुभव सर्वप्राणियोंकूंहोवैहै ॥ यातैं ताअज्ञानविषे एकतौ यह ॥२६॥
प्रत्यक्षहीप्रमाणहै ॥ और दूसरा श्रुतिस्मृतिभी प्रमाण है ॥ तहांश्रुति ॥ 'तेध्यानयोगानुगताअपश्यन् देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढाम्' अर्थयह॥कालस्वभावादिककारणविषे नानाप्रकारकेदोषोंकाविचारकरि

कै जगत्केकारणकानिश्चयकरणेवासते ब्रह्मकेध्यानपरायणहुए तेब्रह्मवेत्तापुरुष देवात्मशक्तिकूंही जगत्कारणरूपकरिकैदेखतेभये ॥ जोअज्ञानरूपशक्ति आपणेसत्वादिकगुणोंकरिकैनिगूढहै इति ॥ इस श्रुतिकाअर्थ आत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकऱ्याहै ॥ तहांस्मृति ॥ ॥ 'अज्ञानेनावृतं ज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवः । ज्ञानेनतुतदज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः' अर्थयह—जिनजीवोंकाज्ञान अज्ञानकरिकैआवृतहुआहै तेजीव तिसअज्ञानकृतआवरणकरिकै संसारकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ और जिनजीवोंका सोअज्ञान गुरुशास्त्रकेप्रसादजन्यज्ञानकरिकैनिवृत्तहुवाहै तिन पुरुषोंका अहंब्रह्मास्मि यहज्ञान प्रत्यक् अभिन्नब्रह्मकूं प्रकाशकरैहै इति ॥ यहगीतास्मृतिभी ताअज्ञानविषेप्रमाणहै ॥ किंवा इसस्मृतिविषे अज्ञानकूं ब्रह्मकेस्वरूपकाआवरकपणा कथनकऱ्याहै ॥ सोआवरकपणा भावपदार्थविषेहीहोवैहै ॥ अभावपदार्थविषेहोतानहीं ॥ यातैं ज्ञानकेअभावकूं अज्ञानरूपमानणेहारे नैयायिकोंनेभी इसस्मृतिवचनके विरोधतैंताअज्ञानकूं भावरूपही मान्याचाहिये ॥ यातैं सोगीतावचन ताअज्ञानकीभावरूपताविषेभी प्रमाणहै ॥ और इसउक्तगीतावचनविषे ज्ञानकरिकैअज्ञानकानाश कथनकऱ्याहै ॥ ताकरिकै त्रिगुणात्मक अचेतन स्वतंत्र पारमार्थिक परिणामी नित्य ऐसाजोप्रधानहै सोईही अज्ञानहै यहसांख्यियोंका मतभी खंडनहुआजानणा ॥ तहां लोकविषे अचेतनरथादिकोंकी चेतनकेअधीनहोप्रवृत्ति देखणेविषे आवैहै ॥ स्वतंत्रप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं ताप्रधानकूं अचेतनमानिके पुनःस्वतंत्रमानणा यहभी अत्यंत विरुद्धहै॥और लोकविषे परिणामीक्षीरादिकोंकूं सावयवताकरिकैअनित्यपणाही देखणेविषआवैहै॥यातैं ताप्रधानकूं परिणामीमानिके पुनःनित्यमानणा यहभी अत्यंतविरुद्धहै यातैं सोसांख्यियोंकामतसमी

चीननहींहै इति ॥ इतनेपर्यंत अज्ञानका स्वरूपतथालक्षण तथाप्रमाणकथनकऱ्या ॥ अब ताअज्ञानके विभागकूं कथनकरैहैं ॥ तहां सोउक्त अज्ञानमाया १ अविद्या २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां शुद्धसत्वगुणप्रधानहुवा सोअज्ञान माया कह्याजावैहै ॥ और मलिनसत्त्वगुणप्रधानहुआ सोअज्ञान अविद्या कह्याजावैहै तहां जोसत्त्वगुण रज तम इनदोनोंगुणोंकरिकै तिरस्कारकूंनहींप्राप्तभयाहै ॥ सो सत्त्वगुण शुद्ध कह्याजावैहै ॥ और जोसत्त्वगुण ता रजोतमोगुणकरिकै तिरस्कारकूंप्राप्तभयाहै ॥ सो सत्त्वगुण मलिन कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार सोएकहीअज्ञान सत्त्वगुणकीशुद्धिकरिकै मायारूपहोवैहै ॥ और सत्त्वगुणकीमलिनताकरिकै अविद्यारूपहोवैहै ॥ तहां श्रुति 'मायाचाविद्याचस्वयमेवभवति' अर्थयह सोमूलप्रकृतिरूपअज्ञान आपही मायारूप तथाअविद्यारूप होवैहै इति ॥ और माया अविद्या इनदोनोंउपाधियोंकरिकै सोएकहीचैतन्य जीव ईश्वर इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवै है तहां ता मायाविषेप्रतिबिंबितचैतन्यतौ ईश्वर कह्याजावैहै ॥ और ताअविद्याविषेप्रतिबिंबितचैतन्य जीव कह्या जावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'जीवेशावाभासेनकरोति' अर्थयह सोअज्ञान स्वनिष्ठआभासकरिकै जीव ईश्वर दोनोंकूंकरै है इति ॥ और केएकग्रंथकारतौ तामायाअविद्याका इसप्रकारतैं भेदवर्णनकरै हैं ॥ ता अज्ञानकी दोप्रकारकीशक्ति होवै है ॥ एकतौ ज्ञानशक्ति होवैहै ॥ और दूसरी क्रियाशक्ति होवैहै ॥ तहां कार्यकाजनक जोकारणनिष्ठासामर्थ्यहै ताकानाम शक्ति है ॥ ताकेविषेभी ज्ञानकीजनक जोशक्ति है सोज्ञानशक्ति कहीजावै है ॥ और क्रियाकोजनक जोशक्तिहै सोक्रियाशक्ति कहीजावै है ॥ तहां रज तम इनदोनोंगुणोंकरिकै नहींअभिभवकूंप्राप्तभया जोसत्त्वगुणहै सोसत्त्वगुण ज्ञानशक्ति कह्याजा

वैहै ॥ तहां ‘ सत्वात्संजायतेज्ञानं ’ इसवचनकरिकै गीताविषे श्रीभगवान्ने सत्त्वगुणतैंज्ञानकीउत्पात्ति कथनकरीहै ॥ यातैं तासत्त्वगुणकूं ज्ञानशक्तिरूपताविषे सोगीताकावचनहीप्रमाणहै ॥ और सत्त्वगुणकरिकै नहींअभीभवकूंप्राप्तभये जे रज तम येदोगुणहैं तेदोनोंगुण क्रियाशक्ति कहेजावैं हैं ॥ सोक्रियाशक्तिभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ आवरणशक्तिहोवैहै ॥ और दूसरी विक्षेपशक्तिहोवैहै ॥ तहां आवरणकीजनकशक्तिकूं आवरणशक्ति कहैं हैं ॥ और विक्षेपकीजनकशक्तिकूं विक्षेपशक्ति कहैं हैं॥ तहां सत्त्व रज इनदोगुणोंकरिकै नहींअभिभवकूंप्राप्तभया जोतमो गुणहै सोतमोगुण आवरणशक्ति कह्याजावैहै ॥ यहवार्त्ता भगवान्भाष्यकारनेभीकहीहै ॥ तहांभाष्यवचन ‘ कृष्णं तमः आवरणात्मकत्वात्’ अर्थयह ॥ ‘अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां’ इसमंत्रविषेस्थित जोकृष्ण शब्दहै ॥ सो तमोगुणकाहीवाचकहै ॥ तमोगुणकूं आवरणरूपहोणेतैं इति ॥ इसवचनकरिकै श्रीभाष्यकारोंने तातमोगुणकूंआवरणपणा इस उक्त श्रुतिकेव्याख्यानविषे कथनकऱ्याहै ॥ यातैं तिसतमोगुणविषे आवरणशक्तिरूपता संभवैहै ॥ यह आवरणशक्तिकास्वरूपकह्या ॥ अब ताआवरणशक्तिका लक्षणकहैंहैं ॥ ‘ नास्तिनप्रकाशतेइतिव्यवहारहेतुः आवरणशक्तिः’ अर्थयह ॥ ब्रह्महैनहीं तथा ब्रह्मभासतानहीं याप्रकारकेव्यवहारकाजोकारणहोवै सोआवरणशक्ति कह्याजावैहै इति ॥ इसीप्रकारतैं पूर्वज्ञानशक्तिकाभी ‘ अस्तिप्रकाशतेइतिव्यवहारकारणं ज्ञानशक्तिः’ याप्रकारकालक्षण जानिलेणा ॥ यहआवरणशक्तिकालक्षण श्रीविद्यारण्यस्वामीनेभीकह्याहै ॥ ‘ नभातिनास्तिकूटस्थइत्यापादनमावृत्तिः ’ अर्थयह कूटकीन्यांई निर्विकाररूपकरिकै जोस्थितहोवैहै ताकानाम कूटस्थहै ॥ ऐसापरमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मा नहीं है तथाभासतानहीं याप्र

कारकेव्यवहारकाजोकारणहै सो आवरणशक्ति कह्याजावैहै इति ॥ अब विक्षेपशक्तिकानिरूपणकरैं हैं ॥ तहां तम सत्त्व इनदोनोंगुणोंकरिकै नहींअभिभवकूंप्राप्तभया जोरजोगुणहै सोरजोगुणविक्षेपशक्ति कह्याजावैहै ॥ तहां 'रजसोलोभएवच' इसगीतावचनविषे रजोगुणतैं लोभादिकोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ और लोभ मद मत्सर इत्यादिकोंकूं विक्षेपकीकारणता प्रसिद्धहीहै यातैं ताउक्तविक्षेपशक्तिविषे सोगीतावाक्यहीप्रमाणहै ॥ अब ताविक्षेपशक्तिकालक्षणकहैं हैं ॥ 'आकाशादिप्रपंचोत्पत्तिहेतुः विक्षेपशक्तिः' अर्थयह ॥ आकाशादिप्रपंचकेउत्पत्तिकाकारण जोशक्तिहै सोविक्षेपशक्ति कहीजावैहै ॥ यह विक्षेपशक्तिकालक्षण आचार्योंनेभी कथनकऱ्याहै॥ 'विक्षेपशक्तिर्लिंगादिब्रह्मांडांतंजगत्सृजेत्' अर्थयह समष्टिव्यष्टिरूपलिंगशरीरतैंआदिलैके चतुर्दशभुवनब्रह्मांडपर्यंत सर्वजगत्कूं सो विक्षेपशक्तिही उत्पन्नकरेहै इति ॥ यातैंयह अर्थसिद्धभया सोपूर्वउक्तअज्ञानही ताउक्तआवरणशक्तिप्रधानहुआ अविद्या कह्याजावैहै ॥ और ताउक्तविक्षेपआदिशक्तिप्रधानहुआ माया कह्याजावैहै ॥

॥ शंका ॥ ॥ ताआवरणशक्तिप्रधानअज्ञानकूंमायारूपता क्योंनहींहोवै । तथा ताविक्षेपआदिशक्तिप्रधानअज्ञानकूं अविद्यारूपता क्योंनहींहोवै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शास्त्रवेत्तापुरुषोंने तामायाका तथा अविद्याका यहलक्षणकऱ्याहै ॥ ॥ 'स्वाश्रयाऽव्यामोहकरी माया' अर्थयह ॥ आपणेआश्रयकूं जो व्यामोहकीप्राप्तिनहींकरैहै सो मायाकहीजावैहै ॥ इति ॥ 'स्वाश्रयव्यामोहकरी अविद्या' अर्थयह ॥ आपणेआश्रयकूं जो व्यामोहकीप्राप्तिकरैहै सा अविद्या कहीजावै इति ॥ तहांताआवरणशक्तिकूंतो मोहकारीपणाहै ॥ यातैं ताआवरणशक्तिप्रधानअज्ञान अविद्याहीकह्याजावैहै॥मायाकह्याजावैहैनहीं ॥

और ताविक्षेपआदिक शक्तिकूं सोमोहकारीपणाहैनहीं॥यातें ताविक्षेपआदिशक्तिप्रधानअज्ञानमायाही कह्याजावैहै ॥अविद्याकह्याजावैनहीं॥इहां विक्षेपआदि इस आदिशब्दकरिकै पूर्वउक्तज्ञानशक्तिकाभीग्र हणकरणा ॥ इसप्रकारका मायाअविद्याकाभेद स्मृतिविषेभीकह्याहै ॥ तहांस्मृति 'तरत्यविद्यांवि ततांहृदियस्मिन्निवेशिता । 'योगीमायाममेयायतस्मैविद्यात्मनेनमः' अर्थयह॥हृदयविषे जिसपरमात्मा केसाक्षात्कारहुए ब्रह्मवेत्तायोगीपुरुष ताआवरणशक्तिप्रधानअज्ञानरूपअविद्याकूं तथाताविक्षेपशक्तिप्र धानअज्ञानरूपमायाकूं नाशकरैहै तिसज्ञानस्वरूपअप्रमेयब्रह्मकेताईं हमारानमस्कारहै इति ॥ अब तामायाअविद्याविभागकेनिरूपणकाफल कहैहैं ॥ ताउक्तमायाकरिकैउपहितजोचैतन्यहै ॥ सोमायाउ पहितचैतन्यतौ ईश्वरकह्याजावैहै ॥ तथा जगत्काकारण कह्याजावैहै ॥ तथा अंतर्यामीकह्याजावैहै॥ तहां 'एषसर्वेश्वरः'यह श्रुतितौ तामायाउपहितचैतन्यकूं ईश्वर कहैहै॥और 'एषोंतर्यामी' यहश्रुति ॥ ताकूं अंतर्यामी कहैहै ॥ और 'एषोयोनिःसर्वस्य' यह श्रुति ताकूं सर्वकाकारण कहैहै ॥ यातें तामायाउपहितचैतन्यके ईश्वरपणेविषे तथा अंतर्यामीपणेविषे तथा जगत्कारणपणेविषे यहउक्तश्रु तिही प्रमाणहै ॥ सोमायाउपहित चैतन्यही तत्पदकावाच्यअर्थहै॥और पूर्व उक्त अविद्याकरिकैउपहि त जोचैतन्यहै ॥ सो जीव कह्याजावैहै ॥ तथाप्राज्ञ कह्याजावैहै ॥ सोजीवही त्वंपदका वाच्यअर्थहै ॥ इहां उपहितशब्दकरिकै प्रतिबिंबितका ग्रहणकरणा॥अर्थात् तामायाविषेप्रतिबिंबितचैतन्य ईश्वरकह्या जावैहै ॥ और ताअविद्याविषेप्रतिबिंबितचैतन्य जीवकह्याजावैहै ॥ यहवार्त्ता श्रीविद्यारण्यस्वामीने पं चदशीग्रंथविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक 'तमोरजःसत्वगुणाप्रकृतिर्द्विविधाचसा ॥ सत्वशुद्ध्यविशुद्धिभ्यां

मायाऽविद्येचतेमते।१।मायाबिंबोवशीकृत्यतांस्यात्सर्वज्ञईश्वरः॥ अविद्यावशगस्त्वन्यस्तद्वैचित्र्यादनेक
धा'॥२॥ अर्थयह ॥ सच्चिदानंदब्रह्मकेप्रतिबिंबकरिकैयुक्त तथासत्त्वरजतमतीनगुणरूप जोप्रकृतिहै॥
सोप्रकृति माया अविद्या इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां शुद्धसत्त्वगुणकीप्रधानताकरिकैतो
सोप्रकृति मायाकहीजावैहै ॥ और मलिनसत्त्वगुणकीप्रधानताकारिकै सोप्रकृति अविद्याकहीजावैहै ॥
तहां तामायाविषेप्रतिबिंबितजोचैतन्यहै ॥ सो तामायाकूंआपणेवशकारिकै सर्वज्ञ तथाईश्वर होवैहै ॥
और ताअविद्याविषेप्रतिबिंबितजोचैतन्यहै ॥ सो जीवकह्याजावैहै ॥ सोजीवचैतन्य ताअविद्याकेवश
हुआ तिसअविद्याकीविचित्रतातैं आपभी देवमनुष्यादिरूपकरिकै अनेकप्रकारकाहीहोवैहै ॥ इहांयह
तात्पर्यहै सोपूर्वउक्त शुद्धसत्त्वगुणप्रधानमाया एकहीहोवैहै ॥ यातैं तामायाविषेप्रतिबिंबितईश्वरचैत
न्यभी एकहीहोवैहै ॥ और सोपूर्वउक्त मलिनसत्त्वप्रधानअविद्या तामलिनताकीविचित्रतातैं अनेकप्र
कारकीहीहोवैहै ॥ यातैं ताअविद्याविषेप्रतिबिंबितजीवचैतन्यभी अनेकप्रकारकाहीहोवैहै ॥ यातैं इस
उक्तपक्षविषे नानाजीवहीसिद्धहोवैहै इति ॥ अब इसउक्तअर्थविषे श्रुतिप्रमाणभी कहैहैं॥ 'अस्मान्मा
यीसृजतेविश्वमेतत्तस्मिंश्चान्योमाययासन्निरुद्धः।मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम्' अर्थयह ॥ मा
याउपाधिकपरमात्मा सृष्टिकेआदिकालविषे आकाशादिकब्रह्मांडांतजगत्कूं वेदकेशब्दोंतैं उत्पन्नकरता
भया ॥ अर्थात् सोपरमात्मा भू इसप्रकारकेवेदशब्दकूंउच्चारणकारिकै पृथिवीकूंउत्पन्नकरताभया ॥ इस
प्रकारआकाशआदिकशब्दोंकूंउच्चारणकारिकै तिनआकाश आदिकोकूंभी उत्पन्नकरताभया॥यहवार्ता'स
भूरित्युक्त्वाभुवमसृजत । वेदशब्देभ्यएवादौनिममसमहेश्वर' इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंविषे आत्मप्रसि

द्धहीहै ॥ तिसउत्पन्नहुएजगत्विषे सोअविद्याउपाधिकजीव पूर्वउक्तमायाकरिकै देहादिकोंविषेअहंमम अभिमानकरिकै बंधायमानहोवैहै ॥ और मायाकूं जगत्काउपादानकारण जानणा ॥ और तामाया उपाधिवालेचैतन्यकूं जगत्काकर्त्ता महेश्वर जानणा ॥ इहां यह अभिप्रायहै ॥ शुद्धब्रह्मकूंतौ जगत्की कारणताहै नहीं ॥ किंतु मायाउपाधिकपरमात्माकूंही जगत्कीकारणताहै ॥ तहां सोपरमात्मा तामा याउपाधिकीप्रधानताकरिकै तौ जगतका उपादानकारणहै ॥ और आपणेचैतन्यरूपकीप्रधानताकरि कै ताजगतका कर्त्तारूपनिमित्तकारणहै इति ॥ तहां पूर्वउक्तदोमतोंविषे अज्ञानकेएकहुएभी मायाअ विद्याकेभेदकूंसिद्धकरिकै जीवईश्वरकाभेद तथाजीवोंकानानापणा दिखाया ॥ अब जेग्रंथकार ताअ ज्ञानकूंएकमानिकै तथातामायाअविद्याकेभेदकूंनमानिकै बिंबप्रतिबिंबभावकरिकै ताजीवईश्वरकेभेदकूं मानैहैं तथाजीवकूंएकही मानैहैं ॥ तिनोंकेमतकानिरूपणकरैहैं ॥ जैसे एकहीदेवदत्तनामापुरुष पाक पाठक्रियारूपनिमित्तकेभेदकरिकै पाचक पाठक इनदोनामोंकरिकै कह्याजावैहै ॥ तैसे सोएकहीअज्ञा न विक्षेपआवरणशक्तिरूपनिमित्तकेभेदकरिकै माया अविद्या इनदोनामोंकरिकै कह्याजावैहै ॥ तात्प र्ययह ॥ जैसे पाचक पाठक ये दोनोंशब्द ताएकहीदेवदत्तपुरुषकेवाचकहैं ॥ तिनवाचकशब्दोंकेभेद करिकै तादेवदत्तपुरुषकाभेद होतानहीं ॥ तैसे माया अविद्या ये दोनोंशब्दभी ताएकहीअज्ञानकेवा चकहैं ॥ तिनवाचकशब्दोंकेभेदकरिकै ताअज्ञानकाभेद संभवतानहीं ॥ यातैं तामायाअविद्याका भेद नहींहै ॥ ऐसेएकअज्ञानरूपअविद्याविषे जोचैतन्यकाप्रतिबिंबहै सोतौ जीव कह्याजावैहै ॥ और सो अविद्याउपहितबिंबचैतन्य ईश्वर कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार तामायाअविद्याकेभेदकूंनहींअंगीकारकरिकै

भी बिंबप्रतिबिंबभावकरिकै सोजीवईश्वरकाभेद संभवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्नेभीकहीहै ॥ तहांसूत्र 'आभासएवच' अर्थयह जैसे जलादिकउपाधियोंविषे सूर्यचन्द्रादिकोंका प्रतिबिंबहोवैहै ॥ तैसे यहजीवभी चैतन्यका प्रतिबिंबरूपहीहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे सूर्यादिकोंकेप्रतिबिंबका जलादिक उपाधिहोवैहैं ॥ तैसे इसजीवरूपप्रतिबिंबका तथाबिंबभूतईश्वरका कौनउपाधिहै ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ अब मतभेदसे ताजीवईश्वरकेउपाधिकावर्णनकरैं हैं तहां केएकग्रंथकारतौ अंतःकरणकूंही ताजीवकाउपाधिमानैहैं ॥ काहेतें अंतःकरणविशिष्टचैतन्याविषेही अहंकर्त्ता अहंभोक्ता या प्रकारतें कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकसंसारकाअनुभवहोवैहै ॥ और 'कार्योपाधिरयंजीवः' यहश्रुतिभी ताअंतःकरणरूपकार्यकूंही जीवकाउपाधिपणा कहैहै ॥ यातैं ताप्रतिबिंबरूपजीवका सोअंतःकरणही उपाधिहै॥ ते अंतःकरण नानाहैं तथापरिच्छिन्नहैं॥ यातैं तिनअंतःकरणोंविषे प्रतिबिंबरूपतेजीवभी नानाहैं तथापरिच्छिन्नहैं इति ॥ और केएकग्रंथकारतौ ऐसेकहैहैं ॥ सोअंतःकरण अज्ञानकाकार्यहोणेतैं अस्वतंत्रहै ॥ यातैं ताअंतःकरणविषे बिंबत्वप्रतिबिंबत्वरूपतैं जीवपरमात्माकाभेदकपणा संभवतानहीं यातैं सोअंतःकरण जीवकाउपाधि नहींहै॥ किंतु स्वतंत्रहोणेतैं सोअज्ञानही ताजीवकाउपाधिहै ॥ सो जीवकाउपाधिरूपअज्ञानभी एकनहींहै ॥ किंतु नानाहींहैं ॥ ताअज्ञानरूपउपाधिकेनानापणेकरिकै ताअज्ञानविषेप्रतिबिंबरूपजीवभी नानाहींहैं ॥ और ब्रह्मविषेआरोपितहोणेतैं तेअज्ञान परिच्छिन्नहैं ॥ यातैं तिनअज्ञानोंविषेप्रतिबिंबरूप तेजीवभी परिच्छिन्नहीहै ॥ तथा परस्पर भेदवालेहैं ॥ यातैं पुण्यपापकर्मकेसुखदुःखरूपफलका व्यतिकरहोवैनहीं ॥ तहां एककै सुखीहुए वा दुःखीहुए जोसर्वोंकूं तासुख

की वादुःखकी प्राप्तिहै ताकानाम कर्मफलव्यतिकरहै ॥ सो जैसे एकजीवपक्षविषेप्राप्तहोवैहै तैसे इस नानाजीवपक्षविषे प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं तेनानाअज्ञानही ताबिंबरूपईश्वरका तथाप्रतिबिंबरूपजीवोंका परस्परभेदकरणेहारा उपाधिहैं ॥ याप्रकारका ताव्याससूत्रकाअर्थ नानाजीववादियोंकेमतविषेसिद्ध होवैहै इति ॥ और कैएकग्रंथकारतौ यहकहैंहैं ॥ ताजीवईश्वरकाभेदकरणेहारा उपाधि स्वतंत्रहोणे तैं अज्ञानहीहै ॥ परंतु सोअज्ञान नानानहींहैं किंतु एकहीहै ॥ तिसएकअज्ञानविषे जोचैतन्यका प्रतिबिंबरूपजीवहै ॥ सोजीवभी ताअज्ञानरूपउपाधिकेएकपणेकरिकै एकहीहै ॥ तथा अपरिच्छिन्नहै ॥ तहां 'अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णाम्' यहश्रुतिही ताअज्ञानकेएकपणेविषे प्रमाणहै ॥ और 'इंद्रोमाया भिःपुरुरूपईयते' इसश्रुतिविषे जोमायाओंकाबहुतपणा कथनकऱ्याहै ॥ सो तामायारूपअज्ञानके श क्तियोंकेबहुतपणेकूं वा सत्वआदिकगुणोंकेबहुतपणेकूं लेकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं ताश्रुतिकाभीविरोधहो वैनहीं ॥ और 'अजोह्येकोजुषमाणोऽनुशेते' यहश्रुति ताजीवकेएकपणेविषेप्रमाणहै ॥ तथा 'आ भासएवच' इसउक्तसूत्रविषे एकवचनकरिकै सूत्रकारनैभी ताजीवका एकपणाही कथनकऱ्याहै ॥ यातैं सोजीव एकहीमान्याचाहिये ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जीवकूं जोएकमानोंगे ॥ तौ तुम्हारेमतविषे बंधमोक्षकीव्यवस्था कैसेहोवैगी ॥ अर्थात् तत्त्वज्ञानकरिकै कैएकजीवतौ मुक्तहोवैहैं ॥ और ताज्ञानकी अप्राप्तिकरिकै कैएकजीव बद्धहोवैहैं ॥ याप्रकारकी बंधमोक्षकीव्यवस्था जैसे नानाजीवपक्षविषे सं भवैहै ॥ तैसे एकजीवपक्षविषे सोव्यवस्था संभवतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अज्ञानके तथाजीव के एकहुएभी ताएकअज्ञानकार्यभूत जे अंतःकरणहैं ते नानाहैं और अंतःकरणविशिष्टचैतन्यकाना

म प्रमाताहै यातैं तिनअंतःकरणोंकेनानाहुए तेप्रमाताभी नानाहींहैं ॥ तहां तत्त्वज्ञानकरिकै एकप्र
माताकेमुक्तहुएभी तातत्त्वज्ञानतैंरहित दूसरेप्रमाता बद्धहीहोवैंहैं ॥ इसप्रकार प्रमातावोंकेभेदकूं अंगी
कारकरिकै ताएकजीवपक्षविषेभी सोबंधमोक्षकीव्यवस्था संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तुमएकजीववा
दियोंकेमतविषे मोक्ष क्यावस्तुहै ॥ जोकहो अविद्याकीनिवृत्तिही मोक्षहै ॥ ताकेविषेभी यहविचारक
र्याचाहिये ॥ क्या कार्यअविद्याकीनिवृत्ति मोक्षहै ॥ अथवा मूलाविद्याकीनिवृत्ति मोक्षहै ॥ तहां प्रथ
मपक्षतौ संभवतानहीं ॥ काहेतैं देहादिकोंविषे आत्मत्वादिकबुद्धिरूप जेभ्रांतिज्ञानहैं तिनोंकानाम का
र्यअविद्याहै तिनसकलभ्रांतिज्ञानोंकीनिवृत्तिहीसंभवतीनहीं ॥ और मूलाविद्याकेविद्यमानहुए पुनः
तिनभ्रांतिज्ञानोंकीउत्पत्ति अवश्यहोवेगी ॥ और यत्किंचितभ्रांतिज्ञानकीनिवृत्तिकूं पुरुषार्थरूपताहीन
हीं है ॥ यातैं ताकार्यअविद्याकीनिवृत्तिकूं मोक्षरूपता संभवतीनहीं ॥ और जोऐसाकहो ॥ ताअज्ञान
कीजोआवरणशक्तिहै ताकानाम अविद्याहै ॥ तेआवरणशक्तिरूपअविद्या नानाहैं ॥ यातैं जिसप्रमा
ताकूं तत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहै तिसप्रमाताकूं आपणेसंसारकाहेतुभूत ताअविद्याकीनिवृत्तिही मुक्ति
है और जिसप्रमाताकूं सोतत्त्वज्ञान नहींउत्पन्नभयाहै ॥ तिसप्रमाताकूं ताअविद्याकेविद्यमानहुए
बंधहोवैहै इसप्रकारतैं ताएकजीवपक्षविषेभी सोबंधमोक्षकीव्यवस्था संभवैहै ॥ सोयहतुम्हाराकहणा
भी संभवतानहीं ॥ काहेतैं ताअविद्याकूं नानामानिकै जोबंधकाहेतु मानोगे तौ ताअविद्याकेआश्रय
भूतजीवोंकाभी भेदहीमानणाहोवैगा ॥ ताकरिकै तुम्हारेमतविषेभी नानाजीववादकीही प्राप्तिहोवै
गी सोतुम्हारेकूंइष्टनहींहै ॥ किंवा मूलाविद्याकीनिवृत्तिकानाम मोक्षहै ॥ यहदूसरापक्ष जोअंगीका

रकरौ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतें तत्त्वज्ञानकरिकै ताएकमूलाविद्याकेनिवृत्तहुए सर्वकीमुक्तिहो णीचाहिये ॥ और जोऐसाकहो एकहीजीवहै इसपक्षविषे सर्वकीमुक्तिहोणीचाहिये यहकहणाही विरुद्धहै सोयहभीकहणासंभवतानहीं ॥ काहेतें तुम्हारेमतविषे पूर्वउत्पन्नहुएशुकवामदेवआदिकोंकीमु क्ति अंगीकारहै अथवानहीं ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरौ तौ तिनशुकवामदेवआदिकोंकेतत्त्व ज्ञानकरिकै ताएकमूलाविद्याकेनिवृत्त हुए अस्मदादिकोंकूं अभीसंसारकीप्रतीतनहींहोणीचाहिये ॥ और जोद्वितीयपक्ष अंगीकारकरौ तौ तिनशुकवामदेवआदिकोंकीमुक्तिकूंप्रतिपादनकरणेहाराशास्त्र अप्रमाणहोवैगा ॥ और तिनशुकवामदेवआदिकमहान्पुरुषोंकीभी जभीमुक्तिनहींभई तभी अस्मदा दिकोंकूं तामुक्तिकीप्राप्तिकीआशाहोवैगी ॥ किंवा 'यावदधिकारमवस्थितिराधिकारिकाणाम्' इससूत्रकेव्याख्यानविषे भगवान्भाष्यकारनैं यहकह्याहै ॥ उपासनाकरिकै इंद्रादिकपदकूंप्रातभये जेअ धिकारीपुरुषहैं तिनोंकूं कोईवरशापादिकनिमित्तकेवशतें जन्मांतरकीप्राप्तिकेहुएभी तत्त्वज्ञानकाप्रति बंधहोतानहीं ॥ यातें तिनअधिकारीपुरुषोंकूं ताइंद्रादिरूपअधिकारके अंतविषे मोक्ष अवश्यकरिकै हो वैहै ॥ यहसर्वकथन ताएकजीवपक्षविषे मिथ्याहीहोवैगा किंवा साक्षात्कारकर्‌याहै प्रत्यक्‌अभिन्न ब्रह्म जिसनैं ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष आपणेशिष्योंकेतांई ताब्रह्मकाउपदेशकरे है ॥ यहवार्ता श्रुतिस्मृतिवि षे प्रसिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'तद्विज्ञानार्थंसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठम्' अर्थयह ॥ ब्र ह्मकेसाक्षात्कारवासतै सोअधिकारीपुरुष हस्तविषेकिंचित्भेटकूंलैके श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावै इति ॥ तहांस्मृति ॥ 'उपदेक्ष्यंतितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः' ॥ अर्थयह—तत्ववेत्ताज्ञानीपुरुष तुम्हारेतांई

ईं ज्ञानकाउपदेशकरैंगे इति ॥ तहां एकजीवपक्षविषे साक्षात्कारवालेगुरुकाहीअभावहै यातैं गुरुशि
ष्यकीव्यवस्थाही संभवतीनहीं ॥ ताव्यवस्थाकेअभावहुए कोईकूं भी मोक्षकीप्राप्तिनहींहोवैगी ॥ किंवा
ताएकजीवपक्षविषे वेदकेकर्मकांडका तथाज्ञानकांडका भिन्नभिन्नअधिकारी संभवतानहीं ॥ यातैं ता
अधिकारीकेअभावतैं ताकर्मज्ञानकांडकूंभी अप्रमाणताही प्राप्तहोवैगी ॥ यातैं अज्ञानभी एकही है त
थाताअज्ञानउपहितजीवभी एकही है यहएकजीवपक्ष समीचीननहीं है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ 'अजा
मेकांलोहितशुक्लकृष्णाम्' ॥ इत्यादिश्रुतियोंविषे तथा 'अज्ञानेनावृतंज्ञानं, ममामायादुरत्यया' इत्या
दिकस्मृतियोंविषे ताअज्ञानका एकपणाही निश्चयहोवैहै ॥ यातैं सोअज्ञान एकहीमान्याचाहिये ॥
ताअज्ञानकाएकत्वसिद्धहुए ताअज्ञानउपहितजीवभी एकहीमान्याचाहिये ॥ ताएकजीवपक्षविषे स्वप्न
केदृष्टांततैं बंधमोक्षादिकसर्वव्यवस्था संभवैहै॥सोदिखावैहै॥जैसे स्वप्नअवस्थाविषे इसस्वप्नद्रष्टापुरुषनैं
आपणीभ्रांतिकरिकै कल्पनाकरेजेअनेकप्रमाताहैं ॥ तिनोंविषे किसीप्रमाताकेतौ बंधकूंदेखैहै और
किसीप्रमाताकेमुक्तिकूंदेखैहै ॥ ताबंधमोक्षकेदर्शनकरिकै तास्वप्नद्रष्टापुरुषकूं सोबंधमोक्ष होतानहीं ॥
तैसेजगत् अवस्थाविषेभी ताएकजीवनैं कल्पनाकरेजेअनेकप्रमाताहैं ॥ तिनोंविषे कोईबद्धहोवैहै ॥
कोईमुक्तहोवैहै ॥ तिनोंकेबंधमोक्षकेदर्शनतैं ॥ ताएकजीवकूं सोबंधमोक्ष होतानहीं ॥ यातैं ताएकजीवप
क्षविषे सोबंधमोक्षव्यवस्थाभीसंभवैहै ॥इसप्रकार स्वप्नकेदृष्टांतकरिकै गुरुशिष्यादिकसर्वव्यवस्थाजानि
लेणी ॥ यातैं इसएकजीवपक्षविषे तेपूर्वउक्तदोषप्राप्तहोवैंनहीं ॥ और ताएकजीवविषे अंतःकरणविशि
ष्टअनेकप्रमाता कल्पितहैं ॥ तिनप्रमाताओंविषे कोई प्रमाता सुखीहै कोईप्रमातादुःखीहै ॥ याप्रकारतैं

सुखदुःखकीव्यवस्थाभी संभवैहै इति ॥ तहां प्रतिबिंबत्वधर्मविशिष्टचैतन्यकानाम जीवहै ॥ और बिंब
त्वधर्मविशिष्टचैतन्यकानामईश्वरहै॥इसउक्तपक्षविषे अंतःकरणादिरूपउपाधिकृतदोषताप्रतिबिंबरूपजी
वविषेही वर्त्तैहैं॥ ताबिंबभूतईश्वरविषेवर्त्ततेनहीं ॥ जिसकारणतैं सोउपाधि प्रतिबिंबकेपक्षपातीहीहोवे
हैं ॥ बिंबकेपक्षपातीहोवैनहीं ॥ जैसे जलादिकउपाधिकेचलनादिकधर्मता प्रतिबिंबविषेहीप्रतीतहोवे
है ॥ बिंबविषेप्रतीतहोतेनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व अज्ञानादिकोंविषेचैतन्यकेप्रतिबिंबकूं जीव
कह्या ॥ सोसंभवतानहीं॥काहेतैं रूपवान्वस्तुकाही प्रतिबिंबहोवैहै ॥ रूपरहितवस्तुका प्रतिबिंबहोता
नहीं ॥ जैसे रूपवान्सूर्यचंद्रादिकोंका जलादिकोंविषेप्रतिबिंबहोवैहै ॥ और ब्रह्मतौ रूपादिकगुणोंतैंर
हितहै यातैं ताब्रह्मका अज्ञानविषेप्रतिबिंबही संभवतानहीं ॥ और जोयहकहो ॥ जैसे रूपरहितआ
काशका जलविषेप्रतिबिंबहोवैहै॥तैसे रूपरहितब्रह्मका भी ताअज्ञानविषेप्रतिबिंब संभवैहै ॥ सोयहकह
णाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं रूपतैंरहितहोणेतैं ताआकाशका जलादिकोंविषेप्रतिबिंबसंभवतानहीं ॥
किंतु ताआकाशकेआश्रित जेअभ्र प्रभा नक्षत्र आदिकरूपवान् पदार्थ हैं तिनोंकाही जलादिकोंवि
षेप्रतिबिंबपड़ैहै॥और जलादिकोंविषे आकाशकाप्रतिबिंबहै यहजोलोकोंकूं अनुभवहोवैहै सोभ्ररूपही
है यातैं बिंबप्रतिबिंबभावकरिकै जोब्रह्मका जीवईश्वरविभाग पूर्वकह्याहै सोसंभवतानहीं॥ ॥ समा
धान ॥ ॥ रूपवान्वस्तुकाही प्रतिबिंबहोवैहै याप्रकारकानियम सर्वत्रसंभवतानहीं ॥ किंतु कोईक
स्थलविषे रूपरहितवस्तुकाभी प्रतिबिंब देखणेविषेआवैहै ॥ जैसे रूपादिकगुण रूपतैंरहितहोवैहै । तौ
भी जपाकुसुमादिकोंकेलोहितादिकरूपोंका स्फटिकादिकोंविषेप्रतिबिंब प्रत्यक्षदेखणेविषेआवैहै ॥ और

९

जोकहो रूपरहितद्रव्यका प्रतिबिंबनहींहोवैहै यहनियम हममानतेहैं ॥ तेरूपादिकगुण द्रव्यरूपनहींहैं ॥
यातैं तिनरूपादिकोंकेप्रतिबिंबहुएभी ताउक्तनियमकाभंग होवैनहीं॥ सोयहकहणाभीसंभवतानहीं ॥
जिसकारणतैं रूपरहितआकाशद्रव्यकाभी जलादिकोंविषेप्रतिबिंब देखणेविषेआवैहै ॥ तहां जैसे बाह्य
नीलतावाला तथाविशालतावाला आकाशप्रतीतहोवैहै॥तैसे कूपतडागआदिकोंकेस्वल्पजलविषेभी सो
नीलताविशालतावालाआकाश प्रतीतहोवैहै ॥ तहां तास्वल्पजलविषे वास्तवतैंतौ सोविशालतादिवा
लाआकाशहैनहीं ॥ यातैं ताजलविषेभासमानसोआकाश ताबाह्यआकाशका प्रतिबिंबरूपहीमानणा
होवैगा और इनजलादिकोंविषे यहआकाशकाहीप्रतिबिंबहै याप्रकारकाअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥
ताअनुभवका कोईबाधकहैनहीं ॥ यातैं ताअनुभवकूं भ्रमरूपतासंभवतीनहीं ॥ विरोधीज्ञानरूपबाधक
केविद्यमानहुएही अनुभवकूं भ्रमरूपताहोवैहै॥जैसे 'नेदंरजतम्' इसविरोधीज्ञानरूपबाधककेहुएही शुक्ति
विषे 'इदंरजतम्' इसअनुभवकूं भ्रमरूपताहोवैहै॥तैसे यहआकाशकाप्रतिबिंबनहींहै याप्रकारका विरोधी
ज्ञानरूपबाधक तहांहैनहीं ॥ यातैं सोउक्तअनुभव भ्रमरूपनहींहै ॥ इसप्रकार रूपरहितआकाशद्रव्यके
प्रतिबिंबकेसिद्धहुए ताब्रह्मका बिंबबिंबभावकरिकै सोजीवईश्वरविभाग संभवैहै इति ॥ और रूपर
हितद्रव्यका प्रतिबिंबनहींहोवैहै इसअर्थविषे जोतुम्हारा आग्रहहोवै तौ हमसिद्धांती ब्रह्मकूं द्रव्यमान
तेनहीं ॥ काहेतैं नैयायिकोंनै गुणकेआश्रयकूं तथासमवायिकारणकूंही द्रव्यमान्याहै ॥ और 'साक्षी
चेताःकेवलोनिर्गुणश्च' यहश्रुति ब्रह्मकूं निर्गुणकहैहै ॥ यातैं ताब्रह्मकूं गुणोंकाआश्रयपणा संभवतान

हीं ॥ और समवायकेअनंगीकारतैं ताब्रह्मकूं समवायिकारणपणाभी संभवैनहीं ॥ यातैं रूपरहितरूपा

दिकगुणोंकीन्यांई ताब्रह्मकाप्रतिबिंबमानणेविषे कोईभीविरोधनहीं है इति ॥ अथवा अज्ञानविषे ब्रह्मके प्रतिबिंबकूंनहींअंगीकारकरिकै भी याप्रकारतैं सोजीवईश्वरकाविभाग बनिसकैहै॥तहां ताआज्ञानरूप अविद्याकरिकैविशिष्ट जोचैतन्य है सोतौ जीवकह्याजावैहै और ताअविद्याकरिकैउपहित जोचैतन्य है सो ईश्वरकह्याजावैहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वआचार्योंनेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'बिंबत्वंप्रतिबिंबत्वंयथापूष णिकल्पितम् । जीवत्वमीश्वरत्वंचतथाब्रह्मणिकल्पितम्' अर्थयह॥ जैसे सूर्यविषे बिंबपणा तथाप्रतिबिंबप णाकल्पितहै ॥ तैसे ब्रह्मविषे जीवपणा तथाईश्वरपणा कल्पितहै इति ॥ और केएकग्रंथकारतौ नाना अज्ञानोंकूंअंगीकारकरिकै याप्रकारतैं ताजीवईश्वरकाविभाग वर्णनकरैं हैं ॥ जैसे अनेकवृक्षोंकाजोसमू हहै सो वनकह्याजावैहै ॥ तहांसोवनतौ समष्टि कह्याजावैहै ॥ और प्रत्येक वृक्ष व्यष्टि कह्याजावैहै ॥ तैसे तिननानाअज्ञानोंकाजोसमूह है सोतौ समष्टि कह्याजावैहै ॥ और प्रत्येकअज्ञान व्यष्टि कह्याजा वै है ॥ तहां तासमष्टिअज्ञानउपहितचैतन्यतौ ईश्वर कह्याजावैहै ॥ और ताव्यष्टिअज्ञानउपहितचैतन्य जीव कह्याजावैहै ॥ तेअज्ञान नानाहैं ॥ यातैं तेजीवभी नानाहैं ॥ तहां इसमतवालेका यहअभिप्रा यहै श्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे शुकवामदेवआदिकोंका मोक्ष कथनकऱ्याहै ॥ और अस्मदादिक जीवोंकूं इदानींकालविषे संसारकीप्रतीतिहोवैहै ॥ और प्रत्येकपुरुषविषे 'अहंअज्ञः न जानामि' याप्र कारका भिन्नभिन्नअज्ञानविषयक अनुभवभीहोवै है ॥ और 'इंद्रोमायाभिःपुरुरूपईयते' इसश्रुतिविषे भी तामायारूपअज्ञानका नानापणाही कथनकऱ्या है ॥ और इसश्रुतिविषेस्थितमायापदकेमुख्यअर्थ कापरित्यागकरिकैमायाकी शक्तियोंविषे वा सत्त्वआदिकगुणोंविषे तामायापदकीलक्षणाकरणेमें कोईभी

प्रमाणनहीं है॥ यातैं तेअज्ञान नानाहीमानणेयोग्यहैं ॥ और 'अजामेकाम्' इत्यादिकउक्तश्रुतिस्मृति योंविषे जोअज्ञानका एकपणा कथककर्‍याहै ॥ सोतौ ताअज्ञानसमूहकेएकत्वकूंलेकेकथनकर्‍या है ॥ यातैं तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंकाभी विरोधहोवैनहीं ॥ इसप्रकार अज्ञानकेनानात्वकरिकै जीवकेनानात्व सिद्धहुए जिसजीवकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै॥ तिसजीवकूंही ताआपणेअज्ञानकीनिवृत्तिरूपमोक्ष होवैहै ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कारतैंरहितपुरुषोंकूं ताअपणेआपणेअज्ञानकेवशतैं संसाररूपबंधहीरहैहै ॥ इसप्रकारतैं बंधमोक्षव्यवस्थाभी इसनानाजीवपक्षविषे भलीप्रकारतैंसंभवैहै ॥ ताएकअज्ञानएकजीवपक्षविषे सोबंधमोक्षकीव्यवस्थासंभवतीनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अज्ञानकेभेदकरिकै जो जीवोंकाभेद अंगीकारकरौगे तौ जीवजीवकेप्रति प्रपंचकाभीभेदहीहोवैगा ॥ जोकदाचित् इसअर्थविषे तुम इष्टापत्तिकरौगे ॥ तौ जोघट तुमनैं अनुभवकर्‍याहै सोईहीघट हमनैंभी अनुभवकर्‍याहै याप्रकारकी घटादिकप्रपंचकेएकताकूंविषयकरणेहारी प्रत्यभिज्ञाका विरोधप्राप्तहोवैगा॥जिसकारणतैं अन्यकेअज्ञानकल्पितप्रपंचका अन्यकूं प्रत्यक्ष संभवतानहीं॥ और बाधककेअभावहुए ताप्रत्यभिज्ञाकूं भ्रमरूपताभीसंभवतीनहीं ॥ और एकहीपरमेश्वर सर्वजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहै इससर्वशास्त्रकेसिद्धांतकाभी विरोधहोवैगा ॥ किंवा इसउक्तदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै जोऐसामानोंगे॥ समष्टिअज्ञानउपाहितचैतन्यरूपईश्वरकरिकै रच्याहुआ यहप्रपंच सर्वजीवोंकेप्रति साधारणहै ॥ तौ अनिर्मोक्ष होवैगा ॥ अर्थात् किसीभीजीवका मोक्षनहींहोवैगा ॥ सोदिखावैं हैं ॥ तहांनिर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिकानाम मोक्षहै ॥ और नानाअज्ञानपक्षविषे एकजीवकतत्त्वज्ञानकरिकै एकअज्ञानकीनिवृत्तहुएभी तिनसर्वअज्ञानोंकीनि

वृत्ति होवैगीनहीं ॥ और तिनअज्ञानोंकेविद्यमानहुए ईश्वरका तथाजगत्काभी बाधहोवैगानहीं ॥ ताअज्ञानईश्वरजगत्केविद्यमानहुए ताब्रह्मविषे निर्गुणपणाही संभवतानहीं ॥ यातें सोनिर्गुणब्रह्मकी प्रातिरूपमोक्ष किसीभीजीवकूंनहींहोवैगा ॥ किंवा सिद्धांतविषे अद्वितीयब्रह्मकेज्ञानतैंही मोक्षमान्या है ॥ सोअद्वितीयब्रह्मकाज्ञान तानानाजीवपक्षविषे संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताज्ञानकालविषेभी तामुक्तपुरुषतैंभिन्न दूसरेजीव तथाईश्वर तथाअज्ञान तथाजगत् विद्यमानही हैं ॥ तिनोंकरिकै सोब्रह्म सद्वितीयही है ॥ याकारणतैंभी किसीजीवकामोक्ष नहींहोवैगा ॥ किंवा श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकीप्रमाण तातैं जो कदाचित् जिसीकिसीप्रकारकरिकै ज्ञानतैंमोक्षकी प्रातिका उपपादनभीकरौगे तौभी सगुणब्रह्मकीप्रातिही मोक्षरूपसिद्धहोवैगी ॥ निर्गुणब्रह्मकीप्रातिकूं मोक्षरूपतासिद्धनहींहोवैगी ॥ सोअत्यंतअनिष्टहै ॥ काहेतैं ' अनंतरोऽबाह्यःकृत्स्नःप्रधानघनएव । अस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम् । यत्रत्वस्यसर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकंपश्येत् ' इत्यादिकश्रुतियोंविषे निर्गुणब्रह्मकूंही मोक्षरूपकह्याहै ॥ तिनसर्वश्रुतियोंका विरोधहोवैगा ॥ यातें नानाअज्ञानोंकूंअंगीकारकरिकै नानाजीवमानणे अयुक्तहैं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अज्ञानकेभेदकरिकै जीवोंकाभेद अवश्यमान्याचाहिये ॥ अन्यथा बंधमोक्षशास्त्रकीअप्रमाणताहीहोवैगी ॥ और इसनानाजीवपक्षविषेपूर्वकथनकऱ्या जो प्रत्येकजीवकेप्रति सोप्रपंचकाभेद सोहमारेकूं अंगीकारहोवैहै ॥ अर्थात् जीवजीवकेप्रति सोप्रपंच भिन्नभिन्नही है ॥ और प्रपंचकेनानापणेविषे जोपूर्व प्रत्यभिज्ञाकाविरोध कह्याथा सोभीसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोप्रत्यभिज्ञा भ्रमरूपही है सोदिखावैहैं ॥ जहां एकहीशुक्तिविषे दशपुरुषोंकूं रजतकाभ्रमहोवैहै ॥ तहां एकएकपुरुषकेअज्ञानकरि

तत्त्वा० कैकल्पित सोरजत भिन्नभिन्नहीहोवैहै ॥ एकरजतहोवनहीं ॥ जोकदाचित् तिनदशपुरुषोंकेभ्रमका परि०
॥३५॥ एकहीरजत विषयहोवै तौ एकपुरुषकूं ताशुद्धिरूपअधिष्ठानकेज्ञानकारिकै तारजतभ्रमकेनिवृत्तहुएता १
अधिष्ठानज्ञानतैंरहित दूसरेपुरुषोंकूं सोरजत नहींप्रतीतिहोणाचाहिये ॥ और तहां दूसरेपुरुषोंकूंतो सो
रजत प्रतीतहोवैहै यातैं सोरजत एकनहीं है ॥ किंतु तिनदशपुरुषोंके प्रत्येकअज्ञानकारिकैंकल्पित
दशरजत उहां उत्पन्नहोवैहैं॥ और एकपुरुषकेअज्ञानकरिकैकल्पितरजतका अन्यपुरुषकूं प्रत्यक्षहोता
नहीं ॥ तथापि तिनदशपुरुषोंकूं किसीप्रसंगपाइकै जोरजत तुमनैं अनुभवकऱ्याथा सोईहीरजत हमनैं
भी अनुभवकऱ्याथा याप्रकारकी भ्रमरूपप्रत्यभिज्ञा जैसे उत्पन्नहोवैहै तैसे प्रसंगविषेभी प्रत्येकजी
वकेअज्ञानकल्पितप्रपंचकेभेदहुएभी तथाअन्यकेअज्ञानकल्पितप्रपंचका अन्यकूंअप्रत्यक्षहुएभी जोघ
टतुमनैं अनुभवकऱ्याहै सोईहीघट हमनैंभी अनुभवकऱ्याहै याप्रकारकी भ्रमरूपप्रत्यभिज्ञा संभवैहै ॥
यातैं जीवजीवप्रति प्रपंचकेभेदमानणेविषे ताप्रत्यभिज्ञाकाविरोधहोवैनहीं ॥ अथवा तिनजीवोंकेनाना
हुएभी समष्टिअज्ञानउपहितचैतन्यरूपईश्वरकारिकैरचित यहप्रपंच तिनसर्वजीवोंकेप्रति एकहीसाधारण
है ॥ यातैं तापूर्वउक्तप्रत्यभिज्ञाकाभी विरोधहोवैनहीं तथा एकहीपरमेश्वर सर्वजगत्केउत्पत्तिस्थिति
लयकाकारणहै इससर्वशास्त्रकेसिद्धांतकाभी विरोधहोवैनहीं॥ तथा जीवजीवप्रति प्रपंचकेभेदमानणेमें
जोकल्पनागौरवरूपदोष प्राप्तहोताथा सोभीअभीप्राप्तहोवैनहीं ॥ और श्रुतिआचार्यकेप्रसादतैं उत्पन्न ॥३५॥
भयाजो 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारका ब्रह्मज्ञानहै ताब्रह्मज्ञानकारिकै इसअधिकारीपुरुषकूं आपणेआप

णेअज्ञानकेनिवृत्तहुए तिसअज्ञानकेकार्यभूतलिंगशरीरादिककीनिवृत्तितैंनिर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमो

क्षभी संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तानानाजीवपक्षविषे तामुक्तपुरुषतैंभिन्न दूसरेजीव तथा ईश्वर तथा जगत् विद्यमानहीहै॥यातैं मैंमुक्तहूं यहअन्यजीवबद्धहैं यहअन्यप्रपंचहै यहअन्यईश्वरहै याप्रकारकीभेददृष्टि तामुक्तपुरुषकूं अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ ताभेददृष्टिकेविद्यमानहुए अद्वितीय ब्रह्मकासाक्षात्कारही नहींहोवैगा ॥ तासाक्षात्कारकेअभावहुए निर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षही संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ 'इदंसर्वंयदयमात्मा वाचारंभणंविकारोनामधेयं मायामात्रमिदंद्वैतमद्वैतंपरमार्थतः' इत्यादिकश्रुतियोंकेविचारकरिकै ताअधिकारीपुरुषनैं अज्ञानादिकसर्वजडप्रपंचका ब्रह्मविषेकल्पितपणानिश्चयकरिकै मिथ्यापणाहीनिश्चयकर्‍याहै॥ और मिथ्यावस्तु द्वैतभावकूं करतानहीं ॥ यातैं ताअधिकारी पुरुषकूं अद्वितीयब्रह्मकासाक्षात्कार संभवैहै ॥ तासाक्षात्कारकरिकै तिसविद्वानपुरुषकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्ष संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसनानाजीवपक्षविषे आत्मज्ञानकरिकै आपणेअज्ञानकीनिवृत्ति हूएभी अन्यजीवोंकेअज्ञानकेविद्यमानहूए ब्रह्मविषे ईश्वरपणेकीनिवृत्ति नहींहोवैगी ॥ यातैं इसपुरुषकूं ज्ञानकरिकै सगुणब्रह्मभावकीहीप्राप्तिहोवैगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ लोकविषेभी अन्यवस्तुकेज्ञानतैं अन्यवस्तुकीप्राप्तिहोतीनहीं॥जैसे शुक्तिकेज्ञानतैं इसपुरुषकूं रजतकी प्राप्तिहोतीनहीं ॥ किंतु ताशुक्तिकीहीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं इसअधिकारीपुरुषकूं निर्गुणब्रह्मकाहीज्ञानभयाहै ॥ सगुण ब्रह्मकाज्ञानभयानहीं ॥ यातैं तानिर्गुणब्रह्मकेज्ञानतैं इसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं तानिर्गुणब्रह्मकीहीप्राप्तिहोवैहै॥ मायामयसगुणब्रह्मकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥जैसे शुक्तिविषे अन्यपुरुषकूं रजतभ्रांतिकालविषेभी दूसराविशेषदर्शीपुरुष ताशुक्तिकेज्ञानतैं ताशुक्तिकूंहीप्राप्तहोवैहै ॥ तारजतकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं ताशु

क्तिविषेसोरजतवास्तवतेहैनहीं ॥ और अन्यपुरुषकेअज्ञान कल्पितरजतकूं अन्यपुरुषकेप्रत्यक्षज्ञानकी विषयताहोतीनहीं ॥ तैसे अन्यअज्ञानीपुरुषोंको आपगेआपणेअज्ञानकेवशतैं ताब्रह्मविषे जीवईश्वरजगतरूपभ्रांतिकेविद्यमानकालविषेभी श्रुतिआचार्यकेप्रसादतैं दूसराविशेषदर्शीपुरुषमैंब्रह्महूं इसप्रकारकेअद्वितीयब्रह्मकेसाक्षात्कारतैं ताआनंदएकरसअद्वितीयनिर्विशेषब्रह्मकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ तासगुणईश्वरकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं सोसगुणईश्वर मायामयहोणेतैं ता।निर्गुणब्रह्मतैंभिन्ननहींहै॥और भ्रांतिकरिकै देख्याहुआपदार्थ वास्तवतैंहोतानहीं ॥ जैसे भ्रांतिकरिकैदेख्याहुआ शुक्तिविषेरजत ताशुक्तिविषे वास्तवतैंहोतानहीं ॥ तैसे ताअद्वितीयनिर्गुणब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैकल्पित सोजीवईश्वरजगतभावभी वास्तवतैं ताब्रह्मविषेहैनहीं ॥ यातैं इसनानाजीवपक्षविषे सर्वजीवोंकेप्रति साधारणप्रपंचके वा असाधारणप्रपंचकेअंगीकारकियेहुएभी सोनिर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्ष बनिसकेहै इति ॥ और कैएकग्रंथकारतौ याप्रकारतैं ताजीवईश्वरकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ पूर्वकथनकर्‍याजो सर्वजगतकाकारणभूतअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानउपहितजोचैतन्यहै अर्थात् ताअज्ञानविषेप्रतिबिंबितजोचैतन्यहै सोतौ ईश्वरकह्याजावैहै ॥ और ताअज्ञानकेकार्यभूतजेअंतःकरणहै ॥ ताअंतःकरणउपहित चैतन्य जीवकह्याजावैहै ॥ अर्थात् ताअंतःकरणविषेप्रतिबिंबितचैतन्य जीवकह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'कार्योपाधिरयंजीवः कारणोपाधिरीश्वरः' अर्थयह ॥ अंतःकरणरूपकार्यउपाधिवालाचैतन्य जीवकह्याजावैहै ॥ और अज्ञानरूपकारणउपाधिवालाचैतन्य ईश्वरकह्याजावैहै इति ॥ किंवा 'स्वमपीतोभवति' इसश्रुतिनें सुषुप्तिविषे जीवका ब्रह्मविषे औपाधिकलय कथनकर्‍याहै॥अर्थात् उपाधिकलयप्रयुक्तलय कथनकर्‍याहै ॥ तहां

ताजीवका जोअंतःकरण उपाधिमानिये ॥ तौ ताअंतःकरणरूपउपाधिकेलयकरिकै ताजीवका औपाधिकलयसंभवैहै ॥ और ताजीवका जोअविद्याउपाधिमानिये ॥ तौ ताअविद्याका सुषुप्तिविषेलयहोतानहीं ॥ यातैं सुषुप्तिविषे जीवकेऔपाधिकलयकूंकथनकरणेहारा सोश्रुतिवचन असंगतहोवैगा ॥ यातैं ताश्रुतिवचनतैंभी अंतःकरणही जीवकाउपाधि सिद्धहोवैहै ॥ इसपक्षविषेभी अंतःकरणरूपउपाधियोंके नानापणेकरिकै तथापरिच्छिन्नपणेकरिकै तेजीवभी नानाहैं तथापरिच्छन्नहैं इति ॥ तहां जीवईश्वरकेस्वरूपनिर्णयविषे पूर्वकथनकऱ्येजेपंचपक्ष तिनोंविषे मायाउपहितचैतन्य जगत्काकारणईश्वर है यहअर्थ तिनसर्वग्रंथकारोंकूंसंमतहै॥अर्थात् अज्ञानकेएकत्वनानात्वकरिकै अथवा अंतःकरणोंकेनानात्वकरिकै जीवकेएकत्वनानात्वविषे ग्रंथकारोंकेविवादहुएभी मायाउपहितचैतन्यईश्वरहै इसअर्थविषे कोईभीग्रंथकारका विवादनहींहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ईश्वरविषेविवादकेअभावहुएभी जीवकेएकत्वनानात्वविषे ग्रंथकारोंकापरस्परविवाद देखणेविषेआवैहै ॥ तिनपक्षोंविषे कौनपक्ष ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ और कौनपक्ष परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सर्वव्यवहारोंकूं मायामयहोणेतैं तेसर्वपक्ष ग्रहणकरणेयोग्यहैं ॥ तथा ते सर्वपक्ष परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जभी तेसर्वपक्ष परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ तभी तिनसर्वपक्षोंका त्यागकरणाही उचितहै ॥ कोईभीपक्ष ग्रहणकरणेयोग्यनहीं ॥ ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अध्यारोप अपवाद इनदोनोंकरिकैही अद्वितीयब्रह्मकाज्ञानहोवै है ॥ ताअध्याआरोपअपवादतैं विना ताब्रह्मकाज्ञान होतानहीं ॥ तहां वास्तवतैं द्वैतप्रपंचतैंरहितब्रह्मविषे जोद्वैतप्रपंचकाआरोपहै ताकानाम अध्यारोपहै ॥ और ताआरोपितप्रपंचका जो 'नेहनानास्तिकिंचन' इत्या

दिकश्रुतिकरिकैंनिषेधहै ताकानाम अपवादहै ॥ ताअध्यारोपअपवादकीसिद्धिवासतै तेसर्वपक्ष ग्रहण करणेयोग्यही हैं ॥ परन्तु ताकेविषेभी इतनीविशेषताहै ॥पूर्वउक्त जीवके एकत्वपक्षविषे वा नानात्वपक्षविषेजोपक्ष जिसमुमुक्षुके मनकूं भावताहोवै ॥ तिसपक्षकूं सोमुमुक्षु अंगीकारकरिकैं प्रत्यक्‌आत्माकाविवेचनकरिकैं अर्थात् अन्नमयादिकपंचकोशोंतैंआत्माकूंभिन्नकरिकै तिसप्रत्यक्‌आत्माकेब्रह्मरूपताकूं साक्षात्कारकरै ॥ अर्थात् 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारकेसाक्षात्कारकूंसंपादनकरै ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कारकूंनसंपादन करिक ताजीवके एकत्वविषे तथा नानात्वविषे केवल विवादमात्रकूंहीनहींकरै ॥ जिसकारणतैंसर्वमतोंविषे दूषण तथा भूषण तुल्यहीहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ इसमुमुक्षुजनकूं सोप्रत्यक्‌आत्माकाबोधजिसप्रकारकरिकैंहोवै ॥ सोईहीप्रकार इसमुमुक्षुजनकूं संपादनकरणे योग्यहै ॥ सोईही शास्त्रकाअर्थहै ॥ यहवार्त्ता श्रीवार्तिकाचार्यनेभी कहीहै ॥तहांश्लोक ॥ 'ययाययाभवेत्पुंसांव्युत्पत्तिःप्रत्यगात्मनि । सासैव प्रक्रियेहस्यात्साध्वीसाचानवस्थिता' अर्थयह ॥ इनअधिकारीपुरुषोंकूं जिसजिसप्रक्रियाकरिकैंप्रत्यक्‌आत्माविषयकबोधहोवैं ॥ सासाप्रक्रियाही इसवेदांतशास्त्रविषेनिर्दोष तथा गुणभूत जानणीइति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व मायाउपहिततत्पदार्थईश्वरकूं जगत्‌केजन्मादिकोंकाकारणपणाकह्या ॥सोकारणपणाभी उपादानतारूपकरिकैं तथाकर्तृत्वरूपकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां ताईश्वरकूंकिसरूपकरिकैंउपादानपणाहै तथा किसरूपकरिकैंकर्त्तापणाहै ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ अब सोदोनोंप्रकारकाकारणपणा यथाक्रमतैंनिरूपणकरैहैं ॥ तहां सोईश्वर ज्ञानशक्तिवालेअज्ञानउपहितस्वरूपकरिकैतौ जगत्‌काकर्त्ताहोवैहै ॥ ईहांयहतात्पर्य है ॥ ताज्ञानशक्तिवालेअज्ञानरूपउपाधितैंविना

शुद्धब्रह्मकूं असंगपणेकरिकै कर्त्तापणासंभवतानहीं ॥ काहेतैं कार्यकाजोउपादानकारणहै ताउपादानकारणविषयक जोअपरोक्षज्ञानहै तथा इच्छारूपचिकीर्षा है तथा प्रयत्नरूपकृतिहै ॥ ताज्ञानचिकीर्षाकृतितीनोंवालाजोहोवैहै ॥ सो कर्त्ताकह्याजावै है यहकर्त्ताकालक्षण पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ सोइसप्रकारकाकर्त्तापणा शुद्धब्रह्मविषे संभवतानहा ॥ जिसकारणतैं 'असंगोह्ययंपुरुषः । असंगोनहिसज्जते' इत्यादिक श्रुतियोंकरिकै ताब्रह्मकाअसंगपणाही जान्याजावै है ॥ ऐसेअसंगब्रह्मविषे तेज्ञानइच्छाकृति संभवतेनहीं ॥ औ ताअज्ञानउपहितईश्वरविषेतौ तेज्ञानइच्छाप्रयत्न संभवै हैं ॥ यातैं ताउक्तईश्वरकूंही सोजगत्काकर्त्तापणा सिद्धहोवैहै ॥ और सोईहीईश्वर विक्षेपादिशक्तिवालेअज्ञानउपहितरूपकरिकै जगत्काउपादानकारणहोवैहै ॥ तहां अज्ञानकी ज्ञानशक्ति विक्षेपशक्ति आवरणशक्ति इन तीनोंकास्वरूप पूर्वनिरूपणकरिआयेहैं ॥ साइइहाभीजानिलेणा ॥ इसप्रकार एकहीब्रह्मकूं जगत्काउपादानपणा तथा कर्त्तापणा संभवैहै ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे ऊर्णनाभिनामाजंतुविशेष तंतुकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तातंतुरूपकार्यकेप्रति सोऊर्णनाभि आपणेशरीरकीअपेक्षाकरिकैतौ उपादानकारणहोवैहै ॥ और आपणेचेतनतारूपकरिकै कर्त्तारूपनिमित्तकारणहोवैहै ॥ तैसे पूर्वउक्तरीतिसैं सोएकहीब्रह्म जगत्काउपादानकारण तथा कर्त्तारूपनिमित्तकारण होवैहै ? ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताएकहीब्रह्मकं जगत्का उपादानपणा तथानिमित्तपणाहै इसअर्थविषे कौनप्रमाणहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ब्रह्मविषे सोअभिन्ननिमित्तोपादानपणा साक्षात्श्रुतिप्रमाणकरिकैहींसिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'यथोर्णनाभिःसृजतेगृह्णाति च। यथापृथिव्यामोषधयः संभवंति यथासतः पुरुषात्केशलोमानि तथाऽक्षरात्संभवतीहविश्वं यथाऽग्नेःक्षु

द्राविस्फुलिंगाव्युच्चरंतिएवमेवास्मादात्मनः सर्वेप्राणाः ॥ यः सर्वज्ञः सविश्वकृत्सहिसर्वस्यकर्त्ता' अर्थयह॥ जैसे ऊर्णनाभिजंतु आपणेतैं तंतुवोंकूंउत्पन्नकरेहै ॥ तथा आपणेविषेही तिनतंतुवोंकूंलयकरेहै ॥ तैसे सोब्रह्मभी आपणेतैंही इसजगत्कूंउत्पन्नकरेहै ॥ तथा आपणेविषेहीलयकरेहै ॥ और जैसे पृथिवीतैं नानाप्रकारकेऔषध उत्पन्नहोवैहैं ॥ और जैसे इसपुरुषतैं केशलोम उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे अक्षरब्रह्मतैंय हविश्व उत्पन्नहोवैहै ॥ और जैसे प्रज्वलितअग्नितैं क्षुद्रविस्फुलिंग उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे इसआत्मातैं स र्वप्राणउत्पन्नहोवैहैं ॥ और जोपरमेश्वर सर्वज्ञहै॥ सोपरमेश्वरही विश्वकूंकरणेहाराहै ॥ और सोपरमे श्वरही सर्वकाकर्त्ताहै इति ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियांताब्रह्मकूं जगत्का अभिन्न निमित्तउपादानका रण कहेहैं ॥ तथा 'अहंसर्वस्यप्रभवोमत्तः सर्वंप्रवर्त्तते' इत्यादिकस्मृतिभी तिसउक्तअर्थकूंकथनकरे है ॥ यातैं ताएकहीब्रह्मकूं जगत्का उपादानपणा तथा कर्त्तापणा संभवैहै ॥ किंवां इसउक्तईश्वरकूं जोसर्वज्ञनहींमानिये ॥ तौ ताईश्वरकूं सर्वजगतकाकर्त्तापणाही नहींसंभवैगा ॥ और तेउक्तश्रुतियां ताईश्वरकूं सर्वजगतकाकर्त्ताकहेहैं॥ यातैं ताईश्वरकूं सर्वज्ञअवश्यमान्याचाहिये॥ सोईश्वरकासर्वज्ञपणा श्रुतिप्रमाणकरिकैभीसिद्धहै ॥ तहांश्रुति॥ 'यःसर्वज्ञःसर्ववित् यस्यज्ञानमयंतपः' अर्थयह ॥ जोईश्वर सर्वज्ञहै अर्थात् सामान्यरूपतैंसर्वजगत्कूंजानणेहाराहै॥ तथा जोईश्वर सर्ववित्है अर्थात् विशेषरूपतैं सर्वजगत्कूंजानणेहाराहै ॥ और जिसईश्वरका सर्वजगत्विषयकज्ञानमयहीतपहै इति ॥ ऐसेसर्वज्ञईश्वर कूं सर्वजगत्काकर्त्तापणा संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पुराणादिकोंविषेतौ ब्रह्मा विष्णु महेश इनतीं नोंतैंही जगत्की उत्पत्ति स्थिति लय कथनकऱ्याहै ॥ और तुमनें इहां मायाउपहितपरमेश्वरतैंहीं ज

गत्की उत्पत्ति स्थिति लय कथनकऱ्याहै ॥ यातैं तिनपुराणादिकोंकेवचनोंकाविरोधप्राप्तहोवैगा ॥
॥ समाधान ॥ ॥ यहउक्त मायाउपहितपरमेश्वरही ब्रह्मा विष्णु महेश इनतीनरूपोंकूंप्राप्तहोवै
है ॥ सोप्रकारदिखावैहैं ॥ पूर्वउक्तमायाविषेरह्याहुआ जो निरतिशयसत्त्वगुणहै सोसत्त्वगुण तापरमे
श्वरकीइच्छाकरिकै लोकोंकेअनुग्रहवासतै ब्रह्मा विष्णु महेश इनतीनमूर्तिआकारकरिकै परिणामकूं प्रा
प्तहोवैहै ॥ तहां दंडकमंडलुकूंधारणकरणेहारीचतुर्मुखमूर्त्तिकरिकैउपहितहुआ सोपरमेश्वर जगत्कास्र
ष्टा ब्रह्माहोवैहै ॥ और शंख शक्र गदा पद्म यह चारोंहैंहस्तविषेजिसके ऐसीचतुर्भुजमूर्तिकरिकैउपहि
तहुआ सोपरमेश्वर जगत्केपालनकरणेहारा विष्णुहोवैहै ॥ और तीनहैंनेत्रजिसके तथा त्रिशूलहै हस्त
विषेजिसके ऐसीमूर्त्तिकरिकैउपहितहुआ सोपरमेश्वर जगत्कासंहारकर्त्ता महेश्वरहोवैहै ॥ इसप्रकार
सोएकपरमेश्वरही ब्रह्माविष्णुमहेशरूपहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'सब्रह्मासशिवःसेंद्रःसोऽक्षरःपरमः स्वराट्स
एवविष्णुः' अर्थयह ॥ सोमायाउपहितपरमेश्वरही ब्रह्मारूपहै तथा शिवरूपहै तथा इंद्ररूपहै तथा विष्णु
रूपहै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ पूर्वविद्वान्आचार्योंनेंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'एकैवमूर्त्ति
र्बिभिदेत्रिधासौ सामान्यमेषांप्रथमाऽवरत्वं । हरेर्हरस्तस्यहरिःकदाचिद्वेधातयोस्तावपिधातुराद्यौ' अर्थ
यह ॥ सोएकहीपरमेश्वरमूर्त्ति ब्रह्मा विष्णु महेश इनतीनप्रकारकेभेदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और इनतीनोंका
प्रथमपणा तथा पश्चात्पणाभी समानहीहोवैहै ॥ तहांकोईकालविषेतौ विष्णुका महेश आदिहोवैहै ॥
और कोईकालविषे तामहेशका विष्णु आदिहोवैहै ॥ और कोईकालविषे ताविष्णुमहेशदोनोंका ब्रह्मा
आदिहोवैहै ॥ और कोईकालविषे तेदोनों ब्रह्मका आदिहोवैहै इति ॥ तहां ब्रह्मा विष्णु शिव यह

तीनोंदेव अधिकारीजनोंके आपणीआपणीभक्तिकेअनुसार उपासनाकरणेयोग्यहै ॥ और कैएकग्रंथकारतौ ऐसेकहेहैं ॥ जगत्कास्रष्टा हिरण्यगर्भरूपब्रह्मा ईश्वरनहींहै ॥ किंतु जीवविशेषहै ॥ तथा अंतर्यामीपरमेश्वरकरिकैआविष्टहै ॥ तथा समष्टिलिंगशरीरकाअभिमानीहै ॥ तथा सत्यलोकविषेनिवासकरणेहाराहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भकीजीवरूपता 'सवैशरीरीप्रथमः' इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरिकैहीसिद्धहै ॥ और शिव विष्णु यह दोमूर्त्तितौ तामायाकेशुद्धसत्वगुणकापरिणामहोणेतैं ईश्वररूपहै ॥ यहवार्त्ता महाभारतविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक 'रुद्रोनारायणश्चैवेत्येकंसत्वंद्विधाकृतम् । लोकेचरतिकौंतेयव्यक्तिस्थंसर्वकर्मसु' अर्थयह ॥ हेकौंतेय तापरमेश्वरनै आपणीमायाका एकहीशुद्धसत्त्वगुण रुद्र नारायण इसरूपकरिकै दोप्रकारकाकऱ्याहै इति ॥ तिनदोनोंविषेभी विष्णुकीभक्तितौ मोक्षकेप्रति अंतरंगसाधनहै ॥ और शिवादिकोंकीभक्तितौ किंचित्व्यवधानकरिकै मोक्षकासाधनहै ॥ जिसकारणतैं सत्त्वगुणकाप्रवर्त्तकपणा विष्णुकूंहीहै ॥ यहवार्त्ता पुराणविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'आरोग्यंभास्करादिच्छेच्छ्रियमिच्छेद्धुताशनात्।ज्ञानंमहेश्वरादिच्छेन्मोक्षमिच्छेज्जनार्दनात्' अर्थयह ॥ यहपुरुष सूर्यदेवतातैंतौ आरोगताकूं माँगे॥अर्थात् आरोगताकीप्राप्ति वासतैं सूर्यदेवताकीउपासनाकरे॥इसप्रकारकाअर्थ आगेभीजानिलेणा ॥ और अग्निदेवतातैं संपदाकूंमाँगे ॥ और महेश्वरतैं ज्ञानकूंमाँगे ॥ और विष्णुतैं मोक्षकूंमाँगे.इति इहां कैएकशैवमतवालेतौ यहकहेहैं ॥ चंद्रमाहैशिरकाभूषण जिसका तथा नीलकंठ त्रिनयन उमासहित ऐसीजो शुद्धसत्त्वमूर्त्तिहै ॥ तामूर्त्तिकरिकैउपहितहुआ सोमायाउपहितपरमेश्वर परमशिवहोवैहै ॥ सोपरमशिवही मुमुक्षुजनोंके उपासनाकरणेयोग्यहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'उमासहायंपरमेश्वरं

प्रभुं त्रिलोचनंनीलकंठंप्रशांतम् । ध्यात्वामुनिर्गच्छातिभूतयोनिं समस्तसाक्षितमसःपरस्तात्' अर्थयह ॥ जोपरमशिव उमासहितहै तथापरमईश्वरहै तथासमर्थहै तथातीनलोचनवालाहै तथानीलकंठहै तथाअति शांतस्वभावहै ॥ ऐसेपरमशिवकाध्यानकरिकै ॥ यहमुमुक्षुजन परब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जोपरब्रह्म मायाकेसंबंधतैं सर्वभूतोंकाकारणहै ॥ तथा सर्वकासाक्षीहै ॥ और वास्तवतैं ताअज्ञानरूपतमतैंपरहै इति ॥ तिसपरमशिवकीही ब्रह्मा विष्णु महेश यह तिनों विभूतिहैं ॥ तहां 'सब्रह्मासशिवःसेंद्रःसोऽक्षरःपरमःस्वराट्' इत्यादिकश्रुति ब्रह्मा विष्णु महेश इनतिनोंकूं तापरमशिवकीहीविभूतिरूपता कथनकरेहै ॥ तथा पुराणविषेभी यहवार्त्ताकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'यस्याज्ञयाजगत्स्रष्टाविरंचिः पालकोहरिः । संहर्त्ताकालरुद्राख्योनमस्तस्मैपिनाकिने' अर्थयह ॥ जिसपरमशिवकीआज्ञाकरिकै ब्रह्मा जगत्कूं उत्पन्नकरेहै और विष्णु पालनकरेहै ॥ और कालरुद्र संहारकरेहै ॥ तिसपरमशिवकेतांई हमारानमस्कारहै इति ॥ और केएकवैष्णवमतवालेतौ यहकहेहैं ॥ शंख चक्र गदा पद्म यहचारिहैंचारोंहस्तोंविषेजिसके तथालक्ष्मीसहितविराजमान ऐसी जा निरतिशयसत्त्वमूर्त्तिहै ॥ तामूर्त्तिकरिकैउपहितहुआ सोमायाउपहितपरमात्माही परमवासुदेव होवैहै ॥ सोपरमवासुदेवही मुमुक्षुजनोंनैं उपासनाकरणे योग्यहै ॥ और ब्रह्मा विष्णु शिव यहतीनों तापरमवासुदेवकीहीविभूतिहै ॥ और 'सब्रह्मासशिवःसेंद्रःसोऽक्षरःपरमः स्वराट्' इत्यादिकश्रुतिभी तिन ब्रह्मादिकतीनोंकूं तापरमवासुदेवकीहीविभूतिरूपता कथनकरेहै ॥ और 'तमेव विद्वानमृत इहभवतिनान्यः पंथाविद्यतेऽयनाय'इत्यादिकश्रुति तथा 'मोक्षमिच्छेज्जनार्दनात्' इत्यादिकपुराणकेवचन तापरमवासुदेवकेध्यानतैंही मोक्षकी प्राप्तिकथनकरेहैं ॥ यातैं मुमुक्षुजननेंसोपरमवा

सुदेवही ध्यानंकरणेयोग्यहै इति ॥ और हैरण्यगर्भतौयहकहेहै ॥ हिरण्यगर्भही मायाउपहितपरमेश्वर
है ॥ तिसहिरण्यगर्भकीपरमेश्वरताविषे बहुतश्रुतिस्मृतिप्रमाण विद्यमानहैं ॥ यातैं सोहिरण्यगर्भही
मुमुक्षुजनोंनैंउपासनाकरणेयोग्यहै इति तहां पूर्व शैवोंनें तथा वैष्णवोंनें ब्रह्मा विष्णु महेश इनतीनमू
र्त्तियोंतैं भिन्न एक परमाशिव तथापरमवासुदेवकल्पनाकऱ्याहै ॥ परंतु तिसविषे कोईप्रमाण देखनेविषे
आवतानहीं ॥ और तिनोंनें ताअर्थकीसिद्धिविषे जे 'सब्रह्माशिवः सेंद्रः' इत्यादिक श्रुतिवचन प्रमा
णकहेहैं ते श्रुतिवचनतौ तामायाउपहितपरमेश्वरकूंहीकथन करेहैं ॥ यातैं तिनवचनोंकूं तीनमूर्त्तितैंभि
न्न तापरमशिवविषे तथापरमवासुदेवविषे प्रमाणरूपतासंभवतीनहीं ॥ यातैं सोमायाउपहितपरमेश्वरही
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर इनतीनरूपोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याकारणतैं तेतीनोंरूप समानहैं ॥ यहपूर्वउक्तमतही
मुमुक्षुजनोंकूं आश्रयणकरणेयोग्यहै इति ॥ तहां पूर्व मायाउपहित तत्पदार्थरूपब्रह्मका जगत्केउत्प
त्तिस्थितिलयकाकारणत्वरूप तटस्थलक्षण कथनकऱ्याथा॥अब तिसीलक्षणकेस्पष्टकरणेवासतैंतिसमा
याउपहितपरमेश्वरतैं आकाशादिकजगत्केउत्पत्तिक्रमकूं कथनकरे हैं ॥ तहां उत्पन्नहोणेयोग्यप्राणियों
के पुण्यपापकर्मकरिकैसहकृत जोपूर्वउक्तविक्षेपादिशक्तिप्रधानमायाउपहितईश्वरहै ॥ सोईश्वर प्रथम अ
भीयहजगत्उत्पन्नकरणेयोग्यहै याप्रकारका संकल्पकरताभया ॥ तासंकल्पविशिष्टईश्वरतैंप्रथम आका
श उत्पन्नहोताभया ॥ ताआकाशतैं वायु उत्पन्नहोताभया ॥ तावायुतैं अग्नि उत्पन्न होताभया ॥ ता ॥४०॥
अग्नितैं जल उत्पन्नहोताभया ॥ ताजलतैं पृथिवी उत्पन्नहोतीभई ॥ तहांश्रुति 'तस्माद्वाएतस्मादा
त्मनआकाशःसंभूतआकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापःअद्भ्यःपृथिवी' अर्थयह ॥ तिसमायाउपहितब्रह्मतैं

आकाश उत्पन्नहोताभया ॥ ताआकाशतैंवायु तावायुतैंअग्नि ताअग्नितैंजल तिनजलोंतैं पृथिवी उत्प
न्नहोतीभई इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अचेतन तथा कल्पित ऐसेआकाशादिकभूतोंकूं वायु आदिक
भूतोंकाउपादानकाकारणपणा कैसेसंभवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ईहांआकाशादिकोंकूं वायु आदि
कोंकाउपादनपणा विवक्षितनहींहै ॥ किंतु आकाशादिउपहितचैतन्यकूंही वायुआदिकोंका उपादान
पणा विवक्षितहै ॥ अर्थात् आकाशउपहितचैतन्यतैं वायुउत्पन्नहोताभया ॥ तावायुउपहितचैतन्यतैं
अग्निउत्पन्नहोताभया ॥ ताअग्निउपहितचैतन्यतैं जलउत्पन्नहोताभया ॥ ताजलउपहितचैतन्यतैंपृथि
वीउत्पन्नहोतीभई ॥ इसप्रकार तिसउपाधिवालेचैतन्यकूंहीसर्वत्रकारणताहै ॥ जोकदाचित् कल्पि
तअचेतनकूंही कारणतामानिये ॥ तौ चेतनब्रह्मकूं सर्वजगत्काकारणकहणेहारीश्रुतिकाविरोधप्राप्तहो
वैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे मायाकूं कारण ब्रह्मकाउपाधिरूपताकरिकै आकाशादिकप्रपंचकाकारणप
णाहै ॥ तैसेआकाशादिकोंकूंभी ताकारणब्रह्मकाउपाधिरूपताकरिकैही वायुआदिकोंकाकारणपणा
है ॥ स्वतंत्रनहीं इति ॥ इहांवैशेषिकशास्त्रवालेतौ ऐसाकहेहैं ॥ द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४
विशेष ५ समवाय ६ अभाव ७ यहसतहीपदार्थहोवैहैं ॥ तहां गुणादिकपदार्थ द्रव्यकेहीपरतंत्रहोवैहैं ॥
और सर्वभावकार्य समवायिकारण असमवायिकारण निमित्तकारण इनतीनकारणोंकरिकैजन्यहोवै
है ॥ तहां जन्यद्रव्य जन्यगुण कर्म यहतीनों भावकार्य कह्येजावैहैं ॥ तहां समवायिकारणतातौ ए
कद्रव्यपदार्थविषेहीहोवैहै ॥ गुणकर्मादिकोंविषेहोवैनहीं ॥ और असमवायिकारणता गुण कर्म इन दो
पदार्थोंविषेहीहोवैहै ॥ अन्यपदार्थोंविषेहोवैनहीं ॥ और निमित्तकारणतातौ द्रव्यादिकसर्वपदार्थोंविषे

होवैहै ॥ तहां पृथिवी १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ काल ६ दिक् ७ आत्मा ८ मन ९ यह नव द्रव्यकह्येजावे हैं ॥ तहां पृथिवीआदिकचारद्रव्योंकेपरमाणु तथा आकाशादिकपंचद्रव्य यहसर्व नित्यद्रव्य कह्येजावैहैं तथानिरवयव कह्येजावैहैं ॥ और तिनपरमाणुवोंतैंउत्पन्नभये जेद्व्यणुकतैंआदिलेके ब्रह्मांडपर्यंतसव कार्यद्रव्य तेअनित्यद्रव्य कह्येजावैहैं तथा अवयवीकह्येजावैहैं ॥ तहां सृष्टिकेआदिकालविषे परमेश्वरकीइच्छाकरिकै तिनपरमाणुवोंविषे क्रियाउत्पन्नहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर दोदोपरमाणुवोंका संयोगहोवै है ॥ तिनसंयुक्तदोपरमाणुवोंतैं प्रथम द्व्यणुकरूपकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ ताद्व्यणुकरूपकार्यका तेदोपरमाणुतो समवायिकारणहोवै हैं ॥ और तिनदोपरमाणुवोंकासंयोग असमवायिकारण होवैहै ॥ और ईश्वरइच्छादिक निमित्तकारणहोवैहै ॥ इसप्रकार आगेत्र्यणुकादिकार्योंकेभी समवायिकारणआदिक जानिलेणे ॥ इसप्रकार ताद्व्यणुकरूपकार्यकीउत्पत्तितैंअनंतर पुनःक्रियाकरिकैसंयुक्ततीनद्व्यणुकोंतैं त्र्यणुक रूपकाय उत्पन्नहोवैह ॥ तिसतैंअनंतर पुनःक्रियाकरिकैसंयुक्तचारित्र्यणुकोंतैं चतुरणुकरूपकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकारकेक्रमकरिकै यह महान्पृथिवी महान्जल महान्तेज महान्वायु उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातैं तेपरमाणुही सर्वजगत्काउपादानकारणहैं ॥ सोमायाउपहितब्रह्म जगत्काउपादानकारणनहींहै ॥ इसप्रकार वैशेषिकशास्त्रवालेमानेहैं ॥ सोयहवैशेषिकशास्त्रकामत न्यायप्रकाशग्रंथविषे हमनें बहुतविस्तारतैंनिरूपणकर्‍याहै ॥ जिसकूंजानणेकीइच्छाहोवै तिसनें तहांसें जानिलेणा इति ॥ सोयहवैशेषिकोंकामतभी समीचीननहींहै ॥ काहेतैं शक्तिसादृश्यादिकबहुतपदार्थोंके विद्यमानहुएभी सप्तहीपदार्थहैं यहवैशेषिकोंकीप्रतिज्ञा असंगतहै ॥ तहां मणिमंत्रादिकोंकीसमीपता

हुए वह्नितैं दाहरूपकार्य होतानहीं ॥ आर तिनमणिमंत्रादिकोंकेदूरकरणेतैं तावह्नितैं सोदाहहोवै है ॥ ताकरिकै तावह्निविषे दाहकेअनुकूलशक्तिका विनाश तथा उत्पत्ति अवश्यमानणाहोवैगा ॥ अर्थात् तिनमणिमंत्रादिकोंकेविद्यमानहुए सोदाहानुकूलशक्ति नष्टहोइजावैहै ॥ और तिनमणिमंत्रादिकोंकेदूरकरणेतैं सोशक्ति पुनः उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं तावह्निविषे सोदाहानुकूलशक्ति अवश्यमानीचाहिये ॥ इसप्रकार मृत्तिकादिकसर्वकारणोंविषे आपणेआपणे घटादिककार्यकेअनुकूलशक्तिरहैहै ॥ सोशक्ति तिनद्रव्यादिकसप्तपदार्थोंतैं भिन्नहीपदार्थ है ॥ तहांवैशेषिक ताउक्तस्थलविषे मणिमंत्रादिकप्रतिबंधककेअभावकूंही तादाहकाकारण मानेहैं ॥ सोतिनोंकाकहणा श्रुतिसूत्रतैंविरुद्धहोणेतैं असंगतहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'कथमसतः सज्जायेत' अर्थयह ॥ अभावरूपअसत्तैं सत्कार्यकीउत्पत्ति कदाचित्भीहोती नहीं इति ॥ तहांसूत्र ॥ 'नासतोऽदृष्टत्वात्' अर्थयह ॥ अभावरूपअसत्तैं कार्यकीउत्पत्ति युक्तनहीं है ॥ जिसकारणतैं लोकविषे असत्नरशृंगादिकोंतैं किसीभीकार्यकीउत्पत्ति देखणेविषेआवतीनहीं किंतु सत्मृत्तिकादिकोंतैंही घटादिककार्योंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवैहै इति ॥ यातैं प्रतिबंधकाभावकूं कार्यकाकारणमानणा इसश्रुतिसूत्रतैंविरुद्धहोणेतैं असंगतहै॥इसप्रकार 'चंद्रवत्मुखं' इत्यादिकअनुभवतैं मुखादिकोंविषे चंद्रादिकोंकासादृश्य सिद्धहोवैहै ॥ यातैं सोसादृश्यभी ताशक्तिकीन्यांई तिनद्रव्यादिकसप्तपदार्थोंतैंभिन्नहीपदार्थहै ॥ इसशक्तिसादृश्यका विस्तारतैंनिरूपणतो न्यायप्रकाशकेचतुर्थपरिच्छेदविषे कर्याहै ॥ सो तहांसेंजानिलेणा ॥ इसप्रकार शक्तिसादृश्यादिकअधिकपदार्थोंकेविद्यमान हुए सप्तहीपदार्थ हैं यह वैशेषिककाकहणा असंगतहै॥किंवा अंधकाररूपदशमद्रव्यकेविद्यमानहुए नव

हीद्रव्यहैं यहभीवैशेषिकोंकाकहणा असंगतहै ॥ तहां नीलंतमश्चलतिइसप्रत्यक्षप्रतीतितैं ताअंधकाररूपत
मविषे नीलरूप तथाचलनक्रिया सिद्धहोवैहै ॥ और गुणका तथाक्रियाका आश्रय द्रव्यहीहोवैहै ॥
यातैं ताअंधकाररूपतमकूं द्रव्यरूपतासंभवैहै ॥ और वैशेषिक तातमकूं आलोककाअभावरूप माने
हैं ॥ सोतिनोंकाकहणा असंगतहै काहेतैं जोजोअभावहोवैहै ॥ सोसो प्रतियोगीसापेक्षप्रतीतिका
ही विषयहोवैहै ॥ प्रतियोगीनिरपेक्षप्रतीतिकाविषय कोईभीअभावहोतानहीं ॥ जैसे घटाभाव पटाभा
व इत्यादिकअभाव घटपटादिरूपप्रतियोगीसापेक्षप्रतीतिकेही विषयहोवैहैं ॥ और यहअंधकाररूपतम
तौ ताआलोकरूपप्रतियोगीसापेक्षाप्रतीतिकाविषयहोतानहीं ॥ यातैं ताअंधकारकूं आलोकाभावरूप
तामानणेविषे कोईभीप्रमाणनहीं है ॥ किंतु उक्तयुक्तितैं ताअंधकारकूं दशमद्रव्यहीमान्याचाहिये॥तहां
ताअंधकाररूपतमकी द्रव्यरूपता तथाआलोकाभावरूपता न्यायप्रकाशकेद्वितीयपरिच्छेदकेअंतविषे
विस्तारतैंनिरूपणकरीहै ॥ सो तहांसैंजानिलेणी ॥ किंवा वैशेषिकोंनै आत्माकूंभी ज्ञानादिकगुणों
का आश्रयरूपकरिकै तथासमवायिकारणरूपकरकै द्रव्यहींमान्याहै ॥ सोभीतिनोंकाकहणा असंग
तहै ॥ काहेतैं श्रुतिस्मृति विद्वानोंकाअनुभव इनतीनोंकरके आत्माका निर्गुणपणा तथा सत्‌चित्‌आ
नंदरूपताही निश्चयहोवैहै ॥ तहां 'साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च' यहश्रुतितौ ताआत्माकूं निर्गुण क
हैहै ॥ और 'सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म आनन्दोब्रह्म' यहश्रुति ताआत्माकूं सत्‌चित्‌आनंदरूप कहैहै ॥ यातैं
सो आत्मा द्रव्यरूपनहींहै ॥ तहां सोआत्मा अद्रव्यहोणेतैं गुणादिकोंकीन्यांई परतंत्रहोवैगा ॥ यह
जोवैशेषिककहैहैं ॥ सोभी असंगतहै ॥ काहेतैं श्रुतिस्मृतियोंविषे ताआत्माकूंही सर्वकल्पनावोंकाअ

धिष्ठान तथासर्वकाप्रेरक कह्याहै ॥ ऐसेआत्माकूं अद्रव्यरूपताकरिकै परतंत्रकहणा तिनश्रुतिस्मृतिवा
क्योंतैं विरुद्धहै ॥ यातें अद्रव्यरूपहुआभी सोआत्मा सर्वकाअधिष्ठानहोणेतैं तथा सर्वकाप्रेरकहोणेतैं
स्वतंत्रहीहै ॥ याकारणतैंभी नवहीद्रव्यहैं यहतिनोंकीप्रतिज्ञा असंगतहै ॥ किंवा तिनवैशेषिकोंने आ
काशादिकअनेकनित्यपदार्थ मानेहैं ॥ सोतिनोंकीकल्पनाभी श्रुतितैंविरुद्धहोणेतैं असंगतहै ॥ जिस
कारणतैं श्रुति ब्रह्मतैंभिन्न सर्वजगतकूं अनित्यहीकहेहै ॥ तहांश्रुति ॥ ' अतोऽन्यदार्तम् । मायामात्र
मिदंद्वैतमद्वैतंपरमार्थतः ' अर्थयह ॥ इसब्रह्मतैंभिन्नसर्वजगत् आर्त कहिये मिथ्याहै ॥ और यहसर्वद्वै
तप्रपंच मायामात्रहै अर्थात् मिथ्याहै ॥ अद्वैतब्रह्महीं परमार्थसत्यहै इति ॥ किंवा ' आत्मनआकाशः
संभूतः तन्मनोऽकुरुत ' इसश्रुतिविषे आकाशकी तथा मनकी ब्रह्मतैंउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ और 'जा
तस्यहिध्रुवोमृत्युः ' इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नें उत्पत्तिमानपदार्थका नियमतैंनाश कह्याहै ॥ यातैं
उत्पत्तिविनाशवालेहोणेतैं तेआकाशादिक अनित्यहीहोवैंगे ॥ किंवा तिनवैशेषिकोंनें परमाणुवोंकूं
जोनिरवयव तथानित्य मान्याहै सोभी असंगतहै ॥ काहेतैं लोकविषे जोजोपदार्थ रूपादिगुणवा
लाहोवैहै तथापरिच्छिन्नहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ सावयव तथाअनित्यहीहोवैहै ॥ जैसे घटपटादिकपदा
र्थ हैं ॥ तैसे तेपरमाणुभी तुमारेमतविषे रूपादिकगुणोंवालेहैं तथापरिच्छिन्नहैं ॥ यातैं तेपरमाणुभी घटा
दिकोंकीन्यांई सावयव तथाअनित्यहीहोवैंगे ॥ किंवा परमाणुओंकूं सावयवमानणेविषे जोवैशेषिकोंनें
अनवस्थादोषकीप्राप्तिकहीहै ॥ सोभी असंगतहै ॥ जिसकारणतैं ईश्वररूपपरमकारणविषेही ताअवय
वधाराकीविश्रांति संभवैहै ॥ किंवा सूक्ष्मभूतोंतैंभिन्नपरमाणुवोंकेसद्भावविषे कोईभीप्रमाण नहींहै ॥

किंतु सूक्ष्मभूतोंकाही परमाणुनामहै ॥ तिनसूक्ष्मभूतोंकीउत्पत्ति पूर्वउक्तरीतिसे ईश्वरतैंहीहोवैहै ॥ याकारणतैंभी तेपरमाणु सावयव तथाअनित्यही सिद्धहोवैहैं ॥ किंवा तिनवैशेषिकोंनें संयुक्तदोपरमाणुवोंतैं द्व्यणुककीउत्पत्तिकहीहै ॥ सोभी संभवतीनहीं ॥ काहेतें तिनवैशेषिकोंनें परमाणुओंकूंतो निरवयव मान्याहै ॥ और संयोगकूं अव्याप्यवृत्ति मान्याहै ॥ तहां जिसद्रव्यविषे सोसंयोगरहैहै ॥ तिसीद्रव्यविषे तासंयोगकाअभावभीरहैहै ॥ जैसे एकहीवृक्षके शाखादेशविषे पक्षीकासंयोगहोवैहै और मूलदेशविषे तासंयोगकाअभावहोवैहै यहही तासंयोगविषे अव्याप्यवृत्तिपणाहै ॥ सोसंयोग सावयवद्रव्योंकाहीसंभवैहै ॥ निरवयवद्रव्योंका सोसंयोग संभवतानहीं ॥ और वैशेषिकोंनें तेपरमाणु निरवयवही मानेहैं ॥ यातैं तिनपरमाणुवोंकेसंयोगकेअसंभवहुए तिनपरमाणुवोंतैं द्व्यणुककीउत्पत्ति कहणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा 'येऽनाश्रुतंश्रुतंभवति' इत्यादिकश्रुतिनैं एककारणब्रह्मकेज्ञानकरिके सर्वकेज्ञानकीप्रतिज्ञाकरीहै साप्रतिज्ञा ब्रह्मतेभिन्न परमाणुआदिकोंकूं अनादि तथा नित्य माननेविषे बाधितहोवैगी ॥ जोकदाचित् साप्रतिज्ञा बाधितहोवे ॥ तौ तिसप्रतिज्ञातैंअनंतर मृत्तिकादिकदृष्टांतों करिकै कार्यका कारणतैंअव्यतिरेकपणेकूंसिद्धि करिकै ताप्रतिज्ञातअर्थकाजोउपपादनकऱ्याहै सोअनर्थ कहोवैगा ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ ब्रह्मतैंभिन्नसर्वजगत् ताब्रह्मतैंउत्पन्नहोवैहै तथाताब्रह्मविषेहीलयहोवै है इति इहां सांख्यशास्त्रवालेतौ त्रिगुणात्मकप्रधानतेंही महत्तत्त्वादिक्रमकरिकै जगतकीउत्पत्ति मानेहैं ॥ यहसांख्यकामत आगेस्पष्टहोवैगा ॥ सोयहसांख्ययोंकामतभी समीचीननहींहै काहेतें तिनसांख्ययोंनें ताप्रधानकूं जड तथा नित्य तथास्वतंत्र मान्याहै ॥ सोप्रधानही जगतकाकारणहै इस

अर्थविषे कोईभीप्रमाणनहीं है ॥ और 'मायांतुप्रकृतिंविद्यात्। अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णांबह्वीःप्रजाः सृजमानांस्वरूपाः' इत्यादिकश्रुतियांतो सिद्धांतसंमतमायाकूंहीं जगत्काकारण कहेहैं ॥ ताप्रधानकूं कहतीयांनहीं ॥ यात ताप्रधानकूं जगत्काउपादानकारणपणा संभवतानहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सो प्रधान कपिलस्मृतिकरिकैसिद्धहै ॥ यातैं ताप्रधान कूं अप्रामाणिककहणा अयुक्तहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ श्रुतिकेविरोधहुए ताकपिलस्मृतिकूं प्रमाणरूपतानहीं है ॥ श्रुतिमूलकस्मृतिही प्रमाणरूप होवैहै ॥ श्रुतिविरुद्धस्मृति प्रमाणरूपहोवेनहीं ॥ यातैं मायाउपहितब्रह्मतैंही आकाशादिककरिकै प्रपंचकीउत्पत्तिहोवैहै यहपूर्वउक्तसिद्धांतमतही सर्वोंकूं अंगीकारकऱ्याचाहिये इति ॥ अब पूर्वउक्तआकाशादिकपंचभूतोंतैं सूक्ष्मशरीरोंकी तथास्थूलभूतोंकी उत्पत्तिकाप्रकार वर्णनकरेहैं ॥ तहां पूर्वईश्वरकाउपाधिरूपकरिकैकथनकरीजामायाहै ॥सामाया सत्त्व, रज, तम, यहतीनगुणरूप॥और कारणके गुणही कार्यकेगुणोंकाआरंभकहोवैहैं ॥ यातैं तामायाकेकार्यरूप तेआकाशादिकपंचभूतभी सत्त्व,रज, तम यहतीनगुणरूपहीहोवैहै ॥ और तेआकाशादिकपंचभूत प्रत्यक्षव्यवहारकेअयोग्यहोणेतैं सूक्ष्मकह्येजावैहैं॥औरपंचीकरणकेअभावतैं अपंचीकृत कह्येजावैहैं ॥ ऐसे अपंचीकृतसूक्ष्मभूतोंतैं सप्तदशलिंगरूप सूक्ष्मशरीर उत्पन्नहोताभया॥तेसप्तदशलिंग यहहैं॥ पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण मन बुद्धि ॥ तहां श्रोत्र १ त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ घ्राण ५ यहपंचइंद्रिय ज्ञानकेसाधनहोणेतैं ज्ञानइंद्रिय कह्येजावैहैं ॥ और वाक् १ पाणि २ पाद ३ पायु ४ उपस्थ ५ यहपंचइंद्रिय क्रियाकेसाधनहोणेतैं कर्मइंद्रिय कह्येजावैहैं ॥ तहां शब्दज्ञानकासाधनइंद्रिय श्रोत्रकह्याजावैहै ॥ और स्पर्शज्ञानकासाध

नइंद्रिय त्वक्कह्याजावैहै ॥ और रूपज्ञानकासाधनइंद्रिय चक्षुकह्याजावैहै ॥ और रसज्ञानकासाधनइं द्रिय रसनकह्याजावैहै॥और गंधज्ञानका साधनइंद्रिय घ्राण कह्याजावैहै ॥ और वचनक्रियाकासाधन इंद्रिय वाक्कह्याजावैहै ॥ और ग्रहणक्रियाका साधनइंद्रिय पाणि कह्याजावैहै ॥ और गमनक्रियाका साधनइंद्रिय पाद कह्याजावैहै ॥ और विसर्गक्रियाकासाधनइंद्रिय पायु कह्याजावैहै॥और सुखक्रिया कासाधनइंद्रिय उपस्थकह्याजावैहै ॥ यद्यपि मन बुद्धि चित्त अहंकार इसभेदकरिकै अंतःकरण चारि प्रकारकाहोवैहै ॥ तथापि ईहांमनविषे चित्तका तथा बुद्धिविषे अहंकारका अंतर्भावमानिकै मन बुद्धिइ नदोनोंकाहीग्रहणकर्‍याहै ॥ अब तिनआकाशादिकपंचभूतोंतैं तिनसप्तदशलिंगोंकेउत्पत्तिकाक्रमकहे हैं॥तहां 'सत्त्वात्संजायतेज्ञानम्' इसगीतावचनविषे सत्त्वगुणतैं ज्ञानकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ और श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंविषे पूर्वउक्तरीतिसे ज्ञानकीसाधनता स्पष्टही है ॥ यातैं तिनआकाशादिकपं चभूतोंकेअमिलितसात्त्विकअंशतैं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ तहां आकाशकेसात्त्विकअं शतैं श्रोत्रइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ और वायुकेसात्त्विकअंशतैं त्वक्इंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ और तेजकेसा त्त्विकअंशतैं चक्षुइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ और जलकेसात्त्विकअंशते रसनइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ और पृथिवीकेसात्त्विक अंशते घ्राणइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तेश्रोत्रादिकपंचइंद्रिय उक्तक्रमतैं आकाशादिकपंचभूतोंतैंउत्पन्नहुएहैं यहवार्त्ता कैसेजानीजावै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध इनपांचगुणोंकेमध्यविषे जिसाजिसगुणकूं जोजोइंद्रिय ग्रहणकरेहै सोसोइंद्रिय तिसतिसगुण वालाहीहोवैहै यहनियमहै ॥ जैसे श्रोत्रइंद्रिय शब्दगुणकूं ग्रहणकरेहै॥यातैं सोश्रोत्रइंद्रिय शब्दगुणवा

लाहीहै ॥ तैसे त्वकादिकइंद्रियभी तिसतिसस्पर्शादिकगुणकूं ग्रहणकरैहैं याते तेत्वकादिकइंद्रियभी
तिसतिसस्पर्शादिकगुणवालेहीहोवैंगे ॥ और तिसतिसशब्दादिकगुणवालेद्रव्यकूं आकाशादिरूपता
सिद्धहीहै ॥ इसप्रकारकीयुक्तिकरिकै तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं यथाक्रमतैं तिनआकाशादिकभूतोंका
कार्यपणाही सिद्धहोवैहै ॥ जोकदाचित् तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आकाशादिकभूतोंकाकार्यपणा न
हींमानिये ॥ तौ तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंविषे शब्दादिकगुणोंकाग्राहकपणाही नहींहोवैगा ॥ किंवा के
वल इसउक्तयुक्तिकरिकैही श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषे आकाशादिकभूतोंकाकार्यपणा सिद्धनहींहै ॥ किंतु
श्रुतिप्रमाणकरिकैभी सिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'श्रोत्रमाकाशे वायौत्वक् अग्नौचक्षुरप्सुजिह्वा पृथिव्यां
घ्राणं' इसश्रुतिविषे आकाशादिकभूतोंकेसात्त्विकअंशतैं यथाक्रमतैं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकी उत्प
त्ति कथनकरीहै ॥ यातैं आकाशादिकभूतोंकेसात्त्विकअंशतैं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकीउत्पत्तिमान
णी श्रुतियुक्तिकरिकैसिद्धहै इति ॥ और तिनआकाशादिकपंचभूतोंके जेमिलितसात्त्विकअंशहैं तिनों
तैं अंतःकरण उत्पन्नहोवैहै ॥ तहां सोअंतःकरण तिनश्रोत्रादिकपंचइंद्रियद्वारा तिनशब्दादिकपांचोंगु
णोंकूं ग्रहणकरैहै॥यातैं ताअंतःकरणकूं तिनआकाशादिकपंचभूतोंकेमिलितसात्त्विकअंशोंकाकार्यपणा
अवश्यमान्याचाहिये ॥ जोकदाचित् ताअंतःकरणकूं तिनपंचभूतोंकाकार्यपणा नहींमानिये ॥ तौ
ताअंतःकरणकूं तिनशब्दादिकपंचगुणोंका ग्राहकपणाही नहींसंभवैगा इति ॥ इहां सांख्यशास्त्रवालेतौ
ऐसाकहैहैं ॥ सोअंतःकरण बुद्धि १ अहंकार २ मन ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां मू
लप्रकृतितैं बुद्धि उत्पन्नहोवैहै ॥ जिसबुद्धिकूं महत्तत्त्वभी कहैहैं ॥ तामहत्तत्त्वनामाबुद्धितैं अहंकार उत्प

न्नहोवैहै ॥ सोअहंकार सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकेभेदकरिकै सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकार
काहोवैहै ॥ तहां सात्विकअहंकारतैं तौ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय एकमन
यहएकादशइंद्रिय उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तामसअहंकारतैं शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध५यहपंच
तन्मात्रा उत्पन्नहोवैहैं ॥ और राजस अहंकारतौ तिनदोनोंअहंकारोंका प्रवर्त्तकहोणेतैं केवल सहकारी
मात्रहोवैहै॥और तिनपंचतन्मात्रावोंतैं यथाक्रमतैं आकाश १ वायु २ अग्नि ३ जल ४ पृथिवी५यहपं
चमहाभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता सांख्यतत्त्वकौमुदीविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक 'मूलप्रकृतिरविकृ
तिर्महदाद्याःप्रकृतिविकृतयःसप्त षोडशकस्तुविकारोनप्रकृतिर्नविकृतिःपुरुषः'अर्थयह॥सत्त्व रज तम इन
तीनगुणोंकीजोसाम्यअवस्थाहै ताकानाम प्रधानहै॥सोप्रधान जगत्कामूलकारणहोणेतैं मूलप्रकृति
कह्याजावैहै॥सामूलप्रकृति किसीकीभीविकृतिनहींहै॥इहां सर्वत्र प्रकृतिशब्दकरिकै परिणामीउपादान
कारणका ग्रहणकरणा और विकृतिशब्दकरिकै कार्यका ग्रहणकरणा ॥ और महत्तत्त्व अहंकारपं
चतन्मात्रा यहसप्त प्रकृतिभीहोवैहैं तथाविकृतिभीहोवैहैं ॥ तहां मूलप्रकृतिकीअपेक्षाकरिकैतौ महत्तत्त्व
विकृतिहै ॥ और अहंकारकी अपेक्षाकरिकै प्रकृतिहै ॥ ऐसे अहंकारभी तामहत्तत्त्वकीअपेक्षाकरिकैतौ
विकृतिहै ॥ और इंद्रियतन्मात्रावोंकीअपेक्षाकरिकै प्रकृतिहै ॥ इसप्रकार तेपंचतन्मात्राभी ताअहंकार
कीअपेक्षाकरिकैतौ विकृतिहैं ॥ और पंचमहाभूतोंकीअपेक्षाकरिकै प्रकृतिहैं ॥ और पूर्वउक्त एकादश
इंद्रिय तथापंचमहाभूत यहषोडशतौ विकृतिहीहोवैहैं ॥ किसीकीभीप्रकृतिहोतेनहीं ॥ और असंगहोणे
तैं पुरुषतो प्रकृतिभीनहींहोवैहै तथाविकृतिभीनहींहोवैहै इति ॥ इससांख्यमतका विस्तारतैंनिरूपणतौ

न्यायप्रकाशग्रंथकेद्वितीयपरिच्छेदविषे आत्मनिरूपणविषे हमनै कह्याहै॥सो तहांसैंजानिलेणा इति॥ सोयहसांख्यियोंकामतभी श्रुतिसूत्रतैंविरुद्धहोणेतैं असगंतहै ॥ काहेतैं ब्रह्मसूत्रकारश्रीव्यासभगवान नैं 'ईक्षतेर्नाशब्दं' इत्यादिकसूत्रोंकरिकै ताप्रधानकारणवादका खंडनहीकह्याहै ॥ इससूत्रकायहअ र्थहै ॥ वैदिकशब्दकरिकैअप्रतिपादितहोणेतैं अप्रामाणिक ऐसाजोप्रधानहै ॥ सोप्रधान जगत्काका रणनहींहै ॥ जिसकारणतैं 'तदैक्षतबहुस्यां'इसश्रुतिनैं जगत्केकारणविषे ज्ञानरूपईक्षण कथनकह्या है ॥ सोईक्षण चेतनविषेहीसंभवै है ॥ जडप्रधानविषेसंभवतानहीं॥ यातैं साप्रधानकारणवाद असंगत है ॥ किंवा 'अन्नमयंहिसौम्यमनःआपोमयःप्राणःतेजोमयीवाक्' इसश्रुतितैं तथा 'श्रोत्रमाकाशेवा योत्वक्' इसपूर्वउक्तश्रुतितैं अंतःकरण प्राण इंद्रिय इनतीनोंविषे भूतोंकाकार्यपणाही निश्चयहोवैहै ॥ और सांख्यियोंनें तिनोंकूं भूतोंकाकार्य मान्यानहीं ॥ यातैंभी सोसांख्यियोंकामत श्रुतिप्रमाणतैंविरु द्धहै ॥ ॥शंका॥ ॥ तुमवेदांतियोंकेमतविषेभी ब्रह्म असंगहै ॥ ऐसेअसंगब्रह्मविषे ताईक्षणपूर्व क जगत्काउपादानपणा मानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ ऐसेविरुद्धअर्थकूंश्रुतिभी कैसेप्रतिपादनकरैगी ॥ ॥ ॥समाधान॥ ॥ शुद्धब्रह्मकूं असंगरूपहोणेतैं यद्यपि जगत्काउपादानपणा संभवतानहीं ॥ तथापि मायाउपहितब्रह्मकूं सोउपादानपणा संभवैहै ॥ और श्रुतिनेंभी तामायाउपहितब्रह्मकूंही जग त्काउपादानपणा कथनकह्याहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वहीविस्तारतैं प्रतिपादनकरिआयेहैं इति ॥ इहां नैया यिकतौ मनकूं निरवयव मानेहैं तथाअणुमानेहैं तथानित्यमानेहैं ॥ यहनैयायिकोंकामत न्यायप्रकाश केद्वितीयपरिच्छेदविषे मनकेनिरूपणविषे विस्तारतैंप्रतिपादनकह्याहै ॥ सोयहनैयायिकोंकामतभी श्रु

तितैंविरुद्धहोणेतैं असंगतहै ॥ काहेतैं मनकूं जोनित्यमानिये तौ ॥ 'एकमेवाद्वितीयंब्रह्म' एकतौ इसश्रुतिकाविरोध प्राप्तहोवैगा॥ और दूसरा 'एतस्माज्जायतेप्राणोमनःसर्वेंद्रियाणिच तन्मनोऽकुरुत' इत्यादिकश्रुतियोंविषे तामनकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ और जोजोभावकार्यहोवैहै ॥ सोसो अनित्यही होवैहै जैसे घटपटादिक भावकार्यहोणेतैं अनित्यहै ॥ तैसे भावकार्यहोणेतैं सोमनभी अनित्यहीहोवेगा ॥ किंवा नैयायिकोंने मनकूं मूर्त्तद्रव्य मान्याहै ॥ और जोजोमूर्त्तद्रव्यहोवैहै सोसो परिच्छिन्नहीहोवैहै ॥ और जोजो परिच्छिन्नहोवै है सोसो सावयवहीहोवैहै ॥ और जोजो सावयवहोवैहै सोसो अनित्यहीहोवै है॥याप्रकारकानियम घटपटादिकमूर्त्तद्रव्योंविषे देखणेमें आवैहै ॥ यातैं मूर्त्तद्रव्य होणेतैं सोमनभी सावयव तथाअनित्यहीहोवैगा ॥ किंवा नैयायिकोंने मनकूं अनुमान्याहै तथातामनकेसंयोगतैं आत्माविषे सुखदुःखादिकोंकीउत्पत्ति मानीहै ॥ सोभी असंगतहै॥ काहेतैं ताअणुमनकेसंयोगजन्य सोसुखभी किसीअणुप्रदेशविषेहीहोवैगा ॥ सर्वअंगव्यापीनहींहोवैगा ॥ और शीतल गंगाजलविषेनिमग्नपुरुषकूं सर्वअंगव्यापिसुखकाअनुभवहोवै है यातैं सोमन अणुनहीं है किंवा मेरेकूं पादविषेपीडाहै और शिरविषेसुखहै इसप्रकार एकहीकालविषे सुखदुःखकाअनुभवहोवैहै ॥ सोभी नैयायिकोंकेमताविषे असंगतहोवैगा ॥ जिसकारणतैं ताअणुमनका एककालविषे तापादशिरदोनोंकेसाथि संयोगसंभवतानहीं इति ॥ तहां भूतोंकाकार्यरूपमनविषे विभुपणासंभवतानहीं तथा विभुमनका विभुआत्माकेसाथि संयोगसंभवता नहीं ॥ इनउक्तयुक्तियोंकरिकै मनकाविभुपणाभी खंडनहुआजानणा तहां मीमांसक मनकूंविभुमाने हैं ॥ सोमनकेविभुपणेकाप्रतिपादन तथानैयायिकोंकीरीतिसे ता

काखंडन न्यायप्रकाशकेद्वितीयपरिच्छेदविषे मनकेनिरूपणविषे विस्तारतैंकथनकऱ्याहै।।सो तहांसैंजा
निलेणा ।। यातैं आकाशादिकपंचभूतोंकेमिलितसात्विकअंशोंतैं सो अंतःकरणउत्पन्न होवैहै तथासाव
यवहै यहसिद्धांतासिद्धभया इति और सो अंतःकरण संकलपनिश्चय अभिमान स्मरण इनचारिवृत्ति
योंकेभेदकरिक मन १ बुद्धि २ अहंकार ३ चित्त ४ यहचारिप्रकारकाहोवै है ।। तहां संकलपवृत्तिवाला
अंतःकरण मनकह्याजावै है।।और निश्चयवृत्तिवाला अंतःकरण बुद्धिकह्याजावै है ।।औरअभिमानवृत्ति
वालाअंतःकरण अहंकारकह्याजावै है ।। और स्मरणवृत्तिवालाअंतःकरण चित्तकह्याजावै है इति।।अब
कर्मइंद्रियोंकेउत्पत्तिकाप्रकार वर्णनकरेहैं ।। तहां पूर्वउक्तआकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंके परस्परअमिलि
तराजसअंशोंतैं कर्मइंद्रिय उत्पन्न होवैहैं ।। तहां आकाशकेराजसअंशतैं वाकइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ।। और
वायुकेराजसअंशतैं हस्तइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ।। और तेजकेराजसअंशतैं पादइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ।। और
जलकेराजसअंशतैं पायुइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ।। और पृथिवीकेराजसअंशतैं उपस्थइंद्रिय उत्पन्नहोवैहै ।।
ईहां कैएकग्रंथकारतौ जलकेराजसअंशतैं उपस्थइंद्रियकीउत्पत्तिमानेहैं ।। और पृथ्वीकेराजसअंशतैं
पायुइंद्रियकीउत्पत्तिमानेहैं।।तहां 'कस्मिन्नापः प्रतिष्ठिताइतिरेतसि' इसश्रुतिविषे जलोंकीरेतविषेस्थि
तिकथनकरीहै ।। यातैं ताउपस्थइंद्रियकी जलतैंहीउत्पत्तिमानणी उचितहै इति ।। अब प्राणोंकेउत्पत्ति
कावर्णनकरे हैं ।। तहां पूर्वउक्तआकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतोंके मिलितराजसअंशोंतैं प्राण उत्पन्नहोवे है ।।
सोप्राणभी क्रियाकेभेदतैं वा स्थानकेभेदतैं प्राण १ अपान २ व्यान ३ उदान ४ समान ५ यहपंच
प्रकारकाहोवैहै ।। तहां सर्वदाऊर्ध्वगमनवालावायु प्राणकह्याजावैहै ।। यद्यपि उदानवायुभी ऊर्ध्वगमन

 वाला होवैहै ॥ तथापि सोउदान मरणकालविषेही ऊर्ध्वगमनवालाहोवैहै॥ सर्वदा ऊर्ध्वगमनवालाहोवै
 नहीं॥ और यहप्राणतौ सर्वदा ऊर्ध्वगमनवालाहोवैहै॥ यातैं इसप्राणकेलक्षणकी ताउदानविषेअतिव्या
प्तिहोवैनहीं ॥ और सोप्राण नासिकातैंलैके नाभिपर्यंतस्थानोंविषे रहे है ॥ तहां 'वायुःप्राणोभूत्वाना सिकेप्राविशत्' इसऐतरेयश्रुतिनें ताप्राणकी नासिकादिस्थानविषेही स्थितिकही है ॥ और अधो गमनवालावायु अपानकह्याजावे है ॥ सोअपान नाभितैंलैकेपायुपर्यंतस्थानोंविषे रहैहै ॥ तहां'मृत्यु रपानोभूत्वानाभिंप्राविशत्' इसश्रुतिनें ताअपानकी नाभिआदिकस्थानविषेही स्थितिकही है ॥ और सर्वओरतैंगमनकरणेहारावायु व्यानकह्याजावैहै ॥ सो व्यानवायु समग्रशरीरविषेरहे है॥ और मरणका लविषे ऊर्ध्वगमनकरणेहारावायु उदानकह्याजावे है॥सोउदान कंठस्थानविषेरहे है ॥ और भोजनकऱ्ये हुएअन्नके तथा पानकऱ्येहुएजलके स्थूल मध्यम सूक्ष्म इनतीनभागोंकूं तिसतिसस्थानाविषे प्राप्तकरणे हारावायु समानकह्याजावैहै ॥ तहां विष्ठामूत्रकाहेतुभूत जोअन्नजलकास्थूलभागहै तिसकूं शरीरतैं बाह्यनिकासणेवासतै सोसमानवायु अपानविषे प्राप्तकरेहै ॥ और मांसरुधिरकाहेतुभूत जोअन्नजलका मध्यमभागहै तिसकूं नाडीद्वारा सर्वअंगोंविषे प्राप्तकरेहै ॥ और मनप्राणदोनोंकाउपकारक जोताअ न्नजलकासूक्ष्मभागहै तिसकूं तामनप्राणविषे प्राप्तकरेहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिविषे मनकूं अन्नमयक ह्याहै ॥ और प्राणकूं जलमय कह्याहै ॥ सोयहसमानवायुभी समग्रशरीरविषेरहेहै ॥ और कोईकग्रंथ
विषे जोइससमानका नाभिस्थानकह्याहै ॥ सो मुख्यताकूंलैकेकह्याहै ॥ अर्थात् तासमानवायुका सो नाभि मुख्यस्थानहै इति ॥ ईहां केएकशास्त्रवालेतो नाग १ कूर्म २ कृकल ३ देवदत्त ४ धनंजय ५

इनपंचवायुवोंकूंमिलाइकै सोप्राणवायु दशप्रकारकाकहेहैं ॥ तहां उद्गारकरणेहारावायु नागकह्या जावैहै ॥ और नेत्रोंकेउन्मीलनकूंकरणेहारावायु कूर्मकह्याजावैहै॥और छिक्काकूंकरणेहारावायु कृकलक ह्याजावैहै ॥ और जृंभणकूंकरणेहारावायु देवदत्तकह्याजावैहै ॥ और शरीरकेपोषणकूंकरणेहारावायु धनंजयकह्याजावैहै इति ॥ तहां पूर्वउक्तप्राणादिकपंचवायुवोंतैं इननागादिकपंचवायुवोंकूं पृथक्मान णेविषे एकतौ गौरवदोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और दूसरा तिननागादिकपांचोंविषे श्रुतिआदिकप्रमाणका भी अभावहै ॥ यातैं वेदांतग्रंथोंविषे तिननागादिकपांचोंका तिनप्राणादिकपांचोंविषे अंतर्भावमानि कै तेपंचहीप्राण कथनकर्‍येहैं इति ॥ अब पूर्वउक्त इंद्रियोंके तथा अंतःकरणके देवतावोंका वर्णनकरे हैं ॥ तहां श्रोत्र १ त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ घ्राण ५ इनपंचज्ञानइंद्रियोंके यथाक्रमतैं दिक् १ वायु २ आदित्य ३ वरुण ४ अश्वी ५ यहपंचदेवताहोवै हैं ॥ ईहां कोईकग्रंथविषे घ्राणका पृथिवीदेवताभी क ह्याहै ॥ और वाक् १ पाणि २ पाद ३ पायु ४ उपस्थ ५ इनपंचकर्मइंद्रियोंके यथाक्रमतैं वह्नि १ इंद्र २ उपेंद्र ३ मृत्यु ४ प्रजापति ५ यहपंचदेवताहोवैहैं ॥ और मन १ बुद्धि २ अहंकार ३ चित्त ४ इनचारिअंतःकरणोंके यथाक्रमतैं चन्द्र १ चतुर्मुख २ शंकर ३ अच्युत ४ यहचारिदेवताहोवैहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंके तेदिकादिकअधिष्ठातादेवताहैं इसअर्थविषे कौनप्रमाणहे ॥ ॥ स माधान ॥ ॥ सुबालउपनिषद्विषे 'श्रोत्रमध्यात्मंश्रोतव्यमधिभूतंदिशस्तत्राधिदैवतम्' इत्यादिकवच नोंकरिकै ज्ञानकर्मइंद्रियोंके तथाअंतःकरणके तेपूर्वउक्तसर्वदेवता कथनकरेहैं ॥ यातैं तेइंद्रियअंतःकरण केअधिष्ठातादेवता श्रुतिप्रमाणतैंहीसिद्धहैं किंवा तेअधिष्ठातादेवता केवल श्रुतिप्रमाणकरिकैंहीसिद्ध

नहीं हैं ॥ किंतु अनुमानप्रमाणकरिकैभीसिद्धहैं ॥ सो दिखावैहैं ॥ इसलोकाविषे जोजोअचेतनकारण होवैहै ॥ सोसो चेतनकेआश्रितहुआही कार्यकाजनकहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिका अचेतनकारणहोणेतैं चेतनकुलालकेआश्रितहुएही घटादिककार्यकूंउत्पन्नकरै है ॥ तैसे तेंइंद्रियभीअचेतनकारणहोणेतैं चेतनदेवतावोंकेआश्रितहुएही आपणेआपणेकार्यकूं उत्पन्नकरेंगे ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जीवचेतनही तिनसर्वइंद्रियोंका अधिष्ठाताहोवैगा ॥ ताजीवचेतनतैंभिन्न दूसरेअधिष्ठातादेवतामानणेव्यर्थ हैं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जीवचेतनकूं जोइंद्रियोंकाप्रेरकमानिये ॥ तौ सोजीवचेतन आपणेअनुकूलअर्थविषेहीतिनइंद्रियोंकूं प्रवृत्तकरेगा ॥ प्रतिकूलअर्थविषेप्रवृत्तकरैगानहीं ॥ सोऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ किंतु जीवचेतनकूंप्रतिकूल जोशत्रुकादर्शन तथादुर्गंधादिकोंकाज्ञानहै तिसकूंभी तेचक्षुघ्राणादिकइंद्रिय उत्पन्नकरेहैं ॥ यातैंयहजान्याजावैहै ॥ सोजीवचेतन तिनइंद्रियोंका प्रेरकनहीं है ॥ किंतु तेउक्तदेवताही प्रेरकहैं ॥ तेदेवता ताजीवकेपापकर्मकेवशतैं प्रतिकूलअर्थविषेभी तिनइंद्रियोंकूंप्रवृत्तकरेहैं इति ॥ तहांइतनेपर्यंत सप्तदशालिंगरूपसूक्ष्मशरीरकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तैत्तिरीयउपनिषदविषे कथनकऱ्येजे कार्यकारणरूप अन्नमयादिकपंचकोशहैं तिनोंका स्थूल सूक्ष्म कारण इनतीनशरीरोंविषे अंतर्भाववर्णनकरे हैं ॥ तहां अन्नमय १ प्राणमय २ मनोमय ३ विज्ञानमय ४आनंदमय ५ यहपंच आत्माकेआच्छादकहोणेतैं कोशकह्येजावैहैं ॥ तहां आगेकथनकरेंगेजोस्थूलशरीर सो अन्नमयकोश कह्याजावैहै ॥ सोअन्नमयकोशभी ॥ कार्य कारण इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां अस्मदादिकजीवोंका व्यष्टिस्थूलशरीरतौ कार्यरूपअन्नमयकोशहै ॥ और विराट्का समष्टिस्थूलशरीरतौ कारणरूपअन्नमयको

शहै ॥ इसप्रकार आगे प्राणमयादिककोशोंकाभी व्यष्टिसमष्टिरूपतैं कार्यकारणभाव जानिलेणा ॥
और पूर्वकथनकन्याजो सप्तदशलिंगरूपसूक्ष्मशरीरहै सो प्राणमय मनोमय विज्ञानमय यहतीनकोशरू
पहैं ॥ तहां पूर्वउक्त वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंसहित जोप्राणहै सो प्राणमयकोश कह्याजावैहै ॥ और
तिनकर्मइंद्रियोंसहित जोमनहै सो मनोमयकोश कह्याजावैहै ॥ औरपूर्वउक्त श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रि
योंसहित जाबुद्धिहै सो विज्ञानमयकोश कह्याजावैहै ॥ यहविज्ञानमयकोशही आत्माविषे कर्त्तापणे
काउपाधिहै ॥ अर्थात् वास्तवतैंअकर्त्ताहुआभीआत्मा इसविज्ञानमयकोशविशिष्टहुआ कर्त्ताकह्याजा
वैहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'विज्ञानंयज्ञंतनुतेकर्माणितनुतेपिच' अर्थयह ॥ यहविज्ञानमयउपाधिवालाजीवात्मा
ही यज्ञकूंकरेहै तथासर्वकर्मोंकूंकरेहै इति ॥ अब पंचमेआनंदमयकोशकेकहणेवास्ते प्रथम ताअंतःकर
णकेसात्त्विकवृत्तिकाविभाग कहेहैं ॥ तहां ताउक्तअंतःकरणकीसात्त्विकवृत्ति दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एक
तो निश्चयवृत्ति ॥ दूसरी सुखाकारवृत्ति ॥ तहां निश्चयवृत्तिवालाअंतःकरणतो बुद्धिकह्याजावैहै ॥ ति
सबुद्धिकूं विज्ञानमयकोशरूपहोणेतैं ताबुद्धिउपाधिवाला जीवात्मा कर्त्ता ज्ञाता प्रमाता कह्याजावैहै ॥
और दूसरीसुखाकारवृत्तिवालाअंतःकारण आत्माविषे भोक्तापणेकाउपाधिहै ॥ अर्थात् वास्तवतैंअभो
क्ताहुआभीआत्मा तासुखाकारवृत्तिवालेअंतःकरणकरिकैविशिष्टहुआ भोक्तकह्याजावैहै ॥ तहां तेसु
खाकारवृत्तियां तैत्तिरीयउपनिषदविषे प्रिय मोद प्रमोद नामकरिकैकथनकरीहैं ॥ तहां इष्टवस्तुकेदर्शन
जन्यसुखकूं प्रियकहेहैं ॥ और ताइष्टवस्तुकेप्राप्तिजन्यसुखकूं मोदकहेहैं ॥ और ताइष्टवस्तुकेभोगजन्य
सुखकूं प्रमोदकहेहैं ॥ सोभोक्तापणेकाउपाधिरूपअंतःकरणही अज्ञानपर्यंत आनंदमयकोशकह्याजावै

है ॥ ताआनंदमयकोशरूपउपाधिवाला चेतनआत्मा भोक्ताकह्याजावैहै ॥ और कैएकग्रंथकारतौ के
वलअज्ञानकूंही आनंदमयकोश कहेहैं इसआनंदमयकोशका कारणशरीरविषे अंतर्भावहै ॥ इन
पंचकोशोंकाविस्तारतैंनिरूपण तौ आत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे हमनेंकऱ्याहै ॥ सो तहांसेजानिले
णा इति ॥ अब पूर्वउक्तसूक्ष्मशरीरकाविभाग कहेहैं ॥ तहां सोसप्तदशलिंगरूपसूक्ष्मशरीर समष्टि
व्यष्टि इसभेदकरिकै दोप्रकारका होवैह ॥ तहां पूर्वकथनकऱ्येजे अपंचीकृत आकाशादिकपंचभूत
हैं ॥ तथा तिनभूतोंकेकार्यरूप जेइंद्रियअंतःकरणप्राणरूप सप्तदशलिंगहैं ॥ तेसर्वमिलिकै समष्टिसूक्ष्म
शरीरकह्याजावैहै ॥ तासमष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिवालाचैतन्य हिरण्यगर्भ प्राण सूत्रात्मा इननामों
करिकै कह्याजावैहै ॥ तहां सोसमष्टिसूक्ष्मशरीर ज्ञानशक्तिवालेअंतःकरणज्ञानइंद्रियोंकरिकैघटितहोणेतैं
ज्ञानशक्तिवालाहै ॥ याकारणतैं ताशरीरउपहितचैतन्यकूंहिरण्यगर्भ कहेहैं ॥ और सोसमष्टिसूक्ष्मश
रीर क्रियाशक्तिवालेप्राणकर्मइंद्रियोंकरिकैघटितहोणेतैं क्रियाशक्तिवालाहै ॥ याकारणतैं ताशरीरउपहि
तचैतन्यकूं प्राणकहेहैं ॥ और पटविषेसूत्रकीन्यांई सोसमष्टिसूक्ष्मशरीर सर्वब्रह्मांडविषेव्यापकहै ॥ या
कारणतैं ताशरीरउपहितचैतन्यकूंसूत्रात्मा कहेहैं ॥ अथवा पूर्वउक्तअपंचीकृतपंचभूतोंतैं एकपृथक्ही
सर्वत्रव्यापकलिंगशरीरउत्पन्नहोवैहै ॥ सोलिंगशरीरही समष्टि कह्याजावैहै ॥ तासमष्टिलिंगशरीरउप
हितचैतन्य हिरण्यगर्भ कह्याजावैहै इति ॥ अब प्रसंगतैं समष्टिका तथाव्यष्टिका लक्षण कहेहैं ॥ तहां
जैसे नैयायिकोंकेमतविषे गोत्वजाति सर्वगोव्यक्तियोंविषे अनुस्यूतहोइकैरहेहै ॥ तैसे सर्वव्यष्टिव्यक्ति
योंविषे जो अनुस्यूतहोइकैरहेहै सो समष्टि कह्याजावैहै ॥ तहांप्रमाण ॥ 'तेभ्यःसमभवत्सूत्रांलिंगं ॥४९॥

सर्वात्मकंमहत्' अर्थयह ॥ तिनअपंचीकृतपंचभूतोंतैं एकसर्वत्रव्यापक सूत्रनामा समष्टिसूक्ष्मशरीर उत्पन्नहोताभया ॥ सोसमष्टिसूक्ष्मशरीर परमात्माकाबोधकहोणेतैं लिंग कह्याजावैहै ॥ और इसीसमष्टि सूक्ष्मशरीरकूं सांख्यशास्त्रवाले महत्तत्त्व इसनामकरिकैकहैहैं इति ॥ ईहां केएकग्रंथकारतौ यहकहैहैं ॥ जैसे अनेकवृक्षोंकेसमुदायकूं वनकहैहैं ॥ तैसे सर्वव्यष्टिलिंगशरीरोंकाजोसमुदायहै सो समष्टि कह्याजावैहै ॥ और एकएकवृक्षकीन्यांई प्रत्येकलिंगशरीर व्यष्टि कह्याजावैहै इति ॥ तहां जैसे एकगोव्यक्ति दूसरीगोव्यक्तियोंविषे अनुस्यूतहोवैनहीं ॥ किंतु तिनोंतैंव्यावृत्तहोवैहै ॥ तैसे एकलिंगशरीर दूसरेलिंगशरीरोंविषे अनुस्यूतहोवैनहीं किंतु तिनोंतैं व्यावृत्तहोवैहै ॥ यहव्यावृत्तपणाही तालिंगशरीरविषे व्यष्टिपणाहै ॥ ऐसेव्यष्टिलिंगशरीरकरिकैउपहितहुआ चैतन्य तैजस कह्याजावैहै ॥ तहां तेजकाविकाररूपजोअंतःकरणहै तत्‌उपहितहोणेतैं चैतन्य तैजस कह्याजावैहै ॥ तहां जैसे घटत्वादिकजातिका तथाघटादिकव्यक्तिका तादात्म्यहोवैहै॥तैसे तासमष्टिलिंगशरीरका तथाव्यष्टिलिंगशरीरकाभीतादात्म्यहीहोवैहै ॥ तासमष्टिव्यष्टिलिंगशरीररूपदोनोंउपाधियोंकेतादात्म्यहुए तत्‌उपहित सूत्रात्मा तैजस इन दोनोंकाभी तादात्म्यहीहोवैहै ॥ तहां 'भिन्नत्वेसत्यऽभिन्नसत्ताकत्वं तादात्म्यं' अर्थयह ॥ जेदोपदार्थ व्यवहारदृष्टितैं परस्परभिन्नहुएभी वास्तवतैं एकसत्तावालेहोवैहैं ॥ तिनदोपदार्थोंका तादात्म्यसंबंध होवैहै ॥ जैसे तंतुपटादिकोंका तथागुणगुणीआदिकोंका तादात्म्यसंबंधहै ॥ तहां हिरण्यगर्भकीअभेदउपासनाकरिकै इसपुरुषकूं ताहिरण्यगर्भभावकीप्राप्तिरूपफलहोवै है॥ याकारणतैं इहां समष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरीररूपउपाधिका तादात्म्यवर्णनकरिक ताहिरण्यगर्भतैजसदोनोंकातादात्म्य वर्णनकऱ्याहै॥ यातैं सोवर्णन

निष्फलनहीं है इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ नैयायिकोंने जातिव्यक्तिदोनोंका तादात्म्यसंबंध अंगीकारक
ऱ्यानहीं ॥ किंतु समवायसंबन्धही अंगीकारकऱ्याहै॥यातैं जातिव्यक्तिकेतादात्म्यदृष्टांतकरिकै समष्टि
व्यष्टिका तादात्म्यमानणाअत्यंतविरुद्धहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ लक्षण प्रमाण इनदोनोंकरिकैहीवस्तु
कीसिद्धिहोवैहै ॥ यहशास्त्रकारोंकानियमहै और तासमवायका कोईलक्षण तथा प्रमाण संभवतानहीं ॥
यातैं सोसमवाय अंगीकारकरणेयोग्यनहींहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ 'नित्यसंबंधः समवायः' अर्थयह ॥
नित्य ऐसाजोसंबंधहै सो समवायकह्याजावैहै॥यहसमवायकालक्षण विद्यमानहै ॥ तथा तासमवाय
विषे प्रत्यक्षादिकप्रमाणभी विद्यमानहैं ॥ यातैं तासमवायके लक्षणप्रमाणकाअभावकहणा असंगतहै
॥ ॥ समाधान ॥ ॥ 'एकमेवाद्वितीयंब्रह्म' इत्यादिकश्रुतियोंनें ब्रह्मकूं अद्वितीय कह्याहै ॥ सा
ब्रह्मकीअद्वितीयरूपता समवायकूंनित्यमानणेविषे संभवतीनहीं ॥ यातैं ताअद्वैतश्रुतितैंविरुद्धहोणेतैं
सोसमवायकानित्यपणा संभवतानहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तुमारेमतविषेभी अज्ञान तथाताअज्ञानका
चेतनकेसाथिसंबंध इत्यादिकपदार्थ अनादिमानेहैं॥ तथा भावरूपमानेहैं ॥ और जोजोपदार्थ अनादि
भावरूपहोवैहैं ॥ सोसोपदार्थ नित्यहीहोवैहैं ॥ यातैं तिनअज्ञानादिकनित्यपदार्थोंकेविद्यमानहुए सोब्र
ह्मकाअद्वितीयपणा कैसेसंभवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ वेदांतसिद्धांतविषे तेअज्ञानादिक ब्रह्मविषे
अध्यस्तमानेहैं ॥ याकारणतैं ताअधिष्ठानब्रह्मतैं तेअज्ञानादिक भिन्नसत्तावालेनहीं हैं ॥ यातैं तिनअ
ज्ञानादिकोंकेविद्यमानहुएभी सोब्रह्मकाअद्वितीयपणासंभवैहै ॥ और तेअज्ञानादिक अनादिभावरूपहु
एभी ब्रह्मविषेआरोपितहैं ॥ यातैं ताब्रह्मकेज्ञानकरिक तेअज्ञानादिक निवृत्तहोइजावैहैं ॥ अनारोपित

अनादिभावपदार्थंही नित्यहोवैहै ॥ साअनारोपितअनादिभावरूपता एकअधिष्ठानब्रह्मविषेहीहै॥ तिन
अज्ञानादिकोंविषैहैनहीं ॥ यातैं तुमारेसमवायकीन्यांई तेअज्ञानादिकभी अनित्यही हैं॥यातैं नित्यसं
बंध समवायहै यहसमवायकालक्षण संभवतानहीं ॥ किंवा युक्तिसेविचारकरिकैदेखिये तौभी तासम
वायकास्वरूपसिद्धहोतानहीं ॥ तहां तुमनैयायिकोंनें गुणगुणीका तथाक्रियाक्रियावालेका तथाअव
यवअवयवीका तथाजातिव्यक्तिका तथाविशेषनित्यद्रव्योंका समवायसंबंध अंगीकारकऱ्याहै ॥ सोस
मवाय तिनगुणगुणीआदिक आपणेसंबंधियोंतैं भिन्नहै अथवा अभिन्नहै ॥ तहां प्रथम भिन्नपक्ष जोअं
गीकारकरो ताकेविषेभी यहकह्याचाहिये ॥ सोसमवाय तिनसंबंधियोंविषे किससंबंधकरिकैरहैहै ॥
संयोगसंबंधकरिकैरहैहै अथवा समवायसंबंधकरिकैरहैहै ॥ अथवा किसीअन्यसंबंधकरिकैरहैहै ॥
तहां प्रथम संयोगपक्षतौ संभवतानहीं ॥ काहेतें दोद्रव्योंकाही संयोगसंबंधहोवैहै ॥ और सोसमवाय
द्रव्यहैनहीं ॥ तैसे तेगुणकर्मादिकभी द्रव्यहैंनहीं ॥ यातैं तासमवायका तिनसंबंधियोंविषे संयोगसंबं
धकरिकैवर्त्तणा संभवतानहीं ॥ और सोसमवाय तिनआपणेसंबंधियोंविषे समवायसंबंधकरिकैरहैहै
यह द्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरोगे ॥ तौ आत्माश्रय १ अन्योन्याश्रय २ चक्रिका ३ अनवस्था ४
यहचारिदूषण प्राप्तहोवैंगे ॥ सोदिखावैहैं सोसमवाय जिससमवायकरिकै आपणेसंबंधियोंविषेरहहै ॥
सोसमवाय तासमवायतैंअभिन्नहैअथवाभिन्नहै ॥ जोकहोअभिन्नहै तौ आत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहो
वैगी ॥ तहां तासमवायकूं आपणेस्थितिविषे जोआपणीअपेक्षाहै यहही आत्माश्रयदोषहै ॥ और
जोकहोसोसमवाय भिन्नहै॥तौ सोद्वितीयसमवायभी ताप्रथमसमवायकीन्यांई आपणेसंबंधियोंविषेकि

सीसमवायकरिकैहीरहैगा ॥ तहां सोद्वितीयसमवाय जोआपणेकरिकैहीआपरहैगा ॥ तौ पूर्वकीन्यांई पुनःआत्माश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी॥और सोद्वितीयसमवाय जोप्रथमसमवायकरिकैरहैगा तौ अन्योन्याश्रयदोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहां प्रथमसमवायतौ द्वितीयसमवायकारिकैरह्या ॥ और सोद्वितीयसमवाय ताप्रथमसमवायकरिकैरह्या ॥ यहही अन्योन्याश्रयदोषहै ॥ और इसअन्योन्याश्रयदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै सोद्वितीयसमवाय किसीतिसरेसमवायकारिकैरहेहै यहजोमानोगे तोसो तृतयिसमवाय भी जो है तो आपणेकरिकैआपरहैगा ॥ तौ पूर्वकीन्यांई पुनः आत्माश्रयदोष प्राप्तहोवैगा ॥ और जो द्वितीयसमवायकरिकैरहेगा ॥ तौ पूर्वकीन्यांई पुनः अन्योन्याश्रयदोष प्राप्तहोवैगा ॥ और सोतृतीय समवाय जोप्रथमसमवायकरिकैरहैगा ॥ तौ चक्रिकादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहां प्रथमसमवायकूं आपणीस्थितिवासतैं द्वितीयसमवायकीअपेक्षा ॥ और ताद्वितीयसमवायकूं आपणीस्थितिवासतै तृतीय समवायकीअपेक्षा ॥ और तातृतीयसमवायकूं आपणीस्थितिवासतै पुनःताप्रथमसमवायकीअपेक्षा॥ यहही चक्रिकादोषहै ॥ और ताचक्रिकादोषकेनिवृत्तिकरणेवासतै जो तातृतीयसमवायकीस्थितिवासतै चतुर्थसमवाय ताचतुर्थकीस्थितिवासतै पंचमसमवाय इसप्रकार विश्रांतितैंरहित समवायोंकीधारा मानोंगे तौ अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं सोसमवाय समवायसंबंधकरिकै आपणेसंबंधियोंविषेरहैहै यहद्वितीयपक्ष संभवतानहीं ॥ और सोसमवाय अन्यकिसीसंबंधकरिकै रहैहै यहतृतीयपक्ष जोअंगीकारकरो ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं संयोग समवाय इनदोनोंसंबंधोंतैंभिन्न तीसराकोई संबंध तुमारेसेनिरूपणहोइसकतानहीं ॥ जोकहो सोसमवाय स्वरूपसंबंधकरिकैरहैहै ॥ सोभी संभव

तानहीं ॥ जिसकारणतैं तास्वरूपसंबंधविषे कोईभीप्रमाणनहीं है ॥ और जोकदाचित् तुम तास्वरूप संबंधकूं अंगीकारकरोगे ॥ तौ जिनगुणगुणीआदिकोंका तुमोंनैं समवायसंबंध मान्याहै ॥ तिनगुणगुणीआदिकोंकाभी सोस्वरूपसबंधही संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तहां समवायकीसिद्धिंहीनहींहोवैगी ॥ और सोसमवाय आपणेसंबंधियोंतैंअभिन्नहै ॥ यहआदिद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरो ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं तुमनैयायिकोंनें तासमवायकूं तिनगुणगुणीआदिकपदार्थोंतैं भिन्नहीपदार्थमान्याहै ॥ तिसतुमारेसिद्धांतकीहानिहोवैगी ॥ यातैंकोईप्रकारकरिकैभी तासमवायकेस्वरूपकीसिद्धिहोतीनहीं ॥ किंवा प्रमाणकेअभावहोणेतैंभी तासमवायकीसिद्धि होइसकतीनहीं ॥ तहां तासमवायविषे प्रत्यक्षप्रमाणभी संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं तुमोंनें तासमवायकूं अतिइंद्रियही मान्याहै ॥ अतिइंद्रियअर्थविषे इंद्रियरूपप्रत्यक्षप्रमाणकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ और 'घटेरूपंसमवेतम्' यहसमवायविषयकप्रतीति तौ केवल तुमोंनेंही कल्पनाकरी है ॥ सर्वशास्त्रवालोंकूं साप्रतीति संमतनहीं है ॥ यातैं ताप्रतीतिकूं प्रमाणरूपताहीनहीं है ॥ इसप्रकार हेतुरूपलिंगकेअभावतैं तासमवायविषे अनुमानप्रमाणभी संभवतानहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ 'रूपीघट इतिविशिष्टबुद्धिः विशेषणविशेषसंबंधविषया विशिष्टबुद्धित्वात् दंडीपुरुषइतिबुद्धिवत्' अर्थयह ॥ रूपवालाघटहै यहविशिष्टबुद्धिंरूपविशेषणके तथा घट विशेष्यके संबंधकूंविषयकरेहै ॥ विशिष्टबुद्धिहोणेतैं ॥ लोकविषे जाजाविशिष्टबुद्धिहोवैहै ॥ सासा विशेषणविशेष्यदोनोंकेसंबंधकूं अवश्य विषयकरेहै ॥ जैसे दंडीपुरुषः यहविशिष्टबुद्धि दंडरूपविशेषणके तथापुरुषरूपविशेष्यकेसंयोगसंबंधकूंविषयकरेहै ॥ तैसे रूपवानघटः यहविशिष्टबुद्धिंभी तारूपगुणरूपविशेषणकेतथाता

घटरूपविशेष्यके समवायसंबंधकूंहीविषयकरेहै॥इसप्रकारकेअनुमानप्रमाणकेविद्यमानहुए तासमवाय विषे अनुमानप्रमाणकाअभावकहणा असंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ पूर्वउक्तरीतिसे तासमवायके स्वरूपकीहीसिद्धिहोतीनहीं ॥ यातैं इसअनुमानकरिकै ताघरूपघटके तादात्म्यसंबंधकीहीसिद्धिहोवैहै॥ तासमवायकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ इसप्रकार लक्षण प्रमाण दोनोंकेअनिरूपणहुए तासमवायकीसिद्धि हो इसकैनहीं ॥ तासमवायकेअसिद्धहुए ताजातिव्यक्तिका तादात्म्यसंबंधहीसिद्धहोवैहै ॥ यातैं ताजाति व्यक्तिकेतादात्म्यदृष्टांतकरिकै तासमष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरीरोंकातादात्म्य संभवैहै ॥ ईहां कैएकनैयायिक तासमवायकूं अतीन्द्रियमानेहैं॥औरकैएकनैयायिकतासमवायकूं प्रत्यक्षमानेहैं॥तथा कैएकनैयायिक तासमवायकूं एकमानेहैं ॥ और कैएकनैयायिक तासमवायकूं नानामानेहैं ॥ तेसर्वनैयायिकोंके मत न्यायप्रकाशकेचतुर्थपरिच्छेदविषे समवायनिरूपणविषे विस्तारतैंनिरूपणकरेहैं॥जिसकूंजाणनेकी इच्छाहोवै ॥ तिसनें तहांसेजानिलेणे इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वआपने समष्टिसूक्ष्मशरीरका तथा व्यष्टिसूक्ष्मशरीरका तादात्म्य वर्णनकऱ्या सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं कार्यका आपणेउपादानकार णविषे तादात्म्यहोवैहै ॥ जैसे पटरूपकार्यका आपणेतंतुरूपउपादानकारणविषे तादात्म्यहोवैहै ॥ और ताव्यष्टिसूक्ष्मशरीरका सोसमष्टिसूक्ष्मशरीर उपादाननहीं है ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसेआकाशादिकपंचसू क्ष्मभूतही उपादानहैं ॥ यातैं समष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरीरोंका तादात्म्यवर्णनकरणा असंगतहै ॥ ॥ समा धान ॥ ॥जेअपंचीकृतसूक्ष्मभूत ताव्यष्टिसूक्ष्मशरीरकेउपादानहैं ॥ तेहीसूक्ष्मपंचभूत तासमष्टिसूक्ष्म शरीरकेअंतर्गतहैं ॥ यातैं तासमष्टिसूक्ष्मशरीरविषे ताव्यष्टिसूक्ष्मशरीरकाउपादानपणा संभवैहै ॥ ताउ

पादानउपादेयभावकेसंभवहुए तिनदोनोंका तादात्म्यभीसंभवैहै इति ॥ अब ताउक्तसूक्ष्मशरीरकूं पुर्य्य ष्टकरूपकरिकैवर्णनकरेहैं ॥ तहां सोपूर्वउक्तसूक्ष्मशरीरही अविद्या १ काम २ कर्म ३ इनतीनोंकरिकैयु क्तहुआ पुर्य्यष्टक इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ तहां अष्टपुरियोंकेसमूहकानाम पुर्य्यष्टकहै ॥ तेअष्टपुरी यहहैं ॥ पंचज्ञानइंद्रिय १ पंचकर्मइंद्रिय २ चतुष्टयअंतःकरण ३ पंचप्राण ४ पंचसूक्ष्मभूत ५ अविद्या ६ काम ७ कर्म ८ ॥ तहां इंद्रिय अंतःकरण प्राण पंचभूत इनोंका तौ पूर्वनिरूपणकरिआयेहैं ॥ यातैं अब अविद्या काम कर्म इनतीनोंकानिरूपणकरेहैं ॥ ईहां अविद्याशब्दकरिकै कार्यअविद्याग्र हणकरणी ॥ तहां अन्यविषेअन्यबुद्धिकानाम कार्यअविद्याहै ॥ साकार्यअविद्याभी चारिप्रकारकीहो वैहै ॥ अनित्यविषेनित्यत्वबुद्धि १ अशुचिविषेशुचित्वबुद्धि २ असुखविषेसुखबुद्धि ३ अनात्मविषेआ त्मबुद्धि ४ तहां कर्मउपासनाकाफलरूपहोणेतैं अनित्य ऐसे जे स्वर्गब्रह्मलोकादिकहैं ॥ तिनोंविषे जानित्यत्वबुद्धिहै सा प्रथमअविद्याकहीजावैहै ॥ और मलमूत्रादिकोंकरिकैपूर्वहोणेतैं अशुचि ऐसा जो आपणाशरीरहै तथास्त्रीपुत्रादिकोंकाशरीरहै ॥ तिनशरीरोंविषे जाशुचित्वबुद्धिहै सा दूसरीअवि द्या कहीजावैहै ॥ और पीडारूपदुःखविषे जासुखबुद्धिहै ॥ तथा तादुःखकेसाधनब्रह्महत्यासुरापानादि कोंविषे जासुखसाधनबुद्धिहै ॥ सा तीसरीअविद्या कहीजावैहै ॥ और अनात्मरूपदेहइंद्रियादिकोंवि षे जाअहंइसप्रकारकीआत्मबुद्धिहै ॥ सा चतुर्थीअविद्या कहीजावैहै इति ॥ और यहवस्तुहमारेकूंप्रा तहोवै याप्रकारकी जा अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम रागहै ॥ तारागकाहीनाम कामहै ॥ औरं कर्मतौ संचित १ आगामी २ प्रारब्ध ३ इनभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ सोतीनप्रकारकाहीक

र्म विहित १ निषिद्ध २ इसभेदंकरिकै पुनःदोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रने जिसकर्म केकरणेकाविधानकन्याहै ॥ सोकर्म विहित कह्याजावैहै ॥ जैसे संध्यावंदन अग्निहोत्र आदिककर्म हैं ॥ और ताश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनें जिसकर्मकेकरणेका निषेधकन्याहै ॥ सोकर्म निषिद्ध कह्याजावैहै ॥ जैसे ब्रह्महत्यासुरापानादिककर्म हैं ॥ तहां ताविहितकर्मतें तौ इसपुरुषविषे धर्म उत्पन्नहोवैहै ॥ और तानिषिद्धकर्मतें अधर्म उत्पन्नहोवैहै ॥ ताधर्मअधर्मकूंही शास्त्रविषे अदृष्ट अपूर्व इसनामकरिकैकहे हैं ॥ तहां सोधर्मरूपअदृष्टतौ इसपुरुषकूं सुखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ और सोअधर्मरूपअदृष्ट इसपुरुष कूं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ अब संचित आगामी प्रारब्ध इनतीनोंकास्वरूप वर्णनकरैहैं ॥ तहां पूर्व जन्मोंविषे वा इसजन्मविषे कन्याहुआजोकर्म आपणेफलकूंनदेकारिकै केवल अदृष्टरूपकरिकैरहैहै सो कर्म संचितकह्याजावैहै ॥ और तत्त्वज्ञानतैंपश्चात्कन्याजोकर्महै ॥ सोकर्म आगामि कह्याजावैहै ॥ औरतिनसंचितकर्मोंतैंनिकसिकै जोकर्म इसवर्त्तमानशरीरका आरंभकहोवैहै ॥ सोकर्म प्रारब्ध कह्याजावैहै इति ॥ अब प्रसंगतैं तिनकर्मोंकेनाशकावर्णनकरैहैं ॥ तहां संचित आगामि इनदोनोंकर्मों कातौ फलकेभोगकरिकैनाशहोवैहै ॥ अथवा विरोधीकर्मकरिकैनाशहोवैहै ॥ अथवा ब्रह्मज्ञानकरिकै नाशहोवैहै ॥ यद्यपि क्रियारूपकर्मका ताफलभोगादिकतैंविना आपहीनाशहोइजावैहै ॥ तथापि ई हांकर्मशब्दकरिकै ताकर्मजन्यधर्मअधर्मरूपअदृष्टका ग्रहणकरणा ॥ ताअदृष्टका तिनभोगादिकोंकरि कैहीनाशहोवैहै ॥ और प्रारब्धकर्मकातौ केवल फलकेभोगकरिकैहीनाशहोवैहै ॥ तत्त्वज्ञानकारक वा विरोधीकर्मकरिकै नाशहोतानहीं ॥ तहां 'अवश्यमेवभोक्तव्यं कृतंकर्मशुभाशुभम् । नाभुक्तंक्षीयतेकर्मक

ल्पकोटिशतैरपि' अर्थयह ॥ इसपुरुषनें कऱ्याहुआ शुभकर्म वा अशुभकर्म अवश्यभोगताहै ॥ कल्प कोटिशतोंकरिकैभी भोगतैंविना सोकर्म नाशहोतानहीं ॥ इत्यादिकवचन तौ भोगकरिक ताकर्मका नाश कहेहैं ॥ और 'प्रायश्चित्तैरपेत्येनोयदज्ञानकृतंभवेत्' अर्थयह ॥ अज्ञानकरिकैकऱ्याजोपापहै॥ सोपाप प्रायश्चित्तोंकरिकैनिवृत्तहोवैहै ॥ इत्यादिकवचन प्रायाश्चित्तरूपविरोधिकिर्मकारिकैभी तापापकर्म कानाशकहेहैं ॥ याकेविषेभी इतनीविशेषताहै ॥ पापकर्मोंकातौ प्रायश्चित्तरूपविरोधीकर्मकरिकै नाशहोवैहै ॥ और पुण्यकर्मोंका कर्मनाशानदीकेजलस्पर्शादिरूपविरोधीकिमकारिकै नाशहोवैहै ॥ और 'क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे। ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा' अर्थयह॥ 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारकेब्रह्मसाक्षात्कारहुए उसविद्वान्पुरुषके प्रारब्धकर्मतैंभिन्नसर्वकर्मनाशहोवैहैं ॥ और ज्ञानरूपअग्नि सर्वकर्मोंकूं भस्मकरेहै ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचन ब्रह्मज्ञानकारिकैभी ताकर्मकानाशकहेहैं ॥ और 'प्रारब्धंभोगतोनश्येत् । भोगेनत्वितरेक्षपयित्वासंपद्यते' अर्थयह ॥ प्रारब्धकर्म तौ केवल भोगकरिकैहीनिवृत्तहोवैहै ॥ और विद्वान्पुरुष फलकेभोगतैंप्रारब्धकर्मोंकानाशकरिकै शरीरपाततैंअनंतर निर्विशेषब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इत्यादिकवचनतौ ताप्रारब्धकर्मका केवलभोगकरिकैहीनाश कहेहै ॥ यातैं भोगादिकोंकरिकै सोकर्मकानाश उक्तश्रुतिस्मृतिआदिकप्रमाणोंकरिकैहीसिद्धहै ॥

॥ ॥ शंका ॥ ॥ संचितकर्मोंकातौ प्रायश्चित्त करिकै वा तत्त्वज्ञानकरिकैनाशहोवो ॥ परंतु तत्त्वज्ञानतैंअनंतरकऱ्येहुए जेआगामिकर्म हैं तिनोंका तिसतत्त्वज्ञानकरिकैनाश कैसेसंभवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ज्ञानवान्पुरुषकूं ताब्रह्मज्ञानकेप्रभावतैं तिनआगामिकर्मोंका लेप होतानहीं ॥ याकार

णतैं तेआगामिकर्म तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकेप्रति फलकाजनकहोतेनहीं ॥ यहही तिनआगामिकर्मोंका नाश जानणा ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्नेभी ब्रह्मसूत्रोंविषेकहीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ 'तदधिगमउत्तरपूर्वार्धयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्' अर्थयह ॥ ब्रह्मसाक्षात्करकेहुए ज्ञानवान् पुरुषके पूर्वलेसंचित पापकर्मोंकातो नाशहोइजावैहै ॥ और ज्ञानतैंउत्तरकऱ्येहुए आगामिपापोंका ताज्ञानवानकूं लेपही नहींहोवैहै ॥ यहदोनोंवार्त्ता श्रुतिविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'तद्यथेषीकातूलमग्नौप्रोतंप्रदूयेतैवं हास्यसर्वेपाप्मानः प्रदूयंते' अर्थयह ॥ जैसे मुंजकीइषीकाकातूल अग्निविषेपायाहुआ शीघ्रही दग्धहोइजावैहै ॥ तैसे इसविद्वानपुरुषके पूर्वलेसर्वसंचितपापकर्म ब्रह्मज्ञानरूपअग्निकरिकै शीघ्रही दग्धहोइ जावैहैं ॥ यहश्रुतितौ तत्त्ववेत्तापुरुषकेपूर्वलेसंचितपापकर्मोंकेनाशकूंकहेहै ॥ 'यथापुष्करपलाश आपोनाश्लिष्यत एवमेवंविदिपापंकर्मनश्लिष्यते' अर्थयह ॥ जैसे जलविषेस्थितकमलकेपत्रकूं सोजल लिपायमानकरतानहीं ॥ तैसे इसविद्वान्पुरुषकूं पापकर्म लिपायमानकरतेनहीं ॥ यहश्रुति ताविद्वान् पुरुषविषे आगामिपापकर्मका अलेपपणा कहेहै ॥ तहां उक्तसूत्रविषे तथाश्रुतिविषे स्थितजोपापशब्दहै ॥ सोपापशब्द पुण्यकाभी उपलक्षण जानणा ॥ जिसकारणतैं 'सुहृदःसाधुकृत्यंद्विषंतःपापकृत्यं' इसश्रुतिविषे तत्त्ववेत्ता पुरुषके आगामिपुण्य कर्मोंकी सेवाकरणेहारेभक्तजनोंकूं प्राप्तिकहीहै और पापकर्मोंकी द्वेषकरणेहारेनिंदकपुरुषोंकूं प्राप्तिकहीहै ॥ यात तापापशब्दकरिकै पुण्यपापदोनोंकाग्रहणकरणा युक्तहै इति ॥ किंवा ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै विद्वान्पुरुषके केवलकर्मोंकाहीनाशनहींहोवैहै ॥ किंतु अविद्यादिकपंचक्लेशोंकाभी नाशहोवैहै ॥ तहां योगशास्त्रविषे अविद्या १ अस्मिता २ रा

ग ३ द्वेष ४ अभिनिवेश ५ यहपंचक्लेशकहेहैं ॥ तहां कार्यअविद्या कारणअविद्या यहदोप्रकारकी अविद्याहोवैहै ॥ सादोनोंप्रकारकीअविद्या पूर्वनिरूपणकरिआयेहैं ॥ और अहंकारकाकारणरूप जासूक्ष्मअवस्थाहै सा अस्मिता कहीजावैहै ॥ इसीअस्मिताकूं सांख्यमतवाले तथायोगमतवाले महतत्त्व इसनामकरिकैकहेहैं ॥ और वेदांतशास्त्रविषे ताअस्मिताकूं सामान्यअहंकार इसनामकरिकैकथनकरे हैं ॥ और यहवस्तु हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकी जाअंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम राग है ॥ और क्रोधकानाम द्वेषहै ॥ और अहंममरूपतैंग्रहणकर्‍येजेदेहादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकेत्याग कूं नहींसहारणा याकानाम अभिनिवेशहै इनपंचक्लेशोंका विस्तारतैंनिरूपणतौ आत्मपुराणके अष्टमेंअध्यायविषे कर्‍याहै ॥ सो तहांसेजानिलेणा ॥ इनपंचक्लेशोंकीभी ताब्रह्मज्ञानकरिकैही निवृत्ति होवैहै ॥ तहांस्मृति ॥ 'ज्ञात्वादेवंमुच्यतेसर्वपाशैः' अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष स्वयंप्रकाशपरब्रह्म कूं 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकार साक्षात्कारकरिकै अविद्यादिकपंचक्लेशरूपपाशोंतैं मुक्तहोवैहै इति ॥ तहां इतनेपर्यंत सूक्ष्मशरीरकेउत्पत्तिकाप्रकार वर्णनकर्‍या ॥ अब स्थूलभूतोंकेउत्पत्तिकाप्रकार वर्णनकरेहैं तहां पंचीकरणभावकूंप्राप्तभयेजेपंचभूतहैं ते स्थूलभूत कहेजावैहैं ॥ तेस्थूलभूत पूर्वउक्तअपंचीकृतपंच भूतोंके तामसअंशतैंउत्पन्नहोवैहैं ॥ सोपंचभूतोंकापंचीकरण इसप्रकारहोवैहै ॥ तहां तमोअंशप्रधान जेपूर्वउक्तआकाशादिकपंचसूक्ष्मभूतहैं ॥ तिनभूतोंविषे एकएकभूतके प्रथम समानदोदोभाग कर्‍ये ॥ तिनदोनोंभागोंविषे एकएकभागकूं पृथक्राखिकै दूसरेभागके पुनःचारिचारिभागकर्‍ये ॥ तिनचारिभागोंकूं यथाक्रमतैं जोदूसरेचारिभूतोंकेअर्द्धभागविषे मिलावणाहै याकानाम पंचीकरणहै ॥ जैसे एक

आकाशके समानदोभागकऱ्ये ॥ तिनदोनोंविषे एकभागतौ पृथक्राख्या ॥ और दूसरेभागकेपुनः चारिभागकऱ्ये ॥ तिनचारोंभागोंविषे एकभागतौ वायुविषेमिलाया ॥ और दूसराभाग तेजविषेमिलाया ॥ और तीसराभाग जलविषेमिलाया ॥ और चतुर्थभाग पृथिवीविषेमिलाया ॥ इसप्रकार वायुकेभी समानदोभागकरिकै एकभागकूंपृथक्राखिकै दूसरेभागकेपुनःचारिभागकरिकै तिनोंविषे एकभाग आकाशविषेमिलाया ॥ दूसराभाग तेजविषेमिलाया ॥ तीसराभाग जलविषेमिलाया ॥ चतुर्थभाग पृथिवीविषेमिलाया ॥ यहरीति तेजादिकतीनभूतोंविषेभी जानिलेणी ॥ इसप्रकारतैं आकाशादिकपंचभूतोंका अर्द्धअर्द्धभागतौ आपणासिद्धहोवैहै ॥ और अर्द्धअर्द्धभाग वायुआदिकचारिभूतमय सिद्धहोवैहै ॥ और कैएकग्रंथकारतौ एकएकभूतके विषमदोदोभागकरिकै अर्थात् एकभागतौ चारिअंशरूप दूसराभाग एकअंशरूप करिकै ताएकअंशरूपअलपभागके पुनःपंचभागकरिकै तिनपंचभूतोंविषे यथाक्रमतैं एकएकभागकेमिलावणेकरिकै पंचीकरणमानेहैं ॥ यहपंचीकरणकाप्रकार आत्मपुराणकेएकादशेअध्यायविषे स्पष्टकरिकैलिख्याहै ॥ सो तहांसैं जानिलेणा इति ॥ ईहां वाचस्पतिमिश्रका यहमतहै ॥ छांदोग्यउपनिषदविषे तेज जल पृथिवी इनतीनभूतोंकीउत्पत्तिकथनकरिकै 'तासांत्रिवृत्तंत्रिवृत्तमेकैकंकरवाणी' इसश्रुतिकरिकै तिनतेजादिकतीनभूतोंका त्रिवृत्करणही कथनकऱ्याहै ॥ तहां एकतेजके समानदोभागकऱ्ये ॥ तिनदोभागोंविषे एकभागकूंपृथक्राखिकै दूसरेभागके पुनःदोभागकऱ्ये ॥ तिनदोनोंभागोंविषे एकभाग जलविषेमिलाया ॥ दूसराभाग पृथिवीविषेमिलाया ॥ यहरीतिजलविषे तथापृथिवीविषेभी जानिलेणी ॥ याकानाम त्रिवृत्करणहै ॥ इस त्रिवृत्करणविषे साउक्तश्रुति ॥९९॥

तथाव्यासभगवान्‌कामूत्र प्रमाणहै ॥ और ताउक्तपंचीकरणविषे कोईश्रुतिसूत्र प्रमाणहैनहीं ॥ यातैं सोपंचीकरणकाप्रतिपादन असंगतहै इति ॥ आचार्यतौ ऐसाकहैहैं ॥ तैत्तिरीयश्रुतिविषे आकाशादिकपंचभूतोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ ताश्रुतिकेविरोधनिवृत्तकरणेवासतै ताछांदोग्यश्रुतिविषे भी आकाशवायुकीउत्पत्तितैंअनंतरही तेजादिकतीनभूतोंकीउत्पत्ति ग्रहणकरणी ॥ और ताछांदोग्य श्रुतिविषे तथाव्याससूत्रविषे जोत्रिवृत्करण कह्याहै ॥ सोत्रिवृत्करण तापंचीकरणकाभी उपलक्षणहै ॥ जोकदाचित् तापंचीकरणकूंनहींमानिये ॥ तौ आकाशवायुके शब्दस्पर्शगुणकी पृथिवीआदिकोंविषे प्रतीतिनहींहोणीचाहिये ॥ और पृथिवीआदिकोंविषे ताशब्दस्पर्शगुणकीप्रतीतिहोवैहै ॥ यातैं प्रामाणिकहोणेतैं सोपंचीकरण अवश्यमान्याचाहिये इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ उक्तपंचीकरणकरिकै जोसर्वभूतोंका एकीभावमानोंगे तौ यहपृथिवीहै यहजलहै ॥ इसप्रकारकाविशेषव्यवहार नहींसंभवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तापंचीकरणकेहुएभी तिनपृथिवीआदिभूतोंविषे आपणाआपणाअंश अधिकहोवैहै ॥ और इतरभूतोंकाअंश अल्पहोवैहै ॥ ताअधिकअंशकूंलैकेही यहपृथिवीहै यहजलहै याप्रकारकाविशेषव्यवहार होवैहै ॥ यातैं तापंचीकरणकेमानणेविषेभी सोविशेषव्यवहार संभवैहै ॥ यहहीव्यवस्था ‘वैशेष्यात्तुतद्वादस्तद्वादः’ इससूत्रविषे श्रीव्यासभगवान्‌नें तथाश्रीभाष्यकारोंनें कथनकरीहै इति॥अब इसउक्तपंचीकृतकरणकाप्रयोजन कहेहै॥इसप्रकार तिनआकाशादिकपंचभूतोंकेपंचीकरणहुएतैंअनंतर तापंचीकृतआकाशविषेतौ एकशब्दगुण अभिव्यक्तहोताभया ॥ और तापंचीकृतवायुविषे शब्द स्पर्श यहदोगुण अभिव्यक्तहोतेभये॥ और तापंचीकृततेजविषे शब्द स्पर्श रूप यहतीनगु

ण अभिव्यक्तहोतेभये ॥ और तापंचीकृतजलविषे शब्द स्पर्श रूप रस यहचारिगुण अभिव्यक्तहोतेभ
ये ॥ और तापंचीकृतपृथिवीविषे शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचगुण अभिव्यक्तहोतेभये॥यद्यपितेश
ब्दादिकपंचगुण यथाक्रमतैं अपंचीकृतआकाशादिकभूतोंविषेभीथे ॥तथापि तिनअपंचीकृतभूतोंविषे
तेशब्दादिकगुण प्रत्यक्षकेयोग्यनहींथे॥और पंचीकरणहुएतैंअनंतर तिनपंचीकृतभूतोंविषे तेशब्दादि
कगुण प्रत्यक्षकेयोग्यहोतेभये ॥ यहही तिनशब्दादिकोंविषे अभिव्यक्तपणाहै ॥ तिनपंचगुणोंविषेभी
एकएकभूतका एकएकगुणही असाधारण जानणा॥और दूसरेगुणतौ कारणतैंप्राप्तहुएजानणे॥जैसे पृ
थिवीविषे अपणासाधारणगुण एकगंधहै ॥ और दूसरेशब्दादिकचारिगुण आकाशादिककारणोंके
गुणहैं ॥ इसप्रकार जलादिकोंविषेभी जानिलेणा। और तिनपंचीकृतपृथिवीआदिकभूतोंतैं ब्रह्मांड उ
त्पन्नहोताभया ॥ तथा तिसब्रह्मांडके अंतर्गत सप्तऊपरिकेलोक तथासप्तनीचेकेलोक यहचतुर्दशलोक
उत्पन्नहोतेभये ॥ और ताब्रह्मांडरूपविराट्पुरुषतैं मनु शतरूपा यहदोनों उत्पन्नहोतेभये ॥ और तिन
दोनोंतैं मनुष्यादिकसृष्टि उत्पन्नहोतीभई ॥ तहां जिसप्रकारतैं ताविराट्पुरुषतैं मनुशतरूपाकीउत्पत्ति
भईहै ॥ तथा तामनुशतरूपातैं मनुष्यादिकसृष्टिकीउत्पत्तिभईहै॥सोप्रकार आत्मपुराणकेचतुर्थअध्या
यविषे हमनें विस्तारतैंनिरूपणकऱ्याहै ॥ सो तहांसेजानिलेणा ॥ और ताब्रह्मांडकेअंतर्गत जापंची
कृतपृथिवीहै ॥ तापृथिवीतैं व्रीहियवादिकऔषधिउत्पन्नहोतेभये ॥ तिनओषधियोंतैं व्रीहियवादिकअ
न्न उत्पन्नहोतेभये ॥ ताअन्नकूं स्त्रियां तथा पुरुष भोजनकरतेभये ॥ तहां पुरुषशरीरविषेतौ सो अन्न शु ॥५६॥
क्ररूपपरिणामकूंप्राप्तहोताभया ॥ जिसशुक्रकूं रेतभीकहेहैं ॥ और तास्त्रीशरीरविषे सोअन्न शोणितरू

पपरिणामकूंप्राप्तहोताभया ॥ तहां पुरुषकेवीर्यकानाम शुक्रहै और स्त्रीकेवीर्यकानाम शोणितहै ॥ ता पितामाताकेशुक्रशोणिततैं मनुष्यादिकस्थूलशरीर उत्पन्नहोतेभये ॥ और सोस्थूलशरीरभी जरायुज १ अंडज २ स्वेदज ३ उद्भिज्ज ४ इसभेदकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां माताकेउदरविषे गर्भकूं आच्छादनकरणेहारा जोचर्मविशेषहै ताकानाम जरायुहै ॥ ताजरायुतैंउत्पन्नहोणेहारेशरीर जरायुज कहेजावैहैं ॥ जैसे मनुष्य गौ अश्व अजा आदिकशरीरहैं ॥ और अंडतैंउत्पन्नहोणेहारेजेशरीरहैं ते अंडजकह्येजावैहैं ॥ जैसे पक्षीसर्पादिक शरीरहै ॥ और उष्णताविशेषरूपस्वेदतैंउत्पन्नहोणेहारे जेशरीरहैं ते स्वेदजकह्येजावैहैं ॥ जैसे यूक मशक मत्कुण कृमि आदिकशरीरहैं ॥ और भूमिकूंभेदनकरिकै आपणेआपणेबीजतैं जेशरीर उत्पन्नहोवैहैं ॥ तेशरीर उद्भिज्ज कह्येजावैहैं ॥ जैसे वृक्ष लतातृण आदिकशरीरहैं ॥ तहां मनुष्यादिकशरीरोंकीन्यांई वृक्षलतादिकभी जीवात्माकेशरीरहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता न्यायप्रकाशकेद्वितीयपरिच्छेदविषे पृथिवीकेनिरूपणविषे विस्तारतैंकथनकरीहै॥सो तहांसेंजानिलेणी इति॥ अब तास्थूलशरीरका अन्यप्रकारतैंभेदकहेहैं ॥ सोउक्तस्थूलशरीर समष्टि १ व्यष्टि २ इसभेदकरिकै पुनः दोप्रकारकाहोवैहै तहांपूर्वउक्त पंचीकृतपंचमहाभूत तथा तिनभूतोंकाकार्यब्रह्मांड तथा ताब्रह्माण्डकेअंतर्वर्त्तिकार्य यहसर्वमिलिकै समष्टिस्थूलशरीर कह्याजावैहै ॥ अथवा जैसेअनेकगोव्यक्तियोंविषे गोत्वजाति अनुस्यूतहोवैहै ॥ तैसे जोशरीर सर्वव्यष्टिस्थूलव्यक्तियों विषेअनुस्यूतहोवैहै ॥ तथा पंचीकृतपंचमहाभूतोंकाकार्यहोवैहै ॥ तथा सर्वब्रह्मांडरूपहोवै ॥ तथा व्यापकहोवैहै ॥ सोशरीर समष्टिस्थूलशरीर कह्याजावैहै ॥ अथवा जैसे अनेकवृक्षोंकेसमूहकानाम वनहै ॥ तैसे सर्वव्यष्टिस्थूलशरीरोंका

जोसमुदायहै ॥ सो समष्टिस्थूलशरीर कह्याजावैहै ॥ ऐसेसमष्टिस्थूलशरीरकरिकैउपहितजो चैतन्यहै ॥ सो विराट् वैश्वानर इनदोनामों करिकै कह्याजावहै ॥ तहां विविधप्रकारतैंप्रकाशमानहोणेतैं ताकूं विराट् कहैहैं ॥ और सर्वनरोंकाअभिमानीहोणेतैं ताकूं वैश्वानर कहैहैं ॥ और जैसे एकगोव्यक्तितैं दूसरीगोव्यक्ति व्यावृत्तहोवैहै ॥ तैसे परस्परव्यावृत्त जोप्रत्येकस्थूलशरीरहै ॥ सो व्यष्टिस्थूलशरीर कह्याजावैहै ताव्यष्टिस्थूलशरीरकरिकैउपहितजोचैतन्यहै सोविश्वइसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ तहां सोचैतन्य सूक्ष्मशरीरकूंनपरित्यागकरिकैहीतास्थूलशरीरविषेप्रवेशकरैहै ॥ याकारणतैं ताकूं विश्वकहेहैं ॥ और जैसे घटादिकव्यक्तिका तथाघटत्वादिकजातिका परस्पर तादात्म्यहावह ॥ तैसे इससमष्टिस्थूलशरीरका तथाव्यष्टिस्थूलशरीरकाभी परस्पर तादात्म्यहीहै ॥तिनदोनोंउपाधियोंकेतादाम्यहुएतावैश्वानर विश्व दोनोंउपहितचैतन्योंकाभी तादात्म्यहीहोवैहै ॥ तहां समष्टिस्थूलशरीरकेअंतर्गत जेपंचीकृतपंचभूतहैं तिनोंकाकार्यपणा इसव्यष्टिस्थूलशरीरविषेहै ॥ और उपादानकारणका तथाउपादेयकार्यका परस्परतादात्म्यलोकविषेप्रसिद्धही है ॥ यातैं तिनदोनोंस्थूलशरीरोंकातादात्म्य संभवैहै ॥ और यहविश्वनामाजीव जबी मैंवैश्वानरहूं याप्रकारकीअभेदउपासनाकरैहै ॥ तबी तावैश्वनरकेसाक्षात्काररकरिकै इसजीवकूं तावैश्वानरकेआनंदकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं ताविश्ववैश्वानरकेतादात्म्यकावर्णन निष्फलनहीं है ॥ किंतु ताउक्तफलकेप्राप्तिकाहेतुहोणेतैं सफलहै॥अथवा यहअधिकारीपुरुष प्रथम श्रुतिउक्तप्रकारतैं विश्ववैश्वानर तैजस सूत्रात्मा प्राज्ञ ईश्वर इनसर्वोंकेस्वरूपकूंजान ॥ तिसतैंअनंतर प्रथम मैंहीवैश्वानरहूं इसप्रकार विश्वकूं वैश्वानररूपकरिकैंचिंतनकरै॥तिसतैंअनंतर मैंहीसूत्रात्माहूं इसप्रका

रतैं तैजसकूं सूत्रात्मारूपकरिकैचिंतनकरै ॥ तिसतैंअंनतर मैंहीईश्वरहूं इसप्रकारतैं प्राज्ञकूं ईश्वररूपकरिकैचिंतनकरै ॥ तिसतैंअनंतर समष्टिव्यष्टिरूपस्थूलसूक्ष्मकारणउपाधिवाला तथाॐकारकावाच्यरूपऐसाजोपरब्रह्महैसोमैंहूं॥इसप्रकार आत्माकूं सर्वात्मरूपकारिकै चिंतनकरै ॥ तिसतैंअनंतर मनकीएकाग्रताकेहुएयहअधिकारीपुरुष सर्वजगतकूंस्थूलसूक्ष्मादिक्रमकरिकै अखंडएकरसआनंदरूपनिर्विशेषपरब्रह्मविषे लयकरै ॥ अर्थात् स्थूलकूं सूक्ष्मविषेलयकरै ॥ और सूक्ष्मकूं कारणविषेलयकरै ॥ और ताकारणकूं परब्रह्मविषेलयकरै ॥ तिसतैंअनंतर ताएकाग्रमनकरिकै मैं अखंडएकरसब्रह्मानंदरूपहूं इसप्रकारतैं आपणेआत्माकूंसाक्षात्कारकरै ॥ इसप्रकारकेअभिप्रायकरिकैही पूर्व समष्टिव्यष्टिउपाधियोंकातादात्म्यवर्णनकारिक तत्उपहितचैतन्योंका तादात्म्यवर्णनकऱ्याहै ॥ यातैं सोतादात्म्यकावर्णन निष्फलनहीं है ॥ किंतु उक्तरीतितैं आत्मसाक्षात्काररूपफलकाहेतुहोणेतैं सफलहै॥यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक 'समाधिकालात्प्रागेवं विचिंत्यातिप्रयत्नतः ॥ स्थूलसूक्ष्मक्रमात्सर्वं चिदात्मनि विलापयेत्' अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष समाधितैंपूर्वकालविषे पूर्वउक्तरीतिसैं विश्ववैश्वानरादिकोंकेअभेदकाचिंतनकरिकै अतिप्रयत्नतैं सर्वजगत्कूंतास्थूलसूक्ष्मादिक्रमतैं चेतनआत्माविषेलयकरै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ कल्पतरुकार आचार्यनैंभीकह्याहै ॥ तहांश्लोक 'निर्विशेषंपरंब्रह्म साक्षात्कर्तुमनीश्वराः॥येमंदास्तेऽनुकंप्यंते सविशेषनिरूपणैः ॥१॥ वशीकृतेमनस्येषांसगुणब्रह्मशीलनात् ॥ तदेवाविर्भवेत्साक्षादपेतोपाधिकल्पनम्' ॥२॥अर्थयह॥जेमंदपुरुष निर्विशेषब्रह्मकेसाक्षात्कारकरणेविषे समर्थनहींहैं ॥ तेमंदपुरुष सविशेषब्रह्मकेनिरूपणकरिकैही गुरुशास्त्रतैं अनुगृहीत करतेहैं ॥ तासगुण

ब्रह्मकीउपासनातैं तिनपुरुषोंकेएकाग्रहुएमनाविषे सोईहीसर्वउपाधियोंतैंरहितनिर्विशेषब्रह्म साक्षात्कार होवैहै इति ॥ किंवा इसउक्तअर्थविषे श्रुतिभीप्रमाणहै ॥ तहांश्रुति॥'एषसर्वेषुभूतेषुगूढात्मानप्रकाशते॥ दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः' अर्थयह॥यहआत्मा सर्वभूतोंविषेस्थितहुआभी गूढहोणेतैं अर्थात् अज्ञानकरिकै आवृत्तहोणेतैं सर्वप्राणियोंकूं प्रतीतहोतानहीं॥ किंतु विचारकरिकैअतिसूक्ष्महुई बुद्धिकरिकैही सूक्ष्मदर्शीपुरुषोंने सोआत्मा साक्षात्कारकरताहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वआपनेस्थूल सूक्ष्म कारण इनतीनव्यष्टिशरीरोंके यथाक्रमतैंअभिमानी विश्व तैजस प्राज्ञ यहतीनजीव कथनकऱ्ये ॥ ते तीनोंजीव स्वतंत्रहैं ॥ अथवा तेतीनों एकहीचैतन्यकी अवस्थाविशेषहैं ॥ तहां प्रथम स्वतंत्रपक्ष जो अंगीकारकरौ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित्तेतीनोंजीव स्वतंत्रहोवैंगे तौ तिनोंका पर स्परभेदभीअवश्यहोवैगा ॥ यातैं सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राज्ञनामाजीवनैं अनुभवकऱ्येजेसुखादिकपदार्थ हैं ॥ तथा स्वप्नअवस्थाविषे तैजसनामाजीवनैं अनुभवकऱ्येजे गजरथादिकपदार्थहैं ॥ तिनपदार्थोंका जाग्रत्अवस्थाविषे विश्वनामाजीवकूं स्मरणनहींहोवैगा॥ जिसकारणतैं अन्यकरिकैअनुभवकऱ्येहुएप दार्थोंका अन्यकूं स्मरणहोतानहीं ॥ जोकदाचित् अन्यकरिकैअनुभूतपदार्थोंका अन्यकूं स्मरणहो ताहोवै ॥ तौ चैत्रनामापुरुषकरिकैअनुभवकऱ्येहुएपदार्थाका मैत्रनामापुरुषकूंभी स्मरणहोणाचाहि ये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ विश्व तैजस प्राज्ञ यहतीनोंजीव स्वतंत्रनहींहैं ॥ किंतु एकहीप्रत्यक्आ त्माकी तेतीनों अवस्थाविशेषहैं ॥ यातैं सोस्मरणकीअनुपपत्तिरूपदोष प्राप्तहोवैनहीं तहांजिसप्रका रतैं तेविश्वादिकतीनों एकहीजीवात्माकीअवस्थाविशेषहैं सोप्रकार दिखावैहैं ॥ एकही सोजीवात्मा

जाग्रत्अवस्थाविषे व्यष्टिस्थूलशरीर सूक्ष्मशरीर कारणअविद्या इनतीनोंकाअभिमानीहुआ विश्व इस नामकरिक कह्याजावैहै ॥ और सोईहीजीवात्मा स्वप्नअवस्थाविषे सूक्ष्मशरीर कारणअविद्या इनदोनों काअभिमानीहुआ तैजस इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और सोईहीजीवात्मा सुषुप्तिअवस्थाविषे एक कारणअविद्याकाअभिमानीहुआ प्राज्ञ इसनामकरिकै कह्याजावै है ॥ और सोईहीजीवात्मा समाधि अवस्थाविषे स्थूल सूक्ष्म कारण इनतीनशरीरोंके अभिमानतैं रहितहुआ शुद्धपरमात्मारूपहोवैहै ॥ यद्यपि यहजीवात्मा एकस्थूलशरीरमात्रकेअभिमानतैंही विश्वसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा एकसूक्ष्मशरीरमात्रकेअभिमानतैंही तैजससंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथापि ईहां स्थूल सूक्ष्मकारण इनतीनशरीरोंके अभिमानतैं जोजीवात्माकी विश्वसंज्ञाकहीहै ॥ तथा सूक्ष्म कारण इनदोनोंशरीरोंकेअभिमानतैं जोतैजससंज्ञानकहीहै ॥ सोत्वंपदार्थकेशोधनविषे उपयोगीजोअन्वयव्यतिरेकहै तिसकेजनावणेवासतैकहीहै ॥ सो अन्वयव्यतिरेकयहहै जाग्रतअवस्थाविषेतो स्थूल सूक्ष्म कारण इनतीनशरीरोंकासाक्षीरूपकरिकै आत्माका भानहोवैहै ॥ और स्वप्नअवस्थाविषे सूक्ष्म कारण इनदोनोंशरीरोंकासाक्षीरूपकरिकै आत्मा का भानहोवैहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेतौ एकअविद्यारूपकारणशरीरकासाक्षीरूपकरिकै आत्मा का भानहोवैहै ॥ और समाधिअवस्थाविषेतौ शुद्धस्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै ताआत्माका भानहोवै है ॥ यहही ताआत्माका जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिसमाधि इनचारिअवस्थावोंविषे अन्वयहै ॥ और स्वप्न अवस्थाविषे जाग्रतकेस्थूलशरीरकाभानहोतानहीं ॥ और शुषुप्तिअवस्थाविषे स्वप्नकेसूक्ष्मशरीरकाभी भानहोतानहीं ॥ और समाधिअवस्थाविषे सुषुप्तिकेकारणशरीरकाभी भानहोतानहीं ॥ यहही स्थूल

सूक्ष्म कारण इनतीनशरीरोंका व्यतिरेकहै ॥ तहां सर्वअनात्माकारवृत्तियोंतैं रहितहोइकै जा चित्तकी केवलआत्माकारअवस्थाहै ताकानाम समाधिहै ॥ तिससमाधिअवस्थाविषे इसपुरुषका देहादिकसर्वपदार्थोंविषे अभिमान निवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं तासमाधिअवस्थाविषे तिनस्थूलादिकतीनोंशरीरोंका व्यतिरेकहीहोवैहै ॥ और तासमाधिअवस्थाविषे यहजीव सर्वअभिमानतैंरहितहोणेतैं शुद्धपरमात्मारूपहीहोवैहै ॥ तहां जोजोपदार्थ व्यावृत्तहोवैहै ॥ सोसर्व अनात्माहीहोवैहै ॥ और जो सर्वत्रअन्वित होवैहै सो आत्माहीहोवैहै ॥ याप्रकारकेनिश्चयकानाम त्वंपदार्थशोधनहै ॥ सोत्वंपदार्थकाशोधन तापूर्वकउक्तअन्वयव्यतिरेककरिकैहीसिद्धहोवैहै इति ॥ अब ताउक्तजीवात्माको जाग्रत् १ स्वप्न २ सुषुप्ति ३ मूर्छा ४ मरण ५ यहपंचअवस्था निरूपणकरेहैं ॥ तहां पूर्वकथनकरेजे श्रोत्रादिकइंद्रियोंके दिग्वातादिकअधिष्ठातादेवताहैं॥तिनदेवतावोंकरिकैअनुगृहीत श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयोंका अनुभव इसपुरुषकूं जिसअवस्थाविषे होवैहै॥साअवस्था जाग्रत् अवस्था कहीजावैहै ॥ और जाग्रत् अवस्थाविषे सुखदुःखरूपभोगकेदेणेहारे जेपुण्यपापरूपकर्महैं॥तिनकर्मोंकेउपरामहुए तथाश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेउपरामहुए जाग्रतकेअनुभवजन्यसंस्कारोंतैं इसपुरुषकूं जिसअवस्थाविषे शब्दादिकविषय तथा तिनोंकेज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ साअवस्था स्वप्नअवस्था कहीजावैहै॥और जिसअवस्थाविषे जाग्रत्स्वप्नदोनोंकेभोगदेणेहारेकर्मोंकीउपरामताकरिकै स्थूलसूक्ष्मशरीरकेअभिमानकीनिवृत्तिद्वारा सर्वविशेषज्ञानोंकीउपरामतारूप बुद्धिकीकारणअज्ञानरूपकरिकैस्थितिहोवैहै॥साअवस्था सुषुप्तिअवस्था कहीजावैहै ॥ और मुद्गरप्रहारादिकनिमित्तकरिकैजन्य जोदुःखरूपविषादहै ॥ ताविषादकरिकै जिसअव

स्थाविषे इसपुरुषकेसर्वविशेषज्ञानोंकीउपरामताहोवैहै ॥ साअवस्था मूर्छाअवस्था कहीजावैहै ॥ यहमू र्छाअवस्था जाग्रतादिकअवस्थावोंतैंभिन्नहीअवस्थाहै ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवाननें 'मुग्धेऽर्द्धसंप त्तिः परिशेषात्' इससूत्रविषेकथनकरीहै ॥ इससूत्रका यहअर्थहै ॥ मुद्गरप्रहारादिकनिमित्त करिकै इस पुरुषकूं जामूर्छाहोवैहै सामूर्छा जाग्रतादिकचारिअवस्थावोंविषे कोईअवस्थाकेअंतर्भूतहै ॥ अथवा तिनचारोंअवस्थावोंतैं कोई भिन्नअवस्थाहै॥इसप्रकारकेसंशयहुएतैंअनंतर याप्रकारका वादीकापूर्वपक्ष प्राप्तभया श्रुतिस्मृतिआदिकोंविषे इसजीवात्माकी जाग्रतादिकचारिअवस्थाहीकथनकरीहैं ॥ तिनों तैंभिन्न मूर्छाअवस्था कथनकरीनहीं यातैं सामूर्छा तिनजाग्रतादिकअवस्थावोंविषेंही अंतर्भूतहै ॥ ताकेविषेभी विशेषज्ञानोंकीउपरामता सुषुप्तिविषे तथामूर्छाविषे समानहोवैहै ॥ यातैं सामूर्छा सुषुप्तिवि षेही अंतर्भूतहै ॥ तासुषुप्तितैं भिन्नअवस्था मूर्छानहीं है ॥ ऐसेपूर्वपक्षकेप्राप्तहुए ताउक्तसूत्रकरिकै श्री व्यासभगवाननें यहसिद्धांतकऱ्याहै ॥ सामूर्छाअवस्था तिनजाग्रतादिकचारिअवस्थावोंतैं भिन्नअवस्था है ॥ तहां जाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषे विशेषज्ञानोंकाअभावहोतानहीं ॥ और तामूर्छाअवस्थाविषेतौ सर्व विशेषज्ञानोंकाअभावहोवैहै ॥ याकारणतैं सामूर्छाअवस्था ताजाग्रत्स्वप्नअवस्थाविषेभी अंतर्भूतनहीं है ॥ और मरणअवस्थातैंअनंतर इसपुरुषका पुनःउत्थानहोतानहीं ॥ और मूर्छाअवस्थातैंअनंतरतौइ सपुरुषका पुनः उत्थानहोवैहै ॥ याकारणतैं सामूर्छाअवस्था तामरणअवस्थाविषेभी अंतर्भूतनहीं है ॥ और सुषुप्तपुरुषका मुख प्रसन्नरहैहै ॥ तथा शरीर निःष्कंपहोवैहै ॥ और मूर्छितपुरुषका मुख विकराल होवैहै ॥ तथा शरीरभी कंपसहितहोवैहै ॥ याकारणतैं तामूर्छाका सुषुप्तिअवस्थाविषेभी अंतर्भावनहीं

है ॥ किंतु परिशेषतैं सामूर्छा तिनजाग्रतादिकचारिअवस्थावोंतैं भिन्नहीअवस्था सिद्धहोवैहै ॥ औरउक्तरीतिसैं तासुषुप्तिकी तथा मूर्छाकी परस्परविलक्षणताकेहुएभी सर्वविशेषज्ञानोंकाअभाव दोनोंविषे तुल्यही होवैहै ॥ याकारणतैं सामूर्छा अर्द्धसुषुप्ति कहीजावैहै इति ॥ और इसशरीरकेभोगदेणेहारेकर्मोंकीनिवृत्तिकरिकैसामान्यविशेषरूपदोप्रकारकेदेहाभिमानकेनिवृत्तिहुएभावीदेवादिकशरीरकीप्राप्तिपर्यंत जा उक्तसतदशतत्त्वोंकीपिंडीभावअवस्थाहै ॥ साअवस्था मरणअवस्था कहीजावैहै ॥ इहांयहतात्पर्य है ॥ सोदेहाभिमान सामान्य विशेष इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहांसुषुप्तिविषे विशेषदेहाभिमानके निवृत्तहुएभी इसपुरुषकूं सामान्यदेहाभिमान रहेहै ॥ तादेहाभिमानकरिकैही यहपुरुष तासुषुप्तितैंउत्थानकूंप्राप्तहोवै है॥जोकदाचित् इसपुरुषकूं तासुषुप्तिविषे सो सामान्यदेहाभिमानभीनहींहोता ॥ तौ इसपुरुषका तासुषुप्तितैंउत्थानहीनहींहोता ॥ जैसे मरणअवस्थावालेपुरुषका पुनःउत्थाननहींहोवैहै॥यातैं ताउत्थानरूपहेतुतैं इसपुरुषका तासुषुप्तिविषे सोसामान्यदेहाभिमान अनुमानकऱ्याजावैहै ॥ और जाग्रत्अवस्थाविषे तथास्वप्नअवस्थाविषेइसपुरुषकूं मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इसप्रकारकाविशेषदेहाभिमानरहेहै ॥ और मरणअवस्थाविषे इसपुरुषका सोदोनोंप्रकारकादेहाभिमान निवृत्तहोइजावैहैइति॥ ईहां केएकग्रंथकारतौ तामरणअवस्थाकूं तामूर्छाअवस्थातैंभिन्नअवस्था मानतेनहीं ॥ किंतुतामरणअवस्थाका तामूर्छाअवस्थाविषेही अंतर्भावमानेहैं ॥ तहांमूर्छाकूंप्राप्तहुएपुरुषके जोकदाचित् इसदेहविषे भोगदेणेहारेकर्म बाकीरहेहैं ॥ तौ तिस मूर्छातैं इसपुरुषका पुनःउत्थानहोवैहै ॥ और जोकदाचित् ते कर्म नहींरहेहैं ॥ तौ इसपुरुषका मरणहीहोवैहै ॥ यातैं सामरणअवस्था तामूर्छाअवस्थाके अंतर्भूतही

है इति ॥ किंवा जैसे विश्व तैजस प्राज्ञ यह तीनों एकहीजीवात्माकी अवस्थाविशेषहैं ॥ तैसे वैश्वा नरहिरण्यगर्भ ईश्वर यहतीनोंभीएकही परमात्माकी अवस्थाविशेषहैं ॥ तहां एकही परमात्मादेव सम ष्टिस्थूलशरीर तथासूक्ष्मशरीर तथातिनदोनोंकाकारणमाया इनतीनोंकरिकैउपहितहुआ वैश्वा नर इसनाम करिकै कह्याजावैहै ॥ और सोईही परमात्मादेव समष्टिसूक्ष्मशरीर तथाताकाकारणमाया इनदोनोंकरिकैउपहितहुआ हिरण्यगर्भ इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ और सोहीपरमात्मा केवल एक मायाकरिकैउपहितहुआ ईश्वर इसनामकरिकैकह्याजावैहै इति ॥ अब वैश्वानर हिरण्यगर्भ ईश्वर इनती नोंकेउपासनाकाफलकहैहैं ॥ तहां यहजीव जबी मैंहींवैश्वानरहूं इसप्रकारतैं तावैश्वानरकीअभेदउपास नाकरैहै ॥ तबी इसजीवकूं तावैश्वानरभावकीप्राप्तिरूपफल प्राप्तिहोवैहै ॥ और यहजीव जबी मैंहीहिर ण्यगर्भहूंइसप्रकारतैं ताहिरण्यगर्भकीअभेदउपासनाकरैहै ॥ तबीइसजीवकूं ताहिरण्यगर्भभावकीप्रा प्तिरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ और यह जीव जबी मैंहीईश्वरहूं याप्रकारतैं ताईश्वरकीअभेदउपासनाकरैहै ॥ तबी इसजीवकूं ताईश्वरभावकी प्राप्तिरूपफल प्राप्तहोवैहै॥ इसीअभेदउपासनाकूं शास्त्रविषेअहंग्रहउपा सना कहैहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ वैश्वानर हिरण्यगर्भ ईश्वर यहतीनों एकहीपरमात्माकी अव स्थाविशेषहैं ॥ इसतुम्हारेकहणेकरिकै तीनोंविषे ईश्वरपणाहीसिद्धहोवैहै ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतै 'योऽशनायापिपासेशोकंमोहंजरांमृत्युमत्येति' इसश्रुतिनें अशना पिपासा शोक मोह जरा मरण इ त्यादिकसर्वधर्मोंतैंरहित ईश्वरकूंकह्याहै ॥ और वैश्वानर हिरण्यगर्भ इनदोनोंविषेतो श्रुतिनें क्षुधा भय जन्म मरण बंध मोक्ष इत्यादिकधर्म कथनकरेहैं॥तेसर्वधर्म जीवकेहीप्रसिद्धहैं ॥ तहां हिरण्यगर्भविराट्

पुत्रकूंउत्पन्नकरिकै क्षुधातुरहुआ ताविराट्पुत्रकेभक्षणकरणेवासतै प्रवृत्तहोताभया ॥ तिसकूंदेखिकैभय भीतहुआ सोविराट् भाण ऐसेशब्दकूंकरताभया ॥ इसप्रकारके तेक्षुधाभयादिकजीवकेधर्म आत्मपुराणकेचतुर्थअध्यायविषे स्पष्टकरिकैकहेहैं ॥ यातैं तावैश्वानरहिरण्यगर्भविषे ईश्वररूपता संभवतीनहीं ॥ किंतु जीवरूपताहीसंभवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ बहुतश्रुतिस्मृतिआदिकोंविषे तावैश्वानरहिरण्यगर्भकूं ईश्वररूपताहीकहीहै ॥ और कोईकश्रुतिस्मृतिविषे जो तावैश्वानरहिरण्यगर्भके जन्मादिकधर्म प्रतिपादनकर्येहैं ॥ सो इसअधिकारीपुरुषकूं अनित्यादिकदोषदृष्टिकरिकै तिसहिरण्यगर्भादिकपदतैं वैराग्यकीप्राप्तिवासतै कथनकर्येहैं ॥ कोई वैश्वानरहिरण्यगर्भकेजीवपणेविषे तिनवचनोंकातात्पर्यनहीं है ॥ जोकदाचित् श्रुतिप्रतिपादित क्षुधाभयादिकजीवधर्मोंकेसंबंधतैं तावैश्वानरहिरण्यगर्भकूं जीवरूप मानिये तौ जीवविषेप्रसिद्ध जेइच्छादिकधर्महैं ॥ तिनोंकूं ईश्वरविषेप्रतिपादनकरणेहारीजो 'सोऽकामयत तदैक्षत तन्मनोऽकुरुत' इत्यादिकश्रुतिहैं ताश्रुतितैं ताईश्वरकूंभी जीवरूपताहोणीचाहिये ॥ यातैं सोवैश्वानर तथाहिरण्यगर्भ ईश्वररूपहीं है जीवरूपनहीं यहसिद्धभया ॥ तहां जोपुरुष तिस ईश्वरकीअभेदउपासनाकरैहै सोपुरुष तिसईश्वरभावकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ यहउक्तउपासनाकाफल श्रुति स्मृतिविषेभी कथनकर्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'तंयथायथोपासतेतथैवभवति' अर्थयह ॥ यहअधिकारी पुरुष तिसपरमात्माकूं जिसजिसवैश्वानरादिरूपकरिकै उपासनाकरैहै तिसातिसरूपविशिष्टपरमेश्वर भावकूंही सो अधिकारीपुरुष प्राप्तहोवैहै इति ॥ और यहहीउपासनाफल श्रीसदाशिवने रघुनाथके प्रति कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'येनाकारेणयेमर्त्या मामेवैकमुपासते । तेनाकारेणतेभ्योऽहं प्रसन्नोवांछि

तंददे ' अर्थयह ॥ यहजीव मुझएकहीपरमेश्वरकूं जिसजिसआकारकरिकैउपासनाकरै है ॥ तिसीतिसी आकारकरिकै मैंपरमेश्वर प्रसन्नहुआ तिनउपासकोंकेताईंवांछितअर्थ प्राप्तकरूंहूं इति ॥ यहउक्तअर्थही श्रीकृष्णभगवानने गीताविषे 'यंयंवापिस्मरन्भावं त्यजत्यंतेकलेवरम् । तंतमेवैतिकौंतेय सदातद्भावभावितः ' इसश्लोककरिकै कथनकर्‍याहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तरीतिसे भावनाकेउत्कर्षकरिकै तिसईश्वरकेसाक्षात्कारवालेपुरुषकूं तिसईश्वरभावकीप्राप्तिरूपफलप्राप्तिहोवो॥ परन्तु ताभावनाकीमंदताहुए तिसउपासकपुरुषकूं किसफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताभावनाकेमंदताहुए इसपुरुषकूं सोपूर्वउक्तफल प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तामंदभावनाकीतारतम्यताकरिकै ताउपासकपुरुषकूं सार्ष्टि १ सारूप्य २ सामीप्य ३ सालोक्य ४ यहचारिप्रकारकाफल प्राप्तहोवैहै॥तहां आपणैमनुष्यभावकीविस्मृतिपूर्वक जो तिसउपास्यदेवभावकीप्राप्तिहै ॥ यहही ताभावनाविषे उत्कर्षपणाहै ॥ और आपणेमनुष्यभावके किंचित्स्मरणपूर्वक जो ताउपास्यदेवभावकीप्राप्तिहै यहही ताभावनाविषे मंदताहै ॥ तहां जगतकीउत्पत्तिआदिकव्यापारकूंछोडिकै इसउपासकपुरुषकूं जो परमेश्वरकेसमान ऐश्वर्य तथा भोगोंकीप्राप्तिहै याकानाम सार्ष्टिहै ॥ और इसउपासकपुरुषकूं ताईश्वरकेसमानरूपकीजोप्राप्तिहै ताकानाम सारूप्यहै ॥ और ताईश्वरकेसमीपवर्त्तिपणेकानाम सामीप्यहै ॥ और ताईश्वरकेलोकविषेरहणेकानाम सालोक्यहै ॥ इसप्रकारकेचारिफलोंकूं सोउपासकपुरुष तामंदभावनाकीतारतम्यतातैं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ' साम्नःसायुज्यंसलोकतांजयाति ' अर्थयह ॥ यहउपासकपुरुष ताभावनाकीतारतम्यताकरिकैं हिरण्यगर्भके सायुज्यसालोक्यादिकोंकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ तहां पूर्व तत्पदार्थकेवाच्यार्थनि

रूपणप्रसंगकरिकै सगुणब्रह्मकेउपासकपुरुषोंकूं तिसतिसउपासनाकरिकै तिसतिससगुणब्रह्मकीप्राप्तिरू पफल निरूपणकऱ्या॥अब निर्गुणब्रह्मकेउपासकपुरुषोंकूं तिसनिर्गुणब्रह्मकी प्राप्तिरूपफलवर्णनकरेहैं॥ तहां जेपुरुष विवेकादिकचारिसाधनोंकरिकैसंपन्नहैं ॥ तथा मंदबुद्धिवालेहोणेतैं वेदांतशास्त्रकेविचारक रणेविषे असमर्थहैं ॥ तथा निर्गुणब्रह्मकेजाणनेकीजिनोंकूंइच्छाहै॥तेपुरुष श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं तानिर्गुणब्रह्मकास्वरूपनिश्चयकरिकैसर्वस्थूलसूक्ष्मकारण उपाधितैंरहिततथासत्चित्आनंदस्वरूपऐ सानिर्गुणब्रह्म मैंहूं याप्रकारकी निर्गुणब्रह्मकीउपासनाकरै॥तानिर्गुणब्रह्मकीउपासनाकरिकै इसअधिका रीपुरुषकूं इसीशरीरविषे जीवत्अवस्थाविषे अथवा मरणअवस्थाविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे तानिर्गुणब्र ह्मकासाक्षात्कारहोइकै तानिर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपफल होवैहै ॥ जैसे मणिकीप्रभाविषे मणिबुद्धिक रिकैप्रवृत्तहुएपुरुषकूं तामणिकीप्राप्तिरूपफलहोवैहै॥तैसे निदिध्यासनरूप तानिर्गुणब्रह्मकीउपासनाक रिकै इसअधिकारीपुरुषकूं तानिर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिरूपफलहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ ज्ञानप्रसादेनविशुद्धस त्त्वस्ततस्तुतंपश्यतिनिष्कलंध्यायमानः, अर्थयह ॥ तानिर्गुणब्रह्मकीउपासनाकरिकै अतिशुद्धहुआहै चित्तजिसका ऐसासोध्यानकरताहुआपुरुष तानिर्गुणब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरैहै इति॥ तहां विचारविषेअस मर्थपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं निर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूं परोक्षनिश्चयकरिकै मैंहीनिर्गुणब्रह्महूं याप्रकारकी तानिर्गुणब्रह्मकीउपासनाकरै ॥ ताउपासनातैं तिसपुरुषकूं निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ यहउक्त अर्थ श्रीभगवाननेभी गीताविषे अर्जुनकेप्रतिकह्याहै ॥ तहांश्लोक॥ 'अन्येत्वेवमजानंतः श्रुत्वान्येभ्य उपासते । तेपिचातितरंत्येवमृत्युंश्रुतिपरायणाः' अर्थयह ॥ जेपुरुष मंदबुद्धिवालेहोणेतैं आप वेदांतशा

ह्मकेविचारकरणेविषेसमर्थनहींहैं।तेपुरुषब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैंता।निर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूंश्रवणकरिकै जबी अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाध्यानकरैं ॥ तबी तेउपासकपुरुषभी तानिर्गुणब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानरूपमृत्युकूं अवश्यनाशकरैंहैं ॥ तहां । तेपिच।।तितरंत्येव । इसवचनविषेस्थितअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्‌ने यहकैमुतिकन्याय सूचनाकऱ्या॥ जबी विचारविषे असमर्थमंदबुद्धिपुरुषभी ता।निर्गुणब्रह्मकी उपासनाकरिकै ताअज्ञानकूंनाशकरैंहैं तबी विचारविषेसमर्थपुरुष ताअज्ञानकूंनाशकरेंहैं याकेविषे क्याकहणाहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जितनीकज्ञानकांडविषेकथनकरीहुई सगुणउपासनाहैं वानिर्गुणउपासनाहैं ॥ तिनसर्वउपासनावोंका चित्तकीएकाग्रताद्वारा ब्रह्मसाक्षात्कारही मुख्यफलहै ॥ और ब्रह्मलोकादिकतौ तिनउपासनावोंका अवांतरफलहै ॥ मुख्यफलनहीं है ॥ याकारणतैंही ब्रह्मसूत्रकर्ता श्रीव्यासभगवान्‌ने तिनउपासनावोंका ज्ञानकांडविषेहीविचारकऱ्याहै इति ॥ तहां पूर्व माया उपहिततत्पदार्थब्रह्मका जगत्‌केजन्मादिकोंकाकारणत्वरूप तटस्थलक्षण कऱ्याथा ॥ सोईहीतटस्थलक्षण ताब्रह्मतैं मायाद्वारा सूक्ष्मस्थूलप्रपंचकीउत्पत्तिकेनिरूपणकरिकै अबपर्यंत सिद्धकऱ्या ॥ इसीका नाम अध्यारोपहै ॥ तहां तत्‌भावतैंरहितवस्तुविषे जोतत्‌बुद्धिहै ताकानाम अध्यारोपहै ॥ जैसे प्रसंगविषे वास्तवतैं जगत्‌भावतैंरहितब्रह्मविषे जोजगतबुद्धिहै याकानाम अध्यारोपहै ॥ और अध्यारोपअपवाद इनदोनोंकरिकैही इसअधिकारीपुरुषकेप्रति गुरुशास्त्र तानिर्गुणब्रह्मकाउपदेशकरैंहै ॥ यातैं अब ताब्रह्मविषेअध्यारोपितप्रपंचकाअपवाद निरूपणकरैंहैं ॥ तहां जिसअधिष्ठानविषे जोवस्तु तीनकालमें अविद्यमानहुआभी भ्रांतिकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ तिसीअधिष्ठानविषे जोतावस्तुकेअभावकानिश्चयहै या

कानाम अपवादहै ॥ जैसे शुक्तिआदिकोंविषे भ्रांतिकरिकै प्रतीतभयेजेरजतादिकहैं ॥ तिनरजतादिकों का तिनशुक्तिआदिकोंविषे यहरजतनहीं है किंतुशुक्तिहीहै इसप्रकारका जोअभावनिश्चयहै याकाना मअपवादहै ॥ तैसे अधिष्ठानब्रह्मविषे भ्रांतिकरिकैप्रतीतभयाजो पूर्वउक्तमायादिकप्रपंचहै ॥ ताप्रपंच काजो तिसअधिष्ठानब्रह्मविषे यहप्रपंच तीनकालमेंनहींहै याप्रकारतैं अभावनिश्चयहै ॥ यहही ताप्रपंच काअपवादहै ॥ इसीअपवादकूं शास्त्रविषे बाध कहैं हैं तथा विलापन कहैं हैं ॥ तहां जिसअधिष्ठा नविषे जोवस्तु प्रतीतहोवैहै ॥ तिसीअधिष्ठानविषे जोतिसवस्तुका तीनकालविषे अत्यंतभावकानि श्चयहै ताकूं शास्त्रविषे बाधकहैं हैं ॥ सोयहबाध शास्त्रीय १ यौक्तिक २ प्रात्यक्षिक ३ इनभेदोंकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां 'अथातआदेशोनेतिनेति । नेहनानास्तिकिंचन' इत्यादिकशास्त्रतैं जो ताअधिष्ठानब्रह्मविषे सर्वप्रपंचकेअभावकानिश्चयहोवैहै ॥ सो शास्त्रीयबाध कह्याजावैहै ॥ और जैसे मृत्तिकारूपउपादानकारणतैंभिन्नताकरिकै घटरूपकार्यका अभावहीनिश्चयहोवैहै ॥ तैसे सर्वप्रपंच का अभिन्ननिमित्तउपादानकारण जोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मतैंभिन्न सर्वप्रपंचकाअभावनिश्चयकरिकै ताह श्यप्रपंचकेमिथ्यात्वनिश्चयकरिके जो ब्रह्मात्ममात्रताकानिश्चयहै सो यौक्तिकबाध कह्याजावैहै ॥ और अहंब्रह्म तत्त्वमसि इत्यादिकमहावाक्यजन्यसाक्षात्कारकरिकै जोकार्यप्रपंचसहितअज्ञानकी निवृत्तिहै सो प्रात्यक्षिकबाध कह्याजावैहै ॥ तहां पूर्वउक्तयौक्तिकबाधका यहक्रमहै ॥ स्थूलशरीर तैंलैकेब्रह्मांडपर्यंत जितनाकस्थूलप्रपंचहै सो पंचीकृतस्थूलभूतोंकाकार्यहै यातैं तास्थूलप्रपंचकूं तिनस्थूलभूतोंविषेलयकरै ॥ अर्थात् तिनस्थूलभूतोंतैं सोस्थूलप्रपंच भिन्ननहींहै याप्रकारकानिश्चय

यहअधिकारीपुरुष करै ॥ तिसतैंअनंतर तिनस्थूलभूतोंकूं तथासमष्टिव्यष्टिरूपसर्वसूक्ष्मशरीरोंकूं आपणेकारणरूप अपंचीकृतपंचसूक्ष्मभूतोंविषे लयकरै॥अर्थात्ते स्थूलभूत तथासमष्टिव्यष्टिसूक्ष्मशरीरतिनसूक्ष्मभूतोंकाकार्यहोणेतैं तिनोंतैंभिन्ननहींहै याप्रकारकानिश्चयकरै ॥ तहां पूर्व जिसजिससूक्ष्मभूतके जिसजिससात्विकादिकअंशतैं जिसजिसइंद्रियादिककार्यकीउत्पत्तिकथनकरीथी तिसतिसकार्यका तिसतिसभूतकेसात्विकादिकअंशविषेही लयकरणा ॥ तात्पर्ययह ॥ स्थूलभूतोंकातौ तिनसूक्ष्मभूतोंके तामसअंशविषे लयकरणा ॥ और ज्ञानइंद्रियअंतःकरणका तिनसूक्ष्मभूतोंकेसात्विकअंशविषे लयकरणा ॥ और कर्मइंद्रियप्राणका तिनसूक्ष्मभूतोंकेराजसअंशविषे लयकरणा ॥ औरतिनसूक्ष्मभूतोंकाभी आपणेआपणेकारणविषे लयकरणा ॥ तहां पृथिवीकातौ जलविषेलयकरै ॥ और ताजलका तेजविषे लयकरै ॥ और तातेजका वायुविषेलयकरै ॥ और तावायुका आकाशविषेलयकरै ॥ और ताआकाशका अज्ञानविषेलयकरै॥और ताअज्ञानका चैतन्यमात्रविषेलयकरै ॥ इहां यहतात्पर्यहै ॥ जोजोकार्यहोवैहै ॥ तिसकी आपणेउपादानकारणतैंभिन्नसत्ताहोतीनहीं ॥ यातैं उपादानकारणतैंभिन्न कार्यनहीं है इसप्रकारकानिश्चयकरिकै ताकार्यकीविस्मृतिपूर्वक जो ताएककारणविषयकस्मरणहै ॥ यहही ताकार्यका ताकारणविषेविलापनहै ॥ और सर्वप्रपंचका परमकारणब्रह्महै ॥ यातैं तासर्वप्रपंचकाविस्मरणकरिकै जो ताएकब्रह्मविषयकस्मरणहै यहही ताब्रह्मविषे सर्वप्रपंचकाविलापनहै ॥ इसीकूं वेदांतशास्त्रविषे यौक्तिकबाध कहैं हैं ॥ यहहीयौक्तिकबाध विष्णुपुराणविषेभी कथनकर्‍याहै ॥ तहांश्लोक ॥
'जगत्प्रतिष्ठादेवर्षेपृथिव्यप्सुविलीयते । ज्योतिष्यापःप्रलीयंतेज्योतिर्वायौप्रलीयते ॥१॥ वायुश्चलीयते

व्योम्नितच्चाव्यक्तेप्रलीयते। अव्यक्तंपुरुषेब्रह्मन्निष्कलेसंप्रलीयते' ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ हेनारद! जगत्‌काआधारभूतपृथिवी जलविषेलयहोवैहै ॥ और तेजल तेजविषेलयहोवैं हैं और सोतेज वायुविषेलयहोवैहै ॥ और सोवायु आकाशविषेलयहोवैहै ॥ और सोआकाश अव्यक्तविषेलयहोवैहै ॥ और सोमायारूप अव्यक्त परमात्माविषेलयहोवैहै इति ॥ और यहउक्तयौक्तिकबाधही वार्तिककारने 'अकारंपुरुषंविश्वमुकारेप्रविलापयेत्। उकारंतैजसंसूक्ष्मंमकारेप्रविलापयेत्। मकारंकारणंप्राज्ञंचिदात्मनिविलापयेत्' इत्यादिअवचनोंकरिकै कथनकर्‍याहै इति ॥ किंवा इसपूर्वउक्त अध्यारोप अपवाद दोनोंकरिकै तत्त्वंपदार्थकाशोधनभी सिद्धहोवैहै ॥ सोशोधनकाप्रकार दिखावैंहैं ॥ तहांसमष्टिस्थूलशरीर समष्टिसूक्ष्मशरीर माया १ तथायथाक्रमतैं इनतीनोंकरिकैउपहित वैश्वानर सूत्रात्मा ईश्वर २ तथा तिनसर्वोंकाअधिष्ठानरूप निरुपाधिकअखंडचैतन्य ३ यहतीनों तप्तलोहपिंडकीन्याईं एकरूपकरिकैप्रतीतहुएतत्पदकावाच्यअर्थ होवैहैं ॥ और समष्टि स्थूलशरीर तथासूक्ष्मशरीर तथामाया इनसर्वोंतैं अन्वयव्यतिरेककरिकै पृथक्‌ निश्चयकर्‍याजोअखंडचैतन्यहै॥सो अखंडचैतन्यतत्पदकालक्ष्यअर्थहोवैहै॥तहांतत्पदार्थकेशोधनकाउपायभूत अन्वयव्यतिरेक याप्रकारकाहोवैहै॥ पंचीकृतस्थूलप्रपंचकीस्थितिअवस्था विषेतौतास्थूलप्रपंचकासाक्षीरूपकरिकै सोपरमात्मा विद्यमानहै ॥ और तापंचीकरणतैंपूर्वतौ सूक्ष्मभूतोंका तथातिनोंकेकार्यका साक्षीरूपकरिकै सोपरमात्मा विद्यमानहै ॥ और तिनआकाशादिकसूक्ष्मभूतोंकीउत्पत्तितैं पूर्व प्रलयअवस्थाविषेतौ मायाकासाक्षी रूपकरिकै सोपरमात्मा विद्यमानहोवैहै ॥ और तत्त्वज्ञानकरिकै तामायारूपअज्ञानकेनिवृत्तहुए तथाभोगकरिकैप्रारब्धकर्मकेनाशहुए इसजीवकेवर्त्तमानशरीरकेपा

ततैंअनंतर विदेहमुक्तिअवस्थाविषे सोपरमात्मा अखंडस्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै विद्यमानहोवैहै ॥ य
हहीतातत्पदार्थरूपपरमात्माका अन्वयहै और समष्टिस्थूलशरीरका पंचीकरणतैंपूर्व भानहोतानहीं ॥
और समष्टिसूक्ष्मशरीरका आकाशादिकभूतोंकीउत्पत्तितैंपूर्व भानहोतानहीं ॥ और मायाका मुक्ति
अवस्थाविषेभानहोतानहीं ॥ यहही तासमष्टिस्थूलशरीरका तथासमष्टिसूक्ष्मशरीरका तथामायाकाव्य
तिरेकहै ॥ इसप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै शोधनकऱ्याजोतत्पदार्थहै सोकार्यसहितमायाकेसंबं
धतैंरहित अखंड सत्चित्आनंदस्वरूप परमात्मा तत्पदकालक्ष्यअर्थहोवैहै इति ॥ अब त्वंपदार्थका
शोधन कहैहैं ॥ तहां व्यष्टिस्थलशरीर व्यष्टिसूक्ष्मशरीर तिनदोनोंकाकारणरूपअविद्या १ तथायथाक्र
मतैं उक्ततीनशरीरोंकरिकैउपाहित विश्व तैजस प्राज्ञ२ तथा तिनसर्वोंकाआधाररूप अनुपहितप्रत्यक्चै
तन्य ३ यहतीनों तप्तलोहापिंडकीन्यांई एकरूपकरिकैप्रतीतहुए त्वंपदकावाच्यअर्थहोवैं हैं ॥ और अ
न्वयव्यतिरेककरिकै स्थूल सूक्ष्म कारण इनतीनशरीरों तैं पृथक्कऱ्याजो सत्चित्आनंदस्वरूप प्रत्यक्
चैतन्यहै ॥ सो त्वंपदकालक्ष्यअर्थ होवैहै ॥ तहांत्वंपदार्थ केशोधनविषेउपयोगीजोअन्वयव्यतिरेकहै ॥
सोपूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ सोइहांभीजानिलेणा इति ॥ अबतिनशोधिततत्त्वंपदार्थोंका अभेदरूप महा
वाक्यार्थ वर्णनकरें हैं॥तहां पूर्वकथनकऱ्याजो तत्पदकालक्ष्य अर्थशुद्धचैतन्यहै तथात्वंपदकालक्ष्यअर्थ
शुद्धचैतन्यहै ॥ तिनदोनोंलक्ष्यअर्थोंकूंग्रहणकरिकै तिनसंबंधोंकरिकैसहितहुआ तत्त्वमस्यादिकमहावा
क्य लक्षणावृत्तिकरिकै अखंडअर्थकाबोधकहोवै है ॥ तहां सामानाधिकरण्य १ विशेषणविशेष्यभाव २
लक्ष्यलक्षणभाव ३ यहतीनसंबंध तामहावाक्यकेसहकारीहोवैं हैं॥तहां तत्त्वमसि इसवाक्यविषेजो तत्

त्वं यहदोपदहैं ॥ तिनोंकातौ परस्पर सामानाधिकरण्यसंबंधहै ॥ और तिनदोनोंपदों केअर्थोंका परस्पर विशेषणविशेष्यभावसंबंधहै ॥ और तिनदोनोंपदोंकाअथवातिनदोनोंअर्थोंका अखंडचैतन्यकेसाथि लक्ष्यलक्षणभावसंबंधहै ॥ अब यहतीनोंसंबंध दृष्टांतकरिकैस्पष्टकरें हैं ॥ तहां 'भिन्नप्रवृत्तिनिमित्तानांशब्दानामेकस्मिन्नर्थेवृत्तिः सामानाधिकरण्यम्' अर्थयह ॥ भिन्नभिन्नहैप्रवृत्तिकानिमित्तजिनोंका ऐसेशब्दों की जोएकअर्थविषेवृत्तिहै ॥ यहही तिनपदोंका परस्पर सामानाधिकरण्यसंबंधहै ॥ जैसे 'सोऽयंदेवदत्तः' अर्थयह जोपूर्व देवदत्तनामापुरुष तुमनैं देख्याथा सोईयहदेवदत्तहै ॥ इसवाक्यविषे सशब्दतौ तत्देशकालविशिष्टदेवदत्तकावाचकहै ॥ और अयंशब्द एतत्देशकालविशिष्टदेवदत्तकावाचकहै ॥ तहां ताएकही देवदत्तविषे सशब्दकेप्रवृत्तिकातौ तत्देशकालविशिष्टत्व निमित्तहै ॥ और अयंशब्दके प्रवृत्तिका एतत्देशकालविशिष्टत्व निमित्तहै ॥ और सोय यहदोनोंशब्द भागत्यागलक्षणाकरिकै तिस तत्देशकालविशिष्टत्वअंशकातथाएतत्देशकालविशिष्टत्वअंशका परित्यागकरिकैताएकही देवदत्त पिंडकाबोधनकरैं हैं ॥ यहही सोऽयं इनदोनोंशब्दोंका परस्पर सामानाधिकरण्यसंबंधहै ॥ और 'सोऽयंदेवदत्तः' इसउक्तवाक्यविषेही सशब्दकाअर्थ जोतत्देशकालविशिष्टहै ॥ और अयंशब्दकाअर्थ जो एतत्देशकालविशिष्टहै ॥ तिनदोनोंअर्थोंका परस्पर भेदकीनिवृत्तिकरणेहारा विशेषणविशेष्यभावसंबंधहै ॥ तहां 'सोऽयं' इसप्रकारकेवाक्यप्रयोगाविषेतौ सशब्दकाअर्थ विशेष्यहै और अयंशब्दकाअर्थ विशेषणहै ॥ और 'अयंसः' इसप्रकारकेवाक्यप्रयोगविषेतौ अयंशब्दकाअथ विशेष्यहै और सशब्दकाअर्थ विशेषणहै ॥ और 'सोऽयंदेवदत्तः' इसवाक्याविषेस्थित 'सः अयं' इनदोशब्दोंकीभागत्यागलक्ष

णाकरिकै तत्देशकालविशिष्टत्वएतत्देशकालविशिष्टत्व इनदोनोंविरोधीअंशोंकापरित्यागकरिकै अवि रुद्धदेवदत्तपिंडमात्रका तावाक्यतैंबोधहोवैहै ॥ यातैं सोदेवदत्तपिंडमात्रही सोऽयंइसवाक्यकालक्ष्य अर्थ है।।ऐसेवाक्यार्थरूपलक्ष्यदेवदत्तकेसाथि सोऽयं इनदोनोंपदोंका तथा इनदोनोंपदोंकेउक्तअर्थोंका लक्ष्य लक्षणभावसंबंधहै ॥ तहां जानावणेहारेकानाम लक्षणहै ॥ और जानणेयोग्यअर्थकानाम लक्ष्यहै ॥ तहां 'सोऽयं' इनदोनोंपदोंकरिकै वा इनदोनोंपदोंकेअर्थकरिकै सोदेवदत्तपिंड जान्याजावैहै ॥ यातैं तेपद तथा अर्थतौ लक्षणहैं॥और सोदेवदत्तपिंड लक्ष्यहै इति॥ अब तत्त्वमसिआदिकमहावाक्योंविषे तेतीनोंसंबंधघटावैहैं ॥ तहां 'तत्त्वमसि' इसमहावाक्यविषेस्थित तत्पदतौ परोक्षत्वसर्वज्ञत्वादिधर्म विशिष्टईश्वरचैतन्यका वाचकहै ॥ और त्वंपद अपरोक्षत्वअल्पज्ञत्वादिधर्मविशिष्टजीवचैतन्यका वाच कहै ॥ तहां परोक्षत्वादिधर्मविशिष्टपणातौ तत्पदकेप्रवृत्तिका निमित्तहै ॥ और अपरोक्षत्वादिधर्मवि शिष्टपणा त्वंपदकेप्रवृत्तिका निमित्तहै ॥ यातैं तत्त्वंइनदोनोंपदोंकेप्रवृत्तिकानिमित्त भिन्नभिन्नहै ॥ और तत्त्वं यहदोनोंपद भागत्यागलक्षणाकरिकै एकअखंडचैतन्यकेबोधकहोवैं हैं ॥ यहही तिन तत् त्वंपदोंका परस्पर सामानाधिकरण्यसंबंधहै॥और तातत्पदार्थरूपईश्वरचैतन्यका तथात्वंपदार्थरूपजी वचैतन्यका परस्पर भेदभ्रमकीनिवृत्तिकरणेहारा विशेषणविशेष्यभावसंबंधहै ॥ तहां 'तत्त्वमसि' इस प्रकारकेवाक्यप्रयोगविषेतौ सोतत्पदार्थ विशेष्यहोवैहै ॥ और त्वंपदार्थ विशेषणहोवैहै ॥ और 'त्वंत दसि' इसप्रकारकेवाक्यप्रयोगविषेतौ त्वंपदार्थ विशेष्यहोवैहै ॥ और तत्पदार्थ विशेषणहोवैहै ॥इस प्रकार तत्त्वंपदार्थदोनोंका परस्पर अभेदरूपतैं विशेषणविशेष्यभावकरणेतैंतिनदोनोंकेभेदभ्रमकीनिवृ

त्ति होइजावैहै ॥ और तत् त्वं इनदोनोंपदोंका तथातिनदोनोंपदोंकेअर्थरूप ईश्वरजीवका वाक्यार्थभूतअखंडचैतन्यकेसाथि लक्ष्यलक्षणभावसंबंधहैं॥तहांतितत्त्वंपद तथातिनपदोंकेअर्थ तापरोक्षत्वअपरोक्षत्वादिकविरुद्धअंशकापरित्यागकरिकै ताअविरुद्धअखंडचैतन्यमात्रकूंही लखावैहैं॥यातैं तिनपदोंविषे तथातिनअर्थोंविषेतौ लक्षणरूपताहै ॥ और ताअखंडचैतन्यविषे लक्ष्यरूपताहै॥ यहउक्ततीनसंबंधही अन्यग्रंथविषे 'सामानाधिकरण्यंच विशेषणविशेष्यता।लक्ष्यलक्षणभावश्च पदार्थप्रत्यगात्मनाम्' इसश्लोककरिकै कथनकरेहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अन्यवेदांतग्रंथोंविषे तत्त्वमसिआदिकवाक्योंकूं भागत्यागलक्षणाकरिकै अखंडचैतन्यकाबोधकपणा कथनकऱ्याहै ॥ और इहां आपने लक्ष्यलक्षणभावसंबंधकरिकै अखंडचैतन्यकाबोधकपणा कथनकऱ्या ॥ यातैं तिनग्रंथोंकेसाथि इसग्रंथकाविरोधहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ लक्ष्यलक्षणभाव तथाभागत्यागलक्षणा इनदोनोंका नाममात्रतैंभेदहै ॥ अर्थतैंभेदनहीं है ॥ यातैं सोविरोधहोवैनहीं ॥ इसीअभिप्रायकरिकै वाक्यवृत्तिग्रंथविषे आचार्योंने तत्त्वमसिआदिकवाक्योंकूं भागत्यागलक्षणकरिकै अखंडअर्थकाबोधकपणा कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'तत्त्वमस्यादिवाक्यंचतादात्म्यप्रतिपादने । लक्ष्यौतत्त्वंपदार्थौद्वावुपादायप्रवर्त्तते' अर्थयह॥तत्त्वमसिआदिकमहावाक्य तत्त्वंपदोंकेलक्ष्यअर्थोंकूंलैकेही अखंडस्वरूपकेप्रतिपादनविषेप्रवृत्तहोवैहैं इति॥किंवा जैसे लोकविषे 'घटमानय नीलोत्पलम्' इत्यादिकवाक्य पदार्थोंकेसंसर्गका वा विशिष्टअर्थका बोधकहोवैं हैं॥ तैसेतत्त्वमसिआदिकवाक्य संबंधरूपसंसर्गका वा विशिष्टअर्थका बोधकहोतेनहीं ॥ किंतु एकअखंडब्रह्मस्वरूपकेहीबोधकहोवैहैं ॥ यहवार्ताभी तावाक्यवृत्तिग्रंथविषे आचार्योंनैं कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'सं ॥६६॥

सर्गोवाविशिष्टोवा वाक्यार्थोनात्रसंमतः। अखंडैकरसत्वेन वाक्यार्थोविदुषांमतः' अर्थयह ॥ वेदांतशास्त्र विषे तत्त्वमसिआदिकवाक्योंका संसर्गवाक्यार्थ वा विशिष्टवाक्यार्थ संमतनहीं हैं ॥ किंतु अखंडएकरस ब्रह्महीवाक्यार्थरूपकरिकै विद्वानपुरुषोंकूं संमतहै ॥ इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ मैंईश्वरनहींहूं यहलोकों काप्रत्यक्षजीव ईश्वरकेभेदकूंही विषयकरैहै ॥ तथा ' द्वासुपर्णासयुजासखाया' इत्यादिकश्रुतिभी ता जीवईश्वरकेभेदकूंही प्रतिपादनकरैहै ॥ यातैं ताप्रत्यक्षश्रुतितैंविरुद्ध अखंडअर्थकूं तेमहावाक्यकैसेप्रति पादनकरैंगे ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ' तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि अयमात्माब्रह्म प्रज्ञानंब्रह्म' इत्यादि क बहुतश्रुतियोंविषे जीवईश्वरकाअभेदही कथनकऱ्याहै ॥ तिनश्रुतियोंतैंविरुद्धहोणेतैं सोउक्तप्रत्यक्षभ्र मरूपही है ॥ जैसे चंद्रमाकेस्वल्पपरिमाणकूंविषयकरणेहारालोकोंकाप्रत्यक्ष ताचंद्रमाकेमहत्परिमाणकूं कथनकरणेहारेज्योतिषशास्त्रतैंविरुद्धहोणेतैं भ्रमरूपहोवैहै तैसे सो भेदविषयकप्रत्यक्षभी ताअभेदबोध कश्रुतितैंविरुद्धहोणेतैं भ्रमरूपहीहै ॥ किंवाताकिवादीने जोजीवात्माविषे ईश्वरकाभेद मान्याहै सोभे द धर्मअधर्मकीन्यांई प्रत्यक्षकेयोग्यही नहींहै ॥ काहेतैं चक्षुआदिकबाह्यइंद्रियोंकरिकैतौबाह्यरूपादिकों काहीप्रत्यक्षहोवैहै ॥ आत्माका वा आत्मवृत्तिधर्मका तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै प्रत्यक्षहोतानहीं ॥ यातैं ताभेदका चक्षुआदिइंद्रियोंकरिकैतौप्रत्यक्षसंभवतानहीं ॥ औरमनविषेतौ इंद्रियरूपताही सं भवतीनहीं ॥ यातैं मनकरिकैभीताभेदकाप्रत्यक्ष संभवतानहीं ॥ और ताभेदकूं जोसाक्षीभास्य मा नियें ॥ तौ स्वप्नपदार्थोंकीन्यांई सोभेद प्रातीतिकहींहोवेगा ॥ ऐसेप्रतीतिकभेदविषयकप्रत्यक्षकरिकै ताअभेदबोधकश्रुतिकाबाध संभवतानहीं ॥ किंतु उलटा ताश्रुतिकरिकैही ताप्रत्यक्षकाबाधसंभवैहै ॥

यातैं ताप्रत्यक्षतैं जीवईश्वरकेभेदकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ और 'द्वासुपर्णा' इत्यादिकउक्तश्रुतिका ता
जीवईश्वरकेभेदविषे तात्पर्यनहींहै ॥ किंतु तालोकसिद्धभेदकाअनुवादकरिकै ताश्रुतिका अखंडब्रह्मवि
षेही तात्पर्यहै ॥ काहेतैं जिसअर्थकाज्ञान इष्टफलकीप्राप्तिकरैहै ॥ तथा जोअर्थ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंक
रिकै अज्ञातहोवैहै ॥ तिसअर्थविषेही श्रुतिका तात्पर्यहोवैहै ॥ और सोजीवब्रह्मकाभेद अज्ञातनहीं है॥
किंतु शास्त्रसंस्कारोंतैंरहितपुरुषोंकूंभी मैंईश्वरनहींहूं इसप्रकारतैं ज्ञातहीहै ॥ औरताभेदकेज्ञानतैं कोई
इष्टफलकीप्राप्तिभीहोतीनहीं ॥ उलटा 'मृत्योः स मृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यति' इसश्रुतिने ताभेद
दर्शीपुरुषकूं पुनःपुनः जन्ममरणकीप्राप्तिही कथनकरीहै ॥ तथा 'अथयोऽन्यांदेवतामुपास्तेऽन्योऽसाव
न्योऽहमस्मीतिनसवेदयथापशुः' इसश्रुतिने ताभेददर्शीपुरुषकूं पशुकेतुल्य कह्याहै ॥ यातैं ताश्रुतिका
जीवब्रह्मकेभेदविषे तात्पर्यनहींहै किंतु अखंडब्रह्मविषेही तात्पर्यहै ॥ तहां सोअखंडब्रह्म प्रत्यक्षादिक
प्रमाणोंकाअविषयहोणेतैं अज्ञातभीहैं॥ और 'तरतिशोकमात्मवित्। ब्रह्मविदाप्नोतिपरम्।ब्रह्मविद्ब्रह्मै
वभवति'इत्यादिकश्रुतियोंनैं ताअखंडब्रह्मकेअज्ञानका अनर्थकीनिवृत्ति तथा परमानंदकीप्राप्तिरूपफल
कथनकऱ्याहै ॥ यातैं ताअखंडब्रह्मविषेहीताश्रुतिकातात्पर्यसिद्धहोवै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अखंड
ब्रह्मही महावाक्योंकाअर्थहै यहपूर्व आपनैं कह्या ॥ तहां ब्रह्मविषे सोअखंडपणा क्याहै ॥ ऐसीशंका
केप्राप्तहुए अब मतभेदसे ताअखंडपणेकानिरूपणकरे हैं ॥ तहां 'विजातीयस्वजातीयस्वगतभेद
शून्यत्वं अखंडत्वम्' अर्थयह॥विजातीयभेद१ सजातीयभेद २ स्वगतभेद३इनतीनभेदों तैं जोरहितप
णाहै ॥ यहही ताब्रह्मविषे अखंडपणाहै ॥ अब ब्रह्मविषे तिनतीनभेदोंकेअभावदिखावणेवासतै प्रथम

अनात्मवस्तुवोंविषे तेतीनोंभेद दिखावैहैं ॥ तहां विलक्षणजातिवालेपदार्थोंका जोपरस्परभेदहै सो भेद विजातीयभेद कह्याजावैहै ॥ जैसे वृक्षोंविषे जोघटपटादिकपदार्थोंकाभेदहै ॥ तथा तिनघटपटादिक पदार्थोंविषे जोतिनवृक्षोंकाभेदहै ॥ सोभेद विजातीयभेद कह्याजावैहै ॥ और समानजातिवालेपदार्थोंका जोपरस्परभेदहै सोभेद सजातीयभेद कह्याजावैहै ॥ जैसे पिप्पलकेवृक्षका जोनिंबकेवृक्षविषेभेदहै ॥ तथा तानिंबकेवृक्षका जोतापिप्पलकेवृक्षविषेभेदहै ॥ सोभेद सजातीयभेद कह्याजावैहै ॥ और वृक्षविषेस्थित जेपत्रपुष्पशाखादिकहैं तिनपत्रादिकोंका जोतावृक्षविषेभेदहै सोभेद स्वगतभेद कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार सर्वअनात्मपदार्थ उक्ततीनभेदवालेहीहैं ॥ और ब्रह्मविषे उक्ततीनभेदोंमें कोईप्रकार काभीभेद संभवतानहा ॥ सोदिखावैं हैं ॥ तहां ब्रह्मविषे विजातीयभेद तबीसिद्धहोवै जबी ब्रह्मतैंभिन्नकोईवस्तु सत्यहोवै ॥ सोब्रह्मतैंभिन्नकोईवस्तु सत्यहैनहीं ॥ किंतु अविद्यासहितसर्वकार्यप्रपंच ताअधिष्ठानब्रह्मविषेकल्पितहोणेतैं मिथ्याहीहै ॥ यातैं ताब्रह्मविषे सोविजतीयभेद संभवतानहीं और ताब्रह्मविषे सोसजातीयभेद तबीसिद्धहोवै जबी ताब्रह्मकेसजातीय कोईदूसरापदार्थहोवै ॥ सोब्रह्मकेसजातीय कोईदूसरापदार्थ हैनहीं ॥ जो कहो जीव ब्रह्मकेसजातीयहै॥ सोकहणाभीसंभवतानहीं ॥ काहेतें 'तत्त्वमसि। अहंब्रह्मास्मि। अयमात्माब्रह्म। क्षेत्रज्ञंचापिमाविद्धि' इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंनें जीवब्रह्म दोनोंकी अत्यंतएकताकथनकरीहै ॥ और सजातीयपणातौ भिन्नवस्तुविषेहोवैहै ॥ अभिन्नवस्तुविषे सजातीयपणाहोतानहीं ॥ यातैं ताब्रह्मविषे सोसजातीयभेदभी संभवतानहीं ॥ और ताब्रह्मविषे सो स्वगतभेद तबीसिद्धहोवै जबी ताब्रह्मविषे अवयव गुणक्रिया जाति संबंध इनपांचोंविषे कोईभी

विद्यमानहोवै परंतु तिनपांचोंविषे कोईभीधर्म ताब्रह्मविषैहैनहीं ॥ जिसकारणतैं 'निष्फलंनिष्क्रियं शांतंनिरवद्यंनिरंजनम् । साक्षीचेतःकेवलोनिर्गुणश्च । असंगोह्ययंपुरुषः। नित्यः सर्वगतःस्थाणुरचलोऽयं सनातनः' इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंनैं ताब्रह्मविषे तिनअवयवादिकपांचोंका निषेधकऱ्याहै ॥ यातैं ताब्रह्मविषे सोस्वगतभेदभी संभवतानहीं ॥ ऐसेउक्ततीनभेदोंतैंजोरहितपणाहै यहही ताब्रह्मविषे अखंडपणाहै ॥ तहां एकस्वगतभेदतैंरहितपणेकूं जोअखंडपणा कहते तौ सांख्ययोंकेआत्मविषे ताअखंडपणेकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोती जिसकारणतैं तेसांख्यमतवालेभी ताआत्माकूं अवयव गुण क्रिया जाति संबंध इनपांचोंतैंरहितहीमानैं हैं ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे सजातीयभेदतैंरहितपणा कथनकऱ्याहैं ॥ तहां तेसांख्यमतवाले नानाआत्मामानैं हैं यातैं तिनोंकेमतविषे सोआत्मा सजातीयभेदतैंरहितनहींहै ॥ किंतु सजातीयभेदवालाहीहै ॥ यातैं ताआत्माविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा सजातीय स्वगत इनदोभेदोंतैंरहितपणेकूं जोअखंडपणाकहते तौ आकाशविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती॥काहेतैं सोआकाश एकहै ॥ यातैं सजातीयभेदतैंभीरहितहै ॥ और निरवयवानिष्क्रियहै॥यातैंस्वगतभेदतभीरहितहै॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे विजातीयभेदतैंरहितपणा कथनकऱ्याहै ॥ तहां सोआकाशविजातीयभेदतैंरहितनहींहै ॥ किंतु पृथिवीआदिकविजातीयपदार्थोंकेभेदवालाहीहै ॥ यातैं ताआकाशविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा एकविजातीयभेदतैंरहितपणेकूं जोअखंडपणाकहते तौ ताब्रह्मविषे सजातीय स्वगत इनदोभेदोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ ताकरिकै 'एकमेवाद्वितीयंब्रह्म' इसश्रुतिकाविरोधहोवैगा ॥ ताश्रुतिविरोधके

निवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे सजातीयभेदतैंरहितपणा कह्याहै ॥ और ताब्रह्मविषे एकरसत्वकेसिद्ध करणेवासतै स्वगतभेदतैंरहितपणा कह्याहै इति ॥ अथवा ताअखंडपणेका यहलक्षणकरणा ॥ 'त्रिविध परिच्छेदशून्यत्वंअखंडत्वम्'। अर्थयह ॥ देशपरिच्छेद १ कालपरिच्छेद २ वस्तुपरिच्छेद ३ इनतीनपरि च्छेदोंतैंजोरहितपणाहै यहही ताब्रह्मविषे अखंडपणाहै ॥ अब ब्रह्मविषे तीनपरिच्छेदोंतैंरहितपणादि खावणेवासतै प्रथम अनात्मवस्तुवोंविषे तेतिनोंपरिच्छेद दिखावैं हैं ॥ तहां अत्यंताभावकाजोप्रतियोगी पणाहै ताकानाम देशपरिच्छेदहै ॥ जैसे घटत्वादिकधर्मोंका पटादिकोंविषे अत्यंताभावरहैहै ॥ ताअ त्यंताभावकाप्रतियोगीपणा तिनघटत्वादिकधर्मोंविषेरहैहै ॥ यहही तिनघटत्वादिकधर्मोंविषे देशपरि च्छेदहै ॥ और प्रागभावका तथा प्रध्वंसाभावकाजोप्रतियोगीपणाहै ताकानाम कालपरिच्छेदहै ॥ जै से घटका आपणीउत्पत्तितैंपूर्व आपणेउपादानकारणरूपकपालोंविषे प्रागभावरहैहै ॥ तथा आपणेना शतैंअनंतर तिनकपालोंविषे प्रध्वंसाभावरहैहै ॥ ताप्रागभावका तथाप्रध्वंसाभावका प्रतियोगीपणा ताघटविषेरहैहै ॥ यहही ताघटविषे कालपरिच्छेदहै ॥ और अन्योन्याभावकेप्रतियोगीपणेकानाम व स्तुपरिच्छेदहै ॥ जैसे घटका पटविषेभेदरहैहै ॥ और पटका ताघटविषेभेदरहैहै ॥ ताभेदरूपअन्योन्या भावकाप्रतियोगीपणा ताघटपटकूंहै ॥ यहही तिनघटपटादिकोंविषे वस्तुपरिच्छेदहै ॥ इसप्रकार सर्व अनात्मपदार्थ उक्ततीनपरिच्छेदवालेहीहैं॥ और ब्रह्मविषे उक्ततीनपरिच्छेदोंमेंकोईप्रकारकाभीपरिच्छे द रहतानहीं ॥ सोदिखावैं हैं:॥ तहां 'आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः। महतोमहीयान्' इत्यादिकश्रुति योंनें ब्रह्मकूं विभुकह्याहै ॥ और विभुद्रव्यका कोईभीस्थानविषे अत्यंताभावहोतानहीं ॥ यातैं ताब्रह्म

विषे सोदेशपरिच्छेद संभवतानहीं ॥ और 'सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म । नजायतेम्रियतेवाकदाचित्' इत्यादि
कश्रुतियोंनें ताब्रह्मकूं उत्पत्तिविनाशतैंरहित नित्यकह्याहै॥और नित्यवस्तुका प्रागभाव तथाप्रध्वंसाभा
व होतानहीं ॥ यातैं ताब्रह्मविषे सोकालपरिच्छेदभी संभवतानहीं ॥ और स्वप्नपदार्थोंकीन्यांई सर्वज
गत् ब्रह्मविषेआरोपितहोणेतैं मिथ्याहै ॥ और आरोपितमिथ्यावस्तु अधिष्ठानतैंभिन्नसत्तावाला होता
नहीं ॥ यातैं सोअधिष्ठानब्रह्महीं तासर्वजगत्काआत्मारूपहै ॥ याकारणतैं ताब्रह्मविषे सोवस्तुपरिच्छे
दभी संभवतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ 'वेदाहमेतमजरंपुराणंसर्वात्मानंसर्वगतंविभुत्वात्' अर्थयह ॥ जोब्र
ह्म अजरहै तथा पुराणहै तथासर्वका आत्मारूपहै तथाविभुहोणेतैं सर्वगतहै॥ऐसेब्रह्मकूं मैं अपरोक्षजा
नताहूं इति ॥॥ और कल्पतरुग्रंथकेकर्त्ताआचार्यनेतौ ताअखंडपणेका यहलक्षणकऱ्याहै ॥'अपर्य्या
यानेशब्दप्रकाश्यत्वेसतिअविशिष्टत्वम् अखंडत्वम्' अर्थयह॥ अपर्याय तथा अनेक ऐसेजेशब्दहैं ति
नशब्दोंकरिकै जोवस्तु प्रकाशितहोवै तथाविशिष्टभावतैंरहितहोवै सोवस्तु अखंडकह्याजावैहै ॥ तहां
'तत्त्वमसि।अहंब्रह्मास्मि'इत्यादिकमहावाक्योंविषेस्थित जे तत त्वं आदिकशब्दहैं तेशब्द वाच्यअर्थके
भेदतैं अपर्यायभीहैं॥तथा अनेकभीहैं॥ऐसेशब्दोंकरिकै सोब्रह्म प्रकाशितहै।।तथाविशिष्टभावतैंरहितभी
है ॥ यहही ताब्रह्मविषे अखंडपणाहै॥तहां 'घटःकलशः'इनअनेकशब्दोंकरिक यद्यपि घटप्रकाशितहै
तथापि तेशब्द अपर्यायनहीं हैं किंतु पर्यायहीहैं ॥ और 'नीलमुत्पलम्'इनअपर्यायअनेकशब्दोंकरिकै ॥६९॥
यद्यपि उत्पल प्रकाशितहै तथापि सोउत्पल विशिष्टभावतैंरहितनहीं है किंतु नीलगुणविशिष्टहीहै ॥
यातैं तिनघटनीलउत्पलादिकोंविषे ताअखंडपणेकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं॥यद्यपि'यतोवाचोनि

वर्त्ततेअप्राप्यमनसासह' इत्यादिकश्रुतियोंने ब्रह्मकूं मनवाणीकाअविषयकह्याहै ॥ यातैं ताब्रह्मविषेसा क्षात् शब्दप्रकाश्यत्व संभवतानहीं ॥ तथापि वाच्यार्थभूतमायाअंतःकरणद्वारा लक्षणावृत्तिकरिकै ताब्र ह्मविषे शब्दप्रकाश्यत्वसंभवैहै ॥ जोकदाचित् लक्षणावृत्तिकरिकैभी ताब्रह्मविषे शब्दप्रकाश्यत्व नहींमा नियेतौ 'तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि' अर्थयह ॥ उपनिषदरूपशब्दप्रमाणकरिकैजानणेयोग्य तिसप रमात्माकेस्वरूपकूं मैं तुम्हारेसैंपूछताहूं ॥ इसश्रुतिकाविरोध प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं तत्त्वमसिआदिकमहा वाक्य ततत्वंपदकेलक्ष्यअर्थकूंग्रहणकरिकै ताअखंडस्वरूपकेप्रतिपादनविषे प्रवर्त्तहोवैं हैं यहउक्तअर्थ सर्वदोषतैंरहितहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ उक्तरीतिसे तत्त्वमसिआदिकवाक्य ताअखंडअर्थकेबोधकहो वो ॥ परंतु ताअखंडअर्थकेबोधकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं कौनफलहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरु जबी इसअधिकारीपुरुषकेप्रति तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यका उपदेशकरैहै तबी इसअधिकारीपुरुषकूं भागत्यागलक्षणाकरिकै मायाअंतःकरणादिकवाच्यभागकेपरित्यागपूर्वक अखंड ब्रह्मकाज्ञानहोवैहै ॥ अर्थात् 'अहंब्रह्मास्मि । ब्रह्मैवाहमस्मि' याप्रकारका परस्परअभेदविषयक अपरो क्षज्ञानहोवैहै ॥ तहां 'अहंब्रह्मास्मि' यहवृत्तितौ अहंपदार्थप्रत्यक्आत्माविषे ब्रह्मकेअभेदकूंविषय करैहै ॥ और 'ब्रह्मैवाहमस्मि' यहवृत्तितौ ब्रह्मविषे ताप्रत्यक्आत्माकेअभेदकूंविषयकरैहै ॥ तहां अहं पदार्थप्रत्यक्चेतनविषे सर्वांकूं अपरोक्षपणा तथा आत्मपणा सिद्धहै॥औरब्रह्मकूं परोक्ष तथा अनात्मा मानैं हैं ॥ जबी प्रत्यक्आत्माविषे ब्रह्मकेअभेदकूंविषयकरणेहारा 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारका अपरो क्षज्ञानहोवैहै ॥ तबी ताज्ञानतैं ब्रह्मके परोक्षपणेकी तथा अनात्मपणेकी निवृत्तिहोइजावैहै ॥ औरइस जीवात्माकूं लोक परिच्छिन्नमानैं हैं तथा अब्रह्मरूप मानैं हैं॥जबी ताब्रह्मविषे इसजीवात्माकअभेदकूं

विषयकरणेहारा 'ब्रह्मैवाहमस्मि' याप्रकारकाअपरोक्ष ज्ञान उत्पन्नहोवैहै तबी ताज्ञानतैं इसजीवात्माके परिच्छिन्नपणेकी तथा अब्रह्मपणेकी निवृत्तिहोइजावैहै ॥ यातैं इसअधिकारीपुरुषनैं ब्रह्मविषे परोक्षत्व अनात्मत्वशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासते तथा आपणेआत्माविषे परिच्छिन्नत्वअब्रह्मत्वशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतै अहंब्रह्मास्मि ब्रह्मैवाहमस्मि याप्रकारतैं आत्माब्रह्मका परस्परअभेद निश्चयकरणा॥इसप्रकार तत्त्वमसिआदिकमहावाक्योंतैंजन्य जोअखंडब्रह्माकार अपरोक्षवृत्तिहै ताअपरोक्षवृत्तिरूपज्ञानकरिकै कार्यप्रपंचसहितअज्ञानरूपअनर्थकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तथा यहप्रत्यक्‌आत्मा अखंडएकरसब्रह्मानंदरूपकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'तरतिशोकमात्मवित् । ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति' अर्थयह ॥ आत्माकेसाक्षात्कारवालापुरुष सर्वअनर्थरूपशोककूंनाशकरैहै और अहंब्रह्मास्मि याप्रकार ब्रह्मकूं आपणा आत्मारूपकरिकैजानणेहारा विद्वानपुरुष ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियां ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूं ताब्रह्मसाक्षात्कारिकै अज्ञानकीनिवृत्ति तथा ब्रह्मानंदकीप्राप्तिरूपफल कथनकरै हैं इति ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृततत्त्वानुसंधाने प्रथमपरिच्छेदः समाप्तः ॥ १ ॥ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ श्रीशङ्कराचार्येभ्यो नमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्य नमः ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतप्राकृततत्त्वानुसंधाने
प्रथमपरिच्छेदः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ श्रीस्वामिचिद्घनानन्दगिरिकृतप्राकृत-
तत्त्वानुसन्धाने द्वितीयपरिच्छेदः ।

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशङ्कराचार्येभ्योनमः ॥

अथ द्वितीयपरिछेदप्रारंभः ॥ ॥ तहांतत्त्वमसिआदिकवाक्यकरिकैजन्य जो अखंडब्रह्मविषयक अपरोक्ष वृत्तिहै तावृत्तिकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं अज्ञानकीनिवृत्ति तथापरमानंदकीप्राप्ति होवैहै ॥ यहवार्त्ता पूर्व प्रथमपरिच्छेदकेअंतविषे कहीथी ॥ ताकेविषे यहजिज्ञासाहोवैहै ॥ तावृत्तिका क्यास्वरूपहै॥ और तावृत्तिविषे कौनप्रमाणहै ॥ और तावृत्तिकीकिसप्रकारतैंउत्पत्तिहोवैहै ॥ और तिसवृत्तिकरिकै कौनप्रयोजनसिद्धहोवैहै ॥ ऐसीजिज्ञासाकेप्राप्तहुए प्रमा अप्रमा इसभेदतैं दोप्रकारकीवृत्तिकेनिरूपणकरणेवासतै प्रथम तावृत्तिका सामान्यलक्षणकहैहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ प्रमाणकरिकैही प्रमेयकी सिद्धिहोवैहै ॥ यातैं ग्रंथविषे प्रथम प्रमाणकाही निरूपणकऱ्याचाहिये ॥ तिसतैंअनंतर प्रमेयकानिरूपणकऱ्याचाहिये ॥ याकारणतैंही न्यायशास्त्रविषे प्रथम प्रमाणकानिरूपणकरिकै पश्चात् प्रमेयका निरूपणकऱ्याहै और आपतौ प्रथमपरिच्छेदविषेब्रह्मात्मरूपप्रमेयकानिरूपणकरिकै इसद्वितीयपरिच्छेदविषे प्रमाणकानिरूपणकरोहो ॥ यातैं यहआपकानिरूपण सर्वशास्त्रतैंविरुद्धहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अन्यन्यायादिकशास्त्रोंविषे प्रमेयकूं जडपणाहोणेतैं ताप्रमेयकी प्रमाणकेअधीनही सिद्धि होवैहै॥ यातैं तिनअन्यशास्त्रोंविषेतौ प्रथम प्रमाणकानिरूपणकरिकैही पश्चात् प्रमेयकानिरूपणकरणा उचितहै ॥ और इसवेदांतशास्त्रविषेतौ सर्वप्रमाणादिकव्यवहारोंकासाधक अद्वितीयआत्मारूपसाक्षी चैतन्यही प्रमेयहै ॥ यातैं इसवेदांतशास्त्रविषेतौ प्रथम ताचैतन्यरूपप्रमेयकानिरूपणकरिकैही पश्चात् तिनप्रमाणादिकोंकानिरूपणकरणा उचितहै ॥यहवार्त्ता संक्षेपशारीरकग्रंथविषे श्रीसर्वज्ञमहामुनिनेभी

कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'मानेनमेयावगतिश्चयुक्ता धर्मस्यजाड्याद्विधिनिष्ठकांडे ॥ मेयेनमानावगतिस्तुयुक्ता वेदांतवाक्येष्वजडंहिमेयम्' ॥ अर्थयह ॥ पूर्वमीमांसाविषे धर्मादिरूपप्रमेय जडहै ॥ यातैं ताप्रमेयकीसिद्धि प्रमाणकरिकैयुक्त है ॥ और वेदांतशास्त्रविषे ब्रह्मात्मरूपप्रमेय चेतनहै ॥ यातैं ताप्रमेयकीसिद्धि प्रमाणकरिकैयुक्तनहींहै ॥ किंतु ताचेतनप्रमेयकरिकैही जडप्रमाणकीसिद्धि युक्तहै इति ॥ अब तावृत्तिका सामान्य लक्षण कहेहैं ॥ 'विषयचैतन्याभिव्यंजकोऽतःकरणाज्ञानयोः परिणामविशेषः वृत्तिः' अर्थयह ॥ घटपटादिरूपविषयकरिकैअवच्छिन्नजोचैतन्यहै ताकानाम विषयचैतन्यहै ॥ ताविषयचैतन्यका अभिव्यंजक ऐसाजो अंतःकरणका वा अज्ञानका परिणामविशेषहै सो वृत्तिज्ञानकह्याजावैहै ॥ यद्यपि क्रोध इच्छा सुख दुःख इत्यादिकभी अतःकरणकेहीपरिणामहैं ॥ तथा आकाशादिक अज्ञानकेपरिणामहैं ॥ तथापि तिनक्रोधादिकोंविषे ताविषयचैतन्यका अभिव्यंजकपणाहैनहीं यातैं 'विषयचैतन्याभिव्यंजकः' इसपदकेकहणेतैं तिनक्रोधादिकोंविषेतावृत्तिकेलक्षणकीअतिव्याप्ति होवैनहीं ॥ और यद्यपि चक्षुआदिकइंद्रियभी स्वजन्यवृत्तिद्वारा ताविषयचैतन्यकेअभिव्यंजकही हैं तथापि तेचक्षुआदिकइंद्रिय अंतःकरणका वा अज्ञानका परिणामनहीं हैं ॥ किंतु तेजादिकभूतोंकाही परिणामहैं ॥ यातैं अंतकरणका वा अज्ञानका परिणामकहणेतैं तिन चक्षुआदिकइंद्रियोंविषे तावृत्तिके लक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तहां अतिव्याप्ति अव्याप्ति असंभव इनतीनदोषोंकास्वरूप प्रथमपरिच्छेदविषे कथनकरिआयेहैं ॥ सो सर्वत्रजानिलेणा ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व वृत्तिविषेविषयचैतन्यका अभिव्यंजकपणा कह्या ॥ सोअभिव्यंजकपणा क्याहै ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ अब ताअभिव्यंजक

पणेकालक्षण कहैं ॥'अपरोक्षव्यवहारजनकत्वं अभिव्यंजकत्वम्' अर्थयह ॥ 'अयंघटः अयंपटः' इसप्र
कारका जोअपरोक्षव्यवहारहै ताअपरोक्षव्यवहारकाजनकपणाही तिनवृत्तियोंविषे विषयचैतन्यका
अभिव्यंजकपणाहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ चक्षुआदिकइंद्रियजन्य अपरोक्षवृत्तियोंविषेतौ सोअपरोक्षव्य
वहारकाजनकपणा संभवैहै ॥ परन्तुअनुमानादिकप्रमाणजन्य अनुमितिआदिकपरोक्षवृत्तियोंविषेसो
अपरोक्षव्यवहारकाजनकपणा हैनहीं ॥ जिसकारणतैं 'पर्वतोवह्निमान्' इसअनुमितितैंअनंतर 'अयंव
ह्निः' याप्रकारका अपरोक्षव्यवहार कोईभी होतानहीं ॥ यातैं अनुमितिआदिकपरोक्षवृत्तियोंविषेता
अभिव्यंजकपणेकेअभावतैं ताउक्तवृत्तिकेलक्षणकी अव्याप्तिहीहोवैहै ॥ ऐसीअरुचिकेहुए ॥ अब ताअ
भिव्यंजकपणेका अन्यप्रकारतैं निर्वचनकरैहैं ॥ 'आवरणनिवर्तकत्वं अभिव्यंजकत्वम्' अर्थयह ॥ ति
नवृत्तियोंविषे जोआवरणकानिवर्त्तकपणाहै ॥ यहही ताविषयचैतन्यका अभिव्यंजकपणाहै ॥ सोअ
भिव्यंजकपणा अनुमितिआदिकपरोक्षवृत्तियोंविषेभीहै ॥ यातैं तिनपरोक्षवृत्तियोंविषे ताउक्तलक्षणकी
अव्याप्तिहोवैनहीं ॥ इहां यहअभिप्रायहै ॥ सोअज्ञानकृत आवरण दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ अस
त्त्वापदकआवरणहोवैहै ॥ और दूसरा अभानापादकआवरणहोवैहै ॥ तहां घटादिविषयोंके नास्ति
इसव्यवहारकाहेतुरूपआवरणतौ असत्त्वापादकआवरण कह्याजावैहै ॥ और नभाति इसव्यवहारका
हेतुरूपआवरण अभानापादकआवरण कह्याजावैहै ॥ तहां अभानापादकआवरणकीतौ अपरोक्षज्ञान ॥७२॥
करिकैही निवृत्तिहोवै है परोक्षज्ञानकरिकै निवृत्तिहोतीनहीं ॥ और असत्त्वापादकआवरणकीतौ अ
नुमितिआदिकपरोक्षज्ञानकरिकैभी निवृत्तिहोवैहै ॥ जिसकारणतैं धूमरूपहेतुकेज्ञानतैं 'पर्वतोवह्निमान्'

याप्रकारकी अनुमितिकेहुए तथाशास्त्रप्रमाणतैं स्वर्गादिकोंकेपरोक्षज्ञानहुए पर्वतविषेवह्निनहीं है तथा स्वर्गादिकनहीं हैं याप्रकारका नास्तिव्यवहार होतानहीं ॥ किंतु 'वह्निरस्ति । स्वर्गोऽस्ति' याप्रकारका अस्तिव्यवहारहीहोवैहै ॥ यातैं अनुमितिआदिकपरोक्षवृत्तियोंविषेभी ताअसत्त्वापादकआवरणकानि वर्त्तकपणा विद्यमानहीं है ॥ अथवा सोअज्ञानकृतआवरण दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ विषयचैतन्यनि ष्ठआवरणहोवैहै ॥ और दूसरा प्रमाताचैतन्यनिष्ठआवरणहोवैहै ॥ तहां विषयचैतन्यनिष्ठआवरणकीतौ अपरोक्षज्ञानकरिकैही निवृत्तिहोवैहै ॥ और प्रमाताचैतन्यनिष्ठआवरणकीतौ परोक्षज्ञानतैंभी निवृत्ति होवैहै ॥ यातैं तिनअनुमितिआदिकपरोक्षवृत्तियोंविषे ताआवरणनिवर्त्तकत्वरूपअभिव्यंजकपणेकेसि द्ध हुए ताउक्तवृत्तिकेलक्षणकी अव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सुखदुःखादिकोंकूंविषयक रणेहारेवृत्तिज्ञानविषे तथाईश्वरकेमायावृत्तिरूपज्ञानविषे तथाअविद्याकीवृत्तिरूपभ्रमज्ञानविषे सो आवर णकानिवर्त्तकपणाहैनहीं ॥ यातैं तिनवृत्तियोंविषे ताउक्तलक्षणकीभी अव्याप्तिहीहोवैहै ॥ ऐसीअरुचि केहुए अब अन्यप्रकारतैं ताअभिव्यंजकपणेकानिर्वचनकरैहैं ॥ 'अस्तिव्यवहारजनकत्वम् अभिव्यं जकत्वम्' अर्थयह ॥ घटोऽस्ति पटोऽस्ति इसप्रकारका जोअस्तिव्यवहारहै ताअस्तिव्यवहारकाज नकपणाही तिनवृत्तियोंविषे विषयचैतन्यका अभिव्यंजकपणाहै ॥ यहअभिव्यंजकपणा तिन अपरोक्षवृ त्तियोंविषे तथापरोक्षवृत्तियोंविषे तथासुखादिविषयकवृत्तियोंविषे तथामायाकीवृत्तियोंविषे तथाभ्रमवृत्ति योंविषे सर्वत्रविद्यमानहै ॥ यातैं इसलक्षणकीकोईभीवृत्तिविषे अव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व आपने वृत्तिकेलक्षणविषे अंतःकरणके वा अज्ञानके परिणामकूं वृत्तिकह्या सोसंभवतानहीं ॥ का

हेतैं 'पूर्वरूपपरित्यागेनरूपांतरापत्तिः परिणामः' अर्थयह ॥ वस्तुकूं आपणेपूर्वरूपकापरित्यागकरिकेजो अन्यरूपकी प्राप्तिहै ताकानाम परिणामहै ॥ यहही तापरिणामकालक्षण करणाहोवैगा ॥ सोसंभवता नहीं ॥ जिसकारणतैं लोकविषे कोईभीवस्तुकूं पूर्वरूपकेविद्यमानहुए वा पूर्वरूपकेनष्टहुए अन्यरूपकी प्राप्ति देखणेविषेआवतीनहीं ॥ किंवा वेदांतशास्त्रविषे विवर्त्तवादही अंगीकारहै ॥ परिणामवाद अंगीकारहैनहीं ॥ जोकदाचित् तापरिणामवादकूं अंगीकारकरोगे तौ सिद्धांतकाविरोध प्राप्तहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए अब तापरिणामका तथाविवर्त्तका लक्षणकहैं हैं ॥ 'उपादानसमसत्ताकान्यथाभावः परिणामः ॥ उपादानविषमसत्ताकान्यथाभावः विवर्त्तः' अर्थयह ॥ उपादानकारणकेसमानसत्तावाला ऐसाजो ताउपादानका अन्यथाभावहै सो परिणाम कह्याजावैहै ॥ जैसे दुग्धका दधिपरिणामहै ॥ तहां तादुग्धकी व्यावहारिकसत्ताहै ॥ और तादधिकीभी व्यावहारिकसत्ताहै ॥ यातैं सोदधि तादुग्धरूपउपादानकारणके समानसत्तावालाहै ॥ और तादधिविषे दुग्धव्यवहारहोतानहीं ॥ यातैं सोदधि तादुग्धका अन्यथाभावभीहै ॥ यातैं तादधिविषे तादुग्धकापरिणामपणा संभवैहै ॥ और उपादानकारणतैंविषमसत्तावाला ऐसाजो ताउपादानका अन्यथाभावहै सो विवर्त्त कह्याजावैहै ॥ जैसे रज्जुविषेप्रतीतभयाजोसर्पहै ॥ सोसर्प तारज्जुअवच्छिन्नचैतन्यका विवर्त्तहै ॥ तहां ताचैतन्यकी तौ पारमार्थिकसत्ताहै और ताकल्पितसर्पकी प्रातिभासिकसत्ताहै ॥ यातैं सोसर्प ताचैतन्यरूपउपादानकारणतैं विषमसत्तावालाहै ॥ और 'अयंसर्पः' याप्रकारकेव्यवहारकाविषयहोणेतैं सोसर्प ताचैतन्यका अन्यथाभावभीहै ॥ यातैं ताकल्पितसर्पविषे ताचैतन्यकाविवर्त्तपणा संभवैहै ॥ तहां। 'अन्यथाभावः प

रिणामः'। इतनामात्रही जोतापरिणामकालक्षणकरते तौ अन्यथाभावरूपविवर्त्तविषे तापरिणामकेल
क्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासते तापरिणामकेलक्षणविषे। उपादानस
मसत्ताक। यहपद कथनकऱ्याहै ॥ तहां सोविवर्त्त उपादानकेसमसत्तावाला होतानहीं ॥ यातैं तावि
वर्त्तविषे तापरिणामकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं॥इसप्रकार विवर्त्तकेलक्षणविषेभी अन्यथाभावरूप
परिणामविषे अतिव्याप्तिदोषके निवृत्तकरणेवासते। उपादानविषमसत्ताक। यहपद कथनकऱ्याहै॥इस
प्रकार परिणामका तथाविवर्त्तका परस्परभेदहै ॥ तैस प्रसंगविषे सोउक्तवृत्तिभी ताअंतःकरणअज्ञान
रूपउपादानकारणकीअपेक्षाकरिकैतौ परिणामहै और अधिष्ठानचैतन्यकीअपेक्षाकरिकै विवर्त्त है ॥
यातैं परिणामकीअप्रसिद्धि तथासिद्धांतकाविरोध होवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अंतःकरण नि
रवयवद्रव्यहै ॥ यातैं ताअंतःकरणका सोवृत्तिरूपपरिणाम संभवतानहीं॥ जिसकारणतैं लोकविषे सा
वयवदुग्धादिकोंकाही दधिआदिकपरिणाम देखणेविषेआवैहै ॥ निरवयवद्रव्यका कहांभी परिणामदेख
णेविषेआवतानहीं ॥ जोकदाचित निरवयवद्रव्यकाभी परिणाममानोंगे तौ तानिरवयवद्रव्यकेस्वरू
पकाहीनाशहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ 'तन्मनोऽकुरुत' अर्थयह ॥ सोपरमात्मा मनकूं उत्पन्न
करताभया ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे तामनरूपअंतःकरणकी उत्पत्तिकथनकरीहै॥और जोजोद्रव्यउत्प
त्तिवालाहोवैहै सोसोद्रव्य दुग्धादिकोंकीन्यांई सावयवहीहोवैहै ॥ यातैं ताअंतःकरणकूं सावयवता
होणेतैं परिणामीपणा संभवैहै ॥ किंवा जैसे अंतःकरणका सावयवपणा श्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥
तैसे तावृत्तिज्ञानकूं अंतःकरणकाधर्मपणाभी श्रुतिप्रमाणकरिकैही सिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'कामःसंक

लपोविचिकित्साश्रद्धाऽश्रद्धाधृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएव' अर्थयह॥इच्छा संकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा वृत्तिज्ञान भय यहसर्व मनकेहीधर्महैं इति ॥ यहश्रुति इच्छादिकोंकूं अंतःकरणकाहीधर्म कहैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ 'अहंजानामि । अहमिच्छामि ' याप्रकारकाअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवतैं तेज्ञानइच्छादिक आत्माकेहीधर्म सिद्धहोवैं हैं ॥ यातैं तिनज्ञानइच्छादिकोंविषे अंतःकरणकाधर्मपणा संभवतानहीं ॥ जोकदाचित् तिनज्ञानइच्छादिकोंकूं अंतःकरणकाधर्म मानोंगे तौ ताउक्तअनुभवका विरोधहोवैगा ॥ और इसअनुभवका कोईबाधकहैनहीं ॥ यातैं इसअनुभवविषे भ्रमरूपताभी संभवतीनहीं ॥ और तेज्ञानइच्छादिक मनरूपानिमित्तकारणकरिकैजन्यहोवैं हैं ॥ यातैं ' एतत्सर्वंमनएव ' इसउक्तश्रुतिकातौ तेइच्छादिकसर्व मनकरिकैहीजन्यहैं याप्रकारभीअर्थ संभवैहै ॥ यातैं ताश्रुतिवचनतैंभी तिनइच्छाज्ञानादिकोंकूं अंतःकरणकीधर्मरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे वास्तवतैं दाहकपणेतैंरहित लोहपिंडविषे अग्निकेतादात्म्यसंबंधकरिकै यहलोहपिंड दाहकूंकरैहै याप्रकारका दाहकर्तृत्वव्यवहार होवैहै ॥ तैसे अंतःकरण आत्मा दोनों तादात्म्य अध्यासकरिकैही अहंजानामि अहमिच्छामि इत्यादिकअनुभव होवैहै ॥ जोकहो ताअध्यासविषे कोई प्रमाणनहींहै सोऐसानहींकहणा ॥ जिसकारणतैं ताअध्यासविषे इसपुरुषका आपणाअनुभवही प्रमाणहै ॥ सोप्रकार दिखावैहैं ॥ अहंजानामि याप्रकारकाअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ ताअनुभवतैं इस पुरुषविषे ज्ञातापणा प्रतीतहोवैहै ॥ सोज्ञातापणा केवल अंतःकरणविषेतौ संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोअंतःकरण भूतोंकाकार्यहोणेतैं जडहै ॥ जड़विषेभी जोज्ञातापणा होताहोवै तौ घटादिकों ॥७४॥

विषेभी सोज्ञातापणा होणाचाहिये ॥ तैसे सोज्ञातापणा केवल आत्माविषेभीसंभवतानहीं ॥ जिसका रणतैं 'असंगोह्ययंपुरुषः । केवलोनिर्गुणश्च । अव्यक्तोऽयमचिंत्योऽयमविकार्योयमुच्यते ' इत्यादिक श्रुतिस्मृतियोंकरीके ताआत्माका असंगपणाही जान्याजावैहै ॥ ऐसेअसंगआत्मविषे सोज्ञातापणा संभवतानहीं यातैं अहं इसप्रतीतितैं आत्माविषे अंतःकरणका अध्यारोपकरिकै ॥ तथा अहंचेतनः इसप्रतीतितैं ताअंतःकरणविषे आत्माकेतादात्म्यका अध्यारोपकरिकै ॥ तथा आत्माविषे अंतःकरणके इच्छादिकधर्मोंका और अंतःकरणविषे आत्माकेसत्यादिकधर्मोंका अध्यारोपकरिकै ॥ यहजीव अहं जानामि याप्रकारतैं आपणेविषे ज्ञातापणेकूं अनुभवकरैहै ॥ यातैं ताअध्यासविषे इसजीवका अनुभव ही प्रमाणहै ॥ इसप्रकारकेअनुभवसिद्धअध्यासकेवशतैंही तेअंतःकरणकेज्ञानइच्छादिकधर्म आत्माविषेप्रतीतहोवैहैं ॥ वास्तवतैं आत्माके तेधर्मनहीं हैं इति ॥ इहां नैयायिकतौ यहकहैहैं ॥ आत्माकेसाथ मनकेसंयोगहुए ज्ञान १ इच्छा २ प्रयत्न ३ सुख ४ दुःख ५ द्वेष ६ धर्म ७ अधर्म ८ संस्कार ९ यह नवगुण आत्माविषे उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातैं तेज्ञानइच्छादिक आत्माकेही धर्म हैं ॥ यहनैयायिकोंकामत न्यायप्रकाशकेतृतीयपरिच्छेदविषे विस्तारतैंकथनकऱ्याहै ॥ सोयहनैयायिकोंकामत समीचीननहींहै ॥ काहेतैं नैयायिकोंने आत्माकीन्यांई मनकूंभी निरवयवद्रव्य मान्याहै ॥ ऐसेनिरवयवमनका निरवयव आत्माकेसाथ संयोगहीसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं नैयायिकोंने तासंयोगकूं अव्याप्यवृत्ति मान्या है ॥ तहां जिनदोद्रव्योंका संयोगहोवैहै तिनदोद्रव्योंके किंचितदेशविषेतौ सोसंयोगरहैहै और किंचितदेशविषे तासंयोगकाअभावरहैहै ॥ यहही तासंयोगविषे अव्याप्यवृत्तिपणाहै ॥ जैसे वृक्षकीशाखा

विषेतौ वानरकासंयोग रहैहै और तिसीवृक्षकेमूलदेशविषे तासंयोगका अभावरहैहै ॥ इसप्रकार स
वैसंयोग अव्याप्यवृत्तिहोवैहै ॥ ऐसाअव्याप्यवृत्ति संयोग वृक्षवानरादिकसावयवद्रव्योंकाही संभवहै ॥
आत्मामनआदिकनिरवयवद्रव्योंका सोसंयोग संभवतानहीं ॥ यातैं आत्ममनकेसंयोगतैं आत्माविषेज्ञा
नादिकगुण उत्पन्नहोवैं हैं यहनैयायिकोंकाकहणा मिथ्याहीहै ॥ किंवा ज्ञानइच्छादिकोंकूं आत्माकाधर्म
माननेहारा जोनैयायिकहै ॥ तिनसे आत्माकूंहीतिनज्ञानइच्छादिकधर्मोंकाउपादानकारण कहणाहोवै
गा ॥ ताकेविषे यहकह्याचाहिये ॥ ताआत्माकूं आरंभकतारूपकरिकै तिनज्ञानादिकोंका उपादानपणा
है ॥ अथवा परिणामितारूपकरिकै उपादानपणाहै ॥ तहां सोनैयायिक जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरै सो
तौ संभवतानहीं काहेतैंअनेकद्रव्योंविषेही आरंभकपणा होवैहै ॥ जैसे अनेकपरमाणुवोंकूं जगत्का
आरंभकपणाहै और आत्मातौ एकहै ॥ यातैं ताएकआत्माकूं तिनज्ञानइच्छादिकोंका आरंभकपणा
संभवतानहीं ॥ तैसे दूसरा परिणामीपक्षभी संभवतानहीं काहेत सावयवदुग्धादिकही दधिआदिकआ
कारपरिणामकूंप्राप्तहोवैं हैं निरवयवद्रव्यका कहांभीपरिणाम देख्यानहीं ॥ और आत्माभी निरवयवद्र
व्यहै ॥ यातै ताआत्माकूं तिनज्ञानइच्छादिकोंका परिणामीउपादानपणाभी संभवतानहीं ॥ और आ
त्माकूं जोसावयवद्रव्य मानोंगे तौ घटादिकोंकीन्यांई ताआत्माकूं अनित्यपणाहीप्राप्तहोवैगा ॥ यातैं
तेज्ञानइच्छादिक आत्माकेधर्म हैं यहनैयायिकोंकामत असंगतहै ॥ किंवा 'साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च'
यहश्रुति आत्माकूं सर्वगुणोंतैंरहितकहैहै ॥ ताश्रुतितैंविरुद्धहोणेतैंभी सोनैयायिकोंकामतअसंगतहै ॥
यातैं तेज्ञानइच्छादिकसर्वधर्म अंतःकरणकेही हैं यहसिद्धभया इति॥ इतनेपर्यंत वृत्तिकास्वरूपनिरूपणक

न्या ॥अब तावृत्तिकाविभाग निरूपणकरैं हैं॥ सोउक्तवृत्तिप्रमा १ अप्रमा २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकी होवहै ॥ तिनदोनों वृत्तियोंविषे प्रथम प्रमावृत्तिकानिरूपणकरहै ॥ तहां 'बोधेद्धावृत्तिः वृत्तीद्धबोधो वा प्रमा' अर्थयह ॥ चैतन्यकानाम बोधहै॥ ताचैतन्यरूपबोधकरिकै इद्ध कहिए प्रकाशित जोवृत्तिहै ताका नाम प्रमाहै॥अथवा तावृत्तिविषे इद्ध कहिए प्रतिबिंबित जोचैतन्यरूपबोधहै ताकानाम प्रमाहै इति ॥ और सोउक्तप्रमाभी ईश्वराश्रया १ जीवाश्रया २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै॥तहां 'ईक्षणापरपर्यायस्रष्टव्यविषयाकारमायावृत्तिप्रतिबिंबिताचित् ईश्वराश्रयाप्रमा' अर्थयह ॥ सृष्टिकेआदिकालविषेआगे उत्पन्नहोणेहारेजगत्कूंविषयकरणेहारी जोमायाकीवृत्तिहै तिसवृत्तिकूं श्रुतिविषे ईक्षणइसनामकरिकै कथनकऱ्याहै॥ तिसमायावृत्तिविषे प्रतिबिंबितजोचैतन्यहै सोईश्वराश्रयाप्रमा कहीजावैहै ॥ तहांश्रुति 'तदैक्षतबहुस्यांप्रजायेय' अर्थयह॥सोमायाउपाहितपरमेश्वर सृष्टिकेआदिकालविषे मैं बहुतरूपहोइकै उत्पन्नहोवें याप्रकारकाईक्षण करताभया इति ॥ अब जीवाश्रयाप्रमाकानिरूपणकरैं हैं ॥ तहां 'अनधिगताबाधितविषयाकारांतःकरणवृत्तिप्रतिबिंबिताचित् जीवाश्रयाप्रमा' अर्थयह ॥ अनधिगत कहिए अज्ञात अर्थात् बोधनेनहींविषयकऱ्याहुआ तथा अबाधित कहिये बाधतैंरहित ऐसाजोविषयहै ॥ ताविषयकेआकार जोअंतःकरणकीवृत्तिहै तावृत्तिविषे प्रतिबिंबित जोचैतन्यहै सो जीवाश्रयाप्रमाकहीजावैहै ॥ तहां 'विषयाकारांतःकरणवृत्तिप्रतिबिंबिताचित् जीवाश्रयाप्रमा' । इतनामात्रहीजोताजीवाश्रितप्रमाकालक्षणकरते तौ भ्रांतिज्ञानविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे 'अबाधित यह विषयकाविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तहां भ्रमज्ञानकावि

षय अबाधित होतानहीं ॥ किंतु शुक्तिरज्जुआदिकअधिष्ठानकेज्ञानकरिकै ताभ्रमकेविषयभूत रजतसर्पादिकोंका बाधहोइजावैहै ॥ यातैं ताभ्रमज्ञानविषे ताप्रमाकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यद्यपि विवरणकारादिकसांप्रदायिकोंकेमतविषे सोभ्रमज्ञान अविद्याकीवृत्तिरूपहै ॥ यातैं 'अंतःकरणवृत्ति' इसपदकेकहणेकरिकैही ताभ्रमज्ञानविषे ताउक्तलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ सोअबाधितपदव्यर्थ है ॥ तथापि जिसउपाध्यायकेमतविषे सोभ्रमज्ञान अंतःकरणकीवृत्तिरूपहै ॥ तिसमतविषे ताअबाधितपदकेकहणेकरिकैही ताभ्रमज्ञानविषे अतिव्याप्तिकानिवारण होवैहै ॥ यातैं सोअबाधितपद सार्थक है ॥ किंवा ताउक्तलक्षणविषे अनधिगत यहपद जोनहींकथनकरते तौ तालक्षणकी स्मृतिज्ञानविषे अतिव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतैं यथार्थस्मृतिकाविषय अबाधितहीहोवैहै॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे । अनधिगत यहपद कथनकऱ्याहै ॥ तहां पूर्वअनुभवकरेहुए अर्थकीही स्मृतिहोवैहै ।। यातैं तास्मृतिकाविषय पूर्व अज्ञातनहींहै ॥ किंतु ज्ञातहीहै ॥ यातैं अनधिगतपदके कहणेतैं तास्मृतिविषे ताजीवाश्रितप्रमाकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ यहउक्त जीवाश्रितप्रमाकालक्षण कोईभीप्रमाविषे घटतानहीं ॥ यातैं यहलक्षण असंभवदोषवालाहै ॥ ॥समाधान॥ ॥ 'अहंब्रह्मास्मि' इत्यादिकमहावाक्यतैंउत्पन्नभईजो ब्रह्मआत्माकीएकताकूंविषयकरणेहारी अंतःकरणकीवृत्तिहै तावृत्तिविषेप्रतिबिंबितचैतन्यरूपप्रमाविषे सोउक्तलक्षणसंभवैहै ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्मआत्माकाएकत्व अनधिगतभीहै तथाअबाधितभीहै यातैं सोउक्तलक्षण असंभवदोषवालानहींहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसउक्तलक्षणकी 'अयंघटःअयंघटः' इत्यादिकप्रमाविषे अव्याप्ति

हीहोवैहै ॥ काहेतैं ताघटपटादिकसर्वप्रपंचका ब्रह्मज्ञानकरिकै बाध होइजावैहै ॥ यातैं तिनघटपटादि कोंविषे सोअबाधितपणाहैनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताप्रपंचका यद्यपि ब्रह्मज्ञानकरिकै बाधहोवै है ॥ तथापि ताब्रह्मज्ञानतैंपूर्व संसारदशाविषे ताप्रपंचका बाधहोतानहीं ॥ यातैं सोप्रपंचभी तासंसा रदशाविषे अबाधितहीहै॥ यातैं ताघटपटादिप्रपंचाविषयकप्रमाविषे ताउक्तलक्षणकी अव्याप्तिहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसप्रकारका जोअबाधितपदकाअर्थ मानोंगे तौ भ्रांतिज्ञानविषेभी ताप्रमाके लक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैगी ॥ जिसकारणतैं ताभ्रांतिज्ञानकेविषयभूत शुक्तिरजतादिकभी ताभ्रांति कालविषे अबाधितहीहोवैं हैं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तेशुक्तिरजतादिक ताभ्रांतिकालविषे अबाधित हुएभी अनधिगतनहीं हैं ॥ अर्थात् अज्ञातसत्तावालेनहीं हैं ॥ किंतुज्ञातसत्तावालेहीहैं ॥ यातैं ताभ्रां तिज्ञानविषे ताउक्तप्रमाणकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तहां ज्ञानतैंपूर्वकालविषे जोविषयकीसत्ता है ताकानाम अज्ञातसत्ताहै ॥ और ज्ञानकेसमकाल जोविषयकीसत्ताहै ताकानाम ज्ञातसत्ताहै इति ॥ अब प्रसंगतैं प्रमाणकालक्षणकहेहैं ॥ 'प्रमाकरणं प्रमाणं' अर्थयह ॥ पूर्वकथनकरीजा जीवा श्रितप्रमाहै ताप्रमाका जोकरणहोवैहै सो प्रमाण कह्याजावै है ॥ जैसे 'अयंघटः' इसप्रत्यक्षप्रमाका च क्षुइंद्रियकरणहै ॥ यातैं सोचक्षुइंद्रिय प्रमाण कह्याजावैहै॥ इसप्रकार अनुमानादिकप्रमाणोंविषेभी ल क्षणजानिलेणा ॥ तहां करणंप्रमाणं । इतनामात्रही जो ताप्रमाणकालक्षणकरते तौ छेदनरूपाक्रि याकेप्रति करणरूपजोकुठारहै ताकेविषे ताप्रमाणकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषके निवृत्तकरणेवासते तालक्षणविषे 'प्रमा' यहपद कथनकऱ्याहै ॥ तहां ताकुठारविषे प्रमाज्ञानकीकरण

ताहैनहीं ॥ यातैं ताकुठारविषे ताउक्तलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा । प्रमा प्रमाणं । इतना
मात्रही जो ताप्रमाणकालक्षणकरते तालक्षणविषे । करण । यहपद नहींकथनकरते तौ चक्षुआदि
कोंविषे ताप्रमाणकेलक्षणकीअव्याप्तिहोती॥जिसकारणतैं तिनचक्षुआदिकोंकूं द्रव्यरूपताहोणेतैं प्रमा
ज्ञानरूपताहैनहीं ॥ ताअव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवास्ते तालक्षणविषे । करण । यहपद कथनकह्याहै॥
तहां जिसकारणकेप्रवृत्तहुए कार्यकीउत्पत्तिविषे विलंबनहींहोवैहै ॥ सोकारण करण कह्याजावैहै इति ॥
अब ताजीवाश्रितप्रमाकाविभाग वर्णनकरैं हैं ॥ तहां साजीवाश्रितप्रमा पारमार्थिकी १ व्यावहारिकी
२ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां अधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकवाक्यजन्य जो अहंब्र
ह्मास्मि याप्रकारकीप्रमाहै ॥ सो पारमार्थिकी कहीजावैहै ॥ सोपारमार्थिकीप्रमा पूर्वनिरूपणकरे
है ॥ तथा आगे शाब्दीप्रमाकेनिरूपणाविषे निरूपणकरैंगे ॥ और घटपटादिरूपप्रपंचकूंविषयकरणेहारी
जो 'अयंघटः अयंपटः' इत्यादिकप्रमाहै ॥ सो व्यावहारिकीप्रमा कहीजावैहै ॥ और सोव्यावहारिकीप्र
माभी प्रत्यक्ष १ अनुमिति २ उपमिति ३ शाब्द ४ अर्थापत्ति ५ अभावप्रमा ६ इसभेदकरिकै षट्प्र
कारकीहोवैहै ॥ और ताप्रमाकेषट्प्रकारकेभेदकरिकै ताप्रमाकाकरणरूपप्रमाणभी प्रत्यक्ष १ अनुमान २
उपमान ३ शब्द ४ अर्थापत्ति ५ अनुपलब्धि ६ इनभेदकरिकै षट्प्रकारकाहीहोवैहै ॥ अब तिनषट्प्र
माओंविषे प्रथम प्रत्यक्षप्रमाकानिरूपणकरेहैं॥तहां विषयचैतन्याभिन्नप्रमाणंचैतन्यं प्रत्यक्षप्रमा' अर्थय
ह ॥ विषयचैतन्यसेअभिन्न जोप्रमाणचैतन्यहै सो प्रत्यक्षप्रमा कह्याजावैहै ॥ अब इसउक्तअर्थकेस्पष्ट
करणेवासते प्रथम ताचैतन्यका उपाधिकृतभेद निरूपणकरैंहैं ॥ तहां वास्तवतैं एकअद्वितीयरूपहुआ ॥७७॥

भी सोचैतन्य उपाधिकेभेदतैं प्रमाताचैतन्य १ प्रमाणचैतन्य २ विषयचैतन्य ३ फलचैतन्य ४ इनभे
दोंकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै॥ तहां अंतःकरणविशिष्टचैतन्यकानाम प्रमाताचैतन्यहै ॥ और अंतःक
रणकीवृत्तिकरिकैअवच्छिन्न जोचैतन्यहै ताकानाम प्रमाणचैतन्यहै ॥ और घटादिकविषयोंकारिकैअव
च्छिन्नजोचैतन्यहै ताकानाम विषयचैतन्यहै॥ और घटादिकविषयोंके समानाकारताकूंप्राप्तभईजोवृत्ति
है तावृत्तिकरिकैअभिव्यक्तजोचैतन्यहै ताकानाम फलचैतन्यहै॥ इसप्रकार अंतःकरणादिकउपाधिकेभे
दकरिकै सोएकहीचैतन्य चारिप्रकारकाहोवैहै॥ तहां तिनउपाधियोंका यहस्वभावहै जबपर्यंत तेउ
पाधियां भिन्नभिन्नदेशविषेस्थितहोवैहैं तबपर्यंतही तेउपाधियां स्वउपहितोंका भेदकरेहैं ॥ और ज
बी तेउपाधियां एकदेशविषेस्थितहोवैहैं ॥ तभी स्वउपहितोंका भेदकरैनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे ति
नउपहितोंका अभेदहीहोवैहै॥ जैसे मठतैंबाह्य घटकेविद्यमानहुए तामठउपहितआकाशका तथाघटउप
हितआकाशका भेदहीहोवह ॥ औरै तामठकेभीतर घटकेविद्यमानहुए तामठाकाश घटाकाश दोनों
का अभेदहीहोवैहै तैसे अंतःकरण वृत्ति घटादिकविषय यहतीनोंउपाधि जबपर्यंत भिन्नभिन्नदेशवि
षे रहैहैं तबपर्यंतही प्रमाताचैतन्य प्रमाणचैतन्य विषयचतन्य इनतीनोंचैतन्योंका भेदहोवैहै ॥ औ
र जंबी नेत्रादिकइंद्रियद्वारा सो अंतःकरण वृत्तिरूपसे बाह्यनिकसिके घटादिकविषयदेशविषेजावैहै ॥
तबी तिनअंतःकरणादिकतीनोंउपाधियोंकी एकदेशविषेस्थितिहोणेतैं तिनप्रमातादिकतीनोंचैतन्योंका
अभेदहीहोवैहै॥इसप्रकार त्रिषयावच्छिन्नचैतन्यसे जोप्रमाणचैतन्यकाअभेदहै ताकानाम प्रत्यक्षप्रमाहै॥
अब ताअपरोक्षवृत्तिकेउत्पत्तिकेप्रकारकूं दृष्टांतकरिकै निरूपणकरैहैं ॥ जैसे तलावकाजल किसी

छिद्रतैं बाह्यनिकसिके कुल्याद्वारा केदारोंकूं प्राप्तहोइकै जिसप्रकारका त्रिकोण वा चतुःकोण केदारों काआकारहोवैहै ॥ तिसीआकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां ताकुल्याद्वारा तलावकेजलका तथा केदारकेजलका अभेदहीहोवैहै ॥ तैसे घटादिकअर्थोंकेसाथि चक्षुआदिकइंद्रियकेसंबंधहुएतैं अनंतर अंतःकरणभी चक्षुआदिकइंद्रियद्वारा बाह्यविषयदेशविषेजाइकै तिनघटादिकविषयोंक समानाकारपरिणाम कूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसीविषयाकार अंतःकरणकेपरिणामकूं वृत्तिकहेहैं ॥ तिसघटाकारवृत्तिविषे सोघटादि विषयावच्छिन्नचैतन्य प्रतिफलित होवैहै अर्थात् प्रतिबिंबित होवैहै ॥ और जिसकालविषे ताघटाकारवृत्तिविषे सोघटावच्छिन्नचैतन्य प्रतिफलित होवैहै ॥ तिसीकालविषे तावृत्तिविषयरूपदोनोंउपाधियोंकी एकदेशविषेस्थितिहोणेतैं सोप्रमाणचैतन्य ताविषय चैतन्यसे अभिन्नहोवै है॥इसप्रकारतैं विषयचैतन्यसे अभिन्न जोप्रमाणचैतन्यहै ताकानाम प्रत्यक्षप्रमाहै ॥ तहां 'प्रमाणचैतन्यं प्रत्यक्षप्रमा' इतनामात्रही जो ताप्रत्यक्षप्रमाकालक्षणकरते तौ अनुमितिआदिकपरोक्षप्रमाविषे तालक्षणकी अतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तिकरणेवासते तालक्षणविषे 'विषयचैतन्याभिन्न' यह ताप्रमाणचैतन्यकाविशेषण कथनकऱ्याहै । तहां अनुमतिआदिकपरोक्षवृत्तियां बाह्यविषयदेशविषे जातीनहीं ॥ किंतु शरीरकेभीतर हृदयदेशविषेही उत्पन्नहोवैं हैं ॥ यातैंतापरोक्षस्थलविषे ताविषयचैतन्यसे ताप्रमाण चैतन्य का अभेदहोतानहीं यातैं तिनअनुमितिआदिकपरोक्षज्ञानोंविषे ताप्रत्यक्षप्रमाकेलक्षणकी अतिव्याप्ति होवैनहीं॥किंवा 'विषयचैतन्याभिन्नंवृत्त्यवच्छिन्नचैतन्यं प्रत्यक्षप्रमा' इतनामात्रही जो ताप्रत्यक्षप्रमा का लक्षण करते तौ भ्रमप्रत्यक्षविषे तालक्षणकी अतिव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतैं ताभ्रमस्थलविषेभी

विषयावच्छिन्नचैतन्यसे तावृत्तिअवच्छिन्नचैतन्यका अभेदहीहोवैहै ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकोनिवृत्तकरणे वासतै तालक्षणविषे 'प्रमाणचैतन्यम्' यहपदकथनकऱ्याहै ॥ तहां भ्रमवृत्तिअवच्छिन्नचैतन्यविषे प्रमाणचैतन्यरूपता हैनहीं ॥ यातैं ताभ्रमप्रत्यक्षविषे ताप्रत्यक्षप्रमाकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ भ्रमज्ञानकेविषयभूतरजतादिकोंकाप्रकाश जो इदमाकारअंतःकरणकीवृत्तिअवच्छिन्न साक्षीचैतन्यहै सो साक्षीचैतन्यही ताविषयचैतन्यसैं अभिन्न प्रमाणचैतन्यरूपहै ॥ यातैं ताउक्तलक्षण कीभी ताभ्रमप्रत्यक्षविषे अतिव्याप्तिहीहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे विषयका 'अबाधित' यहविशेषणभी हमारेकूं विवक्षितहै। तहां भ्रमप्रत्यक्षके विषय जेरजतादिकहैं ते अबाधितनहीं हैं ॥ किंतु शुक्तिआदिकअधिष्ठानकेज्ञानकरिकै तिनरजतादिकोंका बाधहोइजावैहै ॥ यातैं ताभ्रमप्रत्यक्षविषे ताप्रत्यक्षप्रमाकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ घटादिकप्रपंचकूं ब्रह्मज्ञानकरिकैबाधितहोणेतैं अबाधितपणा संभवतानहीं ॥ यातैं 'अयं घटः अयंपटः', इत्यादिकप्रत्यक्षप्रमाविषे तालक्षणकी अव्याप्तिहीहोवैगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताअबाधितपदकरिकै संसारदशाविषेअबाधितपणा विवक्षितहै ॥ तहां सोघटपटादिकप्रपंच ब्रह्मज्ञानतैंपूर्व संसारदशाविषे अबाधितही है ॥ यातैं ताघटादिप्रपंचविषयकप्रत्यक्षप्रमाविषे तालक्षणकी अव्याप्तिहोवै नहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जहां इसपुरुषकूं सुखदुःखरूपहेतुकेज्ञानतैं आपणेधर्मअधर्मका अनुमितिज्ञान होवैहै॥अथवा तू धर्मवान्है तू अधर्मवान्है याप्रकारके कोईकेवचनतैं इसपुरुषकूंआपणेधर्मअधर्मका शाब्दज्ञान होवैहै तहां ताधर्मअधर्मरूपविषयकी तथा ताअनुमितिशब्दरूपवृत्तिकी एकअंतःक

रणरूपदेशविषेस्थितिहोणेतें तत्उपहितचैतन्योंकाभी अभेदहीहोवैहै ॥ और सोधर्मअधर्म संसारदशा
विषे अबाधितभीहै॥यातें ताप्रत्यक्षप्रमाकेलक्षणकी ताधर्माधर्मविषयकअनुमितिशाब्दरूपपरोक्षज्ञानवि
षे अतिव्याप्तिहोवैगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताउक्तलक्षणविषे ताविषयका 'योग्य' यहविशेषणभी
हमारेकूं विवक्षितहै ॥तहां सोधर्मअधर्म प्रत्यक्षकेयोग्य नहीं है॥किंतु अयोग्यहै॥यातें ताधर्मअधर्मविष
यक अनुमितिशाब्दज्ञानविषे ताप्रत्यक्षप्रमाकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं॥इसप्रकार आपणेसुखादिकों
केयथार्थस्मृतिज्ञानविषे ताप्रत्यक्षप्रमाकेलक्षणकीअतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै ता लक्षणविषेताविष
यका 'वर्त्तमान' यह विशेषणभीकथनकरणा ॥ तास्मृतिज्ञानकाविषयवर्त्तमानहोतानहीं ॥यातैंतास्मृति
विषे ताउक्तलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ इतनेकहणेकरिकै ताप्रत्यक्षप्रमाका यहलक्षणसिद्धभया ॥
'अबाधितवर्तमानयोग्यविषयचैतन्याभिन्नंप्रमाणचैतन्यं प्रत्यक्षप्रमा' अर्थयह॥संसारदशाविषेअबाधित
तथा वर्त्तमानतथा प्रत्यक्षकेयोग्य ऐसाजोविषयहै॥ताविषयावच्छिन्नचैतन्यसे अभिन्नजोप्रमाणचैतन्यहै
ताकानामप्रत्यक्षप्रमाहै ॥ अथवाताप्रत्यक्षप्रमाका यहदूसरालक्षण करणा ॥ 'अबाधितापरोक्षार्थविषय
ज्ञानं प्रत्यक्षप्रमा' अर्थयह॥अबाधित तथा अपरोक्षऐसाजोअर्थहै ताअर्थकूंविषयकरणेहाराज्ञानप्रत्यक्षप्र
मा कह्याजावैहै ॥तहां इसलक्षणविषेभी भ्रमज्ञानविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै 'अबाधित' यह
अर्थकाविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ और अनुमितिआदिकपरोक्षज्ञानोंविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवास ॥७९॥
तै 'अपरोक्ष' यह अर्थकाविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तहां साक्षीचैतन्यकेसाथि घटादिकअर्थकाजोता
दात्म्यहै ॥यहही ताघटादिकअर्थविषे अपरोक्षपणाहै॥ यद्यपि घटका स्वावच्छिन्नब्रह्मचैतन्यविषेहीता

दात्म्यहै अंतःकरणउपहितसाक्षीचैतन्यविषे तादात्म्यनहीं है तथापि पूर्वउक्तरीतिसैं अंतःकरणकीवृत्तिकेबाहिरनिर्गमनकालविषे ताघटावच्छिन्नचैतन्यका तासाक्षीचैतन्यसेअभेदहीहोवैहै॥यातैं तिनघटादिकोंका तासाक्षीचैतन्यविषे तादात्म्य संभवैहै इति॥अब इसउक्तप्रत्यक्षप्रमाणकाफल वर्णनकरैंहैंतहां ताउक्तप्रत्यक्षप्रमाविषे दोअंशहैं ॥ एकतौ अंतःकरणकीवृत्तिरूपअंशहै ॥ और दूसरा चैतन्यरूपअंश है ॥ तहां वृत्तिअंशकरिकैतौ घटादिकविषयोंके आवरणकीनिवृत्ति होवैहै ॥ और चैतन्यअंशकरिकैअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यह स्वामीनृसिंहाश्रमकामतहै ॥ और आचार्यतौ ऐसामानैं हैं ॥ ताउक्तप्रत्यक्षप्रमाकरिकैही ताआवरणशक्तिसहितअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर अंतःकरणउपहितचैतन्यरूपसाक्षीकरिकै घटादिकविषयोंका स्फुरणहोवैहै ॥ अब प्रसंगतैं तासाक्षीकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ॥ 'उदासीनत्वेसतिबोद्धा साक्षी' अर्थयह ॥ जोचैतन्य निर्विकारउदासीनहुआ बुद्धिआदिकोंकूं प्रकाश करैहै॥अर्थात् प्रमाता प्रमाण प्रमेय इत्यादिकसर्वोंकूं प्रकाशकरैहै॥सोचैतन्य साक्षी कह्याजावैहै॥तहां लोकविषेभीजोपुरुष परस्परविवादकरतेहुएदोपुरुषोंतैंभिन्नहोवैहै ॥ तथा तिनदोनोंके विवादकूं अपरोक्षरूपकरिकैजानैहै ॥ तथा उदासीनहोवैहै॥अर्थात् पक्षपाततैंरहितहोवैहै॥तिसपुरुषकूं साक्षीकहैं हैं॥ तैसे जोचैतन्य उदासीनहुआ बुद्धिआदिकसर्वोंकूं प्रकाशकरैहै ॥ सोचैतन्यसाक्षी कह्याजावैहै ॥ तहां 'बोद्धा साक्षी' इतनामात्रही जो तासाक्षीकालक्षणकरते तालक्षणविषे 'उदासीनत्वेसति' यहपद नहीं कथनकरते तौ परस्परविवादकरनेहारेपुरुषोंविषेभी साक्षीपणा होणाचाहिये ॥ जिसकारणतैं स्वपरव्यवहारकाबोद्धापणा तिनपुरुषोंविषेभीहै ॥ परन्तु तिनपुरुषोंकूं कोईसाक्षीकहतानहीं॥ यातैं तासा

क्षीका उदासीन यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तिनाविवादकर्त्तापुरुषोंविषे सोउदासीनपणाहैनहीं ॥ यातैं तिनोंविषे तासाक्षीकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा 'उदासीनःसाक्षी' इतनामात्रहीं जो तासाक्षीकालक्षण करते तालक्षणविषे बोद्धा यहपद नहींकथनकरते तौ ताविवादस्थलविषे स्तंभादिकोंकूंभीउदासीनपणाहै यातैं तेस्तंभादिकभी साक्षीहोणा चाहिये ॥ और तिनस्तंभादिकोंकूं कोईसाक्षीकहतानहीं ॥ यातैं तालक्षणविषे 'बोद्धा' यहपद कथनकऱ्याहै ॥ तिनजडस्तंभादिकोंविषे सो बोद्धापणाहैनहीं ॥ यातैं तिनोंविषे तासाक्षीकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं तैसे इहांप्रसंगविषे केवलबोद्धापणातौ भोक्ताजीवविषेभीहै ॥ परन्तु ताजीवविषे उदासीनपणा नहीं है और केवलउदासीनपणातौ देहइंद्रियादिकजडपदार्थोंविषेभीहै ॥ परन्तु तिनोंविषे बोद्धापणानहीं है ॥ यातैं ताभोक्ताजीवविषे तथादेहइंद्रियादिकोंविषे तासाक्षीकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यहहीसाक्षीकालक्षण 'साक्षीचेताःकेवलोनिर्गुणश्च' इसश्रुतिनें कथनकऱ्याहै ॥ तहां इसश्रुतिविषे 'चेताः' इसपदकरिकै बोद्धा कह्याहै ॥ और 'केवल' इसपदकरिकै उदासीन कह्याहै ॥ यातैं 'चेताःकेवलःसाक्षी'। यहसाक्षीकालक्षण ताश्रुतितैंसिद्धहोवैहै और नैयायिक आत्माकूं ज्ञानादिकगुणोंवाला मानैं हैं ॥ तिनोंकेमतकेखंडनकरणेवासतै ताश्रुतिने आत्माकूं निर्गुणकह्याहै ॥ और ताश्रुतिविषेस्थित चकारकरिकै आत्माकूं निष्क्रिय कह्याहै॥ताकरिकै आत्माकूं मध्यमपरिमाणवाला तथा सक्रिय माननेहारे दिगंबरोंकामतभी खंडनहुआजाननणा ॥ किंवा यहउक्तसाक्षीकास्वरूपही पंचदशीकेनाटकदीपविषे श्रीविद्यारण्यस्वामीनें नृत्यशालाविषेस्थितदीपककेदृष्टांतकरिकै निरूपणकऱ्याहै ॥ यातैं तासाक्षीकरिकै घटादिकविषयोंका

स्फुरण संभवैहै इति ॥ तहां पूर्व प्रत्यक्षप्रमाका फलसहित निरूपणकर्‌या ॥ अब ताप्रत्यक्षप्रमाकावि भाग वर्णनकरैंहैं ॥ तहां सोउक्तप्रत्यक्षप्रमा बाह्यप्रत्यक्षप्रमा १ अंतरप्रत्यक्षप्रमा २ इनभेदोंकीरकै दोप्र कारकीहोवैहै ॥ तहां बाह्यअर्थकूंविषयकरणेहारी प्रत्यक्षप्रमाकूं बाह्यप्रत्यक्षप्रमा कहैहैं ॥ और अंतरअ र्थकूंविषयकरणेहारी प्रत्यक्षप्रमाकूं अंतरप्रत्यक्षप्रमा कहेहैं ॥ तिनदोनोंप्रमाविषे प्रथम बाह्यप्रत्यक्षप्रमा शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ इनपंचविषयोंकेभेदतैंपंचप्रकारकीहोवैहै ॥ अथात शब्दप्रमा १ स्पर्शप्रमा २ रूपप्रमा ३ रसप्रमा ४ गंधप्रमा ५ यहपंचप्रकारकी बाह्यप्रत्यक्षप्रमाहोवैहै ॥ और तापंच प्रकारकी बाह्यप्रत्यक्षप्रमाके यथाक्रमतैं करणरूप श्रोत्र १ त्वक् २ चक्षु ३ रसन ४ घ्राण ५ यहपंच ज्ञानइंद्रियहैं ॥ यातैं तेपंचज्ञानइंद्रिय बाह्यप्रत्यक्षप्रमा कहेजावैं हैं ॥ और दूसरी अंतरप्रत्यक्षप्रमाभी आत्मगोचरा १ सुखादिगोचरा २ इनभेदोंकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां आत्माकूंविषयकरणेहारी जा प्रमाहै ताकानाम आत्मगोचराहै ॥ और सुखदुःखादिकोंकूंविषयकरणेहारी जोप्रमाहै ताकानाम सुखा दिगोचराहै ॥ और सोआत्मगोचरप्रमाभी विशिष्टात्मविषया १ शुद्धात्मविषया २ इनभेदोंकरिकै दोप्र कारकीहोवैहै ॥ तहां अहंजीवः यहप्रमातौ विशिष्टआत्माविषयक होवैहै ॥ और अहंब्रह्मास्मि यहप्र मा शुद्धआत्माविषयक होवैहै और अहंसुखी अहंदुःखी इत्यादिकप्रमा सुखदुःखादिविषयक होवैहै ॥ अब ताअंतरप्रत्यक्षप्रमाके कारणका निरूपणकरैंहैं ॥ तहां वाचस्पतिमिश्रकातौ यहमतहै॥अंतरइंद्रिय रूपजोमनहै ॥ सोमनही ताउक्तअंतरप्रत्यक्षप्रमाका करणहै ॥ काहेतैं जैसे बाह्यरूपादिकोंकेसाक्षात्कार काकरणरूपकरिकै चक्षुआदिकइंद्रियोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ तैसे अंतर सुखदुःखादिकोंकेसाक्षात्कारकाक

रणरूपकरिकै मनरूपअंतरइंद्रियकीभी सिद्धि संभवैहै ॥ और सुखदुःखादिकोंकूं व्यवहारिकपणाहोणेतैं तिनसुखदुःखादिकोंकेज्ञानकूंभी व्यावहारिकपणाही संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तामनकूं विशिष्टआत्माकेसाक्षात्कारकीकारणताकेहुएभी शुद्धआत्माकेसाक्षात्कारकीकरणता संभवतीनहीं ॥ जोकदाचित् तामनकूं शुद्धआत्माकेसाक्षात्कारका करणमानोंगे तौ आत्मसाक्षात्कारविषे मनकीकरणताकूंनिषेधकरणेहारी 'यतोवाचोनिवर्त्तंते अप्राप्यमनसासह । यन्मनसानमनुते' इत्यादिकश्रुतियोंका विरोध प्राप्तहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ 'मनसैवानुद्रष्टव्यम् । दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्धचा' इत्यादिकश्रुतियोंने तामनकूंही शुद्धआत्माकेसाक्षात्काराविषे करणपणा कथनकर्‍याहै ॥ यातैं आत्मसाक्षात्कारविषे मनकी करणताकूंनिषेधकरणेहारी सोउक्तश्रुति अशुद्धमनविषयकहै ॥ अर्थात् अशुद्धमनकरिकै आत्माकासाक्षात्कारहोतानहीं ॥ यातैं मनसैवानुद्रष्टव्यम् इसउक्तश्रुतिकरिकै शुद्धमनकूंही आत्मसाक्षात्कारकीकरणता सिद्धहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ 'तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि' इसश्रुतिविषे औपनिषद इसवचन करिकै आत्माकूं उपनिषदरूपशब्दप्रमाणजन्यज्ञानकाविषय कह्याहै ॥ और ताआत्माकूं जोमानसप्रत्यक्षकाविषय मानोंगे तौ इसउक्तश्रुतिकाविरोध प्राप्तहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शास्त्रआचार्यकरिकैसंस्कृतशुद्धमनकूंही हम ब्रह्मात्मसाक्षात्कारविषे करणमानैंहैं॥यातैं तामनकूं उपनिषदरूपशास्त्रकीअपेक्षाहोणेतैं ताऔपनिषदश्रुतिका विरोधहोवैनहीं ॥ परंतु ताउपनिषदरूपशब्दकूं आत्मसाक्षात्कारविषे करणतानहींहै ॥ किंतु ताशुद्धमनकूंहीकरणताहै ॥ किंवा विशिष्टआत्माकेसाक्षात्काराविषे तामनकूं करणपणा सिद्धहीहै ॥ यातैं शुद्ध आत्माकेसाक्षात्कारविषेभी तामनकूंही करणमान्याचाहिये ॥ तामनतैं

भिन्न कोईकरणमानणेविषे एकतौ कल्पनागौरवदोष प्राप्तहोवैहै ॥ और दूसरा ताअर्थकासाधक कोईप्र माणभीनहींहै ॥ यातैं अंतरप्रत्यक्षप्रमाका सोमनही करणहै इति ॥ अब इसउक्तमतकेखंडनपूर्वक आचा र्योंकामत वर्णनकरेहैं ॥ तहां मनकूं जोइंद्रियरूपतासिद्धहोवै तौ तामनकूं अंतरप्रत्यक्षप्रमाकेप्रति करण पणासिद्धहोवै ॥ परंतु तामनविषे इंद्रियरूपताही संभवतीनहीं ॥ जिसकारणतैं 'इंद्रियेभ्यःपराह्यर्थाअर्थेभ्य श्चपरंमनः।इंद्रियेभ्यःपरंमनः' इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंविषे तामनकूं इंद्रियोंतैंपृथक्ककरिकै कथनकऱ्याहै ॥ जोकदाचित् सोमनभी इंद्रियहोता तौ यहउक्तश्रुतिस्मृति तामनकूं इंद्रियोंतपृथक् नहींकहती ॥ यातैं सोमन इंद्रियनहींहै यहनिश्चयहोवैहै ॥ किंवा सुखदुःखादिकोंकेसाक्षात्काराविषे जोमनकूं करणपणासिद्ध होवै तौ तामनकूं इंद्रियरूपतासंभवै ॥ परंतु तामनकू करणरूपताहि संभवतीनहीं ॥ काहेतैं सर्ववृत्तियोंके प्रति तामनकूंही उपादानकारणताहै यहवार्त्ता पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ और जोपदार्थ जिसकार्यका उ पादानकारणहोवैहै सोपदार्थ तिसकार्यका करणहोतानहीं ॥ जैसे घटरूपकार्यकेउपादानकारणरूप मृत्तिकाकूं ताघाटकेप्रति करणरूपतानहींहै ॥ किंतुदंडादिकोंकूंही करणरूपताहै ॥ तैसे सर्ववृत्तियोंकेउ पादानकारणरूपमनकूंभी तिनवृत्तियोंकेप्रति करणरूपता संभवतीनहीं ॥ ताकरणताकेअसंभवहुए ता मनकूं इंद्रियमानणा व्यर्थहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ मनकूं जोइंद्रियरूप नहींमानोंगे तौ अंतरसुखदुःखा दिकोंकेसाक्षात्काराविषे अप्रमात्वही प्राप्तहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सुखदुःखादिकोंकासाक्षात्का रकोईप्रमाणकरिकै जन्यहैनहीं ॥ यातैं तासाक्षात्काराविषे अप्रमापणा हमारेकूं अंगीकारहीहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सुखादिकोंकेसाक्षात्कारकूं जोअप्रमारूपमानोंगे तौ ताअप्रमाज्ञानकेविषयहुए तेसुख

दुःखादिक शुक्तिरजतादिकोंकीन्यांई प्रातीतिकहीहोवैंगे ॥ अर्थात् तास्वविषयकप्रतीतिके समकालवृत्तिहीहोवैंगे ॥ ताकरिकै तिनसुखदुःखादिकोंविषे व्यावहारिकपणा नहींसिद्धहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सुखदुःखादिकोंकासाक्षात्कार अप्रमारूपहीहोवैहै ॥ याकारणतैं अंतःकरण तथा ताकेधर्मसुखदुःखादिक शुक्तिरजतकीन्यांई प्रातीतिकहीहोवैंहैं ॥ व्यावहारिकहोवैंनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सुखदुःखादिकोंकूं जोप्रातीतिकमानोंगे तौ तिनोंकूं हर्षशोकादिरूपअर्थक्रियाकाजनकपणा नहींहोवैगा ॥ व्यावहारिकपदार्थही ताअर्थक्रियाकाजनकहोवैहै ॥ ॥समाधान॥ ॥ व्यावहारिकपदार्थकीन्यांई कहां प्रातीतिकपदार्थभी ताअर्थक्रियाका जनकहोवैहै ॥ जैसे प्रातीतिक शुक्तिरजत इसपुरुषके प्रवृत्तिरूपअर्थक्रियाका जनकहोवैहै ॥ तथा प्रातीतिकरज्जुसर्प इसपुरुषके भयपलायनादिरूपअर्थक्रियाका जनकहोवैहै ॥ तैसे तिनप्रातीतिकसुखदुःखादिकोंकूंभी हर्षशोकादिरूपअर्थक्रियाकाजनकपणा संभवैहै ॥ ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे अंतर सुखदुःखादिकोंकासाक्षात्कार प्रमाणकरिकैअजन्यहोणतैं अप्रमारूप है ॥ तैसे अंतर आत्माकेसाक्षत्कारकूंभी प्रमाणकरिकैअजन्यहोणेतैं अप्रमारूपताही प्राप्तहोवैगी ॥ जो कदाचित् ताआत्मसाक्षात्कारविषेभी तुम अप्रमापणाही अंगीकारकरोगे तौ ताअप्रमाज्ञानकाविषयहोणेतैं सोआत्माभी सुखदुःखादिकोंकीन्यांई प्रातीतिकहीहोवैगा ॥ और आत्माकाप्रातीतिकपणा कोईभीआस्तिकवादीकूं इष्टनहीं है ॥ यातैं ताआत्मसाक्षात्कारविषे मनकूं अवश्यकरण मान्याचाहिये ॥८२॥
॥ ॥समाधान ॥ ॥ सुखदुःखादिकोंकेसाक्षात्कारकीन्यांई आत्मसाक्षात्कारविषेजोअप्रमापणा कहतेहो॥सोक्या विशिष्टआत्माके साक्षात्कारकूं अप्रमापणाकहतेहो ॥ अथवा शुद्ध आत्माकेसाक्षात्कारकूं

अप्रमापणा कहतेहो ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरो सोतौ हमारेकूंभी इष्टहै ॥ अर्थात् विशिष्ट आत्माकेसाक्षात्कारकूं हमभी अप्रमारूपहीमानैं हैं ॥ और जोद्वितीयपक्षअंगीकारकरौ सो संभवता नहीं काहेतैं 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारका शुद्धआत्माकासाक्षात्कार तत्त्वमसिआदिकवेदांतवाक्यकरि कैजन्यहोणेतैं प्रत्यक्षप्रमारूपहीं है ॥ यातैं ताशुद्धआत्माकेसाक्षात्कारविषे अप्रमापणा संभवतानहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ वाक्यकूं नियमतैं परोक्षज्ञानकाहीजनकपणाहोवैहै ॥ अपरोक्षज्ञानकाजनकप णाहोतानहीं ॥ यातैं तावेदांतवाक्यतैं आत्माकाअपरोक्षज्ञान संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ कहां शब्दतैंभी अपरोक्षहीज्ञानहोवैहै॥ जैसे दशमस्त्वमसि इसवाक्यतैं तादशमपुरुषकूं आपणाअपरो क्षज्ञानहीहोवैहै ॥ तैसे तत्त्वमसिआदिकवाक्यतैंभी इसअधिकारीपुरुषकूं आत्माकाअपरोक्षज्ञानहीहोवै है ॥ यहवार्त्ता आगे शाब्दप्रमाकेनिरूपणविषे कहैंगे ॥ ॥ इतिप्रत्यक्षप्रमानिरूपणम् ॥ १॥ अब दू सरी अनुमितिप्रमाकानिरूपणकरैं हैं ॥ तहां 'लिंगज्ञानजन्यज्ञानम् अनुमितिः' अर्थयह॥लिंगकेज्ञान करिकेजन्य जोज्ञानहै सो अनुमिति कह्याजावैहै ॥ जैसे 'अयंपर्वतः वह्निमान् धूमवत्त्वात् योयोधू मवान्सवह्निमान् यथामहानसः' अर्थयह ॥ यहपर्वत वह्निवालाहै धूमवालाहोणेतैं जो जो धूमवा लाहोवैहै ॥ सोसो वह्निवालाहीहोवैहै ॥ जैसे महानसहै ॥ अन्नपकावणेकेस्थानकानाम महानसहै इ ति ॥ तहां इसप्रसिद्धअनुमानविषे पर्वततौ पक्षहै ॥ और वह्नि साध्यहै ॥ और धूम लिंगहै॥ और म हानस दृष्टान्तहै तहां यहपर्वत धूमवालाहै इसप्रकारकेलिंगज्ञानतैं इसपुरुषकूं यहपर्वत वह्निवालाहै ॥ याप्रकारकाअनुमितिज्ञान होवैहै ॥ यातैं सोउक्तअनुमितिकालक्षण संभवैहै ॥ अब सिद्धांत विषे ताअ

नुमितिकेलक्षणकूंघटावैं हैं ॥ 'जीवः ब्रह्माभिन्नः सच्चिदानंदलक्षणत्वात् ब्रह्मवत' अर्थयह ॥ यहजीवात्मा ब्रह्मसेअभिन्नहै सत्‌चित्‌आनंदरूपहोणेतैं ॥ जोजो सच्चिदानंदरूपहोवैहै ॥ सो ब्रह्मतैंअभिन्नहीहोवैहै ॥ जैसे ब्रह्म सच्चिदानंदरूपहोणेतैं ब्रह्मतैंअभिन्नहीहै ॥ तैसे यहजीवभी सच्चिदानंदरूपहोणेतैं ब्रह्मसैं अभिन्नहीहोवैगा इति ॥ तहां इसअनुमानविषेभी जीवतो पक्षहै ॥ और ब्रह्मकाअभेद साध्यहै ॥ और सच्चिदानंदरूपत्व लिंगहै ॥ और ब्रह्म दृष्टांतहै ॥ तहां यहजीव सच्चिदानंदरूपहै याप्रकारकेलिंगज्ञानतैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषकूं यहजीव ब्रह्मसैंअभिन्नहै याप्रकारकाअनुमितिज्ञान होवैहै ॥ यातैं सोउक्तअनुमितिकालक्षण इहांभी संभवैहै इति ॥ अब प्रसंगतैं पक्षादिकोंकेस्वरूपका वर्णनकरैं हैं ॥ तहां अनुमितिज्ञानतैंपूर्व इसपुरुषकूं जिसपदार्थविषे साध्यकासंशयहोवैहै ॥ सोपदार्थ पक्ष कह्याजावैहै ॥ जैसे प्रसिद्धअनुमानविषे पर्वतोवह्निमान् इसअनुमितितैंपूर्व इसपुरुषकूं तापर्वतविषे वह्निकासंशयरहै है ॥ यातैं सोपर्वत ताउक्तअनुमानविषे पक्ष कह्याजावैहै ॥ और इसपुरुषकूं तापक्षविषे लिंगज्ञानकरिकै जिस पदार्थकाज्ञान होवैहै सोपदार्थ साध्य कह्याजावैहै ॥ जैसे ताप्रसिद्धअनुमानविषे इसपुरुषकूं पर्वतरूपपक्षविषे धूमरूपलिंगकेज्ञानतैं वह्निकाज्ञानहोवैहै ॥ यातैं सोवह्नि ताअनुमानविषे साध्य कह्याजावैहै ॥ और इसपुरुषकूं साध्य लिंग दोनोंका जिसपदार्थविषे निश्चयहोवै है सोपदार्थ दृष्टांत कह्याजावैहै ॥ जैसे ताप्रसिद्धअनुमान विषेइसपुरुषकूं महानसविषे वह्निरूपसाध्यका तथा धूमरूपलिंगका निश्चयहीहै ॥ यातैं सोमहानस ताउक्तअनुमानविषे दृष्टांत कह्याजावैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसलिंगकेज्ञानकरिकै सोअनुमिति जन्यहोवैहै ॥ तालिंगका क्यास्वरूपहै ॥ ऐसीशंकाके प्राप्तहुए ॥ अब ता

लिंगकालक्षणकहैं हैं ॥ 'व्याप्त्याश्रयः लिंगम्' अर्थयह ॥ साध्यकेव्याप्तिका जोआश्रयहोवैहै सो लिंग कह्याजावैहै ॥ जैसे ताप्रसिद्धअनुमानविषे वह्निरूपसाध्यकेव्याप्तिकाआश्रय धूमहै ॥ यातें सोधूम लिंग कह्याजावैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसव्याप्तिकाआश्रयहुए धूमादिक लिंगकहेजावै हैं ॥ तिसव्याप्तिका क्यास्वरूपहै ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ अब ताव्याप्तिकास्वरूप वर्णनकरैं हैं ॥ तहां 'साधनसाध्ययोर्नियतसामानाधिकरण्यं व्याप्तिः' अर्थयह ॥ साधन साध्य दोनोंका जोअव्यभिचारित सामानाधिकरण्यहै ताकानाम व्याप्तिहै ॥ जैसे प्रसिद्धअनुमानविषे धूमरूपसाधनका तथा वह्निरूपसाध्यका अव्यभिचरितसामानाधिकरण्यहै ॥ अर्थात् तावह्निरूपसाध्यकूंछोडिकै सोधूमरूपसाधन कदाचित्भी स्वतंत्ररहतानहीं ॥ यहही ताधूमविषे तावह्निकीव्याप्तिहै ॥ और वह्नितौ ताधूमकूंछोडिकै ततलोहपिंडविषेरहेहै ॥ यातें तावह्निविषे ताधूमकी सोउक्तव्याप्तिहैनहीं ॥ तहां इसउक्तव्याप्तिकाआश्रयहोणेतैं धूमादिकसाधनतौ व्याप्य कहेजावैं हैं ॥ और ताव्याप्तिकेनिरूपकहोणेतैं वह्निआदिकसाध्य व्यापक कहेजावैं हैं ॥ लिंग साधन हेतु यहतीनोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहोवैं हैं इति ॥ ॥ शंका ॥ इस उक्तव्याप्तिका उस पुरुषकूं किसउपायतें ज्ञानहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जहांजहां धूमरहैहै तहांतहां वह्निअवश्यरहैहै ॥ याप्रकारकाजो महानसादिकोंविषे वारंवार धूमवह्निकेसहचारका दर्शनहै तासहचारदर्शनतैंही इसपुरुषकूं धूम वह्निकाव्याप्यहै याप्रकारका व्याप्तिज्ञानहोवैहै ॥ परन्तु जिससाधनविषे यहसाधन साध्यकेअभाववालेमेंवृत्तिहै याप्रकारका व्यभिचारज्ञानहोवैहै ॥ तिससाधनविषे तासहचारदर्शनकेहुएभी तासाध्यकेव्याप्तिका ज्ञानहोतानहीं ॥ जैसे जहां जहां पार्थिवत्वहोवै

है तहांतहां लोहलेख्यत्वहोवैहै ॥ याप्रकारकेसहचारदर्शनकेहुएभी हीरकादिकोंविषे तालोहलेख्यत्वके अभावहुएभी सोपार्थिवत्व देखणेमेंआवैहै ॥ यातैं तासहचारदर्शनतैंतापार्थिवत्वविषे तालोहलेख्यत्व केव्याप्तिका ज्ञानहोतानहीं॥यातैं सोव्यभिचारज्ञान ताव्याप्तिज्ञानका प्रतिबंधकहोवैहै ॥ ताप्रतिबंधक केअभावसहित सोसहचारज्ञानही ताव्याप्तिज्ञानकाकारणहोवैहै ॥ तहां काष्ठादिकपार्थिवपदार्थोंविषे जोलोहकेशस्त्रतैं अक्षरादिकोंकालिखनाहै ताकानाम लोहलेख्यत्वहै इति ॥ इतनेकहणेकरिकै ताअनु मानकीयहरीति सिद्धहोवैहै ॥ महानसादिकोंविषे धूमवह्निकेसहचारदर्शनतैं इसपुरुषकूं धूम वह्निके व्याप्तिवालाहै याप्रकारका व्याप्तिज्ञानहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर कोईकालविषे पर्वतकेसमीपगएहुए तापुरु षकूं तापर्वतविषे यहपर्वत धूमवालाहै याप्रकारका ताधूमरूपलिंगकाज्ञानहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तापू र्वअनुभवकरीहुईव्याप्तिकेसंस्कार उद्बुद्धहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर तापुरुषकूं यहपर्वत वह्निवालाहै याप्रका रकाअनुमितिज्ञान होवैहै ॥ तहां सोव्याप्तिज्ञानतौ ताअनुमितिप्रमाकाकरणहोणेतैं अनुमानप्रमाणहै ॥ और ताव्याप्तिकेउद्बुद्धसंस्कार ताकरणका अवांतरव्यापारहै ॥ और सोअनुमिति प्रमा फलहै ॥ और सोलिंगज्ञान संस्कारोंकाउद्बोधकहोणेतैं सहकारीकारणहै इति ॥ अबताउक्तअनुमितिप्रमका॥ विभा गवर्णनकरैहैं ॥ तहां सोउक्तअनुमितिप्रमा स्वार्थानुमिति १ परार्थानुमिति २ इनभेदोंकारिकै दोप्रकार कीहोवैहै ॥ तहांइसपुरुषकूंदूसरेकेउपदेशतैंविनाही व्याप्तिलिंगज्ञानादिकोंकरिकै जाअनुमितिहोवैहै ॥ सो स्वार्थानुमिति कहीजावैहै ॥ सोस्वार्थानुमितिकीरीति पूर्वनिरूपणकरीहै ॥ अब दूसरी परार्थानुमि तिकाप्रकार वर्णनकरैं हैं ॥ तहां पूर्वउक्तरीतिसैं आप पर्वतविषेवह्निकानिश्चयकरिकै दूसरेपुरुषकेप्रति

जोतावह्निकानिश्चयकरावणाहै ताकानाम परार्थानुमितिहै ॥ सापरार्थानुमिति न्यायकरिकेसिद्धिहोवे है ॥ तहां अवयवोंकेसमुदायकानाम न्यायहै ॥ और ताअनुमानवाक्यविषेस्थित जेप्रतिज्ञादिकवाक्य हैं तिनोंकानाम अवयवहै ॥ तहांनैयायिकतौ प्रतिज्ञा १ हेतु २ उदाहरण ३ उपनय ४ निगमन ५ इनपंचअवयवोंकेसमुदायकूं न्यायकहेहैं ॥ जैसे प्रसिद्धअनुमानविषे 'पर्वतोवह्निमान्' यह प्रतिज्ञा वाक्यहै ॥ १ ॥ और 'धूमवत्त्वात्' यह हेतुवाक्यहै ॥ २॥ और ' योयोधूमवान्सवह्निमान्यथाम हानसः ' यह उदाहरणवाक्यहै ॥ ३ ॥ और 'तथाचायम्' अर्थयह यहपर्वत तामहानसकीन्यांई धूम वालाहै यह उपनयवाक्यहै ॥ ४ ॥ और 'तस्मात्तथा' अर्थयह ॥ धूमवालाहोणेतैं यहपर्वत तामहान सकीन्यांई वह्निवालाहीं है ॥ यह निगमनवाक्यहै ॥५ ॥ इनप्रतिज्ञादिकपंचअवयवोंकेलक्षण न्यायप्र काशकेषष्ठपरिच्छेदविषे अनुमाननिरूपणविषे कथनकर्येहैं॥ तेतहांसैं जानिलेणे ॥ इसप्रकारकेप्रतिज्ञा दिकपंचअवयवोंकेसमुदायरूपन्यायतैं ताअन्यपुरुषकूंभी व्याप्तिलिंगादिकोंकाज्ञानहोइकै तावह्निकीअ नुमितिहोवैहै ॥ इसीकानाम परार्थानुमितिहै इति ॥ और वेदांतसिद्धांतविषेतौ प्रतिज्ञा १ हेतु२ उदा हरण ३ इनतीनअवयवोंकेसमुदायकानाम न्यायहै ॥ अथवा उदाहरण १ उपनय २ निगमन ३ इन तीनअवयवोंकेसमुदायकानाम न्यायहै ॥ इसीन्यायतैं ताअन्यपुरुषकूं अनुमितिज्ञानविषेउपयोगीव्या प्तिआदिकोंकाज्ञानहोवैहै ॥ यातैंपंचअवयवमानणेनिष्फलहीहै इति ॥तहांपूर्व 'पर्वतोवह्निमान्' इसलौ किकअनुमानवाक्यविषे तेप्रतिज्ञादिकअवयव दिखाये ॥ अबजीवब्रह्मकेअभेदसाधक वैदिकअनुमान वाक्यविषेभी तेप्रतिज्ञादिकअवयव निरूपणकरेहैं तहां 'जीवः परस्मान्नभिद्यते १ सच्चिदानंदलक्षण

त्वात् २ यःसच्चिदानंदलक्षणः सपरस्मान्नभिद्यतेयथापरमात्मा ३ तथाचायम् ४ तस्मात्तथा ५ 'अर्थयह यहजीव परमात्मातैंभिन्ननहीं है ॥ यहतौ प्रतिज्ञावाक्यहै ॥ १ ॥ और सत्‌चित्‌आनंदरूपहोणेतैं यह हेतुवाक्यहै ॥ २ ॥ और जोजो सच्चिदानंदरूपहोवैहै सोपरमात्मातैंभिन्नहोतानहींजैसेपरमात्माहै॥यह उदाहरणवाक्यहै ॥ ३ ॥ और जीवपरमात्माकीन्यांई सच्चिदानंदरूपहै ॥ यह उपनय वाक्यहै॥४॥ और सच्चिदानन्दरूपहोणेतैं यह जीव तापरमात्मातैंअभिन्नहीहै ॥ यह निगमनवाक्यहै ॥ ५ ॥ इस प्रकारकेप्रतिज्ञादिकतीनअवयवोंके वा उदाहरणादिकतीनअवयवोंके समुदायरूपन्यायतैंइसअधिका रीपुरुषकूं व्याप्तिलिंगादिकोंकाज्ञानहोइकै जीवब्रह्मके अभेदविषयक अनुमितिप्रमा होवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ताजीवात्माविषे जबी किसीप्रमाणकरिकै सच्चिदानंदरूपता सिद्धहोवै ॥ तबी तासच्चिदा नंदरूपत्वहेतुतैं ताजीवविषे ब्रह्मकाभेद सिद्धहोवै ॥ परंतु ताजीवकीसच्चिदानंदरूपताविषे कोईभीप्रमा णनहीं है॥यातैं सोसच्चिदानंदरूपत्वहेतु ताजीवरूपपक्षविषेअवृत्तिहोणेतैं स्वरूपासिद्धनामाहेत्वाभासहै ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ अब श्रुति स्मृति युक्ति अनुभव इनचारोंकरिकै ताजीवात्माविषे सत्‌चित्‌आनं दरूपतासिद्धकरेहैं ॥ तहां 'अविनाशीवाअरेऽयमात्मा। सन्मात्रोनित्यः शुद्धोबुद्धः' अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी यहआत्मा विनाशतैंरहितहै॥ और यहआत्मा सत्तामात्रहै तथानित्यहै तथाशुद्धहै तथाज्ञानस्वरूपहै॥ इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै इसजीवात्माकी सत्यरूपता सिद्धहोवैहै॥और ' नित्यःसर्वगतःस्थाणुरचलोयं सनातनः' अर्थयह ॥ यहआत्मा नित्यहै तथासर्वत्रव्यापकहै तथाकूटस्थहै तथाअचलहै तथासनातन है ॥इत्यादिक गीतास्मृतिकेवचनोंकरिकैभी ताजीवात्माकी सत्यरूपता सिद्धहोवैहै ॥ और यहजी वात्मा जोसत्यनहींहोवै तौ कृतनाश तथा अकृताभ्यागम इनदोनोंदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ तहां क

न्येहुएपुण्यपापकर्मका जोफलभोगतैंविना विनाशहै ताकानाम कृतनाशहै ॥ और पूर्वनहींकऱ्येहुए कर्मका जोफलभोगहै ताकानाम अकृताभ्यागमहै ॥ इत्यादिकयुक्तिकरिकैभी ताजीवात्माकी सत्यरूपता सिद्धहोवैहै ॥ और 'अहंआस्मि' याप्रकारकेअनुभवतैंभी ताआत्माकी सत्यरूपता सिद्धहोवैहै ॥ यातैं सोजीवात्मा सत्यरूपहीहै ॥ और 'अत्रायंपुरुषः स्वयंज्योतिर्भवति।आत्मैवास्यज्योतिर्भवतियोऽयंविज्ञानमयः।त्रिषुधामसुयद्भोग्यंभोक्ताभोगश्चयद्भवेत् ॥ तेभ्योविलक्षणःसाक्षीचिन्मात्रोऽहंसदाशिवः' अर्थयह ॥ इसस्वप्नअवस्थाविषे यहआत्माही स्वयंज्योतिहै ॥ अर्थात् तास्वप्नअवस्थाविषे सूर्यचंद्रादिक बाह्यज्योतियोंकेअभावहुएभी ताआत्मारूपज्योतिकरिकैही सर्वव्यवहारहोवैहै ॥ और इससंघातका आत्माहीज्योतिहैवैहै ॥ और यहआत्मा विज्ञानरूपहै ॥ और जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति इनतीनअवस्थाओंविषे यथाक्रमतैंविद्यमान जे विश्व तैजस प्राज्ञ यहतीनभोक्ताहैं ॥ तथा तिनोंके जेस्थूलसूक्ष्मादिकभोग्य पदार्थ हैं ॥ तथा अंतःकरणकी वा अज्ञानकी वृत्तिरूपजोभोगहै ॥ तिनसवोंतैंविलक्षण जोचैतन्यमात्रसाक्षीहै सोमैंहूं ॥ इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै ताजीवआत्माकी चैतन्यरूपता सिद्धहोवैहै ॥ और 'यथाप्रकाशयत्येकःकृत्स्नंलोकमिमंरविः । क्षेत्रंक्षेत्रीतथाकृत्स्नंप्रकाशयतिभारत' अर्थयह ॥ हे जुन ! जैसे एकही सूर्यभगवान् संपूर्णलोकोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ तैसे यहआत्मा संपूर्णसंघातकूं प्रकाशकरेहै ॥ इत्यादिकस्मृतियोंकरिकैभी ताजीवात्माकी चैतन्यरूपता सिद्धहोवैहै ॥ और जोकदाचित् यहआत्मा चैतन्यरूप नहींहोवै ॥ तौ प्रकाशककेअभावतैं इसजगतविषे अंधताप्राप्तहोवैगी ॥ इत्यादिकयुक्तियोंकरिकैभी ताजीवात्माकी चैतन्यरूपता सिद्धहोवैहै ॥ और 'अहंअनुभवामि' याप्रकारकेअनुभवतैंभी ताआ

त्माकी चैतन्यरूपता सिद्धहोवैहै।।यातैं सोजीवात्मा चैतन्यरूपहीहै ॥ और 'योवैभूमातत्सुखम् । कोह्ये
वान्यत्कःप्राण्यात्यदेषआकाशआनंदोनस्यात्। एषह्येवानंदयति' अर्थयह॥ देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंर
हित जोआत्माहै सोई सुखरूपहै॥और जोकदाचित् यहआत्मा आनंदरूप नहींहोवै । तौ अपानकेव्या
पारकूं तथा प्राणकेव्यापारकू तथादेहइंद्रियादिकोंकेव्यापारकूं कौनकरेगा ॥ किंतु कोईभीनहींकरैगा ॥
जिसकारणतैं लोकोंकाजीवन आनंदपूर्वकहीहोवैहै ॥ अतिदुःखकेप्राप्तहुए प्राणोंकावियोगही देखणेमें
आवैहै ॥ इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै ताजीवात्माकी आनंदरूपता सिद्धहोवैहै ॥ और 'योऽन्तःसुखोऽत
रारामस्तथांऽतर्ज्योतिरेवयः' इत्यादिक गीतास्मृतिवचनकरिकैभी ताजीवात्माकी आनंदरूपता सिद्धहो
वैहै ॥ और जोकदाचित् यहआत्मा आनंदरूपनहींहोवै तौ सबलोकोंकी आपणेआत्माविषे परमप्री
ति नहींहोणीचाहिये ॥ और सर्वलोकोंकी आपणेआत्माविषेतौ परमप्रीतिही देखणेमेंआवैहै ॥ और
सुषुप्तितैंउठयेहुएपुरुषकूं मैंसुखीसोताभया याप्रकारकास्मरणहोवैहै ॥ सोस्मरण अनुभवतैंविनाहोतान
हीं ॥ यातैं सुषुप्तिविषे सुखकेअनुभवकोकल्पनाकरावैहै ॥ तहां सुषुप्तिविषे कोईविषयजन्यआनंदतौहै
नहीं ॥ किंतु आपणेस्वरूपकाहीआनंदहै ॥ इत्यादिकयुक्तियोंतैंभी ताजीवात्माकी आनंदरूपता सि
द्धहोवैहै ॥ और मैं कदाचित्भीअप्रियनहींहोवो याप्रकारकेअनुभवतैंभी ताजीवात्माकी आनंदरूपता
सिद्धहोवैहै ॥ यातैं यहजीवात्मा आनंदरूपहीहै॥ इसप्रकार श्रुति स्मृति युक्ति अनुभव इनचारोंक ॥८६॥
रिकै इसजीवात्माकी सत्चित्आनंदरूपतासिद्धहोणेतैं सोसच्चिदानंदरूपत्वहेतु ताजीवात्मारूपपक्षविषे
वृत्तिहोणेतैं स्वरूपासिद्धनामाहेत्वाभासनहीं है इति ॥ किंवा ताउक्तअनुमानविषेपक्षरूपजीवात्माकी

सच्चिदानंदरूपता जैसेश्रुतिआदिकप्रमाणोंकरिकैसिद्धहै ॥ तैसे तादृष्टांतरूपपरमात्माकी सच्चिदानंदरू पताभी श्रुतिप्रमाणतैंहीसिद्धहै ॥ तहांश्रुति 'सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म आनंदोब्रह्म' अर्थयह ॥ ब्रह्म सत्य रूपहै तथाज्ञानरूपहै तथाअनंतरूपहै तथाआनंदरूपहै इति ॥ यातैं सोसच्चिदानंदरूपत्वहेतु तापरमा त्मारूपदृष्टांत विषेभी विद्यमानही है ॥ यद्यपि ताउक्तअनुमानविषे जीवात्मातैंअभिन्नब्रह्मकूं दृष्टांतरूपता संभवतीनहीं ॥ जिसकारणतैं सर्वत्र पक्षतैंभिन्नही दृष्टांतहोवैहै ॥ तथापि जीवब्रह्मकाकल्पितभेदमानि कै ताब्रह्मकूं दृष्टांतरूपता संभवैहै ॥ और वास्तवतैंतौ ताजीवब्रह्मकाअभेदही है ॥ सोजीवब्रह्मकाअभे द प्रथमपरिच्छेदविषे भेदवादकेखंडनपूर्वक विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ मैंब्रह्म रूपहूं याप्रकारकीउक्तअनुमिति सर्वपुरुषोंकूं उत्पन्न होवैहै ॥ अथवाकोईकपुरुषकूंहोवैहै ॥ ॥ समा धान ॥ ॥ जिसपुरुषनें ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैंश्रद्धाभक्तिपूर्वक वेदांतशास्त्रकाश्रवणकर्‍याहै ॥ तथा प्र थमपरिच्छेदविषेकथनकरीरीतिसे तत्त्वंपदार्थकाशोधनकर्‍याहै ॥ तिसपुरुषकूंही आपणेआत्माविषे स च्चिदानंदरूपत्वहेतुकेज्ञानतैं 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारकी जीवब्रह्मकेअभेदविषयकअनुमिति उत्पन्नहोवैहै वेदांतश्रवणादिकोंतैंरहितपुरुषकूं साअभेदविषयकअनुमिति उत्पन्नहोतीनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ 'तं त्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि' इसश्रुतिनें ताब्रह्मकूं केवलउपनिषदरूपशब्दप्रमाणकाविषयकह्याहै ॥ जोक दाचित् ताब्रह्मविषे अनुमानप्रमाणकीविषयतामानोंगे ॥ तौ ताउक्तश्रुतिकाविरोधहोवैगा ॥ यातैं ता ब्रह्मविषे उक्तअनुमानकीविषयता संभवतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताब्रह्मविषे अनुमानकूं स्वतं त्रप्रमाणतानहीं है ॥ अथवा वेदांतकासहकारित्वरूपकरिकैभी प्रमाणतानहीं है ॥ तहां जोप्रथमपक्ष अं

गीकारकरो ॥ सोतौ हमारेकूंभीइष्टहै ॥ अर्थात् पुरुषकीकल्पनारूपअनुमानप्रमाणकूं अतिइंद्रियब्रह्मवि
षे स्वतःप्रमाणरूप हमभी मानतेनहीं ॥ और जोद्वितीयपक्ष अंगीकारकरो ॥ सो संभवतानहीं ॥ का
हेतें 'आत्मावाऽरेद्रष्टव्यःश्रोतव्योमंतव्यः' इसश्रुतिने तथा 'श्रोतव्यःश्रुतिवाक्येभ्योमंतव्यउपपत्ति
भिः' इसस्मृतिने आत्माकेसाक्षात्कारवासते मननकाविधानकऱ्याहै ॥ और अनुमानादिरूपयुक्तियों
करिकै जोआत्माकाविचारहै ताकानाम मननहै ॥ इसप्रकार मननविषे उपयोगीपणेकरिकै ताअनुमा
नकूं वेदांतशास्त्रकीसहकारिताकरिकै प्रमाणरूपता हमारेकूं अंगीकारहीहै ॥ जोकदाचित् सर्वप्रकारतें
ताअनुमानकूं अप्रमाणरूपही मानिये ॥ तौश्रुतिस्मृतियोंविषे जोमननकाविधानकऱ्याहै सोव्यर्थही
होवैगा ॥ यातें वेदांतशास्त्रकीसहकारितारूपकरिकै ताअनुमानकीप्रमाणता अवश्यमानीचाहिये ॥
याकारणतेंही 'अहंब्रह्मास्मि । अयमात्माब्रह्म' इत्यादिकश्रुतियोंकरिकैसिद्ध जीवब्रह्मकेअभेदकूं ताउ
कअनुमानकरिकैसिद्धकऱ्याहै ॥ तहां जिसअर्थकूं वेदांतशास्त्र प्रतिपादनकरेहै तिसीअर्थकूं जोअनु
मान सिद्धकरेहै सोअनुमान तावेदांतशास्त्रका सहकारी कह्याजावैहै इति ॥ किंवा 'नेहनानास्ति
किंचन । वाचारंभणंविकारोनामधेयम् । मायामात्रमिदंद्वैतम्' इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै जैसे प्रपंचकामि
थ्यापणा सिद्धहै ॥ तैसे अनुमानकरिकैभी सोमिथ्यापणा सिद्धहोवैहै ॥ सोदिखावैहैं ॥ 'व्यवहारिकप्र
पंचःमिथ्यादृश्यत्वात् शुक्तिरूप्यवत्' अर्थयह ॥ यहआकाशादिक व्यावहारिकप्रपंच मिथ्याहोणेकूंयो
ग्यहै ॥ दृश्यरूपहोणेतें ॥ जोजोपदार्थ दृश्यरूपहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ मिथ्याहीहोवैहै ॥ जैसे शुक्तिरजत
दृश्यरूपहोणेतें मिथ्याहीहै इति ॥ इसअनुमानकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मतेंभिन्नसर्वप्रपंचविषेमि

ध्यात्वअनुमिति उत्पन्नहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसप्रपंचविषे मिथ्यापणाक्याहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सतअसतत्तैंविलक्षणतारूप जोअनिर्वचनीयपणाहै यहही ताप्रपंचविषेमिथ्यापणाहै ॥ तहां प्रपंच कूं जोसत्यमानिये ॥ तौ ब्रह्मकीन्यांई ताप्रपंचका बाधनहींहोवैगा ॥ और ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै ताप्रपंचकाबाधहोवैहै ॥ यातैं सोप्रपंच सत्यतैंभीविलक्षणहै ॥ और ताप्रपंचकूं जोअसत्यमानिये तौ नरशृंग वंध्यापुत्रकीन्यांई ताप्रपंचका प्रत्यक्षनहींहोवैगा ॥ और ताप्रपंचकाप्रत्यक्ष सर्वकूंहोवैहै ॥ यातैं सोप्रपंच असत्यतैंभीविलक्षणहै ॥ और सतअसत् दोनोंका परस्परविरोधहोणेतैं सतअसतउभयरूपताभी ताप्रपंचविषे संभवतीनहीं ॥ इसप्रकारका अनिर्वचनीयपणाही ताप्रपंचविषे तथाशुक्तिरजतविषे मिथ्यापणा है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसदृश्यत्वरूपहेतुतैं प्रपंचविषे मिथ्यापणा सिद्धकरतेहो ॥ सोदृश्यत्वहेतुव्यभिचारीहोणेतैं असतहेतुहीहै ॥ काहेतैं दर्शनकेविषयत्वकानाम दृश्यत्वहै ॥ और वृत्तिज्ञानकानाम दर्शनहै ॥ तावृत्तिज्ञानकाविषयत्वरूपदृश्यत्व ब्रह्मविषेभीरहैहै ॥ और ताब्रह्मविषे सोउक्तमिथ्यात्वरूपसाध्यहैनहीं ॥ यातैं तामिथ्यात्वरूपसाध्यकेअभाववालेब्रह्मविषेवृत्तिहोणेतैं सोदृश्यत्वहेतु व्यभिचारीही है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताउक्तअनुमानविषे दृश्यत्वशब्दकरिकै वृत्तिज्ञानकाविषयत्वरूपदृश्यत्व विवक्षितनहींहै ॥ किंतु तावृत्तिविषेआरूढजोफलचैतन्यहै ताकाविषयत्वरूपदृश्यत्वही विवक्षितहै ॥ तहां ताब्रह्मविषे आवरणकीनिवृत्तिवासतैं वृत्तिकीविषयताहुएभी स्वप्रकाशरूपहोणेतैं ताफलचैतन्यकीविषयताहैनहीं ॥ यातैं ताब्रह्मविषेअवृत्तिहोणेतैं सोदृश्यत्वहेतु व्यभिचारीनहींहै ॥ किंतु सतहेतुहै ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ एक सतहेतुहोवैहै ॥ दूसरा असतहेतुहोवैहै ॥ तहां सतहेतुतैंतौ तिसतिससाध्यकीसिद्धि

होवैहै ॥ और असतहेतुतैं तासाध्यकीसिद्धिहोतीनहीं ॥ तिसीअसतहेतुकूं दुष्टहेतु कहेहैं तथाहेत्वाभास कहेहैं ॥ सोहेत्वाभासभी सव्यभिचार १ विरुद्ध २ असिद्ध ३ सत्प्रतिपक्ष ४ बाधित ५ इसभेदकरिकै पंचप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रथम सव्यभिचारभी साधारण १ असाधारण २ अनुपसंहारी ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ और तीसरा असिद्धभी आश्रयासिद्ध १ स्वरूपासिद्ध २ व्याप्यत्वासिद्ध ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ इनपंचहेत्वाभासोंकेलक्षण तथाउदाहरण न्यायप्रकाशकेषष्ठपरिच्छेदविषे अनुमाननिरूपणविषे हमने विस्तारतैंनिरूपणकर्‍येहैं॥ ग्रंथविस्तारकेभयतैं इहांनिरूपणकर्‍येनहीं ॥ जिसकूं जिज्ञासाहोवै तिसने तहांसेजानिलेणे इति ॥ इहां नैयायिक ताअनुमानकूं केवलान्वयि १ केवलव्यतिरेकि २ अन्वयव्यतिरेकि ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकामानेहैं ॥ तहां जिसअनुमानकेसाध्यका कहांभी अत्यंताभाव नहींहोवै ॥ सोअनुमान केवलान्वयि कह्याजावैहै॥जैसे 'घटोऽभिधेयःप्रमेयत्वात्' इत्यादिकअनुमानहैं ॥ इहां अभिधेयत्वरूपसाध्यका कहांभीअत्यंताभावनहींहै ॥ किंतु पदकावाच्यत्वरूपअभिधेयत्व सर्वपदार्थोंविषेरहेहै ॥तथा प्रमाज्ञानकाविषयत्वरूपप्रमेयत्वभी सर्वपदार्थोंविषेरहेहै ॥ यातैं यहउक्तअनुमान केवलान्वयि कह्याजावैहै ॥ और जिसअनुमानकेसाध्यका तथाहेतुका कहांभी सहचारदर्शन नहींहोवै किंतु तासाध्यहेतुकेअभावोंकाही सहचारदर्शनहोवै ॥ सोअनुमान केवलव्यतिरेकि कह्याजावैहै ॥ जैसे ' पृथिवी इतरेभ्योभिद्यते गंधवत्त्वात् यन्नैवंतन्नैवं यथाजलादिः ' इत्यादिक अनुमानहैं ॥ ईहां पृथिवीतैंइतरजलादिकपदार्थोंकेभेदरूपसाध्यका तथागंधरूपहेतुका तापृथिवीरूपपक्षकूंछोडिकै अन्यत्रकहांभी सहचारहैनहीं ॥ किंतु तासाध्यहेतु

केअभावोंकाही जलादिकोंविषे सहचारहै ॥ यातैं यहउक्तअनुमान केवलव्यतिरेकि कह्याजावैहै ॥
और जिसअनुमानके साध्यहेतुदोनोंका तथातिनदोनोंकेअभावोंका अन्यत्र सहचारदर्शनहोवैहै ॥ सो
अनुमान अन्वयव्यतिरेकि कह्याजावैहै ॥ जैसे ' पर्वतोवह्निमान् ॥ धूमवत्त्वात् ' यह प्रसिद्धअनुमान
है ॥इहां वह्निरूपसाध्यका तथाधूमरूपहेतुका महानसविषे सहचार देखणेमेंआवैहै ॥ और तिनदोनों
केअभावोंका जलह्रदविषे सहचार देखणेमेंआवैहै ॥ यातैं यहउक्तअनुमान अन्वयव्यतिरेकि कह्याजा
वैहै ॥ इनतीनप्रकारकेअनुमानोंका विस्तारतैंनिरूपण न्यायप्रकाशकेषष्ठपरिच्छेदविषेकर्‍याहै ॥ सो त
हांसेजानिलेणा इति ॥ सोयहनैयायिकोंकामत असंगतहै ॥ काहेतैं ' नेहनानास्तिकिंचन ' इत्यादि
कश्रुतियां ब्रह्मविषे सर्वप्रपंचकाअत्यंताभाव कथनकरैहैं ॥ यातैं ब्रह्मतैंभिन्न किसीभीपदार्थविषे अत्यं
ताभावकाअप्रतियोगीपणानहीं है ॥ किंतु सर्वअनात्मपदार्थ ताअत्यंताभावकेप्रतियोगीही हैं ॥ यातैं
ताअनुमानविषे केवलअन्वयिरूपता संभवतीनहीं ॥ इसप्रकार सोकेवलव्यतिरेकिअनुमानभी संभवता
नहीं ॥ काहेतैं जिनपदार्थोंका परस्पर व्याप्यव्यापकभावहोवैहै ॥ तिनपदार्थोंकाही परस्पर साधनसा
ध्यभावहोवै यहनियमहै ॥ इसनियमका ताकेवलव्यतिरेकिअनुमानविषे भंगहोवैहै ॥ जिसकारणतैं
ताउक्तकेवलव्यतिरेकिअनुमानविषे गंध इतरभेद इनदोनोंकातौ साधनसाध्यभाव मान्याहै ॥ और इत
रभेदाभाव तथागंधाभाव इनदोनोंका व्याप्यव्यापकभाव मान्याहै ॥ जोकदाचित् अन्यपदार्थोंकेव्या
प्तिज्ञानतैं अन्यपदार्थकीअनुमितिहोतीहोवै ॥ तौ पर्वतविषे वह्निव्याप्यधूमकेज्ञानतैं जलकीभी अनु
मितिहोणीचाहियै॥यातैं ताअनुमानविषे केवलव्यतिरेकिरूपताभी संभवतीनहीं ॥ ताकेवलअन्वयि

के तथा केवलव्यतिरेकिके असंभवहुए ताअनुमानविषे अन्वयव्यतिरेकिरूपताभी संभवतीनहीं ॥ यातैं सोअनुमान वेदांतसिद्धांतविषे एकअन्वयिरूपहीहोवैहै ॥ तहां पूर्वउक्तअन्वयव्याप्तिवालेअनुमानका नाम अन्वयिहै ॥ ॥शंका॥ ॥ जिसपुरुषकूं पूर्वउक्त साधन साध्य दोनोंकासामानाधिकरण्यरूपअन्वयव्याप्तिकाज्ञान नहींभयाहै ॥ किंतु साध्याभाव साधनाभाव इनदोनोंकासामानाधिकरण्यरूप व्यतिरेकव्याप्तिकाहीज्ञान भयाहै ॥ तिसपुरुषकूंभी ताव्यतिरेकव्याप्तिकेज्ञानतैं तासाध्यकीअनुमिति होवैहै सोनहींहोणीचाहिये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताअन्वयव्याप्तिकेज्ञानतैं रहित पुरुषकूं ताव्यतिरेक व्याप्तिकेज्ञानतैं तासाध्यकीअनुमिति नहींहोती ॥ किंतु तहां अर्थापत्तिप्रमाणतैंहीं तासाध्यकीप्रमाहोवैहै ॥ जैसे पृथिवीमात्रविषेस्थितगंधगुण तापृथिवीविषे जलादिकइतरपदार्थोंकेभेदतैं बिना अनुपपन्नहुआ तापृथिवीविषे ताइतरभेदकीकल्पनाकरावैहै इति ॥ ॥ इतिअनुमितिप्रमानिरूपणम् ॥ २ ॥

अब तीसरी उपमितिप्रमाकानिरूपणकरेहैं॥तहां 'सादृश्यप्रमितिःउपमितिः' अर्थयह ॥ सादृश्यकूंविषय करणेहारीजाप्रमाहै सा उपमितिप्रमा कहीजावैहै ॥ जैसे नगरविषेदेख्याहै गोपिंड जिसपुरुषने ॥ तथा गवयपशुकेजानणेकीहैइच्छा जिसपुरुषकूं ॥ सोपुरुष किसीवनवासीपुरुषतैं पूंछताभया॥ जो गवयपशु कैसाहोवैहै ॥ आगेतैं सोवनवासीपुरुष तानगरवासीपुरुषकेप्रति गौकेसदृशगवयहोवैहै याप्रकार कावचन कहताभया ॥ तावचनकूंश्रवणकरिकै सोनगरवासीपुरुष कोईकालविषे वनकूं जाताभया ॥ ॥८९॥ तावनाविषे तागवयपिंडकूंदेखिकै यहगवय गौकेसदृशहै याप्रकारकाज्ञान तापुरुषकूंहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर इसगवयकेसदृश हमारीगौहै याप्रकारकाज्ञान तिसपुरुषकूंहोवैहै ॥ इसीज्ञानकानाम उपमितिप्र

माहै ॥ तहां तागवयपशुनिष्ठ जोगौकेसादृश्यकाज्ञानहै सोतौ ताउपमितिप्रमाकाकरणहोणेतैं उपमानप्रमाणहै ॥ और आपणीगौनिष्ठ जो तागवयकेसादृश्यकाज्ञानहै सोज्ञान ताउपमानप्रमाणका फलरूप उपमितिप्रमाहै इति ॥ यहलौकिकउदाहरण ताउपमितिकाकह्या ॥ अब ताउपमितिका वैदिकउदाहरण कहेहैं ॥ आकाशका असंगपणा तथाव्यापकपणा निश्चयकऱ्याहै जिसपुरुषने और ब्रह्मके असंगपणेकूं तथाव्यापकपणेकूं जिसपुरुषनें जान्यानहीं ऐसाअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुसे पूछेहै ॥ हेभगवन्!ब्रह्मकाक्यास्वरूपहै ॥ तिसतैंअनंतर सोगुरु ताशिष्यकेप्रति आकाशकीन्यांई सोब्रह्म असंगहै तथा व्यापकहै इसप्रकारकाउत्तर कहेहै ॥ तिसतैंअनंतर सोशिष्य एकांतदेशमेंविचारकरिकै आपणेब्रह्मरूपआत्माविषे असंगव्यापकतारूपकरिकै आकाशकेसादृश्यकूंअनुभवकरेहै ॥ अर्थात् आकाशकीन्यांई असंग तथाव्यापक ब्रह्म मैंहूं याप्रकारकाअनुभव ताअधिकारीपुरुषकूं होवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ आत्माविषे असंगतारूप तथाव्यापकतारूप आकाशकासादृश्यहै ॥ इसअर्थविषे कौनप्रमाणहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ श्रुति स्मृति आचार्यवाक्य इनतीनोंकरिकै सोअर्थसिद्धहै ॥ तहांश्रुति ‘ आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः ’ अर्थयह ॥ आत्मा आकाशकीन्यांई सर्वत्रव्यापकहै तथानित्यहै ॥ इसश्रुतिनें आत्माकूं आकाशकीन्यांई व्यापककह्याहै॥और ‘यथासर्वगतंसौक्ष्म्यादाकाशंनोपलिप्यते।सर्वत्रावस्थितोदेहेतथात्मानोपलिप्यते ’ अर्थयह ॥ जैसे सर्वत्रस्थितहुआभीआकाश आपणेअसंगस्वभावतैं कोईपदार्थकरिकैलिपायमानहोतानहीं ॥ तैसे सर्वदेहोंविषेस्थितहुआभी यहआत्मा आपणेअसंगस्वभावतैं कोईपदार्थकरिकै लिपायमानहोतानहीं इति ॥ इसगीतास्मृतिने आत्माकूं आकाशकीन्यांई

असंगकह्याहै॥और'दृशिस्वरूपंगगनोपमंपरं'इसवचनकरिकै आचार्योंनेभी आत्माकूं आकाशकीन्यांई व्यापककह्याहै॥यातैं आत्माविषे आकाशकीसदृशताकूंलैके सोउक्तउपमितिकाउदाहरण संभवैहै इति ॥ अथवा शुक्तिरजत स्वप्नपदार्थ आदिकोंविषे मिथ्यापणेकूंनिश्चयकरिकै आकाशादिकप्रपंचकेस्वरूपजानणेकी इच्छाकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष यहप्रपंच शुक्तिरजतादिकोंकीन्यांई मिथ्याहै याप्रकारके गुरुकेवचनकूंश्रवणकरिकैएकांतदेशमेंविचारकरिकैइसप्रपंचविषे शुक्तिरजतादिकोंकेमिथ्यात्वरूपसादृश्यकूं अनुभवकरेहै ॥ अर्थात् यहआकाशादिकप्रपंच शुक्तिरजतादिकोंकीन्यांई मिथ्याहीहै॥ याप्रकारकाअनुभव ताअधिकारीपुरुषकूंहोवैहै ॥ यहउपमितिकाउदाहरणभी वेदांतसिद्धांतविषे अनुकूलहै इति॥इहां नैयायिकतौ तागवयनिष्ठगोसादृश्यज्ञानतैंअनंतर गवय गवयपदकावाच्यहै याप्रकारकेज्ञानकूंहीं उपमितिप्रमा मानेहैं ॥ तथा ताउपमानकूं सादृश्यविशिष्टपिंडज्ञान १ वैधर्म्यविशिष्टपिंडज्ञान २ असाधारणधर्मविशिष्टपिंडज्ञान ३ इस भेदकरिकै तीनप्रकारका मानेहै ॥ सोनैयायिकोंकामत न्यायप्रकाशकेषष्ठपरिच्छेदविषे उपमाननिरूपणविषे विस्तारतैंप्रतिपादनकऱ्याहै ॥ जिसकूं जिज्ञासाहोवै तिसने तहांसे जानिलेणा इति॥ ॥ इतिउपमितिप्रमानिरूपणम्॥ ३॥ ॥ अब चतुर्थीशाब्दीप्रमाका निरूपणकरेहैं॥ तहां 'वाक्यकरणिकाप्रमा शाब्दीप्रमा' अर्थयह ॥ वाक्यरूपकरणकरिकैजन्यजाप्रमाहै सा शाब्दीप्रमा कहीजावैहै॥जैसे तत्त्वमसि इसवैदिकवाक्यकूंश्रवणकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं जा 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारकीप्रमाहोवैहै॥ तथा घटमानय गामानय इत्यादिकलौकिकवाक्योंकूंश्रवणकरिकै इसपुरुषकूं घटगौआदिकोंकेआनयनकी जाप्रमाहोवैहै ॥ ताप्रमाकानाम शाब्दीप्रमाहै इति ॥ तहां जिस

वाक्यकारिकै साशाब्दीप्रमा जन्यहोवैहै तावाक्यकालक्षणकहेहैं ॥ 'आकांक्षायोग्यतासन्निधिमत्पदस मुदायः वाक्यम्' अर्थयह ॥ आकांक्षा योग्यता सन्निधि इनतीनोंवालेजेपदहैं तिनपदोंकेसमुदायकाना म वाक्यहै ॥ जैसे तत्त्वमसि इत्यादिकवैदिकवाक्य तत् त्वंआदिकपदोंका समुदायरूपहैं ॥ तथा घट मानय इत्यादिकलौकिकवाक्य घट आनय इत्यादिकपदोंका समुदायरूपहैं इति ॥अब जिनपदोंकेस मुदायकानाम वाक्यहै तिनपदोंकालक्षणकहेहैं ॥ तहां 'वर्णसमूहः पदम्' अर्थयह ॥ ककारादिवर्णों काजोसमूहहै ताकानाम पदहै ॥ जैसे कलश इत्यादिकपद ककारादिकवर्णोंका समूहरूपहैं ॥ तहां तापदकेघटक ककारादिकवर्णोंविषे जोएकज्ञानकीविषयताहै यहही समूहपणाहै ॥ यद्यपि नैयायिकों केमतविषे तेककारादिकवर्ण शब्दरूपहोणेतैं क्षणिकहैं अर्थात् तृतीयक्षणविषे नाशवान्हैं ॥ तथा ति नवर्णोंकासमुदायरूपपदभी क्षणिकहैं ॥ तथा तिनपदोंकासमुदायरूपवाक्यभी क्षणिकहैं ॥ तथा तिन वाक्योंकासमुदायरूपवेदभी क्षणिकहैं॥तथापि वेदांतसिद्धांतविषे तेवर्ण क्षणिकनहींहैं ॥ किंतु आका शादिकोंकीन्यांई सृष्टिकेआदिकालविषे मायाउपहितईश्वरतैं तिनवर्णोंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ और प्रलय कालविषे तिनवर्णोंकाविनाशहोवैहै ॥ मध्यकालविषे तिनवर्णोंका उत्पत्ति विनाश होतानहीं ॥ याका रणतैंही 'सोऽयंगकारः' इत्यादिकप्रत्यभिज्ञानकूंभी प्रमाणरूपताहोवैहै ॥ और 'उत्पन्नोगकारःविनष्टो गकारः'इत्यादिकप्रतीतितौ तिनगकारादिकवर्णोंकेउच्चारणकेउत्पत्तिविनाशकूंही विषयकरेहै ॥ गका रादिकवर्णोंकेउत्पत्तिविनाशकूंविषयकरतीनहीं ॥ यातैं वर्ण पद वाक्यवेद यहसर्व शब्दरूपहोणेतैं क्ष णिकहैं यहनैयायिकोंकामत असंगतहै ॥ और मीमांसकतौ तिनवर्णोंकूं तथावर्णसमुदायरूपवेदकूंउ

त्पत्तिविनाशतैंरहित नित्यमानेहैं ॥ सोमीमांसकोंकामतभी असंगतहै ॥ जिसकारणतैं 'छंदांसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत अस्यमहतोभूतस्यनिःश्वसितमैवैतदृग्वेदोयजुर्वेदः' इत्यादिकश्रुतिने सृष्टिकेआदिकालविषे मायाउपहितईश्वरतैं वेदोंकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और 'अतएवचनित्यत्वम्' इससूत्रविषे श्रीव्यासभगवान्ने वेदोंका प्रलयपर्यंतस्थायित्वरूपनित्यपणाकथनकऱ्याहै॥ यातैं सोमीमांसकोंकामतभी असंगतहै इति ॥ तहां पूर्वआकांक्षा योग्यता सन्निधि इनतीनोंवालेपदोंकेसमूहकूं वाक्य कह्याथा ॥ ताकेविषे प्रथम आकांक्षाकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ तहां 'अन्वयानुपपत्तिः आकांक्षा' अर्थ यह ॥ जिसपदका जिसपदतैंविना अन्वय नहींसंभवैहै ॥ तिसपदका जो तिसपदकेसाथ समभिव्याहारहै ताकानाम आकांक्षाहै ॥ जैसे 'घटमानय' इसवाक्यतैं श्रोतापुरुषकूं घटकेलेआवणेकाबोधहोवैहै ॥ सोबोध केवल घटं इसकारकपदतैंभी होतानहीं ॥ तथा केवल आनय इसक्रियापदतैंभी होता नहीं ॥ किंतु तिनदोनोंपदोंकेविद्यमानहुएही सोबोधहोवैहै ॥ यातैं ताघटपदकूं जोआनयपदकासमभिव्याहारहै ॥ तथा ताआनयपदकूं जोघटपदकासमभिव्याहारहै ॥ यहही तिनदोनोंपदोंकूं परस्पर आकांक्षाहै ॥ समाभव्याहारनाम समीपताकाहै ॥ यद्यपि आकांक्षानाम इच्छाकाहै ॥ साइच्छाचेतनकाहीधर्महोवैहै ॥ जडपदोंकाधर्म होतीनहीं ॥ तथापितेपद श्रोतापुरुषकी स्वविषयकआकांक्षाकेजनकहोवैहैं ॥ यातैं तिनपदोंकूंभी आकांक्षावाला कह्याहै इति ॥ अब योग्यताकावर्णनकरेहैं ॥ तहां 'वाक्यार्थाबाधः योग्यता' अर्थयह ॥ वाक्यकेअर्थका जोप्रमाणांतरकरिकैअबाधहै ताकानाम योग्यता है ॥ जैसे 'घटमानय' इसवाक्यकाअर्थ जोघटकाआनयनहै ताका कोईभीप्रत्यक्षादिकप्रमाणकरिकैबा

घहोतानहीं ॥ यहही तिनघटादिकपदोंविषे योग्यताहै इति ॥ अब सन्निधिकावर्णनकरेहैं ॥ तहां 'पदा नामविलंबोच्चारणं सन्निधिः' अर्थयह ॥ पदोंका जोविलंबतैंरहितउच्चारणहै ताकानाम सन्निधिहै ॥ जैसे 'घटमानय' इसवाक्यविषे घटं इसपदतैंउत्तर विलंबतैंरहित जो आनय इसपदकाउच्चारणहै ताकानाम सन्निधिहै इति ॥ इसप्रकारके आकांक्षा योग्यता सन्निधि इनतीनोंवालेपदोंकाजोसमुदायहै ताकानाम वाक्यहै ॥ तहां पदसमुदायः 'वाक्यम्' इतनामात्रही जो तावाक्यकालक्षणकरते तौ प्रहरादिक कालकाविलंबकरिकै उच्चारणकऱ्येहुए घटादिकपदोंकेसमुदायविषे तावाक्यकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहो ती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे सन्निधिवालेपदोंकूं वाक्यकह्याहै ॥ तहां प्र हरप्रहरतैंपीछेउच्चारणकऱ्येहुए तिनघटादिकपदोंविषे साअविलंबतैंउच्चारणरूपसन्निधि हैनहीं ॥ यातैं ता पदसमुदायविषे तावाक्यकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा 'सन्निधिमत्पदसमुदायः वाक्यम्' इं तनामात्रही जो तावाक्यकालक्षणकरते ॥ तौ 'अग्निना सिंचेत्' अर्थयह ॥ अग्निकरिकै वृक्षोंकासिंच नकरे ॥ इसअप्रमाणभूतवाक्यविषेभी तावाक्यकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतैं साउक्तसन्नि धि इनपदोंविषेभीहै ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतैं तालक्षणविषे तिनपदोंका योग्यताविशे षण कथनकऱ्याहै ॥ तहां अग्निविषे सिंचनकीकरणता प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैबाधितहै ॥ यातैं तेपद ता उक्तयोग्यतावालेनहीं हैं ॥ यातैं अग्निनासिंचेत् इसपदसमुदायविषे तावाक्यकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवै नहीं ॥ किंवा 'योग्यतासन्निधिमत्पदसमुदायःवाक्यम्' इतनामात्रही जो तावाक्यकालक्षणकरते ॥ तौ 'गौरश्वःपुरुषोहस्ती' इसपदसमुदायविषे तावाक्यकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोती जिसकारणतैं सा

उक्त सन्निधि तथायोग्यता इनपदोंविषेभीहै ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवास्तै तिनपदोंका आ
कांक्षाविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तहां तेगौअश्वादिकपद परस्परआकांक्षावालेहैं नहीं॥ यातैं तापदसमू
हविषे तावाक्यकेलक्षणकीआतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसप्रकारकेउक्तवाक्यकूं जो
शाब्दीप्रमाकीकरणताहोवै ॥ तौ अव्युत्पन्नपुरुषकूंभी तावाक्यतैं शाब्दीप्रमाहोणीचाहिये ॥ तहां इस
पदका यहअर्थ है याप्रकारकेज्ञानतैंरहितपुरुषकानाम अव्युत्पन्नहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे सोवा-
क्य ताशाब्दीप्रमाका कारणहोवैहै ॥ तैसे तावाक्यानिष्ठपदोंकेसंगतिकाज्ञानभी ताशाब्दीप्रमाकाकार
णहोवैहै ॥ ताअव्युत्पन्नपुरुषकूं सोसंगतिकाज्ञानहैनहीं ॥ यातैं तावाक्यके श्रवणहुएभी ताअव्युत्पन्नपु
रुषकूं सावाक्यार्थप्रमा होतीनहीं ॥ तहां शाब्दीप्रमा वाक्यर्थप्रमा शाब्दबोधयहतीनोशब्द एकही
अर्थकेवाचकहोवैहैं ॥ अब तासंगतिकास्वरूप वर्णनकरेहैं तहां ॥ ' पदपदार्थयोःस्मार्यस्मारकभावसंबं
धः संगतिः ' अर्थयह ॥ पद पदार्थ इनदोनोंका जो स्मार्यस्मारकभावसंबंधहै ताकानाम संगतिहै ॥
जैसे घटपदकूंश्रवणकरिकै इसपुरुषकूंघटरूपअर्थकीस्मृतिहोवैहै ॥ तहां घटपदतौ तास्मृतिकाजनकहो
णेतैं स्मारक कह्याजावैहै ॥ और सोघटरूपअर्थ तास्मृतिकाविषयहोणेतैं स्मार्य कह्याजावैहै ॥ इसप्र
कारकेस्मार्यस्मारकभावसंबंधकानाम संगतिहै ॥ इसीसंगतिकूं शास्त्रकार वृत्तिभीकहेहैं इति ॥ और
सावृत्तिरूपसंगति शक्ति १ लक्षणा २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ यद्यपि अन्यशास्त्रोंविषे श
क्ति १ गौणी २ लक्षणा ३ इसभेदकरिकै सावृत्ति तीनप्रकारकी कथनकरीहै ॥ तथापि ईहां तागौणी
वृत्तिका लक्षणाविषेअंतर्भावमानिकै सावृत्ति दोप्रकारकीकथनकरीहै ॥ अब तादोप्रकारकीवृत्तिविषे प्र

थम शक्तिवृत्तिकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां 'पदपदार्थयोर्वाच्यवाचकभावसंबंधः शक्तिः' अर्थयह ॥ पदप दार्थ इनदोनोंका जोवाच्यवाचकभावसंबंधहै ताकानाम शक्तिहै॥जैसे घटपद तथाघटरूपअर्थ दोनों का वाच्यवाचकभावसंबंधहै ॥ तहां घटपदतौ वाचकहै॥और घटरूपअर्थ वाच्यहै॥तहां पदजन्यज्ञा नकाजोविषयहोवैहै सो वाच्य कह्याजावैहै ॥ और पदार्थकेस्मृतिकाजोजनकहोवैहै सो वाचक कह्या जावैहै ॥ इसीशक्तिकूं शास्त्रविषे मुख्यावृत्ति इसनामकरिकैभी कथनकरे हैं इति ॥ और सामुख्य वृत्ति रूपशक्तिभी योग १ रूढि २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां 'अवयवशक्तिः योगः' अर्थय ह ॥ पदके प्रकृतिप्रत्ययरूपअवयवोंविषे जाअर्थकाबोधकशक्तिहै ताकानाम योगशक्तिहै॥जैसे पाचका दिकपदोंकी पाककर्त्तादिरूपअर्थविषे योगशक्तिहै ॥ तहां पचधातुतैंअनंतर अकप्रत्यय आइकै पाचक यहशब्द सिद्धहोवैहै ॥ तहां पचधातुकीतौ पाकमैंशक्तिहै ॥ और अकप्रत्ययकी कर्तामैंशक्तिहै ॥ तिन दोनोंअवयवोंकीशक्तितैं पाककर्तापुरुषकाबोधहोवैहै ॥ इसीयोगशक्तिवालेपाचकादिकपदोंकूं शास्त्रवि षे यौगिकपद कहेहैं इति ॥ और 'समुदायशक्तिः रूढिः' अर्थयह ॥ पदके प्रकृतिप्रत्ययरूप अवयव समुदायविषे जाअर्थकाबोधक एकशक्तिहै ताकानाम रूढिशक्तिहै॥ जैसे घटादिकपदोंकी घटादिरूप अर्थविषे रूढिशक्तिहै ॥ इसीरूढिशक्तिवालेपदोंकूं शास्त्रविषे रूढपद कहेहैं इति ॥ इहां नैयायिक साश क्ति योग १ रूढि २ योगरूढि ३ यौगिकरूढि ४ इसभेदकरिकै चारिप्रकारकीमानेहैं ॥ और ताशक्ति कीचारिप्रकारताकरिकै तापदकूंभी योग १ रूढ२ योगरूढ ३ यौगिकरूढ ४ इसभेदकरिकै चारिप्रका रका मानेहै ॥ तहां पंकज आदिकपदोंकूं योगरूढ मानैहैं ॥ और उद्भिद आदिकपदोंकूं यौगिकरूढ मा

नेहैं॥यहनैयायिकोंकामत न्यायप्रकाशकेषष्ठपरिच्छेदविषे शब्दप्रमाणकेनिरूपणविषे विस्तारतैंकथनक
-याहै ॥ सोतहांसेंजानिलेणा इति ॥ अब ताउक्तशक्तिकेज्ञानकाप्रकार वर्णनकरेहैं ॥ ताशक्तिका इस
पुरुषकूं व्यवहारतैंज्ञानहोवैहै ॥ जैसे गुरुपितादिरूपउत्तमवृद्धपुरुषके घटमानय इसवचनकूंश्रवणकरिकै
शिष्यपुत्रादिरूप मध्यमवृद्धपुरुष ताघटकेलेआवणेवासतै प्रवृत्तहोवैहै॥और ताउत्तमवृद्धपुरुषकेसमीप
स्थित जोबालकहै सोबालक तामध्यमवृद्धपुरुषके गमनआगमनरूपप्रवृत्तिकूंदेखिकै तामध्यमवृद्धपुरु
षकेज्ञानका अनुमानकरेहै सोअनुमान यहहै ॥ 'इयंप्रवृत्तिः ज्ञानसाध्या प्रवृत्तित्वात् मदीयप्रवृत्तिव
त्' अर्थयह ॥ इसमध्यमवृद्धपुरुषकी जायहप्रवृत्तिहै सा ज्ञानकरिकैजन्यहै॥ प्रवृत्तिरूपहोणेतैं ॥ जा
जाप्रवृत्तिहोवैहै सा ज्ञानकरिकैजन्यहीहोवैहै ॥ जैसे हमारीप्रवृत्ति इष्टसाधनताज्ञानकरिकैजन्यहोवैहैइ
ति ॥ इसप्रकार सोबालक तामध्यमपुरुषकीप्रवृत्तिकेहेतुभूतज्ञानकाअनुमानकरिकै तिसतैंअनंतर तिस
ज्ञानविषे ताउत्तमवृद्धपुरुषकेवाक्यजन्यताका अनुमानकरेहै ॥ सोअनुमान यहहै॥'इदंज्ञानं एतद्वाक्य
जन्यं एतद्वाक्यान्वयव्यतिरेकानुविधायित्वात् दंडजन्यघटादिवत्' अर्थयह ॥इसमध्यमपुरुषकेप्रवृत्ति
काहेतुभूतजोज्ञानहै ॥सोज्ञान इसउत्तमवृद्धपुरुषके घटमानय इसवाक्यकरिकैजन्यहै ॥ इसवाक्यकेअ
न्वयव्यतिरेककेअनुसारीहोणेतैं ॥ जोजोपदार्थ जिसपदार्थके अन्वयव्यतिरेककेअनुसारीहोवैहै ॥ सो
सोपदार्थ तिसपदार्थकरिकैजन्यहीहोवैहै ॥जैसे दंडकेविद्यमानहुए घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ औ ॥९३॥
रतादंडकेअभावहुए ताघटरूपकार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ याप्रकारका जोदंडका अन्वयव्यतिरेकहै
तिसकेअनुसारीही घटहोवैहै ॥ यातैं सोघट तादंडकरिकैजन्यहीहोवैहै ॥ तैसे इसउत्तमवृद्धपुरुषकेघट

मानय इसवाक्यके अन्वयव्यतिरेककेअनुसारीहोणेतें सोमध्यमपुरुषज्ञान इसवाक्यकारिकैहीजन्यहै इति ॥ इसप्रकार सोबालक तामध्यमपुरुषकेज्ञानविषे 'घटमानय' इसवाक्यजन्यताकाअनुमाकारिकै पश्चात् तामध्यमपुरुषकृतघटकेआनयनकूंदेखकै ताघटपदकी तिसघटव्यक्तिविषेशक्तिकूंनिश्चयकरेहै ॥ अर्थात् घटमानय इसवाक्यविषेस्थित घटपदकी इसघटव्यक्तिविषेशक्तिहै ताप्रकारकाताबालककूंशक्तिज्ञानहोवैहै ॥ इसप्रकार ताबालककूं प्रथम वृद्धव्यवहारतैंही घटादिकपदोंकेशक्तिकाज्ञानहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर व्याकरण १ उपमान २ कोश ३ आप्तवाक्य ४ वाक्यशेष ५ विवरण ६ सिद्धपदकीसमीपता ७ इनोंतैंभी पदोंकेशक्तिकाज्ञानहोवैहै ॥ तिनव्याकरणादिकोंतैं जिसप्रकार पदोंकेशक्तिकाज्ञान होवैहै॥सोप्रकार न्यायप्रकाशकेषष्ठपरिच्छेदविषे शब्दप्रमाणकेंनिरूपणविषे हमने विस्तारतैंनिरूपणकऱ्याहै ॥ ग्रंथकेविस्तारभयतैं इहां निरूपणकऱ्यानहीं ॥ जिसकूं जानणेकीइच्छाहोवै तिसनेतहांसेजानिलेणा इति ॥ अबताशक्तिविषयभूतअर्थका मतभेदसे निरूपणकरेहै ॥ तहां नैयायिकतौ यहकहेहैं ॥ इसपदतैं श्रोतापुरुषकूं इसअर्थकाबोधहोवो याप्रकारकीजाईश्वरकी इच्छाहै ताकानाम शक्तिहै ॥ और नवीननैयायिकतौ उक्तप्रकारकी जीवकीइच्छाकूंभी शक्तिमानेहैं ॥ साघटादिकपदोंकीशक्तिघटादिरूपपदार्थविषेही होवैहै॥घटादिकपदार्थोंकेरूप संबंधरूपसंसर्गविषे साशक्तिहोतीनहीं॥ जिसकारणतैं घटपदकेश्रवणतैं श्रोतापुरुषकूं ताघटरूपअर्थकाही स्मरणहोवैहै ॥ तासंसर्गकास्मरण होतानहीं ॥ और घटमानय इत्यादिकवाक्यविषेस्थितघटादिकपदोंकेअर्थोंकापरस्परसंसर्गरूपजो वाक्यार्थहै॥तावाक्यार्थकातौ तिनघटादिकपदोंकेसमभिव्याहारतैंही बोधहोवैहै ॥ यातैं तासंसर्गविषे घटादिकपदोंकी

शक्तिमानणी निष्फलहै इति ॥ और मीमांसकतौ यहकहेहैं ॥ घटादिकपदोंकी केवल घटादिरूपअर्थ विषेही शक्तिनहींहोवैहै ॥ किंतु कार्यान्वितघटादिकोंविषेही घटादिकपदोंकीशक्ति होवैहै ॥ इहां पुरुष केप्रयत्नरूपकृतिकरिकैसाध्यजाक्रियाहै ताकानाम कार्यहै ॥ ताकार्यकेसंबंधवालेकानाम कार्यान्वित है ॥ जैसे घटमानय इसवाक्यविषे घटकाआनयनरूपक्रिया तापुरुषकेप्रयत्नकरिकैसाध्यहोणेतैं कार्य है ॥ ताआनयनरूपकार्यकेसंबंधवाला घटहै ॥ यातैं सोघट कार्यान्वित कह्याजावैहै ॥ तिसकार्यान्वित घटविषेही घटपदकीशक्तिहै ॥ इसप्रकार पटादिकपदोंकीभी ताकार्यान्वितपटादिकोंविषेही शक्तिजा नणी ॥ जोकदाचित् घटादिकपदोंकी कार्यान्वितघटादिकोंविषेशक्तिनहींमानिये तौ घटादिकपदा थोंकेसंसर्गरूपवाक्यार्थकाबोध नहींहोवैगा ॥ तथा पूर्वउक्तरीतिसे बालककूं प्रथम कार्यान्वितघटादि कोंविषेही घटादिकपदोंकेशक्तिकाज्ञानहोवैहै सोभीनहींहोवैगा ॥ जिसकारणतैं कृतिसाध्यत्वरूपकार्य ताकाज्ञानही पुरुषकेप्रवृत्तिकाहेतु होवैहै ॥ केवल इष्टसाधनताज्ञान पुरुषकेप्रवृत्तिकाहेतु होतानहीं॥चं द्रमंडलादिकोंविषे इष्टसाधनताज्ञानकेहुएभी इसपुरुषकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ यद्यपिविषभक्षण कूपपतन आदिकोंविषे ताकार्यताज्ञानकेहुएभी इसपुरुषकीप्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ तथापि इष्टसाधनताज्ञानकेसमान कालीन जोकार्यताज्ञानहै सोईही इसपुरुषकेप्रवृत्तिकाहेतुहोवैहै ॥ तिनविषभक्षणादिकोंविषे इसपुरुषकूं इष्टसाधनताज्ञानहैनहीं ॥ यातैं प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं ताकृतिसाध्यत्वरूपकार्यताकेवाचक जे लिङ् लोट् तव्य इत्यादिकपदहैं ॥ तिनपदोंकरिकैघटितवाक्यही प्रमाणवाक्यहोवैहै ॥ जैसे घटमानयइत्या दिक लौकिकवाक्यहैं ॥ तथा 'स्वर्गकामोयजेत' इत्यादिक वैदिकवाक्यहैं॥ तिनालिङादिकपदोंतैंरहित

वाक्य प्रमाणहोतेनहीं ॥'जैसे भूतलेघटः'इत्यादिक लौकिकवाक्यहैं॥ तथा 'तत्त्वमसि' इत्यादिक वैदिकवाक्यहैं इति॥ और वेदांतसिद्धांतकातौ यहमतहै॥घटादिकपदोंकी केवल घटादिरूपअर्थविषे वा कार्यान्वितघटादिकोंविषे शक्तिनहीं है ॥ किंतु इतरान्वितघटादिकोंविषेही तिनघटादिकपदोंकीशक्ति है ॥ यद्यपि बालककूं प्रथम कार्यान्वितघटादिकोंविषेही घटादिकपदोंकेशक्तिकाज्ञानहोवैहै ॥ तथापि पश्चात् गौरवदोषतैं ताकार्यअंशकापरित्यागकरिकै इतरान्वितघटादिकोंविषेही तिनघटादिकपदोंके शक्तिकाज्ञानहोवैहै॥सोइतरपदार्थकार्यहोवै अथवा ताकार्यतैंभिन्न होवै॥ और जैसे घटमानय इसकार्यपर वाक्यतैं शक्तिकेग्रहणकाप्रकार पूर्वदिखायाथा ॥ तैसे 'पुत्रस्तेजातः' इत्यादिकसिद्धार्थपरवाक्यतैंभी सोशक्तिकाग्रहणहोवैहै।जैसे कोईधनीपुरुषकूं पुत्रजन्म्याथा।तिसपुत्रकेपदकरिकैअंकितवस्त्रकूंलेकेवार्त्ताहारपुरुष ताधनीपुरुषकेसमीपजाइकै तावस्त्रकूंताकेआगेराखिकै'पुत्रस्तेजातः'याप्रकारकावचन कहता भया॥ ताकूंश्रवणकरिकै तिसधनीपुरुषकूं पुत्रकेजन्मकेज्ञानतैं हर्षहोताभया ॥ ताहर्षतैं ताकामुख विकासमानहोताभया॥तिसकूंदेखिकै पुत्रपदकीशक्तिज्ञानतैंरहित दूसराकोईपुरुष तामुखविकासनरूपहेतु करिकै ताधनीपुरुषकेहर्षकाअनुमानकरताभया॥ तिसतैंअनंतर ताहर्षविषे ज्ञानजन्यत्वकाअनुमानकरताभया॥ तिसतैंअनंतर ताज्ञानविषे अन्वयव्यतिरेककरिकै'पुत्रस्तेजातः'इसवाक्यजन्यत्वकाअनुमान करताभया॥तिसतैंअनंतर ताउत्पत्तिवालेबालकपिंडविषे तापुत्रपदकीशक्तिकानिश्चयकरताभया इति यातैं जैसे घटमानय स्वर्गकामोयजेत इत्यादिककार्यपरवाक्य प्रमाणरूपहै ॥तैसे भूतलेघटः तत्त्वमसि इत्यादिक सिद्धार्थपरवाक्यभी प्रमाणरूपहीं है इति ॥ और सापूर्वउक्त घटादिकपदोंकीशक्ति घटत्वादि

कजातिविषेही है घटादिकव्यक्तियोंविषे नहींहै ॥ जोकदाचित् साशक्ति घटादिकव्यक्तियोंविषे मा
नियेतौ तेघटादिकव्यक्तियां अनंतहैं ॥ यातैं तेशक्तियांभी अनंतमानणियां होवैंगी ॥ तथा जिस
घटव्यक्तिविषे घटपदकेशक्तिकाज्ञानभयाहै ॥ तिसव्यक्तितैंभिन्नघटकाभी ताघटपदतैं बोधहोवैहै सोभी
नहींहोणाचाहिये ॥ जिसकारणतैं ताघटव्यक्तिविषे ताघटपदकेशक्तिकाज्ञानभयानहीं ॥ और साघट
त्वजाति सर्वघटव्यक्तियोंविषे एकहै ॥ यातैं ताजातिविषेशक्तिमानणेमें सोशक्तिकाअनंतपणाहै तथा व्य
भिचारदोष प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं घटादिकपदोंकी घटत्वादिकजातिविषेही शक्तिमानणी उचितहै ॥
॥ ॥ शंका ॥ ॥ घटादिकपदोंकी जोघटत्वादिकजातिविषेहीशक्ति मानोंगे ॥ तौ घटमानय इस
वाक्यकूंश्रवणकरिकै श्रोतापुरुषकूं ताघटपदतैं घटत्वजातिकाही बोधहोवैगा घटव्यक्तिकाबोध होवै
गानहीं ॥ आर ताघटव्यक्तिकेबोधतैंविना ताघटव्यक्तिका आनयनभी संभवैगानहीं ॥ ॥समाधान॥ ॥
ताश्रोतापुरुषकूं ताघटपदतैं घटत्वजातिकाहीबोधहोवैहै ॥ परंतु ताघटव्यक्तितैंविना ताघट
त्वजातिका स्वतंत्र आनयनसंभवतानहीं ॥ यातैं ताश्रोतापुरुषकूं आक्षेपतैं ताघटव्यक्तिकाबोधहोवै
है ॥ अथवा ताघटपदकीलक्षणातैं ताघटव्यक्तिकाबोधहोवैहै ॥ तहां कैएकग्रंथकार समानवृत्तिवेद्यत्व
कूंही आक्षेपकहेहैं ॥ और कैएक अनुमानकूं आक्षेपकहेहैं ॥ और कैएक अर्थापत्तिकूं आक्षेपकहेहैं ॥
यहतीनोंपक्ष न्यायप्रकाशकेषष्ठपरिच्छेदविषे स्पष्टकरिकैनिरूपणकऱ्येहैं ॥ ते तहांसे जानिलेणे इति ॥
अथवा घटत्वादिकजातिविशिष्टघटादिकव्यक्तिविषेही घटादिकपदोंकीशक्तिहै ॥ केवलजातिविषे वा
केवलव्यक्तिविषे साशक्तिनहीं है ॥ परंतु जातिविषेशक्तितौ ज्ञातहुई शाब्दबोधका उपयोगीहोवैहै ॥

॥९९॥

और व्यक्तिविषेशक्तितौ स्वरूपतैंही उपयोगीहोवैहै ॥ ज्ञानहुई उपयोगीहोतीनहीं ॥ इसप्रकारकीश क्तिकूंही शास्त्रविषे कुबजशक्तिकहेहैं ॥ इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व घटादिकपदोंकी इतरान्वितघटा दिकोंविषे शक्तिकहीथी ॥ और अभी तिनघटादिकपदोंकीघटत्वजातिविषे वा घटत्वजातिविशिष्टघट व्यक्तिविषे शक्तिसिद्धकरी ॥ यातैं पूर्वउत्तरग्रंथकाविरोधप्राप्तहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ साशक्ति अनुभाविका १ स्मारिका २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां पूर्व इतरान्वितघटादिकोंविषे घटादिकपदोंकी आनुभाविकाशक्ति कहीथी ॥ और अबी घटत्वजातिविषे वा घटत्वजातिविशिष्ट घट व्यक्तिविषे घटपदकी स्मारिकाशक्ति कथनकरीहै ॥ यातैं तापूर्वउत्तरग्रंथका विरोधहोवैनहीं॥इसप्रकार मीमांसकोंकेमतविषेभी कार्यान्वितघटादिकोंविषे घटादिकपदोंकी आनुभाविका शक्तिहै ॥ और घट त्वादिकजातिविषे स्मारिकाशक्तिहै इति ॥ तहां इतनेपर्यंत प्रथम शक्तिवृत्तिकानिरूपणकऱ्या ॥ अब दूसरी लक्षणावृत्तिकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां 'शक्यसंबंधःलक्षणा' अर्थयह ॥ पूर्वउक्तशक्तिवृत्तिका जो विषयहोवैहै ताकानाम शक्यहै ॥ इसीशक्यकूं वाच्यभीकहेहैं ॥ ताशक्यपदार्थका जोलक्ष्यमाणपदार्थ केसाथ संबंधहै ताकानाम लक्षणाहै ॥ जैसे किसीआप्तवक्तापुरुषने मंडपस्थपुरुषकेभोजनकरावणेकेअ भिप्रायकरिकै 'मंडपंभोजय' याप्रकारकावचन किसीपुरुषकेप्रति कह्या ॥ तावचनकूंश्रवणकरिकै सो श्रोतापुरुष जडमंडपविषेभोजनकर्तृत्वकीअयोग्यताकूंजानिकै तामंडपपदकी मंडपस्थपुरुषविषे लक्षणा करेहै ॥ तहां मंडपपदकाशक्यअर्थ जोगृहविशेषहै ताका तापुरुषकेसाथ संयोगसंबंधहै ॥ इसीकाना म लक्षणाहै इति॥अब तालक्षणावृत्तिकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ तहां सालक्षणावृत्ति केवललक्षणा १

लक्षितलक्षणा २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां 'शक्यसाक्षात्संबंधः केवललक्षणा' अर्थयह ॥ पदकेशक्यअर्थका जोलक्ष्यमाणअर्थकेसाथ साक्षात्संबंधहै ताकानाम केवललक्षणाहै ॥ सोकेवललक्षणा जहल्लक्षणा १ अजहल्लक्षणा २ जहदजहल्लक्षणा ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां 'शक्यार्थपरित्यागेनतत्संबंध्यर्थांतरेवृत्तिः जहल्लक्षणा' अर्थयह ॥ पदकेशक्यअर्थकापरित्यागकरिकै ताशक्यअर्थकेसंबंधवालेअन्यपदार्थविषे जा तापदकी लक्षणावृत्तिहै ताकानाम जहल्लक्षणाहै ॥ जैसे इसश्रोतापुरुषकूं गंगाकेतीरविषे घोषकाबोधहोवै इसप्रकारकेअभिप्रायकरिकै आप्तवक्तापुरुषने उच्चारणकऱ्याजो 'गंगायांघोषःप्रतिवसती' याप्रकारकावाक्यहै ॥ तावाक्यकूंश्रवणकरिकै सोश्रोतापुरुष तागंगापदकेशक्यअर्थरूपजलप्रवाहविषे ताघोषकीआधारताकेअनुपपत्तिकूंदेखताहुआ तागंगापदकी तीरविषेलक्षणा करेहै ॥ तहां गंगापदकाशक्यअर्थ जोजलकाप्रवाहहै ॥ ताकापरित्यागकरिकै ताशक्यअर्थकेसंयोगसंबंधवाला जोतीररूपअर्थहै ॥ तातीरविषे जागंगापदकीलक्षणावृत्तिहै इसीकूं जहल्लक्षणा कहेहैं इति ॥ अब अजहल्लक्षणाका वर्णनकरेहैं तहां 'शक्यार्थापरित्यागेनतत्संबंध्यर्थांतरेवृत्तिः अजहल्लक्षणा' अर्थयह ॥ पदकेशक्यअर्थका नपरित्यागकरिकै ताशक्यअर्थकेसंबंधवाले अन्यपदार्थविषे जा तापदकी लक्षणावृत्तिहै ताकानाम अहल्लक्षणाहै ॥ जैसे मंचस्थपुरुषकेबोधनकेअभिप्रायकरिकै आप्तवक्तापुरुषने उच्चारणकऱ्याजो 'मंचाःक्रोशंति' अर्थयह मंच शब्दकरेहैं याप्रकारकावचनहै॥तावचनकूंश्रवणकरिकै सोश्रोतापुरुष जडमंचोंविषे शब्दकर्तृत्वकेअनुपपत्तिकूंदेखताहुआ ॥९६॥ तामंचपदकी मंचस्थपुरुषविषे लक्षणाकरेहै ॥ तहां मंचपदकेशक्यअर्थरूपमंचका नपरित्यागकरिकै जा

तामंचपदकी मंचस्थपुरुषविषे लक्षणावृत्तिहै इसीकूं अजहल्लक्षणा कहेहैं इति ॥ अब जहदजहल्ल क्षणाका वर्णनकरेहैं ॥ तहां 'शक्यैकदेशपरित्यागेनैकदेशेवृत्तिः जहदजहल्लक्षणा' अर्थयह ॥ पदकेश क्यअर्थके एकदेशकापारित्यागकरिकै एकदेशाविषे जापदकीलक्षणावृत्तिहै ताकानाम जहदजहल्लक्ष णाहै ॥इसीलक्षणाकूं भागत्यागलक्षणाभी कहेहै ॥ जैसे देवदत्तपुरुषके अभेदनबोधनकेतात्पर्यकारिकै आ तवक्तापुरुषने उच्चारणकऱ्याजो 'सोऽयंदेवदत्तः' यहवाक्यहै तावाक्यकूंश्रवणकरिकै सोश्रोतापुरुष सः अयं इनदोनोंपदोंकी देवदत्तपिंडमात्रविषे लक्षणाकरेहै॥तहां 'तद्देशकालविशिष्टदेवदत्तपिंडः सः' इस पदका शक्यअर्थ है ॥ और एतद्देशकालविशिष्टदेवदत्तपिंड अयं इसपदका शक्यअर्थ है ॥ तहां तिन दोनोंशक्यअर्थोंका अभेदसंभवतानहीं ॥ यातैं ता सःपदकेशक्यअर्थविषे जो तद्देशकालविशिष्टत्वरूप एकदेशहै ताकापरित्यागकरिकै तादेवदत्तपिंडरूपएकदेशविषे जा सःपदकी लक्षणावृत्तिहै ॥ तथा अयं पदकेशक्यअर्थविषे जो एतद्देशकलाविशिष्टत्वरूपएकदेशहै ताकापरित्यागकरिकै तादेवदत्तपिंडरूप एकदेशाविषे जा अयंपदकी लक्षणावृत्तिहै ॥ इसकूं जहदजहल्लक्षणाकहेहैं ॥ अथवा जैसे जीवब्रह्म के अभेदबोधनकेतात्पर्यकारिकै ब्रह्मवेत्तागुरुने उच्चारणकऱ्याजो 'तत्त्वमसि' यहमहावाक्यहै ॥ तिस कूंश्रवणकरिकै अधिकारीश्रोतापुरुष तत् त्वं इनदोनोंपदोंकी अखंडचैतन्यविषे लक्षणाकरेहै ॥ तहां मा याउपाहितचैतन्य तत्पदका शक्यअर्थ है ॥ और स्थूलसूक्ष्मादिशरीरउपाहितचैतन्य त्वंपदका शक्यअ र्थ है ॥ तहां तिनदोनोंशक्यअर्थोंका अभेदसंभवतानहीं ॥ और तावाक्यविषे तत्त्वंपदोंकेसामानाधि करण्यकरिकै तत्त्वंदोनोंपदार्थोंका अभेदही प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं तत्पदकेशक्यअर्थविषे तामायारूप

एकदेशकापरित्यागकरिकै ताचैतन्यरूपएकदेशविषे जा तत्पदकी लक्षणावृत्तिहै ॥ तथा त्वंपदकेशक्य
अर्थविषे स्थूलसूक्ष्मादिशरीररूपएकदेशकापरित्यागकरिकै ताचैतन्यरूपएकदेशविषे जा त्वंपदकी लक्ष
णावृत्तिहै ॥ इसीकूं सिद्धांतविषे जहदजहल्लक्षणा कहेहैं तथाभागत्यागलक्षणा कहेहैं ॥ तालक्ष्यअ
र्थरूपअखंडचैतन्योंकाअभेद संभवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तत् त्वं इनदोनोंपदोंकी जो एकअखं
डचैतन्यविषेही लक्षणाहोवै ॥ तौ एकहीपदकरिकै ताअखंडचैतन्यरूपब्रह्मकासाक्षात्कार संभवहोइसकै
है ॥ यातैं दूसरापद व्यर्थहोवैगा ॥ तथा एकअर्थकेबोधकदोपदोंकेकहणेतैं पुनरुक्तिदोषभी प्राप्तहो
वैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ पदतौ आपणेअर्थका केवल स्मरणमात्रहीकरावैहै ॥ दूसरेपदतैंविन,
सोएकपद शाब्दबोधकाहेतुहोतानहीं ॥ यातैं प्रथमतौ तत् त्वं इनदोनोंपदोंतैं भागत्यागलक्षणाकरिकै
तानिर्विकल्पकअखंडचैतन्यका स्मरणमात्रहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तापदसमुदायरूप तत्त्वमसिवाक्यतैं
ब्रह्मात्मैक्यविषयक अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका शाब्दअपरोक्षअनुभव होवैहै ॥ सोअपरोक्षअनुभव एक
पदतैंसंभवतानहीं ॥ यातैं सोदूसरापद व्यर्थनहींहै ॥ किंतु तेदोनोंपद सार्थकहैं ॥ और पूर्वउक्तप्र
कारतैं तत् त्वं इनदोनोंपदोंकेवाच्यार्थका भेदही है ॥ यातैं पुनरुक्तिदोषकीभीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥
तहां जहल्लक्षणाविषे सर्ववाच्यअर्थका परित्यागहोवैहै ॥ और तत्त्वंपदके सर्ववाच्यार्थका परित्यागहो
तानहीं ॥ किंतु एकदेशका परित्यागहोवैहै ॥ यातैं तातत्त्वंपदविषे जहल्लक्षणाभी संभवतीनहीं ॥
और अजहल्लक्षणाविषे वाच्यार्थतैंअधिकअर्थकाभीग्रहणहोवैहै और तत्त्वंपदकेवाच्यार्थ तैं अधिक
किसीकाअर्थग्रहण होतानहीं ॥ यातैं तातत्त्वंपदविषे अजहल्लक्षणाभी संभवतीनहीं ॥ किंतु पूर्वउक्त ॥९७॥

रीतिसे जहदजहल्लक्षणाही संभवैहै ॥ इसीकारणतैं आचार्योंने ' तत्त्वमस्यादिवाक्येषुलक्षणाभाग लक्षणा ' इसवचनकरिकै तत्त्वमसिआदिकवाक्योंविषे भागत्यागलक्षणाही कथनकरीहै इति ॥ इहां केएकग्रंथकार तत्त्वमसिआदिकवाक्योंविषे भागत्यागलक्षणातैंविनाही अखंडचैतन्यकाबोधमानैहैं॥ तिनोंका यहअभिप्रायहै ॥ जैसे ' अनित्योघटः ' इसवाक्यविषे घटत्वविशिष्टघटव्यक्ति घटपदकावाच्य अर्थहै तावाच्यअर्थका एकदेशरूप जाघटत्वजातिहै ॥ ताघटत्वजातिका अनित्यत्वकेसाथअन्वय संभवतानहीं ॥ किंतु ताघटव्यक्तिकाही ताअनित्यत्वकेसाथअन्वय संभवैहै ॥ तहां घटपदकी घटव्यक्तिविषे भागत्यागलक्षणातैंविनाही योग्यताकेबलतैं ताघटपदकीशक्तिवृत्तिकरिकैउपस्थितघटव्यक्तिकाही ताअनित्यत्वकेसाथअन्वयहोवैहै॥ तैसे तत्त्वंपदकेवाच्यअर्थका एकदेशरूप जे परोक्षत्वअपरोक्षत्व सर्वज्ञत्वअल्पज्ञत्व असंसारित्वसंसारित्व इत्यादिकधर्म हैं, तिनोंका परस्परअभेदसंभवतानहीं॥ किंतु चैतन्यरूपविशेष्यअंशकाही अभेदसंभवैहै॥ यातैं तातत्त्वंपदविषे भागत्यागलक्षणातैंविनाही योग्यताकेबलतैं तातत्त्वंपदकीशक्तिवृत्तिकरिकैउपस्थितअखंडचैतन्यकाही अभेदान्वयबोधहोवैहै ॥ यातैं तत्त्वमसिआदिकवाक्योंविषे भागत्यागलक्षणामाननी व्यर्थहै इति ॥ सोयहमत सर्वआचार्योंकीउक्तितैंविरुद्धहोणेतैं असंगतहै इति ॥ तहां इतनेपर्यंत केवललक्षणाकानिरूपणकर्‍या ॥ अब दूसरीलक्षितलक्षणाका निरूपणकरेहैं ॥ तहां ' शक्यपरंपरासंबंधः लक्षितलक्षणा ' अर्थयह ॥ पदकेशक्यअर्थका जोलक्ष्यमाणअर्थकेसाथ परंपरासंबंधहै ताकानाम लक्षितलक्षणाहै॥ जैसे मधुकर शब्दकरेहै इसअर्थकेबोधनकरणेवासते आतरकापुरुषने उच्चारणकर्‍याजो ' द्विरेफोरौति ' यहवाक्यहै ॥ तिसवाक्यकूंश्रवणकारिकै

श्रोतापुरुष ताद्विरेफपदकेशक्यअर्थरूपदोरकारोंविषे शब्दकर्तृत्वकेअनुपपत्तिकूंदेखताहुआ ताद्विरेफप
दकी मधुकरव्यक्तिविषे लक्षणाकरैहै ॥ सालक्षणा लक्षितलक्षणा कहीजावैहै ॥ तहां द्विरेफपदकाशक्य
अर्थ दोरकारहैं ॥ तिनदोरकारोंका तामधुकरव्यक्तिकेसाथ कोई साक्षात्संबंधतौ संभवतानहीं ॥ किंतु
तिनदोरकारोंकातौ भ्रमरपदकेसाथ संबंधहै ॥ और ताभ्रमरपदका तामधुकरव्यक्तिकेसाथ संबंधहै ॥
इसप्रकार तिनदोरकारोंका स्वघटितपदवाच्यत्वरूप परंपरासंबंध तामधुकरव्यक्तिकेसाथहै ॥ इहां स्व
शब्दकरिकै ताद्विरेफपदकेशक्यअर्थरूप दोरकारोंका ग्रहणकरणा ॥ तिनदोरकारोंकरिकैघटितभ्रमरप
दहै ॥ ताभ्रमरपदकावाच्यत्व तामधुकरव्यक्तिविषेहै ॥ इसीशक्यअर्थकेपरंपरासंबंधकूं लक्षितलक्षणा क
हे हैं इति ॥ इहांकेएकशास्त्रकार ताशक्तिलक्षणातैंभिन्न तीसरीगौणीवृत्तिभी मानेहैं ॥ जैसे 'सिंहोदे
वदत्तः' अर्थयह ॥ यहदेवदत्तनामापुरुष सिंहहै॥इसवाक्यविषेसिंहपदकी देवदत्तनामापुरुषविषे गौणी
वृत्तिहै इति परन्तु यहगौणीवृत्ति लक्षणावृत्तितैंभिन्न सिद्धहोतीनहीं ॥ किंतु उक्तलक्षितलक्षणाकेही अं
तर्भूतहै ॥ तहां सिंहपदकासिंहपशु शक्यअर्थयह ॥ ताशक्यअर्थका क्रूरताशूरताकेसाथसंबंधहै ॥ और
ताक्रूरताशूरताका तादेवदत्तनामपुरुषकेसाथ संबंधहै ॥ इसप्रकार तासिंहपदकेशक्यअर्थका तादेवद
त्तपुरुषकेसाथ स्ववृत्तिक्रूरतादिमत्त्वरूप परंपरासंबंधहै॥ यातैं सागौणीवृत्ति लक्षितलक्षणाकेअंतर्भूतही
है इति ॥ इसप्रकार जिसपुरुषकूं पदोंके शक्तिवृत्तिका तथा लक्षणावृत्तिका ज्ञानहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं
ही ताउक्तवाक्यतैं शाब्दीप्रमा होवैहै ॥ तावृत्तिज्ञानतैंरहित अव्युत्पन्नपुरुषकूं तावाक्यतैंशाब्दीप्रमा हो
तीनहीं ॥ किंवा जैसे शक्तिलक्षणारूपवृत्तिकाज्ञान ताशब्दीप्रमाकीउत्पत्तिविषे कारणहोवैहै तैसे आ

कांक्षा १ योग्यता २ आसात्ति ३ तात्पर्य ४ इनचारोंकाज्ञानभी ताशब्दीयप्रमाकीउत्पत्तिविषे कारणहो वैहैं ॥ तहां आकांक्षा योग्यता इनदोनोंकास्वरूपतौ पूर्वनिरूपणकरिआयेहैं ॥ अब आसत्तिकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां 'शक्तिलक्षणाऽन्यतरसंबंधेनाव्यवधानेनपदजन्यापदार्थोपस्थितिः आसत्तिः' अर्थयह ॥ पदका आपणेअर्थविषे जोशक्तिरूपसंबंधहै वा लक्षणारूपसंबंधहै ॥ तासंबंधकरिकै जोव्यवधान तैंरहित पदजन्यपदार्थकीस्मृतिहै ताकानाम आसत्तिहै ॥ जैसे 'घटमानय' इसवाक्यकूंश्रवणकरिकै श्रोतापुरुषकूं घटपदतैं शक्तिरूपसंबंधकरिकै घटरूपअर्थकी स्मृतिहोवैहै॥और आनय इसपदतैं शक्तिरूपसंबंधकरिकै आनयनरूपाक्रियाकी स्मृतिहोवै ॥ तथा 'गंगायांघोषः' इसवाक्यकूंश्रवण करिकै श्रोतापुरुषकूं गंगापदतैं लक्षणारूपसंबंधकरिकै तीररूपअर्थकी स्मृतिहोवैहै ॥ और घोषपदतैं शक्तिरूपसंबंधकरिकै घोषरूपअर्थकी स्मृतिहोवैहै इसीकानाम आसत्तिहै इति ॥ अब तात्पर्यकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां सोतात्पर्य वक्तृतात्पर्य १ शब्दतात्पर्य २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां 'पुरुषाभिप्रायः वक्तृतात्पर्यम्' अर्थयह ॥ इसहमारेवचनतैं श्रोतापुरुषकूं इसअर्थकाबोधहोवो याप्रकारकी जावक्तापुरुषकी इच्छाविशेषहै ताकानाम वक्तृतात्पर्यहै तावक्तृतात्पर्यकाज्ञान शब्दबोधकेप्रति कारणहोतानहीं ॥ काहेतैं जिसपदार्थकेविद्यमानहुए जोकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ और जिसपदार्थकेनहींविद्यमानहुए जोकार्य घटकेप्रति कारणहोवैहैं॥सोपदार्थही तिसकार्यकेप्रति कारणहोवैहै॥जैसे कुलाल दंड चक्र आदिक घटकेप्रति कारणहोवैहैं ॥ जिसपदार्थकेनहींविद्यमानहुएभी जोकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ सोपदार्थ तिसकार्यकेप्रति कारणहोतानहीं॥ किंतु सोपदार्थ तिसकार्यकेप्रति अन्यथासिद्धहीहोवैहै ॥

जैसे रासभादिक ताघटकेप्रति अन्यथासिद्धहैं ॥ तैसे तावक्तृतात्पर्यज्ञानकेअभावहुएभी सोशाब्दबोध
देखणेविषेआवैहै ॥ इसहमारेवाक्यतैं श्रोतापुरुषकूं इसअर्थकाबोधहोवे इसप्रकारकीइच्छारूप ता
त्पर्य शुकपक्षीआदिकअव्युत्पन्नपुरुषोंका हैनहीं तौभीव्युत्पन्नश्रोतापुरुषकूं ताशुकपक्षीआदिकोंके
वाक्यतैं सोशाब्दबोध देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं तावक्तृतात्पर्यज्ञानकूं शाब्दबोधकेप्रति कारणतासंभवै
नहीं इति ॥ और 'तदर्थप्रतीतिजननयोग्यत्वं शब्दतात्पर्यं' अर्थयह ॥ तिसतिसशब्दविषे जो तिस
तिसवाक्यार्थबोधकेउत्पन्नकरणेकीयोग्यताहै ताकानाम शब्दतात्पर्य है ॥ इसशब्दतात्पर्यकाज्ञान शाब्द
बोधकेप्रति नियमतैंकारणहोवैहै तहां लौकिकशब्दोंकातात्पर्यतौ प्रकरणादिकोंकरिकै निश्चयहोवै
है ॥ जैसे 'सैंधवमानय' इसवाक्यविषेस्थित जोसैंधवपदहै ॥ सो लवण अश्व दोनोंकावाचकहोवै है ॥
तहां भोजनकालविषे तावाक्यकूंश्रवणकरिकै श्रोतापुरुषकूं ताभोजनप्रकरणकेवशतैं तासैंधवपदका ल
वणविषेही तात्पर्य निश्चयहोवैहै ॥ और गमनकालविषेही तावाक्यकूंश्रवणकरिकै ताश्रोतापुरुषकूं ताग
मनप्रकरणकेवशतैं तासैंधवपदका अश्वविषेहीतात्पर्य निश्चयहोवैहै ॥ जोकदाचित् तिसतात्पर्यज्ञानकूं
शाब्दबोधकाकारण नहींमानिये ॥ तौ एकहीसैंधवपदतैं कभीलवणकाबोध कभीअश्वकाबोध नहींहो
वैगा ॥ यातैं तिसतात्पर्यके अज्ञानकूं शाब्दबोधकेप्रति अवश्यकारणता मानीचाहिये इति ॥ और वैदि
कशब्दोंकातात्पर्यतौ षट्प्रकारकेलिंगोंकरिकैनिश्चयहोवैहै तेषट्लिंग शास्त्रविषे यहकहेहैं ॥ तहांश्लो
क ॥ 'उपक्रमोपसंहारावभ्यासोऽपूर्वताफलम् । अर्थवादोपपत्तीचलिंगंतात्पर्यनिर्णये' अर्थयह॥ उपक्रम
उपसंहार १ अभ्यास २ अपूर्वता ३ फल ४ अर्थवाद ५ उपपत्ति ६ यहषट्लिंग वैदिकशब्दोंकेतात्प

र्यकानिर्णय करावैहै इति ॥ अब यथाक्रमतैं इनषट्लिंगोंके लक्षण तथा उदाहरण कहेहैं ॥ तहां 'प्रकरणप्रतिपाद्यस्याद्वितीयवस्तुनो आद्यंतयोःप्रतिपादन उपक्रमोपसंहारौ' अर्थयह ॥ प्रकरणकरिकैप्रतिपादित जोब्रह्मरूपअद्वितीयवस्तुहै ॥ ताअद्वितीयवस्तुका जो ताप्रकरणके आदिविषे तथाअंतविषे प्रतिपादनहै ताकानाम उपक्रमउपसंहारहै ॥ तहां आदिविषेप्रतिपादनकानाम उपक्रमहै और अंतविषेप्रतिपादनकानाम उपसंहारहै ॥ जैसे सोमवेदकीछांदोग्यउपनिषद्के षष्ठअध्यायकेआदिविषे उद्दालकमुनिने श्वेतकेतुपुत्रकेप्रति यहवचनकह्याहै ॥ 'सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयम्' अर्थयह ॥ हेप्रियदर्शन।श्वेतकेतु यहदृश्यमानसर्वजगत् आपणीउत्पत्तितैं पूर्व सत्ब्रह्मरूपही होताभया ॥ सोसत्वस्तु एकअद्वितीयरूपही है ॥अर्थात्सजातीयविजातीयस्वगतभेदतैंरहितहै ॥ इसप्रकार ताषष्ठअध्यायकेआदिविषे जो अद्वितीयवस्तुका प्रतिपादनहै ताकानाम उपक्रमहै ॥ और तिसीषष्ठअध्यायकेअंतविषे यहकह्याहै 'एतदात्म्यमिदंसर्वं' अर्थयह ॥ यहदृश्यमानसर्वजगत् अद्वितीयब्रह्मरूपही है ॥ ताअद्वितीयब्रह्मतैंभिन्ननहीं है ॥ इसप्रकार ताषष्ठअध्यायकेअंतविषेजो ताअद्वितीयसत्ब्रह्मका प्रतिपादनहै ताकानाम उपसंहारहै यहउपक्रमउपसंहारदोनोंमिलिकै एकलिंग कह्याजावैहै इति ॥ १ ॥ और 'प्रकरणप्रतिपाद्यस्यपुनः पुनःप्रतिपादनं अभ्यासः' अर्थयह ॥ प्रकरणकेआदिअंतविषेप्रतिपादनकन्याजोवस्तुहै ॥ तावस्तुकाताप्रकरणकेमध्यविषे जो पुनः पुनःप्रतिपादनहै ताकानामअभ्यासहै ॥जैसे तिसषष्ठअध्यायविषेही 'तत्त्वमसिश्वेतकेतो' इसवाक्यकूं नववार पठनकरिकै ताअद्वितीयसत्वस्तुकाही पुनःपुनःप्रतिपादनकन्याहै इति ॥ २ ॥ और 'प्रकरणप्रतिपाद्यस्यमानांतराविषयता अपूर्वता' ॥

अर्थयह ॥ प्रकरणकरिकैप्रतिपादितजोवस्तुहै॥ तावस्तुकूं जोश्रुतिप्रमाणतैंभिन्नप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकाअ
विषयपणाहै ताकानाम अपूर्वताहै ॥ साअद्वितीयवस्तुकीअपूर्वता ताषष्ठअध्यायविषे 'यंवैसोम्यैतम
णिमानंनलिभालयसे' इत्यादिकवचनोंकरिकै प्रतिपादनकरीहै इति ॥ ३ ॥ और 'प्रकरणप्रतिपाद्य
स्यश्रूयमाणंतज्ज्ञानात्तत्प्राप्तिप्रयोजनफलम्' अर्थयह ॥ प्रकरणकरिकैप्रतिपादितजोवस्तुहै॥ तावस्तुके
ज्ञानतैं श्रुतिनेकथनकऱ्याजो तिसवस्तुकीप्राप्तिरूपप्रयोजनहै ताकानाम फलहै॥ जैसे तिसीषष्ठअध्या
यविषे यहकह्याहै ॥ 'आचार्यवान्पुरुषोवेद तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये' अर्थयह ॥ जि
सअधिकारीपुरुषतैं ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकऱ्याहै ॥ सोअधिकारीपुरुषही तत्त्वमसि
आदिकवाक्योंकरिकै प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकूं 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारतैं साक्षात्कारकरैहै ॥ और तिसब्रह्म
वेत्तापुरुषका तितनेकालपर्यंतही अवस्थान होवैहै जितनेकालपर्यंत प्रारब्धकर्मकेफलभोगकरिकै दे
हादिकबंधनतैं नहींमुक्तहोवैहै ॥ और भोगकरिकै ताप्रारब्धकर्मकेनिवृत्तहुए सोब्रह्मवेत्तापुरुष ब्रह्मरूप
हीहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिनें अद्वितीयब्रह्मकेज्ञानतैं अद्वितीयब्रह्मकीप्राप्तिरूपप्रयोजन कथनकऱ्याहै ॥
इसीकानाम फलहै इति ॥४॥ और 'प्रकरणप्रतिपाद्यस्यप्रशंसनं अर्थवादः' अर्थयह ॥ प्रकरणकरि
कैप्रतिपादितजोवस्तुहै तावस्तुका जोस्तुतिरूपप्रशंसनहै ताकानाम अर्थवादहै ॥ जैसे तिसीषष्ठअ
ध्यायविषे यहकह्याहै ॥ 'येनाश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातंविज्ञातम्' अर्थयह ॥ हेश्वेतकेतु जिसएक
वस्तुकेश्रवणकरिकै अश्रुतवस्तुभी श्रुतहोवैहै ॥ और जिसवस्तुकेमननकरिकै अमतवस्तुभी मननका
विषयहोवैहै ॥ और जिसएकवस्तुकेविज्ञानकरिकै अविज्ञानवस्तुभी विज्ञातहोवैहै ॥ सोएकवस्तु तुमनें

आपणेगुरुवोंसे पूछाहै वानहीं इति॥इसवचनकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मवस्तुका स्तुतिरूपप्रशंसनकऱ्याहै॥ इसीकानाम अर्थवादहै इति ॥ ५ ॥ और 'प्रकरणप्रतिपाद्यस्यदृष्टांतैःप्रतिपादनं उपपत्तिः' अर्थयह॥ प्रकरणकरिकैप्रतिपादितजोवस्तुहै ॥ तावस्तुका अनेकदृष्टांतोंकरिकै जोप्रतिपादनहै ताकानाम उप पत्तिहै ॥ जैसे तिसीछठेअध्यायविषे मृत्तिकासुवर्णादिकदृष्टांतोंकरिकै कारणतैंभिन्नकार्यकीसत्ताकानि षेधकरिकै ताअद्वितीयब्रह्मवस्तुका प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ इसीकानाम उपपत्तिहै इति ॥ ६ ॥ यहउद्दा लकश्वेतकेतुकासंवाद आत्मपुराणकेद्वादशअध्यायविषे हमने विस्तारतैं निरूपणकऱ्याहै॥सो तहांसेजा निलेणा॥ और जैसे छांदोग्यउपनिषदकेछठेअध्यायका उक्तषट्लिंगोंकरिकै अद्वितीयब्रह्मविषे तात्पर्य निश्चयहोवैहै तैसे सर्वउपनिषदोंका ताअद्वितीयब्रह्मविषेही तात्पर्यहै ॥ इसप्रकार उक्तषट्लिंगोंकरि कै सर्ववेदांतवाक्योंका जोअद्वितीयब्रह्मविषे तात्पर्यनिश्चयकरणाहै ताकानाम श्रवणहै॥अब प्रसंगतैं म ननका तथा निदिध्यासनका स्वरूप वर्णनकरैहैं॥तहां 'श्रुतस्यार्थस्योपपत्तिभिश्चिंतनं मननम्'।अर्थयह। ताश्रवणकरेहुएअद्वितीयब्रह्मरूपअर्थका जो श्रुतिअनुकूल अनुमानादिरूपयुक्तियोंकरिकै चिंतनहै ता कानाम मननहै इति॥ और 'विजातीयप्रत्ययतिरस्कारेणसजातीयप्रत्ययप्रवाहीकरणं निदिध्यासनम्'॥ अर्थयह॥ विजातीयवृत्तियोंका तिरस्कारकरिकै जो सजातीयवृत्तियोंका प्रवाहकरणाहै ताकानाम नि दिध्यासनहै ॥ तहां देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे जोआत्मबुद्धिहै तथाद्वैतप्रपंचकाजोदर्शनहै ताकाना म विजातीयवृत्तिहै ॥ और 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारकेवृत्तिकानाम सजातीयवृत्तिहै इति ॥ तहांश्रवण करिकैंतौ प्रमाणगतअसंभावना निवृत्तहोवैहै ॥ और मननकरिकै प्रमेयगतअसंभावना निवृत्तिहोवैहै॥

और निदिध्यासनकरिकै विपरीतभावना निवृत्तहोवैहै ॥ तहां देहादिकोंविषे जोआत्मबुद्धिहै ताका नाम विपरीतभावनाहै॥और प्रमाणगतअसंभावनाहै तथा प्रमेयगतअसंभावना इनदोनोंका आगेतृतीयपरिच्छेदविषे निरूपणकरेंगे ॥इसप्रकार श्रवणमनननिदिध्यासनकरिकै असंभावनाविपरीतभावनाके निवृत्तहुएतैंअनंतरशोधनकऱ्याहैतत्त्वंपदार्थजिसने ऐसेअधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यतैं 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारकाअपरोक्षज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ ताब्रह्मसाक्षत्कारतैं इसअधिकारीपुरुषकूं अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक परमानंदकीप्राप्तिरूपमोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार श्रवणादिकोंका ब्रह्मसाक्षात्काराद्वारा मोक्षविषेउपयोग होवैहै इति ॥ अब उक्तश्रवणादिकोंकेअधिकारीका वर्णनकरैं हैं ॥ विवेकादिकचतुष्टयसाधनकरिकैसंपन्न जोसंन्यासीहै तिसकूंही यहश्रवणादिकतीनों ब्रह्मसाक्षात्कारकेअंतरंगसाधनहैं ॥ तहांश्रुति ॥ 'आत्मावाऽरेद्रष्टव्यः श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासितव्यः' अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी!मुमुक्षुजननें यहआत्मा साक्षात्कारकरणेयोग्यहै ॥ अर्थात् मोक्षरूपइष्टकेप्राप्तिका यहआत्मसाक्षात्कारही साधनहै॥और ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै इसअधिकारीपुरुषनें श्रवणकरणा तथा मननकरणा तथानिदिध्यासनकरणा इति॥इसश्रुतिनैं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै श्रवण मनन निदिध्यासन इनतीनसाधनोंका विधानकऱ्याहै ॥और लौकिकवैदिककर्मोंकरिकैविक्षिप्तचित्तविषे तेश्रवणादिकसंभवतेनहीं॥तथा 'संन्यस्यश्रवणंकुर्यात्' इत्यादिकवचनोंनैंभी संन्यासपूर्वकही श्रवणादिकोंकी कर्त्तव्यता कथनकरीहै ॥ यातैं विवेकादिकचतुष्टयसाधनसंपन्नसंन्यासीकूंही आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै तेश्रवणादिक कर्त्तव्यहैं इति ॥ अब तेविवेकादिकचतुष्टयसाधन वर्णनकरैं हैं॥विवेक १वैराग्य २

शमादिषट्संपत् ३ मुमुक्षुता४ यहचतुष्टयसाधन कहेजावैं हैं॥ तहांआत्मातौनित्यहै ॥ औरआत्मातैं भिन्न ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वअनात्मवस्तु अनित्यहैं ॥याप्रकारकाजो श्रुतिस्मृतियुक्तियोंकरिकै विचारहैता कानाम विवेकहै ॥ तहां 'आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः' अजोनित्यःशाश्वतोऽयंपुराणः। 'अविनाशितुत द्विद्धियेनसर्वमिदंततम्। विनाशमव्ययस्यास्यनकश्चित्कर्तुमर्हति' इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंकरिकैतौआत्मा कानित्यपणा सिद्धहै॥ और 'तद्यथेहकर्मचितोलोकः क्षीयतेएवमेवामुत्रपुण्यचितोलोकःक्षीयते।अंतवं तइमेदेहानित्यस्योक्ताःशरीरिणः' इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंकरिकै तथा जोजोकार्यहोवैहै सोसोअनित्यही होवैहैजैसे घटादिकहैं इत्यादिकअनुमानरूपयुक्तियोंकरिकै अनात्मवस्तुवोंका अनित्यपणासिद्धहैइति इसप्रकारकोविवेककरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं सर्वअनात्मवस्तुवोंविषे वैराग्य उत्पन्नहोवैहै ॥तहांइसलो कविषे जितनेक विषयसुखकेसाधन स्रक्चंदनवनितादिकहैं ॥ तथा स्वर्गादिकपरलोकविषे जितनेक विषयसुखकेसाधन अमृतपानअप्सरादिकहैं॥तिनसर्वसाधनोंसहित सर्वविषयसुखोंविषे अनित्यत्वादिक दोषबुद्धिकरिकै जो श्वानवांतपायसकीन्यांई त्यागकीइच्छाहै ताकानाम वैराग्यहै ॥ तहांश्रुति॥'परी क्ष्यलोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणोनिर्वेदमायान्नास्त्यकृतःकृतेन' अर्थयह॥कर्मउपासनाकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य जे ब्रह्मलोकादिकलोकहैं तिनोंका अनित्यपणानिश्चयकरिकै तथा कर्मोंकरिकैमोक्षकीप्राप्तिनहींहोती याप्रकारकानिश्चयकरिकै ब्रह्मजिज्ञासुपुरुष तिनकर्मोंतैं तथाकर्मसाध्यलोकोंतैं वैराग्यकूंप्राप्तहोवैइति ॥ इसप्रकारकेवैराग्यकीउत्पत्तितैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषकूं शम १ दम २ उपरति ३ तितिक्षा ४ श्र द्धा ५ समाधान ६ यहषट्संपत प्राप्तहोवैहै॥इसषट्संपत्कास्वरूपआगेतृतीयपरिच्छेदविषे वर्णनकरैं

गे ॥ तहांश्रुति ॥ 'शांतोदांतउपरतस्तितिक्षुः समाहितोभूत्वात्मन्येवात्मानंपश्यति' अर्थयह ॥ ताशमा
दिकषट्संपत्युक्तहोइकै यहअधिकारीपुरुष आपणेमनविषे अहंब्रह्मास्मि याप्रकार आत्माकूंसाक्षात्का
रकरै इति ॥ तिसतैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीउत्कटइच्छारूपमुमुक्षुता प्राप्तहोवैहै ॥
इहां विवेक वैराग्य षट्संपत् मुमुक्षुता यहचतुष्टयसाधन समुच्चितहुए अधिकारीकाविशेषणहोवैहै ॥ इ
सप्रकार आचार्य मानैं हैं ॥ और अन्यकेएकग्रंथकारतौ केवल मुमुक्षुताकूंही अधिकारीकाविशेषणमा
नैं हैं ॥ और विवेकादिकोंकूं तामुमुक्षुताकासाधनमानैं हैं इति॥इसप्रकारकेविवेकादिकचतुष्टयसाधनों
करिकै संपन्नपुरुषकूंही संन्यासकाअधिकारहोवैहै ॥ ऐसाचतुष्टयसाधनसंपन्नसंन्यासीही ब्रह्मसाक्षात्का
रकीप्राप्तिवासतै ब्रह्मवेत्तागुरुकेशरणकूंप्राप्तहोइकै वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकूंकरै ॥ तहांश्रुति ॥ 'त
द्विज्ञानार्थंसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिःश्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठम्' अर्थयह॥सोचतुष्टयसाधनसंपन्नअधिकारी
पुरुष सर्वकर्मोंकासंन्यासकरिकै मोक्षकेप्राप्तिकासाधनरूपब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै हस्तविषेकिंचि
त्भेटलेकै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावै ॥ तहां शिष्यकेसंशयकीनिवृत्तिकरणेविषेउपयोगी जोशा
स्त्रकाज्ञानहै ॥ ताज्ञानवालेगुरुकूं श्रोत्रिय कहैहैं ॥ औरकरामलकवत् संशयविपरीतभावनातैंरहितजो
अखंडएकरसआनंदब्रह्मकासाक्षात्कारहै तासाक्षात्कारवालेगुरुकूं ब्रह्मनिष्ठ कहैहैं ॥ इनदोनोंविशेष
णोंवालेगुरुकेउपदेशतैंही शिष्यकूं आत्माकासाक्षात्कारहोवैहै इति॥ अब तासंन्यासकास्वरूप निरूप
णकरैं हैं ॥ तहां 'विहितानांकर्मणांविधिनापरित्यागः संन्यासः' अर्थयह ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं इस
अधिकारीपुरुषकेप्रति कर्त्तव्यतारूपकरिकैविधानकरेजे अग्निहोत्रसंध्योपासनादिककर्म हैं तिनसर्वक

मोंका जोविधिपूर्वक परित्यागहै ताकानाम संन्यासहै ।। सोकर्मसंन्यासकाविधि आत्मपुराणकेएकादश अध्यायविषे अतिविस्तारतैंनिरूपणकऱ्याहै ॥ तहां 'कर्मणांत्यागः संन्यासः' इतनामात्रही जोतासं न्यासकालक्षणकरते तौ अविहितकर्मोंके वा निषिद्धकर्मोंके त्यागकरणेहारेपुरुषविषेभी संन्यासीपण। प्राप्तहोता ॥ ताकेनिवृत्तकरणेवासतै तिनकर्मोंका विहित यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ और तालक्षणविषे 'विधिना' यहपद जोनहींकथनकरते तौ आलस्यादिकदोषहैं विहितकर्मोंकेपरित्याग करणेहारेपुरुषविषेभी सोसंन्यासीपण। प्राप्तहोता ॥ ताकेनिवृत्तकरणेवासतै विधिपूर्वककर्मोंकेत्यागकूंसं न्यासकह्याहै इति॥इसउक्तसंन्यासका वैराग्यही कारणहोवैहै॥अर्थात् वैराग्यवान्पुरुषकूंही सोसंन्यासक रणेयोग्यहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत्' अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष जिसदिनवि षे वैराग्यकूंप्राप्तहोवै तिसीदिनविषे सर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंकरै इति ॥ तहांस्मृति ॥ 'वैराग्यंपरमेतस्य मोक्षस्यपरमोऽवधिः' अर्थयह ॥ इससंन्यासका परवैराग्यही परमअवधिहै इति ॥ इसश्रुतिस्मृतिकरिकै सोवैराग्यही तासंन्यासकाहेतु सिद्धहोवैहै ॥ और सोसंन्यासभी तावैराग्यकीतारतम्यताकरिकै कुटीच क १ बहूदक २ हंस ३ परमहंस४ इनभेदोंकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ अब तावैराग्यकीन्यूनआधिक ताकेनिरूपणकरणेवासतै तावैराग्यकाविभाग वर्णनकरैंहैं॥तहां सोवैराग्य अपरवैराग्य १ परवैराग्य २ इनभेदोंकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै॥तिनदोनोंवैराग्योंविषे प्रथम अपरवैराग्यभी यतमान १ व्यतिरेक २ एकेंद्रिय ३ वशीकार ४ इनभेदोंकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां इससंसारविषे यहवस्तु सारहै और यहवस्तु असारहै याप्रकारका जोसारअसारकाविवेकहै ताकानाम यतमानवैराग्यहै ।१। और ।चि

त्तविषेस्थित जेरागद्वेषादिकदोषहैं तिनदोषोंकेमध्यविषे इतनेदोषतौ हमारे निवृत्तहुएहैं और इतनेदो
ष बाकीरहेहैं इसप्रकारकाविचारकरिकै तिनविद्यमानदोषोंकेनिवृत्तकरणेवासतै जोप्रयत्नहै ताकाना
म व्यतिरेकवैराग्यहै ।२। और मनविषे विषयोंकीइच्छाकेविद्यमानहुएभी जोइंद्रियोंकोनिरोधकाप्र
यत्नहै ताकानाम एकेंद्रियवैराग्यहै ।३। और इसलोकके तथापरलोकके जेविषयहैं तिनोंकूं ना
शवान्जानिकै जोतिनोंकेत्यागकीइच्छाहै ताकानाम वशीकारवैराग्यहै ॥ यहही वशीकारवैराग्यका
स्वरूप पतंजलिभगवान्नैं 'दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्यवशीकारसंज्ञावैराग्यम्' इससूत्रकरिकै कथन
कऱ्याहै इति ।४। और सोवशीकारवैराग्यभी मंद १ तीव्र २ तीव्रतर ३ इनभेदोंकरिकै तीनप्रका
रकाहोवैहै ॥ तहां पुत्र स्त्री धन इत्यादिकप्रियपदार्थोंके वियोगहुए इससंसारकूं धिक्कारहै याप्रकारकीबु
द्धिकरिकै जो तिनविषयोंकेत्यागकीइच्छाहै ताकानाम मंदवैराग्यहै । १ । और इसजन्मविषे हमारेकूं
पुत्रस्त्रीधनादिकपदार्थ मतप्राप्तहोवैं याप्रकारकीस्थिरबुद्धिकरिकै जो तिनविषयोंकेत्यागकीइच्छाहै
ताकानाम तीव्रवैराग्यहै ।२। और पुनरावृत्तिकरिकैयुक्त जेब्रह्मलोकपर्यंत लोकहैं । तेसर्वलोकह
मारेकूं मतप्राप्तहोवैं याप्रकारकीस्थिरबुद्धिकरिकै जो तिनसर्वविषयोंकेपरित्यागकीइच्छाहै ताकानाम
तीव्रतरवैराग्यहै ।३। तहां मंदवैराग्यकेप्राप्तहुए इसपुरुषकूं कोईप्रकारकेसंन्यासका अधिकारहोतान
हीं ॥ तहांस्मृति ॥ 'यदामनसिवैराग्यंजायतेसर्ववस्तुषु । तदैवसंन्यसेद्विद्वानन्यथापतितोभवेत्' अर्थय
ह ॥ जिसकालविषे इसपुरुषकेमनविषे सर्ववस्तुविषयकवैराग्य उत्पन्नहोवै ॥ तिसकालविषेही यहविवे
कीपुरुष सर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंकरै ॥ तावैराग्यतैंविना संन्यासकूंजरताहुआ यहपुरुष पतितहोवैहै इति ॥

और तीव्रवैराग्यकेप्राप्तहुए इसपुरुषकूं कुटीचक बहूदक इनदोसंन्यासों विषे अधिकारहोवैहै ॥ तहां जिसतीव्रवैराग्यवान्पुरुषकाशरीर तीर्थयात्राकरणेविषेअशक्तहोवै तिसकूंतौ कुटीचकसंन्यासविषेअधिकारहै ॥ और जिसकाशरीर तीर्थयात्राकरणेविषेअशक्तहोवै तिसकूं बहूदकसंन्यासविषे अधिकारहै ॥ और तीव्रतरवैराग्यकेप्राप्तहुए इसपुरुषकूं हंससंन्यासविषेअधिकारहोवैहै ॥ तहांकुटीचक बहूदक हंस इनतीनसंन्यासोंकास्वरूप तथा तिनोंकेआचार मनुपाराशरस्मृतिआदिकधर्मशास्त्रोंविषेप्रसिद्धहैं ॥ तथा आत्मपुराणविषेभी कथनकरेहैं इति ॥ और पूर्वउक्तसर्व वैराग्यतैंउत्कृष्टजोवैराग्यहै ताकानाम परवैराग्यहै ॥ इसपरवैराग्यकास्वरूप आगेवर्णनकरैंगे ॥ ऐसेपरवैराग्यकेप्राप्तहुए इसअधिकारीपुरुषकूं परमहंससंन्यासविषेअधिकार होवैहै ॥ सोपरमहंससंन्यासभी विविदिषासंन्यास १ विद्वत्संन्यास २ इन भेदोंकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां विवेकादिचतुष्टयसाधनसंपन्नपुरुषनैं तत्त्वज्ञानकीप्राप्तिवासतै कऱ्याजोसंन्यासहै ताकानाम विविदिषासंन्यासहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छंतःप्रव्रजंति' अर्थयह ॥ विरक्तपुरुषकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोयहआत्मारूपलोकहै । किसकेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहुए अधिकारीपुरुष संन्यासकूंकरैं हैं इहां यहतात्पर्य है ॥ आत्मलोक १ अनात्मलोक २ इनभेदोंकरिकै लोक दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां 'अथत्रयोवावलोकामनुष्यलोकः पितृलोकोदेवलोकः' इत्यादिकश्रुतिनैं सोअनात्मलोक मनुष्यलोक १ पितृलोक २ देवलोक ३ इनभेदोंकरिकै तीनप्रकारका कथनकऱ्याहै ॥ और 'अथयोहवाऽस्माल्लोकात्स्वंलोकमदृष्ट्वाप्रैति सएतमविदितोनभुनक्ति । आत्मानमेवलोकमुपासीत 'किंप्रजयाकरिष्यामोयेषांनोऽयमात्माऽयंलोकः' इत्यादिकश्रुतियोंनैं आत्मलोक कथनक

॥१०४॥ न्याहै ॥ यातैं ताउक्तश्रुतिविषे लोकशब्दकरिकै ताआत्मारूपलोककाग्रहणकरणा उचितनहै इति ॥ और
सोउक्तविविदिषासंन्यासभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ जन्मकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंकात्यागरूप होवै
है ॥ और दूसरा प्रैषमंत्रकेउच्चारणपूर्वक दंडधारणादिक आश्रमरूप होवैहै ॥ तहां काम्यकर्म तथाफल
कीइच्छापूर्वककरेहुए नित्यकर्म इसपुरुषकूं जन्मकीप्राप्तिकरेहैं ॥ तिनकर्मोंकाजोत्यागहै सो प्रथम वि
विदिषासंन्यास कह्याजावैहै ॥ ताकेविषेभी काम्यकर्मकातौ स्वरूपतैंहीपरित्याग विवक्षितहै॥ और नि
त्यकर्मोंका स्वरूपतैंपरित्याग विवक्षितनहीं है॥ किंतु तिननित्यकर्मोंकेफलकीइच्छामात्रकापरित्याग वि
वक्षितहै ॥ तहां ताप्रथमविविदिषासंन्यासविषे यहश्रुति प्रमाणहै ॥ 'नकर्मणानप्रजयानधनेनत्यागेनै
केऽमृतत्वमानशुः' अर्थयह ॥ पूर्वअधिकारीपुरुष काम्यकर्मोंकरिकै तथाफलकीइच्छापूर्वककरेहुएनि
त्यकर्मोंकरिकै मोक्षकेसाधनरूपब्रह्मसाक्षात्कारकूं नहींप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तथा पुत्रपौत्रादिकप्रजाकरिकै
तथागौसुवर्णादिकधनकरिकै ताब्रह्मसाक्षात्कारकूं नहींप्राप्तहोतेभयेहैं॥ किंतु तेपूर्वविरक्तपुरुष जन्मोंकी
प्राप्तिकरणेहारेकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकरिकैही ताब्रह्मसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ यातैं इदानींकाल
केअधिकारीपुरुषोंनैंभी ताकर्मकेत्यागरूपसंन्यासकरिकैही ताब्रह्मसाक्षात्कारकूंसंपादनकरणा इति ॥ य
हश्रुति ताप्रथमविविदिषासंन्यासकूंही कथनकरेहैं ॥ तहां जिनविरक्तगृहस्थादिकोंकूं किसीप्रबलनिमि
त्तकेवशतैं दंडधारणादिरूपआश्रमसंन्यासकेकरणेका प्रतिबंधहोवै ॥ तिनगृहस्थादिकोंकूं इसप्रथमविवि ॥१०४॥
दिषासंन्यासविषेही अधिकारहै ॥ इसविविदिषासंन्यासविषे स्त्रियोंकाभी अधिकारहै ॥ काहेतैं श्रुति
स्मृति इतिहास पुराण आदिकोंविषे जनक याज्ञवल्क्य अजातशत्रु कहोल मैत्रयी गार्गी इत्यादिकों

कूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तिनसर्वोंकूं ताउक्तविविदिषासंन्यासकरिकैही ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति भईहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ यज्ञोपवीतकाधारणरूप उपनयनसंस्कारवालेकूंही वेदकेअध्ययनकरणेविषे अधिकारहोवैहै ॥ और स्त्रियोंकूं ताउपनयनसंस्कारका अभावहै ॥ यातैं तिनास्त्रियोंकूं वेदकेअध्ययनकरणेका अधिकारहीनहीं है ॥ और 'स्त्रीशूद्रौनाधीयाताम्' यहश्रुतिभी स्त्रीशूद्रोंकूं वेदकेअध्ययनका निषेधकरैहै ॥ और तत्त्वमसिआदिकवैदिकवाक्यतैंही ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तामहावाक्यकेश्रवणकाअनधिकारीहोणेतैं तिनस्त्रियोंकूं तथाशूद्रोंकूं ताब्रह्मज्ञानविषे अधिकारहीनहींहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ 'स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिम्' इसवचनकरिकै श्रीभगवान्ने स्त्रीशूद्रोंकूंभी मोक्षकीप्राप्ति कथनकरीहै और 'यद्ब्रह्मविद्ययासर्वंभविष्यंतोमनुष्यामन्यंते' इसश्रुतिनैं मनुष्यमात्रकूंही ब्रह्मविद्याकरिकै सर्वात्मभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और सोब्रह्मज्ञान वेदांतशास्त्रकेश्रवणतैंविना संभवतानहीं ॥ यातैंयहव्यवस्थासिद्धहोवैहै वेदअध्ययनकेअधिकारी जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहतीनवर्णवालेपुरुषहैं तिनोंकूंतौ उपनिषद्रूपवेदांतकेश्रवणादिकोंतैंही ब्रह्मज्ञानकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और पूर्वअनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मकरिकै शुद्धहुआहैअंतःकरण जिनोंका ऐसेजे वेदअध्ययनकेअनधिकारी स्त्रीशूद्रादिकहैं तिनोंकूंतौ वेदांतअर्थकेप्रतिपादकपुराणादिकोंकेश्रवणतैंही ताब्रह्मज्ञानकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ इसीकारणतैं इतिहासपुराणोंविषे विदुरादिकशूद्रोंकूंभी ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ जभी शूद्रोंकूंभी ताब्रह्मज्ञानविषे अधिकारसिद्धभया ॥ तभी मैत्रेयीगार्गीआदिकब्राह्मणीस्त्रियोंकूं ताब्रह्मज्ञानविषेअधिकारहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ और कैएकग्रंथकारतौ यहव्यवस्था करैं

हैं ॥ बृहदारण्यकउपनिषदविषे याज्ञवल्क्यमुनिनै आपणीमैत्रेयीस्त्रीकेप्रति साक्षात्श्रुतिवचनोंकरिकैही ब्रह्मविद्याकाउपदेशकऱ्याहै ॥ और तिसीबृहदारण्यकउपनिषदविषे गार्गीकेसाथ याज्ञवल्क्यमुनिकासंवाद प्रसिद्धहै॥यातैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंकीस्त्रियोंकूं आत्मज्ञानविषेउपयोगीवेदांतश्रुतियोंकेश्रवणविषे अधिकारसिद्धहोवैहै॥और उपनयनसंस्कारकेअभावतैं तिनस्त्रियोंकूं वेदकेअध्ययनविषे अधिकारनहीं है ॥ प्रथम गुरुनेउच्चारणकरेहुएवेदवाक्योंका जोपश्चात्शिष्यकरिकैउच्चारणहै ताकानाम अध्ययनहै ॥ जोकदाचित् स्त्रियोंकूं वेदांतकेश्रवणकाअधिकार नहींहोता तौ याज्ञवल्क्यमुनि मैत्रेयीस्त्रीकेप्रति तथागार्गीकेप्रति साक्षात्वेदकीश्रुतियोंकरिकै ब्रह्मविद्याकाउपदेश न करता ॥ यह याज्ञवल्क्यमैत्रेयीकासंवाद आत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे स्पष्टकरिकैनिरूपणकऱ्याहै इति ॥ अब दूसरे आश्रमरूपविविदिषासंन्यासविषे श्रुतिस्मृतिप्रमाण कहैं हैं॥तहांश्रुति 'दंडमाच्छादनंकौपीनं परिगृहेच्छेषंविसृजेत्' अर्थयह दंडकूं तथाशीतनिवृत्तिअर्थ कंथाकूं तथाकौपीनकूं तथाकमंडलुआदिकोंकूं यहसंन्यासी ग्रहणकरै ॥ तिसतैंभिन्नसर्ववस्तुका परित्यागकरै इति ॥ तहांस्मृति ॥ 'संसारमेवनिःसारंदृष्ट्वासारदिदृक्षया । प्रव्रजंत्यकृतोद्वाहाःपरंवैराग्यमाश्रिताः' अर्थयह ॥ ब्रह्मलोकपर्यंतसर्वसंसारकूं निःसारदेखिकै परमात्मवस्तुरूपसारकेदेखणेकीइच्छाकरिकै परवैराग्यकूंप्राप्तहुए विरक्तपुरुष गृहस्थआश्रमतैंपूर्वही आश्रमरूपाविविदिषासंन्यासकूं धारणकरैं हैं ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचन ताआश्रमरूपविविदिषासंन्यासकूंकथनकरैं हैं इति॥तहां इतनेपर्यंत दोप्रकारकेविविदिषासंन्यासका निरूपणकऱ्या॥अब विद्वत्संन्यासका निरूपणकरैं हैं ॥ तहांब्रह्मचर्यआश्रमविषे वा गृहस्थआश्रमविषे वा वानप्रस्थआश्रमविषे वेदांतश्र

वणादिकोंकरिकै जिसपुरुषकूं ब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहुआहै ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषने चित्तकेविक्षेपकी निवृत्तिरूपजीवन्मुक्तिवासतै कऱ्याजोसंन्यासहै ताकानाम विद्वत्संन्यासहै ॥ यहविद्वत्संन्यासभी श्रुतिस्मृतिप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'एतमेवाविदित्वामुनिर्भवति । एतंवैतमात्मानंविदित्वाब्राह्मणाःपुत्रैषणायाश्चवित्तैषणायाश्चलोकैषणायाश्चव्युत्थायाथभिक्षाचर्यंचरंति। नदंडंनशिखांनयज्ञोपवीतंनाच्छादनंचरतिपरमहंसः' अर्थयह ॥ इसपरमात्माकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकार साक्षात्कारकरिकै विद्वान्पुरुष परमहंससंन्यासी होवैहै ॥ और इसआत्माकूँसाक्षात्कारकरिकै तत्त्ववेत्तापुरुष पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा इनतीनएषणावोंकापरित्यागकरिकै भिक्षावृत्तिकूं धारणकरैहै ॥ अर्थात् विद्वत्संन्यासकूंकरैहै॥और सोतत्त्ववेत्तापरमहंससंन्यासी दंडकूं तथाशिखाकूंतथायज्ञोपवीतकूं तथाआच्छादनकूं नहींधारणकरैहै इति । तहां स्मृति॥'यदातुविदितंतत्त्वंपरंब्रह्मसनातनम् ।तदैकदंडंसंगृह्यसोपवीतांशिखांत्यजेत् ॥१॥कंथाकौपीनवासास्तुदंडधृग्ध्यानतत्परः॥एकाकीरमतेनित्यंतंदेवाब्राह्मणंविदुः॥ २ ॥ कपालंवृक्षमूलानिकुचैलमसहायता ॥ समताचैवसर्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्यलक्षणम् ॥३॥' अर्थयह॥जिसकालविषेयहअधिकारीपुरुष परब्रह्मरूपसनातनतत्त्वकूं साक्षात्कारकरै ॥ तिसीकालविषेएकदंडकूंग्रहणकरिकै यज्ञोपवीतसहिताशिखाकूंपरित्यागकरै ॥ १ ॥ और जोविद्वान् पुरुष शीतकीनिवृत्तिवासतै केवल कंथाकौपीनवस्त्रोंकूं धारणकरै है ॥ तथादंडकूंधारणकरैहै ॥ तथा सर्वदा अंतरआत्माकेध्यानविषेतत्पररहैहै ॥ तथा एकाकीविचरैहैतिसविद्वान्पुरुषकूं देवता ब्रह्मवेत्तापरमहंससंन्यासीकहैं हैं ॥ और जिसविद्वान्पुरुषने भिक्षावासते मृत्तिकामयकपाल हस्तविषे धारणकऱ्याहै ॥ और वृक्षोंकेमूलविषे

जिसकानिवासहै ॥ और कुत्सितवस्त्रोंकूं जिसने धारणकर्‍याहै ॥ और जिसकूं कोईकीसहायतानहीं है ॥ तथा सर्वभूतोंविषे जिसकीसमबुद्धिहै ॥ यहसर्व मुक्तपरमहंसकेलक्षणहैं ॥ अर्थात् इनउक्तलक्षणों करिकै सोमुक्तपरमहंस जान्याजावैहै इति ॥ ३ ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचन ताविद्वत्संन्यासकूंकथन करें हैं ॥ इसविद्वत्संन्यासका जीवन्मुक्तिही फलहै ॥ इनविद्वत्परमहंससंन्यासियोंका चिह्न तथाआचार अव्यक्तहोवेहै ॥ याकारणतैंही श्रुतिस्मृतिवचनोंविषे कहांतौ तिनोंकूं दंडवस्त्रादिकोंकाअभाव कह्या है ॥ और कहां तिनोंकूं दंडवस्त्रादिकोंकाधारण कह्याहै ॥ सोतिनविद्वत्संन्यासियोंका अव्यक्तचिह्न तथाअव्यक्तआचार आत्मपुराणके एकादशअध्यायकेआदिविषे स्पष्टकरिकैकथनकर्‍याहै इति ॥ ॥

॥ शंका ॥ पूर्व विविदिषासंन्यासकूं ब्रह्मज्ञानकाहेतुकह्या सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं जनकअजातशत्रुआदिकोंकूं ताविविदिषासंन्यासकेअभावहुएभी सोब्रह्मज्ञान श्रुतिस्मृतिआदिकोंतैं जान्याजावैहै ॥ ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोविविदिषासंन्यास केवल इसजन्मकाही ताब्रह्मज्ञानकाकारणनहींहोवेहै ॥ किंतु जन्मांतरविषेकर्‍याहुआभीसोविविदिषासंन्यास ताब्रह्मज्ञानकाकारणहोवैहै॥यातैं तिनजनकादिकोंकूं इसजन्मविषे ताविविदिषासंन्यासकेअभावहुएभी जन्मांतरकेविविदिषासंन्यासतैंहीसोब्रह्मज्ञान प्राप्तहुआहै ॥ इसप्रकार ताब्रह्मज्ञानरूपकार्यतैं ताजन्मांतरकेसंन्यासरूपकारणका अनुमानहोवेहै॥ किंवा 'यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेत्' इसश्रुतिने वैराग्यवानपुरुषकेप्रति सर्वअंगोंसहितविविदिषासंन्यासकाविधानकरिकै पुनः तिसीप्रकरणविषे 'यद्यातुरःस्यान्मनसावाचासंन्यसेत्' ॥ अर्थयह ॥ जभी यहपुरुष व्याधिआदिकोंकरिकै अतिआतुरहोवै तभी दूसरेअंगोंतैंविनाही केवल मनकरिकै वा वा ॥१०६॥

णीकरिके तासंन्यासकूंकरे ॥ इसश्रुतिने आतुरसंन्यासकाविधानकर्‍याहै ॥ तहां मरणकेसमीपप्राप्त हुए ताआतुरसंन्यासीकूं तिसकालविषेश्रवणादिकोंकरिकै आत्मज्ञानकीप्राप्ति संभवतीनहीं ॥ यातैं सोआतुरसंन्यास तिसपुरुषकूं दूसरेजन्मविषे ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिकरैहै ॥ यहअवश्य अंगीकारकरणा होवैगा ॥ अन्यथा सोआतुरसंन्यासही व्यर्थहोवैगा ॥ याकारणतैंभी ताजन्मांतरकेविविदिषासंन्यास कूं आत्मज्ञानकीकारणता संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ यहआतुरसंन्यास पूर्वउक्तविविदिषासंन्यासतैं भिन्नहीसंन्यासहै ॥ और 'संन्यासाद्ब्रह्मणःस्थानम्' इसस्मृतिने ताआतुरसंन्यासका ब्रह्मलोककीप्राप्तिरूपफल कथनकर्‍याहै ॥ यातैं सोआतुरसंन्यास व्यर्थनहीं है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इसआतुरसंन्यासविषेभी विरक्तपुरुषकाही अधिकारहोवैहै ॥ और विविदिषासंन्यासकेप्रकरणविषेही इसआतुरसंन्यासका विधानकर्‍याहै ॥ यातैं यहआतुरसंन्यास पूर्वउक्तविविदिषासंन्यासतैंभिन्नसंन्यासनहीं है ॥ किंतु ताविविदिषासंन्यासकेअंतर्भूतहीहै ॥और 'संन्यासाद्ब्रह्मणः स्थानम्' यहस्मृतितौताआतुरसंन्यासके ब्रह्मलोककीप्राप्तिरूपअवांतरफलकूं कथनकरैहै ॥ ताकरिकै आत्मज्ञानरूपमुख्यफलकानिषेधहोइ सकैनहीं ॥ अथवा सोस्मृति कुटीचकादिरूपस्मार्तसंन्यासकेब्रह्मलोककीप्राप्तिरूपफलकूं कथनकरैहै॥ यातैं ताआतुरसंन्यासकाभी आत्मज्ञानकीप्राप्तिही मुख्यफलहै ॥ जन्मांतरकेसंन्यासतैंभी आत्मज्ञान कीप्राप्तिहोवैहै यहवार्त्ता श्रीसर्वज्ञमहामुनिने संक्षेपशारीरकग्रंथविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक 'जन्मांतरेषुयदिसाधनजातमासीत् संन्यासपूर्वकमिदंश्रवणादिरूपम् । विद्यामवाप्स्यतिजनःसकलोपियत्रतत्राश्रमादिषुवसन्ननिहारयामः' अर्थयह ॥ जोकदाचित् इनअधिकारीपुरुषोंके पूर्वजन्मोंविषे संन्यासपूर्वक

श्रवणादिकसाधन सिद्धहुएहोवैं तौ तेअधिकारीजन जिसतिसगृहस्थादिकआश्रमविषेवसतेहुए तिन पूर्वसाधनोंकेबलतैं तहांही ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं हम निवारणकरतेनहीं इति ॥ यातैं तिनजनकादिकोंकूं पूर्वजन्मकेविविदिषासंन्यासकरिकै आत्मज्ञानकीप्राप्ति संभवैहै यहसिद्धभयाइति ॥ तहांपूर्व 'आत्मावाऽरेद्रष्टव्यःश्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यः' इसश्रुतिवचनकरिकै अधिकारीपुरुषकेप्रति आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै श्रवणादिकोंकीकर्त्तव्यता कथनकरीथी ॥ ताकेविषे कैएकग्रंथकार तौ श्रवणादिकोंविषे विधि अंगीकारकरतेनहीं ॥ और कैएक विधिअंगीकारकरैं हैं ॥ तहांप्रथमपक्षतौ वाचस्पतिमिश्रकाहै ॥ और द्वितीयपक्ष विवर्णाचार्यकाहै ॥ तहां वाचस्पतिमिश्रका यहअभिप्रायहै विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्नजिज्ञासुजनने करेजेश्रवणादिकहैं तिनश्रवणादिकोंकूं आत्मज्ञानकी कारणता अन्वयव्यतिरेककरिकैही निश्चयहोवैहै ॥ यातैं श्रवणादिकोंविषे विधिसंभवतानहीं ॥ अप्राप्तअर्थविषेही विधिहोवैहै ॥ जैसे यागविषे स्वर्गकीकारणता प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै अप्राप्तहै ॥ यातैं ताकारणताकाबोधक 'स्वर्गकामोयजेत' यहवचन विधिरूपहै ॥ यद्यपि श्रवणादिकोंविषे ब्रह्मसाक्षात्कारकीकारणता ताउक्तश्रुतिप्रमाणतैंभिन्न किसीप्रमाणकरिकैप्राप्तनहीं है ॥ तथापि अतिसूक्ष्मताकरिकै दुर्विज्ञेय जेषड्जादिकस्वरहैं तिनस्वरोंकेसाक्षात्कारप्रति गांधर्वशास्त्रकेअभ्यासकूं अन्वयव्यतिरेककरिकै कारणता प्राप्तहै ॥ और तिनस्वरोंकीन्यांई ब्रह्मभी अतिसूक्ष्महोणेतैं दुर्विज्ञेयहै ॥ यातैं ताब्रह्मसाक्षात्कारकेप्रतिभी वेदांतशास्त्रकेश्रवणकूं कारणताताअन्वयव्यतिरेककरिकैप्राप्तहीहै ॥ ऐसेप्राप्तअर्थविषे विधिसंभवतानहीं ॥ और श्रोतव्य इसवचनविषे जो तव्य यहप्रत्यय प्रतीतहोवैहै ॥ ताप्रत्ययका

विधिअर्थनहीं है ॥ किंतु योग्यता अर्थहै ॥ अर्थात् आत्मा श्रणकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकार 'मंतव्यः निदिध्यासितव्यः' इनदोनोंवचनोंविषेभी विधिकाअभाव जानिलेणा इति ॥ और आचार्योंकातौ यहअभिप्रायहै ॥ 'आत्मावाऽरेद्रष्टव्यः श्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यः' इसश्रुतिविषे विवेकादिक चतुष्टयसाधनसंपन्नसंन्यासीकेप्रति आत्मसाक्षातकारकीप्राप्तिवासतै मनननिदिध्यासनरूपफलोपकारी अंगों सहित श्रवणनामाअंगी विधानकर्‍याहै॥ तहां जोपदार्थ साक्षात् फलकासाधनरूपकरिकै श्रवणकर्‍याजावैहै ॥ सोपदार्थ अंगी कह्याजावैहै ॥ तथाशेषी कह्याजावैहै ॥ तथा प्रधान कह्याजावैहै ॥ और ताअंगीकेसमीपही जोपदार्थ फलतैंविना कर्त्तव्यतारूपकरिकैश्रवणकर्‍याजावैहै सोपदार्थ अंग कह्याजावैहै ॥ तथा शेष कह्याजावैहै ॥ तथा सहकारी कह्याजावैहै ॥ तेअंगभी स्वरूपोपकारी १ फलोपकारी २ इनभेदोंकरिकै दोप्रकारकेहोवैं हैं ॥ तहां जेअंग अंगीकेस्वरूपकीउत्पत्तिविषे उपकार करैंहैं तेअंग स्वरूपोपकारी कहेजावैं हैं ॥ इनस्वरूपोपकारीअंगोंकूंही मीमांसक सन्निपत्योपकारीअंग कहैं हैं ॥ और जेअंग ताअंगीजन्यफलकी उत्पत्तिविषे उपकार करैं हैं तेअंग फलोपकारीअंग कहेजावैं हैं ॥ इनफलोपकारीअंगोंकूंही मीमांसक आरादुपकारीअंग कहैंहैं ॥ जैसे इहांप्रसंगविषे वेदांतशास्त्रकाश्रवण प्रमाणकाविचाररूपहोणेतैं साक्षात् ब्रह्मज्ञानरूपफलका साधनरूपकरिकै विधानकर्‍याहै ॥ यातैं सोश्रवणतौ अंगी कह्याजावैहै ॥ और ताश्रवणरूपअंगीकेसमीप विधानकरे जेविवेकादिकचारिसाधनहैं तिनोंका ज्ञानतैंभिन्नदूसराकोईफल तहां कथनकर्‍यानहीं ॥ यातैं तेविवेकादिकसाधन ताश्रवणरूपअंगीकेस्वरूपकी उत्पत्तिविषेउपकारीहोणेतैं स्वरूपोपकारीअंग कहेजावैं हैं ॥ और ताश्रव

णरूपअंगीकेसमीपही फलतैंविना मननिदिध्यासनकाविधानकऱ्याहै ॥ यातैं तेमननिदिध्यासनदोनों ताश्रवणरूपअंगीके ब्रह्मसाक्षात्काररूपफलकीउत्पत्तिविषे उपकारीहोणेतैं फलोपकारीअंग कहेजावैं हैं ॥ यातैं 'श्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यः' इसवचननैं मननिदिध्यासनरूपफलोपकारीअंगोंसहित श्रवणनामाअंगी विधानकरीताहै ॥ अर्थात् साधनचतुष्टयसंपन्नसंन्यासीनैं ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिवास्तै मननिदिध्यासनरूपअंगोंसहित श्रवणरूपअंगी अवश्यसंपादनकरणा इति ॥ तहां श्रवणकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीकारणता पूर्वउक्तअन्वयव्यतिरेककरिकैंही सिद्धहै ॥ यातैं ताश्रवणकाविधानकरणेहारा 'श्रोतव्यः' यहविधि अपूर्वविधिरूपनहीं है किंतु नियमविधिरूपहै अथवा परिसंख्याविधिरूपहै ॥ अब यथाक्रमतैं तिनअपूर्वादिकतीनविधियोंकेलक्षण कहेहैं ॥ तहां 'अप्राप्तार्थबोधकोविधिः अपूर्वविधिः' अर्थयह ॥ प्रमाणांतरकरिकैंअप्राप्तअर्थका कर्त्तव्यतारूपकरिकैंबोधनकरणेहाराजोविधि है ताकानाम अपूर्वविधिहै ॥ जैसे 'व्रीहीन्प्रोक्षति' यहवचन अपूर्वविधिहै ॥ तहां इसवचनतैंविना अन्यकिसीप्रमाणकरिकै सोव्रीहियोंकाप्रोक्षण प्राप्तहैनहीं ॥ यातैं अप्राप्तअर्थकोबाधकहोणेतैं सोविधि अपूर्वविधि कह्याजावैहै इति ॥ और 'पक्षप्राप्तस्याप्राप्तांशपूरकोविधिः नियमविधिः' अर्थयह ॥ पक्षविषेप्राप्तअर्थकेअप्राप्तअंशका पूरणकरणेहारा जोविधिहै ताकानाम नियमविधिहै ॥ जैसे 'व्रीहीनवहन्यात्' यहविधिहै ॥ तहां यज्ञविषेउपयोगीजेव्रीहिहैं तिनोंकेतुषोंकीनिवृत्ति दोउपायोंतैं होवैहै ॥ एकतौ अवघातरूप उपायहै ॥ और दूसरा नखविदलनरूप उपायहै ॥ तहां मुसलसेंव्रीहियोंकेकूटणेकानाम अवघातहै ॥ और नखोंसे तुषोंकीनिवृत्तिकरणेकानाम नखविदलनहै ॥ तहां जिसपक्षविषे ता

नखविदलनकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसपक्षविषे ताअवघातकीप्राप्ति हैनहीं ॥ तापक्षप्राप्तअवघातकेअप्राप्तअंशका 'व्रीहीनवहन्यात्' यहवाक्य पूरणकरैहै ॥ अर्थात् अवघातकरिकैही तिनव्रीहियोंकेतुषोंकीनिवृत्तिकरणी ॥ इसकहणेतैं तानखविदलनरूपउपायकीनिवृत्ति अर्थतासिद्धहोवैहै इति ॥ और 'उभयप्राप्तावितरव्यावृत्तिबोधकोविधिः परिसंख्याविधिः' अर्थयह ॥ एकहीकालविषे दोपदार्थोंकेप्राप्तहुए एकपदार्थकीव्यावृत्तिबोधकजोविधिहै ताकानाम परिसंख्याबिधिह ॥ जैसे 'इमामगृभ्णन्रशनामृतस्य' इसमंत्रकरिकै यज्ञविषे अश्व गर्दभ दोनोंकेरशनाग्रहणकीप्राप्तिहुए 'अश्वाभिधानीमादत्ते' इसवचननेतागर्दभरशनाकेग्रहणकीव्यावृत्ति विधानकरीहै ॥ कोईअश्वरशनाकेग्रहणकाविधान करतानहीं ॥ सोअश्वरशनाकाग्रहण उक्तमंत्रकरिकैहीप्राप्तहै ॥ यातैं 'अश्वाभिदानीमादत्ते' यहवचन परिसंख्याविधि कह्याजावैहै यद्यपि नियमविधिविषे तथा परिसंख्याविधिविषे इतरकीनिवृत्ति समानहै ॥ तथापि नियमविधिविषे इतरकीनिवृत्ति आर्थिकी होवैहै ॥ और परिसंख्याविधिविषे साइतरकीनिवृत्ति विधेयहोवैहै ॥ इतनी दोनोंविषे विशेषताहै इति ॥ तैसे प्रसंगविषेभी 'श्रोतव्यः' यहनियमविधिहै अर्थात् सोसाधनसंपन्नजिज्ञासु वेदांतशास्त्रकूंही श्रवणकरै ॥ अथवा सोजिज्ञासु वेदांतशास्त्रतैंअन्यशास्त्रकूं नहा श्रवणकरै याप्रकारका परिसंख्याविधिहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसस्थलविषे दोसाधनप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांही अप्राप्तअंशकापूरणकरणेहारा नियमविधि अंगीकारकऱ्याजावैहै ॥ यह पूर्वनियमविधिकालक्षण कथनकऱ्याथा ॥ सोलक्षण इहांश्रवणविधिविषे संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्म वेदांतशास्त्रतैंभिन्नकिसीप्रमाणकाविषयहैनहीं ॥ किंतु एकवेदांतशास्त्रकाहीविषयहै जोकदाचित ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे

वेदांतश्रवणतैंभिन्नभीकोईसाधनहोता॥ तौ ताश्रवणविषे ।नियमाविधि संभवता ॥ जोकहो ताब्रह्मसा
क्षात्कारकेप्रति एकपक्षविषे पुराणादिकोंकाश्रवणभी साधनरूपकरिकैप्राप्तहै ॥ ताकेनिवृत्तकरणेवासतै
वेदांतश्रवणविषे सोनियमविधि संभवैहै ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहा काहेतैं आत्मपुराणकूं
वेदांतमूलकताहोणेतैं तापुराणकेश्रवणकूं वेदांतश्रवणतैंभिन्नसाधनरूपता नहीं है ॥ किंतु सोअध्यात्मपु
राणकाश्रवणभी वेदांतकाहीश्रवणहै ॥ और जोकहो एकपक्षविषे रागीपुरुषोंकेगीतादिकोंकेश्रवणकी
प्राप्तिहोणेतैं ताकेनिवृत्तकरणेवासतै वेदांतश्रवणविषे सोनियमाविधि संभवैहै ॥ सोयहकहणाभी संभव
तानहीं ॥ जिसकारणतैं ताश्रवणविधितैंअन्यवचनोंकरिकैही मुमुक्षुजनकेप्रति तिनरागीगीतोंकेश्रवण
का निषेधकर्‍याहै ॥ और जोकहो एकपक्षविषे द्वैतशास्त्रकेश्रवणकीप्राप्तिहोणेतैं ताकेनिवृत्तकरणेवास
तै तावेदांतश्रवणविषे नियमविधिसंभवैहै ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताद्वैतशा
स्त्रकूं अद्वैतकाविरोधीपणाहोणेतैं ताअद्वितीयब्रह्मज्ञानकेप्रति साधनरूपताहीसंभवतीनहीं ॥ और ' न
चक्षुषापश्यतिनापिवाचा । यतोवाचोनिवर्त्तंते यन्मनसानमनुते' इत्यादिकश्रुतियोंनैं ब्रह्मविषेवेदांत
तैंभिन्न चक्षु वाक् मन आदिकोंकीअविषयता कथनकरीहै ॥ यातैं ताब्रह्मज्ञानविषे प्रत्यक्षादिकोंकूंभी
साधनरूपताप्राप्तहैनहीं ॥ यातैं तिनप्रत्यक्षादिकोंकेनिवृत्तकरणेवासतेभी तावेदांतश्रवणविषे नियमवि
धिसंभवतानहीं यातैं तावेदांतश्रवणविषे नियमविधिकहणा असंगतहै ॥ और उक्तरीतिसें ताअन्य ॥१०९॥
साधनकाअभावहोणेतैं ताकेनिवृत्तकरणेवासतै तावेदांतश्रवणविषे परिसंख्याविधिभी संभवतानहीं ॥
॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि वेदांतशास्त्रतैंभिन्न पुराणादिकोंकूं स्वतंत्र ब्रह्मसाक्षात्कारकीसाधनता

नहीं है ॥ तथापि वेदांशास्त्रकेश्रवणकीन्यांई पुराणादिकोंकाश्रवणभी स्वतंत्र ब्रह्मसाक्षात्कारकासाध
नहै याप्रकारकीभ्रांतिकरिकै तापुराणादिकोंकेश्रवणकूंभी ताब्रह्मज्ञानकेप्रति स्वतंत्रसाधनताकेप्राप्तहुए
ताकेनिवृत्तकरणेवासते तावेदांतश्रवणविषे नियमविधिकाअंगीकार तथा परिसंख्याविधिका अंगीकारसं
भवेहै ॥ अथवा ब्रह्मवेत्तागुरुतैंविना स्वतंत्र आपणीबुद्धिसे वेदांतविचारकेनिवृत्तकरणेवासतै ताश्रवण
विषे नियमाविधिका वा परिसंख्याविधिका अंगीकारहै॥अर्थात् इसअधिकारीपुरुषनैं श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठा
गुरुकेमुखतैंही वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरणा ॥ तागुरुतैंविना स्वतंत्र केवलआपणीबुद्धिसे तावेदांतशास्त्र
काविचार नहींकरणा ॥ यहवार्त्ता पूर्ववृद्धपुरुषोंनैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'नियमःपरिसंख्यावावि
ध्यर्थोहिभवेद्यतः॥ अनात्मादर्शनेनैवपरात्मानमुपास्महे' अर्थयह॥जिसकारणतैं 'श्रोतव्यः'इसविधिवा
क्यका नियम वा परिसंख्याही अर्थ है ॥ तिसकारणतैंहम अनात्मवस्तुवोंकेचिंतनकापरित्यागकरिकै
केवल परमात्माकाहीचिंतनकरेहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ 'श्रोतव्यः' इसविधिवाक्यनैं वेदांतश्रवणका
विधानकरताहै यहवार्त्तापूर्वआपनैं कथनकरी ॥ और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रविषे काम्य १ नित्य २
नैमित्तिक ३ प्रायश्चित्त ४ इनचारिप्रकारकेकर्मकाही विधानकऱ्याहै ॥ तिनचारोंविषे सोश्रवणका
म्यकर्मरूपहै॥अथवा नित्यकर्मरूपहै अथवा नैमित्तिककर्मरूपहै ॥१॥ अथवा प्रायश्चित्तरूपहै ॥ तहां
प्रथम काम्यपक्ष जोअंगीकारकरो सोसंभवतानहीं ॥ काहेतें 'स्वर्गकामोयजेत' इसवचनविषे जैसे
स्वर्गरूपफलकाउद्देशकरिकै यागकाविधानकऱ्याहै॥ तैसे कोईफलका उद्देशकरिकै ताश्रवणकाविधान
कऱ्यानहीं ॥ और जोकहो जैसे रात्रिसत्रनामायागकेविधायकवाक्यविषे फलकेअश्रवणहुएभी ब्रह्मज्ञा

नविषेपुरुषकीप्रवृत्तिकरावणेवासतै तायागकाफल कल्पनाकऱ्याजावैहै ॥ तैसे ताश्रवणकाभी ब्रह्मज्ञा
नरूपफल हम कल्पनाकरैंगे ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं गृहस्थादिकोंविषे ताब्रह्मज्ञान
रूपफलकेकामनाकाही असंभवहै ॥ उलटा तिनगृहस्थादिकोंविषे ताब्रह्मज्ञानतैं उद्वेगही देखणेविषेआ
वैहै ॥ याकारणतैंही तिनरागीपुरुषोंकेअभिप्रायकाबोध लोककह्याहै ॥ 'अपिवृंदावनेशून्येशृगाल
त्वंसइच्छति । नतुनिर्विषयंमोक्षंकदाचिदपिगौतम' अर्थयह ॥ हेगौतम! सोरागवान्पुरुष शून्यवृंदावनवि
षे शृगालहोणेकीतौइच्छाकरेहै ॥ परंतु निर्विषयमोक्षकी सोरागवान्पुरुष कदाचित्भी इच्छाकरतान
हीं इति ॥ किंवा 'वेदानिमंलोकममुंचपरित्यज्यात्मानमन्विच्छेत्' इत्यादिकश्रुतितैं साधनचतुष्टय
संपन्न जिज्ञासुसंन्यासीकूंही आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं श्रवणादिकोंकी कर्त्तव्यता निश्चयहोवैहै ॥ यातैंगृह
स्थादिकोंकूं तिनश्रवणादिकोंविषे अधिकारहीनहीं है ॥ जोकहो तिनसंन्यासियोंकूंही सोश्रवण काम्य
कर्मरूपहोवो ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् संन्यासीकेप्रति सोश्रवण काम्य
कर्मरूपहोवै ॥ तौ काम्यकर्मकेनकरणेतैं प्रत्यवायकीप्राप्तिहोतीनहा॥ यातैं ताश्रवणके नकरणेतैं तासं
न्यासीकूं प्रत्यवायकीप्राप्ति नहींहोणीचाहिये ॥ और वेदांतश्रवणकेपरित्यागतैं तासंन्यासीकूं प्रत्यवाय
कीप्राप्ति श्रुतिस्मृतिविषेकथनकरीहै ॥ यातैं तासंन्यासीकेप्रति ताश्रवणकूं काम्यकर्मरूपता संभवती
नहीं ॥ और सोश्रवण नित्यकर्मरूपहै यहद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरो सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं
'यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहुयात्' इसवचननैं जैसे गृहस्थकेप्रति जीवनकालपर्यंत अग्निहोत्ररूपनित्यकर्म
का विधानकऱ्याहै ॥ तैसेइसअधिकारीपुरुषकेप्रतिजीवनकालपर्यंत ताश्रवणका कोईवचननैं विधान

कन्यानहीं यातैं ताश्रवणविषे नित्यकर्मरूपताभी संभवतीनहीं ॥ और सोश्रवण नैमित्तिककर्मरूपहै यहतृतीयपक्ष जोअंगीकारकरो सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं जैसे अग्निहोत्रीपुरुषकेगृहकेदाहहुए ता निमित्तकूंलैके वेदनैं इष्टिकाविधानकन्याहै ॥ तैसे इहां कोईनिमित्त कथनकन्यानहीं ॥ जिसनिमित्त कूंलैके सोश्रवण नैमित्तकर्मरूपहोवै ॥ और सोश्रवण प्रायश्चित्तकर्मरूपहै यहचतुर्थपक्ष जोअंगीकारकरो सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं 'तरतीब्रह्महत्यांयोऽश्वमेधेनयजते' इसवचननैं जैसेब्रह्महत्यारूप पापकेनिवृत्तकरणेवासतैं अश्वमेधयज्ञरूपप्रायाश्चित्तकाविधानकन्याहै ॥ तैसे कोईश्रुतिवचननैं किसी पापकीनिवृत्तिवासतैं ताश्रवणकाविधानकन्यानहीं ॥ यातैं ताश्रवणकूं प्रायश्चित्तरूपताभी संभवतीनहीं ॥ यातैं कोईप्रकारकरिकैभी तावेदांतश्रवणविषे विधिसंभवतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए अब विविदिषासंन्यासीकेप्रतितौ ताश्रवणकूं नित्यकर्मरूपता और गृहस्थादिकोंकेप्रति ताश्रवणकूं काम्य कर्मरूपता वर्णनकरेहैं॥तहां जैसे गृहस्थपुरुषकूं अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्मोंकेनकरणेतैं श्रुति स्मृतिनैं प्रत्यवायकीप्राप्ति कथन करीहै ॥ तथा 'यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहुयात्' इत्यादिकश्रुतियोंनैं जीवत्कालपर्यंत तिनअग्निहोत्रादिक नित्यकर्मोंकाविधानकन्याहै॥ तैसे विविदिषासंन्यासीकेप्रतिभी वेदांतश्रवणादिकोंकेनकरणेतैं प्रत्यवायकीप्राप्ति तथाजीवत्कालपर्यंत तिनश्रवणादिकोंकीकर्त्तव्यता श्रुति स्मृतिनैं कथनकरीहै ॥ यातैं जैसे गृहस्थकेप्रति ते अग्निहोत्रसंध्योपासनादिक नित्यकर्मरूपहैं ॥ तैसे विविदिषासंन्यासीकेप्रतिभी तेवेदांतश्रवणादिक नित्यकर्मरूपहै ॥ तहांश्रुति 'अरुन्मुखान्यतीन्शालावृकेभ्यःप्रायच्छं' अर्थयह ॥ वेदांतविचारतैंरहितसंन्यासियोंकूं हननकरिकै मैं इंद्र श्वानोंकेतांइ देताभयाहूं

इति॥इसश्रुतिकाअर्थ आत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे इंद्रप्रतर्दनकेसंवादविषे विस्तारतैंकथनकऱ्या है ॥ तहांस्मृति 'नित्यंकर्मपरित्यज्यवेदांतश्रवणंविना। वर्त्तमानस्तुसंन्यासीपतत्येवनसंशयः' अर्थयह॥ अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्मोंकापरित्यागकरिकै जोविविदिषासंन्यासी वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकूं नकर्त्ताहुआ वर्त्तमानहोवैहै ॥ सोसंन्यासी पतितहीहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंनैं ताविविदिषासंन्यासीकूं वेदांतश्रवणकेनकरणेतैं प्रत्यवायकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और 'आसुप्तेरामृतेः कालं नयेद्वेदांतचिंतया । दद्यान्नावसरंकिंचित्कामादीनांमनागपि' अर्थयह ॥ यहविविदिषासंन्यासी जाग्रततैंलैकै सुषुप्तिपर्यंततथाब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपगमनतैंलैकेमरणपर्यंतकालकूंवेदांतशास्त्रकेचिंतनकरिकै व्यतीतकरै ॥ आपणेचित्तविषे कामक्रोधादिकविकारोंकेप्राप्तिकाअवसरकिंचित्मात्रभीनहींदेवै इति ॥ इसस्मृतिनैं तथा इसस्मृतिकामूलभूतश्रुतिनैं ताविविदिषासंन्यासीकेप्रति जीवत्कालपर्यंत वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकीकर्त्तव्यता विधानकरीहै॥ यातैं तासंन्यासीके प्रति श्रवणादिकोंकूं नित्यकर्मरूपता ही सिद्धहोवैहै ॥ किंवा ताउक्तश्रुतिस्मृतिकेबलतैं ताश्रवणकूं संन्यासीकेप्रति नित्यकर्मरूपता केवल हमोंनैंही नहींअंगीकारकरीथी ॥ किंतु पूर्वआचार्योंनैंभी अंगीकारकरीहै ॥ तहांश्लोक 'त्वंपदार्थविवेकायसंन्यासःसर्वकर्मणाम्।श्रुत्याभिधीयतेयस्मात्तत्त्यागीपतितोभवेत्' अर्थयह॥तत्त्वमसिइसमहावाक्यविषेस्थितजो त्वंपदहै तात्त्वंपदकावाच्यअर्थ जोअंतःकरणविशिष्टचैतन्यहै ॥ ताकेविषे अंतःकरणकापरित्यागकरिकै लक्ष्यअर्थरूपजो प्रत्यकचैतन्यहैताप्रत्यकचैतन्यकाजोब्रह्मरूपकरिकैज्ञानहैयाकानामत्वंपदार्थविवेकहै ॥ तात्त्वंपदार्थकेविवेकवासतैही श्रुतिनै अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकसर्वकर्मों

कासंन्यास विधानकऱ्याहै ॥ और जोपुरुष तासंन्यासकूंधारणकरिक तिसत्वंपदार्थकेविवेककूंनहींकरे है सोसंन्यासी पतितहोवैहै इति ॥ इसवचनकरिकै श्रीवार्त्तिककारसुरेश्वराचार्यनैं श्रवणादिकोंतैंर हित संन्यासीकूं पतितपणा कथनकऱ्याहै ॥ इसीप्रकार सर्वज्ञमहामुनिनैंभी संक्षेपशारीरकग्रंथविषेकह्या है ॥ तहांश्लोक ॥ 'कारकस्यकरणेनतत्क्षणाद्भिक्षुरेषपतितोभवेद्यथा ॥ व्यंजकस्यपरिवर्जनात्तथासद्यएव पतितोभवेदसौ' अर्थयह ॥ जैसे यहसंन्यासी यज्ञादिककर्मोंकेकरणेकरिकै शीघ्रही पतितहोवैहै ॥ तै सेवेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकेनहींकरणेतैंभी शीघ्रही पतितहोवैहै इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ विविदिषासंन्यासीकेप्रति तावेदांतश्रवणकूं नित्यकर्मरूपताहोणेतैं ताश्रवणविषे 'श्रोतव्यः' यहउक्तानित्य विधि संभवैहै इति ॥ औरगृहस्थादिकोंकेप्रतितेवेदांतशास्त्रकेश्रवणादिक काम्यकर्मरूपहैं ॥ तहांजि सकर्मके करणेकरिकैतौ फलकीप्राप्तिहोवै ॥ और नकरणेकरिकै प्रत्यवायकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ ताकर्म कूं काम्यकर्मकहेहैं ॥ जैसे जिसपुरुषकूं स्वर्गकेप्राप्तिकीइच्छाहोवैहै ॥सोपुरुषतौ ज्योतिष्टोमयागकूंकरे है ॥ ताकरिकै तिसपुरुषकूं स्वर्गरूपफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जिसपुरुषकूं तास्वर्गकेप्राप्तिकीइच्छान हींहोवैहै सोपुरुष ताज्योतिष्टोमयागकूं करतानहीं ॥ परंतुताज्योतिष्टोमयागकेनकरणेकरिकै तिसपु रुषकूं कोईप्रत्यवायकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ याकारणतैं सोज्योतिष्टोमयाग काम्यकर्म कह्याजावैहै ॥ तैसे जिसगृहस्थकूं ब्रह्मज्ञानकीइच्छाहोवै सोगृहस्थतौ वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकूंकरै ॥ तिनश्रवणादिकों करिकै तागृहस्थकूं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति होवैहै और जिसगृहस्थकूं ताब्रह्मज्ञानकीइच्छानहींहोवै सोगृह स्थ तिनश्रवणादिकोंकूंनहींकरै ॥ परंतु तिनश्रवणादिकोंकेनहींकरणेतैं तागृहस्थकूं कोईप्रत्यवायकीप्रा

तिहोतीनहीं ॥ यातैं तिनगृहस्थादिकोंकेप्रति तिनश्रवणादिकोंकूं काम्यकर्मरूपताही सिद्धहोवैहै ॥
॥ शंका ॥ ॥ विवेकादिकचतुष्टयसाधनसंपन्नपुरुषकूंही ब्रह्मजिज्ञासा होवैहै ॥ ब्रह्मकेजानणेकीइच्छा
कानाम ब्रह्मजिज्ञासाहै ॥ और गृहस्थादिकोंविषे तेचतुष्टयसाधन संभवतेनहीं॥ यातैं ताब्रह्मजिज्ञासा
केअभावतैं तिनगृहस्थादिकोंकेप्रति ताश्रवणकूं काम्यकर्मरूपताभीसंभवतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥
अत्यंतबहिर्मुखगृहस्थादिकोंकूं तासाधनसंपत्तिकेअभावतैं ताब्रह्मजिज्ञासाकेअभावहुए भी॥जेकैएकगृह
स्थपुरुष परमेश्वरकरिकैअनुगृहीतहैं ॥ तथा फलकीइच्छातैंरहितहोइकै नित्यनैमित्तिककर्मकूंकरेहैं ॥
याकारणतैंही शुद्धअंतःकरणवालेहैं ॥ तथा गुरुईश्वरविषे श्रद्धाभक्तिवालेहैं ॥ ऐसेउत्तमगृहस्थोंकूं ता
विवेकादिकसाधनसंपत्तिकारिकै साब्रह्मजिज्ञासा संभवैहै॥ और कोईकप्रतिबंधकेवशतैं तिनगृहस्थोंकूंसं
न्यासआश्रमकीअप्राप्तिहुएभी वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंविषे तिनोंकीप्रवृत्ति संभवैहै ॥ ऐसेसाधनसंप
न्नगृहस्थादिकोंकेप्रतिही सोश्रवणविधि काम्यरूपहै ॥ जोकदाचित् तिनगृहस्थादिकोंकी ब्रह्मजिज्ञासा
पूर्वक श्रवणादिकोंविषेप्रवृत्ति नहींमानिये ॥ तौ गृहस्थाश्रमादिकोंविषे उत्पन्नभयाहै ब्रह्मसाक्षात्कारजि
नोंकूं ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंकेप्रति जीवन्मुक्तिवास्तै श्रुतिस्मृतिनैं जोविद्वत्संन्यासका विधानकर्‍याहै सो
व्यर्थहोवैगा ॥ आर जोकहो विविदिषासंन्यासतैंभिन्न कोईविद्वत्संन्यासहैनहीं ॥ सो यहकहणा संभवता ॥११२॥
नहीं ॥ जिसकारणतैं पूर्व श्रुतिस्मृतिप्रमाणकेबलतैं ताविविदिषासंन्यासतैंभिन्न॥ विद्वत्संन्यासका निरू
पणकारिआयेहैं ॥ किंवा अधिकारी फल साधन इनतीनोंकेभेदतैंभी सोविद्वत्संन्यास ताविविदिषासं
न्यासतैं भिन्नहीसिद्धहोवैहै ॥ तहां विविदिषासंन्यासविषेतो जिज्ञासु अधिकारीहोवै है और विद्वत्सं

न्यासविषे तत्त्ववेत्ता अधिकारीहोवैहै ॥ और विविदिषासंन्यासकातौ तत्त्वज्ञान फलहोवैहै ॥ और वि
द्वत्संन्यासका जीवन्मुक्ति फलहोवैहै ॥ और विविदिषासंन्यासीनैंतौ तिस तत्त्वज्ञानरूपफलवासतै श्रव
णादिकसाधन अनुष्ठानकरितेहैं और विद्वत्संन्यासीनैं ताजीवन्मुक्तिरूपफलवासतै मनोनाशवासना
क्षयादिकसाधन अनुष्ठानकरितेहैं ॥ इसप्रकार अधिकारी फल साधन इनतीनोंकाभेदहोणेतैं सोविद्व
त्संन्यास ताविविदिषासंन्यासतैं भिन्नहीमान्याचाहिये ॥ सोविद्वत्संन्यासतभीसार्थकहोवै ॥ जभी तिन
गृहस्थादिकोंकूं वेदांतश्रवणविषे अधिकार तथाश्रवणादिकोंकरिकै ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति अंगीकारकरियै ॥
यातैं तिनगृहस्थादिकोंकूं तेश्रवणादिक काम्यकर्मरूपहैं यहउक्तअर्थ संभवैहै ॥ किंवा तिनगृहस्थादि
कोंकूं वेदांतशास्त्रकेश्रवणतैं महानपुण्यकीउत्पत्तिभी शास्त्रनैं कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ' दिनेदिनेतु
वेदांतश्रवणाद्भक्तिसंयुतात । गुरुशुश्रूषयालब्धात्कृच्छ्राशीतिफलंलभेत्' अर्थयह ब्रह्मवेत्तागुरुकीसेवाक
रिकैप्राप्तभया तथागुरुईश्वरकीभक्तिकरिकैयुक्त ऐसाजो दिनदिनाविषे वेदांतशास्त्रकाश्रवणहै ॥ तिसवेदां
तश्रवणतैं यहअधिकारीपुरुष असीकृच्छ्रकेफलकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इहां यहतात्पर्यहै ॥ यद्यपि वेदांत
श्रवणादिकोंकेनकरणेतैं गृहस्थादिकोंकूं प्रत्यवायकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ तथापि आत्मज्ञानतैंरहितपुरुषकूं
महानहानिकीप्राप्ति श्रुतिस्मृतिनैं कथनकरीहै ॥ यातैं तिनगृहस्थादिकोंनैंभी वेदांतश्रवणादिकोंकरिकै
ताआत्मज्ञानकूं अवश्यकरिकै संपादनकरणा ॥ तहांश्रुति ' नचेदिहावेदिर्महतीविनाष्टिः ' अर्थयह ॥
अधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइकै जभी यहपुरुष आत्माकूंनहींजानैहै ॥ तभी इसपुरुषकी महानहानिहो
वैहै इति ॥ अन्यश्रुति ' योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वाऽस्माँल्लोकात्प्रैतिसकृपणः । अथएतदक्षरंगा

र्गिविदित्वाऽस्माँल्लोकात्प्रैतिसब्राह्मणः' अर्थयह ॥ हेगार्गी ! जोपुरुष इसअक्षरपरमात्माकूंनजानिकैंइ
सलोकतैंलोकांतरविषेगमनकरेहै ॥ सोअज्ञानीपुरुष कृपणजानणा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकविषे प्रा
प्तहुएधनकेउपभोगतैंरहितपुरुषकूं कृपणकहेहैं ॥ तैसे नित्यप्राप्तआत्मरूपधनके साक्षात्काररूपउपभोग
तैं रहित अज्ञानीपुरुषभी कृपणहीहै ॥ और हेगार्गी ! जोपुरुष इसअक्षरपरमात्माकूंसाक्षात्कारकरिके इ
सशरीरतैं मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुष ब्राह्मणजानणा इति ॥ अन्यश्रुति ॥ 'योहवाअस्माँ
ल्लोकात्स्वंलोकमदृष्ट्वाप्रैतिसएतमविदितोनभुनक्ति' अर्थयह ॥ जोपुरुष इसआत्मरूपलोककूं अहंब्रह्मा
स्मियाप्रकारनजानिकै इसस्थूलशरीररूपलोकतैंमरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसअज्ञानीपुरुषकूं सोआत्मरूप
लोक अज्ञातहुआ शोकमोहादिकदोषोंकीनिवृत्तिकरिकै पालनकरतानहीं इति ॥ तहांस्मृति ॥ 'अन्य
थासंतमात्मानयोऽन्यथाप्रतिपद्यते । किंतेननकृतंपापंचौरेणात्मापहारिणा' अर्थयह ॥ जोपुरुष अकर्त्ता
अभोक्ताआत्माकूं कर्त्ताभोक्ता जानैं है ॥ तिसआत्मापहारीचौरपुरुषनैं कौनपापकर्म नहींकऱ्या ॥ किं
तु सर्वपापकर्मकऱ्ये इति ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतियोंनैं आत्मज्ञानतैंरहितपुरुषोंकी निंदाकरीहै ॥
यातैं तिनगृहस्थादिकोंनेभी श्रवणादिकोंकरिकै ताआत्मज्ञानकूं अवश्यसंपादनकरणा इति ॥ इहां कैए
कआचार्यतौ ऐसेकहेहैं ॥ विवेकादिकसाधनचतुष्टयसंपन्नसंन्यासियोंकूंही वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकों
विषे अधिकारहै ॥ गृहस्थादिकोंकूं तिनश्रवणादिकोंविषे अधिकारही नहीं है ॥ और श्रुतियोंविषे याज्ञ
वल्क्यजनकादिकोंके तत्त्वज्ञानकाप्रतिपादक जेउपाख्यानहैं ॥ तिनउपाख्यानोंका ब्रह्मात्माकेबोधन
विषेही तात्पर्यहै ॥ आपणेअर्थविषे तात्पर्यनहीं है ॥ इसमतवालेआचार्योंका यहअभिप्रायहै ॥ श्रुतियों

नैं तथाआचार्योंनैं संन्यासआश्रमकूंही ताश्रवणकाअंगरूप कह्याहै ॥ और अंगतैंविना अंगीकीसिद्धि होतीनहीं ॥ यातैं साधनसंपन्नसंन्यासियोंकूंही श्रवणविषे अधिकारहै ॥ गृहस्थादिकोंकूंनहीं ॥ तहां 'ब्रह्मसंस्थोऽमृततत्वमेति' अर्थयह ॥ लौकिकवैदिकसर्वव्यापारोंतैंरहितहोइकै केवल ब्रह्मकेचिंतनपराय ण जोपुरुषहै ताकानाम ब्रह्मसंस्थहै ॥ ऐसाब्रह्मसंस्थसंन्यासीही मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिकेव्या ख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंनैं संन्यासियोंकूंही ब्रह्मनिष्ठाविषेअधिकार सिद्धकर्‌याहै ॥ और 'त्यक्ताशेष क्रियस्यैवसंसारंप्रजिहासतः ।जिज्ञासोरेवचैकात्म्यंत्रय्यंतेष्वधिकारिता' अर्थयह॥त्यागकरीहै लौकिकवै दिकसर्वक्रियाजिसनैं ॥ तथा सर्वसंसारकूं दुःखरूपजानिकैताकेपरित्यागकीहैइच्छाजिसकूं ॥ ऐसाजो जिज्ञासुहै तिसजिज्ञासुकूंही वेदांतशास्त्रकेश्रवणविषे अधिकारीपणाहै ॥ तथा तिनश्रवणादिकोंकरि कै आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ इसवचनकरिकै श्रीवार्तिककार सुरेश्वराचार्यनैंभी तिनसंन्यासियों कूंही श्रवणविषेअधिकार सिद्धकर्‌याहै॥ और 'अंतःसंन्यस्यकर्माणिसर्वाण्यात्मावबोधतःहित्वाऽविद्यां धियैवेयात्तद्विष्णोःपरमंपदं॥वेदानिमंलोकममुंचपरित्यज्यात्मानमन्विच्छ' अर्थयह ॥सर्वकर्मोंकासंन्या सकरिकै आत्मज्ञानतैं अविद्याकापरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकरिकैही मोक्षरूप विष्णुकेपरमपदकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और वेदप्रतिपादित अग्निहोत्रादिककर्मोंकूं तथा इसलोककूं तथा परलो ककूं परित्यागकरिकै तू आत्माकेप्राप्तिकीइच्छाकर॥अर्थात् आत्मज्ञानवांसतै श्रवणादिकोंकूंकर इति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंतैंभी तिनसंन्यासियोंकूंही श्रवणादिकोंविषेअधिकार सिद्धहोवैहै ॥ यातैं संन्यासियों कप्रतितो सोश्रवण नित्यकर्मरूपहै ॥ और गृहस्थादिकोंकेप्रति सोश्रवण काम्यकर्मरूपहै ॥ यहपूर्वउक्त

व्यवस्था संभवतीनहीं ॥ किंतु जैसे गृहस्थकेप्रति अग्निहोत्रादिक नित्यकर्मरूप तथा काम्यकर्मरूप होवैहैं तैसे संन्यासियोंकेप्रतिही तेश्रवणादिक नित्यकर्मरूप तथा काम्यकर्मरूप होवो ॥ ऐसेमानणेविषे पूर्वउक्त आचार्योंकेवचनोंका तथा श्रुतिवचनोंका विरोधहोतानहीं इति ॥ तहां पूर्व अपरपर इसभेद करिकै दोप्रकारकावैराग्य कह्याथा॥तहां तावैराग्यकीतारतम्यताकारिकै संन्यासकेभेदनिरूपणप्रसंगतैं श्रवणादिकविधिका विस्तारतैंनिरूपणकऱ्या ॥ अब ताक्रमप्राप्तपरवैराग्यका निरूपणकरेहैं ॥ 'गुणेषु वैतृष्ण्यं परवैराग्यम्' अर्थयह॥सत्त्व रज तम इनतीनोंगुणोंकापरिणामरूप जे इसलोकके तथापरलोकके विषयहैं ॥ तिनसर्वविषयोंकीतृष्णातैंरहितपणेकानाम परवैराग्यहै ॥ यहपरवैराग्यकास्वरूप पतंजलिभगवान्नैंभी योगशास्त्रविषे कह्याहै ॥ तहांसूत्र 'ततःपरंपुरुषख्यातेर्गुणवैतृष्ण्यम्' अर्थयह ॥ प्रत्यक् आत्माकेज्ञानतैं इसपुरुषकूं जो गुणोंकेपरिणामरूपसर्वविषयोंविषे तृष्णातैंरहितपणाहोवैहै सो परवैराग्य कह्याजावैहै इति ॥ सोयहपरवैराग्य निर्विकल्पनामाअसंप्रज्ञातसमाधिका अंतरंगसाधन होवैहै ॥ यहवार्त्ताभी तापतंजलिभगवान्नैं कहीहै ॥ तहांसूत्र 'तीव्रसंवेगानामासन्नःसमाधिलाभः' अर्थयह ॥ तापरवैराग्यवालेपुरुषोंकूं शीघ्रही ताअसंप्रज्ञातसमाधिकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ तहां पूर्व तात्पर्यकेनिरूपणप्रसंगतैं श्रवणादिकोंकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिसीप्रकृतअर्थकूं निरूपणकरेहैं ॥ जैसे पूर्वउक्तउपक्रमउपसंहारादिकषट्लिंगोंकरिकै वेदांतवाक्योंकेतात्पर्यका निर्णयहोवैहै ॥ तैसे कर्मकांडके वाक्योंकाभी तिनषट्लिंगोंकरिकैही तात्पर्यकानिर्णयहोवैहै ॥ इसप्रकारकेउक्ततात्पर्यकीजोअनुपपत्ति है ॥ सोईही पूर्वउक्तलक्षणकाबीज होवैहै ॥ साताप्तर्यकीअनुपपत्ति तिसतिसलक्षणाकेनिरूपणविषे

पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ एकपदार्थका दूसरेपदार्थविषे जोसंबंधरूपअन्वयहै ॥ ताअ
न्वयकीअनुपपत्तिही तालक्षणकाबीजहै ॥ जैसे 'गंगायांघोषः' इसउक्तउदाहरणविषे गंगापदकेश
क्यअर्थरूप जलप्रवाहविषे घोषका आधारतासंबंधरूपअन्वय बनतानहीं ॥यातैं ताअन्वयकीअनुपप
त्तितैंही तागंगापदकी तीरविषेलक्षणा करीजावैहै ॥ तैसे सर्वत्र ताअन्वयानुपपत्तितैंही लक्षणासंभवै
है ॥ यातैं अन्वयानुपपत्तिही तालक्षणाकाबीजहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जोकदाचित् सर्वत्र साअ
न्वयानुपपत्तिही लक्षणाकाबीज मानिये ॥ तौ यष्टिधरपुरुषोंकेभोजनकरावणेवासतै किसीआप्तवक्तापु
रुषनैं उच्चारणकऱ्याजो 'यष्टीः प्रवेशय' यहवचनहै ॥ तिसवचनकूंश्रवणकरिकैश्रोतापुरुष तायष्टिपद
की यष्टिधरपुरुषोंविषे लक्षणाकरैहै ॥ सालक्षणा नहींहोणीचाहिये॥ काहेतैं जैसे पुरुषोंका ताप्रवेशरूप
क्रियाविषे संबंधरूपअन्वय संभवैहै॥तैसे तिनकाष्ठविशेषरूपयष्टियोंकाभी ताप्रवेशाक्रियाविषे सोअन्व
य संभवैहै ॥ यातैं सोअन्वयानुपपत्तिरूपलक्षणाकाबीज तहांसंभवतानहीं ॥ किंतुतात्पर्यकीअनुपपत्ति
रूपही लक्षणाकाबीज तहांसंभवैहै ॥ औरं 'गंगायांघोषः' इत्यादिक जितनेकीलक्षणाकेउदाहरणपूर्व
कथनकऱ्येहैं ॥ तहांसर्वत्र सोतात्पर्यकीअनुपपत्तिरूपबीज विद्यमानहै ॥ यातैं सर्वत्रअनुगतहोणेतैं सो
तात्पर्यकीअनुपपत्तिही लक्षणाकाबीजहै ॥ व्यभिचारीहोणेतैं साअन्वयानुपपत्ति लक्षणाकाबीज नहीं
है इति ॥ तहां नैयायिक शक्तिवृत्तिकीन्यांई लक्षणावृत्तिभी केवल पदविषेहीमानैहैं ॥वाक्यविषे लक्ष
णावृत्ति मानतेनहीं ॥ तिनोंकेमतकेखंडनकरणेवासतै वाक्यविषेभी लक्षणासिद्धकरैहैं ॥ तहांसाउक्तल
क्षणा केवल पदविषेही नहींहोवैहै ॥ किंतु वाक्यविषेभी सालक्षणाहोवैहै ॥ जैसे 'गंभीरायांनद्यांघो

पः' इसपदसमूहरूपवाक्यकी तीराविषेलक्षणा अंगीकारकरीहै ॥ याकारणतैंही वेदविषे अर्थवादवाक्यों
की स्तुतिविषेलक्षणा अंगीकारकरीहै ॥ तहां विधिवाक्यकरिकैप्राप्तअर्थकी स्तुतिकाबोधक जोवाक्य
है ताकानाम अर्थवादहै ॥ और गुणीविषे जोगुणकाकथनहै ताकानाम स्तुतिहै ॥ जोकदाचित् वा
क्यविषेलक्षणा नहींअंगीकारकरिये ॥ किंतु पदमात्रविषेहीलक्षणा अंगीकारकरिये ॥ तौ ताअर्थवाद
वाक्यविषेस्थित एकपदकीलक्षणाकरिकैही तास्तुतिरूपअर्थकाबोध होइसकैहै ॥ दूसरेपदव्यर्थहोवैंगे ॥
यातैं तापदसमूहरूपवाक्यकीही तास्तुतिविषेलक्षणा मानीचाहिये ॥ याकारणतैंही शास्त्रकारोंनैं तिन
अर्थवादवाक्योंकी विधिवाक्यकेसाथि पदैकवाक्यता अंगीकारकरीहै ॥ तहां आकांक्षाकेवशतैं पदका
जोविधिवाक्यकेसाथि अन्वयहै ताकानाम पदैकवाक्यताहै ॥ यद्यपि तेअर्थवादवचन पदरूपनहींहैं ॥
किंतु पदोंकासमूहरूपहोणेतैं वाक्यरूपही हैं॥ तथापि तेअर्थवादवाक्य लक्षणावृत्तिकरिकै एकस्तुतिरू
पपदार्थकेबोधकहोणेतैं पदस्थानीय कह्येजावैहैं ॥ ऐसेपदरूपअर्थवादवाक्योंको जाविधिवाक्यकेसाथ
एकवाक्यताहै ॥ सा पदैकवाक्यता कहीजावैहै ॥ जैसे'वायवीयंश्वेतंपशुमालभेत 'अर्थयह ॥ वा
युहैदेवताजिसका ऐसेश्वेतपशुकूं यहपुरुष हननकरै ॥ इसविधिवाक्यनैं वायुदेवतासंबंधीयागकाविधा
नकर्‍याहै ॥ और तिसीप्रकरणविषे ' वायुर्वैक्षेपिष्ठादेवता' अर्थयह ॥ सोवायुदेवता शीघ्रगतिवाला
है इसअर्थवादवाक्यनै तावायुदेवताकी स्तुतिकरीहै ॥ यातैं शीघ्रफलकीप्राप्तिकरणेहारेवायुदेवतासं
बंधीयागकूं यहपुरुष करै इसप्रकारतैं तापदरूपअर्थवादवाक्यकी ताविधिवाक्यकेसाथ जोएकवाक्य
ताहै ताकानाम पदैकवाक्यताहै इति ॥ और आपणे आपणे अर्थविषे तात्पर्यवालेजेवाक्यहैं ॥तिनवा

क्योंकी परस्पर अंगअंगीभावआकांक्षाकेवशतैं जोएकवाक्यता होवैहै ताकानाम वाक्यैकवाक्यता है ॥ जैसे 'दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गकामोयजेत्' अर्थयह ॥ स्वर्गकीकामनावालापुरुष दर्शपूर्णमासनामायागोंकूंकरै ॥ इसविधिवाक्यनैं दर्शपूर्णमासनामाअंगीयागका विधानकऱ्याहै ॥ और तिसीप्रकरणविषे 'समिधोयजति' इसवचननैं समिधनामाअंगयागका विधानकऱ्याहै ॥ और अंगीयागकूं अंगरूपयागकीअपेक्षा अवश्यहोवैहै ॥ यातैं स्वर्गकामपुरुष समिधादिकअंगयागविशिष्टदर्शपूर्णमासरूप अंगीयागकूंकरै याप्रकारतैं ताअंगबोधकवाक्यकी जोअंगीबोधकवाक्यकेसाथि एकवाक्यताहोवैहै ताकानाम वाक्यैकवाक्यताहै इति॥किंवा जैसे पूर्वउक्ततात्पर्यज्ञान वाक्यार्थज्ञानविषे कारणहोवैहै ॥ तैसे अवांतरवाक्योंकेअर्थकाज्ञानभी महावाक्यकेअर्थज्ञानविषेकारणहोवैहै॥ताअवांतरवाक्यार्थज्ञानतैंविना सोमहावाक्यार्थज्ञान होतानहीं॥तहां महावाक्यकेअंतरप्रविष्टजोवाक्यहैं तिनोंकानाम अवांतरवाक्यहै ॥ यातैंयहसिद्धभया शक्तिलक्षणारूपवृत्तिकाज्ञान तथाआकांक्षाकाज्ञान तथायोग्यताकाज्ञान तथाआसत्ति तथातात्पर्यकाज्ञान तथाअवांतरवाक्यार्थकाज्ञान यहपूर्वउक्तसर्व तावाक्यके सहकारीहोवैहै ॥ तिनसर्वसहकारियोंकरिकैसंपन्नहुआ सोवाक्य परोक्षप्रमाका तथाअपरोक्षप्रमाका जनकहोवैहै ॥ तहां जोवाक्य परोक्षअर्थकाप्रतिपादकहोवैहै ॥ सोवाक्यतौ परोक्षप्रमाकाजनकहोवैहै ॥ जैसे 'स्वर्गकामोयजेत । सदेवसौम्येदमग्रआसीत्। दशमोऽस्ति' इत्यादिक वैदिकलौकिकवाक्य परोक्षस्वर्गादिकोंकेप्रतिपादक होणेतैं परोक्षप्रमाकेजनकहोवैहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ परोक्षअर्थकाप्रातिपादकवाक्य परोक्षप्रमाकाजनकहोवैहै यहपूर्व आपनेकह्या ॥ तहां ताअर्थविषे परोक्षपणा क्याहै ॥ ऐसीजिज्ञासाकेहुए ॥ अब ता

अर्थनिष्ठपरोक्षताका लक्षणकहेहैं ॥ 'योग्यविषयस्यानावृतसंवित्तादात्म्याभावः परोक्षत्वम्' अर्थयह ॥ अज्ञानकृतआवरणतैंरहित जोसाक्षीचैतन्यहै ताकानाम अनावृतसंवित्है ॥ ऐसेअनावृतसंवित्केसाथि प्रत्यक्षयोग्यविषयकेतादात्म्यका जोअभावहै यहही ताविषयविषे परोक्षपणाहै ॥ जैसे स्वर्गादिकयोग्य विषयोंका अनावृतसाक्षीचैतन्यकेसाथि तादात्म्यहैनहीं ॥ यातैं तेस्वर्गादिक परोक्ष कह्येजावैहैं ॥ औरं जिसकालविषे घटपटादिविषयाकार अंतःकरणकीवृत्ति नहींउत्पन्नभई ॥ तिसकालविषे तिनघटपटादि कयोग्यविषयोंका ताअनावृतसाक्षीचैतन्यकेसाथि तादात्म्यहैनहीं ॥ यातैं तिसकालविषे तेघटपटादि कभी परोक्ष कह्येजावैहैं ॥ तहां इसलक्षणविषे विषयका योग्य यहविशेषण जोनहींकहते तौ धर्मअ धर्मविषे तालक्षणकीअव्याप्तिहोती ॥ जिसकारणतैं ताधर्मअधर्म ताअनावृतसाक्षीचैतन्यकेसाथि ता दात्म्यही है ॥ परंतु सोधमाधर्म प्रत्यक्षकेयोग्यनहींहै॥ किंतु अयोग्यहै ॥ यातैं योग्यपदकेकहणेतैं ता धर्माधर्मविषेभी सोपरोक्षपणा संभवहै इति ॥ ऐसेपरोक्षअर्थकूंविषयकरणेहाराजोप्रमाज्ञानहै ॥ सोज्ञान भी परोक्ष कह्याजावैहै ॥ अर्थात् ऐसेपरोक्षअर्थकाविषयकरणाही ताप्रमाज्ञानविषे परोक्षपणाहै ॥ जैसे 'स्वर्गोऽस्ति अयंधर्माधर्मवान् दशमोऽस्ति' इत्यादिकवाक्यजन्यप्रमाविषे जो स्वर्ग धर्माधर्म दशम इत्यादिकपरोक्षअर्थका विषयकपणाहै यहही परोक्षपणाहै ॥ अथवा प्रमाणचैतन्यविषे जोविषयचैतन्य तैंभिन्नपणाहै यहही ताप्रमाज्ञानविषे परोक्षपणाहै ॥ जैसे 'स्वर्गोऽस्ति' इत्यादिवाक्यजन्यवृत्तिअवच्छिन्न प्रमाणचैतन्यविषे स्वर्गादिविषयावच्छिन्नचैतन्यतैंजोभिन्नपणाहै यहही तास्वर्गादिविषयकज्ञानविषे परो क्षपणाहै ॥ इसप्रकार अनुमितिआदिकज्ञानोंविषेभी सोपरोक्षपणा जानिलेणा ॥ तहां परोक्षस्थलविषे

अंतःकरणकीवृत्ति विषयदेशाविषेजातीनहीं किंतु शरीरकेभीतरही सावृत्ति उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं ता विषयवृत्तिरूपउपाधियोंकी भिन्नभिन्नदेशविषेस्थितिहोणेतैं तावृत्तिअवच्छिन्नचैतन्यकेसाथि ताविषया वच्छिन्नचैतन्यकी एकताहोतीनहीं ॥ यहवार्त्ता पूर्वप्रत्यक्षनिरूपणविषे कहिआयेहैं ॥ यातैं तावृत्तिअ वच्छिन्नप्रमाणचैतन्यविषे विषयावच्छिन्नचैतन्यतैंभिन्नतारूप ज्ञाननिष्ठपरोक्षपणा संभवैहै इति ॥ और जोवाक्य अपरोक्षअर्थका प्रतिपादकहोवैहै ॥ सोवाक्य अपरोक्षप्रमाकाजनकहोवैहै ॥ जैसे 'तत्त्वम सि' यहवैदिकवाक्य ब्रह्मात्मरूपअपरोक्षअर्थकाप्रतिपादकहोणेतैं 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारकी अपरोक्ष प्रमाका जनकहोवैहै ॥ और 'दशमस्त्वमसि' यहलौकिकवाक्य दशमपुरुषरूपअपरोक्षअर्थकाप्रतिपा दकहोणेतैं' अहंदशमः 'याप्रकारकी अपरोक्षप्रमाकाजनकहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसअपरोक्षअ र्थका प्रतिपादकहुआवाक्य अपरोक्षप्रमाकाजनकहोवैहै ॥ तिसअर्थविषे सोअपरोक्षपणा क्याहै ॥ ऐ सीजिज्ञासाकेहुए ॥ अब ताअर्थनिष्ठअपरोक्षताकालक्षणकहेहैं ॥ 'योग्यविषयस्यानावृतसंवित्तादात्म्यं अपरोक्षत्वं 'अर्थयह ॥ प्रत्यक्षयोग्यविषयका जोअनावृतसाक्षीचैतन्यकेसाथि तादात्म्यहै ॥ यहही ता विषयविषे अपरोक्षपणाहै ॥ जैसे घटपटादिआकारवृत्तिकालविषे तिनघटपटादिकोंका अनावृतसाक्षि चैतन्यकेसाथि तादात्म्यहोवैहै ॥ यहही तिनघटपटादिकोंविषे अपरोक्षपणाहै और धर्माधर्मका यद्यपि ताअनावृतसाक्षिचैतन्यकेसाथि तादात्म्यहै ॥ तथापि सोधर्माधर्म प्रत्यक्षकेयोग्यनहींहै ॥ यातैं इस लक्षणविषे विषयका योग्यइसविशेषणकेकहणेतैं ताधर्माधर्मविषे ताअपरोक्षपणाकेलक्षणकी अतिव्याप्ति होवैनहीं ॥ यद्यपि सिद्धांतविषे नित्यअपरोक्षरूप एकहीचैतन्यहै॥ताएकचैतन्यविषे साक्षीचैतन्यतैंअ

नावृतहै और विषयचैतन्य आवृतहै याप्रकारकाभेदकहणा संभवतानहीं ॥ तथापि विषयअंतःकरणादिकउपाधियोंकेभेदतैं ताचैतन्यकाभेद पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ और घटादिकपदार्थोंविषे लोकोंकासंशय अनवभास विपर्यय देखणेविषेआवेहै ॥ और अंतःकरणउपहितसाक्षीचैतन्यविषे किसीकूंभीतेसंशयादिकहोतेनहीं ॥ यातैं ताकार्यकेबलतैं सोघटादिअवच्छिन्नचैतन्यतौ आवृतकह्याजावैहै औरसो साक्षीचैतन्य आनावृत कह्याजावैहै ॥ जोकदाचित् तासाक्षीचैतन्यकूंभी अनावृतमानिये ॥ तौप्रकाशककेअभावतैं जगतविषे अंधताप्राप्तहोवैगी ॥ अर्थात् कोईवस्तुकाभाननहींहोवैगा ॥ यातैं तासाक्षीकूं सर्वदा अनावृतही मान्याचाहिये और घटादिविषयावच्छिन्नचैतन्यतौ घटादिआकारवृत्तिकीउत्पत्तितैं पूर्व आवृतहोवैहै ॥ और तावृत्तिकालविषे आवरणतैंरहितहुआ तासाक्षीचैतन्यसे अभिन्नहोवैहै ॥ तिसकालविषे तिनघटादिकविषयोंका जो ताअनावृतसाक्षीचैतन्यकेसाथ तादात्म्यहै ॥ यहही तिनघटादिकविषयोंविषे अपरोक्षपणाहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व विषयप्रत्यक्षकेलक्षणविषे घटादिकविषयोंका साक्षीचैतन्यकेसाथ तादात्म्य कह्याथा सोतादात्म्य क्याहै ॥ अर्थात् एकताकानाम तादात्म्यहै अथवा भेदसहितअभेदकानाम तादात्म्यहै ॥ तहां प्रथमपक्षतौ संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं तमप्रकाशकीन्यांई जडचैतन्यका विरोधहोणेतैं एकतासंभवतीनहीं ॥ तैसे द्वितीयपक्षभी संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं समानसत्तावालेभेदअभेदका परस्परविरोधहोणेतैं एकअधिकरणविषे स्थितिहीसंभवतीनहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए अब तिसतादात्म्यलक्षण कहेहैं ॥ 'तद्भिन्नत्वेसतितदभिन्नसत्ताकत्वं तादात्म्यम्' अर्थयह ॥ जिसपदार्थतैं जोवस्तु भिन्नप्रतीतहोवैहै ॥ और जिसपदार्थकीसत्तातैं जि

सवस्तुकीसत्ता भिन्नहोतीनहीं ॥ तिसपदार्थविषे जो तिसवस्तुकासंबंधहै ताकानाम तादात्म्यहै ॥ जैसे घटपटादिककार्योंका मृत्तिकातंतुआदिकउपादानकारणविषे तादात्म्यहै ॥ तहां 'अयंघटः अयंपटः' याप्रकारकीप्रतीतितैं तेघटपटादिक आपणेमृत्तिकातंतुआदिकउपदानकारणतैं भिन्नहुएभासैंहैं ॥ और ताउपादानकारणकीसत्तातैं तिनघटपटादिककार्योंकी भिन्नसत्ताहैनहीं ॥ यातैं तिनघटपटादिककार्योंका आपणेमृत्तिकातंतुआदिकउपादानकारणाविषे तादात्म्य संभवैहै ॥ इसप्रकार कल्पितरजतसर्पादिकोंकाभी आपणेअधिष्ठानविषे तादात्म्यहीहोवैहै ॥ तैसे जिसकालविषे अंतःकरणकीवृत्ति चक्षुआदि कइंद्रियद्वारा बाहरनिकसिकै घटादिआकारनहींभईथी तिसकालविषे तेघटादिकविषय स्वावच्छिन्नचैतन्यविषे अध्यस्तथे ॥ और जभीसोवृत्ति बाह्यनिकसिकै घटादिआकारहोवैहै ॥ तभी तावृत्ति विषयरूपउपाधियोंकी एकदेशविषेस्थितिकरिकै तदुपहितचैतन्योंकीभी एकताहीहोवैहै॥अर्थात् घटादिअवच्छिन्नचैतन्य तथावृत्तिअवच्छिन्नचैतन्यतथाअंतःकरणविशिष्टप्रमाता चैतन्य तथाअंतःकरणउपहितसाक्षीचैतन्य इनसर्वोंकी ताकालविषे एकताहोवैहै ॥ तिसकालविषे ते घटकादिक साक्षीचैतन्यविषे अध्यस्तहोवैहै ॥ और अध्यस्तवस्तुकी अधिष्ठानतैंभिन्नसत्ता होतीनहीं ॥ जैसेकल्पितरजतसर्पादिकोंकी शुक्तिरज्जुआदिकअधिष्ठानतैं भिन्नसत्तानहींहै ॥ इसप्रकार तिनघटादिकोंविषे जोसाक्षीचैतन्यकीसत्तातैंभिन्नसत्तातैंरहितपणाहै ॥ यहही तिनघटादिकोंका तासाक्षीचैतन्यकेसाथ तादात्म्यहै ॥ और यहसाक्षीकेसाथतादात्म्यही तिनघटादिकोंविषे अपरोक्षपणाहै इति ॥ ऐसेअपरोक्षअर्थकाप्रतिपादकवाक्य अपरोक्षप्रमाकाहीजनकहोवैहै ॥ जैसे 'दशमस्त्वमसि' इसवाक्यविषे दशमपुरुष त्वंपदार्थ

तैंआभिन्नहोणेतैं अपरोक्षही है ॥ यातैं ताअपरोक्षअर्थकीप्रातिपादकताकरिकै तावाक्यतैं श्रोतापुरुषकूं 'अहंदशमः' याप्रकारकी अपरोक्षप्रमाही उत्पन्नहोवैहै ॥ तावाक्यतैं अपरोक्षप्रमा उत्पन्न होवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ 'गामानय स्वर्गोऽस्ति' इत्यादिकसर्ववाक्योंका परोक्षप्रमाकेउत्पन्नकरणेकाही स्वभावहवैहै ॥ और वस्तुकेस्वभावका अन्यथापणा होतानहीं ॥ यातैं दशमस्त्वमसि इसवाक्यतैंभी तादशमपुरुषकूं प्रथम आपणा परोक्षज्ञानही उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर मनरूपइंद्रियकरिकै आपणेदशमपणेका साक्षात्कारहोवैहै ॥ काहेतैं जोजोप्रत्यक्षज्ञानहोवैहै सोसोइंद्रियकरिकैहीजन्यहोवैहै ॥ यातैं आत्मकेप्रत्यक्षविषे ताआत्मवृत्तिसुखदुःखादिकोंकेप्रत्यक्षविषेभी सोइंद्रियरूपकरणकरिकैजन्यत्वअवश्यमानणाहोवैगा ॥ तहांबाह्यचक्षुआदिकइंद्रियोंकूंतौ ताअंतरप्रत्यक्षकेउत्पन्नकरणेका सामर्थ्य हैनहीं ॥ परिशेषतैं तामनकूंही अन्वयव्यतिरेककरिकै ताप्रत्यक्षज्ञानकीकरणता मानणीहोवैगी ॥ जोकदाचित् ताप्रत्यक्षविषे मनकूंकरणनहींमानोंगे तौ 'अहंसुखी अहंदुःखी' इसप्रकारके सुखदुःखादिकोंकेप्रत्यक्षज्ञानविषे अप्रमापणाही प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं तादशमपुरुषकूं मनकरिकैही आपणेदशमपणेका साक्षात्कारहोवैहै ॥ तावाक्यकरिकैहोतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सुखदुःखादिकोंकेसाक्षात्कारका करणरूपकरिकै जो मनविषेइंद्रियपणासिद्धहोवै तौ तादशमपुरुषकेसाक्षात्कारविषे तामनकूं करणतासंभवै ॥ परंतु तामनविषे सोइंद्रियपणाही संभवतानहीं ॥ यहवार्त्ता पूर्वप्रत्यक्षप्रमाकेनिरूपणविषे कथन करिआयेहैं ॥ और सुखदुःखादिकोंकाज्ञानतौ नित्यसाक्षीरूपहोणेतैं किसीभीकरणकरिकैजन्यनहीं हैं ॥ यातैं तासुखादिज्ञानकाकरणरूपकरिकै तामनकूं इंद्रियरूपता संभवतीनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सुखदुःखा

दिकोंकेज्ञानकूं जोनित्यसाक्षीरूप मानोंगे तौ तानित्यसाक्षीरूपज्ञानका उत्पत्ति तथा विनाशसंभवता नहीं ॥ यातें मेरेकूं अभीसुखकाज्ञान उत्पन्नभयाहै और दुःखकाज्ञान नष्टभयाहै इसलोकोंके अनुभवका विरोधहोवैगा ॥ तथा इसपुरुषकूं कालांतरविषे तिनसुखदुःखादिकोंकीस्मृतिभी नहींहोवैगी ॥ जिसकारणतें अनुभवकेध्वंसजन्यसंस्कारोंतैंही सोस्मृतिहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तासाक्षीचैतन्यके उत्पत्तिविनाशकेअभावहुएभी तासाक्षीचैतन्यकेविषय जेसुखदुःखादिकहैं तिनोंका उत्पत्तिविनाश होवैहै ॥ ताकरिकै तासाक्षीरूपअनुभवविषेभी सोउत्पत्तिविनाशव्यवहार संभवैहै ॥ तथा संस्कारोंकीउत्पत्तिकरिकै कालांतरविषे तिनसुखदुःखादिकोंकीस्मृतिभी संभवैहै॥यातैं सुखदुःखादिकोंकेज्ञानविषे तामनकूं करणरूपतासंभवतीनहीं॥इसप्रकार आत्माकेसाक्षात्कारविषेभी तामनकूं करणतासंभवतीनहीं ॥ काहेतें श्रुतिनैं शुद्धआत्माकूंतो मनवाणीका अविषयकह्याहै ॥ यातैं ताशुद्धआत्माकेसाक्षात्कारविषे तौ तामनकूं करणतासंभवतीनहीं ॥ तैसे सोपाधिकआत्माकेसाक्षात्कारविषेभी तामनकूं करणतासंभवतीनहीं जिसकारणतैं 'कामःसंकल्पोविचिकित्सा' इत्यादिकश्रुतिनैं तामनकूं वृत्तिज्ञानका उपादानकारणकह्याहै ॥ और उपादानकारणकूं तिसकार्यकेप्रति करणरूपता होतीनहीं ॥ किंतु निमित्तकारणकूंही करणरूपताहोवै है ॥ जैसे घटकेप्रति उपादानकरणरूपमृत्तिकाकूं करणरूपतानहीं है ॥ किंतु निमित्तकारणरूपदंडादिकोंकूंही करणरूपताहै॥तैसे वृत्तिज्ञानकेप्रति उपादानकारणरूपमनकूंतो वृत्तिज्ञानकेप्रति करणरूपतासंभवतीनहीं किंवा ॥ जैसे चाक्षुषज्ञानकीउत्पत्तिविषे सूर्यादिकोंकाआलोक चक्षुइंद्रियका सहकारीहोवैहै तैसे सोमनभी शब्दादिकप्रमाणोंका सहकारीहोवैहै ॥ यात जैसे

ताआलोककूं पृथक्प्रमाणता नहीं है॥ तैसे तामनकूंभी पृथक्प्रमाणता संभवतीनहीं ॥ किंवा जैसे चक्षु आदिकइंद्रियोंके रूपादिक असाधारणविषय होवै हैं तैसे तामनका कोईअसाधारणविषय हैनहीं ॥ और अंतःकरण तथाताकेसुखदुःखादिकधर्मतो पूर्वउक्तरीतिसे केवल साक्षीभास्यहीहैं ॥ यातैं असाधारणविषयकेअभावतैंभीतामनविषे साक्षात्कारकीकरणता संभवतीनहीं ॥ यहवार्त्ता आचार्योंनैंभीकही है ॥ तहांश्लोक ॥ 'प्रमाणसहकारित्वाद्विषयस्याप्यभावतः । नप्रमाणंमनोऽस्माकंप्रमादेराश्रयत्वतः' अर्थयह ॥ प्रमाणकासहकारीहोणेतैं तथाअसाधारणविषयकेअभावतैं तथाप्रमाज्ञानादिकोंकाआश्रयहोणेतैं तामनकूं प्रमाणरूपता सिद्धांतविषेअंगीकारनहीं है इति ॥ और प्रमाणजन्यअपरोक्षज्ञानकूंही अपरोक्षभ्रमका निवर्त्तकपणाहोवैहै ॥ यातैं अहंदशमः इससाक्षात्कारविषे तामनकूं करणरूपता संभवती नहीं ॥ किंतु दशमस्त्वमसि इसवाक्यकूंही करणरूपतासंभवैहै यहसिद्धभया ॥ इसप्रकार तत्त्वमसि इसवाक्यविषेभी तत्पदकालक्ष्यअर्थजोब्रह्महै ताब्रह्मका त्वंपदकेलक्ष्यअर्थसाक्षीकेसाथि सर्वदाअभेदहै यातैं ताअनावृतसाक्षीकेसाथि तादात्म्यवालाहोणेतैं सोब्रह्म नित्यअपरोक्षहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म' अर्थयह ॥ जोब्रह्म सर्वकाआत्मारूपहोणेतैं साक्षात्अपरोक्षरूपहै ॥ ऐसेअपरोक्षब्रह्मके प्रतिपादक जेतत्त्वमसि इत्यादिकमहावाक्यहैं तिनवाक्योंतैं इसपुरुषकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकीअपरोक्षप्रमाही उत्पन्नहोवैहै ॥ इहां अपरोक्ष प्रत्यक्ष साक्षात्कार यहतीनोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहोवैं हैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तत्त्वमसि इसवाक्यतैं जो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकीअपरोक्षप्रमा उत्पन्नहोती होवै तौ सर्वलोकोंकूं तावाक्यकेश्रवणतैं सोअपरोक्षप्रमा उत्पन्नहोणीचाहिये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥

जोपुरुष विवेकादिकचतुष्टयसाधनोंकारिकैसंपन्नहै ॥ तथा शोधनकऱ्याहैतत्त्वंपदार्थ जिसनैं ॥ तथा श्रवणमनननिदिध्यासनकारिकै निवृत्तहोइगईहै असंभावना विपरीतभावना जिसकी ॥ ऐसेसाधनसंपन्नअधिकारीपुरुषकूंही तत्त्वमसिवाक्यतैं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकीअपरोक्षप्रमा उत्पन्नहोवैहै ॥ साधनरहित पुरुषकूं उत्पन्नहोवैनहीं ॥ ऐसीअपरोक्षप्रमाकीउत्पत्तिविषे सोतत्त्वमसिवाक्यही करणहै ॥ मन करण नहींहै ॥ किंतु श्रवणादिकसंस्कृतशुद्धमन सहकारीकारणहै ॥ किंवा ब्रह्मात्मसाक्षात्कारविषे तावेदवाक्य कूंही करणताहै ॥ यहअर्थ केवल पूर्वउक्तयुक्तियोंकारिकैही सिद्धनहींहै किंतु श्रुतिप्रमाणकारिकैभी सिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'सर्वेवेदायत्पदमामनंति। तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि। नावेदविन्मनुतेतंबृहंतम्' अर्थयह ॥ सर्ववेद जिसपरमात्मपदकूं साक्षात् वा परंपरातैं कथनकरैं हैं ॥ अर्थात् जिसपरमात्मविषयकसाक्षात्कारकूं उत्पन्नकरैं हैं ॥ और केवलउपनिषदरूपशब्दप्रमाणकारिकैजानणेयोग्य जोपरमात्मापुरुषहै तिसकास्वरूप मैं तुम्हारेसैंपूछताहूं ॥ और वेदांतवाक्योंकेज्ञानतैंरहितपुरुष ताब्रह्मकूं नहींजानिसकता इति ॥ इत्यादिकश्रुतियां ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे वेदांतवाक्यकूंही प्रमाणरूपता कथनकरैं हैं ॥ और 'मनसैवानुद्रष्टव्यम्। दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्या' इत्यादिकश्रुतियांतौ ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे ताशुद्धमनकूं सहकारीपणा कथनकरैं हैं ॥ यातैं तिनश्रुतियोंकाभी विरोधहोवै नहीं ॥ जोकदाचित् ताउक्त श्रुतितैं मनकूं आत्मसाक्षात्कारविषे करणहीमानिये तौ आत्मसाक्षात्कारविषे मनकीकरणताकूंनिषेध करणेहारी जे 'यन्मनसानमनुते। अप्राप्यमनसासह' इत्यादिकश्रुतियां हैं ॥ तिनोंका विरोधहोवैगा॥ ताविरोधकेनिवृत्तकरणेवासतै ताउक्तश्रुतितैं मनकूं सहकारीकारणही मानणायोग्यहै ॥ यद्यपि 'यद्वा

चाऽनभ्युदितम् । यतोवाचोनिवर्त्तंते' इत्यादिक श्रुतियोंनैं ताआत्मसाक्षात्कारविषे तावाक्यप्रमाणका भी निषेधकऱ्याहै ॥ तथापि तिनश्रुतियोंनैं ताशब्दका शक्तिवृत्तितैं निषेधकऱ्याहै अर्थात् सोशब्द शक्तिवृत्तिकरिकै ताब्रह्मकाबोध नहींकरै है ॥ और भागत्यागलक्षणाकरिकैतौ तेतत्त्वमसिआदिकवाक्य ताब्रह्मकेबोधकहीहोवैं हैं ॥ यातैं ताब्रह्मसाक्षात्कारविषे तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यकूंही करणरूप तासंभवैहै इति ॥ ॥ इतिशाब्दीप्रमासमाप्ता ॥ ४ ॥ ॥ अब पंचमीअर्थापत्तिप्रमाका निरूपणकरैं हैं ॥ तहां 'अनुपपद्यमानार्थदर्शनात्तदुपपादकभूतार्थांतरकल्पनं अर्थापत्तिप्रमा' अर्थयह ॥ अनुपपद्यमानअर्थकेज्ञानतैं ताअर्थकेउपपादकरूपअर्थांतरकी जोकल्पनाहै ताकानाम अर्थापत्तिप्रमाहै ॥ जैसे दिनविषेनहींभोजनकरणेहारे देवदत्तनामापुरुषकेशरीरकीस्थूलतारूपजोपीनत्वहै सोपीनत्व रात्रिभोजनतैंविना बनतानहीं ॥ यातैं तापीनत्वकेज्ञानतैं तिसदेवदत्तपुरुषके रात्रिभोजनकीकल्पना करी जावैहै ॥ ताकल्पनाकानाम अर्थापत्तिप्रमाहै ॥ तहां यहदिवाअभोजीपुरुषकापीनत्व रात्रिभोजनतैं विना बनतानहीं याप्रकारकाज्ञानतौ ताअर्थापत्तिप्रमाकाकरणहोणेतैं अर्थापत्तिप्रमाण कह्याजावैहै ॥ और यहपुरुष रात्रिविषेभोजनकरै है याप्रकारकाज्ञान अर्थापत्तिप्रमा कह्याजावैहै इति॥ इहां नैयायिकतौ अर्थापत्तिप्रमाणकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु व्यतिरेकीअनुमानकरिकैही तारात्रिभोजनका ज्ञान मानैं हैं ॥ ताअनुमानका यहआकारहै ॥ 'अयंदेवदत्तः रात्रौ भुंक्ते दिवाऽभुंजानत्वेसति पीनत्वात् यन्नैवं तन्नैवं यथादिवारात्रावभुंजानः 'अर्थयह ॥ यहदेवदत्तनामापुरुष रात्रिविषेभोजनकरै है ॥ दिनविषे नहींभोजनकरताहुआ पीनहोणेतैं जोपुरुष रात्रिविषेभोजननहींकरै है सोपुरुष दिनाविषेनहीं

भोजनकरताहुआ पीनभीनहींहोवै है ॥ जैसे दिनरात्रिविषेनहींभोजनकरणेहारापुरुष पीन नहींहोवै है ॥ यातैं सोअर्थापत्तिप्रमाण पृथक्नहींहै इति ॥ सोयहनैयायिकोंकामत असंगतहै ॥ काहेतैं पूर्वअनुमितिप्रमाकेनिरूपणविषे ताव्यतिरेकीअनुमानका विस्तारतैंखंडनकरिआयेहैं ॥ यातैं ताव्यतिरेकीअनुमानकरिकै तारात्रिभोजनकाज्ञान संभवतानहीं ॥ किंतु ताउक्तअर्थापत्तिप्रमाणतैंही सोरात्रिभोजनकाज्ञान संभवैहै ॥ यातैं सोअर्थापत्तिप्रमाण पृथक्प्रमाणही मान्याचाहिये ॥ और तेनैयायिक जिस पदार्थका व्यतिरेकीअनुमानकरिकैज्ञान मानैंहैं तिसपदार्थका ताअर्थापत्तिप्रमाणकरिकेहीज्ञान संभवैहै ॥ यातैं सोव्यतिरेकीअनुमानमानणा व्यर्थहीहै इति ॥ और सोउक्तअर्थापत्तिप्रमा दृष्टार्थापत्ति १ श्रुतार्थापत्ति २ इनभेदोंकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां देखेहुएअर्थकानाम दृष्टअर्थहै ॥ तादृष्टअर्थकी अनुपपत्तितैं ताकेउपपादकरूपअर्थांतरकी जोकल्पनाहै ताकानाम दृष्टार्थापत्तिहै ॥ और श्रवणकरेहुए अर्थकानाम श्रुतअर्थहै ॥ ताश्रुतअर्थकीअनुपपात्तितैं ताकेउपपादकरूपअर्थांतरकी जोकल्पनाहै ताकानाम श्रुतार्थापत्तिहै ॥ तिनदोनोंअर्थापत्तियोंविषे प्रथम दृष्टार्थापत्तिकाउदाहरण कहैहैं ॥ जैसे दोषवान्पुरुषकूं पुरोवर्त्तिशुक्तिविषे रजतकूंविषयकरणेहारा । इदंरजतम् । याप्रकारका भ्रमरूपविशिष्टअनुभवहोवैहै ॥ ताअनुभवका विषयरूपजोरजतहै ॥ तारजतका ताशुक्तिरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैंअनंतर । 'नेदंरजतम् । याप्रकारकाबाध प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोरजतकाबाध्यत्व दृष्टअर्थहै ॥ सोबाध्यत्वरूपदृष्टअर्थ तारजतकेसत्यमानणेविषे संभवतानहीं ॥ किंतु तारजतकेमिथ्यामानणेविषेही संभवैहै ॥ यातैं सोरजतका बाध्यत्वरूपदृष्टअर्थ तारजतकेमिथ्यापणेतैंविना नहींबनताहुआ तारजतकेमिथ्यापणेकीकल्पनाकरावै

है ॥ ताकल्पनाकानाम दृष्टार्थापत्तिप्रमाहै इति ॥ अब प्रसंगतैं भ्रमस्थलविषे वेदांतसिद्धांतसंमत अनिर्वचनीयख्यातिकीसिद्धिकरणेवासतै प्रथम अन्यशास्त्रउक्तख्यातियोंका निरूपणकरिकै खंडनकरै है॥ तहां मीमांसकतौ ताभ्रमस्थलविषे अख्याति मानैं हैं ॥ तिनमीमांसकोंका यह अभिप्रायहै ॥ सर्वज्ञान यथार्थहीहोवैहै ॥ कोईभीज्ञान अयथार्थहोतानहीं॥यातैं भ्रमस्थलविषे । इदंरजतम् । इसविशिष्टभ्रमज्ञान विषे कोईभीप्रमाणनहीं है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जोकदाचित् इदंरजतं इसज्ञानकूं विशिष्टभ्रमज्ञान नही मानोंगे तौ तिसज्ञानतैंअनंतर रजतार्थीपुरुषकी तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषे प्रवृत्तिनहींहोणीचाहिये ॥ और तारजतार्थीपुरुषकी तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषेप्रवृत्तितौ प्रत्यक्षदेखणेविषे आवैहै॥यातैं ताप्रवृत्तिकीअनुपपत्तितैं इदंरजतं इसज्ञानकूं जोविशिष्टभ्रमज्ञानरूपताहीसिद्धहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इदंरजतं इसज्ञानकूं जोविशिष्टभ्रमरूप नहीमानिये तौभी इसरजतार्थीपुरुषकीतापुरोवर्त्तिशुक्तिविषे प्रवृत्तिबनिसकैहै ॥ सोदिखावैहैं ॥ इदंरजतं यह एकविशिष्टभ्रमज्ञान नहीं है ॥ किंतु दोज्ञानहोवैहैं ॥ तहां इदं यहतौ पुरोवर्तिविषयक प्रत्यक्षज्ञानहोवैहै ॥ और रजतं यह रजतविषयक स्मृतिज्ञानहोवैहैं ॥ तेदोनों ज्ञान यथार्थही हैं ॥ तहां तिनदोनोंज्ञानोंका परस्परभेदहै ॥ तथा तिनदोनोंज्ञानोंकेविषयभूत पुरोवर्त्ति रजत इनदोनोंकाभी परस्परभेदहै ॥ परंतु दोषकेवशतैं इसपुरुषकूं तिनदोनोंज्ञानोंकाभेद तथातिनदोनोंविषयोंकाभेद ग्रहणहोतानहीं ॥ ताभेदाग्रहतैंही इसरजतार्थीपुरुषकी तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषेप्रवृत्ति बनिसकैहै ॥ यातैं ताप्रवृत्तिवासतै ताविशिष्टभ्रमज्ञानकीकल्पनाकरणी व्यर्थ है ॥ किंवा जोकदाचित् किसीभीज्ञानकूं अयथार्थ मानिये तौ इसपुरुषकूं कोईभीज्ञानविषे यथार्थपणेकानिश्चय नहींहोवैगा ॥

किंतु सर्वज्ञानोंविषे तायथार्थपणेका संशयहीरहैगा ॥ यातैं तायथार्थज्ञानसाध्य प्रवृत्तिनिवृत्तिआदिक सर्वव्यवहारोंकालोप होवैगा ॥ याकारणतैंही 'ज्ञानस्यव्यभिचारित्वेविश्वासःकिंनिबंधनः यहवचन शास्त्रकारोंनैं कह्याहै ॥ इसप्रकारतैं तारजतत्वविशिष्टभ्रमरूपअनुभवकाअभावहोणेतैं अनुभूयमानरज तका दृष्टबाध्यत्व तारजतकेमिथ्यापणेकूंकल्पनाकरावैहै यहवेदांतियोंकाकहणा असंगतहै इति ॥ सो यह अख्यातिवादीमीमांसककामतभी समीचीननहीं है ॥ तहां ताअख्यातिवादीनैं विशिष्टभ्रमज्ञानवि षे जोप्रमाणकाअभाव कह्याथा सोअसंगतहै ॥ जिसकारणतैं सोविशिष्टभ्रमज्ञान अनुमानप्रमाणक रिकैहीसिद्धहै ॥ सोअनुमान यहहै ॥ 'पुरोवर्त्तिनिरजतार्थिप्रवृत्तिः विशिष्टज्ञानसाध्या प्रवृत्तित्वात् सं वादिप्रवृत्तिवत्' अर्थयह ॥ पुरोवर्त्तिशुक्तिविषे जोरजतार्थीपुरुषकीप्रवृत्तिहोवैहै सोप्रवृत्ति इदंरजतं इसविशिष्टज्ञानकरिकैसाध्यहै ॥ प्रवृत्तिरूपहोणेतैं लोकविषे जोजोप्रवृत्तिहोवैहै सोसो विशिष्टज्ञा नकरिकैहीसाध्यहोवैहै ॥ जैसे सत्यरजतविषयकप्रवृत्ति इदंरजतं इस पुरोवर्त्तिरजतविशेष्यक रजतत्वप्र कारक विशिष्टज्ञानकरिकै साध्यहोवैहै इति ॥ यहअनुमानही ताविशिष्टभ्रमज्ञानविषे प्रमाणहै ॥ किंवा ताअख्यातिवादीनैं जोज्ञानमात्रकूं यथार्थपणा कह्याथा सोभी असंगतहै ॥ काहेतैं यद्यपि ज्ञानमात्रकूं स्वरूपतैंतौ यथार्थपणाहीं है ॥ तथापि विषयके बाधकरिकै तथाअबाधकरिकै ताज्ञानविषे यथार्थपणा तथाअयथार्थपणा दोनोंसंभवैहैं ॥ अर्थात् जिसज्ञानकाविषय अबाधितहोवैहै सोज्ञानतौ यथार्थक ह्याजावैहै ॥ जैसे 'अयंघटः अयंपटः इत्यादिकज्ञानहै ॥ और जिसज्ञानकाविषय बाधितहोवैहै सो ज्ञान अयथार्थकह्याजावैहै ॥ जैसे शुक्तिविषे इदंरजतं तथारज्जुविषे अयंसर्पः इत्यादिकज्ञानहैं ॥ जो

कदाचित् इदंरजतं इसज्ञानकूं रजतरूप विषयकेबाधतैं भ्रमरूपनहींमानिये तौ । नेदंरजतम् । इसउत्तर ज्ञानकरिकै पुरोवर्त्तिशुक्तिविषे जोरजतकाबाध प्रतीतहोवैहै सोनहींहोणा चाहिये ॥ जिसकारणतैं प्राप्तअर्थकाही प्रतिषेधहोवैहै ॥ अप्राप्तअर्थका प्रतिषेधहोतानहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ नेदंरजतं इसज्ञानकरिकै इदंरजतं इसज्ञानका वा ताज्ञानकेविषयभूतरजतका बाधहोतानहीं ॥ किंतु तारजतविषयक प्रवृत्तिआदिकव्यवहारकाही बाधहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ नेदंरजतं इसज्ञानविषे पुरोवर्त्तीमेंरजतकानिषेधही अनुभवहोवैहै ॥ ताव्यवहारकानिषेध अनुभवहोतानहीं ॥ जोकदाचित् ताज्ञाननैं रजतकाव्यवहार निषेधकरीताहोवै तौ नेदंरजतं याप्रकारकाव्यवहारही ताज्ञानकाआकार होणाचाहिये ॥ सोऐसाज्ञानकाआकार हैनहीं ॥ यातैं नेदंरजतं इसनिषेधकेबलतैंभी इदंरजतं यहविशिष्टभ्रमज्ञानही सिद्धहोवैहै सोविशिष्टभ्रमज्ञानही तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषे रजतार्थीपुरुषकेप्रवृत्तिकाकारणहै ॥ सो अख्यातिवादीउक्त भेदाग्रह ताप्रवृत्तिकाकारण नहींहै ॥ जोकदाचित् ताभेदज्ञानकेअभावरूपभेदाग्रहकूंही ताप्रवृत्तिकाकारणमानिये तौ ताभेदाग्रहकूं सर्वदाविद्यमानहोणेतैं इसपुरुषकी सोप्रवृत्ति सर्वदाहोणीचाहिये ॥ और सोअख्यातिवादी जोतारजतकेस्मृतिज्ञानतैं सोप्रवृत्तिमानैं ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं सोस्मृतिज्ञानकाविषयभूतरजत देशांतरविषेही विद्यमानहै ॥ तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषे विद्यमानहैनहीं यातैं तास्मृतिज्ञानतैं इसरजतार्थीपुरुषकी तादेशांतरविषेहीप्रवृत्तिहोवैगी ॥ तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषे प्रवृत्तिनहींहोवैगी ॥ यातैं ताअख्यातिवादीनैंभी तास्मर्यमाणरजतका पुरोवर्त्तिशुक्तिविषे आरोपणकरिकै तारजतप्रकारक पुरोवर्त्तिविशेष्यक इदंरजतं यहविशिष्टज्ञानही ताप्रवृत्तिकाकारण ॥१२२॥

मान्याचाहिये ॥ सोविशिष्टभ्रमज्ञान निर्विषयहोवैगानहीं ॥ किंतु सविषयहीकहणाहोवैगा ॥और ने दंरजतं इसज्ञानकरिकै तारजतरूपविषयका तापुरोवर्तिशुक्तिविषेही बाधप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं तारजत केबाध्यत्वकीअनुपपत्तिकरिकै तारजतविषे सोमिथ्यापणा संभवैहै इति ॥ औरशून्यवादीमाध्यमिक तथाकैएकतांत्रिक ताभ्रमस्थलविषे असत्ख्याति मानैं हैं ॥ तहां शून्यवादीकेमतविषेतौ ज्ञाताज्ञान ज्ञेय इत्यादिकसर्वपदार्थ असत्हैं ॥ यातैं असतशुक्तिविषे असत्रजतही इदंरजतं इसज्ञानकाविषयहै ॥ और तांत्रिकोंकेमतविषेतौ शुक्तिआदिकव्यावहारिकपदार्थ असत्नहींहैं ॥ किंतु ताशुक्तिविषे जोरजतप्रतीतिहोवैहै सोरजतही असत्है ॥ यातैं इदंरजतं यहज्ञान असत्रजतकूंहीविषयकरै है ॥ और शुक्तिकेज्ञानतैंअनंतर इसपुरुषकूं हमारेकूं इसशुक्तिविषे असत्रजतही प्रतीतहोताभया याप्रकारकाअनुभवहोवैहै ॥ ताअनुभवतैं तारजतका असत्पणाहीसिद्धहोवैहै ॥ यातैं ताभ्रमज्ञानकेविषय रजतादिक असतहीमानेचाहियें इति । सोयह असत्ख्यातिवादीकामतभी समीचीननहीं है ॥ काहेतैं तारजतकूं जोअसत्मानिये तौ असत्वस्तुका प्रत्यक्षज्ञानहोतानहीं ॥ यातैं तारजतकूंविषयकरणेहारे इदंरजतं इसज्ञानकूं प्रत्यक्षरूपता नहींहोणीचाहिये ॥ जोकदाचित् असत्वस्तुकाभी प्रत्यक्षज्ञानहोताहोवै तौ शशशृंगवंध्यापुत्रादिकअसत्पदार्थोंकाभी लोकोंकूं प्रत्यक्षज्ञान होणाचाहिये॥ यातैं तारजतकूं असत्रूपता संभवतीनहीं ॥ किंवा असत्कोईवस्तुहै अथवानहींहै ॥ तहां जोकहो असत्कोईवस्तुहै तौ ताका असतपणाकहणा संभवतानहीं ॥ और जोकहो असत्कोईवस्तुनहीं है तौ ताअसत्का ज्ञानहीकैसेसंभवैगा ॥ विषयतैंविना कोईज्ञानहोतानहीं ॥ यातैं भ्रमज्ञानकेविषयभूतरजतादिकोंका असत

पणासंभवतानहीं इति ॥ और केएकशास्त्रकार ताभ्रमस्थलविषे सत्ख्याति अंगीकारकरैंहैं ॥ तिनोंका यहअभिप्रायहै ॥ शुक्तिकेआरंभकअवयवोंकेसाथ रजतकेआरंभकअवयव सर्वदा मिलेरहैं हैं ॥ और जैसे तेशुक्तिकेअवयव सत्यहैं तैसे तेरजतकेअवयवभी सत्यहीं हैं ॥ और जभी दोषसहितचक्षुइंद्रिय का तिनअवयवोंकेसाथ संयोगसंबंधहोवैहै ॥ तभी तेअवयव सत्यरजतकीउत्पत्ति करैं हैं ॥ याकारण तैंही ताrजतकेसत्यरूपताकूंविषयकरणेहारा सतइदंरजतं याप्रकारकाप्रत्यक्ष लोकोंकूंहोवैहै ॥ और शुक्तिकेज्ञानतैं तासत्यरजतका आपणेअवयवोंविषेध्वंसहोवैहै इति ॥ सोयह सत्ख्यातिवादीकामतभी ॥ समीचीननहींहैं ॥ काहेतैं ताशुक्तिविषे जोकदाचित् सत्यरजत उत्पन्नहोताहोवै तौ नेदंरजतं इसअनुभवकारिकै ताशुक्तिविषे रजतकाबाध नहींहोणाचाहिये ॥ जिसकारणतैं सत्यवस्तुकाबाध होतानहीं ॥ जोकदाचित् सत्यवस्तुकाभी बाधहोताहोवै तौ तासत्यशुक्तिकाभी बाधहोणाचाहिये ॥ और सोरजतकाबाधतौ सर्वकूं प्रत्यक्षसिद्धहै ॥ यातैं तारजतविषे सत्यरूपता संभवतीनहीं ॥ और सतइदंरजतं यहउक्तप्रत्यक्षतौ तारजतकेसत्ताकूं विषयकरतानहीं ॥ किंतु तारजतकेअधिष्ठानकीसत्ताकूंहीं विषयकरे है यातैं ताप्रत्यक्षकेबलतैंभी तारजतकीसत्यरूपता सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा शुक्तिकेअवयवोंकेसाथ रजतकेअवयव सर्वदा मिलेरहैं हैं ॥ यहकहणाभी असंगतहै ॥ काहेतैं तारजतकीउत्पत्तितैंपूर्वजैसे ते शुक्तिकेअवयव प्रत्यक्षप्रतीतहोवै हैं तैसे तेरजतकेअवयवभी प्रत्यक्षप्रतीतहोणेचाहिये ॥ और रजत तैजसद्रव्य होवैहै ॥ ता तैजसद्रव्यका अग्निकेसंयोगतैं नाशहोतानहीं ॥ यातैं अत्यंतअग्निकेसंयोगकरिकै ताशुक्तिकेभस्महुए लोकोंकूं तेरजतकेअवयव प्राप्तहोणेचाहिये ॥ और जहां गुंजापुंजविषे अग्नि

काभ्रमहोवैहै तहां तासत्यअग्निकारिकै तिसगुंजापुंजका नाशहोणाचाहिये ॥ उसतैंआदिलेके अनेक प्रकारकेदूषण तासत्ख्यातिवादविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सोसत्ख्यातिवाद अत्यंतअसंगतहै इति॥ और क्षणिकाविज्ञानवादी योगाचारतौ ताभ्रमस्थलविषे आत्मख्याति मानैंहैं ॥ ताकायहअभिप्रायहै शरीरकेअंतरस्थित जोक्षणिकविज्ञानज्ञानहै सोईहीआत्माहै ॥ ताविज्ञानआत्मातैंभिन्न कोईभी अंतरबाह्यपदार्थ हैनहीं ॥ किंतु सर्वपदार्थ ताविज्ञानकेही आकारविशेषहैं ॥ यातैं शुक्तिविषे जोरजतप्रतीतहोवैहै ॥ सोरजतभी ताअंतरविज्ञानकाही धर्म हैं ॥ सोअंतररजतही दोषकेबलतैं बाह्यकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ और नेदंरजतं इसज्ञानतैं तारजतका स्वरूपतैं बाधहोतानहीं ॥ किंतु ताअंतररजत विषे इदंतारूप बाह्यपणेकाही बाधहोवैहै इति ॥ सोयह आत्मख्यातिवादीकामतभी समीचीननहीं है ॥ काहेतैं तिन रजतादिकोंकेअंतरपणेविषे कोईभीप्रमाण तथायुक्ति नहीं है ॥ सर्वलोकोकूं चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै तेरजतादिकपदार्थ बाह्यदेशाविषेही प्रतीतहोवैं हैं ॥ केवलसुखदुःखादिकही अंतरप्रतीतहोवैंहैं ॥ जोकदाचित् सुखदुःखादिकोंकीन्यांई तेरजदतादिकभी अंतरहीहोवैं तौ चक्षुआदिकइंद्रियोंतैंविना भी तिन रजतादिकोंका प्रत्यक्षहोणाचाहिये ॥ सोहोतानहीं ॥ यातैं तेरजतादिक बाह्यहीमानेचाहिये ॥ किंवा इदंतानाम सन्निहितपणेकाहै॥ ताइदंताका जो नेदंरजतं इसज्ञानकरिकै निषेधमानिये ॥ तौ तारजतविषे दूरतारूपअसन्निहितपणाही प्राप्तहोवैगा ॥ अत्यंतसान्निहितविज्ञानरूपता प्राप्तहोवैगीनहीं ॥ यातैं नेदंरजतं यहज्ञान तारजतकेइदंतामात्रकूंनिषेधकरैहै यहविज्ञानवादीकाकहणा मिथ्याही है ॥ इसविज्ञानवादीकेमतका विस्तारतैंखंडनतौ न्यायप्रकाशकेद्वितीयपरिच्छेदविषेकर्‍याहै ॥ सो तहांसेजानिलेणा

इति॥ और नैयायिकतौ ताभ्रमस्थलविषे अन्यथाख्याति मानैं हैं॥तिनोंका यह अभिप्रायहै ॥ इदंरजतं इसभ्रमज्ञानकाविषय जोरजतहै ॥ सोरजत तापुरोवर्त्तिशुक्तिविषेनहीं है ॥ किंतु सोरजत कांताकरहट्टा दिरूपदेशांतराविषेहीस्थितहै ॥ तासत्यरजतकेअनुभवजन्यसंस्कारवालेपुरुषके दोषयुक्तचक्षुइंद्रियकाज भीतारजतकेसदृशपुरोवर्तिशुक्तिकेसाथि संयोगसंबंधहोवैहै॥तभी तासादृश्यदर्शनकरिकै उद्बुद्धहुएसंस्का रतैं तापुरुषकूं तादेशांतरवर्त्तिरजतकीस्मृतिहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर दोषकेवशतैं सोपुरोवर्त्तिशुक्तिहीता देशांतरीयरजतरूपकारिकै प्रत्यक्षहोवैहै ॥ अर्थात् तास्मृतिज्ञानकेविषयभूतरजतका रजतत्वधर्म तापुरो वर्त्तिशुक्तिविषे इदंरजतं याप्रकार प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ इसीकानाम अन्यथाख्यातिहै तहां अन्यव स्तुकी जोअन्यरूपतैंप्रतिहै ताकानाम अन्यथाख्यातिहै जैसे पुरोवर्त्तिशुक्तिकी रजतत्वरूपतैंप्रती तिहै ॥ तथापुरोवर्त्तिरज्जुकी सर्पत्वरूपतैंप्रतीतिहै ॥ इसप्रकार भ्रांतिज्ञानके पुरोवर्त्तिशुक्तिआदकों विषे प्राप्तभयेजेरजतादिकहैं तिनोंका नेदंरजतं इसज्ञानकरिकै निषेधभी संभवहोइसकैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ देशांतरवर्त्तिरजतका जोपुरोवर्त्तिशुक्तिविषेभान अंगीकारकरोगे तौ इदंरजतं इसभ्रमज्ञानकूं तारजतअंशविषे प्रत्यक्षरूपता नहींसंभवैगी॥काहेतैं विशिष्टप्रत्यक्षविषे विषेशण विशेष्य दोनोंकेसाथि इंद्रियकासन्निकर्षही कारणहोवैहै॥जैसे दंडीपुरुषः इसविशिष्टप्रत्यक्षविषे दंडरूपविशेषणकेसाथि तथापु रुषरूपविशेष्यकेसाथिचक्षु इंद्रियका संयोगसंबंध कारणहै॥तैसेपुरोवर्त्तिशुक्तिरूपविशेष्यकेसाथितौ च क्षुइंद्रियका संयोगसंबंधहै ॥ परंतु तादेशांतरवर्त्तिरजतरूपविशेषणकेसाथि ताचक्षुइंद्रियका कोईभीसंब ध नहींहै ॥ यातैं इदंरजतं इसभ्रमज्ञानकूं तारजतअंशविषे प्रत्यक्षरूपता नहींहोवैगी॥और तुमनैयायि

कोंनैं 'इदंरजतं' इसभ्रमज्ञानकूं ताररजतअंशाविषे प्रत्यक्षमान्याहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ विशिष्टप्र त्यक्षविषे विशेषणइंद्रियकेसन्निकर्षकूं हम कारणमानतेनहीं ॥ किंतु विशेषकेसाथि जोइंद्रियकासंबं ह तथा विशेषणकाजोज्ञानहै तथा विशेषणविशेष्यदोनोंके असंबंधकाजोअग्रहणहै । इत्यादिक सामग्रीकूंही हमविशिष्टप्रत्यक्षविषे कारणमानेहैं ॥ साकारणसामग्री ताभ्रमस्थलविषे विद्यमानहीहै ॥ तहांपुरोवर्त्तिशुक्तिरूपविशेष्यकेसाथि चक्षुइंद्रियका संयोगसंबंधभीहै ॥ तथा ताररजतरूपविशेषणका स्मृतिरूपज्ञानभीहै ॥ तथा दोषकेवशतें ताविशेषणविशेष्यदोनोंकेअसंबंधकाअग्रहणभीहै ॥ ताकारण सामग्रीकेविद्यमानहुए इदंरजतं इसरजतविषयकभ्रमज्ञानविषे प्रत्यक्षरूपता संभवैहै॥यातैं ताररजतरूप विशेषणकेसाथि चक्षुइंद्रियकेसन्निकर्षका कछुप्रयोजननहीं है ॥ जोकदाचित् ताविशेषणइंद्रियकेसन्निक र्षकूं विशिष्टप्रत्यक्षविषे नियमतैं कारणताहोवै तौ 'सोऽयंदेवदत्तः' इसप्रत्यभिज्ञाज्ञानकूं प्रत्यक्षरूपतानहीं होवैगी॥काहेतैंतत्तद्देशकालविशिष्टत्वरूपतत्ताविशेषणकूं अतीतहोणेतैं ताविशेषणकेसाथि चक्षुइंद्रियका सन्निकर्षहीसंभवतानहीं ॥ और उक्तरीतिसैं ताविशेषणकेज्ञानकूं जो ताविशिष्टप्रत्यक्षविषे कारणमानि ये तौ तिसतत्तारूपविशेषणका स्मरणज्ञान तहांविद्यमानही है ॥ तथा तादेवदत्तपुरुषकेसाथि चक्षु इंद्रियका संयोगसंबंधभी विद्यमानहीहै ॥ यातैं ताप्रत्यभिज्ञाज्ञानविषे प्रत्यक्षरूपता संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ 'सोऽयंदेवदत्तः' इसज्ञानकूं देवदत्तनामापुरुषअंशविषेही प्रत्यक्षरूपताहै ॥ तिसतत्ताअंश विषे प्रत्यक्षरूपता नहीं है ॥ किंतु स्मृतिरूपताहै ॥ और स्मृतिज्ञानविषे इंद्रियअर्थकेसन्निकर्षकीअपे क्षाहोतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ 'सोऽयंदेवदत्तः' इसज्ञानकूं जो तत्ताअंशविषे स्मृतिरूपमानोंगे ॥

तौ ताएकहीज्ञानविषे प्रत्यक्षत्व स्मृतित्व इनदोनोंधर्मोंका सांकर्यहोवैगा ॥ सोसांकर्यदोष जातिका
बाधकहोवैहै ॥ यातैं प्रत्यक्षत्व स्मृतित्व इनदोनोंधर्मोंविषे जातिरूपताही नहींसंभवैगी ॥ यातैं सोऽयं
देवदत्तः इसज्ञानकूं तातत्ताअंशविषेभी प्रत्यक्षरूपही मान्याचाहिये ॥ इसप्रकार इंद्रियसन्निकर्षतैंविना
ही जैसे तत्ताअंशका प्रत्यक्षहोवैहै ॥ तैसे इंद्रियसन्निकर्षतैंविनाही तादेशांतरवर्त्तिरजतका पुरोवर्त्तिशु
क्तिविषे इदंरजतं यहविशिष्टभ्रमप्रत्यक्ष संभवैहै ॥ अथवा तादेशांतरवर्त्तिशुक्तिकेसाथि चक्षुइंद्रियकासो
रजतविषयकस्मृतिज्ञानरूप अलौकिकसंबंधहै ॥ और पुरोवर्त्तिशुक्तिकेसाथि ताचक्षुइंद्रियका संयोग
रूपलौकिकसंबंधहै ॥ यातैं इदंरजतं इसभ्रमज्ञानकूं तारजतअंशविषेप्रत्यक्षरूपता संभवैहै ॥ तहां संयो
ग १ संयुक्तसमवाय २ संयुक्तसमवेतसमवाय ३ समवाय ४ समवेतसमवाय ५ विशेषणता ६ इन ष
ट्सन्निकर्षोंकूं नैयायिक लौकिकसन्निकर्ष कहेहैं ॥ और सामान्यलक्षण १ ज्ञानलक्षण २ यागजधर्म
लक्षण ३ इनतीनसन्निकर्षोंकूं अलौकिकसन्निकर्ष कहेहैं ॥ तिनदोनों प्रकारकेसन्निकर्षोंकानिरूपण
न्यायप्रकाशकेषष्ठपरिच्छेदविषे प्रत्यक्षनिरूपणविषे विस्तारतैंकऱ्याहै ॥ सोतहांसैंजानिलेणा ॥ इसप्रकारइ
दंरजतं यहभ्रमज्ञान अन्यथाख्यातिरूपहीहै ॥ यातैं ताभ्रमज्ञानकेविषयभूतरजतका मिथ्यापणासंभव
तानहीं इति ॥ सोयह अन्यथाख्यातिवादीनैयायिककामतभी समीचीननहींहै ॥ काहेतैं इदंरजतं इस
भ्रमज्ञानकेविषयभूतरजतकी जोदेशांतरविषेस्थिति मानिये तौ तारजतकेसाथि चक्षुइंद्रियका संयो
गरूपसंन्निकर्ष संभवतानहीं ॥ और इंद्रियअसंबद्धवस्तुका प्रत्यक्षहोतानहीं ॥ यातैं तारजतकेज्ञानकूं
प्रत्यक्षरूपताही नहींहोवैगी ॥ और इदंरजतं इसभ्रमज्ञानतैंअनंतर 'रजतंसाक्षात्करोमि' याप्रकारका

अनुभव लोकोंकूं होवैहै ॥ ताअनुभवतैं तारजतज्ञानकी प्रत्यक्षरूपताही सिद्धहोवैहै ॥ किंवा तानैया यिकनैं जो विशेषणकेज्ञानकूं तथाविशेष्यइंद्रियोंकेसन्निकर्षकूं विशिष्टप्रत्यक्षकासामग्रीपणा कह्याथा सोभीसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं तासामग्रीकूं दंडीपुरुषः इत्यादिकसर्वविशिष्टप्रत्यक्षोंविषे कारणता देखणेविषेआवतीनहीं ॥ किंतु विशेषणविशेष्यदोनोंकेसाथि इंद्रियकेसन्निकर्षकूंही कारणतादेखणेविषे आवैहै ॥ और सोऽयंदेवदत्तः यहप्रत्याभिज्ञाज्ञानभी केवल देवदत्तअंशविषेही प्रत्यक्षरूपहै ॥ तत्ताअंश विषे प्रत्यक्षरूपतानहींहै ॥ किंतु तातत्ताअंशविषे स्मृतिरूपहीहै ॥ और सोऽयंदेवदत्तः इसप्रत्यक्षज्ञान कूं तत्ताअंशमेंस्मृतिरूपमानणेविषे जोनैयायिकनैं प्रत्यक्षत्व स्मृतित्व इनदोनोंधर्मोंकेजातिपणेकाबाध क सांकर्यदोष कह्याथा ॥ सोभीअसंगतहै ॥ काहेतैं वेदांतसिद्धांतविषे अविद्यातैंअतिरिक्त कोईजडजा ति अंगीकारहीनहीं है ॥ किंतु साअविद्याही तिसतिसकार्यविषेअनुगतहुई तिसतिसजातिरूपकरिकै प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सिद्धांतविषे ताजातिसांकर्यकूंदोषरूपता संभवैनहीं ॥ किंवा तानैयायिकनैं तादे शांतरवर्तिरजतकेसाथि चक्षुइंद्रियका जोज्ञानरूपसन्निकर्ष मान्याथा ॥ सोभीसंगतहै ॥ काहेतैंज्ञानकूं भी जोचक्षुकासन्निकर्ष मानिये तौ जहां इसपुरुषकूं पर्वतविषे वह्निकाअनुमितिज्ञानहोवैहै ॥ तहांभी तावह्निका प्रत्यक्षज्ञानहीहोणाचाहिये ॥ काहेतैं 'पर्वतोवह्निमान्' इसज्ञानाविषे पर्वततौ विशेष्यहै और व ह्निविशेषणहै ॥ तहां पर्वतकेसाथितौ चक्षुइंद्रियका संयोगसंबंधहै ॥ और वह्निकेसाथि तावह्निकास्मृति ज्ञानरूपसंबंधहै ॥ ताइंद्रियअर्थकेसन्निकर्षजन्यहोणेतैं तावह्निज्ञानकूं प्रत्यक्षरूपताहीहोवैगी ॥ ताकरिकै अनुमानप्रमाणकाहीलोपहोवैगा ॥ यातैं ताज्ञानकूं इंद्रियकासन्निकर्षपणा संभवतानहीं ॥ किंवा इदंरं

जतं इसभ्रमाज्ञानकेविषयभूतरजतकी जोदेशांतरविषेस्थिति मानिये॥ तौ तारजतार्थीपुरुषकी तादेशांतरविषेही प्रवृत्तिहोणीचाहिये ॥ पुरोवर्तिविषेप्रवृत्तिनहींहोणीचाहिये ॥ जिसकारणतैं ज्ञान जहांआपणा विषयहोवैहै ॥ तहांही पुरुषकूं नियमसे प्रवृत्तिकरेहै॥ यातैं देशांतरविषेस्थितरजत पुरोवर्तिशुक्तिविषे प्रतीतिहोवैहै॥यहअन्यथाख्यातिवादीनैयायिककामत अत्यंतअसंगतहै इति॥ इसप्रकार भ्रमस्थलविषे अख्याति १ असत्ख्याति २ सत्ख्याति ३ आत्मख्याति ४ अन्यथाख्याति ५ इनउक्तपंचख्यातियोंकेअसंभवहुए षष्ठीआनिर्वचनीयख्यातिही अंगीकारकरीचाहिये ॥ अर्थात् ताभ्रमकालविषे शुक्तिविषे अनिर्वचनीयरजत उत्पन्नहोवैहै ऐसामान्याचाहिये ॥ ॥ शंका ॥ ॥ लोकप्रसिद्धरजतकीउत्पत्ति अवयवादिकसामग्रीतैंहोवैहै ॥ साअवयवादिकसामग्री ताशुक्तिदेशविषेहैनहीं ॥ यातैं ताशुक्तिविषे रजतकीउत्पत्तिं संभवतीनहीं॥ जोकहो पुण्यपापरूपअदृष्टही तारजतकीउत्पादकसामग्रीहै ॥ सोभीसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताअवयवादिकदृष्टसामग्रीतैंविना सोअदृष्ट कोईकार्यकूंउत्पन्नकरिसकतानहीं ॥ जोकदाचित् तादृष्टसामग्रीतैंविनाहीं सोअदृष्ट किसीकार्यकूं उत्पन्नकरताहोवै ॥ तौ मृत्तिकाकुलालादिकदृष्टसामग्रीतैंविनाही ताअदृष्टतैं घटादिकोंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ प्रसिद्धरजतकाउत्पादक ॥ जाअवयवादिरूपलौकिकसामग्रीहै ॥ सालौकिकसामग्री ताभ्रमकेविषयभूतरजतका उत्पादक नहींहोवैहै ॥ किंतु तालौकिकसामग्रीतैंविलक्षणसामग्रीही तारजतकाउत्पादकहोवैहै ॥ सोदिखावैहैं ॥ ॥१२६॥
सत्यरजतकेअनुभवजन्यसंस्कारवालेपुरुषकेचक्षुइंद्रियका जभी पुरोवर्त्तिशुक्तिकेसाथि संयोगसंबंधहोवैहै तभी ताचक्षुद्वारा बाह्यनिकस्येहुएअंतःकरणकी ताशुक्तिके इदमाकार तथाचाकचिक्याकार वृत्ति

उत्पन्नहोवैहै।ताचाकचिक्यरूपसादृश्यकेदर्शनतैं तापूर्वदृष्टरजतकेसंस्कार उद्बुद्धहोवैहै ॥ सोउद्बुद्धसंस्कारूपदोषहैसहकारीजिसका ऐसीजा ताइदमंशावच्छिन्नचैतन्यविषेरहणेहारी तथाताशुक्तिके शुक्तित्व नीलपृष्ठ त्रिकोणादिकविशेषअंशकूं आच्छादनकरणेहारी अविद्याहै॥साअविद्या क्षोभकूंप्राप्तहोइकै रजताकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा तारजतविषयकज्ञानाकारपरिणामकंप्राप्त होवैहै॥इसीकानाम अनिर्वचनीयख्यातिहै ॥ इसप्रकारकीरीति रज्जुसर्पादिकसर्वभ्रमस्थलविषेजानिलेणी ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताभ्रमस्थलविषे साअविद्या उक्तरीतिसे रजतादिरूपअर्थाकारपरिणामकूंतौ प्राप्तहोवो ॥ परंतु ताअविद्याका ज्ञानाकारपरिणाममानणा असंगतहै ॥ काहेतैं ताअविद्याका ज्ञानाकारपरिणाममानणेका कोईप्रयोजननहीं है ॥ और प्रयोजनतैंविना किसीअर्थकाअंगीकारकरणा व्यर्थहीहोवैहै ॥ और जोऐसाकहो इदंरजतं इसप्रकारकेव्यवहारवासतै साअविद्याकी रजताकारवृत्ति अवश्यमानीचाहिये ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं सुखदुःखादिकोंकीन्याईं सोप्रातिभासिकरजत साक्षीचैतन्यविषेही अध्यस्तहै ॥ यातैं तारजताकारवृत्तितैंविनाही तासाक्षीचैतन्यकरिकै सोरजतविषयकव्यवहार सिद्धहोइसकेहै ॥ ताव्यवहारवासतै रजताकारअविद्याकीवृत्तिमानणी निष्फलहै ॥ और जोऐसाकहो तारजतके अपरोक्षपणेकीसिद्धिवासतैही ताअविद्यावृत्तिकाअंगीकारहै ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताअविद्यावृत्तितैंविनाभी अनावृतसाक्षीचैतन्यकेतादात्म्यतैं सुखदुःखादिकोंकीन्याईं तारजतकाअपरोक्षपणा संभवहोइसकैहै ॥ यातैं तारजतकेअपरोक्षपणेवासतैभी तावृत्तिकाअंगीकारकरणा निष्फलहै ॥ और जोऐसाकहो, तारजताकारअविद्याकीवृत्ति जोनहींअंगीकारकरिये तौ तारजतका

कालांतरविषेस्मरणहीनहींहोवैगा ॥ काहेतें अनुभवकेनाशजन्यसंस्कारोंतेंही स्मरणज्ञानहोवैहै ॥ और
नित्यहोणेतें साक्षीचैतन्यरूपअनुभवका नाशसंभवतानहीं ॥ यातें सारजताकारअविद्याकीवृत्तिअंगी
कारकरिकै तावृत्तिकेनाशकरिकै तावृत्तिउपहितत्वरूपतें साक्षीकाभीनाशहोणेतें तारजतविषयकसंस्का
रकीउत्पात्ति तथातासंस्कारकरिकै स्मृतिज्ञानकीउत्पत्ति संभवैहै ॥ यातें तारजतकीस्मृतिकेजनकसंस्का
रकीउत्पात्तिवासतें सारजताकारअविद्याकीवृत्ति अवश्यअंगीकारकरीचाहिये ॥ सोयहकहणाभीसंभव
तानहीं ॥ काहेतें तारजतभ्रमतैंपूर्व उत्पन्नभईजाइदमाकारवृत्तिहै ॥ ताइदमाकारवृत्तिकेनाशकरिकैही
तावृत्तिउपहितत्वरूपतें साक्षीकानाशहोणेतें तारजतविषयक संस्कारकीउत्पत्ति तथातासंस्कारतेंस्मृति
कीउत्पत्ति संभवहोइसकेहै ॥ अथवा जैसे सुखदुःखादिरूपविषयकेनाशकरिकै तासुखदुःखादिउपहित
त्वरूपतेंसाक्षीकाभीनाशहोणेतें तासुखदुःखादिविषयक संस्कारोंकीउत्पत्ति तथा स्मृतिज्ञानकीउत्पत्ति
होवैहै ॥ तैसे तारजतरूपविषयकेनाशकरिकैही तारजतउपहितत्वरूपतें साक्षीकाभीनाशहोणेतें तारजत
विषयक संस्कारकीउत्पात्ति तथास्मृतिज्ञानकीउत्पात्ति संभवहोइसकेहै ॥ यातें तारजतविषयकस्मृतिके
जनकसंस्कारकीउत्पत्तिवासतेंभी तारजताकारअविद्यावृत्तिकाअंगीकार निष्फलहै ॥ ॥ समाधा
न ॥ ॥ तारजतकीस्मृतिकाजनक जोसंस्कारहै ॥ तिससंस्कारकीउत्पत्तिवासतेंही तारजताकारअ
विद्यावृत्तिकाअंगीकारहै ॥ काहेतें तारजतकाअनुभवरूपसाक्षीचैतन्यउत्पत्तिविनाशतेंरहितहोणेतेंनि ॥१२७॥
त्यहै ॥ यातें तासाक्षीचैतन्यका स्वरूपतेंतो नाशसंभवतानहीं ॥ और तारजताकारअविद्यावृत्तिकेअं
गीकारकियेहुए तावृत्तिकेनाशकरिकै तावृत्तिउपहितत्वरूपतें तासाक्षीकाभीनाश संभवैहै ॥ तिसतें र

जतविषयक संस्कारकीउत्पत्ति तथातासंस्कारतैं स्मृतिज्ञानकीउत्पत्ति बनिसकैहै॥ यातैं ताररजतस्मृति केजनकसंस्कारकीउत्पत्तिवासतै साररजताकारअविद्याकीवृत्ति अवश्यमानीचाहिये ॥ और तावादीने जोइदमाकारवृत्तिकेनाशतैं रजतस्मृतिजनकसंस्कारकीउत्पत्ति कहीथी ॥ सोकहणाभी असंगतहै ॥ काहेतैं अनुभव संस्कार स्मृति इनतीनोंकासमानवस्तुविषयकत्वरूपतैंही परस्पर कार्यकारणभावहोवै है ॥ अन्यवस्तुविषयकअनुभवतैं अन्यवस्तुविषयक संस्कार वा स्मृति होवैनहीं ॥जोकदाचित् ऐसाहो ताहोवै तौ घटविषयकअनुभवतैं पटविषयकसंस्कार तथास्मृतिभी होणीचाहिये ॥ यातैं ताइदमाकारवृत्तितैं रजत विषयक संस्कारकीउत्पत्ति तथास्मृत्तिकीउत्पत्ति संभवैनहीं ॥ और तावादीनैं जो पूर्व रजतरूपविषयकेनाशतैं ताररजतसंस्कारकीउत्पत्ति कहीथी॥ सोकहणाभी असंगतहै ॥ काहेतैं लोकविषे घटादिकविषयोंकेनाशतैं तिनघटादिकोंकेसंस्कारकीउत्पत्ति देखणेविषेआवतीनहीं॥ किंतु तिनघटादिकोंकेविद्यमानहुएही तिनघटादिकोंकेज्ञानकेनाशतैं संस्कारोंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं सर्वत्र ताज्ञानकेनाशतैंही संस्कारोंकीउत्पत्ति मानीचाहिये ॥ और जोकहो सुखदुःखादिकोंविषे तासुखादिरूपविषयकेनाशतैंही संस्कारोंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवैहै ॥ सोकहणाभी संभवतानहीं ॥ जिस कारणतैं तहांभी संस्कारोंकीउत्पत्तिवासतै सुखदुःखादिआकारवृत्ति अंगीकारकरीजावैहै ॥ अथवा अंतःकरणकूं तथाताकेसुखदुःखादिकधर्मोंकूं वृत्तितैंविनाही साक्षीभास्यपणा रहो ॥ तथा तिनसुखादिकोंकेनाशकरिकै तत्उपहितसाक्षीकेनाशतैं संस्कारोंकीउत्पत्तिभी रहो ॥ तथापि अविद्याकेकार्य जेबाह्य घटादिकपदार्थहैं ॥ तिनोंकेसंस्कारकीउत्पत्तितौ ताघटादिआकारवृत्तिकेनाशतैंही देखणेविषेआवैहै ॥

तैसे सोप्रातिभासिकरजतभी अविद्याकाकार्यहै ॥ यातैं तारजताकारवृत्तिकेनाशतैंही तारजतकेसंस्कारकीउत्पत्ति मानीचाहिये ॥ जोकदाचित ऐसानहीं मानिये ॥ तौ आचार्योंकेग्रंथोंविषे जो स्वप्नपदार्थाकारवृत्तिका अंगीकारकऱ्याहै ॥ तथा जाग्रत्स्वप्नविषे जो अहमाकारवृत्तिका अंगीकारकऱ्याहै ॥ सो सर्व असंगतहोवैगा ॥ जिसकारणतैं वृत्तितैंविनाभी केवलसाक्षीकरिकै तिनपदार्थोंकाप्रकाश संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तारजतकीस्मृतिकेहेतुभूतसंस्कारकीउत्पत्तिवासतै साअनिर्वचनीयरजताकारअविद्यावृत्ति अवश्यमानीचाहिये इति॥ इहां कैएकग्रंथकारतौ ऐसाकहेहैं जैसे घटाकारवृत्तिउपहितासाक्षीचैतन्यविषे जो ताघटकातादात्म्यहै॥यहही ताघटनिष्ठअपरोक्षपणाहै ॥ तैसे ताप्रातिभासिकरजतनिष्ठअपरोक्षपणेकीसिद्धिवासतै तारजताकारअविद्याकीवृत्ति अवश्यमानीचाहिये॥ताव्रत्तितैंविना तारजतविषे सोअपरोक्षपणाही नहींसंभवैगा इति ॥ और कैएकग्रंथकारतौ ऐसाकहेहैं ॥ जोजोव्यवहार कादाचित्कहोवैहै सोसोव्यवहार कादाचित्कज्ञानकरिकैहीसाध्यहोवैहै ॥ जैसे अयंघटः यहकादाचित्कव्यवहार कादाचित्कघटज्ञानकरिकै साध्यहै ॥ तैसे इदंरजतं यहव्यवहारभी कादाचित्कहै॥यातैं तारजतविषयककादाचित्कज्ञानकरिकैही साध्यहोवैगा ॥ तहां साक्षीरूपज्ञानाविषेतौ कादाचित्कपणा संभवतानहीं ॥ किंतु ताअविद्यावृत्तिरूपज्ञानाविषेही सोकादाचित्कपणा संभवैहै॥यातैं तारजतव्यवहारकेकादाचित्कपणेकी सिद्धिवासतैं तारजतगोचरअविद्याकीवृत्ति अवश्यअंगीकारकरीचाहिये ॥ जोकदाचित साक्षीरूपनित्यज्ञानकरिकैभी सोकादाचित्कव्यवहार होताहोवै ॥ तौ घटादिकपदार्थोंका सोकादाचित्कव्यवहारभी तासाक्षीचैतन्यकरिकैंहीसिद्धहोइसकैगा ॥ यातैं घटादिआकारअंतःकरणकीवृत्तिभी नहींसिद्धहो

वेगी इति ॥ और कोईकग्रंथकारोंनैं जोप्रातिभासिकरजतादिआकारअविद्यावृत्तिका खंडनकऱ्याहै ॥ सो प्रौढीवादतैंजानणा ॥ आपणेबुद्धिकीउत्कर्षताकाजोजनावणाहै ताकानाम प्रौढिवादहै ॥ यातैं पूर्वउक्तरीतिसैं भ्रमस्थलविषे साअविद्या रजतादिविषयाकार तथा ताकेज्ञानाकार परिणामकूं प्राप्तहोवैहै यहअर्थ निर्दोषसिद्धभया इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताभ्रमस्थलविषे शुक्तिविषे अविद्यातैंरजतकीउत्पत्तिहोवो ॥ तथापि तारजतविषे मिथ्यापणा कैसेंहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ लोकविषेभी ऐंद्रजालिक पुरुषकीमायाकरिकैरचितपदार्थ मिथ्याहीदेखणेविषेआवैहै ॥ तैसे अविद्याकाकार्यहोणेतैं तेरजतादिक भी मिथ्याहीहैं ॥ ऐसेंरजतादिकोंकेमिथ्यापणेविषे सापूर्वउक्तदृष्टार्थापत्तिही प्रमाणहै इति॥अब दूसरी श्रुतार्थापत्तिकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां 'तरतिशोकमात्मवित्' अर्थयह ॥ आत्मज्ञानवालापुरुष शोक कूं नाशकरेहै ॥ यहां शोकशब्दकरिकै प्रमातृत्व कर्तृत्व आदिकसर्वबंधका ग्रहणकरणा ॥ इसश्रुतिवचनतैं श्रवणकऱ्याजो बंधविषे आत्मज्ञानकरिकैंनिवर्त्त्यपणा ॥ सोज्ञाननिवर्त्त्यपणा ताबंधकूं सत्यमानणेविषे संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं सत्यवस्तुकी ज्ञानकरिकैनिवृत्ति होतीनहीं ॥ किंतु क्रियाकरिकै ही निवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे घटादिकोंकी मुद्गरप्रहारादिरूपक्रियाकरिकै निवृत्तिहोवैहै ॥ और मिथ्यावस्तुकीतो ज्ञानकरिकैही निवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे रज्जुसर्पकी रज्जुकेज्ञानतैंनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं सोआत्मज्ञानकरिकैनिवर्त्त्यपणा ताबंधकेमिथ्यापणेतैंविना अनुपपन्नहुआ ताबंधकेमिथ्यापणेकीकल्पनाकरावैहै॥ इसकानाम श्रुतार्थापत्तिहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सत्यवस्तुकी ज्ञानतैंनिवृत्ति नहींहोती यहआपका कहणा अयुक्तहै ॥ काहेतैं श्रीरामकृतसेतुकेदर्शनतैं सत्यपापकीनिवृत्ति शास्त्रप्रमाणतैंजानाजावैहै ॥

और गरुडकेध्यानतैं सत्यविषेकीनिवृत्ति देखणेविषेआवैहै ॥ तैसे सत्यबंधकीभी आत्मज्ञानतैंनिवृत्ति क्योंनहींहोवै ॥ यातैं ताबंधकेमिथ्यापणेतैंविनाभी सोज्ञाननिवर्त्त्यपणा बनिसकेहैं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सत्यबंधकी ज्ञानतैंनिवृत्तिविषे जोतुमनैं सेतुकादर्शनरूप तथागरुडकाध्यानरूप दृष्टांतकह्याहै सोदृष्टांत दार्ष्टांतिकतैंविषमतावालाहोणेतैं ताउक्तअर्थकीसिद्धिकरिसकैनहीं ॥ सोविषमतादिखावैहै ॥ तहां सेतुके केवलदर्शनमात्रतैं ब्रह्महत्यादिकपापोंकीनिवृत्तिहोतीनहीं ॥ किंतु धर्मशास्त्रविषेकथनक ऱ्येजे ब्रह्मचर्य शौच सत्यभाषण आदिकनियमहैं ॥ तिननियमोंकरिकैसहकृत तासेतुदर्शनतैंही तापा पकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ जोकदाचित् तिननियमोंतैंविना केवल तासेतुकेदर्शनमात्रतैं पापकीनिवृत्तिहो तीहोवै तौ तहांरहणेहारे म्लेच्छादिकोंकेभी तासेतुकेदर्शनतैं पापकीनिवृत्तिहोणीचाहिये ॥ जोकहो तासेतुकेदर्शनमात्रतैं तिनम्लेच्छादिकोंकेभी पापकर्मकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तौ पापकीनिवृत्तिवासतैं तासे तुकेदर्शनकर्ता पुरुषकेप्रति तिननियमोंकाविधानकरणेहाराधर्मशास्त्रही अप्रमाणहोवैगा ॥ यातैं क्रिया रूपनियमोंकरिकैमिश्रितहोणेतैं सोसेतुदर्शनभी क्रियारूपही है ॥ ज्ञानरूपनहींहै ॥ ताक्रियारूपसेतुकेद र्शनतैं तासत्यपापकीनिवृत्ति बनिसकेहै ॥ तैसे गरुडकाध्यानभी मानसक्रियारूपहै ॥ यातैं ताक्रियारू पध्यानतैं तासत्यविषकीनिवृत्तिभी बनिसकेहै ॥ और इहांप्रसंगविषे अन्यसाधनकीअपेक्षातैंरहित केव ल आत्मज्ञानकरिकैही बंधकानिवर्त्त्यपणा श्रुतिनेकथनकऱ्याहै ॥ सोज्ञाननिवर्त्त्यपणा ताबंधकेसत्यप णाविषे संभवतानहीं ॥ यातैं सोज्ञाननिवर्त्त्यपणा ताबंधके मिथ्यापणेकूं कल्पनाकरावैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व ज्ञाननिवर्त्त्यपणेतैं प्रमातृत्वादिकबंधका मिथ्यापणा सिद्धकऱ्या ॥ तहां प्रमाता कि

सकानामहै ॥ अर्थात् आत्माकानाम प्रमाताहै ॥ अथवा अंतःकरणकानाम प्रमाताहै ॥ तहां 'असंगोह्ययंपुरुषः' इत्यादिकश्रुतियोंनैं आत्माकूं असंगकह्याहै ॥ और प्रमाज्ञानकेआश्रयकूं प्रमाताकहेहैं ॥ यातैं ताअसंगआत्माविषे सोप्रमातापणा संभवतानहीं ॥ तैसे अंतःकरणविषेभी सोप्रमातापणा संभवतानहीं ॥ काहेतें सोअंतःकरण भूतोंकाकार्यहोणेतैं घटादिकोंकीन्यांई जडहै ॥ और प्रमातृत्वादिकर्म चेतनकेहैं यातैं जडअंतःकरणविषे सोप्रमातापणा संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ केवलआत्माकूं तथाकेवलअंतःकरणकूं प्रमातापणा हम माननेतनहीं ॥ किंतु अंतःकरणविशिष्टचैतन्यकूंही हम प्रमाता मानेहैं ॥ सोप्रमाताही कर्त्ताहोवैहै तथाभोक्ताहोवैहै ॥ तहां प्रमाज्ञानकाआश्रयहोणेतैं सो अंतःकरणविशिष्टचैतन्य प्रमाता कह्याजावैहै॥ और प्रयत्नरूपकृतिकाआश्रयहोणेतैं कर्ता कह्याजावैहै॥ और धर्मअधर्मकरिकैजन्य जो सुखदुःखकाअनुभवरूपभोगहै ताभोगकाआश्रयहोणेतैं भोक्ता कह्याजावैहै॥ ते प्रमातृत्व कर्तृत्व भोक्तृत्व तीनों ताअंतःकरणविशिष्टचैतन्यरूपप्रमाताकेहीधर्महै ॥केवलआत्माके तथाकेवलअंतःकरणके तेप्रमातृत्वादिकधर्मनहीं है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ सोअंतःकरणविशिष्टचैतन्यरूप प्रमाता ताअंतःकरणतैं तथा चैतन्यतैं पृथक्नहींहै॥ और सोप्रमातृत्वधर्म केवलचैतन्यविषेतथाकेवल अंतःकरणविषे रहतानहीं ॥ यातैं ताअंतःकरणविविष्टचैतन्यविषेभी सोप्रमातृत्वधर्म कैसेरहैगा किंतु नहींरहैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे केवलआत्माविषे तथा केवलअंतःकरणविषे सोप्रमातापणा वास्तवतैंनहींहै ॥ तैसे ताअंतःकरणविशिष्टचैतन्यविषेभी सोप्रमातापणा वास्तवतैं नहींहै ॥ किंतु जैसे शुक्तिविषे रजतकाआरोप कऱ्याजावैहै ॥ तैसे ताअंतःकरणविशिष्टचैतन्यविषे ताप्रमातापणेका आ

रोपकन्याजावैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे शुक्तिविषेरजतकेआरोपतैंपूर्व इसपुरुषकूं देशांतरविषेस्थित रजतका यथार्थअनुभवहुआहै ॥ ताअनुभवजन्यसंस्कारतैंही ताशुक्तिविषे रजतकाआरोपहोवैहै ॥ तैसे ताविशिष्टचैतन्यविषे ताप्रमातापणेकाआरोप तबीसंभवैहै ॥ जबी ताआरोपतैं पूर्व किसीवस्तुविषे ताप्रमातापणेका यथार्थअनुभव हुआहोवैहै ॥ तायथार्थअनुभवतैंविना सोआरोप संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जिसवस्तुका आरोपहोवैहै तिसवस्तुका अनुभवमात्र पूर्वचाहिये ॥ सोअनुभवयथार्थहोवै अथवा भ्रमरूपहोवै ॥ तहां अनादिसंसारविषे इसजीवकूं ताअंतःकरणविशिष्टचैतन्यविषेप्रमातापणेकाभ्रम होताआयाहै ॥ तापूर्वपूर्वभ्रमरूपअनुभवजन्यसंस्कारोंतैं उत्तरउत्तर ताप्रमातापणेकाआरोप संभवैहै ॥ इसप्रकार कर्तृत्वभोक्तृत्वकाआरोपभी जानिलेणा ॥ इहां नैयायिकतो केवलआत्माकेही तेप्रमातृत्वादिकधर्म मानेहैं ॥ सोतिनोंकाकहणा श्रुतिस्मृतिप्रमाणतैंविरुद्धहोणेतैं॥असंगतहै॥ तहां 'साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च । असंगोह्ययंपुरुषः । शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते' इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंनैं निरुपाधिकआत्माकूं निर्गुण असंग निर्लेप कह्याहै॥ ऐसे असंग आत्माविषे तेप्रमातृत्वादिकधर्म संभवतेनहीं ॥ यातैं ताअंतःकरणविशिष्टचैतन्यकेही तेप्रमातृत्वादिकधर्म मान्येचाहिये ॥जोकदाचित् तेप्रमातृत्वादिकधर्म केवलआत्माकेमानिये तौ तिनधर्मोंवालेआत्माविषे असंगनिर्गुणनिर्लेपरूपता संभवतीनहीं ॥ यातैं आत्माकी असंगनिर्गुणनिर्लेपरूपकूंकथनकरणेहारे तेउक्तश्रुतिस्मृतिवचन अप्रमाणरूपहोवैंगे ॥ किंवा ताप्रमातृत्वादिकबंधकूं जोआरोपित नहींमानिये किंतु सत्यमानिये ॥ तौ सत्यवस्तुकी ज्ञानतैंनिवृत्ति होतीनहीं ॥ यातैं नैयायिकोंकेमतविषे ताबंधकीनिवृत्तिरूपमोक्षही नहीं

संभवैगा ॥ यातैंभी ताबंधकूं कल्पितही मान्याचाहिये इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अंतःकरणविशिष्टचैत न्यके प्रमातृत्वादिकधर्म पूर्वकहे सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं आत्मा असंगहै तथा निरवयवहै ॥ और अं तःकरण सावयवहै॥तथा क्रियावालाहै॥ऐसेआत्माका ताअंतःकरणकेसाथि कोईप्रकारकाभीसंबंध संभ वतानहीं ॥ और संबंधतैंविना सोविशिष्टपणा संभवतानहीं ॥ जोकदाचित् संबंधतैंविनाभी विशिष्टपणा होताहोवै ॥ तौ हिमाचलविशिष्टविंध्याचलहै याप्रकारकाव्यवहारभी होणाचाहिये ॥ किंवा सोअंतःक रण सत्यहै वा मिथ्याहै ॥ तहां प्रथमसत्यपक्ष जोअंगीकारकरो तौ तासत्यअंतःकरणकेसंबंधकूंभी सत्यरूपताहीहोवैगी ॥ तासत्यसंबंधकीज्ञानतैंनिवृत्ति होवैगीनहीं ॥ यातैं किसीभी जीवात्माका मोक्ष नहींहोवैगा ॥ तामोक्षकेअभावहुए तामोक्षकाप्रतिपादनकरणेहाराशास्त्रही अप्रमाणरूपहोवैगा ॥ और सोअंतःकरण मिथ्याहै यहद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरो सोभी संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ता अं तःकरणकेमिथ्यापणेविषे कोईभीप्रमाणनहीं है ॥ जोकदाचित् प्रमाणतैंविनाभी अंतःकरणकूंमिथ्यामा नोंगे तौ आत्माविषेभी सोमिथ्यापणा क्योंनहींहोवै ॥ यातैं अंतःकरणविशिष्टचैतन्यके तेप्रमातृत्वा दिकधर्म हैं यहकहणा असंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे शुक्तिकेअज्ञानतैं ताशुक्तिविषे रजत क ल्पितहोवैहै । तैसे आत्माकेअज्ञानतैं ताप्रत्यक्आत्माविषे यह अंतःकरणादिक स्वरूपतैं अध्यस्तहोवै है ॥ अर्थात् कल्पितहोवैहै ॥ तहां अध्यस्त कल्पित आरोपित यहतीनोंशब्द एकहीअर्थकेवाचकहो वे हैं ॥ इतनेकहणेकरिकै ताअंतःकरणकेकल्पितपणेविषे यहअनुमान बोधनकऱ्या ॥ 'अंतःकरणं अ ध्यस्तं जडत्वात् दृश्यत्वात आविद्यकत्वाच्च शुक्तिरजतवत्' अर्थयह ॥ अंतःकरण प्रत्यक्आत्माविषे

अध्यस्तहै ॥ जडहोणेतैं तथादृश्यहोणेतैंआविद्यकहोणेतैं जोजोपदार्थ जड तथा दृश्य तथा आविद्यक होवैहै सोसोपदार्थ अध्यस्तहीहोवैहै ॥ जैसे शुक्तिरजत जडदृश्यआविद्यकहोणेतैं अध्यस्तहै इति ॥ इसअनुमानप्रमाणकरिकै ताअंतःकरणविषे कल्पितपणाही सिद्धहोवैहै तथा 'अतोऽन्यदार्त्तं' अर्थयह ॥ चैतन्यआत्मातैंअन्यसर्वपदार्थ मिथ्याहैं ॥ इसश्रुतिप्रमाणतैंभी ताअंतःकरणविषे कल्पितपणाही सिद्धहोवैहै ॥ यातैं सोअंतःकरण कल्पितहीहै ॥ किंवा 'जडोऽहं चेतनोऽहम्' इसप्रकारके अनुभवतैं जडअंतःकरणादिकोंकातौ आत्माविषेअध्यास प्रतीतहोवैहै ॥ और चेतनआत्माका अंतःकरणविषेअध्यास प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सिद्धांतविषे आत्माका तथाअंतःकरणादिकअनात्माका परस्पर अध्यास विवक्षितहै ॥ परंतु ताकेविषे इतनाभेदहै जैसे अंतःकरणादिक स्वरूपतैं आत्माविषेअध्यस्त हैं ॥ तैसे आत्मा अंतःकरणादिकोंविषे स्वरूपतैं अध्यस्तनहीं है ॥ किंतु ताअंतःकरणविषे सोआत्मा संसर्गरूपतैं अध्यस्तहै ॥ जोकदाचित् अंतःकरणादिकोंकीन्यांई आत्माकूंभी स्वरूपतैंअध्यस्त मानिये ॥ तौ अधिष्ठानकेज्ञानकरिकै जैसे तिनअंतःकरणादिकोंकाबाधहोवैहै ॥ तैसे ताआत्माकाभी बाधहोणाचाहिये ॥ और सर्वकासाक्षीरूपहोणेतैं बाधकेअयोग्यआतमा परमार्थसत्यहै ऐसेआत्माका बाधसंभवतानहीं ॥ यातैं ताअंतःकरणविषे आत्माका स्वरूपतैंअध्यास संभवतानहीं ॥ किंतु संसर्गरूपतैंही अध्याससंभवैहै॥इसीप्रकारके आतमअनात्मकेअध्यासकूं श्रीभगवान्भाष्यकार शारीरकमीमांसाकेआदिविषे वर्णनकरतेभयेहैं ॥ इसप्रकार असंगआत्माविषे अंतःकरणादिकोंके वास्तवसंबंधकेअभावहुएभी आध्यासिकसंबंध संभवैहै ॥ ताआध्यासिकसंबंधकरिकैही आत्माकूं अंतःकरणाविशिष्टताहै ॥ यातैं

ताअंतःकरणविशिष्टचैतन्यविषे तेप्रमातृत्वादिकधर्म संभवैहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ अंतःकरणादिक आत्मांविषेअध्यस्तहैं यहआपकाकहणा तबीसंभवैहै जबी अध्यासकास्वरूप निर्णयहोवै ॥ ताअध्यासकेस्वरूपनिर्णयतैंविना अंतःकरणादिकोंकूं अध्यस्तकहणा संभवतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए अब ताअध्यासकालक्षणकहे हैं ॥ 'परत्रपरावभासः अध्यासः' अर्थयह॥ अन्यविषे जो अन्यका अवभासहै ताकानाम अध्यासहै ॥ सोअध्यास ज्ञानाध्यास १ अर्थाध्यास२ इसभेदकरिकै दोप्रकारका होवैहै ॥ तहां ज्ञानाध्यासपक्षविषेतौ ताअवभासपदकरिकै भ्रांतिज्ञानकाग्रहणकरणा ॥ और अर्थाध्यासपक्षविषे ताअवभासपदकरिकै ताभ्रमज्ञानकेविषयभूतरजतादिकअर्थका ग्रहणकरणा ॥ यातैं सोउक्त अध्यासकालक्षण तिनदोनोंअध्यासोंविषेघटे है इति॥अब यथाक्रमतैं ताज्ञानाध्यासका तथाअर्थाध्यासका लक्षणकहेहैं ॥ तहां 'अतस्मिंस्तद्बुद्धिः ज्ञानाध्यासः' अर्थयह ॥ तिसवस्तुकीअधिकरणताकेअयोग्यअधिकरणविषे सजातिवस्तुकीबुद्धिहै ताकानाम ज्ञानाध्यासहै जैसे वास्तवतैं रजतकीअधिकरणताकेअयोग्यशुक्तिविषे जा इदंरजतं याप्रकारकीबुद्धिहै ॥ तथा वास्तवतैं अंतःकरणादिरूपअनात्माकी अधिकरणताकेअयोग्यआत्माविषे जाअनात्मबुद्धिहै ॥ ताकानाम ज्ञानाध्यासहै इति ॥ और 'प्रमाणाजन्यज्ञानविषयत्वेसति पूर्वदृष्टत्वानाधिकरणं अर्थाध्यासः' अर्थयह॥जोपदार्थ प्रमाणकरिकैअजन्य ज्ञानका विषयहोवै तथापूर्वदृष्टत्वधर्मका अधिकरणनहींहोवैहै सोपदार्थ अर्थाध्यास कह्याजावैहै ॥ जैसे शुक्तिविषेरजत तथाआत्माविषेअंतःकरणादिक अर्थाध्यासरूपहैं ॥ तहां ताशुक्तिरजतकूंविषयकरणेहारा जोइदंरजतं यहज्ञानहै ॥ सोज्ञान अप्रमारूपहोणेतैं किसीभीप्रमाणकरिकैजन्य नहीं है ॥ यातैं

सोरजत ताप्रमाणअजन्यज्ञानकाविषयभी है ॥ और सोरजत आपणीप्रतीतितैंपूर्वथानहीं ॥ यातैं सोर
जत पूर्वदृष्टत्वधर्मका अनधिकरणभी है ॥ यातैं तारजतविषे अर्थाध्यासरूपता संभवैहै ॥ इसप्रकारका
अर्थाध्यासकालक्षण रज्जुसर्पादिकोंविषेभीजानिलेगा ॥ तहां पूर्वदृष्टत्वानधिकरणम् ॥ इतनामात्रही
जो ताअर्थाध्यासकालक्षणकरते तौ अबीनवीनउत्पन्नहुएघटविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥जि
सकारणतैं सोघटभी तापूर्वदृष्टत्वधर्मका अनधिकरणहीहै ॥ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै ता
लक्षणविषे प्रमाणजन्यज्ञानकाविषयत्व कह्याहै ॥ सो ताघटविषैहैनहीं किंतु ताघटविषे प्रमाण
जन्यज्ञानकाविषयत्वहीहै ॥ यातैं ताघटविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैहैनहीं ॥ और 'प्रमाणाजन्य
ज्ञानविषयत्वम्' इतनामात्रंही जो ताअर्थाध्यासकालक्षणकरते तौ स्मरणकरेजे शिवविष्णुगंगादि
कपदार्थहैं तिनोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती॥ जिसकारणतैं प्रमाणअजन्यस्मृतिज्ञानकाविषयत्व
तिनोंविषेभीहै ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे पूर्वदृष्टत्वानधिकरणम् । यहपद
कथनकऱ्याहै ॥ तहां पूर्वदृष्टपदार्थकीहीस्मृतिहोवैहै ॥ यातैं तिनस्मर्यमाणपदार्थोंविषे तापूर्वदृष्टत्वधर्म
का अनधिकरणपणानहीं है ॥ किंतु अधिकरणपणाहीहै ॥ यातैं तिनस्मर्यमाणपदार्थोंविषे ताअर्थाध्या
सकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ तहां इसउक्तअर्थाध्यासकेलक्षणविषे प्रमाणशब्दकरिकै प्रत्य
क्अभिन्नब्रह्मकाबोधक जोतत्त्वमसिआदिकमहावाक्यहै ताकाग्रहणकरणा। तिसमहावाक्यरूपप्रमाण
करिकै अजन्य जोवृत्तिअभिव्यक्तचैतन्यरूपज्ञानहै॥ ताज्ञानकाविषयपणा घटादिकव्यावहारिकपदा
र्थोंविषे तथाशुक्तिरजतादिकप्रातिभासिकपदार्थोंविषे विद्यमानहीहै ॥ और चैतन्यआत्मातैंभिन्न सर्व ॥१३२॥

अनात्मपदार्थ क्षणक्षणविषे परिणामकूंप्राप्तहोवैहै॥ यातैं तिनघटादिकपदार्थोंविषे तापूर्वदृष्टत्वधर्मका अनधिकरणपणाभीहै ॥ यातैं सोउक्तअर्थाध्यासकालक्षण व्यावहारिकप्रातिभासिकसर्वपदार्थोंका साधारणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ वेदांतसिद्धांतविषे ब्रह्मचैतन्यतैंभिन्न जितनैंकी घटादिकव्यावहारिकपदार्थहैं तथा शुक्तिरजतादिकप्रातिभासिकपदार्थ हैं॥ तेसर्व ताब्रह्मचैतन्यविषेअध्यस्तहोणेतैं अर्थाध्यासरूपही हैं॥ यातैं ताउक्तअर्थाध्यासकेलक्षणकूं व्यावहारिकप्रातिभासिकसर्वपदार्थोंका साधारणलक्षणपणा युक्तहै इति ॥ और केएकग्रंथकारतौ यहकहेहैं॥ सोउक्तअर्थाध्यासकालक्षण केवल प्रातिभासिकरजतादिकोंकाही है घटादिकव्यावहारिकपदार्थोंका सोलक्षणनहीं है ॥ यातैं तालक्षणविषेस्थित प्रमाणशब्दकरिकै तत्त्वमसिआदिकप्रमाणका ग्रहणनहींकरणा ॥ किंतु ताप्रमाणशब्दकरिकै अज्ञातअर्थकेबोधकप्रत्यक्षादिकप्रमाणकाही ग्रहणकरणा॥ताप्रत्यक्षादिकप्रमाणअजन्यज्ञानकाविषयपणा केवलशुक्तिरजतादिकप्रातिभासिकपदार्थोंविषेही ह ॥ घटादिकव्यावहारिकपदार्थोंविषेहैनहीं ॥ यातैं प्रातिभासिकशुक्तिरजतादिरूपअर्थाध्यासकाही सोउक्तलक्षणहै इति ॥ अब ताउक्तअर्थाध्यासकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ तहां सोउक्तअर्थाध्यास प्रातीतिक १ व्यावहारिक २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै॥ तहां 'आगंतुकदोषजन्यः प्रातीतिकः' अर्थयह ॥ जोपदार्थ आगंतुकदोषकरिकैजन्यहोवैहै॥ सोपदार्थ प्रातीतिक कह्याजावैहै ॥ इसीप्रातीतिककूं प्रातिभासिकभीकहेहैं जैसे शुक्तिविषेरजत तथारज्जुविषेसर्प तथा मरुभूमीविषेजल इत्यादिकपदार्थ आगंतुकदोषकरिकैजन्यहोणेतैं प्रातीतिक कह्येजावैहैं॥ तहां सोप्रातीतिकपदार्थकाजनकदोष प्रमातृदोष १ विषयदोष २ करणदोष ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥

तहां रागभयादिक प्रमातागतदोषहै ॥ और सादृश्यादिक विषयगतदोषहै ॥ और काचकामलादिक चक्षुआदिककरणगतदोषहै ॥ इसप्रकारकेतीनदोषोंकारिकैजन्यहोणेतैं तेशुक्तिरजतादिक प्रातीतिकअर्थाध्यासरूपहैं इति ॥ और 'प्रातीतिकभिन्नः व्यवहारिकः' अर्थयह ॥ आगंतुकदोषजन्यप्रातीतिक पदार्थतैंभिन्नजोपदार्थ है सोव्यावहारिक कह्याजावैहै ॥ जैसे आकाशतैंआदिलैकेघटपर्यंतपदार्थ व्यावहारिकअर्थाध्यासरूपहैं तहां आत्मज्ञानतैंपूर्व जिनपदार्थोंकाबाध नहींहोवै है तेपदार्थ व्यावहारिक कह्येजावैहैं और आत्मज्ञानतैंपूर्वही जिनपदार्थोंकाबाध होवैहै तेपदार्थ प्रातीतिक तथा प्रातिभासिक कह्येजावैहैं इति॥और केएकग्रंथकारतौ ताप्रातीतिकव्यावहारिकअर्थाध्यासका याप्रकारकासाधारण लक्षण कहैहैं॥ 'दोषसंप्रयोगसंस्कारजन्यत्वं अध्यासत्वम्' अर्थयह ॥ पूर्वउक्तदोष तथाशुक्तिआदिक अधिष्टानकेसाथि चक्षुआदिकइंद्रियकासंबंधरूपसंप्रयोग तथादेशांतरीयरजतादिकोंकेअनुभवजन्य संस्कार इनतीनोंकरिकैजोजन्यपणाहै ॥यहही तिनरजतादिकोंविषे अध्यस्तपणाहै ॥ यद्यपि सिद्धांतविषे अविद्या अनादिहोणेतैं तिनदोषादिकोंतैं जन्यनहीं है ॥ यातैं ताअविद्याअध्यासविषे इसउक्तलक्षण कीअव्याप्तिहीहोवैहै ॥ तथापि यहउक्तलक्षण अंतःकरणादिरूपकार्यअध्यासकाही है ॥अनादिअविद्याका सोलक्षणनहीं ॥ यातैं तालक्षणका अलक्ष्यरूपअविद्याविषे तालक्षणकीअव्याप्तिहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ सोकार्यअध्यासही जाग्रत्स्वप्नविषे इसजीवकेअनर्थका हेतुहोवैहै ॥ और सोअविद्याअध्यास सुषुप्तिविषेविद्यमानहुआभी अनर्थकाहेतुहोतानहीं ॥ यातैं सोउक्तलक्षण ताकार्यअध्यासकाहीहै ॥

॥ शंका ॥ ॥ ताउक्तलक्षणाविषे दोष संप्रयोग संस्कार इनतीनपदोंकेकहणेका क्याप्रयोजनहै ? ॥

॥ समाधान ॥ तालक्षणविषे तिन तीनपदोंकेकहणेकरिकै ताअध्यासके यहदोलक्षण सिद्धहोवैहैं ॥ 'दोषजन्यत्वेसतिसंस्कारजन्यत्वं अध्यस्तत्वम्॥१॥अथवा संप्रयोगजन्यत्वेसतिसंस्कारजन्यत्वं अध्यस्तत्वम्' ॥२॥अर्थयह॥ जोपदार्थ दोषकरिकैजन्यहुआ संस्कारकरिकैजन्यहोवैहै सोपदार्थ अध्यस्तकह्याजावैहै ॥ १ ॥ अथवा जोपदार्थ संप्रयोगकरिकै जन्यहुआसंस्कारकरिकै जन्यहोवैहै॥ सोपदार्थ अध्यस्तकह्याजावैहै ॥ २ ॥ तहां प्रथम लक्षणविषे संस्कारजन्यस्मृतिविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै दोषजन्य यहपद कथनकऱ्याहै ॥ और दोषरूपविषयकरिकैजन्य जादोषकीप्रत्यक्षप्रमाहै ताकेविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे संस्कारजन्य यहपद कथनकऱ्याहै॥तैसे द्वितीयलक्षणविषे भी संस्कारजन्यस्मृतिज्ञानविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै संप्रयोगजन्य यहपद कथनकऱ्याहै॥ और तासंप्रयोगजन्यप्रत्यक्षप्रमाविषे अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै संस्कारजन्य यहपद कथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि इसद्वितीयलक्षणकी सोऽयंदेवदत्तः इसप्रत्यभिज्ञाप्रत्यक्षविषे अतिव्याप्तिहोवैहै ॥ जिसकारणतैं साप्रत्यभिज्ञासंप्रयोग संस्कार दोनोंकरिकैजन्यही है॥ तथापि तालक्षणविषे । प्रत्यभिज्ञाभिन्नत्वे सति । इसविशेषणकेकहणेतैं ताप्रत्यभिज्ञाविषेअतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ आत्माविषे जोअंतःकरणादिकोंकाअध्यासहै ॥ ताकेविषे संप्रयोगजन्यत्व संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताअधिष्ठानआत्माकेसाथि चक्षुआदिकइंद्रियोंका संबंधहैनहीं॥ यातैं ताअंतःकरणादिकोंकेअध्यासविषे ताउक्तलक्षणकीअव्याप्तिहीहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तहां संप्रयोगशब्दकरिकै अधिष्ठानआत्माकेसत्तादिकसामान्यअंशकाज्ञानही विवक्षितहै ॥ सोसामान्यज्ञान ताअंतःकरणादिकोंकेअध्यासतैंपूर्व

विद्यमानही है ॥ सोअधिष्ठानआत्माकासामान्यज्ञान कोईइंद्रियकारिकैजन्यहैनहीं॥किंतु आपणेस्वयं ज्योतिस्वभावैतेंहीहै ॥ यातैं ताअंतःकरणादिकोंकेअध्यासविषे ताउक्तलक्षणकीअव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वदोषकूं तथा संस्कारकूं रजतादिरूपअर्थका जनकपणा कह्या सोसंभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं तादोषसंस्कारकूं रजतादिकोंके ज्ञानकाही जनकपणा देख्याहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताउक्तदोषसंस्कारकेहुएभी तारजतादिरूपअर्थकी तथा ताकेज्ञानकी उत्पत्ति होवैहै ॥ तादोषसंस्कारकेअभावहुए तारजतादिरूपअर्थकी तथा ताकेज्ञानकी उत्पत्तिहोतीनहीं॥ इसप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै तादोषसंस्कारकूं अर्थाध्यास ज्ञानाध्यास दोनोंकेप्रति कारणतासिद्धहोवैहै ॥ यातैं ताज्ञानाध्यासकीन्याईं ताअर्थाध्यासकूंभी दोषसंस्कारकरिकैजन्यता संभवैहै इति॥ इसउक्तअभिप्रायकारिकै ही श्रीभगवान्भाष्यकारनें 'स्मृतिरूपःपरत्रपूर्वदृष्टावभासः' यह अध्यासकालक्षण कह्याहै ॥ यहअध्यासकालक्षण ज्ञानाध्यासका तथाअर्थाध्यासका साधारणहै॥ तहां ज्ञानाध्यासपक्षविषेतौ ताभाष्यउक्तलक्षणका यहअर्थकरणा ॥ स्मृति कहिये संस्कारजन्यहोणेतैंस्मृतिकेसदृश ऐसाजो परत्र पूर्वदृष्टावभास कहिये पूर्वदृष्टअर्थकेसजातीयअर्थकाज्ञानहै ताकानाम ज्ञानाध्यासहै ॥ जैसे शुक्तिविषे इदंरजतं यहज्ञानहै ॥ और अर्थाध्यासपक्षविषे ताभाष्यउक्तलक्षणका यहअर्थकरणा॥ स्मृतिरूप कहिये प्रमाणअजन्यज्ञानकाविषय ऐसाजो पूर्वदृष्टअर्थकेसजातीयअर्थ है ताकानाम अर्थाध्यासहै॥ जैसे शुक्तिआदिकोंविषे रजतादिकहैं इति॥ इसप्रकार अध्यासकेसिद्धहुए प्रमातृत्व कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिकबंधकूं अध्यस्तहोणेतैं मिथ्यापणा बनिसकैहै ॥ यातैं 'तरतिशोकमात्मवित्' इसउक्तश्रुतिवचनतैं श्रवणक

न्याजोबंधविषेज्ञाननिवर्त्यर्त्वसो ताबंधकेमिथ्यापणेतैंविना अनुपपन्नहुआ। ताबंधकेंमिथ्यापणेकूंकल्पना करावैहै ॥ यहपूर्वउक्त श्रुतार्थापत्ति सिद्धभई ॥ ॥ इतिअर्थापत्तिप्रमानिरूपणम् ॥ ५ ॥ ॥ अब षष्ठा अभावप्रमाकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां 'योग्यानुपलब्धिकरणिकाप्रमा अभावप्रमा' अर्थयह ॥ योग्यऐसीजाअनुपलब्धिहै साअनुपलब्धिहैकरण जिसप्रमाका साप्रमा अभावप्रमा कहीजावैहै ॥ तहां जिसअधिकरणविषे जिसअभावकाज्ञानहोवैहै तिसअधिकरणविषे जो तिसअभावकेप्रतियोगीकाज्ञान है ताकानाम उपलब्धिहै ॥ तिसउपलब्धिकूं उपलंभभी कहेहैं ॥ताउपलब्धिकेअभावकानाम अनुपलब्धिहै तथाअनुपलंभहै ॥ साअनुपलब्धिही अभावप्रमाकाकरणहोवैहै ॥ जैसे जिसभूतलविषे घटोऽस्ति याप्रकारका घटकाज्ञान होवैहै ॥ तिसभूतलविषे घटोनास्ति याप्रकारका घटाभावकाज्ञान होतानहीं ॥ किंतु घटोऽस्ति इसज्ञानका जहां अभावहोवैहै तहांही घटोनास्ति याप्रकारका घटाभावकाज्ञानहोवैहै ॥ यातैं ताघटज्ञानकेअभावरूपअनुपलब्धिविषे ताघटाभावविषयकप्रमाकीकरणता अन्वयव्यतिरेककरिकैसिद्धहै ॥ परंतु ताअनुपलब्धिविषे योग्यताभी अपेक्षितहै ॥ जोकदाचित् केवल ताअनुपलब्धिमात्रतैंही साअभावप्रमा उत्पन्नहोतीहोवै तौ अंधकारविषे विद्यमानहुएघटकीभी उपलब्धि होतीनहीं ॥ यातैं घटकेउपलब्धिकाअभावरूपअनुपलब्धि तहां विद्यमानही है ॥ तथा आत्माविषे विद्यमानहुएधर्मअधर्मकीभी उपलब्धिहोतीनहीं ॥ यातैं ताधर्माधर्मकेउपलब्धिकाअभावरूपअनुपलब्धि तहां विद्यमानहीहै ॥ यातैं ताअनुपलब्धिकरिकै ताअंधकारविषेभी घटाभावकीप्रमा उत्पन्नहोणीचाहिये ॥ तथा आत्माविषे धर्माधर्मकेअभावकीप्रमा उत्पन्नहोणीचाहिये ॥ और उक्तस्थलविषे साअभा

वविषयकप्रमा उत्पन्नहोतीनहीं ॥ यातैं अभावप्रमाकीउत्पत्तिकरणेविषे ताअनुपलब्धिकूं योग्यताकी
अपेक्षा अवश्यहोवैहै ॥ तहां ताअनुपलब्धिकारिकै जिसअभावकाज्ञानहोवैहै ॥ ताअभावकेप्रतियोगी
काआरोपकरिकै जहां ताप्रतियोगीकेउपलब्धिका आपादनकऱ्याजावैहै ताउपलब्धिकाअभावरूप
जाअनुपलब्धिहै सा योग्यानुपलब्धि कहीजावैहै ॥ जैसे प्रकाशवाले भूतलविषे ' यदिअत्र घटः स्यात् त
र्हिउपलभ्येत ' अर्थयह ॥ इसभूतलविषे जोकदाचित् घटहोवै तौ इसभूतलकीन्यांई सोघटभी प्रती
तहोवै परंतु प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं इसभूतलविषे घट नहीं है ॥ इसप्रकार घटरूपप्रतियोगीकेसत्त्व
काआरोपणकरिकै ताघटकेउपलब्धिका आपादन कऱ्याजावैहै ॥ यातैं ताघटकेउपलब्धिकाअभाव रू
प साघटकीअनुपलब्धि योग्यकहीजावैहै॥ तायोग्यानुपलब्धितैं ताप्रकाशवालेभूतलविषे घटोनास्ति
याप्रकारकी अभावप्रमा उत्पन्नहोवैहै ॥ और अंधकारविषे विद्यमानहुआभी घट प्रतीतहोतानहीं ॥
और आत्माविषे विद्यमानहुआभीधर्माधर्म प्रतीतहोतानहीं ॥ यातैं इसअंधकारविषे जोघटहोवै तौ प्र
तीतहोवै तथाआत्माविषे जोधर्माधर्महोवै ताप्रतीतहोवै ॥ याप्रकारतैं घटादिरूपप्रतियोगीकेसत्त्वका आ
रोपणकरिकै ताकेउपलब्धिका आपादनकऱ्याजातानहीं ॥ यातैं ताअंधकारविषे घटकीअनुपलब्धि त
था आत्माविषे धर्माधर्मकीअनुपलब्धि योग्यनहीं है ॥ याकारणतैं अंधकारविषे घटकेअभावका तथा
आत्माविषे धर्माधर्मकेअभावका अनुपलब्धितैंज्ञानहोतानहीं ॥ किंतु अनुमानादिकोंतैं ताअभावका
ज्ञानहोवैहै ॥ तहां साउक्तयोग्यानुपलब्धितौ करणहै ॥ और अभावप्रमा फलहै इति ॥ इहां नैया
यिक यहकहेहैं ॥ पूर्वउक्तयोग्यानुपलब्धिकारिकैसहकृत इंद्रियरूपप्रत्यक्षप्रमाकारिकैही भूतलादिकोंवि

षे घटादिकोंकेअभावकाज्ञान होइसकेहै ॥ ताअभावकेज्ञानवास्तै तायोग्यानुपलब्धिकूं पृथक्प्रमाण तामानणेविषे गौरवदोषकीही प्राप्तिहोवैहै ॥ और जोकोईऐसाकहै ताघटाभावकाअधिकरण जोभूतलहै तिसकेसाथितौ चक्षुइंद्रियका संयोगसंबंधहै ॥ परंतु ताघटाभावकेसाथि ताचक्षुइंद्रियका कोई संबंधहैनहीं ॥ यातैं ताअभावकेज्ञानविषे इंद्रियकूं करणतासंभवतीनहीं ॥ सोयहकहणाभी असंगतहै ॥ काहेतैं ताअभावकेसाथि इंद्रियका संयोगादिरूपसंबंधकेअभावहुएभी विशेषणविशेष्यभावरूपसंबंधविद्यमानहै ॥ तासंबंधकरिकै ताअभावका इंद्रियकरिकैप्रत्यक्षज्ञान संभवहै इति ॥ सोयहनैयायिकोंकामतसमीचीननहींहै ॥ काहेतैं चक्षुआदिकइंद्रियका भूतलादिकअधिकरणकेसाथिही संयोगादिरूपसंबंधहै ॥ ताअभावकेसाथि कोईभीसंबंध हैनहीं ॥ यातैं तेचक्षुआदिकइंद्रिय ताभूतलादिरूपअधिकरणकेज्ञानविषेही चरितार्थहैं ॥ अभावज्ञानविषे ताइंद्रियकूं करणतानहीं है ॥ और नैयायिकोंनैं जो इंद्रियका अभावकेसाथि विशेषणविशेष्यभावसंबंध मान्याहै ॥ सोभी असंगतहै ॥ काहेतैं दोपदार्थोंका परस्परसंबंध होवैहै ॥ सोसंबंध तिनदोसंबंधियोंतैं भिन्नहोवैहै ॥ तथा तिनदोनोंसंबंधियोंकेआश्रितहोवैहै ॥ तथा एकहोवैहै ॥ जैसे चक्षुभूतलकासंयोगसंबंध ताचक्षुभूतलरूपदोनोंसंबंधियोंतैं भिन्नभीहै ॥ तथा तिनदोनोंसंबंधियोंकेआश्रितभीहै ॥ तथा एकभीहै ॥ इसप्रकारका संबंधकालक्षण ताविशेषणविशेष्यभावविषे घटतानहीं ॥ काहेतैं 'घटाभाववतभूतलम्' इसप्रतीतिविषे घटाभाव विशेषणहै और भूतल विशेष्यहै ॥ और 'भूतलेघटाभावः' इसप्रतीतिविषे भूतल विशेषणहै और घटाभाव विशेष्यहै ॥ तहां ताअभावविषेरहीजाविशेषणताहै ताकानाम विशेषणभावहै ॥ और ताअभावविषेरहीजाविशेष्यता

है ताकानाम विशेष्यभावहै ॥ तहां सोविशेषणभावतौ ताविशेषणरूपहीहै ॥ और सोविशेष्यभावभी ताविशेष्यरूपहीहै ॥ ताविशेषणविशेष्यतैं सोविशेषणविशेष्यभाव भिन्ननहींहै॥ और अभेदविषे आधारआधेयभाव होतानहीं ॥ यातैं सोविशेषणविशेष्यभाव ताअभावरूपसंबंधीतैं भिन्ननहीं है ॥ तथा तासंबंधीकेआश्रितभीनहींहै ॥ तथाविशेषणताविशेष्यतारूपतैं दोप्रकारकाहोणेतैं एकभीनहींहै ॥यातैंताविशेषणविशेष्यभावकूं इंद्रियसंबंधरूपता संभवतीनहीं ॥ किंवा अभावकेप्रत्यक्षविषे जोविशेषणतासन्निकर्षकूं कारणमानिये तौ व्यवहितभूतलविषेस्थितअभावकाभीचक्षुइंद्रियकरिकैप्रत्यक्षहोणाचाहिये ॥ जिसकारणतैं ताभूतलविषे सोअभाव विशेषणरूपतैं विद्यमानहीहै ॥ तथा चक्षुइंद्रियकाभी ताभूतलकेसाथि संयुक्तसंयोगादिरूप परंपरासंबंध विद्यमानहीहै ॥ किंवा विशेषणताकूंभी जोइंद्रियकासन्निकर्षमानिये तौ भूतलविषेस्थितघटका तथा ताघटविषेस्थितरूपादिकोंकाभी ताविशेषणतासन्निकर्ष करिकैही प्रत्यक्षसंभवैहै ॥ यातैं नैयायिकोंनै अंगीकारकऱ्ये जेसमवायादिकसन्निकर्ष हैं ॥ तिनसर्वोंका लोपहोवैगा ॥ यातैं ताविशेषणविशेष्यभावविषे सन्निकर्षरूपता संभवतीनहीं॥ और चक्षुआदिकइंद्रिय स्वअसंबद्धअर्थकेप्रत्यक्षकूं उत्पन्नकरतेनहीं यातैं ताअभावकेज्ञानविषे इंद्रिय करणनहीं हैं ॥किंतुसा उक्तयोग्यानुपलब्धिही करणहै इति॥ अब प्रसंगतैं करणकालक्षणकहैहैं ॥ 'असाधारणकारणं करणम्' अर्थयह ॥ जिसकार्यका जो असाधारणकारणहोवैहै ॥ सोअसाधारणकारण तिसकार्यकाकरण कह्याजावैहै ॥ जैसे प्रत्यक्षप्रमाके चक्षुआदिकइंद्रिय असाधारणकारणहोणेतैं करणहैं ॥ तथा उक्तअभावप्रमाका योग्यानुपलब्धि असाधारणकारणहोणेतैं करणहै ॥ इसप्रकार अनुमानादिकोंविषेभीकर

णकालक्षण जानिलेणा ॥ तहां कार्यमात्रकेप्रति साधारणकारणरूप जे अदृष्ट देश काल आदिकहैं ति नोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे 'असाधारण' यहपद कथनकऱ्याहै ॥ इति ॥ तहां यहउक्तकारणकालक्षण कारणकरिकैघटितहै ॥ यातैं ताकारणकेलक्षणकीसिद्धिवासतै कारण कालक्षण कहेहैं ॥ 'नियतपूर्ववृत्ति कारणम्' अर्थयह ॥ जोपदार्थ जिसकार्यकी उत्पत्तितैंपूर्वनियमकरि कै वर्त्तै हैं सोपदार्थ तिसकार्यकेप्रति कारण कह्याजावैहै ॥ जैसे घटरूपकार्यकीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे मृत्तिका कुलाल दंड चक्र आदिक नियमकरिकैरहेहैं ॥ यातैं तेमृत्तिकादिक ताघटरूपकार्यकेप्रति कार ण कह्येजावैहैं इति ॥ अब ताउक्तकारणका विभाग वर्णनकरेहैं ॥ सोउक्तकारण उपदानकारण १ नि मित्तकारण २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां 'कार्यान्वितंकारणं उपादानकारणम्' अर्थयह ॥ कार्यविषे अन्वित कहिये तादात्म्यभावकूंप्राप्तभया जोकारणहै सो उपादानकारण कह्याजावैहै ॥ जैसे घटरूपकार्यविषेअन्वित मृत्तिका ताघटका उपदानकारणहै ॥ और पटरूपकार्यविषेअन्वित तंतु तापट का उपादानकारणहै ॥ तहां घटादिककार्यके निमित्तकारणरूप जेकुलालादिकहैं तिनोंविषे इसउपादा नकारणकेलक्षणकीअतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे 'कार्यान्वितम्' यहपद कथनकऱ्याहै॥ तेकुलालादिकनिमित्तकारण घटादिरूपकार्यविषे आन्वितहोतेनहीं ॥ यातैं तिनोंविषे अतिव्याप्तिहोवै नहीं ॥ और घटादिककार्यविषेअन्वित जेरूपादिकहैं तिनोंविषे इसलक्षणकीअतिव्याप्तिके निवृत्तकरणे वासतै 'कारणम्' यहपद कथनकऱ्याहै ॥ तेरूपादिक ताघटकेकारणहैंनहीं ॥ यातैं तिनोंविषे तालक्ष णकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ और 'कार्यानुकूलव्यापारवत्कारणं निमित्तकारणम्' अर्थयह ॥ का

र्यकीउत्पत्तिकेअनुकूल जोव्यापारहै ताव्यापारवालाकारण निमित्तकारण कह्याजावेहै ॥ जैसे घटादि ककार्यकीउत्पत्तिकेअनुकूलव्यापारवालेकुलालादिक ताघटादिरूपकार्यके निमित्तकारणहैं ॥ और ब्र ह्मतैंइसजगत्रूपकार्यका उपादानकारण तथानिमित्तकारण दोनों है ॥ यातें ताब्रह्मविषे इसनिमित्त कारणकेलक्षणकी तथाउक्तउपादानकारणकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्म कूं प्रपंचका उपादानकारणपणा संभवतानहीं ॥ काहेतें लोकाविषे समानस्वभाववाले मृत्तिकाघटादि कोंकाही परस्पर उपादानउपादेयभाव देख्याहै ॥ विलक्षणस्वभाववालेपदार्थोंका सोउपादानउपादेय भाव कहांभीदेखीतानहीं ॥ और ब्रह्मतौ चेतनरूपहै ॥ और कार्यप्रपंच जडरूपहै ॥ यातैं ब्रह्मप्रपंच दोनों परस्परविलक्षणहैं॥ यातैं ताविलक्षणब्रह्मकूं ताविलक्षणप्रपंचका उपादानकारणपणा संभवतान हीं ॥ और जोऐसाकहो ॥ जैसे इंद्रियोंकेअगोचर धर्मअधर्मविषे श्रुतिही प्रमाणहै ॥ तैसे इंद्रियोंके अगोचरब्रह्मविषेभी श्रुतिही प्रमाणहै ॥ और 'यतोवाइमानिभूतानिजायंते' इत्यादिकश्रुति ब्रह्मतैं जगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकूंकथनकरतीहुई ताब्रह्मकूंही जगत्का उपादानकारण कहेहै ॥ यातैं ताश्रु तिकेबलतैंही ब्रह्मकूं जगत्कीउपादानकारणता सिद्धहै ॥ और श्रुतिसिद्धअर्थविषे युक्तिकीअपेक्षा हो तीनहीं ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतें युक्तिकेविरोधहुए ताश्रुतिअर्थका निर्णय होइसक तानहीं ॥ जोकदाचित् युक्तिकेविरोधहुएभी श्रुतिअर्थकानिर्णय होताहोवै तौ ताविरोधके निवृत्ति करणेवासतै जोउत्तरमीमांसाकाआरंभकर्‍याहै सोआरंभही व्यर्थहोवैगा ॥ यातैं उक्तयुक्तितैंविरुद्धहो णेतैं चेतनब्रह्मकूं जडजगत्कीउपादानकारणता संभवतीनहीं ॥ किंवा ताब्रह्मकूं जगत्कीनिमित्तका

रणताभी संभवतीनहीं ॥ काहेतैं लोकविषे घटादिककार्योंकेनिमित्तकारणरूप जेकुलालादिकहैं ॥ ते कुलालादिक संगवान् तथाकर्त्ताही देखणेमेंआवै हैं ॥ और ब्रह्मकूंतोश्रुति असंग तथा अकर्ता कहेहैं ॥ यातैं ताअसंगअकर्ताब्रह्मकूं जगत्कीनिमित्तकारणताभी संभवतीनहीं ॥ यातैं ताजडप्रपंचका जड प्रधानही उपादानकारण मान्याचाहिये ॥ और कपिलस्मृतिभी ताजडप्रधानकूंही जगत्काउपादान कारणकहेहैं ॥ और पूर्वउक्तयुक्तिके तथा कपिलस्मृतिके विरोधहुए साउक्तश्रुतिभी ताप्रधानकूंही ज गत्काउपादानकारणकहेहैं ॥ यातैं सोजडप्रधानही जडप्रपंचका उपादानकारणहै इति ॥ ॥ समाधा न ॥ ॥ मायाउपहितब्रह्महीं इसप्रपंचका उपादानकारणहै तथानिमित्तकारणहै ॥ और विलक्षणपदा र्थोंकाकार्यकारणभाव नहींहोता ॥ यहजोपूर्वसांख्ययोंनैं कह्याथा सोभीअसंगतहै ॥ काहेतैं लोक विषे चेतनपुरुषतै अचेतनकेशनखादिकोंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवैहै ॥ तथा अचेतनगोमयतैचेतनवृश्चि कादिकोंकीउत्पत्ति देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं विलक्षणपदार्थोंकाभी कार्यकारणभाव लोकविषेप्रसिद्ध है ॥ यातैं चेतनब्रह्मतैं अचेतनप्रपंचकीउत्पत्ति संभवैहै ॥ और 'सोऽकामयतबहुस्याम्' इत्यादिकश्रु तिनैं ब्रह्मकूंही जगत्काउपादानकारण कह्याहै ॥ ताश्रुतिकेविरोधहुए केवलयुक्तिकूंअप्रमाणरूपताहो णेतैं सोउत्तरमीमांसाकाआरंभभी संभवैहै ॥ जिसकारणतैं श्रुतिअनुकूलयुक्तिही प्रमाणरूपहोवैहै ॥ श्रु तितैंविरुद्ध केवलयुक्ति प्रमाणरूपहोतीनहीं ॥ यातैं उक्तश्रुतितैं सोब्रह्महीं जगत्काउपादानकारणसि द्धहोवैहै ॥ और सांख्ययोंनैं कल्पनाकऱ्याजोप्रधानहै सोजगत्काउपादानकारण होइसकतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोप्रधान अचेतनहै ॥ और अचेतनवस्तुकी स्वतःप्रवृत्ति संभवतीनहीं ॥ किंतु अचेतन

रथादिकोंकी चेतनपुरुषकेअधीनही प्रवृत्तिदेखणेविषेआवैहै ॥ और दृष्टअर्थकेअनुसारही अदृष्टअर्थकी कल्पनाहोवैहै ॥ यातैं ताप्रधानकूं जगत्कीउपादानकारणतासंभवतीनहीं ॥ और जैसे मनुआदिक स्मृति श्रुतिमूलकहैं ॥ तैसे साकपिलस्मृति श्रुतिमूलकनहीं है ॥ याकारणतैं अप्रमाणरूपहै ॥ श्रुतिमूलकस्मृतिही प्रमाणरूपहोवैहै ॥ यातैं ताकपिलस्मृतितैंभी ताप्रधानकूं जगत्कीकारणता सिद्धहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तुम्हारेमतविषेभी असंगब्रह्मकूं जगत्कीकारणता कैसेसंभवैगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ हमारेमतविषे असंगनिर्विकारशुद्धब्रह्म जगत्काकारण नहीं है ॥ किंतु अनिर्वचनीयमायाउपहितब्रह्मही जगत्का उपादानकारण तथानिमित्तकारणहै ॥ तहां आवरणशक्तिविशिष्टमायारूप उपाधिकीप्रधानताकरिकैतौ सोब्रह्म जगत्का उपादानकारणहै ॥ और ज्ञानशक्तिविशिष्टमायाउपहित आपणेस्वरूपकीप्रधानताकरिकै सोब्रह्म जगत्का निमित्तकारणहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'तदैक्षतबहुस्यांप्रजायेय' अर्थयह ॥ सोमायाउपहित ब्रह्मसृष्टितैंपूर्व भावी प्रपंचविषयक ज्ञानरूपईक्षणकूं करताभया ॥ जो मैंपरमेश्वर बहुतरूपहोइकेउत्पन्नहोवों इति ॥ तहां इस श्रुतिविषे तदैक्षत इसवचनकरिकै ब्रह्मकूंजगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व ईक्षणकर्तृत्व कथनकऱ्या ॥ ताकरिकब्रह्मकूं जगत्कानिमित्तकारणपणा सिद्धहोवैहै ॥ जैसे घटकीउत्पत्तितैं पूर्व ताघटकी उत्पत्तिकेअनुकूलज्ञानवालेकुलालादिकोंकूं ताघटकेप्रतिनिमित्तकारणताहीहोवैहै ॥ और 'बहुस्यांप्रजायेय' इसवचनकरिकै ब्रह्मका बहुतरूपहोणा कथनकऱ्या ॥ ताकरिकै ब्रह्मकूं जगत्काउपादानकारणपणा सिद्धहोवैहै ॥ जैसे घटशरावादिकबहुतरूपहोणेहारीमृत्तिकाकूं तिनघटशरावादिककार्योंका उपादानकारणपणा प्रसिद्धहीहै इति ॥ किंवा श्रीव्यासभगवान्‌नेभी

ब्रह्मसूत्रोंविषे तामायाउपहितब्रह्मकूंही जगत्काउपादानकारण तथा निमित्तकारण कह्याहै ॥ तहांसूत्र ॥ 'प्रकृतिश्चप्रतिज्ञादृष्टांतानुपरोधात्' अर्थयह ॥ सोमायाउपहितब्रह्महीं जगत्का उपादानकारण तथा निमित्तकारण है ॥ ऐसामानणेविषेही श्रुतिउक्त प्रतिज्ञा तथादृष्टांत संभवैहै ॥ तहां श्रुतिविषे एकब्र ह्मकेज्ञानतैं जो सर्वजगत्काज्ञान कथनकर्‍याहै ताकानाम प्रतिज्ञाहै ॥ और एकमृत्तिकाकेज्ञानतैं जो तामृत्तिकाकेघटशरावादिकसर्वकार्योंकाज्ञान कथनकर्‍याहै ताकानाम दृष्टांतहै ॥ साप्रतिज्ञा तथादृ ष्टांत तबीसंभवै है जबी ताब्रह्मकूं सर्वजगत्का उपादानकारण मानिये ॥ उपादानकारणकेज्ञानतैंही कार्यकाज्ञानहोवैहै यातैं तासूत्रतैंभी ब्रह्मकूं जगत्का अभिन्ननिमित्तउपादानकारणपणाही सिद्धहो वैहै ॥ इसअर्थकूं प्रथमपरिच्छेदविषे ऊर्णनाभिकेदृष्टांततैं विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं इति॥अब ताका रणका अन्यप्रकारतैं विभाग वर्णनकरेहैं ॥ सोउक्तकारण साधारण १ असाधारण २ इसभेदकरिकै पु नःदोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कार्यमात्रकाउत्पादकजोकारणहै सो साधारणकारण कह्याजावैहै ॥ जैसे कार्यमात्रकेजनक अदृष्ट देश काल आदिकहैं ॥ और कार्यविशेषकाउत्पादक जोकारणहै सो असाधार णकारण कह्याजावैहै ॥ जैसे चाक्षुषादिकप्रमाविषे चक्षुआदिक असाधारणकारणहै ॥ इसप्रकार घटा भावविषयकप्रमाविषे उक्तघटानुपलब्धिकूं असाधारणकारणताहोणेतैं कारणरूपता संभवैहै इति॥ अब ताअभावप्रमाकेविषयभूतअभावकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ तहां 'नञर्थोल्लिखितधीविषयः अभावः' अ र्थयह ॥ नञशब्दकेअर्थकूंविषयकरणेहारी जा नास्ति याप्रकारकीप्रतीतिहै ॥ ताप्रतीतिकाविषय अ भाव कह्याजावैहै ॥ जैसे 'भूतलेघटोनास्ति' याप्रकारकीप्रतीतिकाविषय भूतलविषे घटकाअभावहै इ

ति ॥ और सोऽउक्तअभाव एकअत्यंताभावही है ॥ प्रागभावादिकभेदकरिकै ताअभावकीचारिप्रकार ताविषे कोईभीप्रमाणनहीं है ॥ इहां नैयायिकतौ ऐसाकहैहैं ॥ सोअभाव प्रागभाव १ प्रध्वंसाभाव २ अत्यंताभाव ३ अन्योन्याभाव ४ इनभेदकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां घटकीउत्पत्तितैंपूर्व ताघटकेअवयवरूपकपालोंविषे 'घटोभविष्यति' याप्रकारकीप्रतीतिहोवैहै ॥ ताप्रतीतितैं तिनकपालोंविषे ताघटकाप्रागभाव सिद्धहोवैहै ॥ और मुद्गरप्रहारादिकोंकरिकै ताघटकेभग्नहुएतैंअनंतर तिनकपालोंविषे 'घटोध्वस्तः' याप्रकारकीप्रतीति होवैहै ॥ ताप्रतीतितैं तिनकपालोंविषे ताघटकाप्रध्वंसाभाव सिद्धहोवैहै॥और घटकेअविद्यमानकालविषे 'भूतलेघटोनास्ति' याप्रकारकीप्रतीति होवैहै ताप्रतीतितैं ताभूतलविषे ताघटकाअत्यंताभाव सिद्धहोवैहै॥ और भूतलविषेघटकेविद्यमानहुएभी 'भूतलेनघटः' याप्रकारकीप्रतीतिहोवैहै ॥ ताप्रतीतितैं ताभूतलविषे ताघटकाभेदरूपअन्योन्याभाव सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकारकीविलक्षणप्रतीतियोंकेबलतैं ताएकहीघटका चारिप्रकारकाअभाव सिद्धहोवैहै ॥ तहां प्रागभावतौ अनादिहोवैहै तथानाशवान्होवैहै ॥ और प्रध्वंसाभावतौ उत्पत्तिवालाहोवैहै तथानाशतैंरहितहोवैहै ॥ और अत्यंताभाव तथाअन्योन्याभाव यहदोनोंअभाव उत्पत्तिविनाशतैंरहितहोणेतैं नित्यहोवैहैं ॥ इन चारिअभावोंका विस्तारतैंनिरूपण न्यायप्रकाशकेचतुर्थपरिच्छेदविषेंकर्‍याहै ॥ सो तहांसेजानिलेणा इति ॥ सोयहनैयायिकोंकामत समीचीननहीं है ॥ काहेतैं 'घटोभविष्यति' यहउक्तप्रतीति अभाववाचक नशब्दतैंरहितहोणेतैं ताप्रागभावकूंविषयकरतीनहीं ॥ किंतु आगेभाविष्यत्कालविषेहोणेहारा जो घटका सत्ताकेसाथि संबंधहै ॥ तासत्तासंबंधकूंही साप्रतीति विषयकरेहै ॥ यातैं ताप्रतीतितैं घटकाप्रा

गभाव सिद्धहोइसकैनहीं ॥ किंवा ताघटका जोउत्पत्तितैंपूर्व प्रागभाव मानिये तौ उत्पत्तितैंपूर्वअ सत्होणेतैं ताघटकीउत्पत्तिही नहींहोवैगी ॥ जोकदाचित् असत्कीभी उत्पत्तिहोतीहोवै तौ असत् शशविषाणवंध्यापुत्रादिकोंकीभी उत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे असतकीउत्पत्ति न हींसंभवती ॥ तैसेसत्कीभी उत्पत्तिनहींसंभवती ॥ काहेतैं जिसघटकीउत्पत्तिवासतै कुलालदंडचक्रा दिकारकोंका व्यापारहोवैहै ॥ सोघटतौ तुमारेमतविषे आपणीउत्पत्तितैंपूर्वहीसिद्धहै ॥ यातैं सोका रकव्यापार व्यर्थहीहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि सोघट आपणीउत्पत्तितैंपूर्वमृत्तिकादिका रणरूपकरिकै विद्यमानहीहै ॥ तथापि ताकारकव्यापारतैंपूर्व ताघटकीआभिव्यक्तिहोतीनहीं ॥ और ताकारकव्यापारतैंअनंतर ताघटकीअभिव्यक्ति होवैहै ॥ यातैंताघटरूपकार्यकीअभिव्यंजकतामात्रक रिकै ताकारकव्यापारकूंभी अर्थवत्ता बनिसकैहै ॥ किंवा उत्पत्तितैंकार्यकी कारणरूपकरिकैसत्ता केव लउक्तयुक्तिकरिकैहीसिद्धनहीं है ॥ किंतु श्रुतिसूत्रकरिकैभीसिद्धहै तहांश्रुति ॥ 'सदेवसोम्येदमग्रआ सीत्' अर्थयह ॥ हे प्रियदर्शन श्वेतकेतु यहदृश्यमानकार्यजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व सत्होताभया अर्थात् परमकारणपरमात्मरूपकरिकै सत्होताभया इति ॥ तहांसूत्र ॥ 'सत्त्वाच्चापरस्य' अर्थयह ॥ इसप्रपंचरूपकार्यका आपणीउत्पत्तिपूर्व कारणरूपकरिकैसत्वहोणेतैं इसवर्तमानकालविषेभीतापरम कारणतैं अनन्यत्वही है ॥ अर्थात् तापरमकारणरूपपरमात्मातैं भिन्नरूपकरिकैआभावही है इति॥जो कदाचित् ताप्रागभावकूंअंगीकारकरिये तौ इसउक्तश्रुतिसूत्रका विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ यातैं श्रुतिसू त्रतैंविरुद्धहोणेतैं सोप्रागभाव अंगीकारकरणेयोग्यनहींहै इति ॥ किंवा ताप्रागभावकीन्याईं ताप्रध्वंसा

 भावविषेभी कोईप्रमाणनहीं है ॥ काहेतें ब्रह्मसाक्षात्कारतैंपूर्व इसकार्यप्रपंचका अत्यंतनाशहोतानहीं ॥
किंतु बीजांकुरकीन्यांई सृष्टिप्रलयकूं प्रवाहरूपकरिकै अनादिपणाहीहोवैहै।।अर्थात् जैसे बीजतैंअंकूर होवैहै ताअंकुरतैं पुनःबीजहोवैहै॥ताबीजतैंपुनःअंकुरहोवैहै॥ तैसे सृष्टितैंअनंतरप्रलयहोवैहै ताप्रलयतैं अनंतर पुनःसृष्टिहोवैहै तासृष्टितैं अनंतर पुनःप्रलयहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं तेसृष्टिप्रलय प्रवाहरूपकरिकै अनादिहोवैहै॥ और प्रलयकालविषेभी सोकार्यप्रपंच अत्यंतनाश होतानहीं किंतु आपणेकारण विषे तिरोभूतहुआ रहेहै॥ इसप्रकार इदानींकालविषेभी भग्नहुएघटादिक कार्य आपणेकपालादिरूपकारणोंविषे तिरोभूतहुए रहेहैं ॥ तिसीतिरोभावअवस्थाकूं 'घटोध्वस्तः' यहउक्तप्रतीति विषयकरेहै ॥ यातैं ताउक्तप्रतीतितैं ताघटकेप्रध्वंसाभावकीसिद्धि होइसकैनहीं॥ किंवा प्रलयादिकोंविषे जोकदाचित् कार्यका अत्यंत नाश मानिये ॥ तौ 'सदेवसौम्येदमग्रआसीत् । आत्मावाइदमेकएवाग्रआसीत् । नासतोविद्यतेभावोनाभावोविद्यतेसतः' इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंनैं जो सृष्टितैंपूर्व लीनहुएकार्यका कारणरूपकरिकैसत्त्व कथनकर्‍याहै सोअसंगतहोवैगा ॥ यातैं ताश्रुतिस्मृतितैंविरुद्धहोणेतैं सोप्रध्वंसाभावभी अंगीकारकरणेयोग्यनहीं है इति ॥ किंवा नैयायिकोंनैं अत्यंताभावकूं तथा अन्योन्याभावकूं जो उत्पत्तिविनाशतैंरहित नित्यमान्याहै सोतिनोंकाकहणाभी असंगतहै ॥ काहेतें 'एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म' यहश्रुतितौ ब्रह्मकूं सर्वद्वैतप्रपंचतैंरहितकहेहै ॥ और 'नेहनानास्तिकिंचन' यहश्रुति ताब्रह्मविषे सर्वद्वैतप्रपंचका निषेधकरेहै ॥ और 'अतोऽन्यदार्त्तम्' यहश्रुति ताब्रह्मतैंभिन्नसर्वप्रपंचकूंमिथ्या कहेहै ॥ जोकदाचित् ताअत्यंताभावकूं तथा अन्योन्याभावकूं नित्यमानिये । तौ इनसर्वश्रुतियोंका

विरोधहोवैगा ॥ यातैं तिनदोनोंअभावोंकूंभी अनित्यहीमान्याचाहिये ॥ किंवा ताअभावकेसाथि च क्षुआदिकइंद्रियोंका कोईप्रकारकाभीसंबंध बनिसकतानहीं ॥ यहवार्त्ता पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं 'भूतलेघटोनास्ति' इसउक्तप्रत्यक्षप्रतीतिकरिकै तानित्यअत्यंताभावकीसिद्धि संभवतीनहीं ॥ और 'घटःपटोन' इत्यादिकप्रतीति ताअन्योन्याभावकूं विषयकरतीनहीं ॥ किंतु घट पट दोनोंकेअभेदकाजो अत्यंताभावहै तिसकूंही साप्रतीति विषयकरेहै ॥ यातैं ताउक्तप्रतीतितैं अन्योन्याभावकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ और इसभेदरूपअन्योन्याभावकाप्रथमपरिच्छेदविषेभी विस्तारतैंखंडनकरिआयेहैं॥ इसप्रकारप्रागभाव प्रध्वंसाभाव अन्योन्याभाव इनतीनअभावोंकेअनिरूपणहुए एकअत्यंताभावही मान्याचाहिये॥ और सोअत्यंताभावकी पारमार्थिक १ व्यावहारिक २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां 'नेहनानास्तिकिंचन' इसश्रुतिनैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मविषे बोधनकऱ्याजो जीवईश्वरजगत्रूपद्वैतप्रपंचकाअत्यंताभावहै ॥ सोअत्यंताभाव पारमार्थिक कह्याजावैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताउक्तअत्यंताभावविषेपारमार्थिकपणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं प्रतियोगीकीसत्ताकेअधीनही अभावकीसत्ताहोवैहै ॥ और प्रपंचरूपप्रतियोगी कल्पितहै ॥ यातैं ताप्रपंचकाअत्यंताभावभी कल्पितहीहोवैगा किंवा ताप्रपंचकेअत्यंताभावकूं जोपारमार्थिक मानोंगे तौ ब्रह्मकूंअद्वितीयरूपकहणेहारी 'एकमेवाद्वितीयंब्रह्म' इसश्रुतिकाभी विरोधहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ कल्पितवस्तुकाअभाव अधिष्ठानरूपहीहोवैहै ॥ अधिष्ठानतैंभिन्नहोतानहीं ॥ यातैं कल्पितप्रपंचकाअत्यंताभावभी अधिष्ठानब्रह्मरूपहीहै ॥ ताअधिष्ठानतैंभिन्ननहींहै ॥ और ताअधिष्ठानब्रह्मका पारमार्थिकपणा श्रुतिस्मृतियोंकरिकैसिद्धहीहै ॥ यातैं ताअधिष्ठानरूपताकरिकै ताअत्यंताभावविषेभी सोपारमार्थिकपणा संभवैहै ॥ और सोअत्यंताभाव ताअधिष्ठा

नब्रह्मतैंभिन्ननहींहै ॥ यातैं ताअद्वैतबोधकश्रुतिकाभी विरोधहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताअत्यंता भावकूं जो अधिष्ठानरूप मानोंगे तौ ताअधिष्ठानका अनुपलब्धिप्रमाणकरिकैज्ञान संभवतानहीं ॥ यातैं तुमारेमतविषे ताअनुपलब्धिप्रमाणकाअंगीकारही व्यर्थहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ भूतला दिकोंविषे जोघटादिकोंकाअत्यंताभावहै ॥ ताअत्यंताभावकूं हम अधिष्ठानरूपमानतेनतेनहीं ॥किंतु व्यावहारिकघटादिकोंका सोव्यावहारिकअत्यंताभाव अधिष्ठानतैंभिन्नहीहोवैहै ॥ तिसव्यावहारिकअ त्यंताभावकेज्ञानवास्तैंही पूर्व अनुपलब्धिप्रमाण हमनैं अंगीकारकऱ्याहै ॥ यातैं ताअनुपलब्धिप्रमा णकाअंगीकार व्यर्थनहींहै इति ॥ इहांकैएकग्रंथकारतौ यहकहेहैं ॥ 'नेहनानास्तिकिंचन' इसश्रु तिनैं कथनकऱ्याजो ब्रह्मविषे प्रपंचका पारमार्थिकअत्यंताभावहै सोअत्यंताभाव ताअधिष्ठानब्रह्मतैं भिन्नहीहै ॥ अधिष्ठानस्वरूप नहींहै ॥ जिसकारणतैं भावअभावकीएकता संभवतीनहीं॥और 'एकमेवा द्वितीयंब्रह्म' इसश्रुतिकातौ भावाद्वैतविषे तात्पर्यहै ॥ अर्थात् ब्रह्मतैंभिन्न दूसराकोईभावपदार्थ नहींहै ॥ यातैं ब्रह्मतैंभिन्न ताअत्यंताभावकेविद्यमानहुएभी ताअद्वैतश्रुतिका विरोधहोवैनहीं इति ॥ सोयहमतस मीचीननहींहै ॥ काहेतैं ' एकमेवाद्वितीयंब्रह्म ' यहश्रुतिब्रह्मकूं भावअभावरूपसर्वद्वैतप्रपंचतैंरहितक हेहैं॥ताश्रुतिकासंकोचकरिकै केवलभावाद्वैतपरता मानणेविषे कोईभीप्रमाणनहींहै॥और प्रपंचकेअत्यंता भावकूं जोअधिष्ठानब्रह्मतैंभिन्नमानिये तौ ताअत्यंताभावविषे पारमार्थिकपणाभी नहींसंभवैगा ॥ जि सकारणतैं अधिष्ठानतैंभिन्नअभाव प्रतियोगीकीसत्ताकेसमानसत्तावालाही नियमतैंहोवैहै ॥ औरप्रपंच रूपप्रतियोगी कल्पितहै ॥यातैं ताकल्पितप्रपंचकाअत्यंताभावभी कल्पितहीहोवैगा ॥ यातैं सोउक्तपक्ष समीचीननहींहै इति ॥ अब दूसरेव्यावहारिकअत्यंताभावका निरूपणकरेहैं॥तहां भूतलादिकोंविषेजो घटादिकोंकाअत्यंताभावहै जिसकूं 'भूतलेघटोनास्ति' इत्यादिकप्रतीति विषयकरैहै ॥ सोअत्यंता

भाव व्यावहारिकअत्यंताभाव कह्याजावैहै ॥ यहव्यावहारिकअत्यंताभावही पूर्वउक्तयोग्यानुलब्धिक रिकैग्रहणहोवैहै ॥ और ताभूतलविषे जोघटकेअभेदका अत्यंताभावहै॥ताअत्यंताभावकूंही नैयायिकों ने 'भूतले घटोन' इसप्रतीतिकाविषय भेद कहीताहै तथाअन्योन्याभाव कहीताहै॥यातैं सोभेदरूपअन्यो न्याभाव ताअत्यंताभावतैंभिन्ननहींहै॥किंवा श्रुतिकेयथार्थतात्पर्यज्ञानतैंरहितनैयायिकोंने जोजीवईश्वरा दिकोंकाभेद अंगीकारकरीताहै ॥ तथा भूतलादिकोंविषे घटादिकोंकाअत्यंताभाव अंगीकारकरीताहै ॥ तेसर्वअभाव अनित्यहीहोवैहैं ॥ कोईभीअभाव नित्यहोतानहीं ॥ काहेतैं ब्रह्मतैंभिन्न जितनाकी भावअ भावरूपजगत्है॥सोसर्वजगत् अविद्याकाकार्यहै॥और तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यजन्य ब्रह्मात्मसाक्षा त्कारकरिकै ताअविद्याकानाशहोइजावैहै ॥ ताअविद्याकेनाशहुए ताअविद्याकेकार्यरूपप्रपंचकाभी ना शहोइजावैहै॥इसप्रकार सर्वअनात्मप्रपंचकूं आत्मज्ञानकरिकैनिवृत्तहोणेतै ताअभावका अनित्यपणाही सिद्धहोवैहै इति ॥ इहां कैएकग्रंथकारतौ न्यायशास्त्रकारोंकेबुद्धिकूं अनुसरणकरतेहुए ताउक्तअभावकूं प्रागभाव १ प्रध्वंसाभाव २ अत्यंताभाव ३ अन्योन्याभाव ४ इसभेदकरिकै चारिप्रकारकामानेहैं॥अब तिनचारोंअभावोंकेलक्षणकहेहैं॥तहां आपणीउत्पत्तितैंपूर्व कार्यका जोआपणेउपादानकरणविषेअभावहै ताकानाम प्रागभावहै॥जैसे घटादिककार्योंका आपणीउत्पत्तितैंपूर्व मृत्तिकादिककारणोंविषे प्रागभाव है अर्थात् जोअभाव अनादिहोवैहै तथाआपणेप्रतियोगीका जनकहोवैहै ॥ सोअभाव प्रागभाव कह्या जावैहै ॥ अथवा जोअभाव अनादिहोवैहै तथानाशवान्होवैहै॥सोअभाव प्रागभाव कह्याजावैहै इति ॥ और उत्पन्नहुएकार्यका जोआपणेउपादानकारणविषे अभावहै ॥ सोअभाव प्रध्वंसाभाव कह्याजावैहै ॥ जैसे मुद्गरादिकोंकेप्रहारतैंअनंतर कपालादिककारणविषे घटादिककार्यका प्रध्वंसाभाव इति॥ औरआ

पणेप्रतियोगिके असमानाधिकरण जोअभावहै॥सोअभाव अत्यंताभाव कह्याजावैहै ॥ जैसे भूतलादि कोंविषेघटादिकोंकाअंत्यताभावहै॥सोअत्यंताभाव आपणेप्रतियोगीकेअधिकरणतैंभिन्नअधिकरणविषे हीरहेहै इति ॥ और जोअभाव आपणेप्रतियोगीकेसमानाधिकरणहोवैहै ॥ अथवा जिसअभावका तादा त्म्यही प्रतियोगीहोवैहै ॥ सोअभाव अन्योन्याभाव कह्याजावैहै॥इसीअन्योन्याभावकूं भेदभी कहेहैं॥ जैसे भूतलादिकोंविषे घटकाअन्योन्याभावरूपभेदहै॥सो अन्योन्याभाव ताभूतलविषे घटकेविद्यमान कालविषेभीरहेहै॥यातैं सोअन्योन्याभाव प्रतियोगीसमाधानाधिकरण कह्याजावैहै इति ॥ तेप्रागभावादि कसर्व अभाव मायाकाकार्यहोणेतैं अनित्यही हैं ॥ यातैं अत्यंताभाव अन्योन्याभाव यहदोनोंअभाव तौ नित्यहैं ॥ और प्रागभाव प्रध्वंसाभाव यहदोनोंअभावअनित्यहैं॥यहनैयायिकोंकाकहणा सर्वप्रपंचकानि षेधकरणेहारीश्रुतितैंविरुद्धहोणेतैं असंगतहै॥इतिअभावप्रमानिरूपणम् ॥६॥इसप्रकार पूर्वनिरूपणकरी जा प्रत्यक्ष १ अनुमिति२उपमिति३शाब्द४अर्थापत्ति५अभावप्रमा६यहषट्प्रकारकीप्रमाहै ॥ तासर्व प्रमाकारिकै आवरणशक्तिसहितअज्ञानकीही निवृत्तिहोवैहै॥ताकेविषेभी अनुमितिआदिकपरोक्षप्रमाकारि कैतौ असत्वापादकआवरणशक्तिविशिष्टअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै॥औरअपरोक्षप्रमाकारिकैतौ अभावाप दकआवरणशक्तिविशिष्टअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै।ताआवरणशक्तिविशिष्टअज्ञानकीनिवृत्तितैंअनंतरघटा दिकविषयोंकाभानहोवैहै॥इसप्रकार तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यजन्य अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका अपरो क्षप्रमाकरिकै ब्रह्मकेआवरकमूलाज्ञानकीनिवृत्तिहुए इसअधिकारीपुरुषकूं ताब्रह्मकासाक्षात्कार संभवैहै। यातैं इसपरिच्छेदविषे प्रमाकानिरूपण सार्थकहै इति ॥ ॥ इति श्रीमत्परमंहसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वा मिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृततत्त्वानुसंधाने द्वितीयः परिच्छेदःसमाप्तः ॥ २ ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः॥

अथ श्रीस्वामिचिद्घनानन्दगिरिकृतप्राकृ-
ततत्त्वानुसन्धाने तृतीयपरिच्छेदः ।

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीशङ्कराचार्येभ्योनमः॥ अथ तृतीयपरिच्छेदप्रारंभः ॥ तहां पूर्व द्वितीयपरिच्छेदकेआदिविषे प्रमा १ अप्रमा २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीवृत्ति कथनकरीथी ॥ ताकेविषे प्रथम प्रमावृत्तिकातौ प्रमाणसहित तथाफलसहित ताद्विती यपरिच्छेदविषे विस्तारतैंनिरूपणकर्‍या ॥ अब इसतृतीयपरिच्छेदविषे दूसरीअप्रमावृत्तिका विस्तारतैं निरूपणकरेहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ 'अहंब्रह्मास्मि' यहप्रमावृत्तितौ अज्ञानकीवृत्तिकरिकै इसअधिकारी पुरुषकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरेहै ॥ यातैं ताप्रमावृत्तिकातौ ग्रंथविषैनिरूपणकरणा उचितहै॥ औरअप्रमा वृत्तितैं इसअधिकारीपुरुषका कोईप्रयोजनसिद्धहोतानहीं ॥ यातैं ग्रंथविषे ताअप्रमावृत्तिकानिरूपणक रणा निष्फलहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ प्रतिबंधतैंरहितहुईप्रमाकूंही अज्ञानकानिवर्त्तकपणा होवैहै ॥ यातैं सोप्रतिबंध तथाताप्रतिबंधकेनिवृत्तिकाउपाय दोनों इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यजान्येचाहिये ॥ तहां असंभावना विपरीतभावना यहदोनों प्रतिबंध कहेजावैहै ॥ और श्रवण मनन निदिध्यासन यह तीनों ताप्रतिबंधकेनिवृत्तकेउपायहैं ॥ तहां असंभावनाविपरीतभावनकूं आत्मज्ञानकीप्रतिबंधकता प राशरमुनिनैंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'भावनाविपरीताया याचासंभावनाशुक । कुरुतेप्रतिबंधंसा तत्त्व ज्ञानस्यनापरम्' अर्थयह ॥ हेशुक विपरीतभावना तथा असंभावना यहदोनोंही आत्मज्ञानकाप्रतिबंध करेहैं ॥ दूसराकोई प्रतिबंधकरतानहीं ॥ यातैं अधिकारीपुरुषनैं श्रवणादिकोंकरिकै ताप्रतिबंधकीनिवृ त्ति अवश्यकरीचाहिये इति ॥ किंवा श्रवणादिकोंकूं जोआत्मज्ञानकीसाधनताहै ॥ सोभी ताप्रतिबंध कीनिवृत्तिद्वाराहीहै साक्षातनहीं ॥ और साप्रतिबंधरूप असंभावनातथाविपरीतभावना वक्ष्यमाणरी

तिसे अप्रमाज्ञानकेअंतर्भूतहीहै ॥ यातैं साअप्रमावृत्ति अवश्यनिरूपणकरणेयोग्यहै ॥ इसअभिप्रायक रिकै इसतृतीयपरिच्छेदविषे ताअप्रमावृत्तिका विस्तारतैंनिरूपणकरेहैं ॥ तहां 'प्रमाभिन्नंज्ञानं अप्रमा' अर्थयह ॥ पूर्वद्वितीयपरिच्छेदविषे कथनकरीजाप्रमाहै ॥ ताप्रमातैंभिन्नजोज्ञानहै सो अप्रमा कह्याजावैहै ॥ जैसे शुक्तिविषे इदंरजतं इत्यादिकज्ञान ताप्रमाज्ञानतैंभिन्नहोणेतैं अप्रमा कह्याजावैहै ॥ तहां 'ज्ञानंअप्रमा' इतनामात्रही जो ताअप्रमाकालक्षणकरते ॥ तालक्षणविषे 'प्रमाभिन्नम्' यहपद नहींकथनकरते ॥ तौ प्रमाज्ञानविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणे वासते तालक्षणविषे 'प्रमाभिन्नम्' यहपद कथनकऱ्याहै ॥ ताप्रमाज्ञानविषे प्रमातैंभिन्नपणाहैनहीं ॥ यातैं ताप्रमाज्ञानविषे ताउक्तलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा 'प्रमाभिन्नंअप्रमा' इतनामात्रही जो ताअप्रमाकालक्षणकरते ॥ तालक्षणविषे 'ज्ञानम्' यहपद नहींकथनकरते ॥ तो प्रमाज्ञानतैंभिन्नजे घटादिकहैं तिनोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासते तालक्षण विषे 'ज्ञानं' यहपद कथनकऱ्याहै ॥ तिनघटादिकोंविषे ज्ञानरूपताहैनहीं ॥ यातैं तिनघटादिकोंविषे ताअप्रमाकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ अब ताअप्रमावृत्तिकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ साउक्त अप्रमावृत्ति स्मृति १ अनुभूति २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां 'संस्कारमात्रजन्यंज्ञानं स्मृतिः' अर्थयह ॥ संस्कारमात्रकरिकैजन्यजोज्ञानहै सो स्मृति कह्याजावैहै ॥ जैसे 'सामेमाता सोमे पिता' इत्यादिकज्ञान संस्कारमात्रजन्यहोणेतैं स्मृति कह्याजावैहै ॥ तहां इसलक्षणविषे । मात्र । यहपद जोनहींकथनकरते तौ 'सोऽयंदेवदत्तः' इसप्रत्यभिज्ञाप्रत्यक्षविषे तास्मृतिकेलक्षणकी अतिव्याप्तिहोती ॥

जिसकारणतैं सोप्रत्यभिज्ञाप्रत्यक्षभी संस्कारकरिकैजन्यहीहोवैहै ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवा सते तालक्षणविषे । मात्र । यहपद कथनकन्याहै ॥ तहां सोप्रत्यभिज्ञाप्रत्यक्ष केवल संस्कारकरिकैज न्यहोतानहीं किंतु तासंस्कारसहकृत इंद्रियकरिकैजन्यहोवैहै ॥ यातैं तामात्रपदकेकहणेतैं ताप्रत्यभि ज्ञाप्रत्यक्षविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा तालक्षणविषे । ज्ञानं । यहपद जोनहींकथनक रते तौ तासंस्काररूपप्रतियोगीकरिकैजन्य जो तासंस्कारकाध्वंसहै ताकेविषे तालक्षणकीअतिव्या प्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे । ज्ञानं । यहपद कथनकन्याहै ॥ तहां ताध्वंसविषे ज्ञानरूपताहैनहीं ॥ यातैं ताध्वंसविषे तास्मृतिकेलक्षणकीअतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ इहांयह अभिप्रायहै॥सोसंस्कार वेग १ भावना २ स्थितिस्थापक ३ इनभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां जोसंस्कार क्रियाकरिकजन्यहोवैहै तथाअन्यक्रियाकाजनकहोवैहै ॥ सोसंस्कार वेग कह्याजावैहै ॥ सोवेगनामासंस्कार बाणादिकोंविषेरहेहै ॥ और जोसंस्कार अनुभवज्ञानकरिकैजन्यहोवैहै और स्मृति ज्ञानकाजनकहोवैहै सोसंस्कार भावना कह्याजावैहै ॥ सोभावनाख्यसंस्कार वेदांतसिद्धांतविषेतौ अं तःकरणमेंहीरहेहै ॥ और नैयायिकोंकेमतविषे आत्मामेंरहेहै ॥ जिसकारणतैं वेदांतियोंकूं अभिमतजोअ हंकारहै तिसकूंही तेनैयायिक आत्मामानेहैं और ॥ अन्यथाकन्येहुएवस्तुकी पूर्वकीन्यांई स्थितिकराव णेहारा जोसंस्कारहै सो स्थितिस्थापक कह्याजावैहै॥सोस्थितिस्थापकनामासंस्कार धनुषशाखादिकों विषेरहेहै ॥ इनतीनप्रकारकेसंस्कारोंका न्यायप्रकाशकेतृतीयपरिच्छेदविषे विस्तारतैंनिरूपण कन्याहै सो तहांसेजानिलेणा ॥ तहां वेग स्थितिस्थापक इनदोनोंसंस्कारोंकूं यद्यपि क्रियाकाहीजनकपणाहो

वैहै ॥ तथापि ताभावनाख्यसंस्कारकूं ज्ञानकाजनकपणाहोवैहै ॥ यातैं तास्मृतिकेलक्षणविषे संस्कार शब्दकरिकै सोभावनाख्यसंस्कारही विवक्षितहैं ॥ यातैं सोउक्तस्मृतिकालक्षण संभवैहै इति ॥ अब ता स्मृतिकेविभागक निरूपणकरेहैं ॥ साउक्तस्मृति यथार्थ १ अयथार्थ २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहो वैहै ॥ तहां यथार्थअनुभवजन्यसंस्कारतैं उत्पन्नभईजास्मृतिहै सा यथार्थस्मृति कहीजावैहै ॥ और अ यथार्थअनुभवजन्यसंस्कारतैं उत्पन्नभईजास्मृतिहै सा अयथार्थस्मृतिकहीजावैहै ॥ तहां सायथार्थस्मृ तिभी अनात्मस्मृति १ आत्मस्मृति २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां 'व्यावहारिकःप्रपंचः मिथ्या दृश्यत्वात् शुक्तिरूप्यवत् इसअनुमानकरिकैजन्य जोप्रपंचकेमिथ्यात्वकाअनुभवहै ॥ ताअनु भवजन्यसंस्कारतैं इसअधिकारीपुरुषकूं उत्पन्नभईजा प्रपंचकेमिथ्यात्वकीस्मृतिहै ॥ सास्मृति यथार्थअ नात्मस्मृति कहीजावैहै ॥ और तत्त्वमसि इत्यादिकमहावाक्यतैंजन्य जो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाअ नुभवहै ॥ ताअनुभवजन्यसंस्कारत इसअधिकारीपुरुषकूं उत्पन्नभईजा प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकीस्मृतिहै ॥ सास्मृति यथार्थआत्मस्मृति कहीजावैहै इति॥ इसप्रकार दूसरी अयथार्थस्मृतिभी अनात्मस्मृति १ आ त्मस्मृति २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां 'वाचारंभणंविकारोनामधेयम्। अतोऽन्यदार्त्तम्। मा यामात्रमिदंद्वैतम्' इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै तथापूर्वउक्तअनुमानकरिकै इसप्रपंचका मिथ्यापणाहीसिद्ध है ॥ ऐसेमिथ्याप्रपंचविषे जोसत्यपणेकाअनुभवहै सो भ्रमरूपहीहै॥ताअयथार्थ अनुभवजन्यसंस्कारतैं उत्पन्नभईजा ताप्रपंचकेसत्यपणेकीस्मृतिहै ॥ सास्मृति अयथार्थअनात्मस्मृति कहीजावैहै ॥ और अहं कारतैंआदिलैके स्थूलदेहपर्यंत सर्वअनात्मपदार्थ आत्मभावतैंरहितहैं ॥ यातैं तिनअहंकारादिकोंविषेजा

आत्मत्वबुद्धिहै सोअयथार्थअनुभवहीहै ॥ ताअयथार्थअनुभवजन्यसंस्कारतैं उत्पन्नभईजा तिनअहंका रादिकोंविषेआत्मभावकीस्मृतिहै ॥ सास्मृति अयथार्थआत्मस्मृति कहीजावैहै ॥ अथवा वास्तवतैंक र्त्तापणेतैंरहितआत्माविषे कर्तृत्वबुद्धिरूपअयथार्थअनुभवजन्यसंस्कारतैं उत्पन्नभईजा कर्त्तापणेकी स्मृति है ॥ सास्मृति अयथार्थआत्मस्मृति कहीजावैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ स्वप्नविषे जोपदार्थोंकाज्ञा नहोवैहै ॥ सोभी अयथार्थस्मृतिरूपहीहै यातैं तास्वप्नकेज्ञानका इहां ग्रहण क्योंनहींकऱ्या ॥ ॥ स माधान ॥ ॥ सोस्वप्नकाज्ञान स्मृतिरूपनहींहै ॥ किंतु अनुभवरूपहीहै ॥ काहेतैंसोस्वप्नकाज्ञान जो कदाचित् स्मृतिरूपहोता तौ तास्वप्नविषे लोकोंकूं सरथः याप्रकारकाही रथादिकपदार्थोंकाज्ञानहो ता ॥ परंतु ऐसाज्ञानहोतानहीं ॥ किंतु मैं रथकूंदेखताहूं याप्रकारकाअनुभवही तास्वप्नविषेहोवैहै ॥ या तैं सोस्वप्नकाज्ञान अनुभवरूपहीहै स्मृतिरूपनहीं ॥ इसअर्थकूं आगेभीनिरूपणकरेंगे इति ॥ तहां इत नैंपर्यंत स्मृतिकानिरूपणकऱ्या ॥ अब अनुभूतिकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां 'स्मृतिभिन्नंज्ञानं अनुभूतिः' अर्थयह ॥ पूर्वउक्तस्मृतिज्ञानतैंभिन्नजोज्ञानहै सो अनुभूति कह्याजावैहै ॥ इसीअनुभूतिकूं अनुभवभी कहैहैं॥जैसे अयंघटः इदंरजतं इत्यादिकज्ञान तास्मृतिज्ञानतैंभिन्नहोणेतैं अनुभवरूपहैं ॥ तहां । ज्ञानं अनुभूतिः ॥ इतनामात्रही जो ताअनुभवकालक्षणकरते तौ स्मृतिज्ञानाविषे ताअनुभवकेलक्षणकीअ तिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै तालक्षणविषे । स्मृतिभिन्नम् । यहपद कथनक ऱ्याहै ॥ और । स्मृतिभिन्नंअनुभूतिः । इतनामात्रही जो ताअनुभवकालक्षणकरते तौ तास्मृतिज्ञान तैंभिन्न जेघटादिकहैं तिनोंविषे तालक्षणकीअतिव्याप्तिहोती ॥ ताअतिव्याप्तिदोषकेनिवृत्तकरणेवासतै

तालक्षणाविषे । ज्ञानं । यहपद कथनकर्‍याहै इति ॥ अब ताअनुभूतिकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ साउक्त
अनुभूतिभी यथार्थ १ अयथार्थ २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां अबाधितअर्थकूंविषयकर
णेहारीजाप्रमाहै ताकानाम यथार्थअनुभूतिहै ॥ साप्रमारूपयथार्थअनुभूति द्वितीयपरिच्छेदविषे विस्ता
रतैंनिरूपणकरिआयेहैं ॥ यातैंइहां पुनःनिरूपणकरतेनहीं॥ अब अयथार्थअनुभूतिकानिरूपणकरेहैं ॥
तहां 'बाधितार्थविषयानुभूतिः अयथार्थानुभूतिः' अर्थयह ॥ विषयकेअभावकीजाप्रमाहै ताकानाम
बाधहै ॥ ताबाधका जोविषयहोवै ताकानाम बाधितहै ॥ सोबाधितअर्थ है विषयजिसका ऐसीजाअनु
भूतिहै । साअनुभूति अयथार्थअनुभूति कहीजावैहै॥ जैसेनेदंरजतं इसबाधज्ञानकेविषयहोणेतें बा
धितजेशुक्तिरजतादिकहैं तिनोंकूं विषयकरणेहारी इदंरजतं इत्यादिकअनुभूति अयथार्थअनुभूति क
हीजावैहै.॥ तहां प्रमाज्ञानविषे इसअयथार्थानुभूतिकेलक्षणकीअतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै इसलक्ष
णविषे । बाधितार्थविषय । यहपद कथनकर्‍याहै ॥ और बाधितअर्थकूंविषयकरणेहारी अयथार्थस्मृ
तिविषे इसलक्षणकीअतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै इसलक्षणविषे । अनुभूतिः । यहपद कथनकर्‍याहै
इति ॥ और साअयथार्थअनुभूतिभी संशय १ निश्चय २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां 'ए
कस्मिन्धर्मिणि भासमानविरुद्धनानाकोटिकज्ञानं संशयः' अर्थयह ॥ एकहीधर्मीविषे भासमानजे पर
स्परविरुद्ध नानाकोटिहैं तिनोंकूंविषयकरणेहाराज्ञान संशय कह्याजावैहै ॥ जैसे । स्थाणुर्वापुरुषो
वा। यहज्ञानएकही स्थाणुरूपधर्मीविषे वा पुरुषरूपधर्मीविषे स्थाणुत्वपुरुषत्वरूपविरुद्धनानाकोटियोंकूं
विषयकरेहैं ॥ यातें सोज्ञान संशय कह्याजावैहै इति॥ और सोउक्तसंशयभी प्रमाणसंशय १ प्रमेयसं

शय २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रमाणविषे जा असंभावनाहै ताकानाम प्रमाणसंशय है ॥ और प्रमेयविषे जा असंभावनाहै ताकानाम प्रमेयसंशयहै॥ तहां सोप्रमाणसंशयभी प्रमासंशय १ करणसंशय २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रमाणकरिकैजन्यप्रमाज्ञानविषे जोसंशय है ताकानाम प्रमासंशयहै ॥और ताप्रमाणकेस्वरूपविषे जोसंशयहै ताकानाम करणसंशयहै ॥ तहां पूर्व अदृष्टस्थलविषेस्थितजलकेसाथि चक्षुइंद्रियकेसंबंधहुएतैंअनंतर इसपुरुषकूं इदंजलं याप्रकारकाप्रमाज्ञानहोवैहै ॥ परंतु इसपुरुषनैं तास्थलविषे पूर्वकभी जलदेख्यानहीं ॥ यातैं तापुरुषकूं तिसजलज्ञानविषे यहज्ञान प्रमाहै वा नहीं ॥ याप्रकारका ताजलज्ञानके प्रमात्वकूं तथाताप्रमात्वकेअभावकूंविषयकरणेहारा संशय उत्पन्नहोवैहै ॥ सोसंशय प्रमासंशय कह्याजावैहै ॥ सोप्रमासंशय ताप्रमाज्ञानके प्रमात्वकेनिश्चयतैंही निवृत्तहोवैहै ॥ तहां 'तद्वतितत्प्रकारकत्वं प्रमात्वम्' अर्थयह ॥ ज्ञाननिष्ठ जोति सधर्मवालेवस्तुविषे तद्धर्मविषयकत्वहै यहही प्रमात्वहै ॥ जैसे 'अयंघटः' इसज्ञानविषे जो घटत्व धर्मवालेघटविषे ताघटत्वधर्मविषयकत्वहै यहही प्रमात्वहै ॥ इसीप्रमात्वकूं प्रामाण्य भी कहेहैं ॥ तहां सोप्रमाज्ञाननिष्ठप्रमात्व नैयायिकोंकेमतविषेतौ परतःग्राह्य होवैहै ॥ और मीमांसकोंकेमतविषे तथा वेदांतसिद्धांतविषे सोप्रमात्व स्वतःग्राह्य होवैहै ॥ और ताप्रमात्वकीस्वतःग्राह्यताविषेभी मीमांसकोंके नानामतहैं ॥ तेमीमांसकोंकेमत तथासोनैयायिकोंकामत इहां ग्रंथकेविस्तारभयतैं लिख्येनहीं॥और न्यायप्रकाशकेषष्ठपरिच्छेदविषे तेसर्वमतस्पष्टकरिकैलिख्येहैं॥जिसकूं जिज्ञासाहोवै तिसनैंतहांसेजानि लेणे ॥ अब वेदांतसिद्धांतसंमत प्रमात्वकेस्वतःग्राह्यताका निरूपणकरैहैं ॥ तहां 'यावत्स्वाश्रयग्राह

कग्राह्यत्वं स्वतोग्राह्यत्वम्' अर्थयह ॥ ताप्रमात्वधर्मकाआश्रयभूत जोप्रमाज्ञानहै ॥ ताप्रमाज्ञानके जितनेकीग्राहककहैं तिनोंकरिकै जो ताप्रमात्मविषेग्राह्यपणाहै यहही ताप्रमात्वविषे स्वतःग्राह्यताहै ॥ जैसे ताप्रमात्वधर्मकाआश्रयरूप अयंघटः यहवृत्तिज्ञानहै ॥ तावृत्तिज्ञानकूंग्रहणकरणेहारा साक्षीचैतन्यहै ॥ तासाक्षीचैतन्यनैं तावृत्तिज्ञानकीन्यांई ताकाप्रमात्वभीग्रहणकरीताहै ॥ यहही ताप्रमात्वविषे स्वतःग्राह्यताहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे प्रमाज्ञानकाप्रमात्व स्वतःग्राह्य होवैहै ॥ तैसे इदंरजतं इत्यादिकअप्रमाज्ञानकाअप्रमात्वभी स्वतःग्राह्यहीहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोअप्रमात्वधर्मतौ परतःग्राह्यहीहोवैहै स्वतःग्राह्यहोतानहीं ॥ तहां 'तदभाववतितत्प्रकारकत्वं अप्रमात्वम्' अर्थयह ॥ ज्ञानविषे जो तिसधर्मकेअभाववालेवस्तुमें तद्धर्मविषयकत्वहै यहही अप्रमात्वहै ॥ जैसे इदंरजतं इसज्ञानविषे वास्तवतैंरजतकेअभाववालीशुक्तिमें जोरजतविषयकत्वहै यहही अप्रमात्वहै ॥ तहां ताअप्रमात्वकाघटक जो शुक्तिविषेरजतकाअभावहै ताअभावकूं सोवृत्तिज्ञान विषयकरतानहीं ॥ यातैं तारजताभावघटितअप्रमात्वकूं सोसाक्षीचैतन्यभी ग्रहणकरिसकतानहीं ॥ किंतु सोसाक्षीचैतन्य केवल ताअप्रमात्वधर्मकेआश्रयभूतज्ञानमात्रकूंही ग्रहणकरेहै ॥ जोकदाचित् वृत्तिज्ञानकेअविषयभूतअर्थकूंभी सोसाक्षी प्रकाशकरताहोवै ॥ तौ घटादिआकारवृत्तिकालविषे पटादिकोंकाभी तासाक्षीचैतन्यकरिकै प्रकाशहोणाचाहिये ॥ यातैं प्रमात्वकीन्यांई सोअप्रमात्व स्वतःग्राह्य नहीं है ॥ किंतु परतःग्राह्यहै ॥ तहां 'स्वाश्रयग्राहकातिरिक्तसामग्रीग्राह्यत्वं परतोग्राह्यत्वम्' अर्थयह॥ताअप्रमात्वधर्मकाआश्रयभूत जो अप्रमाज्ञानहै ॥ तिसकाग्राहक जासामग्रीहै ॥ तासामग्रीतैंभिन्नसामग्रीकरिकै जोग्राह्यत्वहै॥यहही

ताअप्रमात्वविषे परतःग्राह्यताहै ॥ जैसें उक्तअप्रमात्वधर्मका आश्रयभूत इदंरजतं यहअप्रमाज्ञानहै ॥
ताअप्रमाज्ञानकाग्राहकतौ साक्षीचैतन्यहै ॥ सोसाक्षीचैतन्य ताअप्रमात्वधर्मकूं ग्रहणकरतानहीं ॥ किं
तु तासाक्षीचैतन्यतैंभिन्न जाअनुमानरूपसामग्रीहै ॥ ताकरिकैही सोअप्रमात्वधर्म ग्रहणहोवैहै ॥ यह
ही ताअप्रमात्वविषे परतःग्राह्यत्वहै ॥ अब ताअनुमानकाप्रकार दिखावैहैं ॥ तहां इसपुरुषकी इष्टसा
धनज्ञानतैंअनंतरही प्रवृत्तिहोवैहै ॥ साप्रवृत्तिभी संवादिप्रवृत्ति १ विसंवादिप्रवृत्ति २ इसभेदकरिकै
दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां सफलप्रवृत्तिकानाम संवादिप्रवृत्तिहै ॥ और निष्फलप्रवृत्तिकानाम विसंवा
दिवृत्तिहै ॥ ताविसंवादि प्रवृत्तिकरिकैही ताअप्रमात्वकाअनुमानहोवैहै ॥ सोअनुमान यहहै 'शु
क्तौरजतज्ञानं अप्रमा विसंवादि प्रवृत्तिजनकत्वात् यन्नैवंतन्नैवंयथाप्रमा' अर्थयह ॥ शुक्तिविषे जो
इदंरजतं यहज्ञानहै ॥ सोज्ञान अप्रमारूपहै ॥ निष्फलप्रवृत्तिकाजनकहोणेतें॥ जोजोज्ञान अप्रमारूपन
हींहोवैहै ॥ सोसोज्ञान निष्फलप्रवृत्तिकाजनकभीनहींहोवैहै ॥ जैसे प्रमाज्ञानहै इति ॥ इसप्रकारकेअ
नुमानकरिकै यहपुरुष तारजतज्ञानविषे अप्रमात्वकूं निश्चयकरेहै॥ यहही ताअप्रमात्वविषे परतःग्राह्य
ताहै ॥ किंवा जैसे ताप्रमात्वकेज्ञानविषे स्वतःपणाहै ॥ तैसं ताप्रमात्वकीउत्पत्तिविषेभी स्वतःपणाही
है ॥ तहां ज्ञानकेउत्पत्तिकी जा सामान्यसामाग्रीहै ॥ तासामग्रीमात्रकरिकै जोजन्यताहै यहही ताप्र
मात्वकीउत्पत्तिविषे स्वतःपणाहै ॥ इसप्रकार ताअप्रमात्वकेज्ञानविषे जैसे परतःपणाहैं ॥ तैसे ताअप्र
मात्वकीउत्पत्तिविषेभी परतःपणाहीहै ॥ तहां ज्ञानकेउत्पत्तिकीसामान्यसामग्रीतैंभिन्नजोदोषहै तादोष
करिकै जोजन्यपणाहै ॥ यहही ताअप्रमात्वकीउत्पत्तिविषे परतःपणाहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व

उक्तरीतिसे ताप्रमात्वकी उत्पत्तिविषे तथाज्ञानविषे जोस्वतःपणा मानोंगे तौ पूर्वअदृष्टस्थलविषे इदं जलं इसप्रकारकेज्ञानतैंअनंतर इसपुरुषकूं यहजलकाज्ञान प्रमाहै वा नहीं याप्रकारका जोसंशयहोवैहै सो नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतैं तुमारे मतविषे ताज्ञानकाप्रमात्व साक्षीचैतन्यकरिकै निश्चितहीहै॥और निश्चितअर्थविषे संशयहोतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तिसस्थलविषे तासंशयकाउत्पादकजोदोष है॥ तादोषघटितसंशयकीसामग्री ताप्रमात्वग्राहकसामग्रीतैं प्रबलहै ॥ यातैं ताजलज्ञानविषे ताप्रमात्व कानिश्चयहोणेतैं सोप्रमात्वकासंशय संभवैहै ॥ इसप्रकार तास्वतःग्राह्यप्रमात्वकेनिश्चयकरिकै ताउ क्तप्रमासंशयकीनिवृत्ति बनिसकेहै इति ॥ अब करणसंशयका तथाताकेनिवृत्तिकेउपायका वर्णनकरे हैं ॥ तहां तत्त्वमसिआदिकवेदांतवाक्य अद्वितीयब्रह्मविषे प्रमाणहै वा नहीं याप्रकारकी जो वेदांतवा क्यरूपप्रमाणविषे असंभावनाहै ताकानाम करणसंशयहै॥ सोकरणगतसंशय ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वे दांतशास्त्रकेश्रवणतैं निवृत्तहोवैहै ॥ ताश्रवणकास्वरूप द्वितीयपारिच्छेदविषे निरूपणकरिआयेहैं ॥ या तैं पुनः इहां निरूपणकरतेनहीं॥ सोउक्तश्रवण शारीरकमीमांसाके प्रथमअध्यायकेपठनकरिक सिद्धहो वैहै इति ॥ तहां इतनेंपर्यंत प्रमाणगतसंशयकानिरूपणकऱ्या ॥ अब दूसरे प्रमेयगतसंशयकातथा ता केनिवृत्तिकेउपायका निरूपणकरेहैं ॥ तहां प्रमाणजन्यज्ञानकाजोविषयहै ताकानाम प्रमेयहै ॥ ताप्र मेयविषे जोसंशयहोवैहै ताकानाम प्रमेयसंशयहै ॥ सोप्रमेयगतसंशयभी अनात्मगतसंशय १ आत्म गतसंशय २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां अनात्मारूपजेस्थाणुआदिकहैं तिनोंविषे जो इ सपुरुषकूं 'स्थाणुर्वापुरुषोवा' इत्यादिकसंशयहोवैहै सोसंशय अनात्मगतसंशय कह्याजावैहै ॥ यह

अनात्मगतसंशय साधारणधर्मकेदर्शनतैंजन्यहोवैहै ॥ जैसे स्थाणुका तथा पुरुषका साधारणधर्म जो साढेतीनहस्तपरिमाणउच्चपणाहै ताकेदर्शनतैं सोउक्तसंशय उत्पन्नहोवैहै ॥ और तिनस्थाणुआदिकों केअसाधारणधर्मकाज्ञानरूप जो विशेषदर्शनहै तिसतैं ताउक्तसंशयकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तहां स्थाणुपणे कानिश्चयकरावणेहारे जे वक्रकोटरादिकहैं तेतौ स्थाणुकासाधारणधर्महै ॥ और पुरुषपणेकेनिश्चय करावणेहारे जे हस्त पाद शिर आदिकअवयवहैं ते पुरुषकाअसाधारणधर्महैं ॥ ताअसाधारण धर्मके ज्ञानतैं ताउक्तसंशयकीनिवृत्तिहोइजावैहै इति ॥ और इसपुरुषकूं जो आपणेआत्माविषे संशयहोवैहै ॥ सोसंशय आत्मगतसंशय कह्याजावैहै ॥ सोआत्मगतसंशय विप्रतिपत्तिकारिकैजन्यहोणेतैं अनेकप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां परस्परविरुद्धअर्थकेप्रतिपादक जे वादियोंकेअनेकवचनहैं ताकानाम विप्रतिपत्ति है ॥ साविप्रतिपत्तिं श्रीभगवान्भाष्यकारनें वर्णनकरीहै ॥ सोदिखावैहैं ॥ तहां चैतन्यविशिष्ट जो यह स्थूलदेहहै सोईही आत्माहै ॥ इसप्रकार प्राकृतजीव तथालोकायतिक मानेहैं ॥ और चक्षुआदिकइंद्रियही आत्माहैं ॥ इसप्रकार कैएकदूसरे मानेहैं ॥ और मनही आत्माहै ॥ इसप्रकार कैएकदूसरे मानेहैं ॥ और क्षणिकविज्ञानही आत्माहै इसप्रकार कैएकदूसरे मानेहैं ॥ और शून्यही आत्माहै इसप्रकार कैएकदूसरे मानेहैं ॥ और देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्न संसारी कर्त्ता भोक्ता आत्म है इसप्रकार कैएकदूसरे मानेहैं ॥ और आत्मा केवल भोक्ताहीहैकर्त्तानहींहै इसप्रकार कैएकदूसरे मानेहैं ॥ और कर्त्ता भोक्तातैंभिन्न सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् ईश्वरही आत्माहै इसप्रकार कैएकदूसरे मानेहैं ॥ और आत्मा उपाधिकेसंबंधतैंकर्त्ताभोक्ताहुआभी वास्तवतैंसिद्धहीहै इसप्रकार कैएकदूसरे मानेहैं ॥ और तेपूर्वउक्त

वादी तिसतिसदेहादिरूपआत्माकीसिद्धिवासतैं यथायोग्ययुक्तिप्रमाणादिकभी कथनकरैंहैं ॥ इसप्रकार परस्परविरुद्धअर्थकेप्रतिपादक वादियोंकेवचनरूपाविप्रतिपत्तितैं इसपुरुषकूं सोआत्माकासंशय अनेकप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां सोआत्मा यद्यपि वास्तवतैं एकअद्वितीयरूपहै ॥ तथापि उपाधिकेभेदकारिकै सोआत्मा परमात्मा १ जीवात्मा २ यहदोप्रकारका कह्याजावैहै ॥ तहां तत्त्वमसि इसमहावाक्यविषे स्थित तत्पदकाअर्थरूप जो मायाउपहितब्रह्महै ताकानाम परमात्माहै ॥ और त्वंपदकाअर्थरूप जो तीनशरीरउपहितचैतन्यहै ताकानाम जीवात्माहै ॥ तिनदोनोंविषे प्रथम तत्पदार्थपरमात्माविषे तेअनेकप्रकारकेसंशय दिखावैहैं ॥ तहां सोब्रह्म अद्वितीयहै अथवा सद्वितीयहै ॥ और अद्वितीयरूपहुआभी सोब्रह्म आनंदगुणवालाहै अथवा आनंदस्वरूपहै ॥ और सोब्रह्म ज्ञानगुणवालाहै अथवा ज्ञानस्वरूपहै ॥ और सोब्रह्म सत्ताजातिवालाहै अथवा सत्तास्वरूपहै ॥ और सोब्रह्म सगुण अथवा निर्गुण है ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारकेसंशय इसपुरुषकूं तिसतत्पदार्थब्रह्मविषेहोवैहैं ॥ अब त्वंपदार्थजीवात्माविषेभी तेअनेकप्रकारकेसंशय दिखावै हैं ॥ तहां यहआत्मा देहइन्द्रियादिकोंतैं भिन्नहै अथवा नहीं ॥ और देहइन्द्रियादिकोंतैंभिन्नहुआभी सोआत्मा कर्त्ता है अथवा अकर्त्ता है और अकर्त्ताहुआभी सोआत्मा चिद्रूपहै अथवा अचिद्रूपहै ॥ और चिद्रूपहुआभी सोआत्मा आनंदरूपहै अथवा नहीं ॥ और आनंदरूपहुआभी सोआत्मा परिणामीहै अथवा कूटस्थहै ॥ और कूटस्थहुआभी सोआत्मा सत्ताजातिवालाहै अथवा सत्तारूपहै ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारकेसंशय इसपुरुषकूं तत्त्वंपदार्थजीवात्माविषे होवै हैं ॥ अब तत्त्वंपदार्थकीएकतारूपवाक्यार्थविषे संशय दिखावै हैं ॥ इसजीवात्माकूं सतचितआनंद

रूपताहुएभी परमात्माकेसाथ इसजीवात्माकीएकता संभवतीहै अथवानहीं ॥ अब मोक्षकेसाधनवि षे संशय दिखावैहैं ॥ जीवब्रह्मकीएकताकेहुएभी ताएकताकाज्ञान मोक्षकासाधनहै अथवानहीं ॥ और ताज्ञानकूं मोक्षकीसाधनताहुएभी सोज्ञान कर्मसहितहुआ मोक्षकासाधनहै अथवा केवलज्ञान मोक्षका साधनहै ॥ इत्यादिकसर्वसंशय आत्मगतसंशय कहेजावै हैं ॥ तेसर्वआत्मगतसंशय तर्करूपमननकरि कै निवृत्तहोवैहैं ॥ तहां 'अनिष्टप्रसंजकः तर्कः' अर्थयह ॥ जायुक्ति प्रतिवादीकेअनिष्टकीसिद्धि करे हैं ॥ सायुक्ति तर्क कहीजावैहै ॥ अर्थात् व्याप्यकाआरोपणकरिकै जोव्यापककाआपादनहै ताका नाम तर्कहै ॥ तहां व्याप्तिकेआश्रयकानाम व्याप्यहै ॥ और व्याप्तिकेनिरूपककानाम व्यापकहै ॥ व्याप्तिकास्वरूप पूर्वद्वितीयपरिच्छेदविषे निरूपणकरिआयेहैं ॥ जैसे पर्वतविषे धूमकूंदेखताहुआभी जो प्रतिवादी तापर्वतविषे अग्नि नहीं मानेहै ताप्रतिवादीकेप्रति याप्रकारकातर्क कह्याजावैहै ॥ धूमव ह्निका कार्यकारणभाव सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और कारणतैंविना कार्यहोतानहीं यहवार्त्ताभी सर्व लोकविषेप्रसिद्धहै ॥ यातैं इसपर्वतविषे जोवह्निनहींहोवै ॥ तो तावह्निकाकार्यधूमभी नहींहोणाचा हिये इति ॥ तहां तापर्वतविषे धूमकाअभाव ताप्रतिवादीकूंअनिष्टहै ॥ ताप्रतिवादीकेअनिष्टकीसिद्धि इसउक्ततर्कतैंहोवै है ॥ और इसउक्ततर्कविषे वह्निअभावरूपव्याप्यकाआरोपणकरिकै धूमाभावरूपव्या पकका आपादनकऱ्याजावैहै ॥ यातैं सोउक्ततर्ककालक्षण इसप्रसिद्धतर्कविषे संभवैहै ॥ इसप्रकार आ गेवक्ष्यमाणतर्कोंविषेभी ताउक्तलक्षणकासमन्वय जानिलेणा इति ॥ अब तेआत्मसंशयकेनिवर्त्तकत र्कनिरूपणकरेहैं ॥ तिनतर्कोंविषेभी प्रथम ततपदार्थरूपपरमात्माके अद्वितीयपणेकासाधकतर्क कहेहैं

जोकदाचित् यहआकाशादिकप्रपंच सत्यहोवै तौ ब्रह्मकूंअद्वितीयरूपकहणेहारी ' एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म ' इसश्रुतिका विरोधहोवैगा ॥ अर्थात् सद्वितीयब्रह्मकूं अद्वितीयरूपकहणेहारी साश्रुति मिथ्यावादीहोणेतैं अप्रमाणरूपहोवैगी ॥और ताश्रुतिकीअप्रमाणता आस्तिकवादीकूं अनिष्टहीहै ॥ यातैं ताप्रपंचकूं मिथ्याही मान्याचाहिये ॥ ताप्रपंचककेमिथ्याहुए ताअद्वैतश्रुतिकाविरोधहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ब्रह्मकूं जोअद्वितीयमानिये ॥ तौ भेदकूंप्रतिपादनकरणेहारीश्रुतियोंका विरोधहोवैहै ॥ तिनश्रुतियोंकेविरोधतैं साअद्वैतश्रुति ताअद्वैतकाप्रतिपादक नहींहै ॥ किंतु किसीअन्यहीअर्थकाप्रतिपादकहै ॥ यातैं ताप्रपंचकीसत्यतामानणेविषेभी ताअद्वैतश्रुतिकाविरोधहोवैनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इस अधिकारीपुरुषकूं जोअर्थ इष्टफलकाहेतुहोवैहै ॥ तथा प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै अज्ञातहोवैहै ॥ तिस अर्थविषेही श्रुतिका तात्पर्यहोवैहै ॥ तहां सोअद्वैततौ प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै अज्ञातहै ॥ तथा ताअद्वैतब्रह्मकेज्ञानतैं इसअधिकारीपुरुषकूं ' ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति। तरतिशोकमात्मवित् ' इत्यादिकश्रुतियोंनैं मोक्षरूपनिरतिशयपुरुषार्थकीप्राप्ति कथनकरी है ॥ यातैं ताश्रुतिका ताअद्वैतविषेही तात्पर्य संभवैहै ॥ अन्यकिसीअर्थविषे तात्पर्य संभवतानहीं ॥ और द्वैतरूपभेदतौ प्रत्यक्षादिकप्रमाणकरिकैज्ञातहै॥ तथा ताभेदकेज्ञानतैं किसीइष्टफलकीभीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ उलटा 'उदरमंतरंकुरुतेऽथतस्य भयंभवति मृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यति' इत्यादिकश्रुतियोंनैं ताभेददर्शीपुरुषकूं अनर्थकीहीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और 'अथयोऽन्यांदेवतामुपास्तेऽन्योसावन्योहमस्मीतिनसवेदयथापशुः 'इसश्रुतिनैं ताभेददर्शीपुरुषकूं पशुकीतुल्यताकहिके ताभेदकीनिंदाहीकरीहै ॥ यातैं ताभेदविषे श्रुतिकातात्पर्य संभव

तानहीं ॥ जोकदाचित् साश्रुति भेदकूंही कथनकरैगी तौ प्रत्यक्षसिद्धभेदकीअनुवादकताकरिकै ता श्रुतिकूं अप्रमाणताही प्राप्तहोवैगी ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥ फलवान्अज्ञातअर्थकाबोधकहोणेतैं साअद्वैतश्रुतितौ प्रबलहै॥और फलशून्यज्ञानअर्थकाबोधकहोणेतैं साभेदश्रुति दुर्बलहै ॥ और लोकविषेभी प्रबलकरिकैही दुर्बलकाबाधहोवैहै ॥ कोईदुर्बलकरिकै प्रबलकाबाधहोतानहीं ॥ यातैं ताभेदश्रुतिकेविरोधकरिकै ताअद्वैतश्रुतिकूं अन्यपरता संभवतीनहीं ॥ किंतु ताअद्वैतश्रुतिकेविरोधकरिकै ताभेदश्रुतिकूंही अन्यपरता संभवैहै ॥ यातैं ताअद्वैतश्रुतिकेविरोधतैं ताप्रपंचविषे सत्यपणा संभतानहीं ॥ इस प्रकार ब्रह्मकेअद्वितीयपणेकासाधकतर्ककरिकै सोब्रह्म अद्वितीयहै वा सद्वितीयहै याप्रकारकेसंशयकी निवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब तापरमात्माके आनंदरूपताकासाधकतर्क कहेहैं ॥ सोपरमात्मा जोकदाचित् आनंदरूपनहींहोवै ॥ तौ तापरमात्माकेप्राप्तिकूं पुरुषार्थरूपतानहींहोवैगी ॥ जिसकारणतैं आनंदकी प्राप्तिही पुरुषार्थरूपहोवैहै ॥ और तापरमात्माकेप्राप्तिकूं जो अपुरुषार्थरूपमानोगे तौ तापरमात्माकेप्राप्तिकूं पुरुषार्थरूपकहणेहारे 'आत्मलाभान्नपरंविद्यते । पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः' इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंका विरोधहोवैगा ॥ सोश्रुतिकाविरोध सर्वकूं अनिष्टहीहै यातैं तापरमात्माकूं आनंदरूपही मान्याचाहिये ॥ इसप्रकारकेतर्कतैं सोपरमात्मा आनंदरूपहै वा नहीं याप्रकारके संशयकीनिवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब तापरमात्माके चैतन्यरूपताकासाधकतर्क कहेहैं ॥ सोपरमात्मा जोकदाचित् चैतन्यरूपनहींहोवै तौ घटादिकोंकीन्यांई सूर्यचंद्रादिकजगत्का प्रकाशक नहींहोवैगा ॥ और तापरमात्माकूं जो जगत्काप्रकाशक नहींमानोंगे तौ तापरमात्माकूं सूर्यचन्द्रादिकसर्व

जगत्‌काप्रकाशक कहणेहारे जे 'तस्यभासासर्वमिदंविभाति । तच्छुभ्रंज्योतिषांज्योतिः । ज्योतिषाम पितज्ज्योतिस्तमसःपरमुच्यते' इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनहैं ॥ तिनोंकाविरोध प्राप्तहोवैगा ॥ सोश्रुति स्मृतिवचनोंकाविरोध सर्वकूं अनिष्टहीहै ॥ यातैं तापरमात्माकूं चैतन्यरूपही मान्याचाहिये ॥ इसप्र कारकेतर्ककरिकै सोपरमात्मा चैतन्यरूपहै वानहीं याप्रकारकेसंशयकीनिवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब ताप रमात्माके निर्गुणभावकासाधकतर्क कहैहैं॥सोपरमात्मा जोकदाचित् सगुणहोवै ॥ तौ तापरमात्माके निर्विशेषस्वरूपकूंकथनकरणेहारे जे 'अस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम्' इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनहैं॥तिन सर्ववचनोंका विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ सोश्रुतिस्मृतिकाविरोध सर्वकूं अनिष्टहीहै ॥ यातैं तापरत्माकूं निर्गुणही मान्याचाहिये ॥ इसप्रकारकेतर्कतैं सोपरमात्मा सगुणहै वा निर्गुणहै याप्रकारकेसंशयकीनि वृत्तिहोवैहै इति ॥ अब त्वंपदार्थरूपआत्माके आनंदरूपतासाधकतर्क कहैहैं ॥ यहआत्मा जोकदा चित् आनंदरूप नहींहोवै तौ कोईभीजीव आपणेस्वार्थवासतै प्रवृत्तनहींहोवैगा ॥ और सर्वप्राणि योंकी आपणेस्वार्थवासतैही प्रवृत्तिदेखनेमेंआवैहै ॥ तालोकप्रसिद्धिका विरोध प्राप्तहोवैगा॥तथा या ज्ञवल्क्यमुनिनैं मैत्रेयीस्त्रीकेप्रति 'नवाअरेपत्युःकामायपतिःप्रियोभवति आत्मनस्तुकामायपतिःप्रियो भवति' इत्यादिकश्रुतिवचनोंकरिकै पतिजायादिकसर्वपदार्थोंकूं आपणेआत्मावासतैही प्रियकह्याहै ॥ तिनश्रुतिवचनोंकाभी विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ यातैं ताआत्माकूं आनंदरूपही मान्याचाहिये ॥ इसप्रका रकेतर्कतैं आत्मा आनंदरूपहै वा नहीं याप्रकारकेसंशयकीनिवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब ताआत्माके चैत न्यरूपताकासाधकतक कहैहैं ॥ यहआत्मा जोकदाचित् चैतन्यरूप नहींहोवै तौ घटादिकोंकीन्याईं

जडताकरिकै सावयवहोणेतैं अनात्माहीहोवैगा ॥ ताकरिकै प्रकाशकचैतन्यकेअभावतैं जगतविषे अधताही प्राप्तहोवैगी ॥ तथा आत्माकूंचैतन्यरूपकहणेहारे जे 'योऽयंविज्ञानमयःप्राणेषुहृद्यंतर्ज्योतिःपुरुषः । अत्रायंपुरुषःस्वयंज्योतिर्भवति । क्षेत्रंक्षेत्रीतथाकृत्स्नंप्रकाशयति भारत' इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनहैं तिनसर्ववचनोंका विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ सोश्रुतिस्मृतिकाविरोध ॥ सर्वकूं अनिष्टही है ॥ यातैं ताआत्माकूं चैतन्यरूपही मान्याचाहिये ॥ इसप्रकारकेतर्कतैं आत्मा चैतन्यरूपहै वानहीं याप्रकारकेसंशयकी निवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब आत्माके अकर्त्तापणेकासाधकतर्क कहेहैं ॥ यहआत्मा जोकदाचित कर्त्ता होवैगा तौ विकारीपणेकरिकैं परिणामीहोणेतैं अनित्यहीहोवैगा ॥ जो आत्माकूं अनित्यमानोंगे तौ आत्माकूंनित्यकहणेहारे जे 'अविनाशीवाअरेऽयमात्मा । नित्यःसर्वगतःस्थाणुः' इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनहै ॥ तिनसर्ववचनोंका विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ सोश्रुतिस्मृतिकाविरोध सर्वकूं अनिष्टही है ॥ यातैं ताआत्माकूं अकर्त्ताही मान्याचाहिये ॥ इसप्रकारकेतर्कतैं यहआत्मा कर्त्ता है वा अकर्त्ता है याप्रकारकेसंशयकीनिवृत्तिहोवै है इति ॥ अब तत्त्वंपदार्थके अभेदकासाधकतर्क कहेहैं ॥ सोतत्पदार्थरूपपरमात्मा जोकदाचित् इस त्वंपदार्थरूपजीवात्मातैं भिन्नहोवै तौ घटादिकोंकीन्यांई अनात्मभावकरिकै अनित्यहीहोवैगा ॥ और तापरमात्माकूं जो अनित्यमानिये तौ तापरमात्माकूं नित्यरूप कहणेहारे जे श्रुति स्मृति इतिहास पुराण आदिकोंकेवचनहैं तिनसर्वोंका विरोध प्राप्तहोवैगा ॥ किंवा ताजीवब्रह्मका जोभेदमानिये तौ ताजीवब्रह्मकेअभेदकूंकथनकरणेहारे जे 'तत्त्वमसि । अहंब्रह्मास्मि । अयमात्माब्रह्म । क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्वक्षेत्रेषुभारत' इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनहैं तिनसर्व

चनोंका विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ सोश्रुतिस्मृतिआदिकोंकाविरोध सर्वकूं अनिष्टहीहै ॥ यातैं तापरमात्मा कूं इसजीवात्मातैंअभिन्नही मान्याचाहिये ॥ इसप्रकारकेतर्कतैं सोपरमात्मा इसजीवात्मातैं भिन्नहैवा अभिन्नहै याप्रकारकेसंशयकीनिवृत्तिहोवैहै इति ॥ अब केवलज्ञानविषे मोक्षकीसाधनताकासाधकतर्क कहेहैं ॥ जोकदाचित् कर्ममिश्रितज्ञान मोक्षकासाधनहोवै तौ स्वर्गादिकोंकीन्यांई कर्मजन्यहोणेतैं तामोक्षकूं भीअनित्यपणाही प्राप्तहोवैगा॥ और तामोक्षकूंजो अनित्यमानिये तौ मुक्तपुरुषोंकूंभी पुनः संसारकीप्राप्तिहोवैगी ॥ ताकरिकै मुक्तपुरुषकूं पुनःसंसारकीप्राप्तिकानिषेधकरणेहारे 'नसपुनरावर्त्तते यद्गत्वाननिवर्त्तंतेतद्धामपरमंमम' इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनोंका विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ तथाकेवलज्ञा नतैंमोक्षकीप्राप्तिकूंकथनकरणेहारे जे 'ज्ञानादेवतुकैवल्यम्। नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय। ज्ञानेनतुतदज्ञानं येषांनाशितमात्मनः' इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनहैं ॥ तिनसर्ववचनोंका विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ सोश्रुति स्मृतिवचनोंकाविरोध सर्वआस्तिकोंकूं अनिष्टहै ॥ यातैं सोकर्ममिश्रितज्ञान मोक्षकासाधननहीं है ॥ किंतु अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका अभेदज्ञानही तामोक्षकासाधन मान्याचाहिये ॥ इसप्रकारकेतर्कतैं कर्ममिश्रितज्ञान मोक्षकासाधनहै अथवा केवलज्ञान मोक्षकासाधनहै याप्रकारकेसंशयकीनिवृत्तिहो वैहै इति ॥ इसप्रकारके श्रुतिउक्ततर्करूपमननकरिकही सोपूर्वउक्त आत्मगतसंशय निवृत्तहोवै है ॥ इ सतर्करूपमननकालक्षण पूर्वद्वितीयपारिच्छेदविषे निरूपणकरिआयेहैं सो इहांभीजानिलेणा ॥ यह उक्तमनन शारीरकमीमांसाके द्वितीयअध्यायकेपठनकरिकै सिद्धहोवै है इति ॥ तहां पूर्व संशय निश्च य इसभेदकरिकै दोप्रकारका अयथार्थअनुभव कह्याथा॥ताकेविषे प्रथम संशयका अबपर्यंत निरूपण

कऱ्या ॥ अब दूसरे निश्चयका निरूपणकरेहैं ॥ तहां 'संशयविरोधिज्ञानं निश्चयः' अर्थयह ॥पूर्वउक्त संशयका विरोधीजोज्ञानहै सो निश्चयकह्याजावैहै ॥तहां इसपुरुषकूं जिसपदार्थका निश्चयहोवैहै ॥ तिसपदार्थविषे संशयहोतानहीं ॥ यातैं तानिश्चयविषे संशयकाविरोधीपणा स्पष्टही है इति ॥ औरसो उक्तनिश्चयभी यथार्य १ अयथार्थ २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां 'अविसंवादिज्ञानं यथार्थनिश्चयः' अर्थयह ॥ फलविषेपर्यवसानवाला जोज्ञानहै ताकानाम यथार्थनिश्चयहै अर्थात् जिसवस्तुकेनिश्चयतैंअनंतर प्रवृत्तहुएपुरुषकूं तावस्तुकीप्राप्तिहोवैहै सोनिश्चययथार्थनिश्चय कह्याजावैहै ॥ सोयथार्थनिश्चय पूर्वद्वितीयपरिच्छेदविषे प्रमारूपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और इसतृतीयपरिच्छेद विषे पूर्व यथार्थस्मृतिरूपकरिकैकथनकऱ्याहै अर्थात् यथार्थअनुभवका तथायथार्थस्मृतिका नामयथार्थनिश्चयहै इति ॥ और 'विसंवादिज्ञानं अयथार्थनिश्चयः' अर्थयह ॥ फलतैंरहितजोज्ञानहै ताका नाम अयथार्थनिश्चयह ॥ अर्थात् जिसवस्तुकेनिश्चयतैंअनंतर प्रवृत्तहुएपुरुषकूं तावस्तुकी प्राप्तिनहींहोवैहै ॥ सोनिश्चय अयथार्थनिश्चय कह्याजावैहै ॥ इति सोअयथार्थनिश्चयभी तर्क १ विपर्यय २ इस भेदकरिकै दो[प्र]कारका होवै है ॥ तहां तर्कका लक्षण तथा उदाहरण इसीपरिच्छेदविषे पूर्व निरूपणकरिआयेहैं ॥ यातैं पुनःइहांनिरूपणकरतेनहीं ॥ तहां वह्निवाले तथाधूमवाले पर्वतविषे वह्निकेअभावकूं तथा धूमकेअभावकूं विषयकरणेहारा जो इसपर्वतविषे वह्निनहींहोवै तौ धूमभीनहींहोवैगा ॥ याप्रकारका तर्क है तातर्कविषे अयथार्थनिश्चयपणा स्पष्टहीहै इति ॥ अब विपर्ययका निरूपणकरेहैं ॥ तहां 'मिथ्याज्ञानं विपर्ययः' अर्थयह ॥ जोज्ञान मिथ्याहोवैहै ॥ सोज्ञान विपर्यय कह्याजावैहै ॥ जे

से शुक्तिविषे इदंरजतं यहज्ञान तथारज्जुविषे अयंसर्पः यहज्ञान मिथ्याज्ञानहोणेतैं विपर्यय कह्याजावै है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताज्ञानविषे मिथ्यापणा क्याहै ॥ अर्थात् बाध्यत्वकानाम मिथ्यापणाहै ॥ अथवा निर्विषयत्वकानाम मिथ्यापणाहै ॥ तहां कोईभीज्ञानका आपणेस्वरूपकरिकैबाधहोतानहीं ॥ यातैं बाध्यत्वकानाम मिथ्यापणाहै यहप्रथमपक्षतौ संभवतानहीं ॥ और कोईभीज्ञान निर्विषयहोतानहीं ॥ यातैं सोद्वितीयपक्षभी संभवतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए अब तामिथ्याज्ञानकालक्षणकहेहैं ॥ 'अतस्मिंस्तद्बुद्धिः मिथ्याज्ञानम्' अर्थयह ॥ तिसअर्थतैंरहितवस्तुविषे जो तिसअर्थकीबुद्धिहै ताकानाम मिथ्याज्ञानहै ॥ जैसे रजततैंरहितशुक्तिविषे जो इदंरजतं यहरजतबुद्धिहै ताकानाम मिथ्याज्ञानहै ॥ तहां यद्यपि ज्ञानका स्वरूपतैंबाधहोतानहीं ॥ तथापि विषयकेबाधतैं ताज्ञानकाबाध कह्याजावैहै ॥ सोबाध्यत्वही ताज्ञानविषे मिथ्यापणाहै इति ॥ और सोउक्तविपर्ययरूपभ्रमभी निरुपाधिकभ्रम १ सोपाधिकभ्रम २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहांजोभ्रम अधिष्ठानकेज्ञानतैं निवृत्तहोइजावैहै ॥ सोभ्रमतौ निरुपाधिकभ्रम कह्याजावैहै ॥ और जोभ्रम अधिष्ठानकेज्ञानहुएभी निवृत्तनहींहोवैहै । सोभ्रम सोपाधिकभ्रम कह्याजावैहै ॥ तहांसो निरुपाधिकभ्रमभी बाह्य १ अंतर २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां शुक्तिरज्जुआदिकोंविषे जो इदंरजतं अयंसर्पः इत्यादिकभ्रमज्ञानहोवैहै ॥ सोभ्रमज्ञानतौ बाह्यनिरुपाधिकभ्रम कह्याजावैहै ॥ और मैं अज्ञानीहूं ब्रह्मकूंनहींजानताहूं याप्रकारकाजोभ्रम है ॥ सोभ्रम अंतरनिरुपाधिकभ्रम कह्याजावैहै ॥ तहां शुक्तिरज्जुआदिकअधिष्ठानकेज्ञानतैं 'इदंरजतं अयंसर्पः' इत्यादिकभ्रमकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ तथा आत्मारूपअधिष्ठानकेज्ञानतैं अहंअज्ञः याप्रकार

केभ्रमकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ यातैं ताउक्तभ्रमविषे निरुपाधिकभ्रमरूपता संभवैहै इति ॥ इसप्रकार दूसरा सोपाधिकभ्रमभी बाह्य १ अंतर २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहांरक्तगुणतैंरहित शुक्लस्फटिकविषे रक्तवर्णवालेजपाकुसुमादिकद्रव्यकी समीपताहुए जो 'लोहितःस्फटिकः'। याप्रकारकाभ्रम होवैहै ॥ सोभ्रम बाह्यसोपाधिकभ्रम कह्याजावैहै ॥ तहां यहस्फटिक शुक्लहै रक्तनहींहै याप्रकारके तास्फटिकरूपअधिष्ठानके ज्ञानहुएभी जबपर्यंत ताजपाकुसुमादिकउपाधिकी तहांतैं निवृत्ति नहींहोवैहै॥ तबपर्यंत लोहितःस्फटिकः इसभ्रमकीनिवृत्ति होतीनहीं ॥ यातैं लोहितःस्फटिकः इसभ्रमविषे सोपाधिकभ्रमरूपता संभवैहै ॥ इसप्रकार तत्त्ववेत्तापुरुषकूं जोआकाशादिकप्रपंचकाअनुभव होवैहै ॥ सोभी बाह्यसोपाधिकभ्रम कह्याजावैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ लोहितःस्फटिकः इसभ्रमविषेतौ जपाकुसुमादिक उपाधि विद्यमानहै ॥ यातैं ताभ्रमकूंतौ सोपाधिकपणा संभवैहै ॥ परंतु ताप्रपंचभ्रमविषे कोईउपाधि दखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं ताप्रपंचभ्रमकूं सोपाधिकपणा संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताप्रपंचभ्रमविषेभी प्रारब्धकर्मसहित विक्षेपशक्तिवालाअज्ञानही उपाधिरूपहै ॥ काहेतैं अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेअधिष्ठानब्रह्मकेज्ञानकरिकै आवरणशक्तिवालेअज्ञानकेनिवृत्तहुएभी विक्षेपशक्तिवालेअज्ञानके वशतैं प्रारब्धकर्मकेनाशपर्यंत तत्त्ववेत्तापुरुषकूंभी सोआकाशादिकप्रपंचकाअनुभव होवैहै ॥ यातैं लोहितःस्फटिकः इसभ्रमकीन्याईं ताप्रपंचभ्रमकूंभी सोपाधिकपणा संभवैहै इति ॥ और मैं कर्त्ताहूं मैं भोक्ताहूं याप्रकारकी जा आत्माविषे कर्तृत्वभोक्तृत्वबुद्धिहै ॥ साबुद्धि अंतरसोपाधिकभ्रम कह्याजावैहै ॥ ताभ्रमविषे सोअंतःकरणही उपाधिरूपजानणा ॥ काहेतैं यहआत्मा वास्तवतैंतौ असंगनिर्विकारहै ॥

ऐसेआत्माविषे स्वरूपतैंतो सोकर्तृत्वभोक्तृत्व संभवतानहीं ॥ किंतु ताअंतःकरणविषेरहेहुए तेकर्तृत्व वक्तृत्वादिकधर्म अविवेकतैं ताआत्माविषे आरोपणकऱ्येजावैहैं॥ यातैं अहंकर्त्ता अहंभोक्ता इत्यादिकबुद्धिविषे सोपाधिकभ्रमरूपता संभवैहै॥ इसप्रकार स्वप्नविषे जो रथादिकपदार्थोंकाज्ञान होवैहै॥ सोज्ञानभी अंतरसोपाधिकभ्रमहीहै ॥ स्मृतिरूप नहींहै ॥ काहेतैं सोस्वप्नकाज्ञान जोकदाचित स्मृतिरूपहोता तौ सरथः याप्रकारकाही ताज्ञानकाआकारहोता ॥ परंतु तास्वप्नविषे सरथः इसप्रकारकाज्ञान होतानहीं ॥ किंतु अयंरथः रथंपश्यामि याप्रकारकाहीज्ञान होवैहै ॥ यातैं सोस्वप्नकाज्ञान सोपाधिकभ्रमरूप अयथार्थअनुभवहीहै॥स्मृतिरूपनहीं ॥ यातैं तास्वप्नकूं अयथार्थस्मृतिरूपमानणेहारे तार्किकोंकामत असंगतहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तास्वप्नज्ञानकूं जो स्मृतिरूपनहींमानोंगे ॥ किंतु अनुभवरूपमनोंगे ॥ तौ ताअनुभवकेविषयभूत रथादिकपदार्थोंकीभी तहां उत्पत्तिमानणीहोवैगी ॥ और स्वप्नविषे तिनरथादिकोंकीउत्पत्ति संभवतीनहीं॥ काहेतैं जाग्रत्अवस्थाविषे जितनेदेशविषे तथाजितनेकालविषे तिनरथादिकोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तितनादेशकाल तास्वप्नविषेहैनहीं ॥ और प्रसिद्धरथादिकोंकेउत्पत्तिकी जा काष्ठतक्षादिक सामग्रीहै ॥ सासामग्रीभी तास्वप्नविषे हैनहीं ॥ और कारणसामग्रीतैंविना कार्यकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं स्वप्नविषे तिनरथादिकोंकीउत्पत्ति संभवतीनहीं॥ यातैं स्वप्नविषेसोरथादिकोंकाज्ञान स्मृतिरूपही मान्याचाहिये ॥ और सोस्वप्नकाज्ञान निद्रादोषकरिकैजन्यहै॥यातैं सरथः इसज्ञानकेस्थानविषे अयंरथः याप्रकारकाभ्रम होवैहै ॥ ॥समाधान ॥ ॥ जैसे हट्टादिकोंविषेस्थित व्यावहारिकरजतकीउत्पादकसामग्रीतैं प्रातिभासिकरजतकेउत्पत्तिकीसामग्री विलक्षणहीहोवै

है ॥ तैसे जाग्रत्अवस्थाकेरथादिकोंकी उत्पादकसामग्रीतैं सास्वप्नरथादिकोंकीउत्पादकसामग्रीभीविल
क्षणहीहोवैहै॥ सात्रिलक्षणसामग्री दिखावैहैं॥ जाग्रतअवस्थाविषे सुखदुःखादिरूपभोगकेदेखणेहारेजेपु
ण्यपापकर्महैं तिनकर्मोंकेउपरामहुए ॥ तथा स्वप्नकेभोगदेणेहारे जेकर्महैं तिनोंकेउद्भवहुए ॥ तथाच
क्षुआदिकइंद्रियोंकेलयहुए ॥ जाग्रतके रथादिकसर्वविषयोंकी जे संस्काररूपवासनाहै तथाइंद्रियादि
कोंकी जे संस्काररूपवासनाहै तिनसर्ववासनाओंका आश्रयभूत तथानिद्रादोषकरिकैयुक्त ऐसाजोअं
तःकरणहै ॥ सोअंतःकरणही तास्वप्नअवस्थाविषे तिनरथादिविषयाकारपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा
तिनरथादिकोंकेग्राहकचक्षुआदिकइंद्रियाकारपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथातिनरथादिविषयाकारवृत्ति
रूपपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार जाग्रत्केरथादिकोंकीसामग्रीतैं स्वप्नकेप्रातिभासिकरथादिकोंकी
सामग्री विलक्षणहीहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे प्रमाता प्रमाण प्रमेय व्यव
हारहोवैहै ॥ तैसे स्वप्नविषेभी सो प्रमाता प्रमाण प्रमेय व्यवहारहोवैहै ॥ यातैं स्वप्नकेपदार्थोंकूं प्राति
भासिककहणा संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जाग्रत्केपदार्थ भूतोंकेकार्यहोणेतैं चिरकालपर्यं
तस्थायीहैं ॥ और स्वप्नकेरथादिकपदार्थ वासनाविशिष्टअंतःकरणकेपरिणामहोणेतैं वासनामयहैं ॥ या
कारणतैंही तेस्वप्नकेपदार्थ अल्पकालपर्यंतस्थायीहैं ॥ इसप्रकार स्वप्नकेपदार्थोंविषे जाग्रत्केपदार्थोंतैंवि
लक्षणताहोणेतैं सोप्रातिभासिकपणा संभवैहै ॥ और जैसे शुक्तिविषेरजतकाज्ञान दोषकरिकैजन्यहोवै
है ॥ तैसे स्वप्नकेपदार्थोंकाज्ञानभी निद्रारूपदोषकरिकैजन्यहोवैहै ॥ यातैं ताज्ञानविषेभ्रमरूपताभीसं ॥१९४
भवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जाग्रत्अवस्थाविषे सूर्यादिकज्योतियोंकेप्रकाशकरिकैसहकृत चक्षुआदि

कइंद्रिय विद्यमानहैं ॥ यातैं तिनइंद्रियोंकरिकै रूपादिकपदार्थोंकाज्ञान संभवैहै ॥ और स्वप्नअवस्थाविषेतौ तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंका अभावहोवैहै यातैं तास्वप्नविषे तिनरूपादिकपदार्थोंकाअनुभव कैसे संभवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तास्वप्नविषे जो वासनाविशिष्टअंतःकरण विषयइंद्रियादिरूपपरिणामकूं प्राप्तभयाहै ॥ ताअंतःकरणउपहित साक्षीचैतन्यही तास्वप्नकेरथादिकपदार्थोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ स्वप्नविषे सोसाक्षी आप किसीदूसरेसाक्षीकरिकैप्रकाशितहुआतिनरथादिकोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ अथवा अप्रकाशितहुआ प्रकाशकरेहै ॥ तहां जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरोगे ॥ तौ अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतैं ताप्रथमसाक्षीकीन्यांई सोदूसरासाक्षीभी किसीतीसरेसाक्षीकरिकैप्रकाशितहुआही प्रकाशकरैगा ॥ तैसे सोतीसरासाक्षीभी किसीचतुर्थसाक्षीकरिकैप्रकाशितहुआही प्रकाशकरैगा ॥ इसप्रकार पूर्वपूर्वसाक्षीकेप्रकाशवासतै उत्तरउत्तरसाक्षीकेअंगीकारकरणेतैं अनवस्थादोषकी प्राप्तिहोवैगी ॥ और जोदूसरापक्ष अंगीकारकरोगे ॥ तौ अज्ञायमानहोणेतैं जडहुआ सोसाक्षी तिनस्वप्नपदार्थोंकूं कैसेप्रकाशकरैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोसाक्षीचैतन्य स्वयंप्रकाशमानहै ॥ अर्थात् आपही आपणेकरिकैप्रकाशमानहै ॥ यातैं तासाक्षीविषे सापूर्वउक्तअनवस्था तथा जडता प्राप्तहोवैनहीं॥ ऐसास्वप्रकाशसाक्षीही तिनस्वप्नपदार्थोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ याकारणतैंही तास्वप्नअवस्थाविषे तासाक्षीचैतन्यकास्वप्रकाशपणा जानणेकूंसुगमहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ 'येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धः। तमेवभांतमनुभातिसर्वम्।तस्यभासासर्वमिदंविभाति।नतत्रसूर्योभातिनचन्द्रतारकम्' इत्यादिकश्रुतियोंनैं तासाक्षीचैतन्यकूं सूर्यचन्द्रादिकसर्वजगत्का प्रकाशकपणा कह्याहै॥तथा तिनसूर्यचन्द्रादिकज्योतियोंकरि

के अप्रकाशितपणाकह्याहै ॥ यहहीतासाक्षीचैतन्यविषे स्वप्रकाशपणाहै ॥ यातैंसोसाक्षीचैतन्यका
स्वप्रकाशपणा जाग्रत्अवस्थाविषेभी निर्णीतहींहै॥ताजाग्रत्अवस्थाकूंछोडिकै स्वप्नअवस्थाविषेतासा
क्षीचैतन्यकेस्वप्रकाशपणेकूं सुविज्ञेयकहणा अनुचितहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि विवेकीपुरुषों
कूं जाग्रत्अवस्थाविषेभी सोसाक्षीकास्वप्रकाशपणा सुविज्ञेयहै ॥ तथापि अविवेकी पुरुषोंकूंताजाग्रत्
अवस्थाविषे सोसाक्षीकास्वप्रकाशपणा दुर्विज्ञेयहीहै ॥ काहेतैं ताजाग्रत्अवस्थाविषे इसपुरुषके गमन
आगमनादिकव्यवहार सूर्यरूपज्योतिकरिकैहोवैहै ॥ और तासूर्यरूपज्योतिकेअभावहुए चन्द्ररूपज्यो
तिकरिकै तेव्यवहार होवैहै ॥ और ताचंद्ररूपज्योतिकेभीअभावहुए अग्निरूपज्योतिकरिकै तेव्यवहार
होवैहैं ॥ और ताअग्निरूपज्योतिकेभीअभावहुए गाढअंधकारविषे शब्दरूपज्योतिकरिकै तेव्यवहार
होवैहैं॥इसप्रकार जाग्रत्अवस्थाविषे व्यवहारकेसाधक सूर्यादिकअनेकज्योतियोंकरिकै मिल्याहुआ सो
साक्षीचैतन्यरूपज्योतिहै ॥ यातैं ताजाग्रत्अवस्थाविषे अविवेकीपुरुषोंकूं तासाक्षीचैतन्यकेस्वप्रकाशप
णेका निर्णयहोइसकैनहीं॥और स्वप्नअवस्थाविषेतौ तेजाग्रत्अवस्थाकेसूर्यचंद्रादिकसर्वज्योति लयहो
इजावैहैं ॥ और तास्वप्नअवस्थाविषेभी जाग्रत्अवस्थाकीन्यांई तेसर्वव्यवहार होवै हैं ॥ और जोजो व्य
वहारहोवैहैं सोसो किसीज्योतिकरिकैही साध्यहोवैहैं ॥ यातैं तिनस्वप्नव्यवहारोंकासाधकभी कोईज्यो
ति अवश्यमान्याचाहिये ॥ यद्यपि तास्वप्नविषे अंतःकरण तथाअज्ञान विद्यमानहै ॥ तथापि सोअंतः ॥१५५॥
करण तहां विषयादिआकारपरिणामकूं प्राप्तभयाहै ॥ यातैं ताअंतःकरणकूंभी ज्योतिपणा संभवतान
हीं ॥ और अज्ञानतौ तमकीन्यांई प्रकाशककाविरोधीहीहै यातैं ताअज्ञानकूंभीज्योतिपणा संभवता

नहीं ॥ परिशेषतैं सोसाक्षीचैतन्यरूपज्योतिही तिनस्वप्नव्यवहारोंकासाधकरूपकरिकै सिद्धहोवैहै ॥ इस प्रकारतैं अविवेकीपुरुषोंकूंभी तास्वप्नअवस्थाविषे तासाक्षीचैतन्यकास्वप्रकाशपणानिर्णयहोइसकैहै॥ यातैं स्वप्नअवस्थाविषे साक्षीचैतन्यकास्वप्रकाशपणा सुविज्ञेयहै यहकहणा संभवैहै।।इसीअभिप्रायक रिकै 'अत्रायंपुरुषःस्वयंज्योतिर्भवति' इसबृहदारण्यकश्रुतिनैं स्वप्नअवस्थाविषेही तासाक्षीआत्माकूं स्वयंज्योति कह्याहै ॥ इहां स्वयंज्योति स्वप्रकाश स्वयंप्रकाशमान इनतीनोंशब्दोंका एकहीअर्थजान णा ॥ तहां साक्षीकालक्षणतौ पूर्वद्वितीयपरिच्छेदविषे कथनकरिआयेहैं ॥ अब प्रसंगतैं तासाक्षीचैतन्य केस्वप्रकाशताकालक्षणकहैहैं ॥ तहां चैतन्याविषयत्वं स्वप्रकाशत्वम्' अर्थयह ॥इंद्रियजन्यवृत्तिविषे प्रतिबिंबितजोचैतन्यहै ताकानाम फलचैतन्यहै ॥ ताफलचैतन्यका जोअविषयपणाहै ॥ यहही ता साक्षीचैतन्यविषे स्वप्रकाशपणाहै ॥ अथवा 'अवेद्यत्वेसतिअपरोक्षव्यवहारयोग्यत्वं स्वप्रकाशत्वम्'अ र्थयह ॥ उक्तफलचैतन्यकाअविषयहुआ जोअपरोक्षव्यवहारकायोग्यपणाहै यहही तासाक्षीचैतन्यविषे स्वप्रकाशपणाहै ॥ इहां अपरोक्षव्यवहारकरिकै प्रमाणजन्यवृत्तिकाग्रहणकरणा ॥ तहां अपरोक्षव्यवहा रकेयोग्यघटादिकोंविषे इसलक्षणकीअतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै। अवेद्यत्वेसति । यहपद कथनक र्याहै ॥ तिनघटादिकोंविषे सो फलचैतन्यकाअविषयत्वरूपअवेद्यपणा हैनहीं ॥ और अवेद्यधर्माधर्म विषे इसलक्षणकीअतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै। अपरोक्षव्यवहारयोग्यत्वम् ।यहपद कथनकर्याहै॥ सोअपरोक्षव्यवहारयोग्यत्व ताधर्माधर्मविषेहैनहीं ॥ यातैं तहां अतिव्याप्तिहोवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ तास्वप्रकाशसाक्षीकरिकै तिनस्वप्नके पदार्थोंकाप्रकाश होवो ॥ तथापि तेरथादिकपदार्थ तास्वप्नविषे

नवीनही उत्पन्नहोवै हैं ॥ इसविषै कौनप्रमाणहै? ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ साक्षात् वेदकीश्रुतिही ताअं
र्थविषैप्रमाणहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'नतत्ररथानरथयोगानपंथानोभवंति अथरथान्रथयोगान्पथःसृजति'
अर्थयह ॥ जाग्रत्अवस्थाविषै जेव्यावहारिक रथहैं ॥ तथा तिनरथोंविषैजुडणेहारे जेअश्वहैं ॥ तथा ति
नअश्वोंकेचलणेयोग्य जेमार्गहैं ॥ तिनसर्वोंका स्वप्नविषै अभावहै ॥ तोभी तास्वप्नविषै रथोंकूं तथाअ
श्वोंकूं तथामार्गोंकूं उत्पन्नकरेहैं इति ॥ यहश्रुति तास्वप्नविषै जाग्रत्केरथादिकोंकेअभावकूं तथाप्राति
भासिकरथादिकोंकीउत्पत्तिकूं कथनकरेहैं ॥ यातैं तिनरथादिकोंकूंविषयकरणेहारा सोस्वप्नकाज्ञान अ
नुभवरूपही है स्मृतिरूपनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ इसप्रकार तास्वप्नकेज्ञानकूं जो अनुभवरूप मानोंगे
तौ तिनस्वप्नकेरथादिकपदार्थोंकी जाग्रत्विषैभी अनुवृत्ति होणीचाहिये ॥ काहेतैं जेपदार्थ जिसअधि
ष्ठानविषै कल्पितहोवै हैं ॥ तिसअधिष्ठानकेज्ञानतैंही तिनपदार्थोंकानाश होवैहै॥ और तेस्वप्नकेपदार्थ
ब्रह्मचैतन्यविषैही कल्पितहैं यातैं ताब्रह्मचैतन्यकेसाक्षात्कारकरिकैही तिनस्वप्नपदार्थोंकानाश हो
वैगा ॥ सोअधिष्ठानब्रह्मकासाक्षात्कार इसपुरुषकूं हैनहीं ॥ और ताअधिष्ठानसाक्षात्कारतैंभिन्न दूसरा
कोई तिनस्वप्नपदार्थोंकानिवर्त्तक हैनहीं॥यातैं जाग्रत्अवस्थाविषै तिनस्वप्नपदार्थोंकी अनुवृत्ति अवश्य
होणीचाहिये॥जोकदाचित् इसअर्थविषै इष्टापत्तिकरोगे तौ सर्वलोकोंकेअनुभवकाविरोध होवैगा ॥
अर्थात् सर्वलोक स्वप्नकेपदार्थोंका जाग्रत्विषैअभावही मानैहैं॥ यातैं तास्वप्नकेज्ञानविषैअनुभवरूपता
संभवतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ कार्यकानाश दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ बाध होवैहै ॥ दूसरा
लय होवैहै ॥ तहां अधिष्ठानकेवास्तवस्वरूपकेसाक्षात्कारकरिकै जो कार्यका आपणेउपादानकारणरूप

अज्ञानसहित नाशहै ताकानाम बाधहै॥ जैसे शुक्तिरूपअधिष्ठानकेसाक्षात्कारकरिकै रजतरूपकार्यका आपणेउपादानकारणअज्ञानसहित नाशहोवैहै ॥ इसीकानाम बाधहै ॥ और ताउपादानकारणकेविद्य मानहुएभी ताकार्यका जो तिरोभावमात्रहै ताकानाम लयहै ॥ तहां स्वप्नकेरथादिकपदार्थ अंतःकरण मायाद्वारा शुद्धचैतन्यविषे अध्यस्तहैं ॥ और ताशुद्धचैतन्यरूपअधिष्ठानकासाक्षात्कार इसपुरुषकूंजा ग्रत्कालविषे हैनहीं ॥ यातैं शुक्तिरजतकीन्याईं तिनस्वप्नपदार्थोंका बाधरूपनाशतौ होतानहीं ॥ परंतु सोस्वप्न पूर्वउक्तरीतिसे सोपाधिकभ्रमहै ॥ यातैं जैसे जपाकुसुमादिरूपउपाधिकीनिवृत्तितैं स्फटिकवि षे लोहितकीनिवृत्त होवैहै ॥ तैसे उपाधिकीनिवृत्तितैं तिनस्वप्नपदार्थोंकीभी निवृत्तिसंभवैहै ॥ यातैं जाग्रतअवस्थाविषे तिनस्वप्नपदार्थोंकीअनुवृत्ति संभवतीनहीं ॥ तहां जाग्रत्केसंस्कारतथास्वप्नविषेभो गदेणेहाराकर्म तथानिद्रादोष इनतीनोंकरिकैविशिष्ट जोअंतःकरणहै ॥सोअंतःकरणही तास्वप्नभ्रमविषे उपाधिहै ॥ ताअंतःकरणरूपउपाधिकीनिवृत्तितैं जाग्रत्अवस्थाविषे तिनस्वप्नपदार्थोंकीनिवृत्तिहोवैहै॥ यद्यपि जाग्रतअवस्थाविषे सोअंतःकरण स्वरूपतैं विद्यमानही है ॥ तथापि ताजाग्रत्अवस्थाविषेसोअं तः करण स्वप्नभोगप्रदकर्मनिद्रादोषविशिष्टनहीं है॥तहांजोपदार्थआपणेविषेस्थितधर्मोंकूं आपणेसंबंधी विषे आरोपणकरेहै ॥ सोपदार्थ उपाधि कह्याजावैहै ॥ जसेजपाकुसुम आपणेविषेस्थितरक्तवर्णकूं आपणेसंबंधी स्फटिकविषे आरोपणकरेहै ॥ यातैं सोजपाकुसुम उपाधि कह्याजावैहै ॥ तैसेसोअंतःकर णभी आपणेकर्तृत्वभोक्तृत्वादिकधर्मोंकूं आपणेसंबंधी आत्माविषे आरोपणकरेहै ॥ यातैं सोअंतःकरण भी उपाधिकह्याजावैहै ॥ इसप्रकार स्वप्नज्ञानकूं सोपाधिकभ्रमरूपहोणेतैं अनुभवरूपताही संभवैहै

इति ॥ इहां केएकग्रंथकारतौ यहकहेहैं॥ सोस्वप्नअध्याससोपाधिकभ्रम नहीं है॥किंतु शुक्तिरजतभ्रमकी
न्याईं निरूपाधिकभ्रमही है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तास्वप्नअध्यासकूं जोनिरूपाधिकभ्रम मानोगे तौति
नस्वप्नपदार्थोंकी जाग्रत्विषेभी अनुवृत्ति होणीचाहिये॥ काहेतैं तानिरुपाधिकभ्रमकी अधिष्ठानकेज्ञान
तैंही निवृत्तिहोवैहै ॥ और तास्वप्नभ्रमकाअधिष्ठान ब्रह्मचैतन्यहै ॥ ताब्रह्मचैतन्यका इसपुरुषकूंजाग्रत्
अवस्थाविषे साक्षात्कारहैनहीं ॥ यातैं तिनस्वप्नपदार्थोंका जाग्रत्अवस्थाविषे बाधहोवैगानहीं ॥ ॥ स
माधान ॥ ॥ जैसे रजतभ्रमकाअधिष्ठान जाशुक्तिहै ॥ ताशुक्तिके नहींसाक्षात्कारहुएभी तथा तारज
तभ्रमकेउपादानकारणरूपअज्ञानकेविद्यमानहुएभी तारजतभ्रमकी विरोधीदंडादिकपदार्थकेज्ञानकरिकै
निवृत्तिहोइजावैहै ॥ तैसे स्वप्नभ्रमकेअधिष्ठानरूपब्रह्मचैतन्यके नहींसाक्षात्कारहुएभी विरोधी जाग्रत्ज्ञा
नकरिकैतिन स्वप्नपदार्थोंकीनिवृत्ति बनिसकेहै ॥ यातैं तिनस्वप्नपदार्थोंकी जाग्रत्विषे अनुवृत्ति होवैन
हीं ॥ यातैं तारजतभ्रमकीन्याईं सोस्वप्नभ्रमभी निरुपाधिकभ्रमही है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तास्वप्नभ्रमकूं
जो निरुपाधिकभ्रम मानोगे तौ ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुषोंकूं सोस्वप्नभ्रम नहींहोणाचाहिये ॥ काहेतैं ति
नस्वप्नपदार्थोंकाअधिष्ठान जोब्रह्मचैतन्यहै ॥ ताब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकासोस्वप्न
भ्रमकाउपादानकारणरूपज्ञान निवृत्तहोइगयाहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै
अज्ञानकेनिवृत्तहुएभी ताअज्ञानकेकार्यभूतअंतःकरणादिकोंकी प्रारब्धकर्मकेनाशपर्यंत निवृत्तिहोतीन ॥१९७॥
हीं ॥ और पूर्वउक्तरीतिसे तिनस्वप्नपदार्थोंका अंतःकरणही साक्षात्उपादानकारणहै ॥ यातैं प्रारब्धके
नाशपर्यंत तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूंभी सोस्वप्नभ्रम संभवैहै ॥ जोकदाचित् ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञान

कीनिवृत्तितैंअनंतर तत्त्ववेत्तापुरुषकूं स्वप्नभ्रम नहींमानोगे तौ तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं जाग्रतअवस्था विषेभी शब्दादिकविषयोंकाअनुभव नहींहोणाचाहिये ॥ और जाग्रतअवस्थाविषे सोतत्त्ववेत्तापुरुषका व्यवहार प्रत्यक्षप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं सोस्वप्नभ्रमभी मान्याचाहिये ॥ परन्तु सोत त्त्ववेत्तापुरुष अज्ञानीपुरुषकीन्यांई आपणेस्वरूपविषे कोईव्यवहार मानतानहीं इति ॥तहां पूर्वनिरु पाधिक सोपाधिक इसभेदकरिकै दोप्रकारकाविपर्यय कह्याथा ॥ ताका अबपर्यंत निरूपणकऱ्या ॥ अब ताउक्तविपर्ययकाही अन्यप्रकारतैंविभाग कहेहैं ॥ सोपूर्वउक्त भ्रमरूपविपर्यय पुनःदोप्रकारकाहो वैहै ॥ एकतौ अंतःकरणकीवृत्तिरूप होवैहै ॥ दूसरा अविद्याकीवृत्तिरूप होवैहै तहां स्वप्नकेपदार्थों काज्ञान तथामनोराज्य तथानष्टहुएपुत्रादिकोंकाप्रत्यक्ष इत्यादिकभ्रमतौ अंतःकरणकीवृत्तिरूप होवै है और शुक्तिविषेरजतकाज्ञान तथारज्जुविषेसर्पकाज्ञान इत्यादिकभ्रम अविद्याकीवृत्तिरूप होवैहै ॥ इस प्रकार पूर्वउक्तसंशयभी अविद्याकीवृत्तिरूपही होवैहै इति ॥ इतनैंपर्यंत विपर्ययकानिरूपणक ऱ्या ॥ अब ताविपर्ययकेनिवृत्तिकाउपाय वर्णनकरेहैं ॥ तहां पूर्वउक्त अहंअज्ञः इत्यादिक निरुपाधि क विपर्ययतौ निदिध्यासनकरिकैं निवृत्तहोवैहै ॥ और सोपाधिकविपर्ययतौ तिसतिसउपाधिकीनिवृत्ति ता निवृत्तहोवैहै ॥ तहां पूर्वउक्त विपरीतभावनारूपविपर्ययकानिवर्त्तक जो निदिध्यासनहै ॥ ताकास्व रूप पूर्वद्वितीयपरिच्छेदविषे निरूपणकरिआयेहैं ॥ सो इहांभी जानिलेणा ॥ सोनिदिध्यासन शारीर कमीमांसाके तृतीयअध्यायकेपठनकरिकै सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकार श्रवणकरिकै प्रमाणगतअसंभावना केनिवृत्तहुए ॥ तथा मननकरिकै प्रमेयगतअसंभावनाकेनिवृत्तहुए तथा निदिध्यासनकरिकै विपरी

तभावनाकेनिवृत्तहुए इसअधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकवाक्यतैं 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारकाअप
रोक्षज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ ताअपरोक्षज्ञानतैं अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक परमानंदकीप्राप्तिहोवैहै ॥
॥ शंका ॥ ॥ श्रवणमननिदिध्यासनकूंकरतेहुएभी कितनैंकपुरुषोंकूं सोब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोताना
हीं ॥ याकेविषे क्याकारणहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताआत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे जैसे सापूर्वउक्त
असंभावना तथाविपरीतभावना प्रतिबंध होवैहै ॥ तैसे भूत १ भावी २ वर्त्तमान ३ यहतीनप्रकारका
दूसराभी प्रतिबंध होवैहै ॥ सोप्रतिबंध जिनपुरुषोंविषे विद्यमानहोवैहै ॥ तिनपुरुषोंकूं श्रवणादिकोंके
करतेहुएभी सोआत्मज्ञान उत्पन्नहोतानहीं ॥ और जिनपुरुषोंकूं सोप्रतिबंध नहींहोवैहै ॥ तिनपुरुषों
कूं विचारकऱ्येहुएतत्त्वमसिवाक्यतैं सोब्रह्मसाक्षात्कार अवश्यहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवाननैंभी
ब्रह्मसूत्रोंविषेकहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ 'ऐहिकमप्यप्रस्तुतप्रतिबंधेतद्दर्शनात्' अर्थयह ॥ फलदेणेवासतै स
न्मुखभयाजोकर्मविशेषहै ताकानाम प्रस्तुतप्रतिबंधहै ॥ अथवा ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिकाविरोधी जा
वासनाविशेषहै ताकानाम प्रस्तुतप्रतिबंधहै ॥ ऐसेप्रस्तुतप्रतिबंधकेअभावहुए इसपुरुषकूं श्रवणमनना
दिकोंतैं इसीजन्मविषे ब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ और ताप्रस्तुतप्रतिबंधकेविद्यमानहुए इसपुरुषकूं जन्मां
तरविषेभी सोब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ जैसे वामदेवादिकोंकूंहुआहै इति ॥ तहां प्रतिबंधयुक्तपुरुषकूं आ
त्माकीदुर्विज्ञेयता श्रुतिस्मृतिनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'श्रवणायापिबहुभिर्योनलभ्यःशृंण्वंतो ॥१५८॥
पिबहवोयंनविद्युः' अर्थयह ॥ यहआत्मा बहुतपुरुषोंकूंतौ श्रवणवासतैंभी प्राप्तहोतानहीं ॥ और बहु
तपुरुषतौ इसआत्माकूं श्रवणकरतेहुएभी किसीप्रतिबंधकेवशतैं साक्षात्कारकरिसकतेनहीं इति ॥ इसी

अर्थकूं ' आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनंवेदनचैवकश्चित् ' इत्यादिकस्मृतिवचनभी कथनकरेहैं इति ॥ अब भूत १ भावी २ वर्त्तमान ३ इनतीनप्रतिबंधोंकास्वरूप तथाताकेनिवृत्तिकाउपाय वर्णन करेहैं ॥ तहां पूर्वअनुभवकन्या जोकोईप्रियविषयहै तिसकेदृढसंस्कारकेवशतैं ब्रह्मचिंतनकालविषे जो ताविषयका पुनःपुनःस्मरणहै ताकानाम भूतप्रतिबंधहै ॥ सोभूतप्रतिबंध ताविषयउपहितब्रह्मकेचिंतन करिके निवृत्तहोवैहै ॥ जैसे किसीसंन्यासीकूं पूर्वगृहस्थआश्रमविषे अनुभवकन्येहुए महिषीआदिकप दार्थकेपुनःपुनःस्मरणकरिकै जभी श्रवणकरतेहुएभी तत्त्वज्ञान नहींउत्पन्नभया ॥ तभी गुरुनैं ताभूतप्र तिबंधकीनिवृत्तिकरणेवासतै तासंन्यासीकेप्रति तामहिषीउपहितब्रह्मकेचिंतनका उपदेशकन्या ॥ ता चिंतनकरिकै तासंन्यासीका सोभूतप्रतिबंध निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर तासंसन्यासीकूं श्रवणा दिकोंतैं आत्मज्ञान होताभया ॥ याप्रकारकीगाथा लोकपरंपरातैंसिद्धहै इति ॥ और दूसरा भावीप्र तिबंधतौ प्रारब्धकर्मकाशेष १ तथाब्रह्मलोककीइच्छा २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ ताभावीप्र तिबंधकेविद्यमानहुए इसपुरुषकूं श्रवणादिकोंकेकरतेहुएभी सोआत्मज्ञान उत्पन्नहोतानहीं ॥ ॥ शं का ॥ ॥ प्रारब्धकर्मकूं जोज्ञानकाप्रतिबंधक मानोंगे ॥ तौ किसीभीपुरुषकूं सोब्रह्मसाक्षात्कार नहीं होवैगा ॥ जिसकारणतैं शरीरकीस्थितिपर्यंत सोप्रारब्धकर्म नाशहोतानहीं ॥ और ताप्रारब्धकर्मरूप प्रतिबंधकेवशतैं जभी किसीकूंभी सोब्रह्मसाक्षात्कार नहींभया ॥ तभी ताब्रह्मसाक्षात्कारके श्रवणादि असाधनोंकूंविधानकरणेहारे ' आत्मावाअरेश्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यः ' इत्यादिकश्रुतिवचन अप्रमाणहोवैंगे ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सो प्रारब्धकर्म दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ फलाभिसंधिकृत

प्रारब्धहोवैहै ॥ दूसरा केवलप्रारब्ध होवैहै ॥ तहां इसकर्मकारिकै हमारेकूं स्वर्गरूपफलकीप्राप्तिहोवैहै याप्रकारकीजाफलकीइच्छाहै ताकानाम फलाभिसंधिहै ॥ ताफलाभिसंधिकरिकैकऱ्याजोकर्महै ताका नाम फलाभिसंधिकृतहै ॥ और ताफलाभिसंधितैंविना कऱ्याजोकर्महै ताकानाम केवलप्रारब्धहै ॥ तहां फलाभिसंधिकृतप्रारब्धकर्मकातौ ताफलकेभोगकरिकैही नाशहोवैहै ॥ अन्यकिसीउपायकरिकै नाशहोतानहीं ॥ तिसफलाधिसंधिकृतकर्मकेविद्यमानहुए इसपुरुषकूं श्रवणादिकोंकेकरतेहुएभी सोब्रह्म साक्षात्कार उत्पन्नहोतानहीं ॥ काहेतैं इच्छाघटितसामग्री सर्वत्र प्रबलहीहोवैहै ॥ जैसे लोकविषे दोव स्तुकेज्ञानकीसामग्रीकेविद्यमानहुएभी इसपुरुषकूं जिसवस्तुकेज्ञानकीइच्छाहोवैहै तिसीवस्तुका प्रथम ज्ञानहोवैहै ॥ अन्यवस्तुकाज्ञान होतानहीं ॥ यातैं ताफलइच्छासहितप्रारब्धकर्मकूं प्रबलहोणेतैं ताके विद्यमानहुए इसपुरुषकूं श्रवणादिकोंकेकरतेहुएभी सोब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोवैनहीं ॥ किंतु ताफला भिसंधिकृतप्रारब्धकर्मकेफलभोगतैंअनंतरही इसपुरुषकूं सोब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै॥ अब ताफला भिसंधिकृतकर्मकीप्रबलताविषे श्रुतिप्रमाणभीकहेहैं ॥ 'सयत्कामोभवति तत्क्रतुर्भवति यत्क्रतुर्भव ति तत्कर्मकुरुते यत्कर्मकुरुते तदभिसंपद्यते' अर्थयह ॥ यहपुरुष जिसजिसफलकीकामनावालाहो वैहै ॥ तिसतिसफलकेअनुकूलकर्मकेसंकल्पवालाहोवैहै ॥ और जिसजिसकर्मकेसंकल्पवालाहोवैहै ॥ तिसतिसकर्मकूंकरैहै ॥ और जिसजिसकर्मकूंकरैहै तिसतिसकर्मकेअनुसार तिसतिसस्वर्गादिरूपफ लकूंप्राप्तहोवैहै इति इसप्रकारका फलाभिसंधिकृतप्रारब्धकर्मही भावीप्रतिबंधक कह्याजावैहै ॥ और दू सराजो फलकीइच्छातैंरहित केवलप्रारब्धकर्महै ॥ सोभी पुण्य १ पाप २ इसभेदकरिकै दोप्रकारका ॥१६९॥

होवैहै ॥ जिनदोनोंविषे केवलपुण्यप्रारब्धतौ पापकीनिवृत्तिद्वारा इसपुरुषके तत्त्वज्ञानकाहीहेतुहोवैहै ॥ तहां श्रुतिस्मृति ॥ 'धर्मेणपापमपनुदति । ज्ञानमुत्पद्यतेपुंसांक्षयात्पापस्यकर्मणः । कषायेकर्मभिःपक्वेततोज्ञानंप्रवर्त्तते' अर्थयह ॥ यहपुरुष धर्मकरिकै पापकूंनिवृत्तकरै ॥ और इनअधिकारीपुरुषोंकूं पापकर्मकेनाशतैंही आत्मज्ञान उत्पन्नहोवैह ॥ और पुण्यकर्मोंकरिकै पापादिकोंकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर इसपुरुषकूं ताशुद्धअंतःकरणविषे आत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंकरिकै ताकेवलपुण्यप्रारब्धकूं पापकीनिवृत्तिद्वारा आत्मज्ञानकीकारणता सिद्धहोवैहै ॥ और दूसरा जोपापप्रारब्ध है सोतौ फलाभिसंधिकृतहोवै ॥ अथवा ताफलाभिसंधितैंरहित केवलहोवै दोनोंप्रकारका सोपापप्रारब्ध आत्मज्ञानका प्रतिबंधकहीहोवैहै ॥ तहां सोपापप्रारब्ध किसीप्रबलपुण्यकर्मकरिकै तिरोभावकूंप्राप्तहुआ निवृत्तहोवैहै अन्यथा ज्ञानकेउत्पत्तिका प्रतिबंध करैहै ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ सोप्रारब्धशेषरूपभावीप्रतिबंध जबपर्यंत फलभोगकरिकैनिवृत्तिनहींहोता ॥ तबपर्यंत श्रवणादिकोंकेकरतेहुएभी इसपुरुषकूं आत्मज्ञान उत्पन्नहोतानहीं ॥ और जभीफलकेभोगकरिकै सोभावीप्रतिबंध निवृत्तहोवै है ॥ तभी इसपुरुषकूं तिनश्रवणादिकसाधनोंकरिकै सोआत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं ताआत्मसाक्षात्कारवासतै तिनश्रवणादिकसाधनोंकेविधानकरणेहारीश्रुतिकूंभी अप्रमाणता होवैनहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ यहउक्तभावीप्रतिबंध कितनेकालपीछे निवृत्तिहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इसभावीप्रतिबंधकीनिवृत्तिविषे कालकानियम नहीं है ॥ किंतु किसीकातौ एकजन्मकरिकैभी सोप्रतिबंध निवृत्तहोवैहै ॥ और किसीका दोतीनजन्मोंकरिकैभी निवृत्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लो

क ॥ 'आगामीप्रातिबंधोहि वामदेवेसमीरितः । एकेनजन्मनाक्षीणो भरतस्यत्रिजन्मभिः' अर्थयह ॥ सोपूर्वउक्त प्रारब्धशेषरूपभावी प्रतिबंध वामदेवविषे तथा भरतविषे होताभयाहै ॥ तहां वामदेवकातौ सोप्रतिबंध एकजन्मकरिकै निवृत्तहोताभयाहै ॥ और भरतका तीनजन्मोंकरिकै निवृत्तहोताभयाहै॥यातैं ताभावीप्रातिबंधकीनिवृत्तिविषे कोई कालकानियम नहीं है ॥ सोवामदेवकावृत्तांत आत्मपुराणकेप्रथम अध्यायविषे विस्तारतैंकथनकऱ्याहै इति॥तहां पूर्व प्रारब्धशेष ब्रह्मलोककी इच्छा यहदोप्रकारका भावी प्रतिबंध कह्याथा ताकेविषे प्रारब्धशेषरूपप्रथमप्रतिबंधका अबपर्यंत निरूपणाकऱ्या ॥ अब ब्रह्मलोक कीइच्छारूप दूसरेभाविप्रतिबंधका निरूपणकरेहैं ॥ जिसपुरुषकूं मनविषे ब्रह्मलोककेप्रातिकीइच्छाहै ॥ सोपुरुष श्रवणादिकोंकूँकरताहुआभी आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं साब्रह्मलोककी इच्छाभी ता आत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे भावीप्रतिबंधहै ॥ यहवार्त्ता श्रीविद्यारण्यस्वामीनैंभी कहीहै तहांश्लोक ॥ 'ब्रह्मलोकाभिवांछायां सम्यक्सत्यांनिरुध्यताम् । विचारयेद्यआत्मानं नतुसाक्षात्करोत्ययम्' अर्थयह ॥ जिसपुरुषकूं ब्रह्मलोककेप्रातिकी अत्यंतउत्कटइच्छाहै ॥ सोपुरुष ताइच्छाकूंरोकिकै श्रवणादिकोंकूं करताहुआभी आत्माकूंसाक्षात्कार करतानहीं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्मलोककेप्रातिकासाधनरूप जेउपासनाहै ॥ तेउपासनाभी तिसपुरुषनैं करीनहीं ॥ जिसकरिकै ब्रह्मलोककूंजावै ॥ और जेश्रवणादिक तिसपुरुषनैं कऱ्येहैं ॥ तिनश्रवणादिकोंतैं तिसपुरुषकूं ताइच्छारूपप्रतिबंधकेवशतैं आत्मज्ञानकीभी प्रातिहुईनहीं ॥ यातैं सोपुरुष दोनोंफलोंतैंभ्रष्टहुआ अधःपतनहीं होवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोपुरुष मरणतैंअनंतर तिनश्रवणादिकोंकेप्रभावतैं ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहांनिर्गुणब्रह्मकूं 'अहंब्रह्मास्मि

याप्रकार साक्षात्कार करेहै ॥ तासाक्षात्कारतैं तहां विदेहकैवल्यरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यतयःशुद्धसत्वा तेब्रह्मलोकेषुपरांतकाले परामृतात्परिमुच्यंतिसर्वे' अर्थयह ॥ वेदांतकेश्रवणजन्यज्ञानकरिकै भलीप्रकारतैं निश्चयकऱ्याहै अद्वितीयब्रह्मरूपअर्थ जिनोंनैं ॥ तथा श्रुतिस्मृतिविहितसर्वकर्मोंकेत्यागपूर्वक ज्ञानाभ्यासरूपयोगतैं शुद्धहुआहैअंतःकरण जिनोंका ऐसेजेसंन्यासीहैं ॥ तेसंन्यासी किसीप्रतिबंधकेवशतैंइहांब्रह्मसाक्षात्कारकेनहींउत्पन्नहुएभी तिनश्रवणादिकोंकेप्रभावतैं ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहां निर्गुणब्रह्मकूं साक्षात्कारकरेहैं ॥ और ताब्रह्मलोककेअधिपतिहिरण्यगर्भकेअंतकालविषे तेसंन्यासी ताउत्पन्नहुएब्रह्मसाक्षात्कारतैं विदेहकैवल्यरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवैहैं इति ॥ यहउक्तअर्थही 'ब्रह्मणासहतेसर्वे संप्राप्ते प्रतिसंचरे । परस्यांतेकृतात्मानः प्रविशंतिपरंपदम्' इसस्मृतिविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तथा यहउक्तअर्थही 'नंहिकल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिंतातगच्छति' इत्यादिकवचनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं गीताविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ यातैं तिसपुरुषके तेश्रवणादिक निष्फलनहींहै ॥ किंतु ब्रह्मलोककीप्राप्तिद्वारा आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै मोक्षकेहीसाधनहोवैहैं इति ॥ अब तीसरे वर्त्तमानप्रतिबंधकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां सोवर्त्तमानप्रतिबंध विषयासक्ति १ बुद्धिमंदता २ कुतर्क ३ विपर्ययदुराग्रह ४ इसभेदकरिकै चारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां शब्दस्पर्शादिकविषयोंविषेजोरागहै ताकानाम विषयासक्तिहै ॥ और श्रवणकऱ्येहुएअर्थकेग्रहणकरणेविषे तथाधारणकरणेविषे जोबुद्धिकीअकुशलताहै ताकानाम बुद्धिमंदताहै ॥ और श्रुतितैं विरोधी जेतर्कहैं तिनोंकानाम कुतर्कहै ॥ और वास्तवतैंअकर्त्ताअभोक्ताआत्माके कर्त्ताभोक्तापणेविषे

जोदुराग्रहहै अर्थात् आत्मा कर्त्ताभोक्ताही है याप्रकारका जोअभिमानहै ताकानाम विपर्ययदुराग्रहहै॥ इनचारोंप्रतिबंधोंविषे कोईभीप्रतिबंधकेविद्यमानहुए इसपुरुषकूं श्रवणादिकोंकेकरतेहुएभी सोआत्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोतानहीं ॥ यातैं तेचारों ताआत्मज्ञानके वर्त्तमानप्रतिबंध कह्येजावैं॥इनप्रतिबंधोंकीहै जभीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तभीही इसपुरुषकूं तिनश्रवणादिकोंकरिकै सोआत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैंअब तिनचारिप्रतिबंधोंकेनिवृत्तिकाउपाय कथनकरे हैं ॥ तहां शमदमादिकोंकरिकैतो विषयासक्तिरूपप्रतिबंधकी निवृत्तिहोवैहै ॥ और वेदांतकेश्रवणकरिकै बुद्धिमंदतारूपप्रतिबंधकी निवृत्तिहोवैहै ॥ और मननकरिकै कुतर्करूपप्रतिबंधकी निवृत्तिहोवैहै ॥ और निदिध्यासनकरिकै विपर्ययदुराग्रहरूपप्रतिबंधकी निवृत्तिहोवैहै ॥ यहउक्तसर्वअर्थ श्रीविद्यारण्यस्वामीनैं 'प्रतिबंधोवर्त्तमानो विषयासक्तिलक्षणः। प्रज्ञामांद्यंकुतर्कश्चविपर्ययदुराग्रहः॥शमाद्यैःश्रवणाद्यैर्वा तत्रतत्रोचितैःक्षयं नीतेऽस्मिनप्रतिबंधेतु स्वस्य ब्रह्मत्वमश्नुते' इनदोश्लोकोंकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रवण मनन निदिध्यासन इनतीनोंकास्वरूप पूर्वद्वितीयपरिच्छेदविषे निरूपणकरिआयेहैं ॥ सो इहांभीजानिलेणा ॥ अब शमदमादिकोंकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ तहां शम १ दम २ उपरति ३ तितिक्षा ४ श्रद्धा ५ समाधान ६ यह शमादिषट्संपत्ति कहीजावैहै ॥ तहां जैसे श्रवण मनन निदिध्यासन यहतीनों ताउक्तप्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा आत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे अंतरंगसाधनहैं ॥ तैसे यहशमादिषट्संपत्तिभी ताउक्तप्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वाराअंतरंगसाधनहीं है ॥ तहां अंतरमनका जोविषयचिंतनतैंनिग्रहहै ताकानाम शमहै ॥ और श्रोत्रादिकबाह्य इंद्रियोंका जोशब्दादिकविषयोंतैंनिग्रहहै ताकानाम दमहै ॥ और विधिपूर्वक सर्वकर्मोंकाजोसंन्यास

है ताकानाम उपरतिहै ॥ और शीतउष्ण सुखदुःख मानअपमान निंदास्तुति इत्यादिकद्वंद्वधर्मोंकाजो सहनहै ताकानाम तितिक्षाहै ॥ और गुरुवेदांतवचनोंविषे जोविश्वासहै ताकानाम श्रद्धाहै ॥ और श्रवणादिकोंकेकरणेविषे जोचित्तकीएकाग्रताहै ताकानाम समाधानहै ॥ तहां विजातीयवृत्तियोंका तिरस्कारकरिकै जोलक्ष्यवस्तुगोचर सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै यहहीताचित्तकीएकाग्रता जानणी ॥ किंवा इसशमादिषट्संपत्तिविषे आत्मज्ञानकीअंतरंगसाधनता श्रुतिनैंभी कथनकरीहै ॥ तहां श्रुति 'शांतोदांतउपरतास्तितिक्षुःसमाहितोभूत्वाऽऽत्मन्येवात्मानंपश्यति' अर्थयह ॥ शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधान इसषट्संपत्तिवालापुरुष आपणेअंतःकरणविषे आत्माकूं साक्षात्कारकरैहै इति ॥ इसीउक्तअर्थकूं श्रीव्यासभगवान्नैंभी 'शमदमाद्युपेतःस्यात्' इत्यादिकसूत्रकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ यातैं श्रवणादिकोंकीन्यांई ताशमादिषट्संपत्तिविषे आत्मज्ञानकीअंतरंगसाधनता संभवैहै इति॥ अब ताआत्मज्ञानकेबहिरंगसाधनोंकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां स्वर्गादिकफलकी इच्छातैंरहितहोइकै कऱ्येजेयज्ञदानादिककर्म हैं ॥ तेयज्ञदानादिककर्म ताआत्मज्ञानके बहिरंगसाधनहैं ॥ काहेतैं निष्कामयज्ञदानादिककर्मोंकरिकै इसपुरुषके अंतःकरणकीशुद्धिहोवैहै ॥ताशुद्धअंतःकरणविषे आत्माकेजानणेकीइच्छारूपविविदिषा उत्पन्नहोवैहै ॥ ताविविदिषातैंअनंतर श्रवणादिकोंकरिकै इसपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारहोवैहै ॥ इसप्रकारकी परंपराकरिकै तिनयज्ञदानादिककर्मोंकूंभीताआत्मज्ञानकीसाधनताहै ॥ यातैं तिनयज्ञदानादिकोंविषे आत्मज्ञानकीबहिरंगसाधनता संभवैहै ॥ तहांश्रुति॥ 'तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेन 'अर्थयह॥अधिकारीब्राह्मणइसआत्माकूं वेदानुवचनकरिकै तथायज्ञ

कारिकै तथादानकारिकै जानणेकीइच्छाकरे हैं ॥ तहां इसश्रुतिविषे वेदानुवचन इसशब्द कारिकै वेदकेअध्ययनका ग्रहणकरणा ॥ और यज्ञशब्दकारिकै अग्निहोत्रादिकयज्ञोंका ग्रहणकरणा ॥ और दानशब्दकारिकै तायज्ञतैंबाह्यदानका ग्रहणकरणा ॥ और हितकारी तथापरिमित तथापवित्र ऐसे अन्नकाजोभोजनहै ताकानाम तपहै ॥ इसीकारणतैं श्रुतिविषे तिसउक्ततपका अनाशक यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तहां जोतप शरीरकेनाशकाहेतु नहींहोवै सोतप अनाशक कह्याजावैहै ॥ इहां कैए कग्रंथकारतौ 'तपसानाशकेन ' इसउक्तश्रुतिवचनविषे 'अनाशकेन' इसप्रकारका पदच्छेद नहींकरते ॥ किंतु 'नाशकेन' इसप्रकारका पदच्छेदकारिकै तावचनका यहअर्थ करैहैं ॥ शरीरकेनाशकाहेतु जो अनशनव्रतहै ॥ तथा श्रीगंगायमुनाकेसंगमरूपप्रयागविषे जो बुद्धिपूर्वक शरीरकात्यागहै ॥ तथा शरीरकूंक्षीणकरणेहारे जे कृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतहैं ॥ तिनोंकानाम तपहै याकारणतैंही 'तपोनानशनात्परम्' यहश्रुति अनशनव्रतकूं सर्वतपोंतैंउत्कृष्टतप कहेहै॥और प्रयागविषे बुद्धिपूर्वक शरीरकेत्यागकरणेहारेपुरुषकूं विविदिषाद्वारा ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति श्रुतिस्मृतिइतिहासपुराणोंविषे कथनकरीहै ॥ यातैं ताश्रुतिविषेस्थित तपशब्दकारिकै ताअनशनादिरूपतपकाही ग्रहणकरणा इति ॥ इहां कैएकग्रंथकारता ऐसाकहेहैं ॥ प्रयागादिकोंविषे बुद्धिपूर्वकमरण जो शास्त्रोंमें कह्याजावैहै सोयथार्थहै ॥परंतु इसकलियुगतैंभिन्न त्रेतादिकयुगोंविषे सोमरण कथनकऱ्याहै ॥ इसकलियुगविषेतौ सोबुद्धिपूर्वकमरण सर्वप्रकारतैं निषिद्धहीहै ॥ और तिसमरणविधायकवचनोंकी जोयुगभेदतैंव्यवस्था नहींकरिये तौभी तेवचन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंतैंभिन्न शूद्रादिकोंकेमरणका विधानकरेहैं ॥ त्रैवर्णिकपुरु

षोंकेमरणका विधानकरतेनहीं ॥ याकारणतैंही धर्मशास्त्रविषे ब्राह्मणादिकोंकूं मरणांतिकप्रायश्चित्तका निषेधकऱ्याहै इति ॥ तहां पूर्वउक्तश्रुतिविषे कथनकऱ्येजे वेदाध्ययन यज्ञ दान तपरूपकर्महैं ॥ तेसर्व समुच्चितहुए ताविविदिषाकेसाधनहोवैहैं ॥ इसप्रकार कैएकग्रंथकार मानेहैं॥और कैएकग्रंथकारतौ ति नयज्ञादिककर्मोंकूं विकल्पकरिकै ताविविदिशाकाहेतु मानेहैं ॥ अर्थात् वेदाध्ययनरूपकर्मकरिकैभी सा विविदिषाहोवैहै ॥ तथा यज्ञदानादिरूपकर्मकरिकैभी साविविदिषाहोवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्व उक्तयज्ञदानादिककर्मोंकूं साक्षात्‌ही मुक्तिकासाधनपणा संभवैहै ॥ यातैं तिनकर्मोंकूं विविदिषाकाहे तुपणाकहणा असंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अविद्याकीजा निवृत्तिहै अथवा ब्रह्मभावकीजाप्राप्ति है ताकानाम मुक्तिहै ॥ सामुक्ति केवल आत्मज्ञानकरिकैही संभवेहै ॥ कर्मकरिकै सामुक्ति संभव तीनहीं ॥ काहेतैं रजतभ्रमकाकारणरूप जोशुक्तिकाअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकीनिवृत्ति ताशुक्तिरूपअ धिष्ठानकेसाक्षात्कारतैंही होवैहै ॥ अन्यकिसीउपायतैं होवैनहीं ॥ और ब्रह्मात्मभावरूपमोक्षतौ अना दिहै ॥ यातैं तामोक्षकूंभी कर्मकरिकैसाध्यपणा संभवतानहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'भ्रांत्याप्रतीतःसंसारो विवेकान्नतुकर्मभिः । नरज्ज्वारोपितःसर्पो घंटाघोषान्निवर्त्तते' अर्थ यह ॥ जैसे भ्रांतिकरिकै रज्जुविषेआरोपणकऱ्याजोसर्प है ॥ सोसर्प ताररज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैंही निवृत्तहोवै है ॥ घंटाघोषमंत्रादिकोंतैं निवृत्तहोतानहीं ॥ तैसे आत्माविषे भ्रांतिकरिकैआरोपित जोसं सारहै ॥ सोसंसार ताअधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्काररूपविवेकतैंही निवृत्तहोवै कर्मोंकरिकै सोसंसा रनिवृत्तहोतानहीं इति ॥ किंवा 'नकर्मणानप्रजयानधनेनत्यागेनैकेऽमृतत्वमानशुः । नास्त्यकृतःकृते

न' इत्यादिकश्रुतियोंनैं कर्मोंकूं साक्षात्मोक्षकीसाधनताका निषेधकर्‍याहै ॥ और 'ज्ञानादेवतुकैव ल्यं । नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय' इत्यादिकश्रुतियोंनैं आत्मज्ञानकूंही साक्षात्मोक्षकासाधन कह्याहै ॥ याकारणतैंभी तिनकर्मोंकूं साक्षात्मोक्षकीसाधनता संभवतीनहीं ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसे तिनकर्मोंकूं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा विविदिषाकाहीहेतुपणा संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तश्रुतिविषेकथन कर्‍येहुए यज्ञादिककर्मोंकूं ताविविदिषाकाहेतुपणारहो॥ तथापि तेयज्ञादिककर्म नित्य नैमित्तिक काम्य प्रायश्चित्त इस भेदकरिकै चारिप्रकारकेहोवै हैं ॥ तेचारोंप्रकारकेयज्ञादिककर्म ताविविदिषाकेहेतु होवैहैं ॥ अथवा केवल नित्यकर्महीं ताविविदिषाकेहेतुहोवैहैं ॥ एसीशंकाकेप्राप्तहुए॥ तहां कैएकग्रंथकारतो ऐसाकहैहैं ॥ ताउक्तश्रुतिविषे विविदिषाकाहेतुरूपकरिकै केवल यज्ञदानादिककर्ममात्र कथनकरे हैं ॥ तिनकर्मोंविषे नित्यरूपता वा नैमित्तिकादिरूपता ताश्रुतिनैं कहीनहीं ॥ यातैं फलकीइच्छातैंरहितहोइकैकर्‍येहुएनित्य नैमित्तिककाम्य प्रायश्चित्तरूप सर्वयज्ञादिककर्म अंतःकरणकी शुद्धिद्वाराता विविदिषाकेहेतुहोवैहैं ॥ और सगुणब्रह्मकीउपासनातौ चित्तकीएकाग्रताका हेतुहोवैहै इति ॥ और आचार्यतौ ऐसाकहे हैं ॥ 'काम्यानांकर्मणांन्यासंसंन्यासंकवयोविदुः' इत्यादिकस्मृतिनैं काम्यकर्मोंके अनुष्ठानकानिषेधकरिकै फलकीइच्छातैंरहित अग्निहोत्रादिकनित्यकर्मोंकेअनुष्ठानका विधानकर्‍याहै ॥ यातैं ताउक्तश्रुतिनैंभी निष्कामअग्निहोत्रादिकनित्यकर्मही ताविविदिषाकाहेतुरूपकरिकैविधानकर्‍ये हैं ॥ नैमित्तिककाम्यप्रायश्चित्तरूपकर्म विधानकर्‍येनहीं इति ॥ तहां तिनयज्ञादिककर्मोंविषे आत्मज्ञानकी बहिरंगसाधनता श्रीव्यासभगवान्नैंभी ब्रह्मसूत्रोंविषे कहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ 'सर्वापेक्षाचयज्ञादि

श्रुतेरश्ववत्' अर्थयह ॥ ब्रह्मविद्याकूं आपणीउत्पत्तिविषे तिनयज्ञादिकर्मोंकी अपेक्षाहोवैहै ॥ जिसकारणतैं सापूर्वउक्तश्रुति ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिविषे तिन यज्ञादिककर्मोंकूंसाधनता कथनकरेहै परन्तु साब्रह्मविद्या मोक्षरूपफलकीउत्पत्तिविषे तिनयज्ञादिककर्मोंकीअपेक्षा करती नहीं ॥ जिसकारणतैं तामोक्षरूपफलविषे तिनकर्मोंकीयोग्यताहीनहीं है और जिसपदार्थकी जहां योग्यताहोवैहै ॥ तिसपदार्थकीही तहांअपेक्षाहोवैहै ॥ जैसे अश्वकी हलकेआकर्षणकरणेविषे योग्यताहोतीनहीं ॥ किंतु रथकेआकर्षणकरणेविषेही योग्यताहोवैहै ॥ यातैंसोअश्व रथविषेही जोडचाजावैहै ॥ ताहलविषे जोडचाजातानहीं॥तैसे तिनयज्ञादिककर्मोंकूं तामोक्षकेउत्पत्तिकरणेकी योग्यतानहीं है ॥ किंतु चित्तकीशुद्धिद्वारा विविदिषाकूंउत्पन्नकरिकै ताब्रह्मविद्याकेउत्पत्तिकरणेकीही योग्यताहै ॥ यातैं तिनयज्ञदानादिककर्मोंकूं आत्मज्ञानकीबहिरंगसाधनता संभवैहै इति ॥ इसप्रकार अंतरंगबहिरंगसाधनोंकरिकै सर्वप्रतिबंधोंतैंरहितहुएपुरुषका मनननिदिध्यासनकरिकैसंस्कृत जोचित्तरूपदर्पणहै ॥ ताशुद्धचित्तसहकृत जोविचारकऱ्याहुआ तत्त्वमसिआदिक महावाक्यहैं ॥ तामहावाक्यतैंउत्पन्नहुआजो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका अप्रतिबद्धसाक्षात्कारहै॥ ताआत्मसाक्षात्कारकरिकै इसअधिकारीपुरुषका अज्ञान नाशहोइजावैहै ॥ और पूर्वअनेकजन्मोंविषेसंपादनकऱ्येजे पुण्यपापरूपकर्म हैं॥तेसंचितकर्मभी ताआत्मज्ञानकरिकै नाशहोइजावैहैं ॥ और ताआत्मज्ञानतैंअनंतरकऱ्येजे आगामिकर्महैं ॥ तिनआगामिकर्मोंकातो इसविद्वानपुरुषकूं ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं स्पर्शही नहींहोता ॥ और प्रारब्धकर्मनैं व्याप्तकऱ्येजे अन्नपानादिकविषयहैं ॥ तिनविषयोंकूंअनुभवकरताहुआ यहविद्वानपुरुष अखंडएकरससच्चिदानंदब्रह्मात्मरूप

करिकै स्थितहोवैहै ॥ यहही आत्मज्ञानका मोक्षरूपफलहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर विद्वान्पुरुषकूं तुमनें विषयोंकाअनुभव कह्या ॥ सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं ताविषयानुभवकाकारण जोदेहाभिमानहै सो ताविद्वान्पुरुषविषे हैनहीं ॥ और जोऐसाकहो ॥ तादेहाभिमानतैंविनाही प्रारब्धकर्मकेवशतैं ताविद्वान्पुरुषकूं सोविषयानुभव संभवैहै ॥ सोयह तुमाराकहणा भी संभवतानहीं ॥ काहेतैं लोकविषे तादेहाभिमानकूंही अन्वयव्यतिरेककरिकै ताविषयानुभवकीकारणता सिद्धहै ॥ तहां जाग्रत्स्वप्नविषे तादेहाभिमानकेविद्यमानहुए सोविषयानुभव होवैहै॥ और सुषुप्ति अवस्थाविषे तादेहाभिमानकेअभावहुए सोविषयानुभव होतानहीं॥ इसप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै तादेहाभिमानकूंही ताविषयानुभवकेप्रति करणतासिद्धहोवैहै ॥ तादेहाभिमानकेअभावहुए केवलप्रारब्धकर्मकेवशतैं ज्ञानवान्पुरुषकूं सोविषयानुभव संभवतानहीं॥तात्पर्ययह ॥ सोप्रारब्धकर्म ताविषयानुभवका अदृष्टकारणहै ॥ और सोदेहाभिमान ताविषयानुभवका दृष्टकारणहै॥और अदृष्टकारणसामग्री दृष्टकारणसामग्रीतैंविना कोईकार्यकूं उत्पन्नकरिसकतीनहीं जो उत्पन्नकरतीहोवै ॥ तौ मृत्तिकाकुलालादिकदृष्टसामग्रीतैंविनाही ताअदृष्टसामग्रीतैं घटादिककार्य उत्पन्नहोणेचाहियें ॥ यातैं तादेहाभिमानकेअभावहुए ज्ञानवान्पुरुषकूं केवलप्रारब्धकर्मतैं सोविषयानुभव संभवतानहीं ॥ किंवा तादेहाभिमानतैंविनाही ज्ञानवान्पुरुषका जो विषयानुभवादिकव्यवहार मानोंगे तौ श्रीभाष्यकारोंनें ‘तमेतमविद्याख्यमात्मानात्मनोरितरेतराध्यासंपुरस्कृत्यसर्वेप्रमाणप्रमेयव्यवहारालौकिकावैदिकाश्चप्रवृत्ताः’ इसवचनकरिकै सर्वलौकिकवैदिकव्यवहारोंकी अध्यासपूर्वकप्रवृत्ति कथनकरीहै ॥ ताभाष्यवचनका

भी विरोधहोवैगा ॥ किंवा 'व्यवहारः अध्यासपूर्वकः व्यवहारत्वात्' इसअनुमानकरिकै सर्वव्यवहा रोंविषे अध्यासपूर्वकता सिद्धकरीहै ॥ सोयहअनुमानभी व्यभिचारीहोवैगा ॥ जिसकारणतैं ज्ञानवा न्पुरुषकेव्यवहारविषे ताव्यवहारत्वरूपहेतुकेविद्यमानहुयेभी सोअध्यासपूर्वकत्वरूपसाध्य हैनहीं॥और जोऐसाकहो ॥ ज्ञानवान्पुरुषविषेभी बाधितानुवृत्तिकरिकै सोदेहाभिमान रहेहै ॥ यातैं ताज्ञानवान्के व्यवहारविषे अध्यासपूर्वकत्वरूपसाध्यकेविद्यमानहुए सोव्यवहारत्वरूपहेतु तहांव्यभिचारीहोवैनहीं ॥ तथा ताभाष्यवचनकाभी विरोधहोवैनहीं ॥ सोयह तुम्हाराकहणाभी संभवतानहीं॥काहेतैं जैसे शुक्ति केसाक्षात्कारकरिकै ताशुक्तिको अज्ञानकीनिवृत्तितैं रजतभ्रमकीनिवृत्तिहुए पुनःतारजतभ्रमकीअनु वृत्तिदेखणेमेंआवतीनहीं ॥ तैसे आत्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तितैं देहाभिमानकेनिवृत्तहुए पुनःतादेहाभिमानकीअनुवृतिकहणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ जोकदाचित् आत्मज्ञानकरिकैबाधितदेहाभि मानकीभी पुनः अनुवृत्तिमानोंगे ॥ तौ शुक्तिज्ञानकरिकैबाधितरजतभ्रमकीभी पुनः अनुवृत्तिहोणीचा हिये ॥ और जोऐसाकहो ॥ जैसे सोपाधिकभ्रमस्थलविषे शुक्लःस्फटिकः इसप्रकारकेअधिष्ठानकेसाक्षा त्कारकेविद्यमाहुएभी जपाकुसुमादिरूपउपाधिकेसमीपस्थितहुए लोहितःस्फटिकःयाप्रकारकाअनुभव सर्वजनोंकूं प्रसिद्धहै॥तैसे इहांभी अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुएभी उपाधिकी स्थितिपर्यंत ज्ञानवान्पुरुषकूं सोदेहाभिमान तथातादेहाभिमानपूर्वक सोविषयानुभव संभवैहै॥सोयह तु म्हाराकहणाभी असंगतहै॥काहेतैं ताजपाकुसुमकीन्यांई इहां कोईउपाधि निरूपणहोइसकतानहीं॥ता त्पर्ययह ॥ अज्ञानकूं वा अज्ञानकेकार्यकूंही उपाधि कहणाहोवैगा॥तेदोनों आत्मज्ञानकरिकै निवृत्तहोइ

गयेहैं॥यातैं आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुए ताअज्ञानकेकार्यकीभीनिवृत्तिहोणेतैं ताज्ञानवान्पुरु
षकूं प्रारब्धकर्मकेवशतैं विषयोंकाअनुभवकहणा सर्वथाअसंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ अहंब्रह्मास्मि
याप्रकारके आत्मज्ञानकरिकै निवृत्तहुआहै अज्ञान जिसका ऐसेज्ञानवान्पुरुषकूं ताप्रारब्धकर्मकेवशतैं
सोविषयानुभव संभवैहै॥और ताविषयानुभवका कारणरूप जोदेहाभिमानहै॥सोदेहाभिमानभी ताज्ञान
वान्पुरुषविषे बाधितानुवृत्तिकरिकैरहैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तादेहाभिमानका कारणरूप जोअज्ञानहै
सो आत्मज्ञानकरिकै निवृत्तहोइगयाहै ॥ और उपादानकारणकेनाशहुएतैं अनंतर कार्यकी अनुवृत्ति क
हांभी देखणेविषेआवतीनहीं ॥ यातैं ज्ञानवान्पुरुषविषे तादेहाभिमानकी अनुवृत्तिकहणी असंगतहै ॥
॥ ॥ समाधान ॥ ॥ उपादानकारणकेनाशहुएभी कार्यकीअनुवृत्ति देखणेमेंआवैहै ॥ जैसे नैयायि
कोंकेमतविषेतंतु आदिकउपादानकारणकेनाशतैं अनंतर एकक्षणपर्यंत पटादिककार्यकीअनुवृत्ति अंगी
कारकरीहै ॥ तैसे सिद्धांतविषेभी अज्ञानरूपउपादानकारणकेनाशतैं अनंतर देहाभिमानादिरूपकार्यकी
अनुवृत्ति संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ नैयायियोंकासिद्धांततौ श्रुतिस्मृतिआदिकप्रमाणतैंरहितहै ॥
तिससिद्धांतकूं जोतुम अंगीकारकरोगे तौ तुम्हारेसिद्धांतविषेभी अप्रमाणता प्राप्तहोवैगी ॥ ॥ स
माधान ॥ ॥ अज्ञानकीनिवृत्तितैंअनंतरभी ज्ञानवान्पुरुषविषे बाधितानुवृत्तिकरिकै देहाभिमानादि
क रहैहैं इसअर्थकूं हम केवल नैयायिकोंकेसिद्धांतमात्रतैंही सिद्धनहींकरते॥ किंतु इसहमारेसिद्धांतके ॥१६९॥
साधक श्रुतिस्मृति युक्ति अनुभव आदिक अनेकप्रमाण विद्यमानहैं ॥ यातैं नैयायिकोंकेमतकीन्याईं
हमारेसिद्धांतविषे अप्रमाणता प्राप्तहोवैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जोपदार्थ उपादानकारणका निवर्त्त

क होवैहै ॥ सोपदार्थ ताकेकार्यकाभी निर्वत्तक होवैहै ॥ जैसे अग्नि तंतुरूपउपादानकारणकीनिवृत्ति करताहुआ ताकेपटरूपकार्यकीभी निवृत्तिकरैहै ॥ तैसे सोआत्मज्ञानभी अज्ञानरूपउपादानकारणकी निवृत्तिकरताहुआ ताअज्ञानकेकार्यकीभी अवश्य निवृत्तिकरेगा ॥ और सोदेहाभिमानभी ताअज्ञान का कार्यहै ॥ यातैं तादेहाभिमानकेनिवृत्तहुए ज्ञानवान्पुरुषकूं सोविषयानुभव: संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि सोआत्मज्ञान अज्ञानका तथाताअज्ञानकेकार्यका निवर्त्तकहै ॥ तथापि धनुष तैंछूटेहुएबाणकीन्याईं आपणेफलदेणेविषेप्रवृत्तहुआ प्रारब्धकर्म ताज्ञानतैं प्रबलहै ॥ यातैं सोप्रारब्धता अज्ञानकेकार्यकीनिवृत्तिविषे प्रतिबंधक होवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताप्रारब्धकर्मकूं जो आत्मज्ञानतैं प्रबल मानोगे तौ ताप्रबलप्रारब्धकर्मरूपप्रतिबंधकेविद्यमानहुए ताआत्मज्ञानतैं अज्ञानकीभी निवृत्ति नहींहोणीचाहिये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताआत्मज्ञानविषे एकतौ अज्ञानकानिवर्त्तकत्व अंश है ॥ और दूसरा अज्ञानकेकार्यकानिवर्त्तकत्व अंशहै ॥ तहां अज्ञानतैंविनाभी ज्ञानवान्पुरुषकूं प्रारब्ध कर्मकेफलकाभोग बनिसकैहै ॥ यातैं ताआत्मज्ञानविषे जो अज्ञाननिवर्त्तकत्व अंशहै ॥ ताका सोप्रारब्धकर्म प्रतिबंधक होतानहीं ॥ और ताअज्ञानकेकार्यरूप जे देहइंद्रियादिकहैं तिनोंतैंविना इसपुरुषकूं सोप्रारब्धकर्मकेफलकाभोग संभवतानहीं ॥ यातैं ताआत्मज्ञानविषे जो अज्ञानकेकार्यकानिवर्त्तकत्व अंशहै ताका सोप्रारब्धकर्म प्रतिबंधकहोवैहै ॥ अर्थात् सोप्रारब्धकर्म आपणेफलभोगदेणेवासतै तादेहइंद्रियादिरूपकार्यकूं निवृत्तहोणेदेतानहीं ॥ यातैं ताआत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुएभी ज्ञानवान्पुरुषकूं बाधितानुवृत्तिकरिकै तादेहाभिमानकेविद्यमानहुए सोप्रारब्धकर्मकरिकैप्राप्तकर्‍याहुआ विष

यानुभव संभवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्नेभी ब्रह्मसूत्रोंविषेकहीहै तहांसूत्र ॥ 'भोगेनत्वित
रेक्षपयित्वासंपद्यते' अर्थयह ॥ आत्मज्ञानकरिकै संचितकर्मोंकेनाशहुए तथाआत्मज्ञानतैंअनंतरकरे
हुए आगामिकर्मोंकेअस्पर्शहुए वाकीरहेहुएप्रारब्धकर्मोंकूं भोगतैंनिवृत्तकरिकै यहज्ञानवान्पुरुष नि
र्विशेषब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् विदेहकैवल्यरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ श्रीवा
र्त्तिककारनैंभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'शास्त्रार्थस्यसमाप्तत्वान्मुक्तिःस्यात्तावतापिते । रागादयःसंतुका
मंनतद्भावोऽपराध्यते' अर्थयह ॥ वेदांतशास्त्रकाअर्थरूप जो जीवब्रह्मकाएकत्वहै ॥ ताएकत्वसाक्षात्का
रकरिकैही इसपुरुषकूं मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसेज्ञानवान्पुरुषविषे रागद्वेषादिक बाधितानुवृत्तिकरिकै
रहो ॥ तिनरागादिकोंकेविद्यमानहुएभी ताज्ञानवान्पुरुषकूं मुक्तिविषे किंचित्मात्रभी हानिनहींहै
इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ सर्ववेदांतरहस्यकेजाणनेहारे श्रीविद्यारण्यस्वामीनैंभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥
'अप्रेक्ष्यचचिदात्मानं पृथक्पश्यन्नहंकृतिम्।इच्छंस्तुकोटिवस्तूनि नबाधोग्रंथिभेदतः॥१॥ग्रंथिभेदेपिसं
भाव्याइच्छाःप्रारब्धदोषतः।बुद्धापिपापबाहुल्यादसंतोषोयथातव ॥ २ ॥' अर्थयह ॥ जोपुरुष चैतन्य
आत्माकूं अहंकारादिकोंतैं पृथक्जानैहै ॥ तथा तिनअहंकारादिकोंकूं ताचैतन्यआत्मातैं पृथक्जानै
है ॥ सोज्ञानवान्पुरुष जोकदाचित् कोटिवस्तुवोंकीभीइच्छाकरै तौभी ताअध्यासरूपग्रंथिकेभेदनतैं
ताज्ञानवान्पुरुषकी किंचित्मात्रभी हानिहोतीनहीं ॥ और ताअध्यासरूपग्रंथिकेनिवृत्तहुएभी तिसज्ञा ॥१६६॥
नवान्पुरुषविषे प्रारब्धदोषतैं इच्छासंभवैहै ॥ जैसे अहंकारादिकोंतैं आत्माकूं पृथक्जानिकैभी पापक
र्मोंकीबाहुल्यतातैं तुम्हारेकूं असंतोष हुआहै इति॥यातैं ज्ञानवान्पुरुषकूंभी प्रारब्धकर्मकेफल भोगवास

तै बाधितानुवृत्तिकरिकै सोदेहाभिमान तथाअरागद्वेषादिक संभवैहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तिनविद्यारण्य स्वामी आदिकआचार्योंनैंही किसीस्थलविषे ताज्ञानवान्पुरुषविषे रागादिकोंका निषेधभीकर्‍याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'रागोलिंगमबोधस्यचित्तव्यायामभूमिषु । नचाध्यात्माभिमानोपिविदुषोऽस्त्यासुरत्वतः । विदुषोप्यासुरत्वंचेन्निष्फलंब्रह्मदर्शनम्' अर्थयह ॥ इसपुरुषकेचित्तविषे जोविषयोंकारागहै ॥ सोरागही इस पुरुषके अज्ञानकेजनावणेहारा चिह्नहै ॥ अर्थात् तारागरूपलिंगतैंही इसपुरुषकेअज्ञानका अनुमान कर्‍याजावैहै और इसपुरुषविषे अभिमानही असुरभावकीप्राप्तिकरैहै यातैं विद्वान्पुरुषकूं अध्यात्म अभिमानभी होतानहीं ॥ जोकदाचित् ताअभिमानकरणेतैं विद्वान्पुरुषविषेभी सोअसुरभाव होवैगा तौ सोब्रह्मसाक्षात्कारही निष्फलहोवैगा इति ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै ताज्ञानवान् पुरुषविषे रागादिकोंका तथादेहाभिमानका निषेधकर्‍याहै ॥ यातैं ताज्ञानवान् पुरुषविषे तेरागादिक संभवतेनहीं ॥ ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ उक्तवचनोंकरिकै आचर्योंनैं ज्ञानवान्विषे जो रागादिकोंकानिषेधकर्‍याहै सो दृढअध्यासपूर्वक रागादिकोंकानिषेधकर्‍याहै ॥ अर्थात् जैसे अज्ञानीपुरुषविषे आत्माअहंकारादिकोंकेदृढअध्यासपूर्वक रागादिक होवैहैं ॥ तैसे ज्ञानवान्पुरुषविषे दृढअध्यासपूर्वक तेरागादिक होतेनहीं ॥ जोकदाचित् इनवचनोंका ऐसाअभिप्राय नहींमानिये तौ ज्ञानवान्विषे रागादिकोंकूंकहणेहारे पूर्वउक्तवचनोंकेसाथि इनवचनोंका विरोधहोवैगा ॥ तथा 'सर्वथावर्त्तमानोपिनसभूयोभिजायते' इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं सर्वप्रकारतैंवर्त्तमानहुएभीज्ञानवान्कूं जन्मकाभाव कथनकर्‍याहै॥ताभगवान्केवचनकाभी विरोधहोवैगा ॥ताविरोधकेनिवृत्तकरणेवासतै तिनरागकेनिषेध

कवचनोंका ताद्दढअध्यासपूर्वकरागादिकोंकेनिषेधविषेही तात्पर्य मान्याचाहिये ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जभी ज्ञानवान्पुरुषविषे रागादिक तुमनैंअंगीकारकरे तभी ताज्ञानवान्का यथेष्टाचरणभी तुह्मारेकूं अंगीकारहोवैगा ॥ तहांशास्त्रमर्यादाकाउल्लंघनकरिकै निषिद्धविषयोंविषे जोप्रवृत्तिहै ताकानाम यथेष्टाचरणहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताज्ञानवान्पुरुषका यथेष्टाचरण हम अंगीकारकरतेनहीं॥ किंतु प्रारब्धकर्मकेफलभोगविषेअनुकूल जे अभासमात्र रागद्वेषादिकहैं तिनोंकीअनुवृत्ति हम ज्ञानवान्विषे अंगीकारकरैं हैं ॥ सोआभासमात्ररागद्वेषकीअनुवृत्ति आत्मज्ञानकाविरोधी होवैनहीं ॥ जोकदाचित् साआभासमात्ररागद्वेषादिकोंकीअनुवृत्तिभी ताआत्मज्ञानकाविरोधी होतीहोवै तौ किसीभी पुरुषकूं सो आत्मज्ञान नहींहोवैगा ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'कादाचित्कंरागलेशं चिकित्सितुमशक्नुवन् । योब्रह्मनिष्ठांसंद्वेष्टि कदास्यात्तत्त्वनिश्चयः' अर्थयह ॥ चित्तविषे कदाचित्उत्पन्न हुआजोलेशमात्ररागहै॥ तारागकीनिवृत्तिकरणेविषेअसमर्थहुआ जो पुरुष ब्रह्मनिष्ठाविषेद्वेषकरैहै॥ तिस पुरुषकूं कोईकालविषेभी आत्माकानिश्चय होतानहीं इति ॥ यातैं प्रारब्धकर्मकीसमाप्तिपर्यंत ज्ञानवान् पुरुषविषे सोदेहाभिमान तथारागद्वेषादिक बाधितानुवृत्तिकरिकैरहैहैं यहसिद्धभया ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ज्ञानवान्पुरुषकूं जो बाधितदेहाभिमानकीअनुवृत्ति मानोंगे तौ शुक्तिसाक्षात्कारवान्पुरुषकूं बाधित रजतभ्रमकीभी पुनःअनुवृत्तिहोणीचाहिये ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शुक्तिविषे जोरजतभ्रमहै सो निरुपाधिकभ्रमहै ॥ यातैं ताशुक्तिकेज्ञानकूं तारजतभ्रमकीनिवृत्तिकरणेविषे कोईप्रतिबंधक नहीं है ॥ यातैं ताशुक्तिकेज्ञानकरिकै निवृत्तहुएतारजतभ्रमकी पुनः आवृत्तिहोतीनहीं ॥ और यहदेहाभिमानादिकतौ

सोपाधिकभ्रमहै ॥ तहां प्रारब्धकर्मही उपाधिरूपहै ॥ यातैं आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुएभीता प्रारब्धकर्मरूपउपाधिकीस्थितिपर्यंत ज्ञानवान्पुरुषविषे बाधितानुवृत्तिरूपतैं तिनदेहाभिमानादिकोंकी स्थिति संभवैहै इति ॥ अथवा ऐसामानणा ॥ आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुएभी ताअज्ञानकाले शमात्र बाकीरहैहै ॥ जिसअज्ञानलेशकूं लेशाऽविद्या कहैहैं ॥ ताअज्ञानलेशकीअनुवृत्तिकरिकैही ज्ञानवान्पुरुषकूं सोप्रारब्धकर्मकाभोग होवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै॥ तहांश्लोक ॥ 'द्वैतच्छायारक्षणायास्तिलेशश्चास्मिन्नर्थेस्वानुभूतिःप्रमाणम्,' अर्थयह॥ आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुएभी आभासमात्रद्वैतकेरक्षणकरणेवासतै ताअज्ञानकालेश बाकीरहैहै॥इसअर्थविषे आपणाअनुभवहीप्रमाणहै इति ॥ ॥शंका॥ ॥ आत्मज्ञानकरिकैनिवृत्तहुएअज्ञानका बाकी लेशरहैहै यहपूर्व आपनैं कह्या ॥ तहां सोअज्ञानकालेश क्याहै॥ अर्थात् ताअज्ञानके किसीअवयवकानाम लेशहै ॥ अथवा ता अज्ञानके शक्तिकानाम लेशहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरो सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं सिद्धांतविषे ताअज्ञानकूं निरवयव तथासावयव अंगीकारकऱ्यानहीं॥ किंतु दोनोंतैंविलक्षण अनिर्वचनीय अंगीकारकऱ्याहै ॥ और ताज्ञानकूं सावयवमानिकै ताअज्ञानकेअवयवकूं जोलेशमानिये तौभी आत्मज्ञानकरिकै ताअज्ञानरूपअवयवीकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर ताअवयवकीअनुवृत्ति संभवतीनहीं॥और अज्ञानकेशक्तिकानाम लेशहै॥यहद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरो सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं आत्मज्ञानकरिकै ताशक्तिवालेअज्ञानकेनाशहुएतैंअनंतर ताअज्ञानरूपआश्रयतैंविना ताशक्तिकीस्थितिही संभवतीनहीं ॥ यातैं अज्ञानलेशकीअनुवृत्तिकरिकै ज्ञानवान्पुरुषकूं प्रारब्धकर्मकाभोग संभवतानहीं ॥ ॥ स

माधान ॥ ॥ आत्मज्ञानकरिकै आवरणशक्ति तथातादात्म्यअध्यास यहदोनों निवृत्तहोइजावै हैं ॥ और विक्षेपशक्तिवालाअज्ञान ताआत्मज्ञानतैंअनंतरभी रहैहै ॥ताविक्षेपशक्तिवालेअज्ञानकूंही लेशकहैं हैं॥ और जैसे आवरणशक्तिका आत्मज्ञानकेसाथि विरोधहै ॥ तैसे ताविक्षेपशक्तिका आत्मज्ञानकेसाथि विरोधहैनहीं ॥ यातैं ताविक्षेपशक्तिवालेअज्ञानकीअनुवृत्तिकरिकैज्ञानवान्पुरुषकूं सोप्रारब्धकर्मका भोग संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताविक्षेपशक्तिवालेअज्ञानकरिकै ज्ञानवान्पुरुषकूं जैसे प्रारब्धभोग कीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे जन्मांतरकीभीप्राप्तिहोवैगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ताज्ञानवानकूं जन्मांतरके प्राप्तिका कोईनिमित्तहैनहीं ॥ काहेतैं सोअज्ञान आपणेस्वरूपतैंतौ जन्मकाहेतु होतानहीं॥ किंतु धर्म अधर्म यहदोनोंही इसपुरुषके जन्मकेहेतु होवैहैं ॥ सोधर्माधर्मभी संचितरूपही जन्मकाहेतु होवैहै ॥ तासंचितधर्माधर्मकेस्थितिकाहेतु आवरणशक्तिवालाअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानकी आत्मज्ञानकरिकै निवृत्तिहुए तेसंचितकर्मभी नाशहोइजावै हैं और आत्मज्ञानतैंअनंतरकरेहुएआगामिकर्मोंका ताज्ञानवान्पुरुषकूं लेपहोतानहीं ॥ और प्रारब्धकर्मोंका भोगकरिकैनाशहोवैहै ॥ इसप्रकार शरीरकेआरंभक कारणकेअभावतैं ताज्ञानवान्पुरुषकूं जन्मांतरकीप्राप्ति संभवैनहीं ॥ और जैसे अग्निकरिकैदग्धकऱ्या हुआ व्रीहियवादिकबीज तृप्तिकाहेतुहुआभी अंकुरकाहेतु होतानहीं ॥ तैसे सोविक्षेपशक्तिवालाअज्ञान इसज्ञानवान्पुरुषके प्रारब्धकर्मकेफलभोगविषेउपयोगीविषयदर्शनकाहेतुहुआभीजन्मांतरकाहेतु होतानहीं ॥ और आत्मज्ञानकरिकै ताआवरणशक्तिवालेअज्ञानकीनिवृत्तिकालविषे जिसप्रारब्धकर्मना आपणेफलभोगदेणेवासतै ताविक्षेपशक्तिवालेअज्ञानलेशका रक्षणकऱ्याथा॥ तिसप्रारब्धकर्मरूपप्रतिबं

॥१६८॥

धककेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोअज्ञानलेश आपही निवृत्तहोइजावै है ॥ ताअज्ञानलेशकीनिवृत्तिवासतैं पुनः आत्मज्ञानकीअपेक्षा होवैनहीं ॥ जिसकारणतैं ताअज्ञानलेशकेस्थितिकाप्रयोजक जोआवरणशक्तिवालाअज्ञानथा सो पूर्वही आत्मज्ञानकरिकै निवृत्तहोइगयाहै ॥ यातैं आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानके निवृत्तहुएभी ताउक्त अज्ञानलेशकीअनुवृत्तिकरिकै ज्ञानवान्पुरुषकूं सोप्रारब्धकर्मकाभोग संभवैहै इति ॥ अथवा इहां ऐसीव्यवस्थाकरणी ॥ आत्माकाआवरण तथाअहंकारादिकोंकसाथि आत्माका तादात्म्यअध्यास यहदोनों केवल अज्ञानकरिकैही कऱ्येहुएहैं ॥ याकारणतैंही आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै तेदोनों नाशहोइजावैहैं ॥ अर्थात् तेदोनों निरुपाधिकभ्रमरूपहैं ॥ यातैं अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तिनदोनोंकीनिवृत्ति संभवैहै ॥ और विक्षेपतो कर्मसहितअविद्याकरिकै कऱ्याहुआहै ॥ यातैं ब्रह्मविद्याकरिकै ताअविद्याकेनिवृत्तहुएभी ताप्रारब्धकर्मकेनाशपर्यंत सोविक्षेप नाशहोतानंहीं ताविक्षेपकूं सोपाधिकभ्रमरूपताहोणेतैं ॥ तहां कर्मसहितविक्षेपशक्तिवालाअज्ञानही उपाधिहै ॥ और जिसकालविषे फलभोगकरिकै सोप्रारब्धकर्म नाशहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोविक्षेपशक्तिवालाअज्ञान आपही नाशहोइजावैहै ॥ ताकीनिवृत्तिवासतै ज्ञानकी वा योगकी अपेक्षाहोतीनहीं ॥ जैसे तैलवर्तिकेनाशहुएतैंअनंतर प्रदीप आपही नाशहोइजावैहै ॥ तैसे आत्मज्ञानकरिकै ताआवरणशक्तिवालेअज्ञानकेनिवृत्तहुए तथा संचितकर्मोंकेनिवृत्तहुए तथाफलभोगकरिकै प्रारब्धकर्मकेनिवृत्तहुए सोविक्षेपशक्तिवालाअज्ञान आपही निवृत्तहोइजावैहै ॥ यहउक्तअर्थ अन्यग्रंथविषेभीकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'अविद्यावृत्तितादात्म्ये विद्ययैवविनश्यतः । विक्षेपस्यस्वरूपंतु प्रारब्धक्षयमीक्षते' अर्थयह॥ अविद्याकृतआ

वरण तथा अहंकारादिकोंकेसाथि आत्माका तादात्म्यअध्यास यहदोनोंतौ अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकी
विद्या करिकैंही नाशहोवैहै ॥ और विक्षेपकास्वरूपतौ प्रारब्धकर्मकेनाशकूं देखताहै ॥ अर्थात् प्रारब्ध
कर्मकेनाशतैंपूर्व सोविक्षेपकास्वरूप नाशहोतानहीं ॥ किंतु ताप्रारब्धकर्मकेनाशतैंअनंतरही नाशहोवै
है इति ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ ज्ञानवान्पुरुषकूं जो विषयोंकाअनुभवहोवैहै सो स्फटिकविषेलोहित
भ्रमकीन्यांई सोपाधिकभ्रमहै ॥ यातैं सोविषयानुभव ताआत्मसाक्षात्कारका विरोधीनहीं है ॥ यातैं आ
त्मज्ञानकरिकैअज्ञानकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर प्रारब्धकर्मनैंप्राप्तकऱ्येहुएअन्नपानादिकविषयोंकूंअनुभवकर
ताहुआभी ज्ञानवान्पुरुष अखंड एकरससच्चिदानंदब्रह्मरूपतैंस्थितहोवैहै॥यहपूर्वउक्त आत्मज्ञानकाफल
संभवैहै इति ॥ सोयहउक्तफल शारीरकमीमांसाशास्त्रके चतुर्थअध्यायकेपठनकरिकै सिद्धहोवैहै ॥ तहां
शारीरकमीमांसाशास्त्रके प्रथमअध्यायकेपठनकरणेतैं श्रवणकीसिद्धि ॥ और द्वितीयअध्यायकेपठनक
रणेतैं मननकीसिद्धि ॥ और तृतीयअध्यायकेपठनकरणेतैं निदिध्यासनकी ॥ और चतुर्थअध्या
यकेपठनकरणेतैं आत्मसाक्षात्काररूपफलकीसिद्धि ॥ यहपूर्वउक्तप्रकार सांप्रदायिकआचार्य मानेहैं
इति ॥ और कैएकग्रंथकारतौ यहकहेहैं ॥ श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेमुखतैं जो ताचतुरअध्यायरूपसंपूर्ण
शारीरकमीमांसाशास्त्रकापठनहै ताकानाम श्रवणहै॥ और तापठनकऱ्येहुएशास्त्रकेअर्थका जो युक्तियों
करिकैचिंतनहै ताकानाम मननहै ॥ और तामननकऱ्येहुएशास्त्रकेअर्थकी जो पुनःपुनः चित्तविषेआवृ
त्तिहै ताकानाम निदिध्यासनहै॥ताश्रवणमनननिदिध्यासनतैंअनंतर इसपुरुषकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रका
रकासाक्षात्कार होवैहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ उपनयनरूपसंस्कारतैंरहितहोणेतैं तावेदांतशास्त्रकेअ

ध्ययनकेअनधिकारी जे मैत्रेयीआदिकस्त्रीहैं ॥ तथा विदुरादिकशूद्रहैं ॥ तिनोंकूंभी श्रुतिस्मृतिइतिहासपुराणोंविषे आत्मज्ञानकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ और तावेदांतशास्त्रकेअधिकारी जे जनकजडभरतादिकहैं ॥ तिनोंकूंभी ताशारीरकमीमांसाशास्त्रकेश्रवणादिकोंतैंविनाही केवल सिद्धगीतादिकोंकेश्रवणमात्रकरिकै आत्मज्ञानकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ यातैं संपूर्णशारीरकमीमांसाशास्त्रकेपठनतैं सोश्रवणसिद्धहोवैहै यहपूर्वउक्तनियम संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शुद्धहैअंतःकरणजिनोंका ऐसेजे व्युत्पन्न वा अव्युत्पन्न मुख्यअधिकारीहैं ॥ तिनमुख्यअधिकारियोंकूंतौ जीवब्रह्मकेएकत्वकूंप्रतिपादनकरणेहारे एकश्लोकमात्रकरिकै अथवा अर्द्धश्लोकमात्रकरिकैही सोब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ तहांइसपदकी इसअर्थविषे शक्तिहै और इसपदकी इसअर्थविषे लक्षणाहै याप्रकारतैं जिनपुरुषोंकूं पदपदार्थकेशक्तिलक्षणारूपसंगतिका ज्ञानहै ॥ तेपुरुष व्युत्पन्न कह्येजावै हैं॥ और जेपुरुष तापदपदार्थकेसंगतिज्ञानतैंरहितहैं तेपुरुष अव्युत्पन्न कह्येजावैहैं ॥ और जिनपुरुषोंनैं सगुणब्रह्मकेसाक्षात्कारपर्यंत उपासनाकरीहै ऐसेकृतोपासकपुरुष मुख्यअधिकारी कह्येजावै हैं ॥ अथवा पूर्वजन्मविषे श्रवणमननादिकसामग्रीकरिकैसंपन्नहुएभी जेपुरुष किसीप्रतिबंधकेवशतैं पुनःमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहुएहैं॥तेपुरुष मुख्यअधिकारी कह्येजावै हैं ॥ ऐसेव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीकूं तथा अव्युत्पन्नअधिकारीकूं आत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे तासंपूर्णशास्त्रकेश्रवणादिकोंकी अपेक्षा हैनहीं॥किंतु वाक्यमात्रकेश्रवणतैंही तिनोंकूं सोआत्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तरीतिसैं व्युत्पन्नमुख्यअधिकारियोंकूंतो तावाक्यमात्रतैं ताब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति होवो ॥ परंतु अव्युत्पन्नमुख्यअधिकारियोंकूं तावाक्यमात्रतैं ब्र

ह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति संभवतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ शब्दकीअचिंत्यशक्तिहोवैहै ॥ यातैं ता अव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीकूंभी तावाक्यमात्रकेश्रवणतैं ताब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति बनिसकैहै ॥ जैसे निद्राविषेसोयेहुएपुरुषकूं तहां तासंगतिज्ञानकेअभावहुएभी अन्यपुरुषकेवाक्यमात्रश्रवणतैं जाग्रत्होवै है ॥ तैसे ताअव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीकूं तावाक्यमात्रकेश्रवणतैं ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे कोईभी बाधक नहीं है॥इहां यहतात्पर्य है॥जैसे निद्रातैंउठचेहुएपुरुषकूं घटादिकोंकेसाथि चक्षुआदिकइंद्रियके सन्निकर्षहुएतैंअनंतर अयंघटः याप्रकारका चाक्षुषसाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै॥ तैसे पूर्वअनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मकेपरिपाकवशतैं परमेश्वरअनुगृहीत शुद्धअंतःकरणवालेपुरुषकूं एकश्लोकमात्रकेश्रवणकरिकैअथवा अर्धश्लोकमात्रकेश्रवणकरिकै अथवा वाक्यमात्रकेश्रवणकरिकै सोब्रह्मसाक्षात्कार अवश्य उत्पन्न होवैहै॥और जैसे विक्षिप्तचित्तवालेउन्मत्तपुरुषोंकूं घटादिकपदार्थोंकेसाथि चक्षुआदिकइंद्रियोंकेसंबंध हुएभी तिनघटादिकोंविषे विपरीतव्यवहारही देखणेमेंआवैहै ॥ तैसे स्वस्थचित्तवालेपुरुषोंकूंभी ताइंद्रिय अर्थकेसन्निकर्षतैं अनंतर सोविपरीतव्यवहारही होताहोवैगा याप्रकारकीकल्पना करीजावैनहीं ॥ इस प्रकार विषयोंकेप्राप्तिकीइच्छावाले तथाराजसतामसवृत्तियोंकरिकैस्थूलचित्तवाले ऐसेंजेकैएकपंडितहैं तिनपंडितोंकूं ताब्रह्मसाक्षात्कारकेउत्पत्तिकाअभावदेखिकै तिनमुख्यअधिकारियोंकूंवाक्यमात्रकेश्रवणतैं ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे असंभावना करीजातीनहीं ॥ यातैं तिनपूर्वउक्तमुख्यअधिकारियोंकूं तावाक्यमात्रकेश्रवणतैं ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे कोईभीबाधक नहीं है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जबी पूर्वउक्तरीतिसे मुख्यअधिकारियोंकूं वाक्यमात्रकेश्रवणतैंही ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिभई॥ तबी अनुप

योगीहोणेतैं ताशारीरकमीमांसादिकशास्त्रकाआरंभही निष्फलहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ पूर्व उक्तमुख्यअधिकारियोंतैंभिन्न जे अमुख्यअधिकारी हैं तिनोंकेबोधवासतैंहीं ताशारीरकमीमांसादिक शास्त्रका आरंभहै ॥ अर्थात् तिनअमुख्यअधिकारियोंकूं तावाक्यमात्रकेश्रवणतैं सोब्रह्मसाक्षात्कार होतानहीं किंतु ताशारीरकमीमांसादिकशास्त्रकेपठनतैंही सोब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ यातैं अमुख्यअधिकारियोंकेवासतै ताशारीरकमीमांसादिकशास्त्रकाआरंभभी सफलही है ॥ तहां मुख्यअधिकारीपुरुषोंकूं श्लोककरिकै वा अर्द्धश्लोककरिकै ब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै यहवार्त्ता महाभारतविषे श्रीव्यासभगवान्नेंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'आत्मानंविंदतेयस्तु सर्वभूतगुहाशयम्।श्लोकेनयदिवार्द्धेन क्षीणंतस्यप्रयोजनम्' अर्थयह॥ देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित तथासर्वभूतोंकेबुद्धियोंकासाक्षी ऐसाजो सच्चिदानंदस्वरूप आत्माहै ॥ तिसआत्माकूं जोअधिकारीपुरुष एकश्लोककरिकै अथवा अर्द्धश्लोककरिकै अहंब्रह्मास्मि याप्रकारतैं साक्षात्कारकरैहै ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषका सर्वप्रयोजन क्षीणहोवैहै ॥ अर्थात् मनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनैंकीआनंद लोकोंकूं प्रयोजनरूपकरिकैप्रसिद्धहै ॥ तेसर्वआनंद ब्रह्मानंदकेअंतर्भूतही हैं ॥ ताब्रह्मानंदकेप्राप्तहुए इसज्ञानवान्पुरुषकूं किसीभीलोककेआनंदकीइच्छा होतीनहीं इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थही नैष्कर्म्यसिद्धिग्रंथविषे आचार्यों नैं 'वाक्यश्रवणमात्रेणपिशाचवद्वाप्नुयात्' इत्यादिकवचनकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ यातैं तिनमुख्यअधिकारियोंकूं वाक्यमात्रकेश्रवणतैं ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वकथनकऱ्येजे व्युत्पन्न तथा अव्युत्पन्न यहदोप्रकारके मुख्यअधिकारीहैं ॥ तिनदोनोंकूं वाक्यमात्रकेश्रवणतैं उत्पन्नहुएब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर

किंचित कर्त्तव्य रहेहैं अथवा नहींरहेहैं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तिनदोनोंप्रकारके मुख्यअधिकारियोंविषे जे अव्युत्पन्नमुख्यअधिकारीहैं तिनोंकूंतो ताब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर ब्रह्माकारवृत्तियोंकाप्रवाहरूप ध्याननिष्ठा अपेक्षितहै ॥ काहेतैं तिनअव्युत्पन्नअधिकारियोंकीबुद्धि आप शास्त्रविषेकुशलनहींहै ॥ किंतु अन्यपुरुषोंकेउपदेशकेअधीनहै ॥ यातैं तिनअव्युत्पन्नपुरुषोंकूं वाक्यमात्रकेश्रवणतैं उत्पन्न हुआभी सो ब्रह्मसाक्षात्कार भेदवादीपुरुषोंकेसंगकेदोषतैं उत्पन्नभई असंभावनाविपरीतभावनाकरिकै प्रतिबद्ध होइजावैहै ॥ और प्रतिबद्धज्ञानतैं अज्ञानकीनिवृत्ति तथापरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होतीनहीं॥और तेअव्युत्पन्नमुख्यअधिकारी जभी ताध्याननिष्ठाविषेरहैंगे ॥ तभी तिनोंकूं भेदवादीपुरुषोंकासंग होवैगानहीं ॥ तासंगकेअभावहुए साअसंभावना तथाविपरीतभावानाभी तिनोंकूं होवैगीनहीं ॥ यातैं ता प्रतिबंधतैंरहितब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै तिनअव्युत्पन्नमुख्यअधिकारियोंकूं अज्ञानकीनिवृत्ति तथापरमपुरुषार्थकीप्राप्ति अवश्यहोवैहै ॥ यातैं तिनअव्युत्पन्नमुख्यअधिकारियोंकूं ब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर साध्याननिष्ठा अवश्यअपेक्षितहै इति ॥ यहउक्तअर्थ गीताविषे श्रीभगवान्‌नैंभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'अन्येत्वेवमजानंतः श्रुत्वान्येभ्यउपासते॥तेपिचातितरंत्येव मृत्युंश्रुतिपरायणाः' अर्थयह॥ जेपुरुष आप शास्त्रकेविचारकरणेविषे कुशलनहींहैं॥तेपुरुष जभी दूसरे श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुवोंकेमुखतैंब्रह्मकेस्वरूपकूं श्रवणकरिकै ताब्रह्मका निरंतर ध्यानकरैं हैं॥तभी तेश्रवणपरायणपुरुषभी ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञा नकूंनाशकरैं हैं इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ श्रीविद्यारण्यस्वामीनैंभी ध्यानदी विषे कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'अत्यंतबुद्धिमांद्याद्वा सामग्र्या वाप्यसंभवात् ॥ योविचारंनलभते ब्रह्मोपासीतसोऽनिशम् ॥ मरणेत्र

ह्मलोकेवा तत्त्वंज्ञात्वाविमुच्यते' ॥ अर्थयह ॥ बुद्धिकीअत्यंतमंदतातैं अथवा विचारकीसामग्रीकेअभाव
तैं जोपुरुष ब्रह्मकेविचारकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ सोपुरुष निरंतर तानिर्गुणब्रह्मकेध्यानकूंकरै ॥ सोध्यानक
रता पुरुष मरणकालविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे तानिर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूंसाक्षात्कारकरिकै मोक्षकूंप्राप्तहो
वैहै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ पतंजलिभगवान्‌नैंभी योगसूत्रोंविषेकह्याहै ॥ तहांसूत्र ॥ 'ततः प्रत्यक्
चेतनाधिगमोऽप्यन्तरायाभावश्च' अर्थयह ॥ तिसपरमात्माकेध्यानतैं इसपुरुषकूं प्रत्यक्‌आत्माकासाक्षा
त्कार होवैहै ॥ और ताआत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे जितनैंकीप्रतिबंधक होवैं हैं तिनसर्वप्रतिबंधकों
कीभी ताध्यानतैंही निवृत्तिहोवैहै इति ॥ यातैं तिनअव्युत्पन्नमुख्यअधिकारियोंकूं ताब्रह्मसाक्षात्कार
तैंअनंतर ताध्याननिष्ठाकीअपेक्षा अवश्यहै यहसिद्धभया ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तरीतिसे अव्युत्पन्न
मुख्यअधिकारियोंकूं ब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर ताध्याननिष्ठाकीअपेक्षारहो ॥ परंतु जेअधिकारी शास्त्रवि
षेव्युत्पन्नहैं तिनोंकूं ताध्याननिष्ठाकीअपेक्षा नहींहोवैगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सर्वव्युत्पन्नअधिका
रियोंकूं ताध्याननिष्ठाकीअपेक्षाकाअभाव कहतेहो ॥ अथवा कोईकव्युत्पन्नअधिकारीकूं ताध्याननिष्ठा
कीअपेक्षाकाअभाव कहतेहो ॥ तहां जोदूसरापक्ष अंगीकारकरो सोतौ हमारेकूंभी अंगीकारहै ॥ और
जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरो सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं न्यायमीमांसादिकनानाशास्त्रोंकेविचारकरिकैत
थापूर्वजन्मोंकेपापकर्मकेवशतैं जेपंडितजन संशयविपरीतभावनाकरिकै ग्रस्तहैं॥ तिनव्युत्पन्नपंडितोंकूं
वेदांतकेविचारतैंउत्पन्नहुआभी सोब्रह्मसाक्षात्कार अप्रामाण्यशंकाकरिकै दूषितहीहोवैहै॥ याकारणतैं सो
ब्रह्मसाक्षात्कार अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ ऐसेव्युत्पन्नपंडितोंकूंतौ तासंशयविपरीत

भावनारूपप्रातिबंधकीनिवृत्तिकरणेवासतै साध्याननिष्ठा अवश्यअपेक्षित होवैहै॥ ताध्याननिष्ठाकारिकै
तासंशयविपरीतभावनारूप प्रतिबंधकोनिवृत्तहुएताअप्रातिबद्धब्रह्मसाक्षात्कारकारिकै तिनव्युत्पन्नपंडि
तोंकूंमोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैहै ॥औरजेव्युत्पन्नअधिकारीपरमेश्वरकेअनुग्रहकारिकैताअसंभाव
नाविपरीतभावनातैंरहितहैं ॥ तिनव्युत्पन्नआधिकारीपुरुषोंकूंतौ ताब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर ताध्याननि
ष्ठाकीअपेक्षा होतीनहीं इति ॥ किंवा ध्यानकूं ब्रह्मसाक्षत्कारकीहेतुता श्रीव्यासभगवान्‌नैंभी ब्रह्मसू
त्रोंविषे कहीहै ॥ तहांसूत्र ॥ 'अपिसंराधनेप्रत्यक्षानुमानाभ्याम्' अर्थयह ॥ यहआधिकारीपुरुष ध्यान
कालविषे एकाग्राचित्तकारिकै आपणेआत्मारूपतैंब्रह्मकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ जिसकारणतैं श्रुतिनैं तथा
स्मृतिने ताध्यानतैंही ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'ज्ञानप्रसादेनविशुद्धसत्त्वस्त
तस्तुतंपश्यतिनिष्कलंध्यायमानः।कश्चिद्धीरःप्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्' अर्थयह॥शुद्ध
अंतःकरणवालापुरुष निर्गुणब्रह्मकाध्यानकरताहुआ तानिर्गुणब्रह्मकूं साक्षात्कारकरैहै॥ और बाह्यरूपा
दिकविषयोंतैं निवृत्तकऱ्येहैंचक्षुआदिकइंद्रियाजिसनें ऐसाजोकोई ध्याननिष्ठापुरुषहै ॥ सोईही मोक्षकीइ
च्छाकरताहुआ प्रत्यक्‌आत्माकूं साक्षात्कारकरैहै इति ॥ तहांस्मृति ॥ 'यंविनिद्राजितश्वासाःसंतुष्टाःसं
जितेंद्रियाः । ज्योतिः पश्यंतियुंजानास्तस्मैयोगात्मनेनमः' अर्थयह॥ निद्रातैंरहित तथाप्राणायामकारि ॥१७२॥
कै जीत्येहैंश्वासाजिनोंने तथायथालाभविषेसंतुष्ट तथाजीत्येहैंचक्षुआदिकइंद्रियजिनोनैं ऐसेपुरुष ध्यान
योगकूंकरतेहुए जिसपरमात्मज्योतिकूं साक्षात्कारकरैहैं॥ तिसयोगरूपपरमात्माकेताईं हमारा नमस्का
रहै इति ॥ किंवा यह उक्तअर्थ अन्यग्रंथविषेभीकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'बहुव्याकुलचित्तानांविचारात्त

त्वधीर्नचेत् । योगोमुख्यस्ततस्तेषां धीदर्पस्तेननश्यति’ अर्थयह॥ बहुतव्याकुलहैचित्ताजिनोंका ऐसेपुरुषोंकूं जोकदाचित् विचारकरणेतैं आत्मज्ञान नहींहोवै तौ ऐसेपुरुषोंकूं सोध्यानरूपयोगही मुख्यसाधनहै॥ जिसकारणतैं तिनपुरुषोंकीबुद्धिके संशयविपरीतभावनादिकदोष ताध्यानकरिकैही निवृत्तहोवैहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ पूर्वउक्तरीतिसे संशयविपरीतभावनावालेपुरुषतौ तासंशयविपरीतभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासतैं ताध्यानकूंकरो ॥ परंतु जेज्ञानवान्पंडित तासंशयविपरीतभावनातैंरहितहैं तेभी ध्यानकरतेहुए देखणेमेंआवैहैं॥ तेज्ञानवान्पंडित किसवासतैं ध्यानकरैं हैं॥ ॥समाधान ॥ ॥ संशयविपरीतभावनातैंरहित तेज्ञानवान्पंडित जभी अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकीवृत्तियोंकाप्रवाहरूपध्यानकूं करैं हैं॥तभी तिनोंकूं बाह्यविक्षेपकीनिवृत्तिकरिकै ब्रह्मानंदरूपदृष्टसुख विशेषहोवैहै ॥ तादृष्टसुखवासतैंही तेज्ञानवान्पुरुष ध्यानकूंकरैं हैं ॥ दूसराकोई ताध्यानकाप्रयोजन नहींहै ॥ जिसकारणतैं संशयविपरीतभावनारूपप्रातिबंधकीनिवृत्ति तथाआत्माकासाक्षात्कार यहदोनों तिनविद्वानपुरुषोंकूं पूर्वप्राप्तहीहैं ॥ परिशेषतैं ताध्यानका सोदृष्टसुखही फलहै ॥ यहवार्त्ता श्रीभगवान्नेभी गीताविषेकहीहै तहांश्लोक ॥ ‘अनन्याश्चितयंतोमां येजनाःपर्य्युपासते । तेषांनित्याभियुक्तानां योगक्षेमंवहाम्यहम्’ अर्थयह॥मैंपरमेश्वरतैंभिन्नमायिकपदार्थोंविषे नहीं है रागजिनोंका तिनोंकानाम अनन्यहै ॥ ऐसेअनन्यहोइकै मैंप्रत्यक्अभिन्नपरमात्माकूं चिंतनकरतेहुए जे साधनचतुष्टयसंपन्नअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणपरमात्माका निरंतरध्यानकरैं हैं अर्थात् विजातीयवृत्तियोंकापरित्यागकरिकै सजातीयवृत्तियोंकेप्रवाहरूप ध्यानकूं करैं हैं ॥ ऐसेमेरध्यानपरायणतत्त्ववेत्तापुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर योगकी तथाक्षेमकी प्रापतिकरूंहूं ॥

तहां अप्राप्तअर्थकीजाप्राप्तिहै ताकानाम योगहै ॥ और प्राप्तअर्थका जो परिरक्षणहै ताकानाम क्षेमहै ॥ ॥शंका ॥ ॥ अखंडएकरसआनंदरूपब्रह्मात्माविषे निष्ठावाले जेज्ञानवान्पुरुषहैं ॥ तिनोंकूं कोईअप्राप्तआनंदहैनहीं ॥ काहेतैं मनुष्यलोकतैंलेके ब्रह्मलोकपर्यंत सर्वआनंदोंका जिसब्रह्मानंदविषे अंतर्भावहै ॥ सोब्रह्मानंद तिनज्ञानवान्पुरुषोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकै नित्यप्राप्तहीहै ॥ और उत्पत्तिविनाशतैंरहितहोणेतैं ताब्रह्मानंदका रक्षणभी संभवतानहीं ॥ अनित्यवस्तुकाही रक्षणहोवैहै ॥ यातैं ज्ञानवान्पुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर योगक्षेमकीप्राप्तिकरूंहूं यहभगवान्कावचन असंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि तिनज्ञानवान्पुरुषोंकूं कोई अप्राप्तअंश हैनहीं॥और सोब्रह्मानंद तिनोकूं नित्यहीप्राप्तहै ॥ यातैं तिनज्ञानवानोंका कोईयोगक्षेम हैनहीं ॥ तथापि इहां योगक्षेमशब्दकरिकै यहअर्थ ग्रहणकरणा ॥ देहादिकसर्वअनात्मपदार्थोंविषे आत्मत्वबुद्धिकापरित्यागकरिकै इसज्ञानवान्पुरुषकी जो ब्रह्मानंदरूपकरिकैस्थितिहै ताकानाम योगहै ॥ और प्रबलप्रारब्धकेयोगकरिकैभी जो ताब्रह्मनिष्ठातैंअप्रच्युतिहै ताकानाम क्षेमहै ॥ इसप्रकारका योगक्षेम ताज्ञानवान्पुरुषविषेभी संभवैहै ॥ यातैं 'योगक्षेमंवहाम्यहम्' इसउक्तवचनकरिकै श्रीभगवान् इसप्रकारकेयोगक्षेमकूंही कहताभयाहै ॥ यातैं ध्याननिष्ठज्ञानवान्पुरुषोंकूं निरंतर सोहष्टसुख प्राप्तहोवैहै ॥ यहअर्थ इसउक्तगीतावचनतैंसिद्धहोवैहै इति ॥ यहहीअर्थ श्रीभगवान्नें 'मच्चित्तामद्गतप्राणा बोधयंतःपरस्परम् । कथयंतश्चमांनित्यं तुष्यंतिचरमंतिच' इसश्लोकविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ इनगीताश्लोकोंकाअर्थ हमनें गीतागूढार्थदीपिकानामाटीकाविषे विस्तारतैंकथनकऱ्याहै ॥ जिसकूं जिज्ञासाहोवै तिसनैं तहांसेजानिलेणा इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जैसेमुमुक्षुजनों

केप्रति श्रवणादिकोंकी अवश्यकर्त्तव्यताकाबोधक विधिहोवैहै ॥ तैसे संशयविपरीतभावनातैंरहित ज्ञा
नवान्पुरुषोंकेप्रतिभी ताध्यानकी अवश्यकर्त्तव्यताकाबोधक विधि क्योंनहींहोवै ॥ अर्थात् ज्ञानवान्
पुरुषोंनैंभी सोध्यान अवश्यकरणा याप्रकारकी वेदकीआज्ञा क्योंनहींहोवै ॥ और जोऐसाकहो ॥ ता
ज्ञानवान्पुरुषकूं ध्यानकाविधानकरणेहारा कोईवेदकावाक्यहैनहीं ॥ यातैं ताज्ञानवान्पुरुषकूं ताध्या
नकाविधिनहीं ॥ सोयह तुम्हाराकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं 'तमेवधीरोविज्ञायप्रज्ञांकुर्वीतब्राह्म
णः' अर्थयह ॥ धैर्यवान्ब्राह्मण तिसपरमात्माकूं साक्षात्कारकरिकै पश्चात् तापरमात्माकाध्यानकरै ॥
इसश्रुतिनें ताज्ञानवान्पुरुषकूंभीध्यानकाविधान कऱ्याहै ॥ और जोऐसाकहो ॥ उत्पन्नहुएआत्मसा
क्षात्कारकरिकैही इसज्ञानवान्पुरुषकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं ताआत्मज्ञानतैंअनं
तर सोध्यानकरणा निष्फलही है ॥ सोयह तुम्हाराकहणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं इदानींकालविषे ब्रह्म
साक्षात्कारकेविद्यमानहुएभी ताध्यानरहितपुरुषोंकूंपूर्वअज्ञानअवस्थाकीन्याईंसुखदुःखादिरूपसंसारकी
प्रतीति बनीरैहैहै॥यातैं ताब्रह्मसाक्षात्कारमात्रकरिकै इसपुरुषकूं तामोक्षरूपपुरुषार्थकीप्राप्ति होतीनहीं ॥
किंतु ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै श्रवणादिकोंतैं ब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरिकै यहपुरुष जभी जीवत्कालप
र्यंत ताब्रह्मकेध्यानकाअभ्यासकरैहै ॥ तभीही इसपुरुषकूं तामोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तामोक्षकीप्राप्ति
वासतै ज्ञानवान्पुरुषकूंभी जीवत्कालपर्यंत सोध्यान अवश्यकर्त्तव्यहै॥जोकदाचित् सोज्ञानवान्पुरुष
ध्यानपरायण नहींहोवेगा तो यथेष्टाचरणकीप्राप्तिकरिकै नरककूंही प्राप्तहोवैगा ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रं
थविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'निःसंगतामुक्तिपदंयतीनां संगादशेषाःप्रभवंतिदोषाः॥आरूढयोगोपि

नि पात्यतेऽधः संगेनयोगीकिमुताल्पसिद्धिः' अर्थयह ॥ विषयासक्तबहिर्मुखजनोंकेसंगका जोपरित्याग
हैताकानाम निःसंगताहै ॥ सानिःसंगताही संन्यासियोंकूं मुक्तिकेप्राप्तिका मार्गहै ॥ जिसकारणतैं ता
संगतै इसपुरुषकूं कामादिकअनेकदोष उत्पन्नहोवैहैं॥तिनदोषोंकीप्राप्तितैं ज्ञानवान्पुरुषभी अधःपतन
होवैहै ॥ तौ मुमुक्षुजनकी क्यावार्त्ता है इति ॥ यातैं तायथेष्टाचरणकीनिवृत्तिकरणेवासतै संशयविपरी
तभावनातैंरहितज्ञानवान्पुरुषोंकूंभी जीवत्कालपर्यंत सोब्रह्मकाध्यान अवश्यकरणेयोग्यहै ॥ ॥ समा
धान ॥ ॥ संशयविपरीतभावनातैंरहित ज्ञानवान्पुरुषकूं ताध्यानकरणेकाविधि नहींहै ॥ काहेतैं जि
सपुरुषकूं दृढअध्यासपूर्वक देहाभिमानहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूंही आपणेआत्माविषे कर्तृत्वबुद्धि होवैहै ॥
और सोआत्माविषेकर्तृत्वबुद्धिवालापुरुषही शास्त्रकेविधिनिषेधका अधिकारीहोवैहै ॥ जैसे अज्ञानी
पुरुषहैं ॥ और ज्ञानवान्पुरुषकूं तादेहाभिमानकेअभावतैं साकर्तृत्वबुद्धि हैनहीं ॥ यातैं सोज्ञानवान्
पुरुष ताशास्त्रकेविधिनिषेधका अधिकारीनहीं है ॥ तात्पर्ययह ॥ सोदेहाभिमानदोप्रकारकाहोवैहै ॥
एकतौ कर्मजन्यहोवैहै ॥ दूसरा भ्रांतिजन्यहोवैहै ॥ तहां कर्मजन्यदेहाभिमानतौ ताकर्मकेनाशतैंअनं
तरही निवृत्तहोवैहै ॥ और दूसरा भ्रांतिजन्यदेहाभिमानतौ अज्ञानकालविषेरहैहै ॥ जभी आत्मज्ञानक
रिकै ताअज्ञानकीनिवृत्तितैं भ्रांतिकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तभी सोभ्रांतिजन्यदेहाभिमानभी निवृत्तहोइजावै
है॥ ऐसेदेहाभिमानतैंरहितहोणेतैं कर्तृत्वबुद्धितैंरहित जोज्ञानवान्है ॥ तिसज्ञानवानपुरुषतैं शास्त्रप्रति
पादितसर्वअधिकार निवृत्तहोवैहै ऐसेज्ञानवान्पुरुषकूं सोध्यानविधि कैसेसंभवैगा ॥ किंतु नहींसंभवै
गा ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीविद्यारण्यस्वामीने पंचदशीग्रंथविषे तिनज्ञानवान्पुरुषोंकाअनुभव कह्या

है तहांश्लोक ॥ ' व्याचक्षतांतेशास्त्राणि वेदानध्यापयंतुवा। येऽत्राधिकारिणोमर्त्या नाधिकारोऽक्रियत्वतः ॥१॥ शृण्वंत्वज्ञाततत्त्वास्तेजानन्कस्माच्छृणोम्यहम्।मन्यंतांसंशयापन्ना नमन्येऽहमसंशयः॥२॥ विपर्यस्तोनिदिध्यासेत्किंध्यानमविपर्यये' अर्थयह ॥ जेपुरुष कर्त्तृत्वबुद्धिवालेहोणेतैं अधिकारीहैं ॥ ते पुरुषही शास्त्रोंकूंव्याख्यानकरैं ॥ तथा वेदोंकूंपढावैं ॥ और मैंतौ अक्रियहूं ॥ यातैं हमारेकूं कोईभी अधिकार नहीं है ॥ और जिनपुरुषोंने प्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्मकूं नहींजान्याहै ॥ तेपुरुष वेदांतशास्त्रकेश्रवणकूंकरो ॥ और मैंतौ ताप्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्मकूं अपरोक्षजानताहूं ॥ यातैं मैं किसवासते श्रवणकूंकरूं ॥ और जेपुरुष ताआत्माविषेसंशयवालेहैं ॥ तेपुरुष तासंशयकीनिवृत्तिकरणेवासते मननकूंकरो ॥ और मैंतौ सर्वसंशयोंतैंरहितहूं ॥ यातैं मैं किसवासते मननकूंकरूं ॥ और जेपुरुष विपरीत भावनावालेहैं॥ तेपुरुषतौ ताविपरीतभावनाकीनिवृत्तिवासते निदिध्यासनकूंकरो ॥ और मैंतौ ताविपरीतभावनातैंरहितहूं ॥ यातैं हमारेकूं ताध्यानकरणेका क्याप्रयोजनहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ज्ञानवान्‌पुरुषकूं जो ध्यानकीकर्त्तव्यता नहींमानोंगे ॥ तौ आत्मज्ञानतैंअनंतर ताध्यानकाविधानकरणेहारी जा 'तमेव धीरोविज्ञायप्रज्ञांकुर्वीतब्राह्मणः ॥ यहपूर्वउक्तश्रुतिहै सा अप्रमाणहोवैगी ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सा श्रुति आत्माकेअपरोक्षज्ञानतैंअनंतर ताध्यानका विधानकरतीनहीं ॥ किंतु वेदांतकेश्रवणमात्रजन्यब्रह्मकेपरोक्षज्ञानतैंअनंतरही ताब्रह्मकेअपरोक्षज्ञानकीप्राप्तिवासते तानिदिध्यासनरूपध्यानकाविधानकरे है ॥ यातैं ताश्रुतिकूंभी अप्रमाणताहोवैनहीं ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर ज्ञानवान् पुरुषकूं जोध्यानकीकर्त्तव्यता नहींमानोंगे ॥ तौ ताज्ञानवानपुरुषकूं चित्तकीबहिर्मुखताकरिकै यथेष्टा

चरणकीप्राप्ति होवैगी ॥ ॥ समाधान॥ ॥ सोज्ञानवान्पुरुष भ्रांतिजन्यदेहाभिमानतैंरहितहै ॥ यातैं यथेष्टाचरणविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ तादेहाभिमानवालेपुरुषंही यथेष्टाचरणविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ तात्पर्यय ह ॥ जोपुरुष मुमुक्षुदशाविषेभी शमदमादिकोंकरिकै तायथेष्टाचरणतैं निवृत्तहोवैहै ॥सोपुरुषज्ञानदशा विषे तायथेष्टाचरणविषे कैसेप्रवृत्तहोवैगा ॥ किंतु नहींप्रवृत्तहोवैगा ॥ और 'निःसंगतामुक्तिपदंयती नां' यहपूर्वउक्तवचनतौ आत्मज्ञानतैंरहित साधकपुरुषविषयकहै॥ तत्त्ववेत्तासिद्धपुरुषविषयकसोवच ननहीं है ॥ यातैं तावचनतैं ध्यानतैंरहितज्ञानवान्पुरुषका अधःपतन सिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ज्ञानवान् पुरुषकूं ध्यानकाविधि नहीं है यह उक्तअर्थ श्रीव्यासभगवान्नेभी ब्रह्मसूत्रोंविषे कथनकऱ्याहै ॥तहां सूत्र ॥ 'अनुज्ञापरिहारौदेहसंबंधाज्ज्योतिरादिवत्' अर्थयह ॥ यहकार्य अवश्यकरणेयोग्यहै याप्रका रका जो शास्त्रकृतविधि ताकानाम अनुज्ञाहै ॥ और यहकार्य नहींकरणेयोग्यहै याप्रकारका जो शास्त्रकृत निषेधहै ताकानाम परिहारहै ॥सोअनुज्ञापरिहाररूप विधिनिषेध इसपुरुषकूं आत्मज्ञानतैंपू र्व देहाभिमानतैं प्राप्तहोवैहै ॥ और आत्मज्ञानकालविषे तादेहाभिमानकोनिवृत्तहुए ताज्ञानवान्पुरुषकूं सोशास्त्रकृतविधिनिषेध प्राप्तहोतानहीं जैसे श्मशानकाअग्नितौ परित्यागकऱ्याजावैहै ॥ औरदूसरा अग्नि ग्रहणकऱ्याजावैहै ॥ तथा जैसे मनुष्यशरीरका विष्ठामूत्र परित्यागकऱ्याजावैहै ॥ और गौशरी रका विष्ठामूत्र ग्रहणकऱ्याजावैहै ॥ तैसे देहाभिमानीअज्ञानीपुरुषोंकूंतौ सोशास्त्रकृत विधिनिषेध हो वैहै ॥ और तादेहाभिमानतैंरहित ज्ञानवान्पुरुषोंकूं सोविधिनिषेध होतानहीं इति ॥ किंवा ज्ञानवान् पुरुषकूं किंचितमात्रभी कर्त्तव्यनहीं है यहउक्तअर्थ श्रीभगवान्नेभी गीताविषे 'यस्त्वात्मरतिरेवस्यादा

त्मतृप्तश्चमानवः । आत्मन्येवचसंतुष्टस्तस्यकार्यंनविद्यते॥१॥नैवतस्यकृतेनार्थोनाकृतेनेहकश्चन।नचा
स्यसर्वभूतेषुकश्चिदर्थव्यपाश्रयः' ॥२॥ इनदोश्लोकोंकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ किंवा यहउक्तअर्थ पुराण
विषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'ज्ञानामृतेनतृप्तस्य कृतकृत्यस्ययोगिनः । नैवास्तिकिंचित्कर्त्तव्य
मस्तिचेन्नसतत्त्ववित्' अर्थयह ॥ जोपुरुष अहंब्रह्मास्मि याप्रकारके आत्मज्ञानरूपअमृतकोपानकरिकै
तृप्तभया ॥ याकारणतैंही कृतकृत्यहै॥ अर्थात् जोसंपादनकरणेयोग्यथा सो संपादनकऱ्याहैजिसनैं ॥
ऐसेज्ञानवान्पुरुषकूं किंचित्मात्रभी कर्त्तव्यनहींहै ॥ और जिसपुरुषकूं किंचित्मात्रभी कर्त्तव्यहै ॥
सोपुरुष ज्ञानवानहीनहीं है इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ श्रीभगवान्भाष्यकारनेभी 'अहंब्रह्मास्मीत्येत
दवासानाएवसर्वैविधयःसर्वाणिचशास्त्राणिविधिप्रतिषेधमोक्षपराणि'इत्यादिकवचनकरिकै कथनकऱ्या
है ॥ इसभाष्यवचनका यहअर्थ है ॥ इसपुरुषकूं जबपर्यंत अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका साक्षात्कार नहीं
उत्पन्नभया ॥ तबपर्यंतही इसपुरुषउपरि सर्वविधियां हैं॥और विधि निषेध मोक्ष इनतीनोंकेप्रतिपाद
कशास्त्रभी तबपर्यंतहीं हैं॥और ताब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तितैंअनंतर ताज्ञानवानपुरुषउपरि तेविधियां
भीनहीं हैं तथा तेशास्त्रभीनहीं हैं॥काहेतैं देहइंद्रियादिकोंविषे अहंममअभिमानतैंरहित जोज्ञानवान्पु
रुषहै ॥ ताज्ञानवानपुरुषकूं प्रमाणतापणा संभवतानहीं और प्रमातातैंविना प्रमाणकीप्रवृत्ति होतीन
हीं ॥ यातैं ताज्ञानवान्पुरुषकूं किंचित्मात्रभी कर्त्तव्यनहीं है इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ ब्रह्मवेत्ताविद्वा
न्पुरुषोंनेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक॥ 'गौणमिथ्यात्मनोऽसत्त्वे पुत्रदेहादिबाधानात्।तत्सद्ब्रह्माहम
स्मीति बोधेकार्यंकथंभवेत्' अर्थयह ॥ आत्मा तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ गौणआत्मा होवैहै ॥

दूसरा मिथ्याआत्मा होवैहै ॥ तीसरा मुख्यआत्मा होवैहै ॥ तहां पुत्रभार्यादिकतौ गौणआत्मा कह्ये जावैहैं ॥ और अन्नमयादिकपंचकोश मिथ्याआत्मा कह्येजावैहैं ॥ और तिनपंचकोशोंकाअधिष्ठान रूप जो सत् चित् आनंद एकरस साक्षीआत्माहै सो मुख्यआत्मा कह्याजावैहै ॥ तहां गौणआत्मा मिथ्याआत्मा इनदोनोंकेमिथ्यात्वनिश्चयहुए इसपुरुषकी तिनपुत्रभार्यादिकोंविषे तथाअन्नमयादि कपंचकोशोंविषे आत्मत्वबुद्धि निवृत्तहोइजावैहै॥तिसतैंअनंतर सर्वकाअधिष्ठानभूत सच्चिदानंद एकरस ब्रह्म मैंहूं याप्रकारकासाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ तासाक्षात्कारकेउत्पन्नहुए इसज्ञानवान्पुरुषकूं किंचि त्मात्रभी कर्त्तव्य रहतानहीं इति ॥ किंवा इसउक्तअर्थकूं 'एषनित्योमहिमाब्राह्मणस्यनवर्द्धतेकर्मणा नोकनीयान् । एतद्बुध्वाबुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्चभारत'इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतियां कथनकरेहैं ॥ या तैं संशयविपरीतभावनातैंरहित ज्ञानवान्पुरुषकूं किंचित्मात्रभी ध्यानादिकोंकीकर्त्तव्यता नहींहै ॥ परंतु सो ज्ञानवान्पुरुषभी जभी ध्यानपरायण होवैहै तभी तिसकूं ब्रह्मानंदरूपदृष्टसुख अधिकहोवै है ॥ और सोज्ञानवान्पुरुष जभी ध्यानपरायण नहींहोवैहै ॥ तभी तिसकूं बाह्यव्यवहारकीबाहुल्यताकरि के केवल दृष्टदुःखमात्रही होवैहै ॥ कोईसंशयविपरीतभावनाकीउत्पत्तिकरिकै मोक्षकाप्रतिबंध होतान हीं ॥ काहेतैं बहुकाल श्रवणमनननिदिध्यासनकरिकै निश्चयकऱ्याहैब्रह्मात्मतत्त्वजिसने ऐसाजो करत लामलककीन्यांई आपणे अद्वयानंदस्वरूपकूंअनुभवकरणेहाराज्ञानवान्पुरुषहै॥तिसज्ञानवान्पुरुषकूं प्रारब्धकर्मकेवशतैं किंचित्मात्र बाह्यव्यवहारकरिकै तेसंशयविपरीतभावनादिक संभवतेनहीं ॥ यातैं प्रारब्धकर्मकेवशतैं खानपानादिकव्यवहारोंकेहुएभी ताज्ञानवान्पुरुषकूं मोक्षअवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ तामो

क्षका कोईभी प्रतिबंध करिसकतानहीं इति ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्‌नेभी ब्रह्मसूत्रोंविषे कहीहै ॥
तहांसूत्र ॥ 'तन्निष्ठस्यमोक्षोपदेशात् ' अर्थयह ॥ तिसब्रह्मात्माविषैहैनिष्ठाजिसकी ऐसाजो ज्ञानवान्‌पु
रुषहै ॥ तिसज्ञानवान्‌पुरुषकूंही श्रुतिस्मृतिनें मोक्षकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'तस्यतावदेव
चिरंयावन्नविमोक्षेऽथसंपत्स्ये' अर्थयह ॥ तिसज्ञानवान्‌पुरुषकूं विदेहमोक्षविषे तबपर्यंतही विलंबहै ॥ ज
बपर्यंत भोगकरिकै प्रारब्धकर्मतैंरहितनहींभया॥ताप्रारब्धकर्मकीनिवृत्तितैंअनंतर सोज्ञानवानपुरुष नि
र्विशेषब्रह्मभावरूपाविदेहमोक्षकूं अवश्यप्राप्तहोवैहै इति॥ तहांस्मृति॥ 'यएवंवेत्तिपुरुषं प्रकृतिंचगुणैःसह।
सर्वथावर्त्तमानोऽपि नसभूयोऽभिजायते' अर्थयह ॥ हेअर्जुन!जोपुरुष देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितआ
नंदस्वरूपपरमात्माकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकार आपणाआत्मारूपकरिकै जानैहैं ॥ तथा सत्त्व रज तम
इनतीनोंगुणोंसहित मायारूपप्रकृतिकूं मिथ्याजानैहै।सोविद्वानपुरुष सर्वप्रकारतैंवर्त्तमानहुआभी अर्थात्
प्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतैं कदाचित् यथेष्टाचरणकूंकरताहुआभी पुनःजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं इति ॥ इसी
आपणेअभिप्रायकूं श्रीभगवान् अष्टादशअध्यायविषे प्रगटकरताभयाहै ॥ तहांश्लोक ॥ ' यस्यनाहंकृ
तोभावो बुद्धिर्यस्यनलिप्यते । हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते' अर्थयह ॥ हेअर्जुन जिसज्ञानवा
न्‌पुरुषकूं मैंकर्मकाकर्त्ताहूं याप्रकारकीभावनानहींहै ॥ तथा मैं इसकर्मकेफलकूंभोगोंगा याप्रकारतैं जि
सज्ञानवान्‌पुरुषकीबुद्धि कर्मकेफलविषे लिपायमानहोतीनहीं ॥ सोज्ञानवान्‌पुरुष जोकदाचित् इनसर्व
लोकोंकूंहननभीकरै ॥ तौभी ताहननक्रियाका कर्त्ता होतानहीं ॥ तथा ताहननक्रियाजन्यअनिष्टफल
केसाथिभी संबंधवाला होतानहीं इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ शेषभगवान्‌नेभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक॥ 'ह

यमेधशतसहस्राण्यथकुरुतेब्रह्मघातलक्षाणि परमार्थविन्नपुण्यैर्नचपापैःस्पृश्यतेविमलः' अर्थयह ॥ अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेसाक्षात्कारवाला जोतत्त्ववेत्तापुरुषहै ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुष जोकदाचित् शतसहस्र अश्वमेधयज्ञोंकूंकरैहै ॥ अथवा लक्षब्राह्मणोंकूंहननकरैहै ॥ तौभी सोतत्त्ववेत्तापुरुष ताअश्वमेधजन्यपुण्योंकरिकै तथाताब्रह्महत्याजन्यपापोंकरिकै लिपायमानहोतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष विमलहै ॥ अर्थात् अविद्यादिकमलतैंरहितहै इति॥ किंवा यहउक्तअर्थ श्रीविद्यारण्यस्वामीनैंभी कथन कऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'पूर्णेबोधेतुहन्यौद्वौ प्रतिबद्धौयदातदा । मोक्षोविनिश्चितःकिंतु दृष्टदुःखंननश्यति' अर्थयह ॥ वैराग्य १ बोध २ उपरति ३ इनतीनोंविषे इसपुरुषकूं जबी आत्माकासाक्षात्काररूपबोधतौ पूर्णहोवैहै ॥ और किसीपापप्रारब्धकेवशतैं वैराग्य उपरति यहदोनों प्रतिबद्धहोवैहैं ॥ तबी इसपुरुषकूं मोक्षतौ निश्चयकरिकैहोवैहै॥परंतु तावैराग्यउपरतिकेअभावतैं इसपुरुषका दृष्टदुःख निवृत्त होतानहीं इति ॥ इहांयहतात्पर्यहै ॥ वैराग्य बोध उपरति यहतीनों परस्परसहायकहोणेतैं विशेषकरिकैतौ इकट्ठेहीरहैहैं ॥ परंतु कोईस्थलविषे इनतीनोंका परस्पर वियोगभीहोवैहै ॥ तहांमहान्तपकरिकैयुक्त तथापरमेश्वरकेअनुग्रहवाला ऐसाजो उत्तमअधिकारीहै ॥ तिसविषेतौ तेतीनों इकट्ठेहीरहैहैं ॥ और मध्यमअधिकारीविषे किसीपापप्रारब्धकेवशतैं तिनोंका वियोगभीहोवैहै ॥ तावियोगविषेभी इतनाभेदहै ॥ जिसपुरुषकूं वैराग्य उपरति यहदोनोंतौ पूर्णहोवैहैं ॥ और आत्मसाक्षात्काररूपबोध प्रतिबद्ध होवैहै ॥ तिसपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ किंतु तिसतपकेबलतैं उत्तमलोककीप्राप्तिहोवैहै॥ और जिसपुरुषकूं सोबोधतौ पूर्णहोवैहै ॥ और किसीपापप्रारब्धकेवशतैं वैराग्य उपरति यहदोनों प्र

तिबद्ध होवैहै ॥ तिसपुरुषकूं मोक्षतौ अवश्यहोवैहै ॥ परन्तु दृष्टदुःख निवृत्तहोतानहीं इति ॥ अब प्रसंगतैं वैराग्य बोध उपरति इनतीनोंके साधन तथास्वरूप तथाफल तथापूर्णताकाअवधि यहचारों निरूपणकरैंहैं ॥ तहां इसलोकके तथापरलोकके विषयोंविषे सातिशय अनित्यता आदिकदोषोंकी जा दृष्टिहै ॥ सादोषदृष्टितौ वैराग्यका साधनहै ॥ और इसलोकपरलोककेविषयोंकेत्यागकी जाइच्छाहै सो वैराग्यका स्वरूपहै ॥ और विनाप्रयत्नतैंप्राप्तहुएभोगोंविषेभी जोचित्तकी अदीनताहै सो वैराग्यका फलहै ॥ और सर्वलोकोंतैउत्कृष्टजोब्रह्मलोकहै तिसकूंभी तृणकीन्याईं तुच्छजानणा यह वैराग्यके पूर्णताकाअवधिहै इति ॥ और श्रवण मनन निदिध्यासन यहतीनों ताबोधके साधनहैं ॥ और मिथ्यादेहादिकोंतैं जोप्रत्यकआत्माकाविवेचनहै सो बोधका स्वरूपहै ॥ और अहंकारादिकोंकेसाथि आत्माकातादात्म्यअध्यासरूपग्रंथिका जो पुनः अनुदयहै सो ताबोधका फलहै ॥ और जैसे अज्ञानीपुरुषोंकूं देहविषे दृढआत्मत्वबुद्धिहोवैहै तैसे परमात्माविषे जा दृढआत्मत्वबुद्धिहै सो ताबोधकेपूर्णताका अवधिहै इति ॥ और यमनियमादिक उपरतिके साधनहैं ॥ और मनकेसर्ववृत्तियोंकाजोनिरोधहै सो उपरतिका स्वरूपहै ॥ और लौकिकवैदिकसर्वव्यवहारोंकाजोअभावहै सो ताउपरतिका फलहै ॥ और सुषुप्तिकीन्याईं सर्वपदार्थोंकी जाविस्मृतिहै सो ताउपरतिकेपूर्णताका अवधिहै इति ॥ तहां असंभावनाविपरीतभावनातैं जोरहितपणाहै यहही ताब्रह्मसाक्षात्काररूपबोधकेपूर्णताका अवधिहै ॥ सोबोधकेपूर्णताकाअवधि विष्णुपुराणविषे पराशरमुनिनेंभी कह्याहै॥तहांश्लोक ॥ 'अहंहरिःसर्वमिदंजनार्दनो नान्यत्ततःकारणकार्यजातम् । इदंमनोयस्यनतस्यभूयो भवोद्भवाद्वंद्वगदाभवंति' अर्थयह ॥ मैं तथा यहसर्वजगत् परमात्मरूपहीहै ॥ तिसपरमात्मातैंभिन्न कोईभी कारण तथा कार्य हैनहीं ॥ इसप्रकारकी

सर्वात्मबुद्धि जिसपुरुषकूं प्राप्तभई है ॥ तिसपुरुषकूं पुनः संसारतैंउत्पन्नभये शीतउष्णमानअपमानादि
कद्वंद्वरूपरोग प्राप्तहोतेनहीं इति ॥ किंवा यहबोधकेपूर्णताकाअवधि स्कंदपुराणविषेस्थितब्रह्मगीतावि
षे ब्रह्माकेप्रति महादेवनेभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'अहंहिसर्वंनचाकिंचिदन्यन्निरूपणायामनिरूपणा
याम् । इयंहिवेदस्यपराहिनिष्ठा ममानुभूतिश्चनसंशयश्च' अर्थयह॥मैंही सर्वजगतरूपहूं ॥ मेरेतैंभिन्न को
ईभीवस्तुनहींहै ॥ याप्रकारका जोसर्वात्मभावहै ॥ यहही सर्ववेदोंका परमतात्पर्य है ॥ और हमाराभी
यहहीअनुभवहै ॥ इससर्वात्मभावविषे तुमने कदाचित्भी संशयनहींकरणा इति ॥ किंवा यहबोधकेपू
र्णताकाअवधि उपदेशसाहस्रीग्रंथविषे आचार्योंनेभी कथनकर्‍याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'देहात्मज्ञानवज्ज्ञानं
देहात्मज्ञानबाधकम्।आत्मन्येवभवेद्यस्य सनेच्छन्नपिमुच्यते' अर्थयह॥जैसे अज्ञानीपुरुषोंकूं आपणे दे
हविषे अहंमनुष्यः याप्रकारका दृढज्ञानहोवैहै ॥ तैसे जिसपुरुषकूं प्रत्यक्आत्माविषे अहंब्रह्मास्मि या
प्रकारका संशयविपरीतभावनातैंरहित दृढज्ञान भयाहै ॥ जोज्ञान तादेहात्मज्ञानका नाशकरणेहाराहै ॥
ऐसेज्ञानवालापुरुष मोक्षकीनहींइच्छाकरताहुआभी अवश्य मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ किंवा यहबोधके
पूर्णताकाअवधि श्रीविद्यारण्यस्वामीनेभी तृप्तिदीपविषे कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'असंदिग्धाविपर्यस्त
बोधोदेहात्मनीक्ष्यते।तद्वदत्रेतिनिर्णेतुमयमित्यभिधीयते' अर्थयह ॥ लौकिकपुरुषोंकूं आपणेदेहरूपआ
त्माविषे जैसे संशयविपरीतभावनातैंरहित मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं याप्रकारकाज्ञान देखणेविषेआवै है॥
तैसे इसअधिकारीपुरुषने मुक्तिकीसिद्धिवासते प्रत्यक्आत्माविषे संशयविपरीतभावनातैंरहित अहंब्रह्मा
स्मि याप्रकारकाबोधही संपादनकरणेयोग्यहै ॥इसप्रकारके निर्णयकरणेवासतेही श्रुतिविषे अयं यह

पद कथनकऱ्याहै ॥ साश्रुति आगेकथनकरेंगे इति ॥ इत्यादिक अनेक श्रुतिस्मृतिआचार्यवाक्यरूप प्रमाणोंकरिकै सोबोधकेपूर्णताकाअवधि सिद्धहै ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ पूर्वउक्त विवेकादिकच तुष्टयसाधनसंपन्नपुरुषकूं श्रवणमननिदिध्यासनकरिकै अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका ब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कारतैं अविद्याकीनिवृत्ति तथाब्रह्मभावरूपमुक्ति होवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ब्रह्म साक्षात्कारतैं इसपुरुषकूं अविद्याकीनिवृत्ति तथाब्रह्मभावरूपमुक्ति होवैहै ॥ इसअर्थविषे कौनप्रमाण है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ इसअर्थकूं साक्षात्वेदकीश्रुति तथास्मृति कथनकरेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ 'तमेवविदित्वाऽतिमृत्युमेति । तरतिशोकमात्मवित्।ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति । एवमेवैषसंप्रसादोऽस्माच्छरीरात्समुत्थायपरंज्योतिरुपसंपद्यस्वेनरूपेणाभिनिष्पद्यते।सउत्तमःपुरुषः । आत्मानंचेद्विजानीयादहमस्मीति पुरुषःकिमिच्छन्कस्यकामायशरीरमनुसंज्वरेत् । यत्पूर्णानंदैकबोधस्तद्ब्रह्माहमस्मीतिकृतकृत्योभवति' अर्थयह।यहअधिकारीपुरुष तिसपरमात्माकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकासाक्षात्कारकरिकै संसारकेकारण भूतअज्ञानरूपमृत्युकूं नाशकरेहै ॥ और आत्माकेसाक्षात्कारवालापुरुष शोककूं तरेहै अर्थात् संसार केकारणरूपअज्ञानकूं नाशकरेहै ॥ और ब्रह्मकेसाक्षात्कारवालापुरुष ब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ और यहसंप्रसादनामाजीव विचारतैं स्थूलसूक्ष्मशरीरकेअभिमानकूंपरित्यागकरिकै अहंब्रह्मास्मि याप्रकारतैं परब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानिकै तापरब्रह्मरूपहीहोवैहै ॥ और जोअधिकारी ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै ब्रह्मरूपहुआहै ॥ सोअधिकारी उत्तमहै तथापुरुषहै ॥ तहां ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै निवृत्तहोइगयाहै अज्ञानरूपतम जिसका ताकानाम उत्तमहै ॥ और सर्वत्रपूर्णकानाम पुरुषहै ॥ और नित्यअपरोक्षरूप तथा

सर्वकासाक्षीरूप परमात्मा मैंहूं याप्रकारतैं जबी कोईपुरुष प्रत्यक् आत्माकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ तंभी सो ज्ञानवान्पुरुष किसकीइच्छाकरताहुआ किसकेवासतै शरीरकूं आश्रयकरिके तपायमानहोवैगा ॥ किंतु नहींतपायमानहोवैगा ॥ और जोब्रह्म अपरिच्छिन्नआनंदरूपहै तथाएकहै तथाबोधरूपहै सोब्रह्म मैंहूं याप्रकारकेज्ञानवालापुरुष कृतकृत्यहीहोवैहै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ गीताविषे श्रीकृष्णभगवान्नेभी कह्याहै ॥ 'एतद्बुद्ध्वाबुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्चभारत ।ज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्' अर्थयह ॥ हेअर्जुन इसब्रह्मात्मतत्त्वकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका साक्षात्कारकरिके यहपुरुष बुद्धिमान्होवैहै तथाकृत्यकृत्यहोवैहै ॥ और ज्ञानवान्पुरुष मैंपरमेश्वरका आत्मारूपही है इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ शेष भगवान्नेभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ वृक्षाग्राच्च्युतपादोयद्वदनिच्छन्नपिक्षितौपतिततद्वद्गुणपुरुषज्ञोऽनिच्छन्नपिकेवलीभवति' अर्थयह ॥ जैसे वृक्षकेऊपरितैंगिरयाहुआ पुरुष भूमिविषेपतनकी नहींइच्छाकरताहुआभी ताभूमिविषे अवश्य पडेहै ॥ तैसे आत्मासाक्षात्कारवान्पुरुष मोक्षकीनहींइच्छाकरताहुआभी अवश्य मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ इत्यादिक अनेकश्रुतिस्मृतिवचन ब्रह्मसाक्षात्कारतैं अविद्याकीनिवृत्ति तथाब्रह्मभावरूपमुक्तिकीप्राप्ति कथनकरेहै ॥ यातैं विचारकर्‍येहुएतत्त्वमसिआदिकमहावाक्यतैं उत्पन्नहुए अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेसाक्षात्कारकरिकै इसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं नित्यनिरतिशय अखंड एकरस आनंद ब्रह्मभावरूपमुक्ति प्राप्तहोवैहै यहसिद्धभया इति ॥ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृततत्त्वानुसंधाने तृतीयःपरिच्छेदःसमाप्तः ॥ ३ ॥ ॥ ॥१७९॥

श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतप्राकृततत्त्वानुसंधाने तृतीयःपरिच्छेदःसमाप्तः ॥ ३ ॥

अथ श्रीस्वामिचिद्धनानन्दगिरिकृतप्राकृ-
ततत्त्वानुसन्धाने चतुर्थपरिच्छेदः ।

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशङ्कराचार्येभ्योनमः ॥
अथ चतुर्थपरिच्छेदप्रारंभः ॥ तहां पूर्व तृतीयपरिच्छेदकेअंतविषे ब्रह्मसाक्षात्कारतैं मुक्तिकीप्राप्ति कथन करी ॥ सामुक्ति जीवन्मुक्ति १ विदेहमुक्ति २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां कैएकग्रंथकार जीवन्मुक्तिकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु एकाविदेहमुक्तिही मानेहैं ॥ तिनोंकेमतकेखंडनकरणेवासतै प्रथम तिनोंकामत निरूपणकरेहैं ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै इसविद्वानपुरुषकूं एकाविदेहमुक्तिही होवैहै ॥ जीवन्मुक्ति होतीनहीं ॥ काहेतैं ताजीवन्मुक्तिविषे कोईभीप्रमाण नहीं है ॥ तथा ताजीवन्मुक्तिको कोईलक्षणभी संभवतानहीं ॥ तथा ताजीवन्मुक्तिका कोईसाधनभी संभवतानहीं ॥ तथा ताजीवन्मुक्तिका कोईअधिकारीभी संभवतानहीं ॥ तथा ताजीवन्मुक्तिका कोईफलरूपप्रयोजनभी संभवतानहीं ॥ औरलक्षणप्रमाणादिकोंतैंही वस्तुकीसिद्धिहोवैहै ॥ तिनलक्षणप्रमाणादिकोंकाअभावहोणेतैं साजीवन्मुक्ति अंगीकारकरणेयोग्यनहीं है॥अब प्रमाणकेअभावतैं ताजीवन्मुक्तिकेअभावकूं सिद्धकरेहैं॥ताजीवन्मुक्तिविषे कोईभी श्रुतिस्मृतिवचन प्रमाणनहींहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ 'विमुक्तश्चाविमुच्यते । सजीवन्मुक्तउच्यते । स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते' इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनही ताजीवन्मुक्तिविषे प्रमाणरूपहै । यातैं ताजीवन्मुक्तिविषे प्रमाणकाअभावकहणा असंगतहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंका ब्रह्मविद्याकीस्तुतिकरिकै ब्रह्मविषेही तात्पर्य है ॥ ताजीवन्मुक्तिविषे तात्पर्यनहीं है ॥ यातैं तिनवचनोंतैं ताजीवन्मुक्तिकीसिद्धि होइसकैनहीं अब लक्षणकेअभावतैं ताजीवन्मुक्तिकेअभावकूं सिद्धकरेहैं ॥ अज्ञानकेनिवृत्तिकानाम तहां जीवन्मुक्तिहै ॥ अथवा ब्रह्मभावकानाम जीवन्मुक्तिहै ॥ अथवा

जीवत्अवस्थाविषे कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूपबंधकीनिवृत्तिकानाम जीवन्मुक्तिहै॥तहां प्रथमलक्षण वा द्वितीयलक्षण जोअंगीकारकरो सो संभवतानहीं॥ जिसकारणतैं विदेहमुक्तिविषेभी साअज्ञानकी निवृत्ति तथासोब्रह्मभाव विद्यमानही है॥ ताविदेहमुक्तिविषे तिनदोनोंलक्षणोंकी अतिव्याप्तिहोवैगी॥ और अतिव्याप्तिदोषवालालक्षण आपणेलक्ष्यअर्थकीसिद्धि करिसकतानहीं॥यातैं ताप्रथमद्वितीयलक्षणतैं ताजीवन्मुक्तिकीसिद्धि होइसकतीनहीं॥ और जोतृतीयलक्षण अंगीकारकरो सोभी संभवतानहीं॥ काहेतैं जीवत्अवस्थाविषे भोगदेणेहारेप्रारब्धकर्मकेविद्यमानहुए ताकर्तृत्वादिकबंधकीनिवृत्ति संभवतीनहीं यातैं सोतृतीयलक्षणभी असंभवदोषवालाहोणेतैं ताजीवन्मुक्तिकीसिद्धि करिसकैनहीं॥ किंवा जीवत्अवस्थाविषे सोकर्तृत्वादिकबंध साक्षीचैतन्यतैं निवृत्तकरतेहो अथवा अहंकारतैं निवृत्तकरतेहो॥ तहां जोप्रथमपक्ष अंगीकारकरो सो संभवतानहीं॥ काहेतैं तासाक्षीचैतन्याविषे वास्तवतैंतो सोबंधहैनहीं॥ किंतुअंतःकरणके तादात्म्यअध्यासतैंसोबंध प्रतीतहोवैहै॥ जबी आत्मसाक्षात्काररकरिकै तिसतादात्म्यअध्यासकीनिवृत्ति होवैहै॥ तभी सोआरोपितबंधभी निवृत्तहोइजावैहै॥ यातैं तासाक्षीतैंबंधकीनिवृत्तिकरणेवासतै जीवन्मुक्तिकासंपादनकरणा व्यर्थही है॥ और जोद्वितीयपक्ष अंगीकारकरो सोभी संभवतानहीं॥ काहेतैं भोगकेदेणेहारेप्रारब्धकर्मकेविद्यमानहुए ताअहंकारगतस्वाभाविकबंधकीनिवृत्तिसंभवती नहीं॥ तात्पर्ययह॥ जिसधर्मीका जो स्वाभाविकधर्म होवैहै॥ सोस्वाभाविकधर्म ताधर्मीकेविद्यमानहुए निवृत्तहोतानहीं॥जैसे अग्निका उष्णत्वधर्म तथा जलका द्रवत्वधर्म ताअग्निजलरूपधर्मीकेविद्यमानहुए निवृत्तहोतानहीं॥ तैसे अहंकारकास्वाभाविकधर्मरूप सोकर्तृत्वादि

कबंधभी ताअहंकाररूपधर्मीकेविद्यमानहुए निवृत्तहोवैगानहीं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताअहंकारगत कर्तृत्वादिकबंधका यद्यपि स्वरूपतैंनाश नहींहोता ॥ तथापि योगाभ्यासकरिकै ताबंधका अभिभवहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे आत्मज्ञानतैं सोप्रारब्धकर्म प्रबलहोवैहै ॥ तैसे तायोगाभ्यासतैंभी सोप्रारब्धकर्म प्रबलहोवैहै ॥ और ताप्रारब्धकर्मकाभोग कर्तृत्वादिकअभिमानतैंविना संभवतानहीं ॥ यातैं ताप्रबलप्रारब्धकर्मकेविद्यमानहुए सोयोगाभ्यास ताकर्तृत्वादिकबंधका अभिभव करिसकैगानहीं ॥ यातैं जीवत्अवस्थाविषे कर्तृत्वादिकबंधकेनिवृत्तिकानाम जीवन्मुक्तिहै यहउक्त जीवन्मुक्तिका लक्षण संभवतानहीं इति ॥ अब साधनकेअभावतैं ताजीवन्मुक्तिकेअभावकूं सिद्धकरेहैं ॥ तहां जीवन्मुक्तिकूंमानणेहारेवादीसे यहपूँछाचाहिये ॥ ताजीवन्मुक्तिका आत्मज्ञान साधनहै अथवा योग साधनहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरो सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं सोआत्मज्ञान विदेहमुक्तिकाही साधनहै ॥ ताजीवन्मुक्तिका साधननहीं ॥ और 'ज्ञानादेवतुकैवल्यम्' इत्यादिकश्रुतियोंनैं आत्मज्ञानतैं मुक्तिकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ कोईजीवन्मुक्तिकीप्राप्ति कथनकरीनहीं ॥ यातैं सोआत्मज्ञान विदेहमुक्तिकाही साधनहै ॥ तैसे द्वितीयपक्षभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं जैसे श्रवणादिक आत्मज्ञानकेसाधनहैं तैसे सोयोगभी आत्मज्ञानकाही साधनहै ॥ यातैं तायोगकूंभी जीवन्मुक्तिकीसाधनता संभवैनहीं ॥ अब अधिकारीकेअभावतैं ताजीवन्मुक्तिकेअभावकूं सिद्धकरेहैं ॥ तहां ताजीवन्मुक्तिविषे मुमुक्षुकूंतौ अधिकारीपणा संभवतानहा ॥ किंतु ज्ञानवान्कूंही ताजीवन्मुक्तिका अधिकारी कहणाहोवैगा ॥ सो भी संभवतानहीं ॥ काहेतैं 'ज्ञानामृतेनतृप्तस्य कृतकृत्यस्ययोगिनः । नैवास्तिकिंचित्कर्त्तव्यमस्तिचेन्न

सतत्त्ववित् ॥ तस्यकार्यंनविद्यते' इत्यादिकवचनोंनैं ज्ञानवान्कूं कर्त्तव्यताका निषेधकऱ्याहै ॥ जो ज्ञानवान्कूं जीवन्मुक्तिकाअधिकारी मानोंगे तौ ताज्ञानवान्कूं ताजीवन्मुक्तिकेसाधनोंकीकर्त्तव्यता अवश्यहोवैगी ॥ ताकरिकै तिनउक्तवचनोंका विरोधहोवैगा ॥ किंवा देहाभिमानवालापुरुषही कर्त्ताहोवैहै ॥ और ज्ञानवान्पुरुष तादेहाभिमानतैंरहितहै ॥ यातैं कर्त्तापणेतैंभीरहितहै ॥ ताकर्त्तापणेके अभावहुए ताज्ञानवान्पुरुषकी ताजीवन्मुक्तिकेसाधनोंविषे प्रवृत्तिसंभवतीनहीं ॥ यातैं ताज्ञानवान्पुरुषकूं ताजीवन्मुक्तिविषे अधिकारसंभवतानहीं ॥ और अधिकारतैंविना ताजीवन्मुक्तिकेसाधनोंकाअभ्यासभी संभवतानहीं इति ॥ अब फलरूपप्रयोजनकेअभावतैं ताजीवन्मुक्तिअभावकूं सिद्धकरेहैं ॥ तहां जीवन्मुक्तिकूंमानणेहारेवादीतैं यहपूँछाचाहिये ॥ ताजीवन्मुक्तिका क्याप्रयोजनहै ॥ अर्थात् प्रयोजनतैंविना मंदपुरुषकीभी प्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ तौ बुद्धिमान्पुरुषकी ताप्रयोजनतैंविना कैसेप्रवृत्ति होवैगी ॥ यातैं ताजीवन्मुक्तिकेसंपादनविषे पुरुषकीप्रवृत्तिवासतै ताजीवन्मुक्तिका कोईप्रयोजन अवश्यकह्याचाहिये ॥ तहांउत्पन्नहुएआत्मज्ञानकारक्षण ताजीवन्मुक्तिका प्रयोजनहै ॥ अथवा दुःखकानाश प्रयोजनहै ॥ अथवा स्वरूपसुखकाआविर्भाव प्रयोजनहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरो सो संभवतानहीं ॥ काहेतैं 'तत्त्वमसि'आदिकप्रमाणकरिकैजन्य तथाअज्ञानकेनिवृत्तकरणेविषेसमर्थ जो आत्मज्ञानहै ॥ तिसआत्मज्ञानकाकोईभीबाधक हैनहीं ॥ और बाधकतैंही रक्षणहोवैहै ॥ यातैं ताज्ञानकारक्षणही निरूपणहोइसकतानहीं ॥ इसप्रकार दुःखकानाश तथासुखकाआविर्भाव यहदोनोंभीताजीवन्मुक्तिका प्रयोजन नहीं हैं ॥ जिसकारणतैं तेदोनों आत्मज्ञानकरिकैही प्राप्तहोवैहैं ॥ और जोवस्तु

जिससाधनकरिकै प्राप्तहोवैहै सोवस्तु तिससाधनकाही फलहोवैहै ॥ अन्यसाधनकाफल होतानहीं ॥ यातैं दुःखकानाश तथासुखकाआविर्भाव यहदोनों आत्मज्ञानकाहीफलहै ॥ ताजीवन्मुक्तिकाफलनहीं है ॥ इसप्रकार प्रमाण स्वरूपलक्षण साधन अधिकारी प्रयोजन इनपांचोंकेअभावहोणेतैं ताजीवन्मुक्तिकाअंगीकार निरर्थकही है ॥ यातैं आत्मज्ञानतैं एकविदेहमुक्तिहीहोवैहै ॥ जीवन्मुक्तिहोतीनहीं इति ॥ इसप्रकार कोईकग्रंथकार जीवन्मुक्तिकाखंडनकरिकै एकविदेहमुक्तिही अंगीकारकरेहैं ॥ तिनोंकेमतकेखंडनकरणेवासतै अब तामुक्तिकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ सापूर्वउक्तमुक्ति दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ विदेहमुक्ति होवैहै ॥ दूसरी जीवन्मुक्ति होवैहै ॥ यद्यपि जीवन्मुक्तितैंपश्चात् विदेहमुक्तिहोवैहै ॥ यातैं प्रथम ताजीवन्मुक्तिकाही निरूपणकरणा उचितहै ॥ तथापि साजीवन्मुक्ति विवादकरिकै ग्रस्तहै ॥ यातैं ताकानिरूपण अतिविस्तारतैंहोवैहै ॥ और विदेहमुक्तिविषे किसीका विवादहैनहीं ॥ यातैं ताकानिरूपण थोडेमेंहोवैहै यातैं सूचीकटाहन्यायकरिकै प्रथम विदेहमुक्तिकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां अहंब्रह्मास्मि याप्रकारके तत्त्वज्ञानवालेपुरुषका भोगकरिकैप्रारब्धकर्मकेनाशहुए जोवर्त्तमानशरीरकानाशहै ताकानाम विदेहमुक्तिहै ॥ यहाविदेहमुक्ति श्रीव्यासभगवान्नेंभी ब्रह्मसूत्रोंविषे कथनकरीहै ॥ तहांसूत्र ॥ 'भोगेनत्वितरेक्षपयित्वासंपद्यते 'अर्थयह॥ ज्ञानवान्पुरुष सुखदुःखकेअनुभवरूप भोगतैंपुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मकानाशकरिकै शरीरनाशतैंअनंतर अखंडएकरसआनंदब्रह्मात्मरूपतैंस्थितहोवैहै॥पुनःजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं॥काहेतैं तिसज्ञानवान्पुरुषका आत्मज्ञानकरिकै अज्ञान तथासंचितकर्म नाशहोइजावैहै ॥ और ताआत्मज्ञानकेप्रभावतैं ताज्ञानवान्पुरुषकूं आगामिपुण्यपापकर्मका

स्पर्शहीहोतानहीं और प्रतिबंधरूपप्रारब्धकर्मका भोगकरिकैनाशहुएतैंअनंतर वासनासहितविक्षेप
शक्तिवालाअज्ञानभी नाशहोइजावैहै ॥ यातैं जन्मकीप्रातिकरणेहारे संचितकर्मादिककारणकेअभाव
हुए सोज्ञानवान्पुरुष पुनः जन्मकूं प्राप्तहोतानहीं ॥किंतु इसवर्त्तमानशरीरकेनाशतैंअनंतर सोज्ञानवान
पुरुष निर्विशेषब्रह्मरूपही होवैहै इति ॥ यह उक्तविदेहमुक्तिकास्वरूप 'तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्ष्ये
ऽथसंपत्स्ये' इसश्रुतिनैंभी कथनकऱ्याहै ॥ यातैं साविदेहमुक्ति श्रुतिसूत्रप्रमाणकरिकैसिद्धहै ॥ ॥
शंका ॥ ॥ जिसपुरुषकूं अनेकजन्मोंकीप्रातिकरणेहारा प्रारब्धकर्म विद्यमानहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं
प्रथमजन्मविषे आत्मज्ञानकेउत्पन्नहुए दूसराजन्म होवैहै अथवा नहींहोवैहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जो अंगी
कारकरोगे तौ ज्ञानकूं पाक्षिकपणा होवैगा ॥ अर्थात् ताआत्मज्ञानकूं नियमतैं जन्मनिवृत्तिकाहेतु
पणा नहींहोवैगा ॥ और दूसरापक्ष जोअंगीकारकरोगे ॥ तौ 'नाभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि'
इसवचनकाविरोध प्राप्तहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेप्रातहुए ॥ इहां कैएकग्रंथकारतौ ऐसा समाधान करेहैं ॥
'यावदधिकारमवस्थितिराधिकारिकाणां' इससूत्रविषे श्रीव्यासभगवाननैं तथा श्रीभाष्यकारोंनैं यहअ
र्थ निरूपणकऱ्याहै॥सृष्टिकेआदिकालविषे जगत्व्यवहाकेचलावणेवासतै परमेश्वरनैं स्थापनकऱ्येजो
देवतादिक अधिकारीपुरुषहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषकूं तितनैंकालपर्यंत सोअधिकार होवैहै ॥ तित
नैंकालपर्यंत तिनोंकीस्थितिहोवैहै ॥ मध्याविषे किसीवरशापकेवशतैं तिनअधिकारीपुरुषोंकूं जन्मांतर
कीप्रातिहुएभी आत्मज्ञानकाबाध होतानहीं ॥ तथा ताअधिकारकीसमाप्तिकालविषे तिनोंकूं मोक्षभी
अवश्यहोवैहै इति ॥इसप्रकार जिसपुरुषका प्रारब्धकर्म अनेकजन्मकेदेणेहाराहै ॥ तिसपुरुषकूं प्रथम

जन्मविषेतत्त्वमसिआदिकमहावाक्यप्रमाणकेबलतैं आत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिहुएतैंअनंतरताप्रबलप्रा
रब्धकर्मकेवशतैं जन्मांतरकीप्राप्तिहुएभी ताज्ञानकाबाधहोतानहीं॥जिसकारणतैं सोप्रारब्धकर्मकाफल
ताआत्मज्ञानका विरोधीहोतानहीं ॥ जोकदाचित् सोप्रारब्धकर्मकाफल ताआत्मज्ञानकाविरोधी हो
ताहोवै तौ देवतादिकअधिकारीपुरुषोंके आत्मज्ञानकाभी ताप्रारब्धकर्मकेफलकरिकै बाधहोणाचा
हिये ॥ और तिसपुरुषकूं ताआत्मसाक्षात्कारतैं सोब्रह्मभावरूपमोक्षभी अवश्यप्राप्तहोवैहै॥ यातैं ताआ
त्मज्ञानका सोपाक्षिकपणाभी होवैनहीं ॥ तथा 'नाभुक्तंक्षीयतेकर्म' इसवचनकाभी विरोधहोवैनहीं
इति॥ और कैएकग्रंथकारतौ ताउक्तशंकाका यहसमाधान करेहैं॥'यस्तुविज्ञानवान्भवत्यमनस्कःसदा
शुचिः। सतुतत्पदमाप्नोतियस्माद्भूयोनजायते।यएवंवेत्तिपुरुषंप्रकृतिंचगुणैःसह।सर्वथावर्त्तमानोऽपिनसभू
योऽभिजायते' इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंनैं ज्ञानवान्पुरुषकेजन्मका निषेधकर्याहै॥यातैं जिसपुरुषका
सोप्रारब्धकर्म अनेकजन्मकाहेतुहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं ताप्रथम जन्मविषे श्रवणादिकोंतैं सोआत्मज्ञान
उत्पन्नहोतानहीं ॥ किंतु अंत्यजन्मविषेही सोआत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रीवसिष्ठभगवान्
नैंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'यस्येदंजन्मपाश्चात्यं तमाश्वेवमहामते । विशंतिविद्याविमला मुक्तावेणुमि
वोत्तमम्'॥अर्थयह ॥ हेमहामतिवालाराम जिसपुरुषका यहअंत्यजन्महोवैहै॥तिसपुरुषविषेही यहनिर्म
लब्रह्मविद्या प्रवेशकरेहै जैसे उत्तमजातिवालेवेणुविषे मोती प्रवेशकरेहै इति ॥ यातैं पूर्वउक्तदोनोंप ॥१८३॥
क्षोंविषे भोगकरिकैप्रारब्धकर्मकेनाशहुए तथादेहकेपातहुए सोज्ञानवान् पुरुष ब्रह्मात्मरूपकरिकैस्थितहो
वैहै यहअर्थसिद्धभया इति ॥ और कैएकग्रंथकारतौ ताविदेहमुक्तिका यहस्वरूप कहेहैं ॥ भावीशरीर

कां जो अनारंभकपणाहै ताकानाम विदेहमुक्तिहै सोयहविदेहमुक्ति ज्ञानकीउत्पत्तिकेसमकालहीहोवैहै ॥ अर्थात इसपुरुषकूं जिसकालविषे आत्मज्ञान होवैहै तिसीकालविषे सोविदेहमुक्ति होवैहै ॥ काहेतें आत्मज्ञानकरिकैनिवृत्तहुए संचितकर्मकाभी नाशहोइजावैहै ॥ और सोसंचितकर्महीभावीशरीरका आरंभक होवैहै ॥ यातें इसपुरुषकूं आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकालविषे साभावीशरीरकाअनारंभकत्वरूपविदेहमुक्ति बनिसकैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'तीर्थेश्वपचगृहेवानष्टस्मृतिरपित्यजन्देहम्।ज्ञानसमकालमुक्तःकैवल्यंयातिहतशोकः'॥अर्थयह॥ श्रीकाशीआदिकतीर्थविषे अथवा चांडालकेगृहविषे शरीरकूंपरित्यागकरताहुआ ॥ तथा सन्निपातादिकदोषकेवशतें ब्रह्मात्मस्मृतितैंरहितहुआभी ज्ञानवान्पुरुष कैवल्यमोक्षकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ जिसकारणतें सोतत्त्ववेत्तापुरुषआत्मज्ञानकेसमकालही मुक्तहै ॥ तथा सर्वशोकोंतैंरहितहै इति ॥ तहां इतनेंपर्यंत विदेहमुक्तिका निरूपणकर्‌या ॥ अब जीवन्मुक्तिका निरूपणकरेहैं ॥ तहां प्रथम त।जीवन्मुक्तिकालक्षण कहेहैं ॥ श्रवणादिकोंकरिकैउत्पन्नभयाहै ब्रह्मसाक्षात्कार जिसकूं ऐसा।जो विद्वत्संन्यासीहै ॥ तिसविद्वत्संन्यासीकूं जीवतूअवस्थाविषे जो कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूपसर्वबंधप्रतीतिकीनिवृत्तिहै ताकानाम जीवन्मुक्तिहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ यहजीवन्मुक्तिकालक्षण संभवतानहीं ॥ काहेतें भोगदेणेहारेप्रारब्धकर्मकेविद्यमानहुए ज्ञानवान्पुरुषकूंभी साकर्तृत्वादिकबंधकीप्रतीति अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ जिसकारणतें ताकर्तृत्वभोक्तृत्वबुद्धितैंविना सोप्रारब्धकर्मकेफलकाभोग संभवतानहीं ॥ यद्यपि सोकर्तृत्वादिकबंध साक्षीआत्मातैंतो ज्ञानकरिकैंहीनिवृत्तहोइगयाहै ॥ तथापि जलगतद्रवत्वधर्मकीन्यांई तथाअग्निगतउष्णत्वधर्मकीन्यांई अंतः

करणकास्वाभाविकधर्मरूप सोकर्तृत्वादिकबंध ताअंतःकरणतैं निवृत्तहोणेकूंअशक्यहै ॥ यातैं कर्तृत्वा
दिकसर्वबंधप्रतीतिकेनिवृत्तिकानाम जीवन्मुक्तिहै यहलक्षण संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे
तत्त्वज्ञानतैं प्रारब्धकर्म प्रबलहोवैहै ॥ तैसे ताप्रारब्धकर्मतैंभी योगाभ्यास प्रबलहोवैहै ॥ यातैं तायोगा
भ्यासकरिकै यद्यपि ताप्रारब्धभोगकेअनुकूलकर्तृत्वादिकबंधप्रतीतिकी आत्यंतिकनिवृत्ति होतीनहीं ॥
तथापि तायोगाभ्यासकरिकै ताकर्तृत्वादिकबंधप्रतीतिका अभिभव अवश्यहोवैहै॥यातैं सोपूर्वउक्त जी
वन्मुक्तिकालक्षण संभवैहै ॥ जोकदाचित् प्रारब्धकर्मतैं योगाभ्यासकूं प्रबल नहींमानिये तौ पुरुषप्रय
त्नकूंही व्यर्थताहोवैगी तापुरुषप्रयत्नकेव्यर्थहुए चिकित्साशास्त्रतैंआदिलैके मोक्षशास्त्रपर्यंत सर्वशा
स्त्रोंकाआरंभ निष्फलहोवैगा ॥ ॥ शंका ॥ ॥ योगाभ्यासकरिकै जो प्रारब्धकर्मका प्रतिबंध मानों
गे ॥ तौ 'नाभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि' इसवचनका विरोधहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥
ताप्रारब्धकर्मकेविरोधी जे योगाभ्यासादिकहैं तिनोंके नहींविद्यमानहुएही सोउक्तवचन सार्थक हो
वैहै ॥ अर्थात् जिसप्रारब्धकर्मका कोईयोगाभ्यासादिक प्रतिबंधक नहीं है ॥ सोप्रारब्धकर्म भोगतैं
विना निवृत्तहोतानहीं ॥ जोकदाचित किसउपायकरिकैभी ताप्रारब्धकर्मकाप्रतिबंध नहींहोताहोवै
तौ प्रारब्धकर्मविषेअत्यंतभक्तिवालेवादीकूंभी शास्त्रकेवचनोंका विरोधहोवैगा ॥ सोवचन यहहै ॥
श्लोक ॥ 'जन्मांतरकृतंपापं व्याधिरूपेणबाधते। तच्छांतिरौषधैर्दानैर्जपहोमार्चनादिभिः'॥अर्थयह ॥ इ
सपुरुषनै पूर्वजन्मविषे कन्याजोपापकर्म सोपापकर्म है इसपुरुषकूं इसजन्मविषे ज्वरादिकव्याधिरूप
करिकै दुःखकीप्राप्तिकरैहै ॥ तिसकीशांति औषधोंकरिकै तथा दानोंकरिकै तथा जप होम अर्चन आ ॥१८४॥

दिकोंकरिकै होवैहै इति ॥ इत्यादिकवचनों नैं ताप्रारब्धपापकर्मकेशांतिवासतै औषधादिक उपायक थनकर्‍येहैं ॥ तिनसर्ववचनोंका विरोधहोवैगा ॥ यातैं योगाभ्यासकरिकै ताप्रारब्धकर्मकाअभिभव संभवैहै ॥ किंवा प्रारब्धकर्मकीअपेक्षाकरिकै योगाभ्यासादिक शास्त्रीयप्रयत्नकी प्रबलता वसिष्ठभगवाननेंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥'आबाल्यादलमभ्यस्तः शास्त्रसत्संगमादिभिः । गुणैःपुरुषयत्नेन सोऽर्थः संप्राप्यतेहितः' अर्थयह ॥ पुरुषप्रयत्न दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ अशास्त्रीय होवैहै ॥ दूसरा शास्त्रीय होवैहै ॥ तहां श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैनिषिद्ध जोप्रयत्नहै ताकानाम अशास्त्रीयप्रयत्नहै ॥ जैसे चोरीहिंसादिकप्रयत्नहैं ॥ और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं विधानकर्‍याजोप्रयत्नहै ताकानाम शास्त्रीयप्रयत्नहै ॥ जैसे यज्ञदानादिकप्रयत्नहैं ॥ तहां यहपुरुष अशास्त्रीयपुरुषप्रयत्नकरिकैतौ नरककूंही प्राप्तहोवैहै ॥ और बाल्यावस्थातैंलेकै अभ्यासकर्‍येजे अध्यात्मशास्त्रसत्समागम शांति दांति आदिकगुण हैं ॥ तिनगुणोंकरिकैयुक्त दूसरेशास्त्रीयपुरुषप्रयत्नकरिकै यहपुरुष मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकूं प्राप्तहोवैहैइति॥यहउक्तअर्थही 'उच्छास्त्रंशास्त्रितंचेति पौरुषंद्विविधंस्मृतम्।तत्रोच्छास्त्रमनर्थायपरमार्थायशास्त्रितम्' इसश्लोककरिकैभी कथनकर्‍याहै॥यातैं योगाभ्यासरूपशास्त्रीयप्रयत्नकरिकै ताप्रारब्धकर्मकाअभिभव संभवैहै ॥ यातैं सोपूर्वउक्त कर्तृत्वादिकबंधप्रतीतिकीनिवृत्तिरूप जीवन्मुक्तिकालक्षण निर्दोषहै इति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिकेअधिकारीका निरूपणकरेहैं॥ तहां श्रवणादिकोंकरिकै उत्पन्नभयाहैब्रह्मसाक्षात्कार जिसकूं ॥ तथा चित्तकेविश्रांतिकीहैकामनाजिसकूं ॥ ऐसाजो विद्वत्संन्यासीहै सोईही ताजीवन्मुक्तिकाअधिकारीहै ॥ अर्थात् ताजीवन्मुक्तिकीप्राप्तिवासतैं ताकेसाधनरूप मनो नाश वासनाक्षयकूं करणे

हाराहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै निवृत्तहोइगयाहै अज्ञान तथादेहाभिमान जिस
का ऐसाजो विद्वत्संन्यासीहै ॥ तिसकूं कोईकार्यका कर्त्तापणाही संभवतानहीं ॥ ताकर्त्तापणेतैंविना
तिसविद्वत्संन्यासीकूं ताजीवन्मुक्तिकाअधिकारीपणा कैसेसंभवैगा ॥ किंतु नहींसंभवैगा ॥ ॥ समा
धान ॥ ॥ आत्मज्ञानकरिकै आवरणशक्तिवालेअज्ञानकेनाशहुएभी प्रारब्धकर्मकेवशतैं विक्षेपशक्ति
वालेअज्ञानलेशकीस्थिति सर्वग्रंथकारोंनैं अंगीकारकरीहै ॥ यहवार्त्ता तृतीयपरिच्छेदविषे विस्तारतैंक
थनकरिआयेहैं ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषकूंभी बाधितानुवृत्तिकरिकै सोदेहाभिमान तथाकर्त्तापणा बनिस
केहै ॥ ताकरिकै तिसविद्वान्पुरुषकूं जीवन्मुक्तिकाअधिकारीपणाभी संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥
'ज्ञानामृतेनतृप्तस्य कृतकृत्यस्ययोगिनः।नैवास्तिकिंचित्कर्त्तव्यमस्ति चेन्नसतत्त्ववित् ।तस्यकार्यंनविद्य
ते' इत्यादिक पूर्वउक्तस्मृतिवचनोंनैं कृतकृत्यरूपज्ञानवान्कूं सर्वकर्त्तव्यताका निषेधकर्‍याहै ॥ जबी
ज्ञानवान्पुरुषकूंभी जीवन्मुक्तिवासतै मनोनाश वासनाक्षयरूपसाधनोंकीकर्त्तव्यता मानोंगे ॥तभीति
नवचनोंका विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोज्ञानवान् दोप्रकारका होवैहै ॥ एकतौ कृ
तोपास्ति होवैहै ॥ दूसरा अकृतोपास्ति होवैहै ॥ तहां जिसपुरुषनैं आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्व सगुणब्रह्म
केसाक्षात्कारपर्यंत उपासनाकरी है ॥ सोज्ञावान्पुरुषतौ कृतोपास्ति कह्याजावैहै ॥ और जिसनैं सा
उपासना नहींकरीहै ॥ सोज्ञानवान् अकृतोपास्ति कह्याजावैहै ॥ तहां कृतोपास्तिज्ञानवान्कूंतौ ताज्ञा ॥१८९॥
नतैंउत्तर जीवन्मुक्तिवासतै किंचित्मात्रभी कर्त्तव्यता होतीनहीं ॥ जिसकारणतैं ताकृतोपास्तिज्ञान
वान्का सोमनोनाश तथावासनाक्षय पूर्वहीसिद्धहै ॥ यातैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिकालविषेही सोकृतोपा

स्तिपुरुष जीवन्मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै॥और ज्ञानवान्पुरुषकेप्रति कर्त्तव्यताकानिषेधकरणेहारे जे श्रुतिस्मृतिवचन पूर्वकहेहैं ॥ तेवचनभी इसकृतोपास्तिज्ञानवान्पुरुषकेप्रतिही सर्वकर्त्तव्यताकानिषेध करेहैं ॥ और लौकिकवैदिकव्यापारकरिकै चित्तकीविश्रांतितैंरहित जो अकृतोपास्तिज्ञानवान्है ॥ तिसकूंतो ज्ञानतैंउत्तर जीवन्मुक्तिकेवासतै मनोनाशवासनाक्षयकीकर्त्तव्यताहोणेतैं निरंकुश कृतकृत्यपणा नहीं है ॥ यातैं ताअकृतोपास्तिज्ञानवानकूं जीवन्मुक्तिवासतै सोमनोनाश तथावासनाक्षय अवश्यकर्त्तव्य है ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ऐसेचित्तविश्रांतितैंरहित अकृतोपास्तिपुरुषकूं आत्मज्ञानही नहींउत्पन्नहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ ज्ञानतौ प्रमाण वस्तु दोनोंके अधीन होवैहै ॥ यातैं सर्वकूं साधारण होवैहै॥जैसे घटादिकवस्तुकेसाथि चक्षुआदिकप्रमाणकेसंबंधहुए सर्वलोकोंकूंअयंघटः यहज्ञान समानही होवैहै ॥ तैसे तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यकेश्रवणतैं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाज्ञान कृतोपास्तिनामा अकृतोपास्तिनामा सर्वअधिकारियोंकूं तुल्यहीहोवैहै ॥ जोकदाचित् ऐसानहींमानिये तौ याज्ञवल्क्य कहोळ जनक अजातशत्रु इत्यादिकगृहस्थोंकूं सोंआत्मज्ञान नहींहोणाचाहिये ॥ जो इसअर्थविषे इष्टापत्तिकरोगे तौ तिनयाज्ञवल्क्यादिकोंकेदृष्टांतकरिकै अस्मदादिकपुरुषोंविषे कोईभीपुरुषकी ज्ञानके श्रवणादिकसाधनोंविषे प्रवृत्तिनहींहोवैगी ॥ अर्थात् जबी याज्ञवल्क्यादिकमहान्पुरुषोंकूंभी श्रवणादिकोंकरिकै आत्मज्ञानकीउत्पत्ति नहींभई ॥ तभी अस्मदादिकोंकूं ताज्ञानकीउत्पत्ति कैसेहोवैगी ॥ याप्रकारकी असंभावनाकरिकै किसीभीपुरुषकी श्रवणादिकोंविषेप्रवृत्ति नहींहोवैगी ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ श्रवणादिकोंकरिकैउत्पन्नभयाहैब्रह्मसाक्षात्कार जिसकूं तथाचित्तकेविश्रांतिकीहैइच्छाजिसकूं ऐ

 साजो विद्वत्संन्यासी है ॥ सोईही ताजीवन्मुक्तिका अधिकारीहै ॥ यातैं अधिकारीकेअभावतैं जीव
 न्मुक्तिकाअभावकहणा मिथ्याहै इति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिविषे प्रमाणकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां ताजी
वन्मुक्तिविषे श्रुति स्मृति इतिहास पुराण इनचारोंकेवचन प्रमाणहैं ॥ तेवचन यथाक्रमतैंदिखावैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ 'विमुक्तश्चविमुच्यते' अर्थयह ॥ यद्यपि यहपुरुष आत्मज्ञानतैंपूर्वही मुमुक्षुदशाविषे राग द्वेषादिकोंतैं मुक्तहै ॥ जिसकारणतैं 'शांतोदांतः' इत्यादिकश्रुतिनैं शमदमादिकसाधनयुक्तपुरुषकूंही श्रवणादिकोंकाअधिकारी कह्याहै ॥ तथापि ताआत्मज्ञानतैंपूर्व तिनरागद्वेषादिकोंतैंमुक्ति यत्नसाध्य होवैहै ॥ और आत्मज्ञानतैंअनंतरतौ योगाभ्यासकरिकै वासनाक्षय तथामनोनाश दोनों अतिदृढहो वैहै ॥ यातैं ताज्ञानवान्पुरुषविषे आभासरूपरागद्वेषादिकभी संभवतेनहीं ॥ यातैं ताज्ञानकालविषे तिनरागद्वेषादिकोंतैं मुक्ति स्वतःसिद्धहोवैहै॥इसी अभिप्रायकरिकै ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं श्रुतिनैं विमुक्त कह्याहै ॥ ऐसाविमुक्तजीवन्मुक्तपुरुष भोगकरिकैप्रारब्धकर्मकेनाशहुए इसशरीरकेनाशतैंअनंतर भावी बंधतैं विशेषकरिकैमुक्तहोवैहै इति ॥यहश्रुति तत्त्वज्ञानतैंअनंतर विदेहमुक्तितैंविलक्षण जीवन्मुक्तिकूं क थनकरेहै ॥ तथा 'तद्यथाऽहिनिर्ल्वयनीवल्मीकेमृताप्रत्यस्ताशयीतएवमेवेदंशरीरंशेते अथायमशरीरोऽमृ तःप्राणोब्रह्मैवतेजएव' इत्यादिकश्रुतियांभी ताजीवन्मुक्तिकूं कथनकरेहैं ॥ यातैं साजीवन्मुक्ति ताउ क्तश्रुतिप्रमाणकरिकै सिद्धहै इति ॥ किंवा वसिष्ठभगवान्नैंभी साजीवन्मुक्ति कथनकरीहै ॥ तहांश्लो
क ॥ 'योजागर्त्तिसुषुप्तिस्थो यस्यजाग्रन्नविद्यते । यस्यनिर्वासनोबोधः सजीवन्मुक्तउच्यते' अर्थयह ॥ जोब्रह्मवेत्तापुरुष इंद्रियोंकेनहींलयहुए जागताहै ॥ अर्थात् जाग्रत्अवस्थाकूं अनुभवकरेहै ॥ और

ताजाग्रत्अवस्थाविषेभी चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै रूपादिकविषयोंकूं ग्रहणकरतानहीं ॥ यातैं सोब्रह्मवे
त्तापुरुष ताजाग्रत्अवस्थाविषेस्थितहुआभी सुषुप्तिविषेस्थित कह्याजावैहै ॥ याकारणतैंही इंद्रियोंकरि
कैअर्थकाज्ञानरूपजाग्रत् जिसब्रह्मवेत्ताकूं नहींविद्यमानहै ॥ और जिसब्रह्मवेत्ताका आपणेअखंडएकर
सआनंदकाअनुभव शुभअशुभसर्ववासनावोंतैंरहितहै ॥ सोब्रह्मवेत्तापुरुष जीवन्मुक्त कह्याजावैहै इति॥
किंवा गीताकेद्वितीयअध्यायविषे श्रीभगवान्नेंभी सोजीवन्मुक्तपुरुष स्थितप्रज्ञनामकरिकै कथनकर्‌या
है॥तहांश्लोक ॥ 'प्रजहातियदाकामान्सर्वान्पार्थमनोगतान् । आत्मन्येवात्मनातुष्टःस्थितप्रज्ञस्तदोच्यते
अर्थयह ॥ हेअर्जुन जिसअवस्थाविषे यहविद्वान्पुरुष मनविषेस्थितसर्वकामोंका परित्यागकरैहै॥तथा
अखंडएकरसआनंदरूपप्रत्यक्‌आत्माविषे योगाभ्यासतैंवशकर्‌येहुएमनकरिकै आपणेस्वरूपानंदकूंअ
नुभवकरताहुआ संतुष्टहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोविद्वान्पुरुष स्थितप्रज्ञ कह्याजावैहै ॥ तहां नहींचला
यमानहै अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकीप्रज्ञा जिसकी ताकानाम स्थितप्रज्ञहै ॥ इहांयहतात्पर्यहै ॥ प्रज्ञा दो
प्रकारकीहोवैहै एकतौ स्थिरप्रज्ञा होवैहै ॥ और दूसरी अस्थिरप्रज्ञा होवैहै ॥ तहां जन्मांतरोंकेपु
ण्यसमूहकेपरिपाकतैं आकाशतैंपतनहुएफलकीन्यांई तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यकेश्रवणमात्रकरिकै
इसपुरुषकूं जीवब्रह्मकेएकत्वकूंविषयकरणेहारा जो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ सो
ज्ञानतौ व्यवहारकीबाहुल्यताकरिकै तथाविषयोंकीआसक्तिकरिकै विस्मरण होइजावैहै ॥ यातैं सोज्ञा
न अस्थिरप्रज्ञा कह्याजावैहै ॥ और योगाभ्यासकरिकैवशकर्‌याहैचित्तजिसनैं ऐसेपुरुषकीबुद्धि जभी
परपुरुषविषेआसक्तस्त्रीकीबुद्धिकीन्यांई निरंतर ब्रह्मात्मतत्त्वकूंही चिंतनकरैहै॥ अन्यवस्तुकूं चिंतनकर

तीनहीं ॥ तभी साबुद्धि स्थिरप्रज्ञा काह्याजावैहै ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीवसिष्ठभगवान्नैंभी कह्याहै तहांश्लोक ॥ 'परव्यसनिनीनारी व्यग्रापिगृहकर्मणि । तदेवास्वादयत्यंतःपरसंगरसायनम् ॥ १ ॥ एवंतत्त्वेपरेशुद्धे धीरोविश्रांतिमागतः । तदेवास्वादयत्यंतर्बहिर्व्यवहरन्नपि' ॥ २ ॥अर्थयह ॥ परपुरुषविषे आसक्त जानारीहै ॥ सानारी बाह्यतैं गृहकेसर्वकार्योंकूं करतीहुईभी अंतरचित्तविषे तापरपुरुषकेसंग जन्यसुखकूं चिंतनकरेहै ॥ इसप्रकार जोज्ञानवानपुरुष शुद्धपरमात्मतत्त्वविषे विश्रांतिकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोज्ञानवान्पुरुष बाह्यतैं लौकिकवैदिकव्यवहारोंकूं करताहुआभी अंतरचित्तविषे तिसपरमात्मतत्त्वकूंही निरंतर चिंतनकरेहै इति ॥ किंवा यहउक्तजीवन्मुक्तपुरुषही गीताकेद्वादशअध्यायविषे श्रीभगवान्नें भगवद्भक्तनामकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'अद्वेष्टासर्वभूतानां मैत्रःकरुणएवच । निर्ममोनिरहंकारःसमदुःखसुखःक्षमी ॥ १ ॥ संतुष्टःसततंयोगी यतात्माद्दढनिश्चयः । मय्यर्पितमनोबुद्धिर्योमद्भक्तःसमेप्रियः' ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष सर्वभूतोंकेद्वेषतैंरहितहै ॥ तथा मैत्रीकरुणावालाहै तथा अहंमम अभिमानतैंरहितहै ॥ तथा समानहैसुखदुःख जिसकूं ॥ तथा क्षमावालाहै ॥ तथा सर्वदा संतुष्टहै॥तथा मनकेनिग्रहवालाहै ॥ तथा दृढनिश्चयवालाहै ॥ तथा मैंपरमात्माबिषे अर्पणकऱ्याहैमनबुद्धिजिसनें॥ ऐसाजो मैंपरमेश्वरकाभक्तहै सो मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै इति ॥ ॥शंका ॥ ॥ इसगीतावचन विषे श्रीभगवान्नें कथनकऱ्येजे अद्वेष्टादिकगुणहैं ॥ तेगुणतौ साधकमुमुक्षुविषेभी 'शांतोदांतः' इत्यादिकश्रुतिप्रमाणतैं सिद्धहैं ॥ यातैं तासाधकमुमुक्षुतैं ताजीवन्मुक्तपुरुषविषे कोईविशेषता सिद्धहोवैनहीं ॥ ॥समाधान॥ ॥साधकमुमुक्षुविषे तेअद्वेष्टादिकगुण प्रयत्नसाध्य होवै हैं ॥ और जीवन्मुक्त

पुरुषविषे तेअद्वेष्टादिकगुण स्वभावसिद्ध होवै हैं ॥ यातैं तासाधकमुमुक्षतैं ताजीवन्मुक्तपुरुषविषे विशे
षता संभवैहै यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभी कहीहै तहांश्लोक ॥ 'उत्पन्नात्मैक्यबोधस्य ह्यद्वेष्टृत्वादयो
गुणाः। अयत्नतोभवंत्यस्य नतुसाधनरूपिणः' अर्थयह॥ अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकाबोध जिसपुरुषकूं उत्प
न्नभयाहै ॥ तिसविद्वानपुरुषकूं तेअद्वेष्टृत्वादिकगुण विनाहीप्रयत्नतैंहोवै हैं ॥ मुमुक्षुकीन्याई साधनरू
पहोतेनहीं इति ॥ किंवा यहउक्तजीवन्मुक्तपुरुषही श्रीभगवान्नें गीताकेचतुर्दशअध्यायविषे 'प्रका
शंचप्रवृत्तिंच मोहमेवचपांडव। नद्वेष्टिसंप्रवृत्तानि ननिवृत्तानिकांक्षति ॥ १ ॥ उदासीनवदासीनो गुणै
र्योनविचाल्यते। गुणावर्तंतइत्येवं योवतिष्ठतिनेंगते॥२॥ समदुःखसुखःस्वस्थः समलोष्टाश्मकांचनः। तुल्य
प्रियाप्रियोधीरस्तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः ॥ ३ ॥ मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्योमित्रारिपक्षयोः । सर्वारंभ
परित्यागी गुणातीतःसउच्यते ॥ ४ ॥ इनचारिश्लोकोंकरिकै गुणातीतनामकरिकैकथनकर्‍याहै ॥
इनगीताकेश्लोकोंकाअर्थ गीतागूढार्थदीपिकाविषे हमनें बिस्तारतैंनिरूपणकर्‍याहै ॥ सो तहांसेजानिले
णा इति ॥ किंवा यहउक्तजीवन्मुक्तपुरुषही महाभारतविषे श्रीव्यासभगवान्नें ब्राह्मणनामकरिकै क
थनकर्‍याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'निराशिषमनारंभं निर्नमस्कारमस्तुतिम्। अक्षीणंक्षीणकर्माणं तंदेवाब्राह्मणं
विदुः' अर्थयह ॥ जोपुरुष इष्टवस्तुकीप्रार्थनातैंरहितहै ॥ तथा सर्वआरंभतैंरहितहै ॥ तथा नमस्कार
तैंरहितहै ॥ तथा आपणीपरकीस्तुतिनिंदातैंरहितहै ॥ तथा विनाप्रयत्नतैंप्राप्तहुएवस्तुविषेभी दीनतातैं
रहितहै ॥ तथा निवृत्तहोइगएहैं सर्वलौकिकवैदिककर्म जिसके ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषकूं देवता ब्राह्मण
कहेहैं इति ॥ किंवा यहउक्तजीवन्मुक्तपुरुषही स्कंदपुराणविषे अतिवर्णाश्रमीनामकरिकै कथनकर्‍या

है ॥ तहांश्लोक ॥ 'यथास्वप्नप्रपंचोऽयं मयिमायाविजृंभितः। एवंजाग्रत्प्रपंचोपि मयिमायाविजृंभितः।
इतियोवेदवेदांतैः सोऽतिवर्णाश्रमीभवेत्' अर्थयह ॥ जैसे मैंप्रत्यक्‌आत्माविषे यहस्वप्नप्रपंच मायाकरि
कैकल्पितहै ॥ तैसे यहजाग्रतप्रपंचभी मेरेविषे मायाकरिकैकल्पितहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष वेदांतवचनों
करिके सर्वप्रपंचकल्पनाकेअधिष्ठानरूपआत्माकूं सक्षात्कारकरे है ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुष अतिवर्णाश्रमी
कह्याजावैहै इति ॥ इसप्रकार ताजीवन्मुक्तिविषे श्रुति स्मृति इतिहास पुराण इनचारोंके अनेकवचन
प्रमाणहैं ॥ यातैं ताविदेहमुक्तिकीन्यांई साजीवन्मुक्तिभी अवश्यअंगीकारकरीचाहिये इति ॥ अब
ताजीवन्मुक्तिकेसाधनोंका निरूपणकरेहैं ॥ तहां सापूर्वउक्त जीवन्मुक्ति तत्त्वज्ञान १ वासनाक्षय
२ मनोनाश ३ इनतीनोंकेअभ्यासतैं सिद्धहोवैहै ॥ यातैं तातीनों ताजीवन्मुक्तिकेसाधनहैं ॥ तहां तिनत
त्त्वज्ञानादिकतीनोंकी जा अतिप्रयत्नतैं पुनःपुनःआवृत्तिहै ॥ यहही तिनतीनोंका अभ्यासहै ॥ सोत
त्त्वज्ञानादिकतीनोंकाअभ्यासभी एककालविषेकऱ्याहुआही जीवन्मुक्तिकाहेतुहोवैहै ॥ जिसकारणतैं
अन्वयव्यतिरेककरिकै तिनतीनोंका परस्पर कार्यकारणभाव सिद्धहै ॥ ताकेविषे प्रथम तत्त्वज्ञान वास
नाक्षय इनदोनोंका परस्पर कार्यकारणभाव दिखावैहैं ॥ तहां यहदृश्यमानसर्वप्रपंच मिथ्याहै ॥ और
अद्वितीयआत्मा परमार्थिकहै ॥ यातैं यहआत्माही सर्वरूपहै ॥ ताआत्मातैंभिन्न कोईभीवस्तुनहीं है ॥
याप्रकारकेतत्त्वज्ञानकेउत्पन्नहुए विषयकेअभावतैं रागद्वेषादिरूपवासना क्षयहोइजावैहै ॥ और तात
त्त्वज्ञानकेअभावहुए विषयोंविषे सत्यपणा निवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं उत्तरोत्तर सोरागद्वेषादिरूपवासना
काप्रवाह बनारहैहै ॥ इसप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै तिसतत्त्वज्ञानकूं वासनाक्षयकेप्रति कारणता

सिद्धहोवै है ॥ इसप्रकार वासनाक्षयकूंभी तत्त्वज्ञानकेप्रति कारणताहै ॥ तहां विवेककरिकै तथादोषदर्शनकरिकै तथामैत्रीकरुणादिकविरोधीवासनाकरिकै जभी इसपुरुषकी रागद्वेषादिरूपवासना क्षयहोवैहै तभीही इसपुरुषकूं श्रुतिआचार्यकेप्रसादतैं निर्मलमनविषे सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ और तावासनाक्षयकेअभावहुए सो मन रागद्वेषादिकोंकरिकै दूषितहोवैहै ॥ तादूषितमनवालेपुरुषकूं शमदमादिकसाधनसंपत्तिकेअभावतैं श्रवणादिक संभवैंगेनहीं ॥ ताकरिकै सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैगानहीं ॥ इसप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै तावासनाक्षयकूं तातत्त्वज्ञानकेप्रति कारणता सिद्धहोवैहै इति ॥ अब तत्त्वज्ञान मनोनाश इनदोनोंका परस्पर कार्यकारणभाव दिखावै हैं ॥ तहां तत्त्वज्ञानकेहुए इसपुरुषकूं प्रपंचकेमिथ्यात्वकानिश्चयहोवै है ॥ तामिथ्यात्वनिश्चयकरिकै शुक्तिरजतकीन्यांई ताप्रपंचका बाधहोवैहै॥ ताबाधितप्रपंचविषे सो मन प्रवृत्तहोतानहीं ॥ और सत्यरूपकरिकैनिश्चयकऱ्याजोआत्माहै ॥ सो आत्मा तामनकाविषयहैनहीं॥यातैं ताआत्माविषेभी सोमन प्रवृत्तहोइसकतानहीं ॥ इसप्रकार अंतर्बाह्यप्रवृत्तितैंरहितहुआ सोमन काष्ठोंतैंरहितवह्निकीन्यांई आपही लयहोइजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'यथा निरिंधनोवह्निः स्वयोनावुपश्याम्यति । तद्वद्वृत्तिक्षयाच्चित्तं स्वयोनावुपशाम्यति' अर्थयह ॥ जैसे काष्ठादिरूपइंधनतैंरहितहुआ वह्नि आपणे सामान्यतेजरूपकारणविषे लयहोवैहै ॥ तैसे अंतर्बाह्यसर्ववृत्तियोंकेनाशतैंचित्तभी आपणे अधिष्ठानरूपकारणविषे लयहोवैहै ॥ यहही तामनकानाशहै इति ॥ और तातत्त्वज्ञानकेअभावहुए ताप्रपंचविषे सत्यपणा निवृत्तहोतानहीं ॥ तिसतैं पदार्थकारवृत्तियोंकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहुआ सोमन अत्यंतस्थूलहोवै है ॥ ऐसेस्थूलताकूंप्राप्तहुएमनका नाशहोतानहीं ॥ इस

प्रकारकेअन्वयव्यातिरेककारिकै तातत्त्वज्ञानकूं तामनोनाशकेप्रति कारणता सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकार ता
मनोनाशकूंभी तत्त्वज्ञानकेप्रति कारणताहै ॥ तहां मनकेनाशहुए सर्वद्वैतवृत्तियोंकीनिवृत्तिहोणेतैं
सर्वउपाधियोंतैंरहित इसपुरुषकूं श्रुतिआचार्यकेप्रसादतैं ब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ और तामनोनाशकेअ
भावहुए विक्षिप्तचित्तवालेपुरुषकूं सोब्रह्मसाक्षात्कार होतानहीं ॥ इसप्रकारकेअन्वयव्यतिरेककरिकै ताम
नोनाशकूं तत्त्वज्ञानकीकारणता सिद्धहोवैहै इति ॥ अब वासनाक्षय मनोनाश इनदोनोंका परस्पर कार्य
कारणभाव दिखावे हैं ॥ तहां वासनाक्षयकेअभावहुए रागद्वेषादिकोंकरिकै स्थूलभावकूंप्राप्तहुआ चित्त
विषयोंकेसन्मुखहोइकै तिसतिसविषयकेआकार परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताविषयाकारहुएमनका कदा
चित्भी नाशहोतानहीं ॥ और वासनाकेक्षयहुए वृत्तियोंकीउत्पत्तिहोतीनहीं ॥ जिसकारणतैं तेवासना
ही वृत्तियोंकेउत्पत्तिकाबीजहै ॥ बीजकेनाशहुए अंकुरकी उत्पत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं मनकानाशहोवैहै ॥
इसप्रकारकेअन्वयव्यतिरककरिकै तावासनाक्षयकूं मनोनाशकीकारणता सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकार ता
मनोनाशकूंभी तावासनाक्षयकेप्रति कारणताहै ॥ तहां मनकेनाशहुए कोईप्रकारकीभीवृत्ति उत्पन्नहो
तीनहीं ॥ यातैं सर्ववासना क्षयहोवे हैं ॥ और तामनोनाशकेअभावहुए प्रारब्धकर्मकेवशतैं विषयभोग
विषेप्रवृत्तिहुए चित्तविषे रागादिकअनेकवासना उत्पन्नहोवे हैं ॥ अर्थात् जैसे घृतादिकहविषकरिकै अग्नि
वृद्धिकूंप्राप्तहोवै है तैसे विषयभोगकरिकै तेरागादिकवासनाभी वृद्धिकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ इसप्रकारकेअ ॥१८९॥
न्वयव्यतिरेककरिकै तामनोनाशकूं वासनाक्षयकीकारणता सिद्धहोवैहै इति ॥ इसप्रकार तत्त्वज्ञान
वासनाक्षय मनोनाश इनतीनोंका परस्पर कार्यकारणभावहोणेतैं तिनतीनोंका एककालविषेही अभ्या

सकरणा उचितहै ॥ तिसअभ्यासतैं इसपुरुषकूं जीवन्मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठभगवान् नैंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'वासनाक्षयविज्ञानमनोनाशामहामते। समकालंचिराभ्यस्ताभवंतिफलदायिनः' अर्थयह ॥ हेमहामतिराम वासनाक्षय तत्त्वज्ञान मनोनाश यहतीनों एकट्टेही बहुतकालपर्यंत अध्यासकऱ्येहुए इसपुरुषकूं जीवन्मुक्तिरूपफलकीप्राप्तिकरेहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ विवेकादिक साधनचतुष्टयकीप्राप्तितैंअनंतर तत्त्वज्ञानकीप्राप्तिवासतै विविदिषासंन्यासकूंकरिकै श्रवणमनननिदिध्यासनकूंकरणेहारेपुरुषकूं सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ और तातत्त्वज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतरजीवन्मुक्तिकीप्राप्तिवासतैं विद्वत्संन्यासकूंकरिकै तत्त्वज्ञान वासनाक्षय मनोनाश इनतीनोंकेअभ्यासकूंकरणेहारेपुरुषकूं ताजीवन्मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याप्रकारकाअर्थ पूर्वकहणेतैंसिद्धहोवैहै ॥ तहां श्रवणमनादिकों तैंअनंतर तत्त्वमसिआदिकप्रमाणजन्य तत्त्वज्ञानका अभ्यास किसप्रकारकाहोवैहै॥तहां प्रथम ज्ञानवान्पुरुषकूं तिसतत्त्वज्ञानकीकर्त्तव्यताही संभवतीनहीं ॥ काहेतैं सोतत्त्वज्ञान महावाक्यरूपप्रमाणकाफलरूपहोणेतैं पूर्वसिद्धहीहै ॥ असिद्धवस्तुकीही कर्त्तव्यताहोवैहै ॥ सिद्धवस्तुकी कर्त्तव्यताहोतीनहीं ॥ और सोज्ञान विषयरूपवस्तुकेअधीनहोवैहै ॥ यातैं सोज्ञान करणेकूं वा नहींकरणेकूं वा अन्यथा करणेकूं शक्यहोतानहीं ॥ यातैं ताज्ञानकी कर्त्तव्यता संभवतीनहीं ॥ इसप्रकार ताज्ञानवान्पुरुषकूंज्ञानकेसाधनरूपश्रवणादिकोंकीभी कर्त्तव्यता युक्तनहीं है॥जिसकारणतै फलरूपज्ञानकेउत्पन्नहुए तिनश्रवणादिकोंकाअनुष्ठान व्यर्थही है ॥ यातैं उत्पन्नहुएतत्त्वज्ञानका अभ्यास निरूपणहोइसकतानहीं ॥ समाधान ॥ ॥ श्रवणादिकोंतैंउत्पन्नभयाजो 'अहंब्रह्मास्मि' याप्रकारका तत्त्वज्ञानहै ॥ तातत्त्वज्ञानका

यहही अभ्यास है ॥ जो कोईभीप्रकारकरिकै ताब्रह्मात्मतत्त्वका पुनःपुनः चिंतनकरणा ॥ अर्थात् वेदांतशास्त्रके श्रवणकरिकै अथवा कथनकरिकै अथवा पुस्तकके अवलोकनकरिकै अथवा पठनपाठनकरिकैं जो ताब्रह्मात्मतत्त्वका पुनःपुनः अनुसंधानहै ॥ यहही तातत्त्वज्ञानका अभ्यासजानणा ॥ यह तत्त्वज्ञानकेअभ्यासकास्वरूप अन्यग्रंथविषेभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'तच्चिंतनंतत्कथनमन्योन्यंतत्प्रबोधनम् । एतदेकपरत्वंचब्रह्माभ्यासंविदुर्बुद्धाः' अर्थयह ॥ जीवब्रह्मकाएकत्वरूपजोतत्त्वहै ॥ तिसतत्त्वका जो पुनःपुनःचिंतनहै ॥ तथा अधिकारीमुमुक्षुजनोंकेप्रति जो तिसतत्त्वका कथनहै ॥ तथा आपणेसमानविद्वानपुरुषोंकेसाथमिलिकै जो तिसतत्त्वका परस्परबोधनहै । इत्यादिक कोईप्रकारकरिकैभी जो एकब्रह्मात्मतत्त्वके चिंतनपरायणताहै ॥ तिसकूं विद्वान्पुरुष ब्रह्माभ्यास कहेहैं इति ॥ ॥ शंका ॥ कोईप्रकारकरिकैभी ब्रह्मात्मतत्त्वके चिंतनकूं जो ब्रह्माभ्यास कहोगे ॥ तौ अनधिकारीपुरुषोंकेप्रति ताब्रह्मात्मतत्त्वकेउपदेशकूंभी ब्रह्माभ्यासरूपता होणीचाहिये ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै अब प्रसंगतैं ताब्रह्मविद्याके अधिकारीका तथा अनधिकारीका निरूपणकरेहैं ॥ तहां जोपुरुष विवेकादिकचतुष्टयसाधनोंकरिकै संपन्नहोवैहै ॥ तथा नम्रतावालाहोवैहै ॥ तथा शिष्यभावकरिकैयुक्तहोवै है ॥ तथा गुरुईश्वरविषे भक्तिवालाहोवैहै ॥ तथा गुरुवेदांतवाक्योंविषे विश्वासवालाहोवैहै॥सोपुरुषही ब्रह्मविद्याका अधिकारीहोवैहै ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषकेप्रतिही तत्त्ववेत्तापुरुषनैं ब्रह्मविद्याका उपदेशकरणा ॥ और ऐसाअधिकारीपुरुषही ताब्रह्मविद्याकेश्रवणादिकोंतैं आत्मज्ञानकूं तथा मोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसीअर्थकूं 'तस्मैसविद्वानुपसन्नायप्राहेति सम्यक्प्रशांतचित्ताय शमान्विताय येनाक्षरंपुरुषंवेद सत्यंप्रोवाचतां

तत्त्वतोब्रह्मविद्यांतस्मैमृदितकषायायतमसःपारंदर्शयतिभगवान्सनत्कुमारः' इत्यादिकश्रुतियांकथनकरे हैं ॥ तथा इसीअर्थकूं 'यइदंपरमंगुह्यंमद्भक्तेष्वभिधास्यति। भक्तिंमयिपरांकृत्वामामेवैष्यत्यसंशयः॥१॥ नचतस्मान्मनुष्येषुकश्चिन्मेप्रियकृत्तमः।भवितानचमेतस्मादन्यःप्रियतरोभुवि'॥२॥ इत्यादिकगीताव चनभी कथनकरेहैं ॥ और जोपुरुष पूर्वउक्तअधिकारीकेलक्षणोंतैंरहितहै सोपुरुष अनधिकारी कह्या जावैहै ॥ ऐसेअनधिकारीपुरुषकेताँई तत्त्ववेत्तापुरुषनैं ब्रह्मविद्याकाउपदेश नहींकरणा॥ और ऐसाअ नधिकारीपुरुष ताब्रह्मविद्याकूंश्रवणकरताहुआभी आत्मज्ञानकूं तथामोक्षकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ यहअर्थ भी 'वेदांतेपरमंगुह्यंपुराकल्पेप्रचोदितम्। नाप्रशांतायदातव्यंनापुत्रायाशिष्यायवैपुनः' इत्यादिश्रुतिव चनोंकरिकै सिद्धहै ॥ तथा 'इदंतेनातपस्कायनाभक्तायकदाचन । नचाशुश्रूषवेवाच्यंनचमांयोऽभ्यसू यति' इत्यादिकगीतावचनकरिकैभी सिद्धहै ॥ तथा अन्यस्मृतिविषेभीकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'अशि ष्यायाविरक्ताय यत्किंचिदुपदिश्यते। तत्प्रयात्यपवित्रत्वं गोक्षीरंश्वदृतौयथा' अर्थयह ॥ जोपुरुष शिष्यभावतैंरहितहै ॥ तथा वैराग्यतैंरहितहै ॥ ऐसेअनधिकारी पुरुषकेताँई जोकोईउपदेशकरताहै सोउपदेश अपवित्रभावकूंही प्राप्तहोवैहै॥जैसे श्वानकीत्वचाविषेपायाहुआ गोकाक्षीर अपवित्रताकूंप्राप्त होवैहै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ अन्यस्मृतिविषेभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'नापृष्टःकस्यचिद्ब्रूयान्नचा न्यायेनपृच्छतः। जानन्नपिचमेधावीजडवल्लोकमाचरेत्' अर्थयह ॥ यहविद्वान्पुरुष प्रश्नकर्‍यैतैंविना कोईकूंभी उपदेशनहींकरे ॥ तथा अन्यायकरिकैपूछणेहारेपुरुषकेप्रतिभी उपदेशनहींकरे॥किंतुसर्वअर्थ कूंजानताहुआभी यहविद्वान्पुरुष लोकविषे जडकीन्यांई विचरेहै इति ॥ यातैं अधिकारीपुरुषोंकेप्रति

जोब्रह्मात्मतत्त्वकाउपदेशहै ॥ सोउपदेशहो ब्रह्माभ्यास कह्याजावैहै ॥ अनधिकारीपुरुषोंकेप्रतिब्रह्मा
त्मतत्त्वकाउपदेश ब्रह्माभ्यास कह्याजावैनहीं यहसिद्धभया इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तत्त्वज्ञानतैंपूर्व
भी मुमुक्षुजनकूं वासनाक्षयकाअभ्यास तथामनोनाशकाअभ्यास अपेक्षितही है ॥ काहेतैं जिसपुरुष
काचित्त विषयोंविषेआसक्तहै ॥ तथा शमदमादिकोंतैंरहितहैं ॥ तथा एकाग्रतातैंरहितहै ॥ तिसपुरुष
कूं सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोतानहीं ॥ यातैं तत्त्वज्ञानतैंपूर्वभी सोवासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास अवश्य
कऱ्याचाहिये॥जभी आत्मज्ञानतैंपूर्वहीं सोवासनाक्षयमनोनाश सिद्धभया॥ तभीताआत्मज्ञानतैंपश्चा
त् जीवन्मुक्तिवासतैं तावासनाक्षयमनोनाशकेअभ्यासकरणेका कुछप्रयोजन नहींहै ॥ तापूर्वसिद्ध
वासनाक्षयमनोनाशकेअभ्यासतैंही इसतत्त्ववेत्तापुरुषकूंजीवन्मुक्तिकीप्राप्तिहोवैगी ॥ ॥समाधान ॥
यद्यपि तत्त्वज्ञानतैंपूर्वभी तातत्त्वज्ञानकीप्राप्तिवासतै सोवासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास अपेक्षितहै ॥
तथापि तत्त्वज्ञानतैंपूर्व विविदिषासंन्यासीकूं सोवासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यासतौ गौणहोवैहै ॥ और
श्रवणमननादिकोंकाअभ्यास प्रधानहोवैहै॥काहेतैं श्रवण मनन निदिध्यासन यहतीनोंतौ तत्त्वमसिआ
दिकवेदांतवाक्योंकाविचाररूपहोणेतैं आत्मज्ञानकेप्रति अंतरंगसाधनहै॥और वासनाक्षयमनोनाशतौ
अंतःकरणकाशोधकहोणेतैं तिनश्रवणादिकोंकेसहकारीहैं ॥ यातैं तत्त्वज्ञानतैंपूर्व यथाकथंचित् वासना
क्षयमनोनाशकाअभ्यासकरिकै निरंतर श्रवणमननादिकोंकूंकरणेहारे विविदिषासंन्यासीकूं आत्मज्ञान ॥१९१॥
उत्पन्नहोवैहै ॥ और विद्वत्संन्यासीकूंतौ सोतत्त्वज्ञानकाअभ्यास गौणहोवैहै ॥ और वासनाक्षयमनोना
शकाअभ्यास प्रधानहोवैहै ॥ काहेतैं तत्त्वज्ञानकीउत्पत्तितैंपूर्वही वेदांतश्रवणादिकोंकेअभ्यासका

प्रयोजन होवैहै ॥तत्त्वज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतर तिनश्रवणादिकोंकेअभ्यासका कोईप्रयोजनहोतानहीं॥
किंतु प्रारब्धकर्मनें प्राप्तकर्येविषयभोगकालविषैही वासनाकेअभिभवकरणेवासतै किंचित्मात्र श्रवणा
दिकोंकाअभ्यास अपेक्षितहोवैहै ॥ यातैं विद्वत्संन्यासीकूं सोतत्त्वज्ञानकाअभ्यास गौणहोवैहै ॥ और
ताविद्वत्संन्यासीनैं तत्त्वज्ञानतैंपूर्व वासनाक्षयमनोनाशका दृढअभ्यास कर्यानहीं ॥ यातैं ताके चित्त
कीविश्रांति होतीनहीं ॥ और चित्तकीविश्रांतितैंविना दृष्टदुःखकीनिवृत्ति होतीनहीं ॥ यातैं ताचित्त
कीविश्रांतिवासतै तिसविद्वत्संन्यासीकूं आत्मज्ञानतैंअनंतर सोवासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास अवश्य
अपेक्षितहै ॥ यातैं ताविद्वत्संन्यासीकूं सोवासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास प्रधानहै ॥ ताअभ्यासतैंहीं
तिसविद्वत्संन्यासीकूं जीवन्मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इति ॥ ॥शंका॥ ॥चतुष्टयसाधनसंपन्नअधिका
रीपुरुषकूं श्रवणमननादिकोंकरिकै असंभावनाविपरीतभावनारूपप्रतिबंधकेनिवृत्तहुए तत्त्वमसिआदि
कमहावाक्यतैं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका अपरोक्षज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ ताअपरोक्षज्ञानतैं अज्ञानकृतआ
वरणकीनिवृत्तिहोइकै ब्रह्मानंदरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और तापरमपुरुषार्थकीप्राप्तितेपरे दूसरा
कोईकर्त्तव्य बाकीरहतानहीं ॥ और 'तस्यकार्यंनविद्यते' इत्यादिक श्रुतिस्मृतिवचनभी ताज्ञानवा
नूकूं कर्त्तव्यताका निषेधकरे हैं ॥ और जोऐसाकहो ॥ चित्तकीविश्रांतिवासतै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूंभी
वासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास बाकीकर्त्तव्यहै ॥ सोयहकहणाभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं महावाक्य
जन्यअपरोक्षज्ञानकीविषयभूत जो नित्यनिरतिशयब्रह्मानंदहै ॥ ताब्रह्मानंदविषेसंलग्नहुएमनकी अन्य
तुच्छविषयोंविषे प्रवृत्ति संभवतीनहीं ॥ यातैं ताज्ञानवानूकूं साचित्तकीविश्रांति स्वभावसिद्धही है॥ ता

त्पर्ययह ॥ जैसे सार्वभौमराज्यकेआनंदकूंअनुभवकरणेहारा चक्रवर्त्तीराजा एकग्रामकेअधिपतिकेतुच्छ
सुखकी इच्छाकरतानहीं ॥ तैसे अखंडएकरसब्रह्मानंदकूंअनुभवकरणेहारा ज्ञानवान्पुरुषकाचित्ततुच्छ
विषयसुखकी इच्छाकरैगानहीं ॥ यातैं ज्ञानवान्पुरुषकूं साचित्तकीविश्रांति स्वभावसिद्धही है ॥ ताचि
त्तविश्रांतिकेवास्तै ताज्ञानवान्कूं किंचितभी कर्त्तव्यनहीं है ॥ यातैं तत्त्वज्ञानतैंअनंतर वासनाक्षयमनो
नाशकेअभ्यासकीकर्त्तव्यताका नियमकरणा व्यर्थ है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ वेदांतशास्त्रके दोप्रकार
केअधिकारी होवैहैं ॥ एकतौ मुख्यअधिकारी होवैहैं ॥दूसरे अमुख्यअधिकारी होवैहैं ॥ तहां जेपुरुषस
गुणब्रह्मकेसाक्षात्कारपर्यंत उपासनाकूंकरिकै परमेश्वरकेप्रसादतैं विषयोंविषेदोषदृष्टिकरिकै विवेकवैरा
ग्यादिकसाधनसंपन्नहुए श्रवणादिकोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ तेपुरुषतौ मुख्यअधिकारी कह्येजावैहै ॥ ऐसे
मुख्यअधिकारियोंकूंतौ एकबार श्रवणादिकोंकरिकै जीवन्मुक्तिविषेपर्यवसानवाला तत्त्वज्ञानउत्पन्नहो
वैहै ॥ अर्थात् तिनमुख्यअधिकारियोंकूं तत्त्वज्ञानकेसमकालही जीवन्मुक्तिहोवैहै ॥ जिसकारणतैं तिन
मुख्यअधिकारियोंकूं तातत्त्वज्ञानतैंपूर्वही ताउपासनाकरिकै साचित्तकीएकाग्रतारूप चित्तविश्रांति
सिद्धहै ॥ ऐसेकृतोपास्तिमुख्यअधिकारियोंकूं तत्त्वज्ञानतैंअनंतर सोवासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यासअ
पेक्षितनहींहै ॥ और पूर्वउक्तश्रुतिस्मृतिवचनभी ऐसेमुख्यअधिकारीकूंही तत्त्वज्ञानतैंअनंतर कर्त्तव्यता
का निषेध करेहैं ॥ और तासगुणब्रह्मकीउपासनातैंरहित जेइदानींकालकेपुरुष विवेकादिकसाधनसंप ॥१९२॥
न्नहोइकै ब्रह्मजिज्ञासातैं श्रवणादिकोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ तेअकृतोपास्तिपुरुष अमुख्यअधिकारी कह्येजा
वैहैं ॥ ऐसेअमुख्यअधिकारियोंकूं तिनश्रवणादिकोंकरिकै सोतत्त्वसाक्षात्कारतौ अवश्य उत्पन्नहोवैहै

परंतु ताज्ञानतैंपूर्व तिनोंनैं वासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास भलीप्रकारतैंकऱ्यानहीं ॥ यातैं तिनपुरुषों केचित्तकीविश्रांति होतीनहीं ॥ और तिनअमुख्यअधिकारीपुरुषोंकूं श्रवणादिकोंतैंउत्पन्नभया जोब्र ह्मसाक्षात्कारहै।सोसाक्षात्कार महावाक्यरूपप्रमाणकरिकैजन्यहोणेतैं तथाब्रह्मात्मरूपविषयकेअबाधतैं प्रमारूपभीहै॥ तथा अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे योग्यभीहै ॥ परंतु वायुवालेदेशविषेस्थितदीपकीन्यांई प्रारब्धकर्मसंपादितभोगवासनाकरिकै कंपायमानहोणेतैं सोसाक्षात्कार कदाचित् असंभावनाविपरीत भावनारूपप्रतिबंधकेसंभवतैं अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे समर्थ नहींहोवैहै यातैं तिनअकृतोपास्तिअ मुख्यअधिकारियोंकूं तासंभावितप्रतिबंधकीनिवृत्तिकरणे वासतै तत्त्वज्ञानतैंअनंतर सोवासनाक्षयमनो नाशकाअभ्यास अवश्य करणेयोग्यहै ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीव्यासभगवान्नैं ब्रह्मसूत्रोंविषे 'आवृत्तिरसकृदुपदेशात्।आप्रायणात्तत्रापिहिदृष्टं'इससूत्रकरिकै अमुख्यअधिकारियोंकेप्रति अभ्यासकी आवृत्ति कथनकरी है ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥ पूर्वउक्त मुख्यअधिकारियोंकूं तत्त्वज्ञानतैंअनंतर वासना क्षयमनोनाशकेअभ्यासकी नहींअपेक्षाहुएभी तिनअमुख्यअधिकारियोंकूं तत्त्वज्ञानतैंअनंतर चित्तकी विश्रांतिवासतै सोवासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास अवश्य अपेक्षितहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ वासना केक्षयकरणेविषे इसपुरुषकी तभी प्रवृत्तिसंभवै॥ जभी इसपुरुषकूं तावासनाकेस्वरूपकाज्ञानहोवै॥तावा सनाकेज्ञानतैंविना तावासनाकेनिवृत्तकरणेविषे इसपुरुषकीप्रवृत्ति संभवतीनहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तावासनाका साधारणलक्षण तथातावासनाकाविभाग तथातावासनाकाफल तथातिसातिसवासनाका विशेषलक्षण श्रीवसिष्ठभगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ सोसर्व तावसिष्ठभगवान्केवचनोंकरिकै इहांदिखावै

हैं ताकेविषे प्रथम तावासनाका साधारणलक्षण कहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ 'दृढभावनयात्यक्तपूर्वापर विचारणम् । यदादानंपदार्थस्य वासनासाप्रकीर्त्तिता' अर्थयह ॥जिसदृढभावनाकारिकै पूर्वअपरकेविचा रतैंविनाही पदार्थोंकाग्रहणहोवैहै ॥ अर्थात् हमारीभाषा सर्वभाषावोंतैं समीचीनहै ॥ तथा हमारादेश सर्वदेशोंतैंसमीचीनहै ॥ तथा हमाराकुल सर्वकुलोंतैंउत्तमहै ॥ तथा हमारेपुत्रादिक सर्वतैंसमीचीनहैं ॥ इत्यादिकअभिनिवेश जिसभावनाकारिकैहोवैहै ॥ साभावना विद्वानपुरुषोंनैं वासना कहीहै इति ॥ अब तावासनाका विभाग तथाफल वर्णनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ 'वासनाद्विविधाप्रोक्ता शुद्धाचमलि नातथा । मलिनाजन्मनोहेतुः शुद्धाजन्मविनाशिनी' अर्थयह ॥ साउक्तवासना दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ शुद्धवासना होवैहै ॥ और दूसरी मलिनवासना होवैहै ॥ तहां मलिनवासनातौ इसपुरुषके जन्मकाकारणहोवैहै ॥ और शुद्धवासना जन्मकेनिवृत्तिकाकारणहोवैहै इति॥ अब तामलिनवासनाका स्वरूपलक्षण कहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ 'अज्ञानसुघनाकारघनाहंकारशालिनी । पुनर्जन्मकरीप्रोक्ता मलि नावासनाबुधैः' अर्थयह ॥ ब्रह्मकेस्वरूपकाआवरक जोअज्ञानहै ॥ताअज्ञानकारिकै घनीभूतहुआहैआ कार जिसका ऐसाजो घनअहंकारहै ॥ ताअहंकारसहितजावासनाहै ॥ सावासना विद्वान्पुरुषोंने मलिनवासना कहीहै ॥ साममलिनवासनाही इसपुरुषकूं पुनः जन्मकीप्राप्ति करेहै॥तहां भ्रांतिज्ञानकीजा परंपराहै यहही ताअहंकारका घनाकारहै ॥ सोअहंकारका घनाकारपणा श्रीभगवान्नैं गीताकेषोड शअध्यायविषेआसुरसंपत्केनिरूपणप्रसंगविषे 'इदमद्यमयालब्धमिमंप्राप्स्येमनोरथं। इदमस्तीदमपिमे भविष्यतिपुनर्धनं॥१॥असौमयाहतःशत्रुर्हनिष्येचापरानपि।ईश्वरोहमहंभोगीसिद्धोहंबलवान्सुखी ॥२॥

आढ्योभिजनवानस्मिकोन्योस्तिसदृशोमया। यक्ष्येदास्यामिमोदिष्यइत्यज्ञानविमोहिताः'॥३॥ इनती
नश्लोकोंकरिकै कथनकऱ्याहै इति ॥ अब शुद्धवासनाका स्वरूपलक्षण वर्णनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥
'पुनर्जन्मांकुरंत्यक्त्वास्थितंसंभ्रष्टबीजवत्। देहार्थंध्रियतेज्ञातज्ञेयाशुद्धेतिचोच्यते' अर्थयह ॥ जावासना
जन्मकेमूलकूंनाशकरिकै दग्धबीजकीन्यांई देहकीस्थितिवासतै स्थितहोवैहै॥तथा जिसवासनाकरिकै
अखंडएकरसआनंदवस्तु जान्याजावैहै ॥ सावासना शुद्धवासना कहीजावैहै इति ॥ अब पूर्वउक्तमलि
नवासनाकाविभाग वर्णनकरेहैं ॥ तहां जन्मकीप्राप्तिकरणेहारी सामलिनवासना यद्यपि अनंतहोवैहै ॥
तथापि स्मृतिविषे सामलिनवासना संक्षेपतैं तीनप्रकारकी कथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ 'लोकवासन
याजंतोर्देहवासनयापिच। शास्त्रवासनयाज्ञानंयथावन्नैवजायते' अर्थयह ॥ सापूर्वउक्तमलिनवासना
लोकवासना १ शास्त्रवासना २ देहवासना ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तिनतीनोंवासनावों
विषेकोईभीवासना जिसपुरुषकूंहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं तावासनारूपप्रतिबंधकेवशतैं आत्माकायथार्थज्ञा
न उत्पन्नहोतानहीं इति ॥ अब लोकवासनाका निरूपणकरेहैं ॥ तहां जिसआचरणकेधारणकरणेतैं
सर्वलोक हमारी स्तुतिकरैं कोईभीलोक हमारीनिंदा नहींकरै ॥ ऐसेआचरणकूं मैं धारणकरूं ॥ याप्र
कारका जोअभिनिवेशहै ताकानाम लोकवासनाहै ॥ सालोकवासना शतकोटिजन्मोकरिकैभी संपा
दनकरणेकूंअशक्यहै॥काहेतैं सर्वदूषणोंतैंरहित तथासर्वशुभगुणोंकरिकैसंपन्न तथानमस्कारस्मरणादि
कोंकरिकै सर्वपुरुषार्थोंकीप्राप्तिकरणेहारे जेरामकृष्णादिकईश्वरहैं ॥ तिनोंकीभी सर्वलोक स्तुतिकरतेन
हीं ॥ किंतु कैएकश्रेष्ठपुरुषतौ स्तुतिकरेहैं ॥ और कैएकनीचपुरुष निंदाभीकरेहैं ॥ जभीरामकृष्णादि

कईश्वरोंकीभी सर्वलोक स्तुति नहींकरेहैं ॥ तभी अस्मदादिकजीवोंकी सर्वलोक स्तुति कैसेकरेंगे किंतुनहींकरेंगे॥यातें सालोकवासना संपादनकरणेकूंअशक्यहै॥यातें इसअधिकारीपुरुषने तालोकवासनाकापरित्यागकरिकै आपणेहितकूंही संपादनकरणा ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभीकहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ 'विद्यतेनखलुकश्चिदुपायःसर्वलोकपरितोषकरोयः।सर्वथास्वहितमाचरणीयं किंकरिष्यतिजनो बहुजल्पः' अर्थयह ॥ जिसउपायकरिकै सर्वलोक स्तुतिकरैं ॥ ऐसाकोईउपाय लोकशास्त्रविषे हैनहीं ॥ यातें इसअधिकारीपुरुषनें तालोकवासनाकापरित्यागकरिकै सर्वप्रकारतें आपणेहितकूंसंपादनकरणा ॥ लोकोंकीनिंदास्तुतिकी तरफ नहींदेखणा ॥ जिसकारणतें तेलोक निंदास्तुतिकरिकै कोईहानिलाभ करिसकतेनहीं इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ भर्तृहरिनेंभी कह्याहै॥तहांश्लोक॥निंदन्तुनीतिनिपुणायदिवा स्तुवंतु लक्ष्मीःसमाविशतुगच्छतुवायथेष्टं ।अद्यैववामरणमस्तुयुगांतरेवान्यायात्पथःप्रविचलंतिपदंन धीराः' अर्थयह ॥ नीतिविषेकुशलपुरुष निंदाकरो अथवा स्तुतिकरो ॥ और लक्ष्मीप्राप्तहोवो अथवा चलीजावो॥और आजदिनविषे मरणहोवो अथवा युगांतरविषेहोवो॥परंतु धैर्यवानविवेकीपुरुष शास्त्रविहितमार्गतें एकपदमात्रभी चलायमानहोतेनहीं ॥ अर्थात् लोककृतनिंदास्तुतिआदिकोंकीउपेक्षाकरिकै विवेकीपुरुष आपणेहितकूंही संपादनकरेहैं इति ॥ किंवा तालोकवासनाविषेअभिनिवेशवालेपुरुषकूं आत्मज्ञान नहींउत्पन्नहोवैहै यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै॥तहांश्लोक॥ 'नलोकचित्तग्रहणेरतस्यन भोजनाच्छादनतत्परस्य।नशब्दशास्त्राभिरतस्यमोक्षो नचातिरम्यावसथप्रियस्य' अर्थयह॥जोपुरुष सर्व प्रकारतें लोकोंकेचित्तरंजनकरणेविषे प्रीतिवालाहै ॥ तथा जोपुरुष भोजनआच्छादनविषेही तत्परहै ॥

तथा जोपुरुष व्याकरणादिकअनात्मशास्त्रविषे अभिनिवेशवालाहै ॥ तथा जोपुरुष अत्यंतरमणीकगृहोंविषे प्रीतिवालाहै ऐसेपुरुषकूं मोक्ष प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं मोक्षकीइच्छावालेपुरुषनैं सालोकवासना सर्वप्रकारतैं परित्यागकरणी इति ॥ अब शास्त्रवासनाका निरूपणकरेहैं ॥ तहां शास्त्रकेतात्पर्यकूं नग्रहणकरिकै ताशास्त्रकेअध्ययनादिकोंकी जावासनाहै ताकानाम शास्त्रवासनाहै ॥ साशास्त्रवासनाभी पाठवासना १ अर्थवासना २ अनुष्ठानवासना ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां समग्रआयुषपर्यंत वेदशास्त्रोंकेपाठकाही अध्ययनकरतेरहणा ताशास्त्रकेतात्पर्यकूंनहींजानणा याकानाम पाठवासनाहै ॥ सापाठवासना भरद्वाजकूं होतीभइ है ॥ तहां भरद्वाजऋषि आयुषकेतीनभागपर्यंत अर्थात् ७५ पंचसप्ततिवर्षपर्यंत वेदोंकेपाठकूंअध्ययनकरताभया ॥ तथा अतिजीर्णवृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहोताभया ॥ ऐसेभरद्वाजकूंदेखिकै देवराजइंद्र ताभरद्वाजकेसमीपआइकै कहताभया ॥ हेभरद्वाज जो कदाचित् मैं तुम्हारेतांई आयुषका चतुर्थभाग देवो तौ तिसचतुर्थभागआयुष्यकरिकै तू क्यासंपादनकरैगा ॥ ऐसेइंद्रकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोभरद्वाजऋषि ताचतुर्थआयुष्यभागविषेभी मैं वेदोंकेपाठकाहीअध्ययनकरूंगा याप्रकारकावचन कहताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोइंद्र ताभरद्वाजकी पाठवासनाकेनिवृत्तकरणेवासतै ताभरद्वाजकेप्रति वेदोंकूंपर्वतरूपकरिकै दिखावताभया ॥ तिनवेदरूपपर्वतोंतैं एकएकमुष्टिलेकै ताभरद्वाजकेप्रति कहताभया ॥ हेभरद्वाज अबपर्यंत तुमनैं यहमुष्टिमात्रवेद अध्ययनकरेहैं यहपर्वतरूपवेद बाकी अध्ययनकरणेकूंरहतेहैं ॥ ऐसेइंद्रकेवचनकूंश्रवणकरिकै सोभरद्वाजतापाठवासनातैं निवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोइंद्र ताभरद्वाजकेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेश करता

भया॥ यहगाथा तैत्तिरीयकश्रुतिविषे भरद्वाजोपाख्यानविषे प्रसिद्धहै इति ॥ और वेदशास्त्रोंकेतात्पर्य कूंनजानिकरिकै समग्रआयुषपर्यंत तिनवेदशास्त्रोंकेअर्थका अध्ययनकरीजाणा याकानाम अर्थवासनाहै ॥ साअर्थवासनाभी तापाठवासनाकीन्यांई दुःसंपाद्यहोणेतैं मलिनवासनाही है याकारणतैंही विद्वान्पुरुषोंनैं यहकह्याहै ॥ तहांश्लोक 'अनंतशास्त्रंबहुवेदितव्यमल्पश्चकालोबहवश्चविघ्नाः । यत्सारभूतंतदुपासितव्यं हंसोयथाक्षीरमिवांबुमिश्रम् ॥१॥ अधीत्यचतुरोवेदान् धर्मशास्त्राण्यनेकशः। यस्तुब्रह्मनजानाति दर्वीपाकरसंयथा ॥ २ ॥ 'अर्थयह ॥ शास्त्र अनंतहैं ॥ तथा शास्त्रप्रतिपादितपदार्थभी अनंतहैं ॥ तेपदार्थ अल्पकालकरिकै जानेजातेनहीं॥ और इसपुरुषकीआयुष अत्यंतअल्पहै ॥ ताअल्पआयुषाविषेभी रोगादिकअनेकाविघ्न प्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसेविघ्नयुक्तअल्पआयुषकरिकै तिनसर्वशास्त्रोंकाअर्थ जानणेकूंअशक्यहै ॥ यातैं जैसे हंसपक्षी जलमिश्रितक्षीरतैं क्षीरमात्रकूंही ग्रहणकरेहै ॥ तैसे इसअधिकारीपुरुषनेंभी सर्वशास्त्रोंकासारभूत जोब्रह्मात्मरूपअर्थ है सोईही ग्रहणकरणेयोग्यहै इति ॥ किंवा जोपुरुष चारिवेदोंकेअर्थकूं अध्ययनकरैहै ॥ तथा अनेकधर्मशास्त्रोंकेअर्थकूं अध्ययनकरैहै॥ परंतु अहंब्रह्मास्मि याप्रकारतैं ब्रह्मकूंजानतानहीं ॥ सोपुरुष दर्वीकेतुल्यहै ॥ अर्थात् जैसे दर्वी अनेकप्रकारकेव्यंजनोंविषेफिरैहै ॥ परंतु तिनव्यंजनोंकेरसकूंजानतीनहीं॥ कडछीकानाम दर्वी है इति ॥ और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनें विधानकऱ्येजेकर्म हैं ॥ तिनकर्मोंकेअनुष्ठानविषेही समग्रआयुष व्यतीतकरणी याकानाम अनुष्ठानवासनाहै ॥ साअनुष्ठानवासना निदाघकूं होतीभईहै ॥ तहां ऋभुनामाऋषिनें पुनःपुनःउपदेश कऱ्याहुआभी सोनिदाघ ताअनुष्ठानवासनाकरिकै ब्रह्मात्मतत्वकूं नहींजानताभया ॥ तीसरेवार ताऋ

मुकेउपदेशतैं अतिक्लेशतैं सर्वअनुष्ठानकापरित्यागकरिकै ब्रह्मात्मतत्वकूं साक्षात्कार करताभया ॥ यह वार्त्ता विष्णुपुराणविषे विस्तारतैंकथनकरीहै ॥ यातैं सापूर्वउक्त तीनोंप्रकारकीशास्त्रवासना आत्मज्ञान का प्रतिबंधककही है इति ॥ अब देहवासनाका निरूपणकरहैं तहां इसभौतिकस्थूलशरीराविषे जोअ भिनिवेशहै ताकानाम देहवासनाहै ॥ सादेहवासनाभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ देहविषयक होवैहै दूसरी देहसंबंधीगुणविषयक होवैहै ॥ तहां 'मनुष्योऽहं' ब्राह्मणोऽहं याप्रकारकीजावासनाहै सा देह विषयकवासना कहीजावैहै ॥ और दूसरी देहसंबंधीवासनाभी शास्त्रीय १ लौकिक २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां प्रथम शास्त्रीयवासनाभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ गुणाधानप्रयुक्त होवैहै ॥ दूसरी दोषनिवृत्तयुक्त होवैहै ॥ तहां शास्त्रविहित गंगास्नानादिकोंकरिकै जो देहविषे सद्गुणों केधारणकीवासनाहै ॥ सावासना गुणाधानप्रयुक्त कहीजावैहै ॥ और शौचआचमनादिकोंकरिकै जो देहतैं दोषोंकेनिवृत्तकरणेकीवासनाहै ॥सावासना दोषनिवृत्तिप्रयुक्त कहीजावैहै इसप्रकार सालौकि कवासनाभी दोप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां तैलपानमरिचभक्षणादिकोंकरिकै जो देहविषे सौंदर्यादिकगुणों केधारणकरणेकीवासनाहै सा प्रथमहै ॥ और मलनिवर्त्तकऔषधजलादिकोंकरिकै जो देहतैं मलके निवृत्तकरणेकीवासनाहै सा दूसरीहै ॥ यहसर्वदेहवासना ज्ञानकाप्रतिबंधकहोणेतैं तथाजन्मांतरका हेतुहोणेतैं मलिनवासनाही है इति ॥ किंवा लोकवासना शास्त्रवासना देहवासना इनउक्ततीनवासना वोंतैंअन्यभी ज्ञानकेप्रतिबंधकमलिनवासना गीताकेषोडशअध्यायविषे श्रीभगवान्नें 'दंभोदर्पोऽभिमा नश्चक्रोधःपारुष्यमेवच' इत्यादिकवचनकरिकै दंभदर्पादिआसुरसंपतरूपकरिकै कथनकरीहै॥इसप्रकार

स्त्रीपुत्रादिकविषयोंकी जेअभिलाषाहै तेभी मलिनवासनाही हैं ॥ तेसर्वमलिनवासना ज्ञानकाप्रतिबंध कहोणेतैं मुमुक्षुजनोंनें निवृत्तकरणेयोग्यहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तिनमलिनवासनावोंकीनिवृत्ति किस उपायतैंहोवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तेमलिनवासना पूर्वउक्तरीतितैं अनेकप्रकारयाहैं ॥ यातैं वसिष्ठादिकमुनियोंनें तिनवासनावोंके निवृत्तिकेउपायभी अनेकप्रकारके कहेहैं ॥ तहां नित्यअनित्य वस्तुकाविवेक तथाविषयोंविषेदोषोंकादर्शन तथामहात्माजनोंकासत्संग तथाविषयीजनोंकेसंगकाप रित्याग तथामैत्रीकरुणादिकविरोधीवासनाकीउत्पत्ति इत्यादिकउपायोंकारिकै तिनमलिनवासनावोंकी निवृत्ति होवैहै ॥ यातैं तिनविवेकादिकउपायोंकारिकै आपणेअंतःकरणविषे जो तिनमलिनवासनावों कीउत्पत्ति नहींहोणेदेणी यहही तावासनाक्षयकाअभ्यासहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'दृश्यासंभवबोधेन रागद्वे षादितानवे। रतिर्नवोदितायातु बोधाभ्यासंविदुःपरम' अर्थयह॥यहदृश्यमानसर्वप्रपंच अधिष्ठानआत्मा तैंभिन्नरूपकारिकै वास्तवतैंनहीं है ॥ याप्रकारका जो दृश्यप्रपंचकेअसंभवकाबोधहै॥ताबोधकारिकै प्रपं चरूपविषयकेअभावतैं रागद्वेषादिरूपवासनाकेनिवृत्तहुए इसपुरुषकी आपणेस्वरूपानंदकेअनुभवविषे जाइढप्रीति उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसकूं विद्वान्पुरुष वासनाक्षयकाअभ्यास कहेहैं इति ॥ अब अन्यप्र कारतैं तिसमलिनवासनाके निवृत्तिकेउपायकूंप्रतिपादनकरणेहारेवाक्यकूंकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ 'असं गव्यवहारित्वाद्भवभावनवर्ज्जनात्। शरीरनाशदर्शित्वाद्वासनानप्रवर्त्तते' अर्थयह॥ मैंअसंगहूंयाप्रकारके वृत्तियोंकाप्रवाहरूप जोव्यवहारहै ॥ ताव्यवहारकेनिरंतरकरणेतैं इसपुरुषविषे दूसरीवासना प्रवृत्त होतीनहीं ॥ तथा प्रपंचकेस्मरणका जोपरित्यागहै तिसतैंभी दूसरीवासना प्रवृत्तहोतीनहीं ॥ तथा

निरंतर आपणेशरीरकेमरणकाजोदर्शनहै तिसतैंभी दूसरीरागादिरूपवासना प्रवृत्तहोतीनहीं इति ॥ तहां आपणेमरणकेदर्शनतैं रागादिरूपवासना नहींहोवैहै यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभीकहीहै॥तहांश्लोक॥ 'मस्तकस्थायिनंमृत्युं यदिपश्येदयंजनः। आहारोपिनरोचेत किमुतान्याविभूतयः' अर्थयह ॥ आपणेमस्तकऊपरिस्थितजोमृत्युहै ॥ तिसमृत्युकूं जोकदाचित् यहपुरुष देखे तौ इसपुरुषकूं भोजन भी प्रियनहींलागेगा ॥ तौ अन्यविभूतियां कैसेंप्रियलागेगी किंतु नहींलागेगी इति ॥ अब संसार विषेदोषकाप्रतिपादकवचन कहेहैं॥श्लोक॥'दुःखंजन्मजरादुःखंदुःखंमृत्युःपुनःपुनः॥ संसारमंडलंदुःखं पच्यंतेयत्रजंतवः' अर्थयह ॥ जन्मभी दुःखरूपहै ॥ तथा जराभी दुःखरूपहै ॥तथा पुनःपुनःमरणभी दुःखरूपहै॥ इहांबहुतक्याकहैं॥ यहसर्वसंसारमंडल दुःखरूपही है ॥जिससंसारमंडलविषे यहसर्वअज्ञानीजीव पुनःपुनः जन्ममरणादिकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥इसप्रकार आत्मातैंभिन्न सर्वजगत्कूं दुःखरूपकरिकै चिंतनकरणेहारेपुरुषकी रागद्वेषादिरूप सर्वमलिनवासना निवृत्तहोवै है इति॥ किंवाविषयलंपटपुरुषों केसंगका जोपरित्यागहै सोभी मलिनवासनाकीनिवृत्तिद्वारा इसपुरुषके मोक्षकासाधन होवैहै ॥ यहवार्त्ता विष्णुपुराणविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'निःसंगतामुक्तिपदंयतीनां संगादशेषाः प्रभवंतिदोषाः।आरूढयोगोपिनिपात्यतेऽधः संगेनयोगीकिमुताल्पसिद्धिः' अर्थयह॥विषयासक्तपुरुषों केसंगकापरित्यागरूप जा निःसंगताहै ॥ सानिःसंगताही संन्यासियोंकूं मुक्तिकेप्राप्तिका मार्ग है ॥ जिसकारणतैं तिनविषयासक्तपुरुषोंकेसंगतैं इसपुरुषविषे रागद्वेषमोहादिकसर्वदोष प्राप्तहोवै है ॥ तिन मलिनवासनारूपदोषोंनैं योगारूढपुरुषभी अधःपतनकरीताहै ॥ तौ योगारूढहोणेकीइच्छावालापुरुष

क्यूंनहीं अधःपतनकरीयेगा इति ॥ किंवा इसतत्त्ववेत्तापुरुषनें सर्वप्रकारतें विषयलंपटपुरुषोंकेसंगतैंर हितहोणा यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभीकही है ॥ तहांश्लोक ॥ 'तस्माच्चरेतवैयोगी सतांधर्ममगर्हयन् ॥ जनायथावमन्येरन्गच्छेयुर्नैवसंगतिम्' अर्थयह ॥ यहतत्त्ववेत्तापुरुष श्रेष्ठपुरुषोंकेधर्मकूं नहींदूषितकर ताहुआ इसप्रकारतें लोकविषेविचरे ॥ जैसे यहविषयासक्तलोक अपमानकरतेहुए संगतिकूंनहींप्राप्तहो वे इति ॥ किंवा यहवार्त्ता भारतविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'अहेरिवगणाद्भीतः सन्मानान्नरकादि व । कुणपादिवचस्त्रीभ्यस्तंदेवाब्राह्मणंविदुः' अर्थयह॥जैसे देहाभिमानीपुरुष सर्पतैंभयकूंप्राप्तहोवै है ॥ तैसे जोविद्वान्पुरुष लोकोंकेसमूहतैं भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जैसे लोक नरकतैं भयकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे जोविद्वान्पुरुष सन्मानतैं भयकूंप्राप्तहोवैहै॥और जैसे लोक मृतकशरीरतैं भयकूंप्राप्तहोवैहै॥तैसे जोपुरुष स्त्रीजनोंतैं भयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं देवता ब्राह्मणकहेहैं ॥ अर्थात् जीवन्मुक्त कहेहै इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ श्रीभागवतविषेभी कह्याहै॥तहांश्लोक॥'संगंत्यजेतमिथुनव्रतिनांमुमुक्षुः सर्वात्मनानविसृजेद्बहिरिंद्रियाणि । एकश्चरन्रहसिचित्तमनंतईशे युंजीततद्व्रतिषुसाधुषुचेत्प्रसंगः॥ १ ॥ स्त्रीणांतत्संगिनांसंगं त्यक्त्वादूरतआत्मवान्।क्षमीविविक्तआसीनश्चिंतयेन्मामतंद्रितः' ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ मुमुक्षुजन विषयासक्तस्त्रीपुरुषोंकेसंगकूं सर्वप्रकारतैं परित्यागकरै ॥ तथा चक्षुआदिकएकादशइंद्रियों कूं बाह्यरूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तनहींकरै ॥ जिसकारणतैं इंद्रियोंकूंविषयोंविषेप्रवृत्तकरणेतैं मनुभग वान्नें 'अकुर्वन्विहितंकर्म निंदितंचसमाचरन् । प्रसज्जन्निंद्रियार्थेषु नरःपतनमृच्छति' इसवचनकरिकै नरककीप्राप्ति कथनकरीहै॥किंतु यहमुमुक्षुजन एकांतदेशविषे एकाकीस्थितहोइकै अपरिच्छिन्नईश्वर

विषे चित्तकूंजोडे ॥ अर्थात् निरंतर ब्रह्मकाध्यानकरै ॥ और जोकदाचित् सोचित्त आपणेचंचलस्व
भावतैं तापरब्रह्मविषेस्थितनहींहोवे ॥ तौ तापरब्रह्मविषेप्रीतिवालेजेमहात्माहैं तिनोंका संगकरै ॥ १ ॥
किंवा यहसुमुक्षुजन स्त्रियोंके तथास्त्रीआसक्तपुरुषोंके संगकूं दूरतैंपरित्यागकरिकै एकांतदेशविषेस्थित
होइकै मैंपरमेश्वरकूं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारतैंध्यानकरै इति॥२॥ताध्यानकाफल स्मृतिविषेभीकह्याहै ॥
तहांश्लोक ॥ 'अहमस्मिपरंब्रह्म वासुदेवाख्यमव्ययः । इतियस्यस्थिराबुद्धिः समुक्तोनात्रसंशयः' अर्थ
यह ॥ वासुदेवहैनामजिसका ऐसाजो उत्पत्तिविनाशतैंरहितपरब्रह्महै ॥सोपरब्रह्म मैंहूं इसप्रकारकीस्थि
रबुद्धि जिसपुरुषकीहै सोपुरुष मुक्तही है ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहीं है इति ॥ किंवा
यहब्रह्मध्यानकाफल विष्णुपुराणविषे यमराजनैंभी मृत्युकेप्रति कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'सकलमिदं
महंचवासुदेवः परमपुमान्परमेश्वरःसएकः ।इतिमतिरचलाभवत्यनंते हृदयगतेव्रजतान्विहायदूरात्'अर्थ
यह ॥ यहसर्वजगत् तथामैं वासुदेवरूपही हैं ॥ सोवासुदेव परमपुरुषहै तथापरमेश्वरहै तथाएकअद्विती
यहै ॥ इसप्रकारकीअचलबुद्धि जिनपुषोंकी हृदयदेशविषेस्थितपरमात्माविषे होवैहै ॥ हेमृत्यु तिनपु
रुषोंकूं तुमनें दूरतैंपरित्यागकरिकैचलना॥अर्थात् परब्रह्मकेध्यानपरायणपुरुषोंकूं पुनःमृत्युकीप्राप्तिहो
तीनहीं इति ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥ जोपुरुष विषयासक्तस्त्रीपुरुषोंकेसंगकापरित्यागकरिकै ब्रह्मकाचिं
तनकरैहै तिसपुरुषकी तेसर्वमलिनवासना निवृत्तहोवैहैं इति ॥ अब सत्संगकूं वासनाकीनिवृत्ति
द्वारा मोक्षकीसाधनताकाप्रतिपादकवचन कहेहैं ॥श्लोक ॥ 'महत्सेवांद्वारमाहुर्विमुक्तेस्तमोद्वारंयोषि
तांसंगिसंगम् । महांतस्तेसमाचित्ताः प्रशांता विमन्यवःसुहृदःसाधवोये'अर्थयह ॥ विद्वान्पुरुषमहत्पुरुषों

केसेवाकूं मुक्तिकासाधन कहे हैं ॥ और स्त्रियोंकेसंगीपुरुषोंकेसंगकूं नरककेप्राप्तिकासाधनकहेहैं ॥ तहां महत्पुरुष किसकानामहै ॥ जेपुरुष समचित्तहैं अर्थात् समब्रह्मविषेहैं चित्त जिनोंका ॥ अथवा शत्रुमित्रविषेहैं समचित्ताजिनोंका तथा जेपुरुष अतिशयकरिकै शांतस्वभाववाले हैं तथा क्रोधतैं रहितहैं तथा सुहृदहैं अर्थात् अनुपकारीपरभीउपकारकरणेहारेहैं तथा साधुहैं अर्थात् शमदमकरिकैसंपन्नहैं ॥ ऐसेगुणोंवालेपुरुषही महत्पुरुष कहेजावै हैं ॥ऐसेमहत्पुरुषोंका जो श्रद्धाभक्तिपूर्वक संगहै सोसंगभी तामलिनवासनाकीनिवृत्तिद्वारा मोक्षकाहीसाधन होवैहै इति ॥ किंवा स्त्रीतत्संगियोंकेसंगविषे नरककीसाधनताभी शास्त्रविषेकही है ॥ तहांश्लोक ॥ 'योषिद्धिरण्याभरणांबरादिद्रव्येषुमायाराचितेषुमूढः । प्रलोभितात्माह्युपभोगबुद्ध्या पतंगवन्नश्यतिनष्टदृष्टिः' अर्थयह ॥स्त्री सुवर्ण आभूषण वस्त्र इत्यादिक जेमायारचितपदार्थ हैं तिनपदार्थोंविषे लोभकूंप्राप्तभयाहैमनजिसकाऐसा जो अविवेकीपुरुषहै सो तिनपदार्थोंविषे उपभोगबुद्धिकरिकै पतंगकीन्यांई नाशहोवैहै ॥ जिसकारणतैं सोपुरुष विवेकदृष्टितैंरहितहै इति ॥ अब मैत्रीकरुणादिकविरोधीवासनाकरिकै तिनमलिनवासनावोंकीनिवृत्ति कहेहैं ॥ तेमैत्रीआदिकविरोधीवासना पतंजलिभगवान्नैं योगसूत्रोंविषेकहीहै ॥ तहां सूत्र ॥ 'मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणांभावनातश्चित्तप्रसादनम्'अर्थयह ॥ मैत्री १ करुणा २ मुदिता ३ उपेक्षा ४ यहचारिप्रकारकी शुभवासना होवैहैं ॥ तहां सुखीप्राणियोंविषे यहसर्वहमारेही हैं ॥ याप्रकारकी जाभावनाहै ताकानाम मैत्रीहै ॥ और दुःखीप्राणीयोंविषे जैसे हमारेकूं दुःखमतहोवै तैसे इनप्राणियोंकूंभी दुःखमतहोवै याप्रकारकी जाभावना ताकानाम करुणा

है ॥ और पुण्यवान्पुरुषोंकूंदेखिकै जा प्रसन्नताहै ताकानाम मुदिताहै ॥ और पापीपुरुषोंतैं जा उदासीनताहै ताकानाम उपेक्षाहै ॥ इसप्रकारकी मैत्रीआदिकचारिभावनावालेपुरुषकी राग द्वेष असूया मद मात्सर्य आदिक सर्वमालिनवासना निवृत्तहोइजावैहैं ॥ तिसतैं इसपुरुषकाचित्त शुद्धहोवैहै इति ॥ इसप्रकार गीताकेषोडशअध्यायविषे श्रीभगवान्नें 'अभयंसत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः। दानंदमश्च यज्ञश्चस्वाध्यायस्तपआर्जवम् ॥१॥ अहिंसासत्यमक्रोधस्त्यागःशांतिरपैशुनं। दयाभूतेष्वलोलुत्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥२॥ तेजःक्षमाधृतिःशौचमद्रोहोनातिमानिता। भवंतिसंपदंदैवीमभिजातस्यभारत' ॥३॥ इनतीनश्लोकोंकरिकै कथनकरीजा दैवीसंपतहै ॥ तादैवीसंपतरूपविरोधीवासनाकेअभ्यासकरिकै दंभ दर्पादिक आसुरीसंपतरूपमलिनवासना निवृत्तहोइजावैहै ॥ इसप्रकार तागीताकेत्रयोदशअध्यायविषे श्रीभगवान्ने 'अमानित्वमदंभित्वमहिंसाक्षांतिरार्जवम्। आचार्योपासनंशौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः। इंद्रियार्थेषुवैराग्यमनहंकारएवच। जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥२॥ असक्तिरनभिष्वंगः पुत्रदारगृहादिषु। नित्यंचसमचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ३ ॥ मयिचानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥४॥ अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनं। एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तमज्ञानंयदतोन्यथा' ॥५॥ इनपंचश्लोकोंकरिकै कथनकरयेजे अमानित्व अदंभित्व आदिक ज्ञानकेसाधनहैं ॥ तिनअमानित्वादिकसाधनोंकेअभ्यासकरिकै तिनोंतैंविपरीत भ्रांतिज्ञानकेसाधन मानदंभादिक निवृत्तहोइजावैहैं ॥ इनगीताश्लोकोंकाअर्थ गीतागूढार्थदीपिकाविषे हमनैं विस्तारतैंनिरूपणकर्याहै ॥ सो तहांसेजानिलेणा ॥ ग्रंथविस्तारकेभयतैं इहांलिख्यानहीं इति ॥ इसप्रकार सोविद्वत्संन्यासी जभी

संकलपपूर्वक तिनमैत्रीआदिकशुभवासनावोंकूं तथादैवीसंपत्कूं तथाअमानित्वादिकधर्मोंकूं अभ्यासक
रिकै संपादनकरेहै ॥ तभीसूर्यकेउदयहुए जैसे तम निवृत्तहोवैहै तैसे ताविद्वत्संन्यासीकी तेपूर्वउक्त
सर्वमलिनवासना निवृत्तहोवै हैं॥तिसतैंअनंतर सोविद्वत्संन्यासी अजिह्वत्वादिकषट्धर्मोंकूं अभ्यासक
रिकै संपादनकरै ॥ तेअजिह्वत्वादिकधर्म स्मृतिविषेकथनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥'अजिह्वःषंडकःपंगुरंधो
बाधिरएवच । मुग्धश्चमुच्यतेभिक्षुःषड्भिरेतैर्नसंशयः 'अर्थयह ॥ अजिह्व १ षंडक २ पंगु ३ अंध ४
बधिर ५ मुग्ध ६ इनषट्धर्मोंकेसेवनकरणेतैं संन्यासी जीवन्मुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै॥यातैं तासंन्यासीनैं तेषट्
धर्म अवश्यसंपादनकरणे इति ॥ अब तिनअजिह्वत्वादिकषट्धर्मोंके शास्त्रप्रमाणकरिकै यथाक्रमतैं
लक्षण कहेहैं ॥ अथअजिह्वलक्षणम्॥श्लोक॥'इदमिष्टमिदंनेति योऽश्नन्नपिनसज्जते। हितंसत्यंमितंवक्ति
तमजिह्वंप्रचक्षते ' अर्थयह ॥ जोसंन्यासी अन्नादिकोंकूंभक्षणकरताहुआभी यहअन्न स्वादुहै यहअन्न
अस्वादुहै याप्रकारकावचन कहतानहीं तथा हितकारी सत्य प्रमित याप्रकारकेवचनकूं उच्चारण करेहै
सोसंन्यासी अजिह्व कह्याजावैहै इति॥ अथषंडकलक्षणं ॥ श्लोक ॥'अद्यजातांयथानारीं तथाषोडश
वार्षिकीम् । शतवर्षांचयोदृष्ट्वा निर्विकारःसषंडकः' अर्थयह॥ जैसे आजादिनविषेजन्मीहुई अतिबालका
स्त्रीकूंदेखिकै तथाशतवर्षकीअतिवृद्धस्त्रीकूंदेखिक कामरूपविकार उत्पन्नहोतानहीं ॥ तैसे जोसंन्यासी
षोडशवर्षकीयुवास्त्रीकूंदेखिकैभी कामरूपविकारतैंरहितहोवैहै ॥ सोसंन्यासी षंडक कह्याजावैहै ॥ नपुं
सककानाम षंडकहै इति॥अथपंगुलक्षणम् ॥ श्लोक ॥'भिक्षार्थमटनंयस्य विण्मूत्रकरणायच । योजनी
नपरंयाति सर्वथापंगुरेवसः ' अर्थयह ॥ जिससंन्यासीका भिक्षाकेवासतैंही गमन होवैहै ॥ तथा विष्ठा

मूत्रकेपरित्यागकरणेवासतै गमन होवैहै ॥ अन्याकिसीप्रयोजनवासतै गमन होतानहीं ॥ तथा जोसं न्यासी एकयोजनतैंअधिकमार्ग चलतानहीं सोसंन्यासी पंगु कह्याजावैहै इति ॥ अथअंधलक्षणम् ॥ श्लोक ॥ 'तिष्ठतोव्रजतोवापि यस्यचक्षुर्नदूरगम् । चतुर्युगांभुवंत्यक्त्वा परिव्राट्सोऽधउच्यते' अर्थयह ॥ जिससंन्यासीका स्थितहुए वा चलतेहुए चक्षुइंद्रिय चतुर्युगभूमिकूंछोडिकै दूरनहींजावैहै॥सोसंन्यासी अंध कह्याजावैहै इहां चारिहस्तकानाम युगहै ॥ चतुर्युगभूमि षोडशहस्तपरिमाण होवैहै इति ॥ अथबधिरलक्षणं ॥ श्लोक ॥ 'हिताहितंमनोरामं वचःशोकावहंचयत्।श्रुत्वापिनशृणोतियो बधिरःसप्र कीर्त्तितः' अर्थयह ॥ जोसंन्यासी हर्षकीप्राप्तीकरणेहारेअनुकूलवचनकूं तथाशोककीप्राप्तीकरणेहारेप्र तिकूलवचनकूं श्रवणकरिकैभी नहींश्रवणकरेहै॥अर्थात् हर्षशोककूंप्राप्तहोतानहीं ॥ सोसंन्यासी बधिर कह्याजावैहै इति ॥ अथमुग्धलक्षणम् ॥ श्लोक ॥ 'सान्निध्येविषयाणांच समर्थोऽविकलेंद्रियः।सुप्तवद्वर्त्ते तेनित्यं सभिक्षुर्मुग्धउच्यते' अर्थयह॥विषयोंकेसमीपप्राप्तहुए जोसंन्यासी समर्थहुआभी तथासर्वइंद्रि योंकारिकैसंपन्नहुआभी तिनविषयोंविषे प्रवृत्तहोतानहीं ॥ किंतु सुपुप्तपुरुषकीन्यांई तिनविषयोंतैंउपरा मरहेहै ॥ सोसंन्यासी मुग्ध कह्याजावैहै इति ॥ इसप्रकार अजिह्वत्वादिकषट्धर्मोंकाअभ्यासकरिकै पश्चात् चिन्मात्रवासनाका अभ्यासकरै ॥ तहां यह नामरूपात्मकसर्वजगत् चैतन्यविषेकल्पितहोणेतैं स्वतःसत्तास्फुरणतैंरहितहै॥यातैं ताअधिष्ठानचैतन्यकेसत्तास्फुरणपूर्वकही ताजगत्का सत्तास्फुरणहो वैहै ॥ इसप्रकार जगत्विषे नामरूपदोनोंअंशोंकूं मिथ्यात्वनिश्चयतैं उपेक्षाकरिकै सर्वत्रपरिपूर्ण अस्ति भातिप्रियरूप अधिष्ठानचैतन्य मैंहूं याप्रकारकी जा निरंतरभावनाहै ताकानाम चिन्मात्रवासनाहै ॥

साचिन्मात्रवासनाभी दोप्रकारकीहोवैहैं ॥ एकतौ कर्त्ता कर्म करण इसत्रिपुटीकेस्मरणपूर्वक चिन्मात्रवासना होवैहै ॥ और दूसरी तात्रिपुटीकेस्मरणतैंरहित केवलचिन्मात्रवासना होवैहै तहां इससर्वजगतकूं मैंआपणेमनकरिकै चिन्मात्ररूप जानताहूं । इसप्रकारतैंकरीहुई जाभावनाहै साभावनातौ प्रथम त्रिपुटीपूर्वकचिन्मात्रवासनाहै॥इस चिन्मात्रवासनाका संप्रज्ञातसमाधिकोटिविषे अंतर्भावहै ॥ अर्थात् इसप्रथमचिन्मात्रवासनाकूंही योगशास्त्रवाले संप्रज्ञातसमाधि कहे हैं ॥ और कर्त्ता कर्म करण इसत्रिपुटीकेस्मरणतैंरहित मैंचिन्मात्रहूं याप्रकारकीजाभावनाहै साभावना केवलचिन्मात्रवासना कही जावैहै ॥ इस केवलचिन्मात्रवासनाका असंप्रज्ञातसमाधिकोटिविषे अंतर्भावहै ॥ अर्थात् इस केवलचिन्मात्रवासनाकूंही योगशास्त्रवाले असंप्रज्ञातसमाधि कहेहैं ॥ तहांसर्वजगतकूं चिन्मात्ररूपता शुक्रनैं बलिकेप्रति कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'चिदिहास्तीहचिन्मात्रं सर्वंचिन्मयमेवतत् । चित्त्वंचिदहमेते च लोकाश्चिदितिसंग्रहः' अर्थयह ॥ हेराजन् इससर्वजगत्विषे चैतन्यही अधिष्ठानरूपतैं व्याप्यकरिकै रह्याहै ॥ यातैं यहसर्वजगत् चैतन्यमात्रहीहै ॥ तूभी चैतन्यरूपही है॥तथा मैंभी चैतन्यरूपहीहूं॥तथा यहसर्वलोकभी चैतन्यरूपही हैं इति॥इसप्रकार चिन्मात्रवासनाके दृढअभ्यासकियेहुए पूर्वउक्तसर्वमलिनवासना निवृत्तहोवैहैं ॥ यहहीवासनाक्षयकाअभ्यासहै इति ॥ अब मनोनाशकेकहणेवासतैं प्रथम मनकास्वरूप कहेहैं॥ लाक्षासुवर्णादिकोंकीन्यांई सावयव तथाकामादिकवृत्तिरूपकरिकेपरिणामवाला जो अंतःकरणहै सो अंतःकरणही मननरूपहोणेतैं मन कह्याजावैहै॥ सोमन सत्त्व रज तम यहतीनगुणरूपहोवैहै ॥ काहेतैं सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंके यथाक्रमतैंविकाररूप जे सुख दुःख मोह यह

तीनधर्म हैं ॥ तेतीनोंधर्म तामनकेआश्रितहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं तामनविषे सत्त्वादित्रिगुणरूपताही
सिद्धहोवैहै ॥ तहां सोमन राजसतामसवृत्तियोंकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहुआ अतिस्थूल होवैहै ॥ सोस्थूल
मन आत्माकेसाक्षात्कारवासतै योग्यनहींहोवैहै ॥ काहेतैं दुर्विज्ञेयहोणेतैं आत्मा अतिसूक्ष्महै ॥ ऐसेसू
क्ष्मआत्माका स्थूलमनकरिकै साक्षात्कार संभवतानहीं ॥ जैसे स्थूलकुदालकरिकै सूक्ष्मवस्त्रकासीवना
संभवतानहीं ॥ किंतु सूक्ष्मसूचीकरिकैही तासूक्ष्मवस्त्रकासीवना संभवैहै ॥ तैसे सूक्ष्ममनकरिकैहीं
तासूक्ष्मआत्माकासाक्षात्कार संभवैहै ॥ और 'दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः' यहश्रुतिभी
अतिसूक्ष्मबुद्धिकरिकैही आत्माकासाक्षात्कार कहेहैं ॥ यातैं आत्माकेसाक्षात्कारवासतैं मनकीसूक्ष्मता
अवश्यअपेक्षितहै ॥ सामनकीसूक्ष्मता राजसतामसवृत्तियोंकेनिरोधकरिकै सिद्धहोवैहै ॥ यातैं तिनवृ
त्तियोंकेनिरोधकरिकै जो मनकेसूक्ष्मताकासंपादनहै यहही तामनकानाशहै ॥ इहां यहतात्पर्यहै ॥ सो
मनकानाश अरूपनाश १ सरूपनाश २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां तामनका पुनःउत्था
नतैंरहित जो स्वरूपतैंहीनाशहै ताकूं अरूपनाश कहेहैं ॥ और स्वरूपतैं तामनकेविद्यमानहुएभी उपा
यकरिकै जो तामनकेवृत्तियोंकानाशहै ताकूं स्वरूपनाश कहेहैं ॥ तहां मनकेअरूपनाशकरिकैतौ
इसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं विदेहमुक्तिकीप्राप्ति होवै है ॥ और मनकेसरूपनाशकरिकै जीवन्मुक्तिकीप्राप्ति
होवैहै ॥ यातैं इहां मनोनाशशब्दकरिकै सोसरूपनाशही विवक्षितहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ राजस
तामसवृत्तियोंकेनिरोधकरिकै मनकीसूक्ष्मताकेसंपादनकूं आपने मनोनाश कह्या ॥ सोवृत्तियोंकानि
रोध किसउपायतैं होवैहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ तावृत्तिनिरोधकेउपाय वशिष्ठभगवाननें चारिप्रकार

केकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ 'अध्यात्मविद्याधिगमः साधुसंगमएवच । वासनासंपरित्यागः प्राणस्पंदनिरोधनम् ॥ एतास्तुयुक्तयःपुष्टाः संतिचित्तजयेकिल' अर्थयह ॥ अध्यात्मविद्याधिगम १ साधुसंगम २ वासनात्संपारित्याग ३ प्राणस्पंदनिरोधन ४ यहचारिप्रकारकेउपाय चित्तकेजयकरणेविषे प्रबलकारणहैं ॥ तहां प्रत्यक्आत्माकूं ब्रह्मरूपकरिकैकथनकरणेहारी जाविद्याहै ताकानाम अध्यात्मविद्याहै ॥ ताअध्यात्मविद्याकीजाप्राप्तिहै ताकानाम अध्यात्मविद्याऽधिगमहै ॥ सोभी चित्तकेजयका साधनहै॥काहेतैं यहनामरूपात्मकसर्वजगत् मिथ्याही है ॥ मैंही सर्वत्रपरिपूर्ण परमानंदएकरसहूं ॥ मेरेतैंभिन्न कोईभी कारण वा कार्य नहीं है ॥ मैंही सर्वरूपहूँ ॥ याप्रकारकीअध्यात्मविद्याकेप्राप्तहुए यहतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वदृश्यप्रपंचकूं मिथ्यारूपकरिकैजानेहैं ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषकामन तादृशप्रपंचविषेभी प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ और आत्मातौ मनवाणीकाअविषयहै ॥ यातैं ताआत्माविषेभी सोमन प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ इसप्रकार अंतरबाह्यप्रवृत्तितैंरहितहुआ सोमन सर्ववृत्तियोंकेअनुदयतैं इंधनरहितअग्निकीन्यांई आपणेअधिष्ठानरूपकारणविषे लयहोवैहै ॥ यातैं साअध्यात्मविद्याकीप्राप्ति तामनोनाशविषे मुख्यकारणहै ॥ और जोपुरुष बुद्धिकीमंदताकारिकै ताअध्यात्मविद्याकेसंपादनकरणेविषे असमर्थ है ॥ तिसपुरुषकेप्रति दूसरा साधुसंगम उपायहै ॥ काहेतैं तेमहात्मापुरुष इसअधिकारीपुरुषकूं पुनःपुनः प्रत्यक्आत्माकीब्रह्मरूपता तथाजगत्का मिथ्यापणा स्मरणकरावैहैं तथाबोधनकरे हैं ॥ ताकरिकै इसअधिकारी पुरुषकूं अध्यात्मविद्याकीप्राप्तिहोइकै सोमनोनाश होवैहै ॥ यातैं सोसाधुसंगमभी ताअध्यात्मविद्याकीप्राप्ति द्वारा तामनोनाशका उपायहै ॥ किंवा जोपुरुष विद्यामद धनमद कुलमद आचारमद इत्यादिक मदोंक

रिकैयुक्तहुआ तासाधुसंगमकूंभी नहींकरिसकता ॥ तिसपुरुषकेप्रति तामनकेनिरोधका वासनासंपरित्यागरूप उपायहै॥तहां विवेककरिकै जो तामदादिरूपमलिनवासनाकीनिवृत्तिहै ताकानाम वासनासंपरित्यागहै ॥ अब तिनविद्यामदादिकोंकास्वरूप तथातामदकेनिवर्त्तक विवेककास्वरूप वर्णनकरेंहैं इसभूमिलोकविषे एकमैंहीं पंडितहूं॥मेरे तैंअन्य दूसराकोईपंडितहैनहीं ॥ जेपुरुष पंडितकहावतेहैं ते कुछभीनहींजानते ॥ याप्रकारका जोमानसअभिमानहै ॥ सोअभिमान विद्यामद कह्याजावैहै ॥ ता विद्यामदकी याप्रकारकेविवेकतैं निवृत्तिहोवैहै॥ पंडितपणेकेअभिमानवाले जे बालाकिशाकल्यआदि कहुएहैं ॥ तिनोंकाभी अजातशत्रुयाज्ञल्क्यादिकाविद्वान्पुरुषोंकारिकै पराभव होताभयाहै ॥ और मनुष्योंतैं लैके श्रीदक्षिणामूर्तिपर्यंत तारतम्यताकरिकै विद्याकाउत्कर्षपणाहै देखणेविषेआवैहै॥सर्वकाआदिगुरुजो श्रीदक्षिणामूर्ति सदाशिवहै ॥ तिसविषेहीनिरतिशय विद्याकाउत्कर्षपणाहै ॥ दूसरेसर्वपंडितों विषे सातिशय विद्याकाउत्कर्षपणाहै॥यातैं हमारेकूंभी कोईअधिकपंडित पराभवकरैगा ॥इसप्रकारके निरंतरचिंतनकरणेतैं सोविद्यामद निवृत्तहोइजावैहै ॥ और मैंहीं धनवान्हूं मेरेसमान कोईधनवान् नहीं है ॥ याप्रकारका जो मानसअभिमानहै ताकानाम धनमदहै ॥ ताधनमदकी इसप्रकारकेविवेकतैं निवृत्तिहोवैहै ॥ लक्षपतिपुरुषनें जो व्यवहारकरताहै ॥ सो व्यवहार अलक्षपतिपुरुषनें करिसक्ता नहीं ॥ यातैं तालक्षपतिपुरुषकरिकै ताअलक्षपतिपुरुषका पराभव होवैहै॥इसप्रकार कोटिपतिपुरुषकरिकै तालक्षपतिपुरुषकाभी पराभव होवैहै ॥ मैंरंककी क्यागणती है ॥ मेरेतैंअधिककुबेरकेतुल्य बहुत धनवान्हैं ॥ याप्रकारके निरंतरचिंतनकरणेतैं सोधनमद निवृत्तहोइजावैहै ॥ इसप्रकार हमाराकुल

सर्वतैंश्रेष्ठहै याप्रकारका अभिमानरूपजोकुलमदहै॥तथा हमाराआचार सर्वतैंश्रेष्ठहै याप्रकारका अभिमानरूप जोआचारमदहै ॥ तिनदोनोंमदोंकोभी यथायोग्यविवेकतैं निवृत्तिहोइजावैहै ॥ इसप्रकार विवेककरिकै जोपुरुष विद्यामदादिक मलिनवासनावोंकी निवृत्तिकरेहै॥तिसपुरुषका साधुसंगमादिकोंकीप्राप्तिकरिकै सोमनोनाश सिद्धहोवैहै॥यातैं सोवासनासंपरित्यागभी तामनोनाशका उपायहै इति॥ किंवा तिनमलिनवासनावोंकी अतिप्रबलतातैं जोपुरुष ताउक्तविवेककरिकै तिनवासनावोंकेपरित्याग करणेविषे समर्थ नहीं होइसकेहै॥तिसपुरुषकेप्रतिशास्त्रने प्राणस्पंदकानिरोधनरूपउपाय कथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् सोपुरुष प्राणकेनिरोधकरिकै तामनोनाशकूं सिद्धकरै ॥ अब ताप्राणनिरोधकेउपायका निरूपणकरेहैं ॥ तहां श्लोक ॥ 'प्राणायामदृढाभ्यासाद्युक्त्याचगुरुदत्तया। आसनाशनयोगेन प्राणस्पंदोनिरुध्यते' ॥ अर्थयह ॥ योगाभ्यासकरणेहारेगुरुनैं प्राप्तकरी जायुक्तिहै ॥ तायुक्तिकरिकै कऱ्याजो प्राणायामका दृढअभ्यासहै॥तिसअभ्यासतैंतथाआसनयोगकरिकै तथाअशनयोगकरिकै प्राणोंकेगतिकानिरोधहोवैहै इति॥अब इसीश्लोकके अर्थकूं विस्तारतैंकथनकरेहैं॥ताकेविषे प्रथम प्राणायामकाप्रकार दिखावैहैं ॥ सोप्राणायाम पूरक १ रेचक २ कुंभक ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां वामनासिकाकरिकै बाह्यवायुका जो अंतरपूरणहै ताकानाम पूरकहै ॥ और दक्षिणनासिकाकरिकै ताअंतरवायुका जो बाह्यपरित्यागहै ताकानाम रेचकहै॥ और ताप्राणवायुका जो रोकणाहै ताकानाम कुंभकहै ॥ सोकुंभकभी अंतर १ बाह्य २ इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै॥ तहां पूरणकऱ्येहुए वायुका जो हृदयदेशविषे रोकणाहै ताकानाम अंतरकुंभकहै और रेचनकऱ्येहुएप्राणवायुका जो शरीरकेबाह्य

देशविषे रोकणाहै ताकानाम बाह्यकुंभकहै ॥ तहांषोडशमात्रावोंकरिकैतौ पूरककरणा ॥ और बत्तीस मात्रावोंकरिकै रेचककरणा ॥ और चौंसठमात्रावोंकरिकै कुंभककरणा ॥ अर्थात् पूरकतैंद्विगुणारेचक करणा ॥ और रेचकतैंद्विगुणा कुंभक करणा ॥ इहां मात्रानाम कालपरिमाणकाहै ॥ सोआत्मपुराणके एकादशअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकर्‍याहै ॥ इसप्रकारके प्राणायामकेअभ्यासतैं सोप्राणके गतिकानिरोध होवैहै ॥ ताप्राणनिरोधतैं सोमनोनाश होवै है ॥ किंवा ताप्राणायामकूं प्राणनिरोधद्वारा मनोनाशकीउपायता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ सो दिखावै हैं ॥ योगी दोप्रकारका होवैहै ॥ एकतौ दैवीसंपत्‌रूपशुभवासनावालायोगी होवैहै ॥ और दूसरा तादैवीसंपत्‌तैंरहित आसुरीसंपत्‌रूप मलिनवासनावाला योगी होवैहै ॥ तहां प्रथमयोगीकूंतौ श्रुतिनैं पूर्वमंत्रकरिकै निरंतरब्रह्मकाचिंतनरूपराजयोग उपदेशकर्‍याहै ॥ सोपूर्वमंत्र यहहै ॥ 'त्रिभिरुन्नतंस्थाप्यसमंशरीरं हृदींद्रियाणिमनसा सन्निवेश्य । ब्रह्मोडुपेनप्रतरेतविद्वान् स्रोतांसिसर्वाणिभयावहानि' अर्थयह ॥ यहविद्वान्योगीपुरुष एकांतदेशविषे पवित्रआसनऊपरि आपणेशरीरकूं कटिग्रीवादिकदेशतैंसम स्थापनकरिकैं तथाआपणेहृदयविषे मनसहितसर्वइंद्रियोंका निरोधकरिकै अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका निरंतरचिंतनकरै ॥ ताब्रह्मचिंतनरूप नौकाकरिकै सोविद्वान्योगी भयकीप्रातिकरणेहारे मायारूपनदीकेप्रवाहोंकूं तरै इति ॥ और दूसरेयोगीकेप्रतितौ श्रुतिनैं दूसरेमंत्रकरिकै प्राणनिरोधकाउपायरूप हठयोग उपदेशकर्‍याहै ॥ सोद्वितीयमंत्र यहहै ॥ 'प्राणान्प्रपीड्येहसुयुक्तचेष्टः क्षीणेप्राणेनासिकयोच्छ्वसीत ।दुष्टाश्वयुक्तमिववाहमेनं विद्वान्मनो धारयेदप्रमत्तः' अर्थयह ॥ युक्तहैंअहारविहारादिकचेष्टाजिसकी ऐसायोगीपुरुष पूर्वउक्त पूरक रेचक

कुंभक क्रमतैं प्राणायामकूंकरिकै प्राणोंकेगतिकानिरोधकरै ॥ तिसतैंअनंतर जैसे प्रमादतैंरहितसारथी
पुरुष दुष्टअश्वयुक्तरथकूं बलात्कारसैं श्रेष्ठमार्गविषे धारणकरेहै॥तैसे प्रमादतैंरहित सोविद्वान्योगी दुष्ट
इंद्रिययुक्त मनकूं विषयोंतैंनिवृत्तकरिकै आनंदएकरसब्रह्मविषे धारणकरै ॥ अर्थात् तिसब्रह्मविषेएकाग्र
चित्तवालाहोवै इति ॥ अब आसनयोगका निरूपणकरेहैं ॥तहां आसनयोगकास्वरूप तथा ताआस
नयोगकेसाधन तथाताआसनयोगकाफल यहतीनों पतंजलिभगवान्नैं यथाक्रमतैं 'स्थिरसुखमासनम्
॥ १ ॥ प्रयत्नशैथिल्यानंतसमापत्तिभ्याम् ॥ २ ॥ ततोद्वंद्वानभिघातः' ॥ ३ ॥ इनतीनसूत्रोंकरिकै
कथनकरेहैं ॥ इनतीनसूत्रोंका यहअर्थहै॥ चलायमानतातैंरहित तथासुखकीप्राप्तिकरणेहारा जोआसन
है । सोईही योगकाअंगभूतआसन कह्याजावैहै ॥ १ ॥ सोआसन प्रयत्नशैथिल्यअनंतसमापत्ति
इनदोनोंसाधनोंतैं सिद्धहोवैहै ॥ तहांलौकिकवैदिककर्मोंका जोत्यागहै ताकानाम प्रयत्नशैथिल्यहै ॥
तहां जोपुरुष लौकिकवैदिककर्मोंविषे प्रवर्त्तमानहै ॥ तिसपुरुषका सोस्थिरआसन होइसकतानहीं ॥
यातैं तालौकिकवैदिककर्मकात्यागभी ताआसनका साधनहै ॥ और जोअनंतभगवान् आपणेसहस्र
फणोंऊपरि इसपृथिवीकूंधारणकरिकैवर्त्तमानहै ॥ सोअनंतभगवान् मैंहूं याप्रकारका जोचिंतनहै ताका
नाम अनंतसमापत्तिहै ॥ इसअनंतसमापत्तिकरिकै ताआसनकेप्रतिबंधकदुरित नाशहोवै हैं ॥ २ ॥
और तिसआसनकेजयकरणेतैं इसयोगीका शीतउष्णआदिकद्वंद्वोंकरिकै ताडनहोवैनहीं ॥ अर्थात् शीत
उष्णआदिकद्वंद्वोंकीजानिवृत्तिहै यहही ताआसनयोगकाफलहै इति ॥ ३ ॥ अब अशनयोगकानिरूप
णकरेहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'द्वौभागौपूरयेदन्नैर्जलेनैकंप्रपूरयेत् । मारुतस्यप्रचारार्थं चतुर्थमवशेषयेत् 'अर्थ

यह ॥ योगाभ्यासकरणेहारापुरुष आपणेउदरके दोभागोंकूंतौ अन्नकरिकै पूरणकरै ॥ और एकभाग कूं जलकरिकै पूरणकरै ॥ और प्राणवायुके सुखपूर्वकसंचारवासतैं एकभागकूं खालीराखै इति ॥ इस प्रकार प्राणायाम आसनयोग अशनयोग इनतीनोंकरिकै प्राणकेगतिकानिरोध होवैहै ॥ ताप्राणके निरोधहुए सर्वचित्तकीवृत्तियां निरुद्ध होवै हैं ॥ जिसकारणतैं चित्तकेवृत्तियोंकाउदय प्राणकीगतिकेअ धीनही होवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपदार्थ जिसवस्तुके अधीनहोवैहै ॥ सोपदार्थ तावस्तुकेनिरोधहुए निरुद्धहोवैहै ॥ जैसे पट तंतुवोंकेअधीनहोणेतैं तिनतंतुवोंकेनिरोधहुए निरुद्धहोवैहै ॥ तथा जैसे बाह्यइं द्रिय चित्तकेअधीनहोणेतैं ताचित्तकेनिरोधहुए निरुद्धहोवैहै ॥ तैसे चित्तकीवृत्तियां प्राणगतिकेअधी नहोणेतैं ताप्राणकेनिरोधहुए निरुद्धहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर स्वभावतैंही आत्माअनात्माकार जो अंतः करणहै ॥ सोअंतःकरण अनात्माकारवृत्तियोंकेनिरोधहुए एकआत्माकारही होवैहै ॥ इसप्रकारतैं जोचित्तकेवृत्तियोंकानिरोधहै सोनिरोधही मनोनाश कह्याजावैहै ॥ ऐसेंमनोनाशकेप्राप्तहुए इसविद्वा न्पुरुषकूं ताआत्मएकाकारमनकरिकै आनंदएकरसअपरिच्छिन्नरूपप्रत्यक्आत्मा अनुभवहोवैहै॥इसी उक्तअर्थकूं पूर्ववृद्धआचार्योंनैं 'आत्मानात्माकारंस्वभावतोऽवस्थितंसदाचित्तं आत्मैकाकारतयातिरस्कृ तानात्मदृष्टिंविदधीत' इसश्लोककरिकै कथनकर्याहै ॥ और इसीउक्तवृत्तियोंकेनिरोधकूं पतंजलशा स्त्रवाले योगनामकरिकैकहे हैं ॥ तहां पतंजलिसूत्र ॥ 'योगश्चित्तवृतीनिरोधः' अर्थयह ॥ चित्तकेसर्व वृत्तियोंका जोनिरोधहै ताकानाम योगहै ॥ तहां प्रमाण १ विपर्यय २ विकल्प ३ निद्रा ४ स्मृति ५ यहपंचप्रकारकी चित्तकीवृत्तियां होवैहैं ॥ तहां प्रमाणजन्य जो प्रमाज्ञानहै ताकानाम प्रमाणवृत्तिहै ॥

तहां योगशास्त्रविषेतौ प्रत्यक्ष १ अनुमान २ शब्द ३ यहतीनहीप्रमाण मानेहैं ॥ यातैं तिनोंकेमतवि
षे साप्रमावृत्तिभी तीनप्रकारकी होवैहै ॥ और वेदांतसिद्धांतविषे सोप्रमाण प्रत्यक्ष १ अनुमान २ उप
मान ३ शब्द ४ अर्थापत्ति ५ अनुपलब्धि ६ इसभेदकरिकै षट्प्रकारका मान्याहै ॥ यातैं वेदांतसि
द्धांतविषे साप्रमावृत्तिभी षट्प्रकारकीही होवैहै ॥ साषटप्रकारकीप्रमावृत्ति द्वितीयपरिच्छेदविषे विस्ता
रतैंनिरूपणकरिआयेहैं ॥ और मिथ्याज्ञानकानाम विपर्ययहै ॥ और संशयकानाम विकल्पहै ॥ और
संस्कारजन्यज्ञानकानाम स्मृतिहै ॥ इनतीनोंकास्वरूप पूर्वतृतीयपरिच्छेदविषे विस्तारतैंनिरूपणकरि
आयेहैं ॥ और तामसीवृत्तिकानाम निद्राहै ॥ इनपंचप्रकारकीवृत्तियोंका जोनिरोधहै ताकानाम यो
गहै ॥ अथवा पूर्वकथनकरीजे मैत्रीकरुणादिक दैववृत्तियां है ॥ तथा दंभदर्पादिक आसुरवृत्तियांहैं ॥
तिनसर्ववृत्तियोंकेनिरोधकानाम योगहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ तिनवृत्तियोंकेनिरोधका कौंनसाध
नहै ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ पतंजलिभगवान्ने 'अभ्यासवैराग्याभ्यांतन्निरोधः' इससूत्रकरिकैअभ्यास
वैराग्य इनदोनोंकूंही तावृत्तिनिरोधका साधन कह्याहै ॥ तथा श्रीभगवान्नैभी गीताविषे 'असंशयं
महाबाहो मनोदुर्निग्रहंचलं।अभ्यासेनतुकौंतेय वैराग्येणचगृह्यते'इसश्लोककरिकै ताअभ्यासवैराग्यकूंही
मनकेनिग्रहकासाधन कह्याहै तहां जिसवस्तुविषे दोषदृष्टितैंवैराग्यहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषे मनकी
प्रवृत्ति होतीनहीं ॥ यातैं तावैराग्यकूं मनकेनिग्रहकीसाधनता संभवैहै ॥ तावैराग्यकास्वरूप द्विती ॥२०४॥
यपरिच्छेदविषे विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं यातैं पुनःइहांनिरूपणकरतेनहीं ॥ और अभ्यासतौ
तायोगकेप्रति अंतरंगसाधनहै ॥ ताअंतरंगसाधनकी बहिरंगसाधनोंतौंविना सिद्धिसंभवतीनहीं ॥ यातैं

उपायसहित तिनबहिरंगसाधनोंकानिरूपणकरिकै ताअभ्यासकेनिरूपणकरणेवासतै प्रथम ताफलरूपवृत्तिनिरोधका विभाग वर्णनकरे हैं ॥ सोचित्तकीवृत्तियोंकानिरोधरूपयोग दोप्रकारका होवैहैं ॥ एकतौ संप्रज्ञातसमाधिरूपनिरोध होवैहै ॥ और दूसरा असंप्रज्ञातसमाधिरूपनिरोध होवैहै ॥ तहां कर्त्ता कर्म करण इसत्रिपुटीकेअनुसंधानतैंरहित जो एकलक्ष्यवस्तुविषयक सजातीवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम संप्रज्ञातसमाधिहै ॥ तहां इससंप्रज्ञातसमाधिका अंगभूतजोसमाधिहै ताकेविषे तात्रिपुटीकेअनुसंधान पूर्वक सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाह होवै है ॥ ताअंगसमाधिविषे इससंप्रज्ञातसमाधिकेलक्षणकी अतिव्याप्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै इहां त्रिपुटीकेअनुसंधानतैंरहितपणा कह्याहै ॥ यहसंप्रज्ञातसमाधिस्वरूप अन्य ग्रंथविषेभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'विलाप्यविकृतिंकृत्स्नांसंभवव्यत्ययक्रमात् । परिशिष्टंतुचिन्मात्रं सदानंदंविचिंतयेत् ॥ १ ॥ ब्रह्माकारमनोवृत्तिप्रवाहोऽहंकृतिंविना । संप्रज्ञातःसमाधिःस्याद्ध्यानाभ्यासप्रकर्षजः' ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ चेतनविषेअध्यस्त जितनाकी अज्ञान तथा ताअज्ञानकाकार्यप्रपंचहै तिस सर्वप्रपंचकूं उत्पत्तिक्रमतैंविपरीतक्रमतैं स्थूलसूक्ष्मादिक्रमकरिकै चिदात्माविषेलयकरिकै अर्थात् ताचिदात्मातैं यहप्रपंच भिन्ननहीं है याप्रकारकानिश्चयकरिकै बाकीरह्याजो सदानंदरूपचिन्मात्रहै तिसकूं गुरुउपदिष्टमहावाक्यतैं अभेदरूपकरिकैचिंतनकरै ॥ अर्थात् मैं सच्चिदानंदब्रह्मरूपहींहूं याप्रकारका चिंतनकरै ॥ १ ॥ और त्रिपुटीकाअनुसंधानरूपअहंकृतितैंविना जो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकी मनकेवृत्तियोंकाप्रवाहहै ॥ सोप्रवाह संप्रज्ञातसमाधि कह्याजावैहै ॥ सोसंप्रज्ञातसमाधि ध्यानाभ्यासकेप्रकर्षतैं उत्पन्नहोवैहै इति ॥ अब योगशास्त्रकीरीतिसें इससंप्रज्ञातसमाधिरूपयोगके अष्टअंगोंकावर्णनकरेहैं ॥

तहां यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ यहअष्ट तासंप्रज्ञातसमाधिके अंगहोवैहैं ॥ ताकेविषेभी यमादिकपंचतौ तासंप्रज्ञातसमाधिकेबहिरंगसाधनहैं ॥ और धारणादिकतीन अंतरंगसाधनहैं ॥ अथयमवर्णनम् ॥ अहिंसा १ सत्य २ अस्तेय ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ इसभेदकरिकै सोयम पंचप्रकारका होवैहै ॥ तहां शरीर मन वाणी इनतीनोंकरिकै कोईभीप्राणीकूं पीडानहींकरणी याकानाम अहिंसाहै ॥ और यथार्थवचनकाजोउच्चारणहै ताकानाम सत्यहै ॥ और बलात्कारसे वा छलकपटसे जो परायेधनादिकोंका नहींहरणहै ताकानाम अस्तेयहै ॥ और शरीरयात्राविषेउपयोगीपदार्थोंतैं अधिकपदार्थोंका जोसंग्रहहै ताकानाम अपरिग्रह है ॥ और अष्टांगमैथुनतैं जोरहितपणाहै ताकानाम ब्रह्मचर्य है ॥ ताअष्टांगमैथुनकास्वरूप शास्त्रविषे यहकह्याहै तहांश्लोक ॥'स्मरणंकीर्त्तनंकेलिः प्रेक्षणंगुह्यभाषणं । संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिवृत्तिरेवच ॥ १ ॥ एतन्मैथुनमष्टांगं प्रवदंतिमनीषिणः । विपरीतंब्रह्मचर्यमनुष्ठेयंमुमुक्षुभिः ॥ २ ॥ सत्संगसान्निधित्यागदोषदर्शनतोभवेत् ' अर्थयह ॥ स्मरण १ कीर्त्तन २ केलि ३ प्रेक्षण ४ गुह्यभाषण ५ संकल्प ६ अध्यवसाय ७ क्रियानिवृत्ति ८ इनअष्टाकानाम अष्टांगमैथुनहै ॥ तहांभोग्यबुद्धिकारिकै स्त्रियोंका चित्तविषे चिंतनकरणा याकानाम स्मरणहै ॥ और वाणीसे तिनस्त्रियोंकेगुणोंकाकथनकरणा याकानाम कीर्त्तनहै ॥ और तिनस्त्रियोंकेसाथि द्यूतादिकक्रीडाकरणी याकानाम केलिहै ॥ और भोग्यबुद्धिकारिकै जो तिनस्त्रियोंकादेखणाहै ताकानाम प्रेक्षणहै ॥ और एकांतदेशविषे जो तिनस्त्रियोंकेसाथिभाषणहै ताकानाम गुह्यभाषणहै ॥ और तिनस्त्रियोंकेप्राप्तिकीजाइच्छाहै ताकानाम संकल्पहै ॥ और

तिनस्त्रियोंकेप्राप्तिका जो बुद्धिविषेनिश्चयकरणाहै ताकानाम अध्यवसायहै ॥ और तिनास्त्रियोंका जोसं
भोगहै ताकानाम क्रियानिर्वृत्तिहै ॥ इनअष्टोंकूं विद्वान्‌पुरुष अष्टांगमैथुन कहेहैं ॥ और इसअष्टांगमै
थुनतें जोरहितपणाहै तिसकूं ब्रह्मचर्य कहेहैं ॥ सोब्रह्मचर्य मुमुक्षुजनोंनैं अवश्यसंपादनकरणा ॥
जिसकारणतें 'यदिच्छंतोब्रह्मचर्यंचरंति सत्येनलभ्यस्तपसाह्येषआत्मा। सम्यग्ज्ञानेनब्रह्मचर्येणनित्यं अं
तःशरीरेज्योतिर्मयोहिशुभ्रोयंपश्यंतियतयःक्षीणदोषाः' इत्यादिकश्रुतियां ताब्रह्मचर्यकूंही आत्मज्ञानकात
था मोक्षका साधनकहेहैं॥ सोब्रह्मचर्य सत्संगतें सिद्धहोवैहै ॥ तथा विषयासक्तस्त्रीपुरुषोंकेसन्निधित्यागतें
सिद्धहोवैहै ॥ तथा देहकेदोषदर्शनतें सिद्धहोवैहै ॥ तहां सत्संगकूं ब्रह्मचर्यकीसाधनता आचार्योंनैं
'कातवकांताधरगतचिंता वातुलतवकिंनास्तिनियंता । त्रिजगतिसज्जनसंगतिरेका भवतिभवार्णवतरणे
नौका' इसवचनकरिकै कथनकरीहै ॥ यातैं तासत्संगकूं ब्रह्मचर्यकीसाधनता संभवैहै ॥ और देहवि
षेदोषोंकादर्शन प्रह्लादनैं कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'मांसासृक्पूयविण्मूत्रस्नायुमज्जास्थिसंहतौ ।
देहेचेत्प्रीतिमान्मूढो भवितानरकेपिसः' अर्थयह ॥ मांस रुधिर पूय विष्ठा मूत्र नाडी मज्जा अस्थि इत्या
दिकमलिनपदार्थोंकासमूहरूप जोयहदेहहै ॥ तादेहविषे जोमूढपुरुष प्रीतिवालाहै ॥ सोमूढपुरुष नरक
विषेभी प्रीतिवालाहोवैगा इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ भगवान्‌नैंभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'स्वदेहाशु
चिगंधेन नविरज्येत यःपुमान् । वैराग्यकारणंतस्य किमन्यदुपदिश्यते' अर्थयह जोपुरुष आपणेदेहके
अशुचिगंधकरिकै वैराग्यकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं दूसरा वैराग्यकाकारण क्याउपदेशकरणा
इति ॥ इसप्रकार आपणेदेहके तथास्त्रीकेदेहके दोषोंकूंचिंतनकरणेहारेपुरुषकूं तादेहविषे रागहोवैनहीं ॥

यातैं तादोषदर्शनकूं ब्रह्मचर्यकी साधनता संभवे है ॥ इसप्रकार तासन्निधित्यागकूंभी ताब्रह्मचर्यकी साधनताहै॥याकारणतैंही स्मृतिनैं मुमुक्षुजनकेप्रति स्त्रीकेसंभाषणादिकोंका निषेधकऱ्याहै॥तहां श्लोक क ॥ 'नसंभाषेत्स्त्रियंकांचित्पूर्वदृष्टांचनस्मरेत्॥कथांचवर्जयेत्तासां नपश्येल्लिखितामपि' अर्थयह ॥ यह मुमुक्षुजन किसीभीस्त्रिकेसाथी संभाषण नहींकरे॥तथा पूर्वदेखीहुईस्त्रीका चित्तविषेस्मरणभी नहींकरे ॥ और तिनस्त्रियोंकीकथाकाभी परित्यागकरे ॥ तथा चित्रकीलिखीहुईस्त्रीकूंभी नहींदेखै इति ॥१॥ अथ नियमवर्णनं ॥ सोनियम शौच १संतोष २तप ३स्वाध्याय४ईश्वरप्रणिधान५इसभेदकरिकै पंचप्रकार का होवैहै ॥ तहां शौच अंतर १बाह्य २इसभेदकरिकै दोप्रकारका होवैहै ॥ तहां मैत्रीकरुणादिकोंकरि कै अंतःकरणकूं रागद्वेषादिकोंतैंरहितकरणा याकानाम अंतरशौचहै ॥ और जलमृत्तिकादिकोंकरिकै श रीरकूंशुद्धकरणा याकानाम बाह्यशौचहै और यथालाभविषे जाप्रसन्नताहै ताकानाम संतोषहै ॥ और हित मित पवित्र ऐसेअन्नका जोभोजनहै ताकानाम तपहै और प्रणवादिकपवित्रमंत्रोंका जोजपहै ताकानाम स्वाध्यायहै॥ और अनुष्ठानकऱ्येहुएनित्यादिककर्मोंका जो परमेश्वरविषे समर्पणहै ताकानाम ईश्वरप्रणिधानहै इति॥ २ ॥ अथ आसनवर्णनम्॥ ताआसनका स्वरूपतथासाधन तथाफल पूर्व वर्णन करिआये हैं ॥ सो इहांभीजानिलेणा ॥ सोउक्तआसन शारीरक १ बाह्य २ इसभेदकरिकै दोप्रकारका होवैहै ॥ तहां पद्म स्वस्तिक भद्र इत्यादिकआसन शारीरकआसन कह्याजावैहै ॥ इनआसनोंकास्व रूप आत्मपुराणकेअष्टमअध्यायविषे हमनैं निरूपणकऱ्याहै ॥सो तहांसेजानिलेणा ॥ और सर्वउपद्र वोंतैंरहित एकांतदेशविषे जो कुशा मृगचर्म वस्त्रादिरूपआसनहै सो बाह्यआसन कह्याजावैहै इति ॥

॥ ३ ॥ अथ प्राणायामवर्णनम् ॥ सोप्राणायाम पूरक १ रेचक २ कुंभक ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकार का होवैहै ॥ यहप्राणायाम पूर्व वर्णनकरिआयेहैं ॥ सो इहांभीजानिलेणा इति ॥ ४ ॥ और चक्षुआदिकइंद्रियोंका जो रूपादिकविषयोंतैंनिवारणहै ताकानाम प्रत्याहारहै इति ॥ ५ ॥ इनयमादिकपंच बहिरंगसाधनोंकेसिद्धहुएतैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषनैं तासंप्रज्ञातसमाधिके धारणा ध्यान समाधि इनतीनअंतरंगसाधनोंविषे प्रयत्नकरणा ॥ तहां बहिरंगसाधनोंकेसंपादनपूर्वक अंतरंगसाधनोंकासंपादनकरणा यहशास्त्रउक्तअनुक्रम अजितचित्तपुरुषकेवासतैंहै ॥ और जिसपुरुषकूं पूर्वजन्मकेपुण्यपरिपाकवशतैं अंतःकरणकीशुद्धिहुए प्रथमही तेधारणादिकअंतरंगसाधन प्राप्तहुएहैं ॥ तिसपुरुषनैं तिनयमादिकपंचबहिरंगसाधनोंविषे पुनःप्रयत्न करणानहीं इति ॥ अथ धारणावर्णनम् ॥ तहां मूलाधार १ मणिपूरक २ स्वाधिष्ठान ३ अनाहत ४ आज्ञा ५ विशुद्ध ६ इनषट्चक्रोंविषे किसीएकचक्रविषे जोचित्तकास्थानहै ॥ अथवा प्रत्यक्आत्माविषे जोचित्तकास्थापनहै अर्थात् तिसएकप्रत्यक्आत्माका जोस्मरणहै ताकानाम धारणाहै ॥ इनषट्चक्रोंकास्वरूप आत्मपुराणके एकादशअध्यायविषे विस्तार तैंनिरूपणकऱ्याहै ॥ सो तहांसेजानिलेणा इति ॥६॥ अथ ध्यानवर्णनम्॥तहां चैतन्यरूपलक्ष्यवस्तुविषे जो सजातीयवृत्तियोंका प्रवाहकरणाहै ताकानाम ध्यानहै ॥ सो सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहभी दोप्रकारका होवैहै ॥ एकतौ विजातीयवृत्तियोंकरिकै विच्छिन्न होवैहै ॥ और दूसरा विजातीयवृत्तियोंकरिकै अविच्छिन्न होवैहै ॥ तहां प्रथमप्रवाहतौ ध्यान कह्याजावैहै ॥ और दूसराप्रवाह समाधि कह्याजावैहै ॥ तहां सोसमाधिभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ कर्त्ता कर्म करण इसात्रिपुटीकेअनुसंधानपूर्वक

होवैहै ॥ और दूसरा तात्रिपुटीकेअनुसंधानतैंरहित होवैहै ॥ तहां प्रथमसमाधितौ अंगरूपसमाधि कह्याजावैहै ॥ और दूसरासमाधि अंगीरूपसमाधि कह्याजावैहै ॥ तहां साधनकानाम अंगहै ॥ और फलकानाम अंगीहै इति ॥ ८ ॥ अब तासमाधिकेविघ्नोंकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां संप्रज्ञातसमाधिकीउत्पत्तिविषे लय १ विक्षेप २ कषाय ३ रसास्वाद ४ यहचारिविघ्नहोवैहैं तिनविघ्नोंकेविद्यमानहुए सोसंप्रज्ञातसमाधि होतानहीं ॥ तहां निद्राकानाम लयहै ॥ और विषयोंका जोपुनःपुनःअनुसंधानहै ताकानाम विक्षेपहै ॥ और रागद्वेषादिकोंकरिकै जो चित्तका स्तब्धीभावहै ताकानाम कषायहै ॥ और समाधिकेआरंभकालविषे जो सविकल्पआनंदका आस्वादनहै ताकानाम रसास्वादहै इति ॥ अब श्रीगौडपादाचार्यकेवचनोंकरिकै तिनलयादिकविघ्नोंकेनिवृत्तिकाउपाय वर्णनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ 'लयेसंबोधयेच्चित्तं विक्षिप्तंशमयेत्पुनः।सकषायंविजानीयात्समप्राप्तंनचालयेत् ॥१॥ नास्वादयेद्रसंतत्र निःसंगःप्रज्ञयाभवेत्' अर्थयह॥योगाभ्यासकरतेहुए इसपुरुषकाचित्त जभी निद्रारूपलयकेसन्मुखहोवै। तभी सोअभ्यासवान्पुरुष प्राणायामकरिकै तथानिद्राशेषकीनिवृत्तिकरिकै तथास्वल्पभोजनादिकों करिकै ताचित्तकूं निद्रातैंजाग्रत्करै ॥ और विक्षेपकूंप्राप्तहुएचित्तकूं विषयोंविषेदोषदर्शन ब्रह्मकाचिंतन सत्संगउपासना आदिकउपायकरिकै एकाग्रकरै ॥ अर्थात् ताविषयचिंतनरूपविक्षेपतैंरहितकरै ॥ तहां ब्रह्मकेचिंतनतैं चित्त विक्षेपतैंरहितहोवैहै यहवार्त्ता भगवान्नैंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ ' विषयान्ध्यायतश्चित्तं विषयेषुविषज्जते। मामनुस्मरतश्चित्तं मय्येवप्रविलीयते' अर्थयह ॥ विषयोंकूंचिंतनकरणेहारेपुरुषकाचित्त तिनविषयोंविषेही संबंधवाला होवैहै। और मैं परमेश्वरकूंस्मरणकरणेहारेपुरुषका

चित्त मैंपरमेश्वरविषेही लयहोवैहै इति ॥ किंवा सत्संगकूं विक्षेपकेनिवृत्तिकीकारणता वसिष्ठभगवान्नें कथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ 'संतःसदैवगंतव्याः यद्यप्युपदिशंतिन। याहिस्वैरकथास्तेषामुपदेशाभवंति ताः' अर्थयह ॥ इसमुमुक्षुजननैं महात्माजनोंकेसमीप सर्वदा गमनकरणा ॥ यद्यपि तेमहात्माजन इसमुमुक्षुकेप्रति साक्षात्उपदेश नहींकरतेहोवैं ॥ तथापि तिनमहात्माजनोंकी जेस्वाभाविककथाहैं ॥ तेकथाही इसमुमुक्षुकेप्रति उपदेशरूप होवैहैं इति ॥ किंवा आचार्योंनेभी 'संगःसत्सुविधीयतां भगवतोभक्तिर्दृढाधीयतां' इत्यादिकवचनकरिकै तासत्संगकीकर्त्तव्यता कथनकरीहै ॥ इसप्रकार विक्षेपकूं निवृत्तकरिकै पश्चात् कषायसहितचित्तकूंजानिकै ताकषायकीभीनिवृत्तिकरै ॥ और समब्रह्मविषेप्राप्त हुएचित्तकूं ताब्रह्मतैंचलायमान नहींकरै ॥ और समाधिकेआरंभकालविषे प्राप्तहुए सविकल्पकआनंदकूंभी आस्वादन नहींकरै ॥ किंतु उदासीनब्रह्मप्रज्ञाकरिकैयुक्तहोवैहै इति ॥ इसप्रकारकेउपायोंकरिकै जभी तेलयादिकविघ्न निवृत्तहोवैहैं ॥ तभी सोसंप्रज्ञातसमाधि उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकार संप्रज्ञातसमाधिकेअभ्यासकरिकै जभी मन प्रत्यक्आत्माविषे एकाग्रताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तभी तामनविषे एकऋतंभरानामाप्रज्ञा उत्पन्नहोवैहै ॥ तहां अतीत अनागत दूर व्यवहित सूक्ष्म इत्यादिकसर्वपदार्थोंकूं विषयकरणेहारा जो योगीकाप्रत्यक्षहै ताकानाम ऋतंभराप्रज्ञाहै ॥ ऐसीऋतंभराप्रज्ञाविषेस्थितयोगीकूं निर्विकल्पकसमाधि प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं ताऋतंभराप्रज्ञाकूंभी निरोधकरिकै तासंप्रज्ञातसमाधिकेअभ्यासकूं करणेहारेयोगीकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोइके परवैराग्य उत्पन्नहोवैहै ॥ तापरवैराग्यकास्वरूप पूर्व द्वितीयपरिच्छेदविषे कथनकरिआयेहैं ॥ तिसपरवैराग्यतैंअनंतरभी इसपुरुषकूं अभ्यास करणेयोग्यहै

तहां किसीभीउपायकरिकै मैं सर्ववृत्तियोंकेनिरोधरूपअसंप्रज्ञातसमाधिविषे स्थितहोवों याप्रकारका जो उत्साहरूपप्रयत्नहै ताकानाम अभ्यासहै ॥ यहहीअभ्यासकालक्षण पतंजलिभगवान्नैं योगसूत्रोंविषे 'तत्रस्थितौप्रयत्नोऽभ्यासः' इससूत्रकरिकै कथनकर्‍याहै ॥ ताउत्साहरूपप्रयत्नकेभीनिरोध हुए सर्ववृत्तियोंकानिरोधहोवै है ॥ सो सर्ववृत्तियोंका निरोधही असंप्रज्ञातसमाधि कह्याजावैहै ॥ ॥शंका॥ ॥ ताउत्साहरूपप्रयत्नकेनिरोधविषे दूसराकोईसाधनहै अथवा नहीं है॥ तहां जोप्रथमपक्षअंगीकारकरोगे तौ अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैगी ॥ काहेतैं ताउत्साहरूपप्रयत्नकेनिरोधवासते अंगीकारकर्‍या जोदूसरासाधन है॥ ताकेविद्यमानहुए सोअसंप्रज्ञातसमाधि होवैगानहीं॥ यातैं तासाधनकेनिरोधवासतै कोईतीसरासाधन मानणाहोवैगा॥ तातीसरेसाधनकेनिरोधवासतै कोईचतुर्थसाधन मानणाहोवैगा॥इसप्रकार आगेआगे साधनोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्ति होवैगी॥ और ताप्रयत्नकेनिरोधका कोईसाधन नहीं है यहद्वितीयपक्ष जोअंगीकारकरोगे तौ साधनतैंविना ताप्रयत्नकानिरोधही नहींसंभवैगा॥ और जोकहो सोप्रयत्न आपही आपकानिरोधक होवैहै॥ सोभी संभवतानहीं॥ काहेतैं आपणेकरिकैआपणानिरोध अत्यंतविरुद्धहै॥ और लोकविषेभी ऐसादेखणेविषेआवतानहीं॥ ॥समाधान॥ ॥ सोउत्साहरूपप्रयत्न सर्ववृत्तियोंकेनिरोधकूंकरताहुआ आपणेनिरोधकूंभी आपहीकरैहै जैसे कतकरज जलकेमृत्तिकाकूंनिवृत्तकरिकै आपभी आपेहीनिवृत्तहोइजावैहै ॥ ताकतकरजकेनिवृत्तकरणेवासतै कोईदूसरेसाधनकीअपेक्षा होतीनहीं॥ तैसे ताउत्साहरूपप्रयत्नकेनिरोधकरणेवासतै कोईदूसरेसाधनकीअपेक्षा होतीनहीं॥ यातैं अनवस्थादोषकी तथादृष्टविरोधदोषकी

प्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा यहउक्त असंप्रज्ञातसमाधिकास्वरूप अन्यशास्त्रविषेभी कह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥
मनसो वृत्तिशून्यस्य ब्रह्माकारतयास्थितिः ॥ असंप्रज्ञातनामासौ समाधिरभिधीयते ॥१ ॥ प्रशांतवृत्ति
कंचित्तं परमानंददीपकम् ॥ असंप्रज्ञातनामासौ समाधिर्योगिनांप्रियः' ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ सर्ववृत्तियोंतें
शून्यमनकी जा ब्रह्माकारतारूपतेंस्थितिहै सास्थितिही योगशास्त्रवेत्तापुरुषोंनें असंप्रज्ञातसमाधिना
मकरिकै कहीतीहै ॥ १ ॥ किंवा उक्तअभ्यासकरिकै निवृत्तहोइगई हैं सर्ववृत्तियांजिसकी ऐसाजोपर
मानंदकाप्रकाशक चित्तहै ॥ सोईही योगीजनोंकूंप्रिय असंप्रज्ञातसमाधिहै इति॥ अब ताअसंप्रज्ञातस
माधिका अन्यसाधनभी कहेहैं॥ सोअसंप्रज्ञातसमाधि पूर्वउक्तरीतिसैं केवल परवैराग्यतैंही नहींप्राप्तहो
वैहै ॥ किंतु ईश्वरकेप्रणिधानतैंभी सोसमाधि प्राप्तहोवैहै ॥ तहांयोगसूत्र ॥ 'ईश्वरप्रणिधानाद्वा' अर्थ
यह ॥ सोअसंप्रज्ञातसमाधि पूर्वउक्तक्रमतैंभी प्राप्तहोवैहै ॥ तथा ईश्वरप्रणिधानतैंभी प्राप्तहोवैहै ॥ अब
ताईश्वरप्रणिधानकेस्वरूपकहणेवासतै प्रथम ईश्वरकास्वरूपवर्णनकरेहैं ॥ तहांयोगसूत्र ॥'क्लेशकर्मवि
पाकाशयैरपरामृष्टपुरुषविशेषईश्वरः' अर्थयह ॥ क्लेश १ कर्म २ विपाक ३ आशय ४ इनचारोंकरि
कैअसंबद्ध जोपुरुषविशेषहै ताकानाम ईश्वरहै॥ तहां प्रथम क्लेश अविद्या १अस्मिता २ राग ३ द्वेष४
अभिनिवेश ५ इसभेदकरिकै पंचप्रकारका होवैहै ॥ सोपंचप्रकारकाक्लेश प्रथमपरिच्छेदविषे निरूपण
करिआयेहैं ॥ और कर्मतौ शुक्ल १ कृष्ण २ मिश्र ३ इसभेदकरिकै तीनप्रकारका होवैहै ॥ तहांशास्त्र
विहितपुण्यकर्मकानाम शुक्लकर्म है ॥ और शास्त्रनिषिद्धपापकर्मकानाम कृष्णकर्म॥ औरपुण्यपापदो
नोंकानाम मिश्रकर्म है ॥ यहतीनप्रकारकाकर्मतौ अयोगीपुरुषोंका होवैहै॥ और योगीपुरुषोंकातौअशु

क्लकृष्ण यहचतुर्थकर्म होवैहै॥यहउक्तअर्थ पतंजलिभगवानूनैं 'कर्माशुक्लकृष्णंयोगिनस्त्रिविधमितरेषाम्' इससूत्रकारिकै कथनकऱ्याहै ॥ और कर्मकेफलकानाम विपाकहै ॥ सोविपाक जाति १आयुष २भोग३ इसभेदकारिकै तीनप्रकारका होवैहै ॥ और ताकर्मफलकेभोगजन्य जे संस्काररूपवासनाहैं ताकानाम आशयहै ॥ ऐसे क्लेश कर्म विपाक आशय इनचारोंकारिकै संबद्धजीव होवैहैं ॥ और ईश्वरतौतिनचारों करिकैअसंबद्ध होवैहै ॥ तथा सर्वज्ञसर्वशक्तिमान्होवैहै इति॥ अब ताईश्वरप्रणिधानकास्वरूप वर्णनकरे हैं ॥ तहांयोगसूत्र ॥ 'तस्यवाचकःप्रणवः । तज्जपस्तदर्थभावनं' अर्थयह ॥ ताउक्तईश्वरकावाचकप्रण वशब्दहै ताॐकाररूपप्रणवका जो जपहै ॥ तथा मांडूक्यउपनिषदपंचीकरणवार्त्तिकउक्तप्रकारतैं ताप्रणवकेअर्थका जोचिंतनहै ॥ ताकानाम ईश्वरप्रणिधानहै ॥ सोप्रणवअर्थकेचिंतनकाप्रकार पूर्व प्रथमपरिच्छेदविषे निरूपणकरिआयेहैं इति॥ अब अन्यप्रकारतैं दृष्टांतसहित ताप्रणवशब्दकेअर्थकूंकहे हैं ॥ तहां 'तद्योऽहंसोऽसौयोऽसौसोऽहं' इसश्रुतिविषे सशब्दकारिकै परमात्माका कथनकऱ्याहै ॥ और अहंशब्दकारिकै प्रत्यक्आत्माका कथनकऱ्याहै॥ तहां सः अहं इनदोनोंशब्दोंका परस्परसामानाधिक रण्यहै ॥ यातैं तिनदोनोंशब्दोंनैं ताब्रह्मआत्माका एकत्वही कथनकरीताहै ॥ यातैं सोऽहं इसवाक्य का जैसे परमात्मा मैंहूं याप्रकारका जीवब्रह्मकाएकत्वरूपअर्थ है ॥ तैसे ताॐकाररूपप्रणवकाभी सोजीवब्रह्मकाएकत्वही अर्थहै ॥ सोदिखावैहैं॥ सोऽहं इसवाक्यविषे व्याकरणकीरीतिसे सकार हकार इनदोनोंवर्णोंकेलोपकियेहुए बाकी ॐअं ऐसावाक्य रहेहै ॥ ताकेविषेभी व्याकरणकीरीतिसे पूर्वरू पानामासंधिकरिकै अकारकेलोपकियेहुए ॐम् ऐसाशब्द सिद्धहोवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी

कहीहै ॥ तहां श्लोक॥'सकारंचहकारंच लोपयित्वाप्रयोजयेत् ॥ संधिंचपूर्वरूपाख्यं ततोऽसौप्रणवोभवेत्' अर्थयह ॥ सोहं इसवाक्यविषे सकारकूं तथाहकारकूं लोपकरिकै तिसतैंअनंतर पूर्वरूपनामासंधिकेकि येहुए तासोहंशब्दतैं ओम् यहप्रणव सिद्धहोवै है इति ॥ यातैं सोऽहंशब्दकीन्यांई ॐ इसप्रणवशब्दका भीसोपरमात्मामैंहूं यहहीअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकारके जीवब्रह्मकाएकत्वरूप प्रणवकेअर्थका जोचिं तनहै ताकानाम ईश्वरप्रणिधानहै॥इसप्रकारकेईश्वरप्रणिधानतैं इसअधिकारीपुरुषऊपरि ईश्वरकाअनुग्रह होवैहै ॥ ताईश्वरकेअनुग्रहतैं इसपुरुषकूं ताअसंप्रज्ञातसमाधिकीप्राप्ति अवश्यहोवैहै ॥ यातैं तापरवैराग्य कीन्यांई यहईश्वरप्रणिधानभी ताअसंप्रज्ञातसमाधिका साधनहै इति ॥ अथवा इसअधिकारीपुरुषनैं भूमिकाजयक्रमकरिकै तासमाधिकाअभ्यासकरणा ॥ सोभूमिकावोंकेजयकाक्रम श्रुतिविषेकथनकऱ्या है ॥ तहांश्रुति 'यच्छेद्वाङ्मनसीप्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानआत्मनि । ज्ञानमात्मनिमहति नियच्छेच्छांतआ त्मनि' अर्थयह ॥ लौकिकवैदिकसर्वशब्दोंकेउच्चारणकाहेतुरूप जोवाक्इंद्रियहै तिसवाक्इंद्रियकूं यह अधिकारीपुरुष मनविषे लयकरै ॥ अर्थात् वाकादिकइंद्रियोंकेसर्वव्यापारोंकापरित्यागकरिकै केवल मनकेव्यापारमात्रकरिकै स्थितहोवै ॥ तथापि इसअधिकारीपुरुषनैं समाधिकेउत्पत्तिकालपर्यंत प्रणवमं त्रकेजपकापरित्याग नहींकरणा ॥ किंतु ताप्रणवजपतैंअन्यवाक्व्यापारतैंरहितहोणा ॥ इसप्रकार गौमहिषादिकोंकीन्यांई जो वाणीकासम्यक्निरोधहै सोनिरोध प्रथमभूमिका कहीजावैहै ॥ १ ॥ ताप्र थमभूमिकाकेजयहुएतैंअनंतर तामनकानिरोधरूपदूसरीभूमिकाविषे प्रयत्नकरै ॥ अर्थात् तासंकल्पवि कल्परूपमनकूं ज्ञानात्मविषे लयकरै ॥ तहां मनुष्योऽहं ब्राह्मणोऽहं इत्यादिक जो विशेषअहंकारहै

ताकानाम ज्ञानात्माहै ॥ ताज्ञानात्ममात्ररूपकरिकैस्थितहोवै॥इसप्रकार सर्वसंकल्पविकल्पोंकापरित्या
गकरिकै बालमुकादिकोंकीन्यांई जा निर्मनस्ताहै सा द्वितीयभूमिका कहीजावैहै ॥ २ ॥ ताद्वितीय
भूमिकाकेजयहुएतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताविशेषअहंकारकानिरोधरूपतृतीयभूमिकाविषे प्रयत
करै ॥ अर्थात् ताविशेषअहंकारकूं महत्आत्मविषे लयकरै ॥ अर्थात् मनुष्योऽहं ब्राह्मणोऽहं इत्यादिक
विषेअहंकारकापारित्यागकरिकै अस्मितामात्र बाकीरहै ॥ तहां अहंकारकी जासूक्ष्मअवस्थाहै ताका
नाम अस्मिताहै ॥ इसीअस्मिताकूं महतत्त्व कहेहैं ॥ तथासूक्ष्मअहंकार कहेहैं इसप्रकार आलसीउदासी
नकीन्यांई जो विशेषअहंकारतैंरहितपणाहै सा तृतीयभूमिका कहीजावैहै ॥ ३ ॥ तातृतीयभूमिकाके
जयहुएतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताअस्मिताकानिरोधरूपचतुर्थभूमिकाविषे प्रयत्नकरै ॥ अर्थात्
ताअस्मितारूप महत्आत्माकूं एकरसचैतन्यरूपशांतआत्माविषेलयकरै॥अर्थात् ताअस्मिताकाभीपरि
त्यागकरिकै केवल चैतन्यमात्र बाकीरहै ॥ यद्यपि अन्यश्रुतिविषे महत्वतैं अव्यक्त परकह्याहै ॥ और
ताअव्यक्ततैं चैतन्यपुरुष परकह्याहै॥यातैं इहांभी तामहतत्त्वका अव्यक्तविषेही लयकहणा उचितथा ॥
तथापि कारणविषेनिरुद्धहुआकार्य लयकूंहीप्राप्तहोवै है ॥ यातैं ताअव्यक्तरूपकारणविषे तामह
तत्त्वरूपकार्यकेलयकरणेतैं इसपुरुषकूंनिद्राहीप्राप्तहोवैगी ॥ सोनिरोधसमाधि प्राप्तहोवेगानहीं ॥ या
कारणतैं ताअव्यक्तकापरित्यागकरिकैंतामहत्तत्वका चैतन्यआत्मविषेलयकह्याहै ॥ इसप्रकार चैतन्य
आत्माविषे जोचित्तका सर्वप्रकारतैंनिरोधहै ॥ सोनिरोधही असंप्रज्ञातसमाधिरूप चतुर्थभूमिका कही
जावैहै ॥ ४ ॥ इसप्रकार उक्तचारिभूमिकावोंविषे पूर्वपूर्वभूमिकाकेजयहुएतैंअनंतर उत्तरउत्तरभूमिका

केजयक्रमकरिकै जो समाधिकाअभ्यासहै ॥ तिसतैंभी सोअसंप्रज्ञातसमाधि प्राप्तहोवैहै इति ॥ तहां पूर्वकथनकऱ्ये जे समाधिअभ्यासकेप्रकार तिनोंविषे कोईप्रकारके समाधिअभ्यासकरिकै जो अंतःकरणकेअतिसूक्ष्मताका आपादनहै इसीकानाम मनोनाशहै ॥ और तासूक्ष्ममनकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं प्रथम त्वंपदकेलक्ष्यअर्थरूपप्रत्यक्आत्माका साक्षात्कार होवैहै॥तिसतैंअनंतर तत्त्वमसि आदिकमहावाक्यकरिकै अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका ताप्रत्यक्आत्माकेब्रह्मरूपत्वकासाक्षात्कार होवैहै ॥ इस प्रकारतैं तासमाधिअभ्यासकूंभी ब्रह्मसाक्षात्कारकीसाधनताहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ श्रीव्यासभगवानूनें ब्रह्मसूत्रोंविषे 'एतेनयोगःप्रत्युक्तः' इससूत्रकरिकै सांख्यशास्त्रकीन्याई योगशास्त्रकाभी खंडन कऱ्याहै ॥ और सोपूर्वउक्त समाधिकाअभ्यास योगशास्त्रविषेही कथनकऱ्याहै ॥ यातैं तासमाधिअभ्यासकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीसाधनतामानणेविषे ताव्यासमूत्रका विरोधहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सांख्यशास्त्रकीन्यांई योगशास्त्रवालेभी अचेतनप्रधानकूंही महत्तत्त्वादिक्रमकरिकै जगत्काकारण मानेहैं ॥ सोप्रधानकारणवाद सिद्धांतविषे अंगीकारहैनहीं ॥ यातैं ताप्रधानकारणवादके खंडनअभिप्राय करिकैही तासूत्रकारने योगशास्त्रका खंडनकऱ्याहै ॥ कोईनिरोधसमाधिरूपयोगके खंडनअभिप्रायकरिकै तायोगशास्त्रका खंडननहींकऱ्या ॥ जिसकारणतैं सिद्धांतविषेभी चित्तकेनिरोधतैंरहित विक्षिप्तपुरुषकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति संभवतीनहीं ॥ यातैं ब्रह्मसाक्षात्कारवासतैं सोचित्तकानिरोध अवश्य अपेक्षितहै ॥ किंवा 'समाध्यभावाच्च । अपिसंराधनेप्रत्यक्षानुमानाभ्यां । निदिध्यासितव्यः । विज्ञायप्रज्ञांकुर्वंति । ध्यानेनात्मनिपश्यंति । ध्यानयोगेनसंपश्यन्नात्मन्यात्मानमात्मना' इत्यादिक सूत्र श्रुति

स्मृति वचनोंकरिकैभी तानिरोधरूपयोगकूं ब्रह्मसाक्षात्कारकीसाधनता सिद्धहोवैहै ॥ यातैं महावाक्य जन्यब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिविषे सोसमाधिअभ्यास अवश्यअपेक्षितहै ॥ ॥शंका॥ ॥तासमाधिकूं जोब्रह्मसाक्षात्कारका साधनमानोंगे ॥ तौ तासमाधितैंरहितपुरुषोंकूं सोब्रह्मसाक्षात्कार नहींहोणाचाहिये ॥ और वासिष्ठादिकग्रंथोंविषे जनकादिकोंकूं तासमाधितैंविनाही केवल सिद्धगीताकेश्रवणमात्रतैं ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ सोसर्व असंगत होवैगा ॥ ॥समाधान॥ ॥ केवल समाधिकरिकैही सोब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै यहनियम नहीं है ॥ किंतु विवेककरिकैभी सोब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ तहां अंतःकरणका तथाताअंतःकरणकेवृत्तियोंका प्रकाशक जो त्वंपदकालक्ष्यअर्थरूप प्रत्यक्साक्षीहै ॥ तासाक्षीआत्माकूं अन्नमयादिकपंचकोशोंतैंपृथक्करिकैनिश्चयकरणा याकानाम विवेकहै ॥ ताविवेककरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यतैं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका ब्रह्मसाक्षात्कार अवश्यहोवैहै ॥ यातैं तासमाधिकीन्यांई सोविचाररूपविवेकभी ताब्रह्मसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ इहां यहतात्पर्यहै ॥ ताब्रह्मसाक्षात्कारके दोप्रकारकेअधिकारी होवै हैं ॥ एकतौ बहुव्याकुलचित्तवाले होवैहैं ॥ और दूसरे अव्याकुलचित्तवाले होवैहैं ॥ तहां प्रथमअधिकारियोंकूंतौ तानिरोधसमाधिकेअभ्यासतैंही सोब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ और दूसरेअधिकारियोंकूंतौ तासमाधिकेअभ्यासतैंविनाही केवल विचारमात्रकरिकै सोब्रह्मसाक्षात्कार होवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभी कहीहै ॥ तहां श्लोक ॥ 'अव्याकुलधियांमोहमात्रेणाच्छादितात्मनाम् । सांख्यनामविचारोऽयंमुख्योझटितिसिद्धिदः' अर्थयह ॥ जिनपुरुषोंकीबुद्धि व्याकुलतातैंरहितहै तथा अज्ञानमात्रकरिकैआवृतहैंआत्माजिनोंका ॥ ॥२११॥

ऐसे पुरुषोंकूं यहसांख्यनामविचारही ब्रह्मसाक्षात्कारका मुख्यसाधनहै ॥ जिसकारणतैं सोसांख्यनामा विचार इसअधिकारीपुरुषकूं तासमाधिअभ्यासकीअपेक्षाकारिकै शीघ्रही ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरेहै इति ॥ इसप्रकार समाधिकूं तथाविचाररूपविवेककूं अधिकारीकेभेदकारिकैअर्थवत्ताहोणेतैं विकलपकारिकै ब्रह्मसाक्षात्कारकीसाधनताहै ॥ यातैं समाधितैं विना केवलविचारमात्रतैं ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकूं कथनकरणेहारेवचनोंकातथासमाधितैंब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकूंकथनकरणेहारेवचनोंका परस्परविरोध होवैनहीं ॥ किंतु उक्तअधिकारीकेभेदकरिकैं तेदोनोंप्रकारकेवचन सार्थकहैं इति ॥ किंवा यहउक्तअर्थ श्रीवसिष्ठभगवान्नेंभी कथनकर्‍याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'द्वौक्रमौचित्तनाशस्य योगोज्ञानंचराघव । योगस्तद्वृत्तिरोधोहि ज्ञानंसम्यगवेक्षणम् ॥१॥ असाध्यःकस्यचिद्योगःकस्यचिज्ज्ञाननिश्चयः ॥ प्रकारौद्वौततोदेवो जगादपरमेश्वरः ॥ २ ॥' अर्थयह ॥ हे राघव ब्रह्मसाक्षात्कारविषेउपयोगी जाचित्तकीसूक्ष्मता है ॥ तासूक्ष्मताकाआपादनरूप जोचित्तकानाशहै ॥ ताचित्तनाशके दोकारण होवैं हैं ॥ एकतौ योगकारणहोवैहै ॥ और दूसरा विवेक कारणहोवै है ॥ तहां चित्तकेसर्ववृत्तियोंका जोनिरोधहै ताकानाम योगहै ॥ और अन्नमयादिकपंचकोशोंतैं प्रत्यक्आत्माकूं जो पृथक्कारिकेदेखणाहै ताकानाम विवेक है ॥ तिनदोनोंउपायोंविषे किसीअधिकारीकूंतौ सोयोग कठिनपड़ैहै ॥ और सोविवेक सुगमपडैहै ॥ और किसीअधिकारीकूंतौ सोविवेक कठिनपडैहै ॥ और सोयोग सुगमपड़ैहै॥इसीकारणतैं गीताविषे श्रीभगवान् ताअधिकारीकेभेदतैं तेदोनोंप्रकार कथनकरताभयाहै ॥ तहां गीताकेतृतीयअध्यायविषे 'इंद्रियाणिपराण्याहुः' इसवचनतैंलेके 'कामरूपंदुरासदम्' इसवचनपर्यंत श्रीभगवान् ताविवेकरू

पउपायकूं कथनकरताभयाहै ॥ और गीताकेषष्ठअध्यायविषे तायोगरूपउपायकूं कथनकरताभयाहै ॥
और गीताकेपंचमअध्यायविषे 'यत्सांख्यैःप्राप्यतेस्थानं तद्योगैरपिगम्यते' इत्यादिकवचनकरिकै
ताविवेकरूपसांख्यविचारकूं तथायोगकूं एकहीफलकीसाधनता कथनकरताभयाहै इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥
तायोगाभ्यासकरिकैसाध्यमनोनाशकूं जो ब्रह्मसाक्षात्कारकाहेतुमानोंगे ॥ तौ तामनोनाशकरिकै ब्रह्म
साक्षात्कारकीउत्पत्तितैं अनंतर इसविद्वान्पुरुषकूं सर्वबंधकीनिवृत्तिहोइकै कृत्यकृत्यताही होवैगी ॥
ऐसेविद्वान्पुरुषकूं पुनः वासनाक्षयादिकोंकेअभ्यासकरणेका कोईप्रयोजन नहीं है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥
जिसअधिकारीपुरुषकूं तायोगाभ्यासपूर्वक महावाक्यतैं ब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नभयाहै ॥ तिसतत्त्ववेत्ता
पुरुषकूंतौ ताब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर तातत्त्वज्ञानवासनाक्षयमनोनाशकेअभ्यासकीअपेक्षाहोतीनहीं ॥
परंतु जिसअधिकारीपुरुषकूं ताविवेकपूर्वक महावाक्यतैं सोब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नभयाहै ॥ तिसपुरु
षकूं ताब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर प्रारब्धभोगकरिकैआपादित कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूपबंध प्रतीतहोवैहै ॥
बंधप्रतीतिकेनिवृत्तकरणेवासतै सोतत्त्वज्ञानवासनाक्षयमनोनाशकाअभ्यास अवश्यअपेक्षितहै ॥ तिन
तीनोंकेअभ्यासतैंही तिसपुरुषकूं जीवन्मुक्ति सिद्धहोवैहै ॥ यातैं तत्त्वज्ञान वासनाक्षय मनोनाश यह
तीनों ताजीवन्मुक्तिकेसाधनहैं यह सिद्धभया ॥ इतनैकहणेकरिकै साधनोंकेअभावतैं ताजीवन्मुक्तिका
अभावहै यहवादीकाकहणा खंडनहुआ इति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिकेप्रयोजनका वर्णनकरेहैं ॥ तहां
ताजीवन्मुक्तिके ज्ञानरक्षा १ तप २ विसंवादाभाव ३ दुःखनिवृत्ति ४ सुखाविर्भाव ५ यहपंच प्रयोजन
होवैहैं ॥ तहां उत्पन्नभयाहै ब्रह्मसाक्षात्कार जिसकूं ऐसाजो तत्त्ववेत्तापुरुषहै॥ तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं जो

पुनःसंशयविपर्ययकीअनुत्पत्तिहै ताकानाम ज्ञानरक्षाहै ॥ साज्ञानरक्षा जीवन्मुक्तिकेअभ्यासतैंही सिद्ध होवैहै ॥ यातैं ताज्ञानरक्षाकूं जीवन्मुक्तिकाप्रयोजनपणा संभवैहै ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसपुरुषकूं वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणकरिकै ब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नभयाहै ॥ तिसपुरुषकूं तासाक्षात्कारतैंअनंतर सोसंशय विपर्यय प्राप्तहीनहीं है ॥ और प्राप्तवस्तुकाही निषेधहोवैहै ॥ अप्राप्तवस्तुका निषेध होतानहीं ॥ यातैं सोज्ञानरक्षारूप जीवन्मुक्तिकाप्रयोजन संभवतानहीं ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि शास्त्रप्रमाणविषे कुशल जेमुख्यअधिकारी हैं ॥ तिनोंकूं ताब्रह्मसाक्षात्कारतैंअनंतर सोसंशयविपर्यय संभवतानहीं ॥ तथापि अन्यअधिकारियोंकूं निमित्तकेवशतैं सोसंशयविपर्यय संभवैहै ॥ तहां भ्रांतपुरुषोंकेवचनही तासंशयविपर्ययविषे निमित्तहैं ॥ सोदिखावै हैं ॥ तहां कैएकभ्रांतपुरुषतौ यहकहैहैं जेपुरुष आपणेकूंब्रह्मज्ञानी माने हैं ॥ तिनपुरुषोंविषेभी अज्ञानीपुरुषोंकीन्यांई मनुष्योऽहं ब्राह्मणोऽहं याप्रकारकाव्यवहार देखणेविषेआवै है ॥ तथा रागद्वेषादिकभी देखणेविषेआवैहैं ॥ जोकदाचित् इसपुरुषकूं वेदांतश्रवणादिकोंतैं ब्रह्मका अपरोक्षसाक्षात्कार होता तौ तेरागद्वेषादिक नहींहोते ॥ यातैं तिनश्रवणादिकोंतैं इस पुरुषकूं आपातज्ञानही होवैहै ॥ इसप्रकारके भ्रांतवाचालपुरुषोंकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै ताअन्युत्पन्नअधिकारीकूं उत्पन्नहुएसाक्षात्कारविषेभी संशयविपर्यय होइजावैहै ॥ और कैएकभ्रांतपुरुषतौ ऐसाकहे हैं ॥ मरणपर्यंत वेदांतकेश्रवणादिकोंकरिकैभी इसपुरुषकूं ब्रह्मका अपरोक्षज्ञान होतानहीं ॥ किंतु तिन वेदांतवाक्योंतैं इसपुरुषकूं परोक्षज्ञानही उत्पन्नहोवैहै ॥ जिसकारणतैं तिनपुरुषोंविषे तापरोक्षज्ञानकाही चिह्न देखणेविषेआवैहै ॥ अपरोक्षज्ञानका कोईचिह्न देखणेविषेआतानहीं ॥ किंवा जोकदाचित्

इसपुरुषकूं इदानींकालविषेभी सोब्रह्मसाक्षात्कार होताहोवै तौ तासाक्षात्कारकरिकै आवरणसहित
अज्ञानकेनिवृत्तहुए ताज्ञानवान्पुरुषकूं ईश्वरकीन्यांई सर्वज्ञतादिक होणेचाहिये ॥ जिसकारणतैं शुकस
नकादिकपूर्वज्ञानियोंविषे ईश्वरकीन्यांई तेसर्वज्ञतादिकधर्म शास्त्रतैंप्रतीतहोवैहैं ॥ और जोकोईऐसाक
हे ॥ तेसर्वज्ञतादिक तपका वा योगका फलहै ॥ ज्ञानका फलनहीं है तेशुकसनकादिकज्ञानी तपयोग
वालेहुएहैं ॥ यातैं तिनोंविषे सर्वज्ञतादिक होतेभयेहैं ॥ और इदानींकालकेज्ञानवान् तातपयोगतैंरहि
तहैं ॥ यातैं तिनोंविषे तेसर्वज्ञतादिकधर्म नहीं हैं ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं तपयोग
वालेपुरुषोंकूंही आत्मज्ञान होवैहै ॥ तातपयोगतैंरहितपुरुषोंकूं सोआत्मज्ञानही होतानहीं ॥ यातैं
इदानींकालविषे श्रवणादिकोंतैंउत्पन्नहुआज्ञान आपातरूपही होवैहै ॥ अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषेअस
मर्थज्ञानकानाम आपातज्ञानहै ॥ इसप्रकारके भ्रांतमूर्खलोगोंकेवचनोंकूंश्रवणकारिकै ताअव्युत्पन्नअधि
कारीकूं उत्पन्नहुएसाक्षात्कारविषेभी संशयविपर्यय होइजावैहै ॥ और जभी तेअधिकारीपुरुष ब्रह्मसा
क्षात्कारतैंअनंतर पूर्वउक्तरीतिसे ताजीवन्मुक्तिकाअभ्यास करेहैं ॥ तभी तिनअधिकारीपुरुषोंकूं तिन
भ्रांतपुरुषोंकासंगही होतानहीं ॥ यातैं तेसंशयविपर्यय उत्पन्नहोतेनहीं ॥ यहही ताज्ञानकीरक्षाहै ॥
यातैं ताज्ञानरक्षाकूं जीवन्मुक्तिकाप्रयोजनपणासंभवैहै ॥ किंवा अस्मदादिकअकृतोपास्तिपुरुषोंकूंब्रह्म
साक्षात्कारतैंअनंतर उक्तनिमित्ततैं तेसंशयादिकहोवै हैं इसवार्त्ताविषे कोईआश्चर्यनहीं है ॥ किंतु पूर्व
शुक राघव निदाघ भगीरथ आदिकोंकूंभी ताअपरोक्षज्ञानतैं अनंतर तेसंशयादिक होतेभयेहैं ॥ तहां
शुकदेवकूं प्रथम आपहीविवेककरिकै ब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोताभया ॥ पश्चात् ताज्ञानविषेसंशयकूंप्र

तहोइकै सोशुकदेव आपणेंव्यासपिताकेसमीपजाइकै पूँछताभया ॥ तिसशुकदेवकेप्रति सोव्यासभगवान् तिसीतत्त्वकाउपदेश करताभया ॥ तौभी ताकुशकदेवका सोसंशय नहींनिवृत्तहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोव्यासभगवान् ताशुकदेवकूं राजाजनककेसमीप भेजताभया ॥ तहां जनककेउपदेशतैं सोशुकदेव तासंशयतैंरहितहोताभया ॥ तथा निर्विकल्पकसमाधिकूंप्राप्तहोइकै मुक्तिकूंप्राप्तहोताभया ॥ यहकथा वासिष्ठरामायणविषे प्रसिद्धहै ॥ इसप्रकार निदाघादिकोंकीकथाभी पुराणादिकोंविषेप्रसिद्धहैं ॥ ॥ शंका ॥ ॥ ताज्ञानवान्पुरुषकूं सोसंशयविपर्यय रहो ॥ ताकरिकै तिसकी क्याहानिहै ॥ ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ जैसे अज्ञान मोक्षकाप्रतिबंधक होवैहै ॥ तैसे सोसंशयविपर्ययभी मोक्षकाप्रतिबंधकही होवैहै ॥ यहवार्ता श्रीभगवान्नेंभी गीताविषे 'अज्ञश्चाश्रद्दधानश्चसंशयात्माविनश्यति' इसवचनकरिकै कथनकरीहै ॥ यातैं इसविद्वान्पुरुषनें ताजीवन्मुक्तिकेअभ्यासकरिकै तासंशयविपर्ययकीनिवृत्ति अवश्यकरीचाहिये इति ॥ ॥ शंका ॥ ॥ जिसअधिकारीपुरुषकूं आत्माकातौ संशयविपरीतभावनातैंरहित दृढअपरोक्षज्ञान भयाहै ॥ और व्यवहारकीबाहुल्यताकरिकै सोपूर्वउक्त जीवन्मुक्तिकाअभ्यास भयानहीं ॥ तिसअधिकारीपुरुषका मोक्ष होवै है अथवा नहींहोवैहै ॥ तहां तिसका मोक्षहोवैहै ॥ यहप्रथमपक्ष जो अंगीकारकरो तौ ताजीवन्मुक्तिकेअभ्यासकीव्यर्थता होवैगी ॥ काहेतैं मोक्षतैंअधिक कोईपदार्थ हैनहीं सोमोक्षतौ आत्मज्ञानकरिकैही प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सोजीवन्मुक्तिकाअभ्यास व्यर्थही है ॥ और दृढअपरोक्षज्ञानवालेका मोक्ष नहींहोवैहै ॥ यहद्वितीयपक्ष जो अंगीकारकरोतौ आत्मज्ञानतैंमोक्षकीप्राप्तिकूंकथनकरणेहारे ॥ 'ज्ञानादेवतुकैवल्यं' इत्यादिकश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रका

विरोधहोवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि दृढअपरोक्षज्ञानकूं मोक्षकीप्राप्ति अवश्यहोवैहै ॥ तथापि ताजीवन्मुक्तिकेअभ्यासतैंविना दृष्टसुखकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ यातैं तादृष्टसुखकीप्राप्तिवासतैं ताज्ञानवान्‌कूंभी सोजीवन्मुक्तिकाअभ्यास संभवैहै ॥ अर्थात् सोदृष्टसुखही ताजीवन्मुक्तिकाअभ्यासका प्रयोजनहै ॥ और जीवन्मुक्तपुरुषोंकूंभी भूमिकाकीतारतम्यताकरिकै तादृष्टसुखकी तारतम्यताही होवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'आत्मक्रीडआत्मरतिः क्रियावानेवब्रह्मविदांवरिष्ठः' अर्थयह ॥ आत्माविषेहै अपरोक्षअनुभवक्रीडा जिसकी ताकानाम आत्मक्रीड है ॥ अर्थात् अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेअपरोक्षज्ञानवालेविद्वान्‌कानाम आत्मक्रीडहै ॥ इसीआत्मक्रीडविद्वान्‌कूं शास्त्रविषे ब्रह्मवित् इसनामकरिकै कथनकरेहैं ॥ और आत्माविषैहैं विजातीयवृत्तियोंकेतिरस्कारपूर्वकसाक्षात्काररूपरति जिसकी ताकानाम आत्मरतिहै ॥ अर्थात् आत्माकेआनंदका निरंतर अपरोक्षअनुभवकरणेहारेकानाम आत्मरतिहै ॥ इसीआत्मरतिविद्वानकूं शास्त्रविषे ब्रह्मविद्वर इसनामकरिकै कथनकरेहैं ॥ और ब्रह्मकेध्यानकानाम क्रियाहै ॥ सोब्रह्मकाध्यान जिसकूंप्राप्तभयाहै ताकानाम क्रियावान्‌है ॥ अर्थात् ब्रह्मात्मएकत्वविषेसमाधिवालेपुरुषकानाम क्रियावानहै ॥ इसीक्रियावान्‌विद्वान्‌कूं शास्त्रविषे ब्रह्मविद्वरीयान् इसनामकरिकै कथनकरेहैं ॥ यहब्रह्मविद्वरीयान आपकरिकै उत्थानकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु परकरिक उत्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोविद्वान्‌पुरुष आपकरिकै वा परकरिकै उत्थानकूंप्राप्तहोवैहै सोविद्वान्‌पुरुष ब्रह्मविदांवरिष्ठ इसनामकरिकै कह्याजावैहै इति ॥ तहां ब्रह्मवित् १ ब्रह्मविद्वर २ ब्रह्मविद्वरीयान ३ ब्रह्मविद्वरिष्ठ ४ यह श्रुतिउक्तचारोंविद्वान् वसिष्ठभगवानने ज्ञानकीसप्तभूमिकावोंविषे चतुर्थभूमिकातैंलैके यथा

क्रमतैं कथनकरियेहैं ॥ तेसप्तभूमिकायहहैं ॥ श्लोक ॥ 'ज्ञानभूमिःशुभेच्छास्यात्प्रथमासमुदाहृता। विचारणाद्वितीयास्यात्तृतीयातनुमानसा ॥१॥ सत्त्वापत्तिश्चतुर्थीस्यात्ततोऽसंसक्तिनामिका । पदार्थाभाविनी षष्ठीसप्तमीतुर्यगास्मृता' ॥ २ ॥ अर्थयह शुभइच्छा १ विचारणा २ तनुमानसा ३ सत्त्वापत्ति ४ असंसक्ति ५ पदार्थाभाविनी ६ तुरीया ७ यहसप्त ज्ञानकीभूमिका कहीजावे हैं ॥ तिनसप्तभूमिकावों विषे प्रथम शुभइच्छातौ श्रवणरूपहै ॥ और दूसरी विचारणा मननरूपहै ॥ और तीसरी तनुमानसा निदिध्यासनरूपहै॥ताश्रवणमनननिदिध्यासनकास्वरूप पूर्व द्वितीयपरिच्छेदविषे कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं तेतीनोंभूमिका साधनरूपहैं ॥ और सत्त्वापत्तिनामाचतुर्थभूमिकाविषे इसपुरुषकूं ब्रह्मसाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं ताचतुर्थीभूमिकाविषेस्थितपुरुषकूं ब्रह्मवित् कहेहैं ॥ और पंचमीआदिक भूमिकाविषेस्थित ज्ञानवान् पुरुषोंकूं चित्तकेविश्रांतिकीतारतम्यताकरिकै तादृशसुखकीभी तारतम्यता होवैहै ॥ यातैं पंचमीभूमिकावालातौ ब्रह्मविद्वर कह्याजावैहै ॥ और षष्ठीभूमिकावाला ब्रह्मविद्वरीयान् कह्याजावैहै ॥ और सप्तमीभूमिकावाला ब्रह्मविद्वरिष्ठ कह्याजावैहै ॥ तहां ब्रह्मविद्वर १ ब्रह्मविद्वरीयान् २ ब्रह्मविद्वरिष्ठ ३ यहतीनों जीवन्मुक्त कह्येजावैहैं ॥ तहाँ 'भूयश्चांतेविश्वमायानिवृत्तिः। ज्ञानेनतुतदज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः' इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंनैं अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेब्रह्मज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्ति कथनकरीहै ॥ और 'ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति। ब्रह्मविदाप्नोतिपरं । ज्ञानीत्वात्मैवमेमतं' इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंनैं ब्रह्मज्ञानतैं ब्रह्मभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक जाब्रह्मभावकीप्राप्तिहै तिसीकानाम मोक्षहै ॥ सोमोक्ष ब्रह्मवित् १ ब्रह्मविद्वर २ ब्रह्मविद्वरीयान् ३

ब्रह्मविद्वरिष्ठ ४ इनचारोंकूं समानही होवैहै ॥ तामोक्षविषे किंचित्मात्रभी विलक्षणता नहीं है ॥ परंतु सोदृष्टसुख तारतम्यताकरिकैहोवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यग्रंथविषेभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'तारतम्येनस र्वेषांचतुर्णांसुखमुत्तमम् । तुल्याचतुर्णांमुक्तिःस्याद्दृष्टसौख्यंविशिष्यते' अर्थयह ॥ ब्रह्मविदादिकचारोंकूं तारतम्यताकरिकै सुखहोवै है ॥ और मुक्तितौ चारोंकूं समान होवैहै ॥ तामुक्तिविषे किंचित्मात्रभी विशेषताहोतीनहीं ॥ किंतु तादृष्टसुखविषेही विशेषता होवैहैइति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिके तपरूपद्वितीय प्रयोजनका निरूपणकरेहैं ॥ तहां चित्तकीजाएकाग्रताहै ताकानाम तपहै ॥ यहतपकास्वरूपस्मृति विषेभी कथनकर्‍याहै॥तहांश्लोक॥'मनसश्चेन्द्रियाणांच ह्यैकाग्र्यंपरमंतपः । सज्यायःसर्वधर्मेभ्यःसधर्मः परउच्यते' अर्थयह ॥ मनका तथा चक्षुआदिकइंद्रियोंका जोएकाग्रपणाहै यहही परमतपहै ॥ और योगवेत्तापुरुषोंनेंभी सोचित्तकीएकाग्रतारूपधर्महीं अग्निहोत्रादिकसर्वधर्मोंतैं श्रेष्ठ कहीताहै इति ॥ इसीएकाग्रतारूपयोगकूं गीताविषे श्रीभगवान्नें'तपस्विभ्योऽधिकोयोगी ज्ञानिभ्योऽपिमतोऽधिकः । कर्मिभ्यश्चाधिकोयोगी तस्माद्योगीभवार्जुन' इसवचनकरिकै सर्वधर्मोंतैं अधिक कह्याहै ॥ ॥ शंका ॥ प्रारब्धकर्मकेभोगकरिकै विक्षिप्तचित्तवाला जोज्ञानवान्है ॥ तिसकूं सोचित्तकीएकाग्रतारूपतप कैसे होवैगा ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ यद्यपि चतुर्थभूमिकावाले ज्ञानवान्पुरुषकूंभी प्रपंचकेमिथ्यात्वनिश्च यकरिकै तथाचैतन्यआत्माकेसत्यत्वनिश्चयकरिकै साचित्तकीएकाग्रता विद्यमानहै ॥ तथापि ताज्ञान वान्कूं प्रारब्धकर्मकेभोगकालविषे बाधितानुवृत्तिकरिकै नामरूपात्मकप्रपंचकीप्रतीति होवैहै ॥ यातैं ताज्ञानवान्कूं निरंकुश चित्तकीएकाग्रता संभवतीनहीं ॥ और जीवन्मुक्तज्ञानवान्कातौ योगाभ्यास

करिकै मन नष्टहोइगयाहै ॥ यातैं ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं सर्ववृत्तियोंकेअनुदयतैं सा निरंकुश चित्तकीए काग्रता संभवैहै ॥ सोनिरंकुशचित्तकीएकाग्रतारूपतपही ताजीवन्मुक्तिका प्रयोजनहै ॥ ॥ शंका ॥ सोजीवन्मुक्तपुरुषोंकातप किसविषे उपयोगी है ॥ ॥ समाधान ॥ ॥ सोजीवन्मुक्तोंकातप लोक संग्रहवासतैं होवैहै ॥ तहां आप सदाचारविषेप्रवृत्तहोइकै लोकोंकूंभी तासदाचारविषेप्रवृत्तकरणा याका नाम लोकसंग्रहहै ॥ तालोकसंग्रहवासतैंही ताविद्वान्पुरुषके तपादिकहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता गीताविषे श्रीभगवान्नेंभी 'लोकसंग्रहमेवापिसंपश्यन्कर्त्तुमर्हसि' इसवचनकरिकै कथनकरीहै ॥ तहां तासं ग्रहकाअधिकारीलोक शिष्य १ भक्त २ तटस्थ ३ इस भेदकरिकै तीनप्रकारका होवैहै ॥ तहां शास्त्रप्र तिपादितसतमार्गविषेवर्त्तनेहारा शिष्य कह्याजावैहै ॥ सोशिष्यतौ ब्रह्मवेत्तागुरुनेंउपदेशकऱ्येहुएमार्ग करिकै वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंतैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरताहुआ मुक्तिकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'आचार्यवान्पुरुषोवेद तस्यतावदेवचिरं यावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये' अर्थयह ॥ ब्रह्मवेत्ताआ चार्यकेशरणकूंप्राप्तहुआ शिष्यही ब्रह्मकूं साक्षात्कार करैहै ॥ और तिसज्ञानवान्पुरुषकूं तबपर्यंतही विदेहमोक्षविषे विलंबहै ॥ जबपर्यंत भोगकरिकै प्रारब्धकर्मतैंरहित नहींभया ॥ ताप्रारब्धकर्मकेनिवृत्तहु एतैंअनंतर सोज्ञानवान् विदेहमोक्षकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ और ताजीवन्मुक्तज्ञानीपुरुषका जोभक्तहै ॥ सोभक्तभी ताज्ञानवान्पुरुषकेपूजनअर्चनकरिकैतथाअन्नपानवस्त्रादिकपदार्थोंकेदेणेकरिकैमनवांछितप दार्थोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'यंयंलोकंमनसासंबिभर्ति विशुद्धसत्त्वः कामयतेयांश्चकामान् । तंलो कंजयतेतांश्चकामान् तस्मादात्मज्ञंह्यर्चयेद्भूतिकामः' अर्थयह ॥ श्रद्धाभक्तिपूर्वक शुद्धअंतःकरणतैं ज्ञान

वान्पुरुषके पूजनादिकोंकूंकरताहुआ यहभक्तजन जिसजिसलोकके प्राप्तिकीइच्छाकरेहै ॥ तथा जिन जिनपदार्थोंकेप्राप्तिकीकामनाकरेहै ॥ तिसतिसलोककूं तथातिनतिनपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातें संप दाकीइच्छावालापुरुष श्रद्धाभक्तिकरिकै ब्रह्मवेत्तापुरुषकेही पूजनादिककरै इति ॥ यहवार्त्ता स्मृतिवि षेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'यद्येकोब्रह्मविद्भुंक्ते जगत्तत्पर्यतेऽखिलम् । तस्माद्ब्रह्मविदेदेयं यद्यस्तिव स्तुकिंचन' अर्थयह ॥ जिसपुरुषकेगृहविषे एकभीब्रह्मवेत्तापुरुष जभी भोजनकरेहै ॥ तभी सर्वजगत कूं तृप्तकरेहै ॥ अर्थात् सर्वजगत्कीतृप्तिकरणेतैं जोपुण्य होवैहै सोपुण्य एकब्रह्मवेत्तापुरुषकेभोजन करावणेतैं होवैहै ॥ यातें इसपुरुषकेपास जोकोईअन्नवस्त्रादिकप्रियवस्तुहोवै ॥ सोवस्तु इसपुरुषने ताब्र ह्मवेत्तापुरुषकेताईही देणायोग्यहै इति यहवार्त्ता अन्यस्मृतिविषेभी कही है ॥ तहांश्लोक ॥ 'यत्फ लंलभतेमर्त्यःकोटिब्राह्मणभोजनैः।तत्फलंसमवाप्नोति ज्ञानिनंयस्तुभोजयेत्॥ज्ञानिभ्योदीयतेयच्च तत्को टिगुणितंभवेत्' अर्थयह ॥ यहजीव कोटिब्राह्मणोंकेभोजनकरावणेकरिकै जिसफलकूं प्राप्तहोवैहै तिस फलकूं यहपुरुष एकज्ञानवान् पुरुषकेभोजनकरावणेकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ और ज्ञानवान्पुरुषकेताई जोव स्तु दियाजावैहै ॥ सो कोटिगुणाअधिक होवैहै इति ॥ इत्यादिक अनेकश्रुतिस्मृतिवचन ज्ञानवान् पुरुषकीसेवातैं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिकूं कथनकरेहैं इति ॥ और तटस्थपुरुषतौ दोप्रकारका होवै है ॥ एकतौ सन्मार्गवर्त्ती होवैहै ॥ और दूसरा असन्मार्गवर्त्ती होवैहै ॥ तहां सन्मार्गवर्त्तीतटस्थतौ ताजीवन्मुक्तपुरुषकी सदाचारविषेप्रवृत्तिकूंदेखिकै आपभी तासदाचारविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ यहवार्त्तागीता विषे श्रीभगवानन्नेभी 'यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः । सयत्प्रमाणंकुरुतेलोकस्तदनुवर्त्तते' इसश्लो

ककरिकै कथनकरी है ॥ और दूसरा असत्मार्गवर्त्ती तटस्थतौ ताजीवन्मुक्तपुरुषकेदृष्टिपातकारिकैसर्व पापोंतैंरहित होवैहै ॥ तहांस्मृति॥'यस्यानुभवपर्यंताबुद्धिस्तत्त्वेप्रवर्त्तते। तद्दृष्टिगोचराःसर्वेमुच्यंतेसर्वकिल्बिषैः' अर्थयह ॥ अहंब्रह्मास्मि याप्रकारके अपरोक्षअनुभवपर्यंत जिसपुरुषकीबुद्धि प्रत्यक्तत्त्वविषे प्रवर्त्तमानहै ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषकीदृष्टिके जेजेपुरुष विषय होवैहैं ॥ तेसर्वपुरुष सर्वपापोंतैंरहितहोवै हैं इति ॥ और ताजीवन्मुक्तज्ञानवान्पुरुषका जे दुष्टपुरुष द्वेषकरेहैं तथानिंदाकरेहैं ॥ तेदुष्टपुरुषताज्ञानवान्पुरुषके पापकूं ग्रहणकरेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ 'तस्यपुत्रादायमुपयंति सुहृदःसाधुकृत्यं द्विषंतःपापकृत्यं' अर्थयह ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषके धनादिकपदार्थोंकूं पुत्र लेजावैहैं ॥ और पुण्यकर्मकूं सेवाकरणेहारेसुहृदजन लेजावैहै ॥ और पापकर्मकूं द्वेषकरणेहारेनिंदकपुरुष लेजावैहैं इति ॥ इसप्रकार ताजीवन्मुक्तपुरुषका सोतप लोकसंग्रहवासतैं होवैहै ॥ सोतप ताजीवन्मुक्तिका द्वितीयप्रयोजनहै इति॥ अब ताजीवन्मुक्तिके विसंवादाभावरूप तीसरेप्रयोजनका निरूपणकरेहै ॥ तहांसोजीवन्मुक्तपुरुषव्युत्थानकालविषे दुष्टपुरुषोंकृतनिंदादिकोंकूं श्रवणभीकरेहै ॥ तथा पाखंडी क्रूर निष्ठुर आदिकपुरुषोंकूं देखता है ॥ तौभी ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं रागद्वेषादिकवृत्तियां उत्पन्नहोतीनहीं ॥ यातैं ताजीवन्मुक्तपुरुषका तिनंनिंदकदुष्टपुरुषोंकेसाथि कलहरूपविसंवाद होतानहीं ॥और जोपुरुषताजीवन्मुक्तिकेअभ्यासतैंरहितहै ॥ तिसपुरुषकातौ तिनदुष्टजनोंकेसाथि सर्वदा सो कलहरूपविसंवाद होतारहेहै ॥ यातैं ताविसंवादाभावविषे जीवन्मुक्तिकाप्रयोजनपणा संभवैहै ॥ यह वार्त्तावृद्धआचार्योंनैंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'ज्ञात्वासदातत्त्वनिष्ठाननुमोदामहेवयम्। अनुशोचामहेचान्यान्नभ्रांतैर्विवदामहे' अर्थयह ॥ सर्वदा तत्त्व

निष्ठा।विषेस्थितपुरुषोंकूंदेखिके हम आनंदकूंप्राप्तहोवे हैं ॥ और तातत्त्वनिष्ठातैंरहितपुरुषोंकूंदेखिके हम शोककूंकरेहैं ॥ और भ्रांतपुरुषोंकेसाथि हम विवादकूंकरतेनहीं इति ॥ यहविसंवादकाअभाव ताजीवन्मुक्तिका तृतीयप्रयोजनहै इति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिके दुःखनिवृत्तिरूपचतुर्थप्रयोजनका वर्णनकरें हैं ॥ तहां सादुःखनिवृत्ति दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौ ऐहिकदुःखनिवृत्ति होवैहै ॥ और दूसरी पारलौकिकदुःखनिवृत्ति होवैहै ॥ तहां आत्मज्ञानकरिके तिकीनिवृत्तिहोणेतैं तथायोगाभ्यासकरिके सर्ववृत्तियोंकानिरोधहोणेतैं जीवन्मुक्तपुरुषकाचित्त केवल आत्माकारही होवैहै ॥ अन्याकार होतानहीं ॥ यातैं प्रारब्धभोगकेविद्यमानहुएभी ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं दुःखप्रतीतहोतानहीं॥किंतुसर्वदुःखोंकीनिवृत्ति होवैहै ॥ इसीकानाम ऐहिकदुःखनिवृत्तिहै ॥ यहऐहिकदुःखनिवृत्तिही 'आत्मानंचेद्विजानीयादयमस्मीतिपूरुषः।किमिच्छन्कस्यकामायशरीरमनुसंज्वरेत्' इसश्रुतिविषे कथनकरीहै॥और आत्मज्ञानकरिकैअज्ञानकेनिवृत्तहुए संचितसर्वकर्मोंका नाशहोइजावैहै ॥ और आत्मज्ञानकेप्रभावतैं ज्ञानवान्पुरुषकूं आगामिकर्मोंका स्पर्शही होतानहीं ॥ और सोअज्ञानसहितसंचितकर्मही तापारलौकिकदुःखकाहेतु होवैहै ॥ ताकेनाशहुए ताजीवन्मुक्तपुरुषके सर्वपारलौकिकदुःखोंकीनिवृत्ति होवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'एतं हवावनतपति किमहंसाधुनाकरवं पापमकरवं 'अर्थयह ॥ मैं पुण्यकर्मकूं किसवासतैं नहींकरताभया ॥ और मैं पापकर्मकूं किसवासतै करताभया ॥ याप्रकारकीचिंतारूपअग्नि जैसे अज्ञानीपुरुषकूं तपायमानकरेहै ॥ तैसे जीवन्मुक्तपुरुषकूं सोचिंतारूपअग्नि तपायमान करतानहीं इति ॥ यद्यपि चतुर्थभूमि

कावालेज्ञानवान्पुरुषकूंभी सादुःखकीनिवृत्ति होवैहै ॥ तथापि ताज्ञानवान्पुरुषकूं प्रारब्धभोगकालविषे बाधितानुवृत्तिकरिकै अहंसुखी अहंदुःखी इत्यादिकअनुभव होवैहै ॥ यातैं ताज्ञानवान्की सादुःख निवृत्ति सुरक्षित नहींहोवैहै ॥ और जीवन्मुक्तपुरुषकूं योगाभ्यासकरिकै सर्ववृत्तियोंकानिरोध होवैहै ॥ यातैं ताजीवन्मुक्तपुरुषकी सादुखनिवृत्ति सुरक्षित होवैहै ॥ अर्थात् ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं कोईकालविषे भी सोदुःख प्रतीतहोतानहीं ॥यातैं तादुःखनिवृत्तिविषे जीवन्मुक्तिकाप्रयोजनपणा संभवैहै ॥ यहदुःख निवृत्ति ताजीवन्मुक्तिका चतुर्थप्रयोजनहै इति ॥ अब ताजीवन्मुक्तिके सुखाविर्भावरूपपंचमप्रयोजन कानिरूपणकरेहैं ॥ तहां ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै तथायोगाभ्यासकरिकै ताजीवन्मुक्तपुरुषका अज्ञान तथाअज्ञानकृतआवरण तथाव्यवहाररूपविक्षेप निवृत्तहोइजावैहै ॥ और सोअज्ञानकृतआवरण तथा वि क्षेपही ब्रह्मानंदकेअनुभवविषे प्रतिबंधक होवैहै ॥ ताप्रतिबंधककीनिवृत्तिहुए ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं जोपरिपूर्णब्रह्मानंदका निरंतर अनुभवहोवैहै ताकानाम सुखाविर्भावहै ॥ तहांश्रुति ॥ 'समाधिनिर्धूतम लस्य चेतसो निवेशितस्यात्मनियत्सुखंभवेत् । नशक्यतेवर्णयितुंगिरातदा स्वयंतदंतःकरणेनगृह्यते' अर्थ यह ॥ समाधिकरिकैनिवृत्तहोइगयाहै रागद्वेषादिरूपमल जिसका ॥ तथा केवलआत्मविषेहैस्थितिजि सकी ॥ ऐसाजोचित्तहै ॥ तिसचित्तकूं तासमाधिकालविषे जोस्वरूपसुख प्राप्तहोवैहै ॥ सोसुख वाणी करिकै वर्णनकऱ्याजातानहीं किंतु सोसुख ताअंतःकरणनें आपही ग्रहणकऱ्याहै इति ॥ यहसुख काआविर्भाव ताजीवन्मुक्तिका पंचमप्रयोजनहै ॥ इसप्रकार ताजीवन्मुक्तिकेपंचप्रयोजनोंकेसिद्धहुए प्रयोजनकेअभावतैं जीवन्मुक्तिकाअभावकहणा मिथ्याही है इति॥इसप्रकार स्वरूपलक्षण प्रमाण साधन

अधिकारी फल इनपांचोंकेनिरूपणकरिकै इसचतुर्थपरिच्छेदविषे विदेहमुक्ति जीवन्मुक्ति यहदोप्र
कारकीमुक्ति निरूपणकरी ॥ तातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ ब्रह्मवेत्ताजीवन्मुक्तपुरुष भोगकरिकैप्रारब्धकर्म
केनाशहुएतैंअनंतर इसवर्त्तमानशरीरकेनाशहुए अखंडएकरसब्रह्मानंदरूपतैंस्थित होवैहै ॥ ताब्रह्मवेत्ता
पुरुषका पुनःउत्थानहोतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ 'नतस्यप्राणाउत्क्रामंत्यत्रैवसमवलीयंते । ब्रह्मैवसन्ब्रह्मा
प्येति । ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति' अर्थयह ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषकेप्राण अर्थात् लिंगशरीर मरणकालविषे
इसशरीरतैं उत्क्रमण करतानहीं किंतु प्रत्यक्आत्माविषेही लयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे
अज्ञानीपुरुषकालिंगशरीर इसशरीरकेनाशहुएतैंअनंतर कर्मकेफलभोगवासतै परलोकविषे जावैहै ॥ तैसे
ज्ञानवान्पुरुषका सोलिंगशरीर परलोकविषे जातानहीं ॥ काहेतैं ताज्ञानवान्पुरुषका प्रारब्धकर्मतौ
भोगकरिकैनष्टहोइजावैहै ॥ और संचितकर्म ज्ञानकरिकैनष्टहोइजावैहै ॥ और आगामीकर्मका ज्ञान
केप्रभावतैं स्पर्शहोतानहीं ॥ और अज्ञानकाभी आत्मज्ञानकरिकै नाशहोइगयाहै ॥ और तेअज्ञानसं
चितकर्मादिकही पुनःजन्मके कारणहोवैहैं ॥ ताकारणकेनाशहुए ज्ञानवान्पुरुषका सोलिंगशरीर पुनः
जन्मकीप्राप्तिवासतै इसशरीरतैंउत्क्रमण करतानहीं ॥ किंतु इसप्रत्यक्आत्माविषेही लयकूं प्राप्तहोवैहै
इति ॥ और सोज्ञानवान्पुरुष जीवतअवस्थाविषेही ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुए ब्रह्मरूपहु
आही प्रारब्धकर्मकीनिवृत्तितैंअनंतर ब्रह्मरूपकरिकैस्थित होवैहै ॥ और ब्रह्मवेत्तापुरुष ब्रह्मरूपहीहोवैहै
इति ॥ किंवा यहआत्मज्ञानकामोक्षरूपफल विष्णुपुराणविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'विभेद

जनकेऽज्ञानेननाशमात्यंतिकंगते । आत्मनोब्रह्मणोभेदमसंतंकःकरिष्यति ॥ १ ॥ तद्भावभावमापन्नस्ततो सौपरमात्मनः । भवत्यभेदोभेदश्चतस्याज्ञानकृतोभवेत्' ॥२॥ अर्थयह ॥ जीवब्रह्मकेभेदकाजनक जोअ ज्ञानहै ॥ ताअज्ञानका ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अत्यंतनाशहुए ताजीवात्माके तथा ब्रह्मके असत् भेदकूं कौनकरेगा ॥ किंतु कोईभीकरेगानहीं ॥ और ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै ब्रह्मभावकूंप्राप्तहुआ यहजीवा त्मा ताब्रह्मकेसाथि अभिन्नहीहोवैहै ॥ और इसजीवात्माका जो ब्रह्मकेसाथि भेदप्रतीतहोताथा ॥ सो भेद अज्ञानकृतथा ॥ ताअज्ञानकेनाशहुए सोभेदभी निवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं सोज्ञानवान्पुरुष अखंड एकरसब्रह्मरूपतैंस्थित होवैहै इति ॥ किंवा यहउक्तफल श्रीव्यासभगवान्नेभी ब्रह्मसूत्रोंविषेकह्याहै ॥ तहांसूत्र ॥ 'अस्मिन्नस्यचतद्योगंशास्ति' अर्थयह ॥ इसब्रह्मवेत्तापुरुषका इसब्रह्मविषे अभेदहीहोवैहै ॥ इसअर्थकूं श्रुति कथनकरेहैं ॥ साश्रुति यहहै॥'यदाह्येवैषएतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयं प्रतिष्ठांविंदतेऽथसोभयंगतोभवति' अर्थयह ॥ यहसाधनचतुष्टयसंपन्नअधिकारीपुरुष जिसकालविषे स्थूलसूक्ष्मकारणशरीरतैंविलक्षणनित्यअपरोक्षरूपप्रत्यक्आत्माविषेअभयप्रतिष्ठाकूंप्राप्तहोवैहै । तिसका लविषे सोअधिकारीपुरुष अखंडएकरसब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ यातैं यहसिद्धभया ॥ अहंब्रह्मास्मि तत्त्वमसि इत्यादिकमहावाक्यजन्य अपरोक्षज्ञानतैं अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मभावरूपमोक्ष प्राप्तहोवैहै ॥ और सोमुक्तपुरुष पुनरावृत्तिकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ अर्थात् पुनःजन्मकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ 'नसपुनरावर्त्तते' अर्थयह ॥ सोमुक्तपुरुष पुनःजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं इति ॥ यहवार्त्ता गीताविषे श्रीभग वान्नेंभी कहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ 'तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः । गच्छंत्यपुनरावृत्तिंज्ञाननि

धूतकल्मषाः ' अर्थयह ॥ तिसपरमात्माविषेही है बुद्धि तथामन तथानिष्ठा जिनोंकी ॥ तथा सोपरमा त्माही है परमस्थान जिनोंका ॥ तथा आत्मज्ञानकरिकैनिवृत्तहोइगयेहैं सर्वपापरूपकल्मष जिनोंके॥ ऐसेज्ञानवान्पुरुष अपुनरावृत्तिकूंही प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् पुनःजन्मकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ किंवा यहउ क्तअर्थ श्रीव्यासभगवान्नेभी ब्रह्मसूत्रोंविषेकह्याहै ॥ तहांसूत्र ॥ 'अनावृत्तिःशब्दादनावृत्तिःशब्दात्' अर्थयह ॥ तत्त्ववेत्तापुरुषोंकूं पुनःजन्ममरणकीनिवृत्तिरूप अनावृत्तिही होवैहै ॥ जिसकारणतें श्रुतिस्मृ तिरूपशास्त्रही इसअर्थकूंकथनकरेहैं ॥ तात्पर्य यह ॥ जिसपुरुषकूंतौ इसीमनुष्यशरीरविषे श्रवणादिकों करिकै ब्रह्मसाक्षात्कारकीउत्पत्ति भई है ॥ तिसपुरुषकूंतौ इसीमनुष्यशरीरविषे सोब्रह्मभावरूपमोक्ष होवै है ॥ इसीअर्थकूं 'यदासर्वेप्रमुच्यंतेकामायेऽस्यहृदिस्थिताः । अथमर्त्योऽमृतोभवत्यत्रब्रह्मसमश्नुते' यह श्रुति कथनकरेहै ॥ और जेनिष्कामपुरुष अहंग्रहउपासनाकरिकै ब्रह्मलोककूं जावैहैं ॥ तिनउपासकपुरु षोंकूं ताब्रह्मलोकविषेही ब्रह्मसाक्षात्कारहोइकै ब्रह्मकेसाथि मोक्ष होवैहै ॥ इसअर्थकूंभी 'ब्रह्मणासहते सर्वेसंप्राप्तेप्रतिसंचरे।परस्यांतेकृतात्मानःप्रविशंतिपरंपदम्'इत्यादिकस्मृतिवचनकथनकरेहैं ॥ और जेस कामपुरुष पंचाग्निविद्यादिकोंकरिकै ब्रह्मलोकविषे जावै हैं ॥ तिनसकामपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे सोब्र ह्मसाक्षात्कार होतानहीं ॥ याकारणतैंही तिनसकामपुरुषोंकी ताब्रह्मलोकतैं पुनःआवृत्ति होवैहै ॥ इस अर्थकूंभी 'इमंमानवमावर्त्तमावर्त्तते । आब्रह्मभुवनाँल्लोकाःपुनरावर्त्तिनोऽर्जुन' इत्यादिकश्रुतिस्मृति वचन कथनकरेहैं ॥ सर्वप्रकारतैं ब्रह्मसाक्षात्कारवालापुरुष पुनरावृत्तितैंरहित ब्रह्मभावरूपमोक्षकूंही प्राप्त

होवैहै इति ॥ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचिते प्राकृततत्त्वानुसंधाने चतुर्थःपरिच्छेदःसमाप्तः ॥ ४ ॥ समाप्तोऽयंतत्त्वानुसंधाननामाग्रंथः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां क्षेमराज श्रीकृष्णदास श्रेष्ठिना स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रागारेऽङ्कयित्वा प्रकाशितम् । सं० १९६५ शके १८३०.

विक्रय्य (वेदान्त-भाषा) पुस्तकोंकी-सूची।

नाम.	की. रु. आ.
आत्मपुराण भाषा [चिद्घनानन्द स्वामिकृत]	१३-०
योगवासिष्ठभाषा बडा संपूर्ण	१२-०
योगवासिष्ठगुटकावैराग्य मोक्ष प्रकरण वेदांत उत्तम कागज अक्षर बड़ा	०-१२
वासिष्ठसार भाषा वेदांत ६ प्रकरण	२-८
विचारसागर सटीक निश्चलदासजीकृत ...	२-०
एकादशस्कंध भाषा चतुरदासकृत और नानकविलास	०-१२
अमृतधारा वेदांत	०-१२
संतोषसुरतरु वेदांत	०-८
संतप्रभाव वेदांत	०-६
विचारमालासटीकपंचीकरणसहित	०-१२
अभिलाषसागर भाषा (वेदांत) ...	२-०
आत्मबोधतत्त्वबोधवेदस्तुति भाषा ...	०-३
अध्यात्मप्रकाश भाषा (वेदांत)	०-३
विज्ञानगीता कविकेशवदासकृत	०-१०

नाम.	की. रु. आ.
सुंदरविलास (ज्ञानसमुद्र, ज्ञानविलास, सुन्द-राष्टकादि सहित) सटिप्पण....	१-०
प्रत्येकानुभवशतक भाषा (वेदान्तग्रंथ)	०-४
पक्षपातरहित अनुभवप्रकाश -वेदान्त वर्णन (कामलीवाले बाबाकी बनाईहुई)...	३-०
मुक्तिकोपनिषद् भाषाटीका	०-५
कैवल्योपनिषद्	०-१
मोक्षगीता (सवालक्ष) रामनाम....	१-०
वृत्तिप्रभाकर स्वामीनिश्चलदासकृत-(वेदान्तका ग्रंथ नया छपाहै) ...	३-०
आनन्दामृतवर्षिणी (आनन्दगिरिजीप्रणीत-गीताकेकठिनस्थलोंकाप्रतिपादनहै)....	०-१२
दशोपनिषद् भाषा-स्वामि अच्युतानंदकृत	२-०
तत्त्वानुसंधानभाषा....	२-०
वैराग्यशतक हरदयाल कृत	०-८

सम्पूर्ण पुस्तकोंका "बडासूचीपत्र" अलग है मँगालीजिये।

पता-खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाड़ी-बंबई.

इति श्रीस्वामिचिद्घनानन्दगिरिकृतं
तत्त्वानुसन्धानं समाप्तम् ।